Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

राजा
शनि

मंत्री
बुध

15

श्री आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र दिल्ली
द्वारा प्रणीत तथा सम्मानित

श्री आर्यभट्ट-पंचांगम्

श्री विक्रम सम्वत्-२०६२ शक:- १९२७ सन्-२००५-२००६ भारतीय गणराज्य संवत् ५६-५७

—प्रधान सम्पादक—
पं. लक्ष्मी नारायण शर्मा ज्योतिष वाचस्पति
बी.ए. प्रभाकर साहित्यरत्न, प्रधानाचार्य
भारतीय ज्योतिष विद्या केन्द्र, नई दिल्ली

—सम्पादक:—
धर्मपाल अग्रवाल
आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र, २/४५-ए, वैस्ट ऐवन्यू
मार्ग, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-२६

पूजा-पाठ व ज्योतिष पुस्तकों के लिए
नाथ पुस्तक भण्डार
194, दरीबा कला, दिल्ली- 6, दूरभाष : 23275344

धर्मसन प्रकाशन
प्रकाशक : 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 दूरभाष : 23285234, 23264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
❑ प्रमुख पृष्ठ	१
❑ विषय सूची	२
❑ पंचांग देखने की विधि	३
❑ वक्तव्य	४
❑ एक और प्रयास ज्योतिष सेवा के निमित्त	५
❑ महर्षि आर्यभट्ट	६
❑ व्रतोत्सव, त्यौहार, छुट्टियां, मेले, जयन्तियां, अमावस्या, संक्रांति आदि	७-११
❑ दैवज्ञ की दृष्टि में संसार चक्र	१२-१७
❑ ग्रहण विवरण संवत् २०६२	१८-१९
❑ विवाह मुहूर्त्त, द्विरागमन, उपनयन, गृहारम्भ मुहूर्त्तादि	२०-२५
❑ त्रिबलशुद्धि कोष्ठक	२६-२७
❑ ग्रहों का नक्षत्र व राशि संचार	२८-२९
❑ सर्वार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि, रविपुष्य, गुरुपुष्य योग	३०
❑ व्यापारिक भविष्य व्यापारिक अनुसंधान पर (पोरसा वाले)	३१-३४
❑ द्वादश राशिफल सं. २०६२	३५-४०
❑ शनि की साढ़ेसाती ढैय्या विचार	४१
❑ ५.३० बजे से अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने की तालिका	४२
❑ दैनिक ग्रह स्पष्ट	४३-५४
❑ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को संवत्सर फल श्रवण	५५
❑ अथ सम्वत्सर मध्ये वर्ष राजादि फलम्	५६
❑ चैत्रादि १२ मास २४ पक्ष वि.सं. २०६२	५७-८०
❑ भौगोलिक परिचय	८१-८२
❑ दैनिक लग्न सारिणी देखने की विधि, नवांश शोधन, स्मार्त वैष्णव विचार	८३
❑ अंग्रेजी मास के अनुसार भा.स्टै.टा. में दैनिक लग्न सारिणी	८४-८९
❑ सूर्योदयास्त एवं दिनमान गणित प्रकार	९०-९१
❑ इष्टकाल बनाने की विधि	९२-९३
❑ चर सारिणी	९३-९४
❑ रवि क्रान्ति सारिणी	९५
❑ वेलान्तर कोष्ठक (मिनट में)	९५
❑ पंचांग परिवर्तन पद्धति, चरान्तर सारिणी	९६
❑ प्रमुख नगरों की अक्षांशादि सारिणी	९७-९९
❑ अक्षांशादि सारिणी विदेश	१००
❑ चालन कोष्ठक	१०१
❑ सूर्य बिम्ब, द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त अक्षांश सारिणी	१०२-५
❑ सूर्य बिम्ब किरण वक्री भवन संस्कार युक्त सूर्योदय सारिणी से अभीष्ट स्थान से सूर्योदयास्त ज्ञात करना	१०६
❑ सुगम दशम भाव स्पष्ट सारणी	१०७
❑ लग्न सारिणी अक्षांश	१०८-१३
❑ इन्द्रप्रस्थ नगरे लग्न सारिणी	११३
❑ अकहड़ा चक्र: भुक्त नक्षत्र चरण राश्यादि और स्वामी, हंस संज्ञा व युंजा भाग सहितम्	११४
❑ अष्टक वर्ग ज्ञानार्थ चक्र	११५
❑ षट्वर्ग फलादेश	११५
❑ षट् वर्ग सारिणी चक्र	११६
❑ जन्म समय, प्रसूति लग्न विचार, गण्डमूल आदि विचार	११७-२१
❑ बाल कष्टावली चक्र, नक्षत्र-कष्टावली	१२२-२४
❑ बाल कष्टावली-चक्र में प्रयुक्त कठिन शब्दों के अर्थ	१२५-२६
❑ बालक के जन्म समय अरिष्ट योग व कुछ अन्य प्रमुख योग	१२७-२८
❑ आयुर्दाय विचार बोधक चक्र	१२८
❑ द्वादश लग्न अथवा राशियों के प्रभाव	१२९
❑ नूतन वेध सिद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी	१३०
❑ वर्ष कुण्डली में शुभशुभ योग	१३१
❑ ग्रह शील चक्र	१३२
❑ अंग्रेजी जन्म दिनांक के अनुसार महत्वपूर्ण वर्ष	१३३-३५
❑ विंशोत्तरी दशा गणित	१३६
❑ चन्द्र स्पष्ट	१३७
❑ विंशोत्तरीय दशा गणित	१३८-४०
❑ विंशोत्तरीय दशा पद्धति	१४१-४२
❑ ग्रह दशा फल	१४३
❑ ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवार व्रत विधि	१४४
❑ ग्रहों का वर्ष कुण्डली लग्न व गोचर फल	१४५
❑ फलित में परमोपयोगी ग्रह-दृष्ट्यादि विवरण चक्र	१४६
❑ नवग्रहों की शान्ति हेतु मंत्र	१४७
❑ अथ ग्रहाणां विंशोत्तरीय चक्रम्	१४८
❑ जन्म राशि से ग्रहों के गोचर फल, घात चक्र	१४९
❑ मुहूर्तादि कार्येषु शुभाशुभ समय विचार	१५०-५८
❑ वर वधू मेलापक कोष्टक	१५९
❑ वर वधू मेलापक सारिणी	१५८-५९
❑ तारावल बोधिनी तालिका	१६०
❑ चौघड़िया, मुहूर्त्त, दिशाशूल, राहु चक्रम	१६१
❑ यात्रा में त्याज्य तिथियां	१६२
❑ गृहारम्भ-द्वारशाखा-गृहप्रवेश कूपादि मुहूर्त्ता:	१६३-६४
❑ विभिन्न प्रकार के उपयोगी मुहूर्त्ता:	१६५
❑ सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहुर्त्त	१६६
❑ गृह-भूमि विचार (गृहवास्तु)	१६७
❑ हस्त रेखाएं बोलती हैं	१६८-६९
❑ मुखाकृति से भविष्य ज्ञान	१७०
❑ स्त्रियों के तिलादि एवं हस्त रेखा विचार	१७१
❑ प्रश्न विचार	१७२-७३
❑ मन्दी तेजी जानने का सुलभ प्रकार	१७३
❑ श्री भैरव भविष्य ज्ञान प्रश्नावली	१७४-१७७
❑ स्वप्न विचार	१७८
❑ छिपकली पतन फल, अंग स्फुरण विचार, योगासनों का अभ्यास, वर्षा ज्ञान, चक्रासन की विधि	१७९
❑ अशौच व्यवस्था	१८०
❑ हथेलियों में अंकित विवाह रेखा	१८१-१८२
❑ ज्योतिष के आईने में कठिन रोग का उपचार	१८२-१८३
❑ रमल ज्योतिष बिना कुण्डली के रत्न पहनें	१८४
❑ रमल ज्योतिष बिना कुण्डली के सुखी दाम्पत्य जीवन	१८५
❑ रमल ज्योतिष बिना कुण्डली के भविष्य कथन	१८५
❑ राशि-रत्न+उपरत्न	१८६
❑ राहु-काल विचार	१८७
❑ देश एवं फिल्म कलाकारों का भविष्य फल	१८८-१८९
❑ जन्म-कुण्डली में पठनीय विभिन्न योग	१९०-१९१
❑ देशीय औषधि-प्याज के गुण औषध प्रयोग, लाटरी ज्योतिष	१९२
❑ गायत्री साधना, ध्यान अंतारात्मा का द्वार है, स्वरोदय विज्ञान	१९३
❑ कुण्डलिनी महाविद्या	१९४
❑ बने बनाये फ्लैट वास्तु दोष का निवारण	१९५
❑ शेयर बाजार की स्थिति, प्रमुख खाद्यान्न-दलहन और तिलहन, अंगुलियों का जादू	१९६
❑ ग्रहों का शेयर-मार्केट पर प्रभाव	१९७
❑ ग्रहण का तेजी-मंदी पर प्रभाव, तेरह दिन का पक्ष	१९८
❑ व्यापार भविष्य व्यापारिक तेजी-मंदी	१९९-२०१
❑ चन्द्रदर्शन का व्यापार पर प्रभाव	२०२-२०३
❑ चन्द्र शृंगोन्नत: व्यापार वाणी सं. २०६२ वि.	२०४
❑ सन् २००५ ई.-शेयर बाजार व तेजी-मंदी	२०५-२०६
❑ सन् २००५ ई. का वार्षिक व्यापार-शेयर बाजार	२०७
❑ व्यापार भविष्य सन् २००५ ई.	२०८-२१२
❑ सामूहिक व्यापार भविष्य संवत् विक्रम २०६२	२१३-२१६
❑ अथ व्यापार विमर्श सं. २०६२ वि.	२१७-२२२
❑ विज्ञापन	२२३-२२४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥ आर्यभट्ट पंचांग देखने की विधि ॥

१. हमारा "आर्यभट्ट पंचांग" का निर्माण ग्रीनविच (ब्रिटेन) से उत्तर अक्षांश २८°।३८' एवं पूर्व रेखांश ७७°। १२' के आधार पर किया गया है। अतएव इस पंचांग में निर्णीत सूर्योदयास्त भी पूर्वोक्त अक्षांशादि वाले स्थान अर्थात् दिल्ली शहर के हैं।

२. 'आर्यभट्ट पंचांग' के गणित में प्राचीन ज्योतिर्विदों द्वारा प्रमाणित तथा भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त 'सूक्ष्म दृक्गणित' एवं चित्रा पक्षीय 'निरयणपद्धति' को ही अपनाया गया है।

३. पक्षवाले सभी पृष्ठों पर दैनिक सूर्योदय और सूर्यास्त भारतीय समयानुसार दिल्ली शहर के हैं। सूर्योदयास्त में किरण-वक्री-भवन संस्कार के कारण वास्तविक क्षितिज वृत्त के उदयास्त में अन्तर आना स्वाभाविक है। अतः प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में दो मिनट ऋण (−) तथा सूर्यास्त में दो मिनट योग (+) करने की आवश्यकता है।

४. इस पंचाङ्ग में करण सूर्योदय कालीन दिए गए हैं। अग्रिम करण उससे आगे वर्तमान तिथि के अर्धभाग तक जानें।

५. सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों का राश्यादि संचार एवं भद्रा-पंचक, ग्रहों के उदय-अस्त, वक्र मार्ग आदि भा. स्टे. टा. में है। जो भारत में सर्वत्र उसी टाइम में होंगे। यह इस पंचांग की विशेषता है।

६. महीनों में अष्टमी-पूर्णिमा एवं अमावस्या के ग्रह स्पष्टों के राश्यादि स्टे.टा. प्रातः ५ घं. ३० मि. के हैं। नीचे उस दिन की गति और वक्री-मार्गी उदय-अस्त व ग्रहों के नक्षत्र चरण दिये हैं। यह स्पष्टों के साथ कुंडली भी उपरोक्त समय की है।

७. लस्टर में A.B.C.D. * आदि चिन्ह दिए गए हैं, उनका मतलब यह है कि मैटर उस लाईन में नहीं आ सका जो चिन्ह यहां लगाया वैसा ही चिन्ह कहीं दूसरी लाइन में लगाकर शेष मैटर लिखा है। नीचे लिखी संकेतवाली को पंचाङ्ग देखने में काम लेने से सम्पूर्ण विषय समझ में आजावेंगे।

८. वार, तिथि, नक्षत्र, योग तथा करणों के साथ सामने दिये गये घटी पल, उनका समाप्तिकाल दर्शाते हैं जोकि स्थानीय सूर्योदय के उपरान्त से माना जाये। उन घटी पलों के घण्टा मिनट बनाकर उसमें पंचांग के स्थानीय सूर्योदय के घण्टा मिनट जोड़ देने से तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल भारतीय स्टैंडर्ड टाइम में ज्ञात हो जायेगा।

९. पाठकों की सुविधा के लिए तिथि नक्षत्रादि के घटी पलों के समाप्ति काल (सूर्योदय संस्कार करके) घण्टा मिनट में भी दे दिये गये हैं जिससे तिथि नक्षत्रादि के समाप्तिकाल को घण्टा मिनट में जानने के लिए कोई परेशानी नहीं हो रही है। सीधे ही तिथ्यादि का समाप्ति काल घंटे मिनट में पढ़ा जा सकता है। जहां २४ लिखा हो वह रात्रि के ठीक १२ बजे समझे जायें। जहां २७।१८ लिखा हो वहां २७ में से २४ घटाकर रात्रि के ३ बजकर १८ मिनट समझे जायें। यह समय भारतीय ज्योतिष परम्परानुसार सूर्योदय से पहले तक पूर्व तिथि में ही माना जायेगा।

१०. पक्षवाले पृष्ठों पर शुक्ल पक्ष में तिथि के कालम में १५ को पूर्णमासी तथा कृष्णपक्ष में ३० को अमावस समझा जाये। शुक्ल पक्ष को सुदी, कृष्ण पक्ष को वदी भी कहते हैं।

११. रा.मि. पहले कॉलम में दी गई हैं। दिनमान घटी-पलों में दिया गया है। करणों के कालम के पश्चात् दि.मा.घ.प. में दिए गए हैं। उसके पश्चात् सूर्योदयास्त, प्रतिष्ठा, मु. तारीखें फिर अंग्रेजी तारीख अंग्रेजी अंकों में लिखी हैं।

१२. दैनिक ग्रह स्पष्ट भा.स्टै.टा. प्रात. ५-३० बजे (दिल्ली) के दिए गए हैं। और लग्न का समाप्तिकाल लिखा गया है। अपने अभीष्ट समय पर उनको ग्रह की दैनिक गति का संस्कार त्रैराशिक विधि से करके मार्गी ग्रह में वक्र करने, वक्रीग्रह में से घटाने से इष्ट समय के ग्रह स्पष्ट हो जाते हैं।

१३. तिथि के क्षय के आगे (पक्ष वाले पृष्ठों में) शून्य ० चिन्ह लगाया गया है। तिथि, नक्षत्रादि के आगे ६०-०० घटी लिखा है उस तिथि नक्षत्रादि की वृद्धि समझें।

पंचांग में लिखे शब्दों की संकेतावली (अकारादि क्रम से)

अ. = अश्विनी (नक्षत्र), अतिगंड (योग),
अग्नि (पंचक), अगस्त, अप्रैल (मास), अक्टूबर
अनु. = अनुराधा (नक्षत्र)
आ. = आर्द्रा न., आयुष्मान् यो., आषा., आश्विन
अं. = अंश, अंग्रेजी (मास तारीख)
उ. = उदय, उपरान्त
उ.फा. = उत्तरा फाल्गुनी (नक्षत्र)
उ.षा. = उत्तराषाढ़ा (नक्षत्र)
उ.भा. = उत्तरा भाद्रपदा (नक्षत्र)
ऐं. = ऐन्द्र (योग)
क. = कर्क, कन्या (राशि), कला
का. = कार्तिक (मास)
क्रांति सा. = साम्य (महापात)
कृ. = कृत्तिका (नक्षत्र), कृष्ण पक्ष
कुं. = कुंभ (राशि),
गु. = गुरु (वार), गुरु ग्रह
गु.दा. = गुरु दास से
गो. = गोधूलि (लग्न)
गं. = गंड (योग)
घ. = घटी
घं. = घन्टा
चि. = चित्रा (नक्षत्र)
चै. = चैत्र (मास)
चौ. = चौर (पंचक)
चं. = चन्द्र (सोमवार), चन्द्र ग्रह
ज. = जयन्ती, जनवरी (मास)
ज. = जून (मास)
जु. = जुलाई (मास)
ज्ये. = ज्येष्ठ (मास), ज्येष्ठा (नक्षत्र)
ता. = तारीख
तु. = तुला (राशि)
दि. ल. = दिन में लग्न
ध. = धनु (राशि) धनिष्ठा (नक्षत्र)
धूलिमु. = धूलिमुख (अन्यगोधूलि) लग्न
ध्रु. = ध्रुव (योग)
धृ. = धृति (योग)
नि. = निम्बार्क (संप्रदाय)
नृ. = नृप (पंचक)
प. = परिघ (योग), पल
प्र. = प्रवेश
प्रा. = प्रारम्भ
प्री. = प्रीति (योग)
पु. = पुष्य (नक्षत्र)
पुन. = पुनर्वसु (नक्षत्र)

पू.फा. = पूर्वा फाल्गुनी (नक्षत्र)
पू.षा. = पूर्वाषाढ़ा (नक्षत्र)
पू.भा. = पूर्वाभाद्रपदा (नक्षत्र)
फाल्गु. = फाल्गुन (मास)
ब्र. = ब्रह्म (योग)
वृ. = वृद्धि (योग)
बु. = बुध (वार), बुध ग्रह
भ. = भरणी (नक्षत्र), भद्रा
भाद्र. = भाद्रपद (मास)
म. = मघा (नक्षत्र), मकर (राशि), मई (मास),
मा. = मार्गशीर्ष, माघ, मार्च (मास)
मि. = मिनट, मिथुन राशि (लग्न), मिति
मी. = मीन (राशि)
मु. = मुहूर्त
मू. = मूल (नक्षत्र)
मे. = मेष (राशि) लग्न
मृ. = मृगशिर (नक्षत्र), मृत्यु (पंचक)
र. = रवि (वार), रवि (ग्रह)
रा. = राहु (ग्रह), राष्ट्रीय, राशि
रे. = रेवती (नक्षत्र)
रो. = रोहणी (नक्षत्र), रोग (पंचक)
ल = लग्न
व. = वज्र, वरियान् यो., वाणिज क., वक्र गति
व्र. = व्रत
व्य. = व्यतिपात (योग)
वृ. = वृद्धि (योग), वृष, वृश्चिक (राशि)
व्या. = व्याघात (योग)
वि. = विशा. (नक्षत्र), विष्कुंभ (योग), विकला
वि. मु. = विवाह मुहूर्त
वै. = वैष्णव संप्र., वैधृति यो., वैशाख मास
श. = शनिवार, शनिग्रह, शतभिषा (नक्षत्र)
शि = शिव (योग)
शु. = शुक्रवार, शुक्र ग्रह, शुभ, शुक्ल (योग), शुक्ल (पक्ष)
श्रा. = श्रावण (मास)
सा. = साध्य (योग)
स्वा. = स्वाती (नक्षत्र)
स्मा. = स्मार्त (संप्रदाय)
सि. = सिद्धि (योग), सितम्बर (मास)
सिं. = सिंह (राशि)
सु. = सुकर्मा (योग)
सौ. = सौभाग्य (योग)
ह. = हस्त (नक्षत्र), हर्षण (योग)
हि. = हिन्दी (मास तारीख)

धर्मवत्स प्रकाशन, 2596, 4ª मंजिल दिल्ली 110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वक्तव्य

श्री आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र की स्थापना सन् १९८३ में हुई और भारत सरकार से इसका पंजीकरण भी यथाविधि हो चुका है। इसका उद्देश्य भारत की प्राचीन विद्याओं, ज्योतिष गणित, सामुद्रिक शास्त्र, हस्तरेखा विज्ञान, अंक ज्योतिष, रमल ज्योतिष, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र शास्त्र, स्वरोदय, राजयोग आदि का प्रचार-प्रसार करना है। पहले इन विद्याओं को राज्याश्रय प्राप्त था और हिन्दू राजाओं के राज्य काल में इनकी बहुत उन्नति हुई। परन्तु इस्लामी तथा ईसाई धर्मावलम्बी शासन में हमारी प्राचीन संस्कृति का उत्थान तो क्या उत्तरी भारत में प्राचीन ग्रन्थों तथा इनके आश्रय स्थलों का बलात् संहार किया गया। इसके ज्ञाता विद्वानों की संख्या में दिनोदिन कमी होती गई और विदेशी प्रभाव के फलस्वरूप देशी लोगों का इन विद्याओं पर विश्वास कम होता गया। इसमें स्वार्थी ठग व अज्ञानी ज्योतिषियों के व्यवहार ने भी जनता के मानस में इन विद्याओं के प्रति अविश्वास तथा अरुचि की ही वृद्धि की।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद धर्म निरपेक्ष संविधान के अन्तर्गत अन्य धर्मों तथा संस्कृतियों के समान हमको अपने प्राचीन लुप्त गौरव संस्कृति तथा महान् विद्याओं को फिर से उजागर करने की स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। विशेष रूप से जब विदेशी विद्वानों ने हमारे वेद, पुराण, शास्त्रों, उपनिषदों आदि के अध्ययन के पश्चात् हमारी विद्याओं, कलाओं और दर्शन आदि को प्रकाशित तथा प्रशंशित किया तब हमारे देश वासियों को भी अपने यथार्थ का ज्ञान हुआ और हम भी इनकी खोज, अनुसन्धान, प्रचार-प्रसार की ओर अधिक आकर्षित हुये। इस युग के महापुरुष श्री राम कृष्ण परमहंस देव के जीवन दर्शन को मैक्समूलर तथा रोमारोलां जैसे प्रख्यात विदेशी विद्वानों ने विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया। परमहंस देव के योग्य शिष्य स्वनाम धन्य स्वामी विवेकानन्द जी ने संयुक्त राज्य अमरीका के शिकागो नगर में विश्व धर्म सम्मेलन में हिन्दू धर्म की विजय पताका फहराई। स्वामी विवेकानन्द जी ने अमरीका, ब्रिटेन, योरोप आदि देशों में घूम-घूम कर हिन्दू धर्म का यथाशक्ति प्रचार किया। तदुपरान्त स्वामी रामतीर्थ जी ने भी विदेशों में यथाशक्ति प्रचार-प्रसार किया। इन महापुरुषों द्वारा स्थापित प्रचार केन्द्र देश-विदेश में आज तक अपना कार्य कर रहे हैं और इनके बताये मार्ग पर चलते हुए प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। उसके बाद तो अनेकों सन्त महापुरुषों तथा योगियों ने इसी मार्ग का अवलम्बन किया। इन सब प्रयासों के फलस्वरूप देश-विदेश में जन मानस में अपनी प्राचीन विद्याओं के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हुई।

इस समय अपने देश में बहुत सी संस्थायें हैं जो देश के प्राचीन गौरव, संस्कृति, कला कौशल तथा लुप्त विद्याओं के पुनरुत्थान तथा प्रचार-प्रसार में लगी हुई हैं। ज्योतिष विद्या हमारी प्राचीन विद्याओं में एक मुख्य विद्या है। वैदिक काल से यह चली आ रही है। यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि न तो इसे राज्य से कोई संरक्षण या प्रोत्साहन प्राप्त है और न देश के सम्पन्न वर्ग का सहयोग ही। फिर भी कुछ उत्साही जन अपने सीमित साधनों से इसको अपना उचित स्थान दिलाने के प्रयास में लगे हुए हैं। उत्तर भारत पर विदेशी बर्बर जातियों के लगातार आक्रमणों के फलस्वरूप हमारे बहुत से मठ, मन्दिरों, पूजा स्थानों के साथ-साथ बहुत से अमूल्य हस्तलिखित ग्रन्थ नष्ट हो गये। विदेशी प्रभाव से धर्म परिवर्तन से बचे लोगों के मानस पर अपने धर्म ग्रन्थों तथा प्राचीन विद्याओं की ओर रुचि नहीं रही। इस कारणण उत्तर भारत में इस विद्या का सब से अधिक ह्रास हुआ। जबकि दक्षिण भारत में धर्म साहित्य तथा प्राचीन विद्याओं का ज्ञान भण्डार अभी भी बहुत अंशों में सुरक्षित है। उस भू भाग के कतिपय विद्वान् प्राचीन ग्रंथों को अंग्रेजी भाषा के माध्यम से प्रचारित व प्रसारित करने के प्रयत्नों में लगे हुए हैं। उत्तर भारत में विशेष रूप से हिन्दी भाषी जनता को इन विद्याओं का ज्ञान कराने की बहुत आवश्यकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए देश के केन्द्र राजधानी दिल्ली में कुछ उत्साही जिज्ञासुओं ने आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र को पंजीकृत कराया है। इस केन्द्र ने ज्योतिष प्रेमी सज्जनों के लिये अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ **''शतक मार्त्तण्ड''** का सम्पादन व प्रकाशन करवाया है।

ज्योतिष शास्त्र आज जिस स्थान पर है, उसको इस स्तर तक पहुंचने में सैकड़ों वर्ष लगे हैं। समय-समय पर जिन विद्वानों ने नई खोजों, आविष्कारों तथा गणित के नियमों द्वारा इसकी प्रगति में सहयोग किया है उनका नाम ज्योतिष इतिहास में सदा अमर रहेगा। ऐसे ही एक महापुरुष ज्योतिष शास्त्र के परम ज्ञाता श्री आर्यभट्ट थे, जिनका जन्म ४७६ ई. में हुआ था। उन्होंने ज[illegible] का प्रसिद्ध ग्रन्थ ''आर्य भटीय'' कुसुमपुर (पटना) में लिखा। इसमें सूर्य और तारागणों के स्थिर होने और पृथ्वी के घूमने के कारण दिन और रात होने का वर्णन है। सूर्य और चन्द्र ग्रहण के वैज्ञानिक कारणों की व्याख्या है। स्वर और व्यञनों की सहायता से बड़ी-बड़ी संख्याओं की गणना करने की रीति बनाई है। वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल आदि गणित विद्याओं का वर्णन सर्व प्रथम इसी ग्रन्थ में मिलता है। इन्ही महापुरुष के नाम पर **''आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र''** का नाम रखा गया है। आशा है इनके नाम से प्रोत्साहन पाकर अर्वाचीन विद्वान नये-नये प्रयोग व आविष्कार करने में सफल होंगे।

''शतक मार्त्तण्ड'' जैसे उपयोगी ग्रन्थ का प्रकाशन करने के बाद एक ऐसे पंचांग के प्रकाशन का निर्णय लिया गया जिसमें ज्योतिषियों के लिए उपयोगी अधिक से अधिक विषय सरल सुलभ भाषा में समाविष्ट किये जा सकें। अतः हमने ''श्री आर्यभट्ट पंचांग'' ज्योतिषियों के लाभार्थ सम्पादन तथा प्रकाशन आरम्भ किया। ज्योतिष प्रेमी सज्जनों तथा विद्वानों से हमारा विनम्र निवेदन है कि वे त्रुटियों के लिये क्षमा प्रदान करते हुए अपने सुझाव तथा परामर्शों द्वारा प्रोत्साहन प्रदान करेंगे ताकि अगले अंक में अधिक से अधिक परम उपयोगी विषयों का समावेश किया जा सके।

–सम्पादक

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

एक और प्रयास ज्योतिष सेवा के निमित्त

आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र की स्थापना श्री धर्मपाल जी अग्रवाल के विशेष परिश्रम तथा सहयोग से ही सम्भव हो सकी है। श्री धर्मपाल जी मै. धर्मसन प्रकाशन के वरिष्ठ भागीदार हैं। धर्मसन प्रकाशन गत २०-२२ वर्षों से कतिपय श्रेष्ठ पंचांगों का उच्चस्तर का प्रकाशन करता आ रहा है। विभाजन से पूर्व लाहौर में इनके पूज्य पिताजी की प्रकाशन संस्था मै. मेहरचन्द एण्ड सन्स भी तत्कालीन उच्च-कोटि के हिन्दी, श्री विश्व मार्तण्ड पंचांग तथा उर्दू मेहर आलम आदि जन्त्रियों के प्रकाशक थे। पैतृक व्यवसाय होने के कारण पंचांग प्रकाशन कार्य इनको रक्त में ही उत्तराधिकार स्वरूप मिला। आप अब तक ५० वर्ष का व्यक्तिगत अनुभव भी अर्जित कर चुके हैं।

श्री मार्तण्ड परिवार के उर्दू, पंजाबी, हिन्दी भाषा में प्रकाशित श्री मार्तण्ड आलम जन्त्री (मेहर आलम जन्त्री), शिरोमणि तिथि प्रत्रिका और श्री बटुक पंचांग आदि विभाजन पूर्व श्री मेहरचन्द एण्ड सन्स लाहौर के द्वारा प्रकाशित होते रहे हैं। और आजकल सं. २०४२ से धर्मसन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किये जाते हैं। उपरोक्त पंचांग व जन्त्रियों के प्रकाशन स्तर में गत ४ वर्षों में ही अभूतपूर्व प्रगति हुई है। सं. २०३३ से श्री विश्वविजय पंचांग का प्रकाशन भी धर्मसन प्रकाशन द्वारा आरम्भ किया गया और सं. २०४१ तक यह पंचांग इसी प्रकाशन संस्था द्वारा प्रकाशित किया जाता रहा। इन वर्षों में इस पंचांग की लोक प्रियता में जो गुणात्मक वृद्धि हुई उसका श्रेय अधिकांश में इसकी सुचारू प्रकाशन व्यवस्था को ही है। धर्मसन प्रकाशन इस वर्ष से (श्री प्रेमपाल कौशिक जी का) राजधानी पंचांग भी प्रकाशित कर रहा है, गत ४-५ वर्षों से पं. जीयालाल जी के असली पंचांग तथा मशहूर आम जन्त्री हिन्दी, उर्दू और सं. २०३६ (सन् १९७९) से लाहौर के प्रसिद्धि पं. देवीदयाल जी के पंचांग दिवाकर, मुफीद आलम जन्त्री हिन्दी, उर्दू प्रकाशित होते हैं। इसके अलावा उत्तरी भारत के अधिकांश प्रमुख पंचांग भी धर्मसन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित होते हैं।

आजकल पंचांग तो काफी संख्या में प्रकाशित हो रहे हैं परन्तु अच्छे स्तर के पंचांगों की संख्या उंगलियों पर गिनी जा सकती है। इनमें भी दिल्ली के अक्षांश पर आधारित पंचांग तो एकाध ही हैं। कुछ समय पहिले तक ज्योतिष के शास्त्रोक्त ग्रंथ संस्कृत भाषा में ही उपलब्ध थे और भाषा टीका सहित पुस्तकों की भाषा भी संस्कृत निष्ठ कठिन भाषा ही रहती थी। अभी गत कुछ वर्षों से ज्योतिष शास्त्र पर हिन्दी में पुस्तकों का प्रकाशन आरम्भ हुआ है। जिनके द्वारा सर्वसाधारण में भी ज्योतिष के गूढ़ तत्वों के ज्ञान का प्रचार हुआ है। परन्तु अधिकांश पंचांगों में अभी तक बहुत से विषयों की जानकारी केवल संस्कृत भाषा में अथवा संस्कृत निष्ठ क्लिष्ठ हिन्दी में दी जाती है। इस कारण हिन्दी जानने वाले ज्योतिष प्रेमीजन तो उसे समझ ही नहीं पाते, बहुत से पंडित और ज्योतिषी भी कठिनाई का अनुभव करते हैं। संस्कृत देवभाषा है और हमारा बहुत सा ज्ञान भण्डार इस भाषा में संचित है इसमें कोई भी संदेह नहीं। परन्तु खेद है कि इस भाषा को पढ़ने व जानने वालों की संख्या दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है। आज आवश्यकता इस बात की है कि प्राचीन संचित ज्ञान भण्डार को सरल सुबोध भाषा में वर्तमान परिपेक्ष्य में हिन्दी भाषी जनता को उपलब्ध कराया जाय। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर आर्यभट्ट पंचांग का प्रकाशन आरम्भ किया गया है।

इस पंचांग के सम्पादक पं. लक्ष्मीनारायण शर्मा बी.ए. प्रभाकर साहित्यरत्न ज्योतिष वाचस्पति की ज्योतिष प्रथमा, गणित ज्योतिष प्रथमा गणित, फलित, अंक ज्योतिष, हाथ की रेखाएं, स्वरोदय शिक्षा, राजयोग शिक्षा, मंत्र-तन्त्र साधना और तंत्र विद्या नाम से पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। सौ साल के पंचांग **'शतक मार्तण्ड'** का सम्पादन भी किया है। ज्योतिष प्रेमी सज्जनों ने उनकी सरल सुबोध भाषा तथा विषय प्रतिपादन शैली की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। इस पंचांग के पाठकों को उनके अध्ययन अनुभव भाषा व शैली का दिग्दर्शन स्थान-२ पर प्राप्त होगा।

श्री आर्यभट्ट पंचांग का प्रकाशन कार्य श्री आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र के अन्तर्गत प्रकाशन कार्य के अनुभवी श्री धर्मपाल जी के निर्देशन में ही किया गया है। आशा है ज्योतिष प्रेमी सज्जन इसके मुद्रण औ साज सज्जा को सन्तोष जनक पायेंगे। हमारा प्रयास रहेगा कि आगामी वर्षों में और भी अधिक उपयोगी सामग्री सम्मिलित करें और पंचांग का स्तर उत्तरोत्तर उत्तम बनाया जाये। इस विषय में आपके सुझाव आमन्त्रित हैं। पंचांग का अभी शैशव काल है। त्रुटियों का रहना स्वाभाविक है। आशा है विद्वज्जन त्रुटियों को क्षमा करते हुए इन्हें प्रोत्साहित करेंगे ताकि ज्योतिष प्रेमी जनता की वृहत्तर सेवा कर सकें।

आर.एन. पाण्डे
दिल्ली

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

महर्षि आर्यभट्ट

वराहमिहिर और आर्यभट्ट हमारे प्राचीनतम आचार्यों में से हैं। वराहमिहिर ने प्रसिद्ध ज्योतिष ग्रन्थ 'वृहद् जातक' की रचना की और आर्यभट्ट प्रथम ने 'आर्यभटीय' ग्रन्थ लिखा। ज्योतिष का क्रमबद्ध इतिहास आर्यभट्ट के समय से ही मिलता है; यद्यपि वेदों के समय से ज्योतिष का ज्ञान आरम्भ हो गया था और ज्योतिष वेद के प्रमुख अंगों में से एक है। तब से आर्यभट्ट के समय तक सूर्यादि ग्रह, काल बोध, ग्रह-नक्षत्र, धूमकेतु, ग्रहण, ग्रहनक्षत्रों की गति स्थिति का ज्ञान, सिद्धान्त, होरा, प्रश्न, शकुन, ज्योतिष आदि का आविष्कार हो गया था। नक्षत्रों की आकृति, स्वरूप, गुण, प्रभाव आदि की परिभाषा, ऋतु, अयन, दिनमान लग्नादि के शुभाशुभ फलों का ज्ञान, राशियों और ग्रहों के स्वरूप, रंग, दिशा, तत्व, धातु आदि का विवेचन, ब्राह्मण और आरण्यक ग्रन्थों की रचना काल तक पूर्णरूप से ज्ञात हो गये थे। ग्रहों की गति, स्थिति, अयनांश, मुहूर्त, शुभाशुभ समय का निर्णय, यथा ज्योतिष के पांचों अंगों-होरा, सिद्धान्त, गणित, संहिता, मुहूर्त, फलित, प्रश्न तथा शकुन शास्त्र की निरन्तर उन्नति होती गई थी।

अन्य शास्त्रों के समान ज्योतिष के आविष्कर्त्ता भी भारतीय ही हैं। योगाभ्यास द्वारा प्राचीन ऋषियों ने अपनी सूक्ष्म प्रज्ञा से शरीर के अन्दर ही समस्त सौर मण्डल के दर्शन किये और आत्म-निरीक्षण से आकाशीय सौर मण्डल की व्याख्या की। अंक विद्या ही इस शास्त्र का आधार है और इसका श्री गणेश भारत में ही हुआ था। प्राचीन भारत में तक्षशिला, नालन्दा आदि स्थानों पर विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षण संस्थायें थीं, जहां पर दूर-दूर देशों के विद्यार्थी विद्याध्ययन करने के लिए आते थे और अपने देशों में जाकर इसका प्रचार करते थे। ऋग्वेद तथा शतपथ ब्राह्मण के अध्ययन से पता चलता है कि कम-से-कम २८००० वर्ष पहले भी भारतीयों ने खगोल तथा ज्योतिष-शास्त्र का पूर्ण रूप से मन्थन कर लिया था।

आर्यभट्ट नाम के दो विद्वान् ज्योतिषी हुए हैं। आर्यभट्ट प्रथम का जन्म ईस्वी सन् ४७६ में हुआ था। अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'आर्यभटीय' में इन्होंने सूर्य एवं तारागण के स्थिर होने तथा पृथ्वी के घूमने के कारण दिन और रात होने का वर्णन किया है। इन्होंने पृथ्वी की परिधि ४९६७ योजन बताई है, सूर्य और चन्द्रग्रहण के वैज्ञानिक कारणों की व्याख्या की है। काल-क्रिया पाद में युग के दो समान भाग करके पूर्व भाग को उत्सर्पिणी तथा उत्तर भाग को अवसर्पिणी संज्ञा दी है तथा प्रत्येक के छः छः भेद बताये हैं। ग्रहों को स्पष्ट करने की विधि बतलाई है। बुध और शुक्र को विलक्षण संस्कार से स्पष्ट करना बताया है। सबसे महत्वपूर्ण कार्य इन्होंने यह किया कि अंक (संख्या) के द्योतक क, ख, ग आदि वर्णों की कल्पना की और अ, आ, इ, ई आदि स्वर वर्ण तथा क, ख, ग आदि व्यंजन वर्णों को एक-एक संख्या-वाचक अर्थ देकर बड़ी-बड़ी संख्याओं को लिखने की विधि का आविष्कार किया। इसी विधि को बाद में रोमनों ने अंग्रेजी अक्षरों में भी लिया; जैसे-पांच के लिए V, दस के लिए X आदि-आदि।

महर्षि आर्यभट्ट ने क = १, ख = २, ग = ३, घ = ४, ङ = ५, च = ६, छ = ७, ज = ८ इसी प्रकार क्रम से म = २९, य = ३०, र = ४०, ल = ५०, व = ६०, श = ७०, ष = ८०, स = ९०, ह = १००; क = एक, कि = सौ, कु = दस हजार, कृ = दस लाख, क्लृ = दस करोड़, के = दस अरब, कै = दस खरब, को = दस नील, कौ = दस शंख; इसी प्रकार ख = दो, खि = दो सौ, खु = बीस हजार आदि-आदि। इसी प्रकार वर्णों द्वारा संख्यायें लिखने की विधि विस्तार से समझायी है। आर्यभट्ट ने अपने विख्यात ग्रन्थ 'आर्यभटीय' की रचना प्राचीन कुसुमपुर में (जो आज का पटना नगर है) रहकर की थी। इस ग्रन्थ के गणित पाद (प्रकरण) में वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल एवं अन्य व्यवहार श्रेणियों का विशद विवेचन किया है।

आर्यभट्ट द्वितीय ब्रह्मगुप्त के बाद, यानि ९९८ ई. के बाद और भास्कराचार्य, जिनका काल १११४ ई. के पहले का है। इन दोनों के मध्य कभी हुए थे। इनका रचित ग्रन्थ 'महा आर्यभटीय' है। इसमें १८ अध्याय हैं, जिनमें पाटी गणित, क्षेत्र व्यवहार तथा बीज गणित भी सम्मिलित है। प्रथम आर्यभट्ट के सिद्धान्तों में इन्होंने कई संशोधन किये। इस ग्रन्थ की परम्परा को बाद के अनेक ज्योतिषियों ने अपनाया। इसी कारण इनका ग्रन्थ 'महा आर्यभटीय' भी बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इनके जीवन के विषय में विशेष कुछ ज्ञात नहीं है, परन्तु इनकी अपूर्व विद्वता तथा महान पाण्डित्य इनके अनुपम ग्रन्थ से ही ज्ञात हो जाता है। दोनों ही आर्यभट्ट ज्योतिष के महान् विद्वान थे और इसी कारण भारत ने अपने उपग्रह का नाम इनके नाम पर रखा। ये दोनों विद्वान् महान गणितज्ञ थे और आधुनिक वैज्ञानिक उपग्रह प्रणाली आदि उन्हीं के द्वारा बताये गणित को और आगे बढ़ाते हुए आज की उच्च अवस्था तक पहुंची है।

हमने अपनी अनुसंधान संस्था का नामकरण इन्हीं विभूतियों के नाम पर किया है और आशा करते हैं कि इनके आशीर्वाद से हम ज्योतिष विद्या में नई-नई बातों का शोध व आविष्कार करने में सफलता प्राप्त करेंगे और इनके नाम के अनुसार प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। हम ज्योतिष-प्रेमियों से पूर्ण सहयोग की आशा करते हैं और अनुरोध करते हैं कि आप अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

-लक्ष्मी नारायण शर्मा
बी.ए. प्रभाकर, साहित्यरत्न
ज्योतिष वाचस्पति

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

व्रतोत्सव, अवकाश दिन तथा वर्गीकृत त्यौहारादि सं. २०६२ विक्रमी, शाके १९२७, सन् २००५-२००६ ई.

नववर्षारंभ, नवरात्रा प्रा., गुड़ी पड़वा	९ अप्रैल	श्री नृसिंह १४, छिन्नमस्ता जयंती	२२ मई	श्री जगदीश रथ यात्रा (उड़ीसा)	८ जुला.	हयग्रीव जयंती,उपाकर्म (ऋग्वेदीनाम्)	१८ अग.
आर्य समाज स्थापना दि., गौतम जयंती	९ "	वैशाखी पूर्णिमा, सत्यव्रत, कूर्म जयंती	२३ "	विनायक चतुर्थी व्रत	१० "	अजरत अली जन्म दिवस मु., सत्यव्रत	१९ "
सिन्धारा, चेटीचंड, झूलेलाल जयंती	१० "	वैशाख स्नान पूर्ति, बुद्ध पूर्णिमा, पीपल पू.	२३ "	स्कन्द पंचमी	११ "	श्रावणी पू., रक्षाबन्धन, अमरनाथ दर्शन	१९ "
मत्स्य जयंती, मनोरथ तृतीया	११ "	अशोक त्रिरात्री व्रत पूर्ति	२३ "	कुमार षष्ठी व्रत	१२ "	सिंधारा	२१ "
सौभाग्य तृतीया, गणगौरी पूजा	११ "	जिनवर व्रत प्रा. जैन	२४ "	विवस्वत सप्तमी, सूर्य पूजा	१३ "	कज्जली (बड़ी) तीज, सातुड़ी तीज	२२ "
विनायक चौथ व्रत	१२ "	श्री नारद जयंती, मां आनन्दमयी ज.	२६ "	दुर्गाष्टमी, जैन अट्ठाई प्रा.	१४ "	कृष्ण चतुर्थी व्रत, बहुला चौथ	२२ "
हय व्रत पंचमी, वैशाखी (पंजाब)	१३ "	कृष्ण चतुर्थी व्रत	२६ "	खरसी पूजा (त्रिपुरा)	१५ "	रक्षा पंचमी, चन्द्र षष्ठी व्रत	२४ "
स्कन्द षष्ठी व्रत, डॉ. अम्बेडकर ज.	१४ "	जवाहरलाल नेहरू पुण्य तिथि	२७ "	भड़ुली ९, मेला शरीफ भवानी (क.)	१६ "	ललही छठ, माधव देव तिथि (असम)	२५ "
जैन आयंबिल ओली प्रारम्भ	१५ "	कालाष्टमी, दादूदयाल पुण्य तिथि	३० "	आशा दशमी, उल्टी रथयात्रा (उड़ीसा)	१७ "	कालाष्टमी, संत ज्ञानेश्वर जयंती	२६ "
दुर्गा अष्टमी, भवान्युत्पत्ति	१६ "	अपरा एका. व्रत	२ जून	चातुर्मास नियमादि प्रारम्भ	१७ "	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत	२६-२७ "
श्री राम नवमी, नवरात्रा समाप्त	१८ "	मधुसूदन द्वादशी, अनन्तनाथ जन्म जैन	३ "	देवशयनी एकादशी	१७-१८ "	गोगा नवमी, नंदोत्सव (गोकुल)	२८ "
कामदा ११ व्रत, लक्ष्मीकांत दोलोत्सव	२० "	शनि प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रत प्रा.	४ "	भौम प्रदोष व्रत, जया पार्वती व्रतारंभ	१९ "	अजा एकादशी व्रत	३० "
हरिदमनोत्सव, प्रदोष व्रत	२१ "	मास शिवरात्रि व्रत, विश्व पर्यावरण दि.	५ "	चौमासी चौदश (जैन), वायु परीक्षा	२० "	वत्स १२, बच्छ बारस	३१ "
महावीर जयंती जैन, अनंग त्रयोदशी	२२ "	देवपितृ कार्यामावस्या, भावुका अमा.	६ "	पूर्णिमा व्रत	२० "	प्रदोष व्रत, शब्बे मिराज (मु.)	१ सितं.
ईद-ए-मिलाद (बारावफात)	२२ "	सोमवती अमावस्या, शनि जयंती	६ "	सत्यव्रत, आषाढ़ी पूर्णिमा	२१ "	पर्यूषण पर्व प्रा. जैन	१ "
दमनक चतुर्दशी	२३ "	वट सावित्री व्रत पूर्ति	६ "	गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा	२१ "	मास शिवरात्रि व्रत, अघोरा १४ व्रत	२ "
सत्यव्रत, चैत्री पूर्णिमा, हनुमान जयंती	२४ "	करवीर व्रत	७ "	लोकमान्य तिलक जयंती	२३ "	देवपितृकार्या अमावस्या, पिठौरी ३०,	३ "
आयंबिल ओली समा.,बैशाख स्नान प्रा.	२४ "	रंभा तृतीया व्रत	९ "	कृष्ण चतुर्थी व्रत	२४ "	कुशोत्पाटिनी अमावस्या, नक्त व्रत पूर्ति	३ "
कृष्ण चतुर्थी व्रत, अनसूया जयंती	२६ "	महाराणा प्रताप जंयती, विनायक ४ व्रत	१० "	नाग पंचमी (मरुस्थले)	२५ "	मेला सुथरेशाह (दिल्ली)	३ "
शीतला पूजन, बूढ़ा बासौड़ा	३० "	श्रुति पंचमी (जैन)	१२ "	श्रावण सोमवार व्रत	२५ "	नक्त व्रत उद्यापन	५ "
कालाष्टमी, विश्व मजदूर दिवस	१ मई	विन्ध्यवासिनी पूजा, अरण्य छठ	१३ "	शीतला सप्तमी (उड़ीसा)	२७ "	हरितालिका ३ व्रत, वाराह जयंती	६ "
वरूथिनी एका. व्रत, बल्लभाचार्य ज.	४ "	दुर्गाष्टमी, धूमावती जयंती	१५ "	कालाष्टमी	२८ "	श्री गणेश जन्म चतुर्थी, कलंक ४	७ "
प्रदोष व्रत	५ "	श्री माहेश्वरी नवमी	१६ "	कामदा एकादशी व्रत	३१ "	विनायक ४ व्रत, पत्थर चौथ	७ "
मास शिवरात्रि व्रत	६ "	गंगा दशहरा, रामेश्वर प्रतिष्ठा दिवस	१७ "	श्रावण सोमवार व्रत, लोकमान्य तिलक पुण्यं	१ अग.	पर्यूषण व्रत पूर्ति जैन	७ "
रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती	७ "	निर्जला एका. व्रत, गायत्री जयंती	१८ "	भौम प्रदोष व्रत	२ "	ऋषि पंचमी, जैन सम्वत्सरी	८ "
देवपितृकार्य अमावस्या, शुकदेव ज.	८ "	प्रदोष व्रत, चंपक द्वादशी	१९ "	मास शिवरात्री व्रत	३ "	सूर्य षष्ठी, बलदेव छठ	१० "
शहादते इमाम हसन (मु.)	८ "	सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रत	२१ "	देवपितृकार्या अमा., हरियाली अमा.	५ "	मुक्ताभरण सप्तमी, सन्तान सप्तमी	१० "
देव दामोदर पुण्य तिथि	९ "	वटसावित्री व्रतारंभ गुज.	२१ "	सिंधारा	७ "	महालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ	१० "
श्री परशुराम ज., शिवाजी जयंती	१० "	ज्येष्ठी पूर्णिमा, जिनवर व्रत पूर्ति जैन	२२ "	हरियाली तीज, मधुश्रवा, छोटी तीज	८ "	दुर्गाष्टमी, राधाष्टमी, दधीचि जयंती	११ "
अक्षय तृतीया	११ "	कबीर जयंती, कोजागरी व्रत	२२ "	श्रावण सोमवार व्रत	८ "	श्री चन्द नवमी, अदुःख नवमी	१२ "
विनायक चतुर्थी व्रत, सूरदास जयंती	१२ "	वट सावित्री व्रत पारणा	२३ "	विनायक चतुर्थी व्रत, भा. क्रांति दि.	९ "	दशावतार दशमी	१३ "
आद्य शंकराचार्य जयंती	१३ "	गुरु हरगोविन्द सिंह जयंती	२३ "	नाग पंचमी देशाचारे, अमरनाथ यात्रा	१० "	पद्मा (जलझुलनी) एकादशी व्रत	१४ "
श्री रामानुजाचार्य जयंती	१३-१४ "	कृष्ण चतुर्थी व्रत	२४ "	वर्ण श्रृयाल षष्ठी, कल्की जयंती	११ "	भा. हिन्दी दिवस	१४ "
गंगा सप्तमी पूजन	१५ "	नाग पंचमी (बंगाल)	२६ "	गोस्वामी तुलसीदास जयंती	१२ "	श्री वामन जयंती, भुवनेश्वरी जयंती	१५ "
दुर्गाष्टमी, बगलामुखी जयंती	१६ "	कालाष्टमी	२९ "	दुर्गाष्टमी, दुर्गाष्टमी व्रत	१३ "	श्रावण १२, प्रदोष व्रत, भा. इंजिनियर्स डे	१५ "
सीता नवमी	१७ "	योगिनी एकादशी व्रत, गोपद्म व्रतोद्यापन	२ जुला.	५९वाँ भारतीय स्वतंत्रता दिवस	१५ "	गोत्रिरात्रि व्रत प्रा.	१६ "
मोहिनी एकादशी व्रत	२० "	प्रदोष व्रत	३ "	श्रावण सोमवार व्रत	१५ "	अनन्त चतुर्दशी व्रत, गोत्रिरात्रि व्रत पूर्ति	१७ "
शनि प्रदोष व्रत, फातिहा यजदहुम (मु.)	२१ "	मास शिवरात्रि व्रत	४ "	पवित्र (पुत्रदा) एकादशी व्रत	१६ "	सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रत	१७ "
रुकमणी द्वादशी, अशोक त्रिरात्रि व्रत प्रा.	२१ "	देवपितृकार्याऽमावस्या	६ "	प्रदोष व्रत	१७ "	प्रौष्ठपदी पूर्णिमा श्राद्ध, महालयारंभ	१७ "

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

प्रतिपदा श्राद्ध	१८ सित.
द्वितीया श्राद्ध, शब-ए-बारात (मु.)	१९ "
तृतीया श्राद्ध	२० "
कृष्ण चतुर्थी व्रत	२१ "
महालक्ष्मी व्रत पूर्ति	२४ "
कालाष्टमी	२५ "
मातृ नवमी, भूदान जयंती	२६ "
इन्दिरा एकादशी व्रत	२८-२९ "
प्रदोष व्रत	३० "
मास शिवरात्रि व्रत	१ अक्टू.
महात्मा गांधी व शास्त्री जन्म दिवस	२ "
देवपितृकार्य अमा., पितृ विसर्जन	३ "
शारदीय नवरात्र प्रा., अग्रसेन जयंती	४ "
रमजान रोजा प्रा. (मु.)	६ "
विनायक चौथ व्रत	७ "
उपांग ललिता ५ व्रत, भा. वायुसेना दि.	८ "
सरस्वती आवाहन	९ "
सरस्वती पूजन, अन्नपूर्णा परिक्रमा प्रा.	१० "
दुर्गाष्टमी, भद्रकाल्यावतार	११ "
सरस्वत्यै बलिदान, अन्नपूर्णा परि. पूर्ण	११ "
महानवमी, दुर्गा नवमी	१२ "
सरस्वती विसर्जन, नवरात्र पूर्ति	१२ "
विजया १०, अस्त्र-शस्त्र पूजन	१२ "
बौद्धावतार १०, माधवाचार्य जयंती	१३ "
पापांकुशा एकादशी व्रत	१३-१४ "
शनि प्रदोष व्रत	१५ "
शरद पूर्णिमा व्रत, कोजागरी व्रत	१६ "
सत्यव्रत, वाल्मीकि ज., कार्तिक स्नान प्रा.	१७ "
कृष्ण चतुर्थी व्रत, करवा चौथ व्रत	२० "
महामना मालवीय पुण्य दिवस	२३ "
कालाष्टमी, अहोई अष्टमी	२५ "
शहादत-ए-हजरत अली (मु.)	२६ "
रमा एकादशी व्रत, जुमातुलविदा (मु.)	२८ "
गोवत्स द्वादशी	२९ "
प्रदोष व्रत, धन त्रयोदशी, धनवंतरी ज.	३० "
शब-ए-कद्र (मु.)	३० "
मास शिवरात्रि व्रत, नरक १४, रूप १४	३१ "
सरदार पटेल जं., इंदिरा गांधी पु.ति.	३१ "
दीपावली, महालक्ष्मी पूजन	१ नवं.
महावीर निर्वाण दि., देवपितृकार्य अमा.	१ "
गोवर्धन पूजा, अन्नकूट	२ नवं.
भैया दूज, यम द्वितीया	३ "
ईद-उल-फितर ईद (मु.)	४ "
विनायक चतुर्थी व्रत	५ "
सौभाग्य पंचमी, पांडव पंचमी	६ "
गुरु गोविन्द सिंह बलिदान दिवस	६ "
सूर्य षष्ठी व्रत, डाला छठ	७ "
दुर्गाष्टमी, गोपाष्टमी	९ "
अक्षय नवमी, कूष्माण्ड ९, आंवला ९	१० "
भीष्म पंचक प्रारम्भ	११ "
देवप्रबोधिनी एका. व्रत, तुलसी विवाह	१२ "
चातुर्मास व्रत नियम पूर्ति	१२ "
प्रदोष व्रत, कालीदास जयंती	१३ "
वैकुण्ठ चौदस, चौमासी चौदस जैन	१४ "
पं. नेहरू जन्म दिवस, बाल दिवस	१४ "
सत्यव्रत, कार्तिकी पूर्णिमा	१५ "
कार्तिक स्नान पूर्ति, नानक जयंती	१५ "
निम्बार्काचार्य जयंती, देव दिवाली	१५ "
भीष्म पंचक पूर्ति	१५ "
सौभाग्य सुन्दरी व्रत	१८ "
कृष्ण चतुर्थी व्रत	१९ "
श्रीमती इन्दिरा गांधी जन्म दिवस	१९ "
श्री कालभैरवाष्टमी	२४ "
पद्मनाष्टमी (उड़ीसा)	२४ "
उत्पन्ना एकादशी व्रत	२७ "
भौम प्रदोष व्रत, संत ज्ञानेश्वर पु.ति.	२९ "
मास शिवरात्रि व्रत	३० "
देवपितृकार्यऽमावस्या, विश्व एड्स डे	१ दिसं.
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ज., विकलांग दिवस	३ "
विनायक ४ व्रत, संत घासीदास जयंती	५ "
नाग पंचमी (द.भा.), चम्पा षष्ठी व्रत	६ "
गुरु तेगबहादुर बलिदान दिवस	६ "
मित्र ७, नरसी मेहता ज., भा. झंडा दि.	७ "
दुर्गाष्टमी	८ "
महानन्दा नवमी	९ "
मोक्षदा एकादशी व्रत, गीता जयंती	११ "
व्यंजन १२, स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दि.	१२ "
भौम प्रदोष व्रत, अनंग त्रयोदशी	१३ "
गुरु ग्रन्थ साहेब वार्षिकोत्सव	१४ "
पिशाचमोचन श्राद्ध, त्रिपुर भैरव ज.	१४ "
मलमास प्रा., सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रत	१५ "
श्री दत्तात्रेय ज., अन्नपूर्णा जयंती	१५ दिसं.
कृष्ण चतुर्थी व्रत	१९ "
कालाष्टमी	२४ "
सफला एकादशी व्रत	२७ "
प्रदोष व्रत	२८ "
मास शिवरात्रि व्रत	२९ "
पितृकार्यऽमावस्या	३० "
देवकार्यऽमावस्या, वकुला अमा. उड़ीसा	३१ "

सन् २००६ ई.

ईसाई नववर्ष प्रारम्भ	१ जन.
विनायक चौथ व्रत	३ "
गुरु गोविन्द सिंह जयंती	६ "
दुर्गाष्टमी, शाकम्भरी यात्रा	७ "
शाम्ब दशमी (उड़ीसा)	९ "
पवित्रा (पुत्रदा) एका. व्रत, हज्ज मु.	१० "
प्रदोष व्रत, ईद-उल-जुहा बकरीद मु.	११ "
पूर्णिमा व्रत, लोहड़ी उत्सव (पंजाब)	१३ "
सत्यव्रत, मलमास पूर्ति, मकर संक्रांति	१४ "
माघ बिहु (असम), पोंगल (द.भा.)	१४ "
माघ स्नान प्रारम्भ	१४ "
भारतीय थल सेना दिवस	१५ "
कृष्ण चतुर्थी व्रत, संकट चौथ	१८ "
स्वा. विवेकानंद ज., श्री रामानंदाचार्य ज.	२१ "
कालाष्टमी	२२ "
नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयंती	२३ "
षट्तिला एका. व्रत, वंजुली महाद्वादशी	२६ "
५७वां भारतीय गणतंत्र दिवस	२६ "
प्रदोष व्रत	२७ "
मास शिवरात्रि व्रत, ला. लाजपतराय ज.	२८ "
देवपितृकार्यऽमावस्या, मौनी अमा.	२९ "
श्री वल्लभाचार्य ज., महात्मा गांधी पु.दि	३० "
गौरी तृतीया, तिल चौथ	१ फर.
वसंत पंचमी	२ "
रथ ७, आरोग्य ७, श्री माधवाचार्य ज.	४ "
दुर्गाष्टमी, भीष्माष्टमी	५ "
जया एकादशी व्रत	८ "
भीष्म द्वादशी, मुहर्रम ताजिया (मु.)	९ "
प्रदोष व्रत	१० "
श्री रामचरण स्नेही जयंती	११ "
सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रत	१२ "
माघी पूर्णिमा, माघ स्नान पूर्ति	१३ "
संत रविदास जयंती	१३ फर.
वेलेण्टाइन डे	१४ "
कृष्ण चतुर्थी व्रत	१६ "
कालाष्टमी, सीताष्टमी	२१ "
समर्थ गुरु रामदास जयंती	२२ "
स्वामी दयानंद सरस्वती जयंती	२३ "
विजया एकादशी व्रत	२४ "
शनि प्रदोष व्रत	२५ "
महाशिवरात्रि व्रत, श्री वैद्यनाथ जयंती	२६ "
देवपितृकार्यऽमावस्या	२७ "
शिव खप्पर पूजा	२७ "
फुलरिया दूज, रामकृष्ण परमहंस जयंती	१ मार्च
पं. लेखरामवीर तृतीया	२ "
विनायक ४ व्रत, संत चतुर्थी (उड़ीसा)	३ "
याज्ञवल्क जयंती	४ "
दुर्गाष्टमी, अन्नपूर्णाष्टमी	७ "
होलाष्टक प्रा., दादुदयाल जयंती	७ "
विश्व महिला दिवस	८ "
आमलकी एकादशी व्रत	१० "
गोविंद द्वादशी	११ "
मेला खाटू श्याम जी (राज.)	११ "
प्रदोष व्रत	१२ "
सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रत, मौन मलमास प्रा.	१४ "
होलिका दहन, श्री चैतन्य महाप्रभु ज.	१४ "
वंसत प्रतिपदा, छारेड़ी	१५ "
धूलि वन्दन, फूलडोल	१५ "
संत तुकाराम जयंती	१६ "
कृष्ण चतुर्थी व्रत, आशा चौथ	१८ "
रंग पंचमी	२० "
एकनाथ षष्ठी	२१ "
शीतला सप्तमी	२२ "
चेहल्लम शहीद करबला (मु.)	२२ "
कालाष्टमी, शीतलाष्टमी	२३ "
ऋषभदेव जयंती जैन	२४ "
दशमाता व्रत, पापमोचनी एका. व्रत स्मा.	२५ "
पापमोचनी एकादशी व्रत वैष्णव	२६ "
सोम प्रदोष व्रत, मास शिवरात्रि व्रत	२७ "
आखिरी चहर शम्बा (मु.)	२७ "
देवपितृकार्यऽमावस्या	२९ "
चांद्र संवत्सर पूर्ति	२९ "

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इस्लामी त्यौहार

ईद-ए-मिलाद (बारावफात)	२२	अप्रैल
फतीहा दुजदहम	२१	मई
उर्स निजामुद्दीन औलिया प्रा.	२६-३०	"
वफात् सरमैयद हैमद खाँ	६	जुला.
उर्स ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती	११-१२	अग.
हजरत अली जन्म	१९	"
शब-ए-मिराज	१	सित.
शब-ए-बारात	१९	"
रमजान (रोजा) प्रा.	६	अक्टू.
उर्स अलीशाह कलन्दर पानीपत	१८	"
शहादते हजरती अली	२६	"
जुमातुल विदा	२८	"
शब-ए-कद्र	३१	"
ई-दुल-फितर	८	नवं.
उर्स ख्वाजा अमीर खुसरो दिल्ली	२९	"
वफात कायदे मो. आजम अली जिन्हा	१०	दिसं.
उर्स बाबा शाह लाल दयाल, कैथल	३१	"

सन् २००६ ई.

हज्ज	१०	जन.
ईद उल-जुहा (बकरीद)	११	"
मुहर्रम लजिया	९	फर.
चेहल्लम शहीद करबला	२१	मार्च
आखरी चहर शम्बा	२९	"

महापुरुष जयन्तियाँ (जैन)

मुनि सुमति नाथ	जयंती	१९	अप्रैल
" महावीर स्वामी	"	२१	"
" सुव्रत नाथ	"	३	मई
" कुन्थ नाथ	"	९	"
" अनन्त नाथ	"	३	जून
" शान्ति नाथ	"	६	"
" सुपार्श्वनाथ	"	१९	"
" नमिनाथ	"	३	जुला.
" नेमिनाथ	"	१०	अग.
" पद्म प्रभु	"	२९	अक्टू.
" सम्भव नाथ	"	१५	नवं.
" पुष्पदन्त नाथ	"	२	दिसं.
" मल्लि नाथ	"	११	"
मुनि अरह नाथ	जयंती	१४	दिसं.
" पार्श्व नाथ	"	२६	"
" चन्द्र प्रभु	"	२८	"

सन् २००६ ई.

" यतीन्द्र सुरीश्वर नाथ	"	२	जन.
" राजेन्द्र सुरीश्वर नाथ	"	६	"
" शीतल नाथ	"	२६	"
" विमल नाथ	"	१	फर.
" अजित नाथ	"	७	"
" अभिनन्दन नाथ	"	८	"
" धर्म नाथ	"	१०	"
" श्रेयांश नाथ	"	२४	"
" वासुपूज्य नाथ	"	२७	"
" ऋषभ नाथ	"	८	मार्च

महापुरुषों के जन्म दिन

श्री गौतम जयंती	९	अप्रैल
श्री झुलेलाल जयंती	१०	"
डॉ. अम्बेडकर जयंती	१४	"
सती अनसुया जयंती	२७	"
श्री बल्लभाचार्य जयंती	४	मई
श्री रवीन्द्र नाथ टैगोर जयंती	७	"
श्री शुकदेव जयंती	८	"
श्री परशुराम जयंती	१०	"
श्री शिवाजी जयंती	१०	"
श्री सूरदास जयंती	१२	"
श्री आद्य गुरु शंकराचार्य जयंती	१३	"
श्री रामानुजाचार्य जयंती	१४	"
देव ऋषि नारद जयंती	२६	"
श्री मां आनन्दमयी जयंती	२६	"
श्री महाराणा प्रताप जयंती	१०	जून
सन्त कबीर जयंती	२२	"
श्री लोकमान्य तिलक जयंती	२३	जुला.
गो. तुलसीदास जयंती	१२	अग.
संत ज्ञानेश्वर जयंती	२६	"
डॉ. राधाकृष्णन जयंती	५	सितं.
श्री दधीचि जयंती	११	"
श्री विनोबा भावे जयंती	११	"
श्री विश्वकर्मा जयंती	१७	"
श्री महात्मा गांधी व शास्त्री जयंती	२	अक्टू.
श्री अग्रसेन जयंती	४	"
श्री माधवाचार्य जयंती	१३	"
महर्षि बाल्मीकि जयंती	१७	"
श्री धन्वन्तरि जयंती	३०	"
श्री सरदार पटेल जयंती	३१	"
श्री जलराम जयंत	८	नवं.
श्री कवि कालीदास जयंती	१३	"
श्री नेहरू जयंती	१४	"
श्री निम्बार्काचार्य जयंती	१५	"
श्रीमती इन्दिरा गांधी जयंती	१९	"
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जयंती	३	दिसं.
भक्त नरसी मेहता जयंती	७	"
श्री दत्तात्रेय जयंती	१५	"
पं. मदनमोहन मालवीय जयंती	२५	"
श्री ईसा जयंती	२५	"

सन् २००६ ई.

स्वा. विवेकानन्द जयंती	२१	जन.
श्री रामानन्दाचार्य जयंती	२१	"
श्री नेताजी सुभाष जयंती	२३	"
श्री लाला लाजपतराय जयंती	२८	"
योगी बाबा लालदयाल जयंती	३१	"
श्री माधवाचार्य जयंती	४	फर.
श्री रामचरण स्नेही जयंती	११	"
संत रविदास जयंती	१३	"
समर्थ गुरु रामदास जयंती	२२	"
स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती	२३	"
श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती	१	मार्च
श्री याज्ञवल्क जयंती	४	"
श्री दादूदयाल जयंती	७	"
श्री चैतन्य महाप्रभु जयंती	१४	"
श्री संत तुकाराम जयंती	१६	"

प्राचीन मेला-दशहरा तथा अन्य उत्सव

मेला आर्यसमाज स्थापना दि.	९	अप्रैल
" चीमा नानक सर (पंजाब)	९	"
" गणगौर जयपुर (राज.)	११	"
" माई सरखाना (पंजाब)	१४	"
मेला मनसा देवी (हरियाणा)	१६	अप्रैल
" बाहुफोर्ट (जम्मू-कश्मीर)	१६	"
" ज्वालामुखी (हरचोवाल)	१६	"
" ज्वालामुखी (गुरदासपुर)	१६	"
" रामजन्मोत्सव (अयोध्या)	१८	"
" कांसा देवी (रोपड़ कांसल)	२२	"
" देवी धोहरा (कैथल)	२३	"
" बाला सुन्दरी देवबन्द (उ.प्र.)	२३	"
" मानकपुर शरीफ (रोपड़)	२४	"
" हनुमान जन्मोत्सव सालासर (राज.)	२४	"
" कशाश्रा नहयाणी सह-कुल्लू	३०	"
" पिंजोर (हरियाणा)	८	मई
" पीपल जातर (कुल्लू)	१२	"
" आनी आउडर सिराज (कुल्लू)	२३	"
" डूंगरीजातर (मनाली)	३०	"
" बंजार (कुल्लू)	३०	"
" चनानी माताजी	३०	"
" शाढ़ी जातर नगर (हि.प्र.)	१	जून
" हल्दीघाटी (राज.)	१०	"
" क्षीरभवानी कश्मीर	१५	"
" गंगा दशहरा (हरिद्वार)	१७	"
" सपोर यात्रा धारलदा-बुधमपुर	१७	"
" बहिरे भटिण्डा (पंजाब)	१८	"
" पिपलू (ऊना, हि.प्र.)	१८	"
" शुद्ध महादेव यात्रा (ऊधमपुर)	२२	"
" भुन्तर (हि.प्र.)	२९	"
" शरीफ भवानी (कश्मीर)	१६	जुला.
" ज्वालामुखी (कश्मीर)	२०	"
" नैमिषारण्य (उ.प्र.)	२१	"
" गुरु पूर्णिमा (कुराली)	२१	"
" नानकसर (चीमा)	२४	"
" हरियाली अमा. (उदयपुर)	५	अग.
" चिन्तपूर्णी व नयना देवी-हि.प्र.	१३	"
" अमरनाथ दर्शन (कश्मीर)	१९	"
" द्रोण दनकौर (उ.प्र.)	२६	"
" जन्माष्टमी (मथुरा)	२७	"
" नंदोत्सव (गोकुल)	२८	"
" कैलाश यात्रा (कश्मीर) प्रा.	१	सितं.
" सुथरेशाह (दिल्ली)	३	"
" गुसाईं आंणा (कुराली)	५	"

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मेला रामदेव बाबा प्रा. (जैसलमेर-रुणीचा)	५	सितं.
" गणेशोत्सव मण्डी (हि.प्र.)	७	"
" गणेश जन्मोत्सव (महाराष्ट्र)	७	"
" पात (कश्मीर) प्रा.	८	"
" बजमण्डल (उ.प्र.)	१०	"
" चारभुजा नाथ (मेवाड़)	१४	"
" वामन द्वादशी (पटियाला)	१५	"
" सोडल (जालन्धर)	१७	"
" छपार (पंजाब)	१७	"
" गोयन्दवाल (पंजाब)	१८	"
" श्री आशापति यात्रा (का.)	२	अक्टू.
" ज्वाला मुखी (हि.प्र.)	११	"
" तारा देवी (हि.प्र.)	११	"
" हरचोवाल (गुरदासपुर)	११	"
" दशहरा कुल्लू (हि.प्र.)	१२	"
" शाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	१६	"
" देवी थीहरा (कैथल)	१६	"
" दीपावली (अमृतसर)	१	नवं.
" अन्नकूट (गोवर्धन) पूजा	२	"
" बाबा रुद्रानंद नारी ऊना, हि.प्र.	१२	"
" रेणुका स्नान नाहन (हि.प्र.)	१२	"
" वीरवैरागी नकोदर (पं.)	१४	"
" बाल मेला (दिल्ली)	१४	"
" पुष्करराज (राज.)	१५	"
" रामतीर्थ (अमृतसर)	१५	"
" कपालमोचन (हरियाणा)	१५	"
" गढ़गंगा (उ.प्र.)	१५	"
" पुरमण्डल देवी का स्थान (ज.)	१	दिसं.
" जोड़ फतेहगढ़ साहिब (पं.)	११	"
" संगीत हरबल्लभ प्रा.	१२	"

सन् २००६ ई.

" लोहड़ी (पंजाब)	१३	जन.
" मुक्तसर (पंजाब), पोंगल-द.भा.	१४	"
" मस्तुआणां (पंजाब)	१८	"
" मौनी अमावस्या (हरिद्वार)	२९	"
" बसंत पंचमी (हि.प्र.)	२	फर.
" पंचखण्ड पीठ विराटनगर (राज.)	१०	"
" डेजर्ट उत्सव जैसलमेर (रा.)	१०	"
" वेणेश्वर बांसवाड़ा (राज.)	१३	"

मेला महाशिवरात्रि मण्डी (हि.प्र.)	२६	फर.
" नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी)	२६	"
" श्यामजी खाटू (राज.)	९-११	मार्च
" होलामेला आनन्दपुर सा. (पं.)	१५	"
" मानकपुर शरीफ (रोपड़)	१५	"
" पंखा (झज्झर)	१५	"
" बोरमदास बछौली (पटि)	२०	"
" गुरु रामराय (देहरादून)	२०	"
" शीतला माता (कुराली) पंजाब	२२	"
" पृथूदक पिहोवा (हरियाणा)	२८	"

क्रिश्चियन त्यौहार

क्रिसमस डे (बड़ा दिन)	२५	दिसं.
ईस्वी सन् प्रारंभ की पहली सांझ	३१	"
ईसाई नव वर्ष २००६ प्रारंभ	१	जन.
ऐपीफेनी डे	६	"

सिक्खों के गुरु पर्व

गुरु तेगबहादुर जी	जन्म	२९	अप्रैल
" अर्जुनदेव जी	"	३०	"
" अंगद देव जी	"	९	मई
" अमरदास जी	"	२२	"
" हरगोविन्द जी	"	२३	जून
" हरकिशन जी	"	२९	जुला.
" रामदास जी	"	१९	अक्टू.
" नानकदेव जी	"	१५	नवं.
सन् २००६ ई.			
" गोविन्द सिंह जी	"	६	जन.
" हरराय जी	"	१०	"

गुरुयाई मिली

गुरु अमरदास जी	९	अप्रैल
" तेगबहादुर जी	२२	"
" हरगोविन्द जी	३०	मई
" अर्जुनदेव जी	५	सितं.
" रामदास जी	१६	"
" अंगद देव जी	२२	"
" हरकिशन जी	२६	अक्टू.
" गोविन्द सिंह जी	३	दिसं.
" हरराय जी सन् २००६ ई०	२७	मार्च

ज्योति जोत समाऐ

गुरु अंगद देव जी	१२	अप्रैल
" हरगोविन्द जी	१३	"
" हरकिशन जी	२२	"
" अर्जुनदेव जी	१२	मई
" रामदास जी	६	सितं.
" अमरदास जी	१८	"
" नानकदेव जी	२७	"
" हरराय जी	२६	अक्टू.
" गोविन्द सिंह जी	६	नवं.
" तेग बहादुर जी	६	दिसं.

दशावतार जयन्तियाँ

श्री मत्स्य जयंती	११	अप्रैल
श्री राम जयंती (राम नवमी)	१८	"
श्री परशुराम ज.	१०	मई
श्री नृसिंह जयंती	२२	"
श्री कूर्म जयंती	२३	"
श्री बुद्ध जयंती	२३	"
श्री कल्कि जयंती	११	अग.
श्री कृष्ण जयंती	२६-२७	"
श्री वाराह जयंती	६	सितं.
श्री वामन जयंती	१५	"

आश्विन कृष्ण पक्ष के श्राद्ध

पूर्णिमा का श्राद्ध		१७	सितं.
प्रतिपदा	" "	१८	"
द्वितीया	" "	१९	"
तृतीया	" "	२०	"
चतुर्थी	" "	२१	"
पंचमी	" "	२२	"
षष्ठी	" "	२३	"
सप्तमी	" "	२४	"
अष्टमी	" "	२५	"
नवमी	" "	२६	"
दशमी	" "	२७	"
एकादशी	" "	२८	"
द्वादशी	" "	२९-३०	"
त्रयोदशी	" "	१	अक्टू.
चतुर्दशी	" "	२	"
सर्व पितृ अमावस		३	"

संक्रांतियां

मेष	बुधवार	१३ अप्रै.
वृष	शनिवार	१४ मई
मिथुन	बुधवार	१५ जून
कर्क	शनिवार	१६ जुला.
सिंह	मंगलवार	१६ अग.
कन्या	शुक्रवार	१६ सितं.
तुला	सोमवार	१७ अक्टू.
वृश्चिक	बुधवार	१६ नवं.
धन	बृहस्पतिवार	१५ दिसं.
मकर (२००६ई.)	शनिवार	१४ जन.
कुंभ	रविवार	१२ फर.
मीन	मंगलवार	१४ मार्च

व्रत पूर्णिमा

चैत्र	रविवार	२४ अप्रै.
बैशाख	सोमवार	२३ मई
ज्येष्ठ	मंगलवार	२१ जून
आषाढ़	बृहस्पतिवार	२१ जुला.
श्रावण	शुक्रवार	१९ अग.
भाद्रपद	शनिवार	१७ सितं.
आश्विन	सोमवार	१७ अक्टू.
कार्तिक	मंगलवार	१५ नवं.
मार्गशीर्ष	बृहस्पतिवार	१५ दिसं.
पौष	शनिवार	१४ जन.
माघ	रविवार	१२ फर.
फाल्गुन	मंगलवार	१४ मार्च

गणेश चतुर्थी व्रत

बैशाख	बुधवार	२७ अप्रै.
ज्येष्ठ	बृहस्पतिवार	२६ मई
आषाढ़	शुक्रवार	२४ जून
श्रावण	रविवार	२४ जुला.
भाद्रपद	सोमवार	२२ अग.
आश्विन	बुधवार	२१ सितं.
कार्तिक	बृहस्पतिवार	२० अक्टू.
मार्गशीर्ष	शनिवार	१९ नवं.
पौष	सोमवार	१९ दिसं.
माघ	बुधवार	१८ जन.
फाल्गुन	बृहस्पतिवार	१६ फर.
चैत्र	शनिवार	१८ मार्च

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

अमावस्याएं

वैशाख	रविवार	८ मई
ज्येष्ठ	सोमवार	६ जून
आषाढ़	बुधवार	६ जुला.
श्रावण	शुक्रवार	५ अग.
भाद्रपद	शनिवार	३ सितं.
आश्विन	सोमवार	३ अक्टू
कार्तिक	मंगलवार	१ नवं.
मार्गशीर्ष	बृहस्पतिवार	१ दिसं.
पौष	शनिवार	३१ दिसं.
माघ	रविवार	२९ जन.
फाल्गुन	सोमवार	२७ फर.
चैत्र	बुधवार	२९ मार्च

एकादशी व्रत

चैत्र	शुक्ल	कामदा	२० अप्रै.
वैशाख	कृष्ण	वरूथिनी	४ मई
"	शुक्ल	मोहिनी	२० "
ज्येष्ठ	कृष्ण	अपरा	२ जून
"	शुक्ल	निर्जला	१८ "
आषाढ़	कृष्ण	योगिनी	२ जुला.
"	शुक्ल	देवशयनी	१७-१८ "
श्रावण	कृष्ण	कामिका	३१ "
"	शुक्ल	पवित्रा	१६ अग.
भाद्रपद	कृष्ण	अजा	३० "
"	शुक्ल	जलझूलनी	१४ सितं.
आश्विन	कृष्ण	इन्दा	२८-२९ "
"	शुक्ल	पापांकुशा	१३-१४ अक्टू.
कार्तिक	कृष्ण	रमा	२८ "
"	शुक्ल	देवप्रबोधिनी	१२ नवं.
मार्गशीर्ष	कृष्ण	उत्पत्ति	२७ "
"	शुक्ल	मोक्षदा	११ दिसं.
पौष	कृष्ण	सफला	२७ "
"	शुक्ल	पुत्रदा	१० जन.
माघ	कृष्ण	षट्तिला	२६ "
"	शुक्ल	जया	८ फर.
फाल्गुन	कृष्ण	विजया	२४ "
"	शुक्ल	आमलकी	१० मार्च
चैत्र	कृष्ण	पापमोचनी	२५-२६ "

प्रदोष व्रत

चैत्र	शुक्ल	बृहस्पतिवार	२१ अप्रै.	आश्विन	शुक्ल	शनिवार	१५ अक्टू.
वैशाख	कृष्ण	"	५ मई	कार्तिक	कृष्ण	रविवार	३० "
"	शुक्ल	शनिवार	२१ "	"	शुक्ल	"	१३ नवं.
ज्येष्ठ	कृष्ण	"	४ जून	मार्गशीर्ष	कृष्ण	मंगलवार	२९ "
"	शुक्ल	रविवार	१९ "	"	शुक्ल	"	१३ दिसं.
आषाढ़	कृष्ण	"	३ जुला.	पौष	कृष्ण	बुधवार	२८ "
"	शुक्ल	मंगलवार	१९ "	"	शुक्ल	"	११ जन.
श्रावण	कृष्ण	"	२ अग.	माघ	कृष्ण	शुक्रवार	२७ "
"	शुक्ल	बुधवार	१७ अग.	"	शुक्ल	"	१० फर.
भाद्रपद	कृष्ण	बृहस्पतिवार	१ सितं.	फाल्गुन	कृष्ण	शनिवार	२५ "
"	शुक्ल	बृहस्पतिवार	१५ "	"	शुक्ल	रविवार	१२ मार्च
आश्विन	कृष्ण	शुक्रवार	३० "	चैत्र	कृष्ण	सोमवार	२७ "

गंडमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्ति काल

ता. मास	घं. मि.	से	ता. मास	घं. मि.	तक
८ अप्रैल	११-१३	"	१० अप्रैल	१०-२४	"
१७ "	२४-११	"	१९ "	२९-१५	"
२७ "	६-५६	"	२८ "	२७-१५	"
५ मई	१८-४७	"	७ मई	१८-४५	"
१५ "	८-१३	"	१७ "	१३-४५	"
२४ "	१४-२९	"	२६ "	१०-३२	"
१ जून	२४-३२	"	३ जून	२५-१७	"
११ "	१५-३६	"	१३ "	२१-३०	"
२० "	२४-५४	"	२२ "	१९-५९	"
२९ "	६-०३	"	१ जुलाई	६-४५	"
८ जुलाई	२२-०८	"	१० "	२८-१०	"
१८ "	११-०६	"	२० "	६-२०	"
२६ "	१३-०२	"	२८ "	१२-४२	"
४ अगस्त	२८-०८	"	७ अगस्त	१०-०५	"
१४ "	१९-५४	"	१६ "	१६-४१	"
२२ "	२२-०८	"	२४ "	२०-२३	"
१ सितंबर	१०-१३	"	३ सितंबर	१६-०४	"
१० "	२६-३६	"	१२ "	२४-५०	"
१९ "	८-३८	"	२०. "	२९-५३	"
२८ "	१७-०१	"	३० "	२२-५१	"
८ अक्टूबर	८-०२	"	१० अक्टूबर	६-५१	"
१६ "	१८-४९	"	१८ "	१६-०५	"
२५ "	२४-४३	"	२८ "	६-३८	"

ता. मास	घं. मि.	से	ता. मास	घं. मि.	तक
४ नवंबर	१४-०८	"	६ नवंबर	१२-१७	"
१२ "	२७-०२	"	१४ "	२५-१५	"
२२ "	८-५६	"	२४ "	१४-५७	"
१ दिसंबर	२२-२३	"	३ दिसंबर	१९-२२	"
१० "	९-०१	"	१२ "	८-१७	"
१९ "	१६-५८	"	२१ "	२२-५७	"
२९ "	८-३६	"	३० "	२९-०१	"
	सन् २००६ ई.				
६ जनवरी	१४-३०	"	८ जनवरी	१३-४५	"
१५ "	२४-११	"	१७ "	३०-०७	"
२५ "	१८-५८	"	२७ "	१६-०४	"
२ फरवरी	२१-५३	"	४ फरवरी	१९-५०	"
११ "	३०-३२	"	१४ "	१२-३१	"
२१ "	२७-३५	"	२३ "	२६-१२	"
२ मार्च	७-५३	"	३ मार्च	२८-१४	"
११ "	१२-३५	"	१३ "	१८-४२	"
२१ "	१०-००	"	२३ "	९-५७	"
२९ "	१९-०२				

पंचक आरम्भ व समाप्ति काल

ता. मास	घं. मि.	से	ता. मास	घं. मि.	तक
			९ अप्रैल	१०-३३	"
२ मई	१०-२७	से	६ मई	३२-२१	"
२९ "	१५-२५	"	२ जून	२४-४२	"
२५ जून	२२-३७	"	३० "	६-०७	"
२३ जुलाई	८-०४	"	२७ जुलाई	१२-३०	"
१९ अगस्त	१८-५०	"	२३ अगस्त	२०-५३	"
१५ सितंबर	२९-१२	"	२० सितंबर	६-५८	"
१३ अक्टूबर	१३-३४	"	१७ अक्टूबर	१७-१५	"
९ नवंबर	१९-३७	"	१३ नवंबर	२६-०१	"
६ दिसंबर	२५-०३	"	११ दिसंबर	८-३०	"
	सन् २००६ ई.				
३ जनवरी	८-२२	"	७ जनवरी	१३-५३	"
३० "	१८-२९	"	३ फरवरी	२०-३२	"
२६ फरवरी	२९-५४	"	२ मार्च	२९-४५	"
२६ मार्च	१६-१७	"			

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैवज्ञ की दृष्टि में संसार चक्र

अथास्मिन संवत्सरे श्री अवन्त्याधिपति मन्नृपति वीर विक्रमादित्य राज्यतो गताब्दा संवत् २०६२, शाके १९२७ अथास्मिन संवत्सरे राजा (मालिक) शनि, मंत्री-बुध, सस्येश-शनि, धान्येश-गुरु, मेघेश-मंगल, रसेश-चन्द्र, नीरसेश-शनि, फलेश-मंगल, धनेश-शुक्र, दुर्गेश-मंगल, विलम्ब नाम संवत्सर के अनुसार ग्रह परिषद का प्रभाव (भविष्य) इस प्रकार रहेगा।

- वर्ष में कहीं पर सुभिक्ष तो कहीं पर दुर्भिक्ष का ताण्डव बना रहेगा। धनाढ्य वर्ग की छवि बढ़ेगी। मांगलिक कार्यों का वर्चस्व ज्यादा रहेगा। आश्विन एवं कार्तिक माह में लोगों को (जनता को) दुर्भिक्ष का सामना करना पड़ेगा।
- राजा शनि-मंत्री गुरु तथा दुर्गेश मंगल के कारण देशीय कार्यशाला में काफी मतभेद बनेंगे। कोर्ट-कचहरी का मामला ज्यादा बढ़ेगा। भूमि-विवाद का बोलवाला बढ़ेगा।
- पाकिस्तान की दोस्ती गले की हड्डी बनने का योग है। युद्ध का वातावरण भड़कने के योग बनते हैं। अमेरिका द्वारा सौतेला व्यवहार करने से वर्चस्व में न्यूनता आयेगी। रूस का चक्र विश्व में छायेगा।
- इस संवत्सर में एक चन्द्र ग्रहण तथा दो सूर्य ग्रहण होने से प्राकृतिक आपदाओं से जनता ग्रसित रहेगी। पश्चिमोत्तर देशों में तूफान, भूकम्प तथा अग्नि जन्य घटनाएं घटेंगी। तथा राजनैतिक कार्यविधि भी अशांत रहेगी।
- चन्द्रमा को रसेश पद मिलने से औषधि बाजार महंगाई में आकाश छूने लगेगा। तथा संचार साधन बढ़ते हुए इनमें सस्तापन का प्रभाव बढ़ेगा। आतंकवादी कपट करेंगे।
- पूर्वोत्तर प्रान्तों एवं देशों में मंगल के कारण अराजकता बढ़ेगी तथा नारी शक्ति को बल मिलेगा एवं प्रशासन में वर्चस्व होते हुए भी नारी अपमानित ज्यादा होगी।
- राजनैतिक अवरोधों के बाद भी भारत दूर संचार, तकनीकि यंत्र, कम्प्यूटर, इंजिनियरिंग, अन्तरिक्ष एवं परमाणु परीक्षणों का वर्चस्व मंगल ग्रह के योग से बढ़ेगा। विवाद के बाद प्रस्ताव-पारित होकर जौहरी बाजार को बुध बढ़ावा देगा।
- हस्त-शिल्प व्यापार की कार्यशाला प्रशिक्षण केन्द्र खोलने का सरकार निर्णय करेगी जिससे अन्तर्राष्ट्रीय बाजार का वर्चस्व भारत के लिये बढ़ेगा। नयी विदेश नीति बनेगी।
- लोक सभा में चुनाव होने का वातावरण बनेगा। वर्तमान सरकार के नेता परिवर्तन का मुद्दा भी छायेगा। दागी संसद सदस्यों का प्रभाव जमा रहेगा। मंगल ग्रह के योग से लोकसभा में हंगामे ज्यादा होंगे। काम कम होगा।
- उपभोक्ता मंच को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। पार्टी विरोधियों के कारण हत्या जनक मामला दृष्टिगोचर होगा। माह मई ०५ से सितम्बर ०५ तक का समय विशेष नेष्ट रहेगा। नग्न तलवारें गुप्त विस्फोट का भय रहेगा।
- पूर्वी प्रान्त उड़ीसा, प. बंगाल, आसाम, झारखण्ड, तमिलनाडु यानि समुद्रतटीय प्रान्तों में तूफान की प्राकृतिक आपदा से जन-धन की हानि वर्ष प्रारंभ में होने का योग है।
- शिवसेना-भाजपा एवं विश्व हिन्दू परिषद का सम भाव नहीं रहकर द्वेषता की ओर बढ़ेगा। दिग्गज नेताओं का भी रहस्य खुलने पर लोग आश्चर्य करेंगे कि इतना मामला कैसे बना-तथा न्यायालय तक यात्रा करनी पड़ेगी।
- भारतीय जनता पार्टी में परस्पर कलह का वातावरण रहेगा, दलीय स्थिति सामान्य रहेगी। कभी-कभी मामलों में असमंजसता प्रतीत होगी। लोग कर्त्तव्य भूल जायेंगे।
- केन्द्रिय सत्ता पक्ष में संयुक्त गठ बंधन के वर्चस्व में कांग्रेस सर्वाधिक वर्चस्व बनाये रखेगी। दक्षिणी भारत में कांग्रेस पार्टी का नया कीर्तिमान बनेगा।
- कश्मीर-मन्दिर-मस्जिद का मॉमला संसद में गूंजेगा, मगर कार्य लाभ नहीं होगा। राष्ट्रीय स्तर के नेता का अवसान होगा।
- भारत का रक्षा मन्त्रालय आतंकवाद से बाज नहीं आयेगा। अत्यन्त कठोर रुख अपनाने के बाद कुछ नियंत्रण बनेगा।
- नया विलम्ब नामक संवत्सर का शत्रु पक्षीय प्रभाव विश्व में बढ़ेगा। विभिन्न पार्टियों में विशेष घृणा पैदा होगी।
- वर्तमान सरकार गतिरोध के उपरान्त भी शासन कार्य में चलती रहेगी। नेता परिवर्तन के तीन अवसर बनेंगे। राष्ट्र विरोधी शक्तियों का वर्चस्व बढ़ेगा।
- मध्य भारत, उत्तरांचल तथा नर्मदा तटीय क्षेत्रों में अच्छी उपज होगी। कृषक खुश रहेंगे।
- असमाजिक घटनाएं तथा असामयिक घटनाओं के कारण जनता में विद्रोह का वातावरण बढ़ेगा। तथा महाविनाश को आमंत्रण जैसा योग बनेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri:Funding by MoE-IKS

विस्तृत वर्णन योगानुसार

विगत दो दशक से "श्री आर्यभट्ट पंचांग" द्वारा ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन अनुशीलन करके विश्व व भारत के सम्बन्ध में जो भविष्यवाणियां की गई उससे सभी पाठक परिचित हैं। निराश्रित ज्योतिष विज्ञान ने आज गणित के विभाग में शत-प्रतिशत सत्यता सिद्ध कर दी है एवं गणित द्वारा वर्षों पूर्व सूर्य-चन्द्र ग्रहणों का प्रारम्भ व समाप्ति काल का समय निर्धारित किया है उसमें एक मिनट का भी अन्तर नहीं होता है। परन्तु फलित के विभाग में अभी पूर्ण शोध चल रहा है। वैसे फलित ज्योतिष को इष्ट साधन व दैव विद्या कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। अत: संसार, राष्ट्र व राज्य के अलावा व्यक्ति के सम्बन्ध में भविष्य बताने वाले को दैवज्ञ माना गया है। साधना, तपस्या व अनुभव से प्राप्त दैव विद्या पर शोध करने वाला व्यक्ति आज के युग में साधनाहीन है। ग्रहों की गति व इष्ट संकेतों को समझने में भूल हो सकती है। अत: समस्त की गयी भविष्यवाणियां सदा सत्य ही हों की कसौटी पर उतारना उचित नहीं होगा। ज्योतिष ज्ञान द्वारा अनन्त आकाश में जो ग्रह, नक्षत्र, तारागण अपनी-अपनी वक्र-मार्गी गति से विचरण करते हुए आकर्षण-विकर्षण के द्वारा भूमण्डल पर होने वाले परिवर्तन एवं प्रभाव को जाना जाता है। अनन्त आकाश में कोई भी ग्रह कितनी ही दूरी पर क्यों न हो जब वह अपनी स्थिति बदलता है तो विश्व की परिस्थिति को अवश्य प्रभावित करता है। प्रतिवर्ष आकाशी परिषद् को गति प्रदान करने के लिए ग्रह परिषद् की नव नियुक्ति होती है। इस ग्रह परिषद् के बलाबल और वर्षलग्न, जगत् लग्न में उनका स्थान होने से प्राचीन ग्रन्थ वराह मिहिराचार्य कृत "**वाराही संहिता**" के आधार पर "**दैवज्ञ**" वर्ष के शुभाशुभ फल जानने में सक्षम होते हैं। ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग, परस्पर अंशयोग, सम-सप्तम योग (प्रतियोग) से संसार में कहां-कहां अशांति या शांति उत्पन्न होगी। इसके लिए संघट्ट चक्र, सर्वतोभद्र चक्र, कूर्मचक्र आदि को आधार मानकर हम अपनी स्वल्प बुद्धि से जो कुछ लिखते आ रहे हैं। वे सभी अभी तक ७०-८० प्रतिशत सत्य साबित हुई हैं।

नव वर्ष प्रवेश लग्नम् ९।३।३०

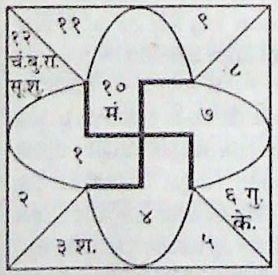

विक्रम संवत् २०६२ के प्रवेश के समय रेवती नक्षत्र। वैधृति योग। किंस्तुघ्न करण तथा मकर लग्न चैत्र शुक्ला प्रतिपदा शनिवार को होने से राजा भी शनिदेव (शनि ग्रह) होंगे। वर्ष लग्न में उच्च राशि का मंगल स्थित है तथा केन्द्र में अन्य कोई शुभ ग्रह नहीं होने के कारण उग्रवाद, विद्रोह, युद्ध तथा तनाव का कारक बनेगा। अंतर्राष्ट्रीय जगत में विवाद को बढ़ावा देगा। विलम्ब संवत्सर से कार्यों में विलम्ब होगा। आश्वासन से सरकारें चलेंगी।

वर्षेश लग्नम् ८।१।२३

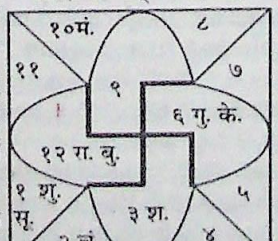

उपद्रवों के कारण रक्तपात, गृह-क्लेश का आतंक रहेगा। चैत्र, ज्येष्ठ मास में विशेष अशुभ घटनाएं घटेंगी। तथा मूंछ की लड़ाई का जिक्र छाया रहेगा। नीतियों का प्रस्ताव पारित कराना, संघर्षमय होगा। वर्ष योग्य मध्यम होकर सामान्य वर्ष की भांति गुजरेगा। धान्य भाव तेज रहेंगे। नेता वर्ग में कलह का वातावरण रहेगा। टिड्डी दल एवं अन्य कीट दलों से कृषि उत्पादन में संकट आयेगा। अतिवृष्टि भी होगी। चैत्र शुक्ला पंचमी बुधवार ता. १३ अप्रैल २००५ को आदित्य देव मेष राशि में प्रवेश करने से सौर वर्ष का शुभारंभ होगा। उदय कालिक वार बुध होने से संवत् का मंत्री (प्रधानमंत्री) बुध ग्रह बना है। बुध व्यापारिक एवं शांतिदायक ग्रह होने से कार्य योजना की प्रस्तुति में चतुराई विशेष रहेगी। आर्थिक दृष्टि से समृद्धि मिलेगी। विश्व व्यापार संगठन की नयी योजना से अंतर्राष्ट्रीय बाजार का वर्चस्व बढ़ेगा। रोगोपद्रव का तांडव छाया रहेगा। वर्षेश लग्न में बलवान होने से सुभिक्ष योग करेगा। उत्तर दिशा में कोई अशुभ घटना के घटने से सम्पूर्ण देश प्रभावित होगा। आध्यात्मिक एवं धर्मिक अनुष्ठान भी बढ़ेंगे। शासक वर्ग चिन्तित रहेगा। दक्षिणी राज्यों में मनुष्यों में सम्पन्नता के साथ पशुधन की हानि होगी। शासन तथा जनता दोनों राहत का अनुभव करेंगे। आश्विन मास में कोई बहुत बड़ी अशुभ घटना घटने का योग बनता है। अकालजन्य प्रभाव ज्यादा रहेगा। यत्र-तत्र गुप्त रहस्य बढ़ते रहेंगे।

आर्द्रा प्रवेश लग्नम्
ता.२१।६।०५ रात्री २६।४५

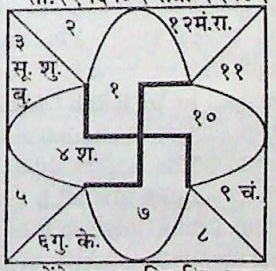

विक्रम संवत् २०६२ ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा मंगलवार दिनांक २१ जून २००५ की रात्रि २६।४५ घं.मि. पर सूर्य देव आर्द्रा में प्रवेश करेंगे। इसके योग से व्यापार जगत प्रभावित होगा। यथा रुई, सूत, कपास, खल, अलसी, अरण्ड, मोती, गेहूं, चावल, चना, जौ, चांदी तेज होगी। सोने के भाव घटबढ़ चलेंगे। यथा-**विपत्तिः सस्य हानिः स्यादहन्यार्द्रा प्रवेशने। संध्ययोः सरु वृद्धिः स्यात्सर्व सं प्रन्नृणंनिशि॥** रात्रि आर्द्रा प्रवेश से मनुष्यों की वृद्धि कारक योग बनेगा। चन्द्रमा की स्थिति के कारण वर्षा का सामान्य या मध्यम योग बनेगा। शुक्र-बुध-सूर्य की युक्ति से कार्य में मिलकर करने से लाभ हो सकता है। अगर वायु चली तो वायु और वर्षा हुई तो वर्षा ही होगी। कीट नाशक जन्तु धीरे-धीरे प्रभाव जमायेंगे।

वर्षनाम ज्येष्ठ होगा, जिसका फलादेश इस प्रकार है यथा- **ज्येष्ठ जाति कुसाधन श्रेणी नृपा सधर्मज्ञा। पीड़यन्ते धान्यानि च हित्वा कं गु शमी जातिम्॥** अर्थात् इस वर्ष ज्येष्ठ होने से राजा लोग धर्मज्ञ पुरुषों के साथ जाति कुल धन श्रेणी में श्रेष्ठ मानकर गिना जायेगा। काफी लोग आर्थिक दृष्टि से भरपूर नजर आयेंगे। कृषक वर्ग भी सामान्य रूप में हानि सहन करेंगे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मेदनीय ज्योतिष एवम् ग्रह संयोगानुसार भविष्य फल कथन

अन्तर्राष्ट्रीय (विदेशी) भविष्य बोध (संक्षिप्त-संकेत रूप में)

जगत लग्न कुण्डली नं. १

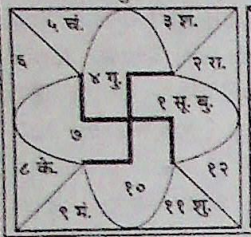

जगत लग्न कुण्डली नं. २

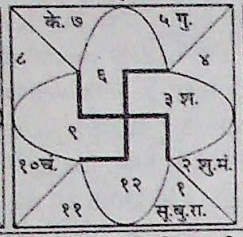

मुस्लिम देशों की कुण्डली

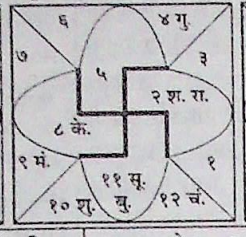

यूरोपीय देशों की कु. नं. १

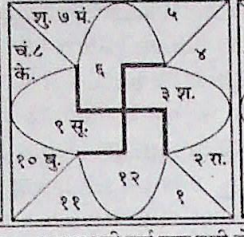

यूरोपीय देशों की कु. नं. २

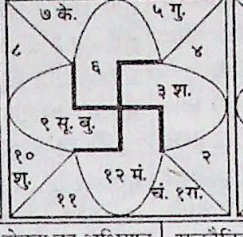

ईरान की जन्म कुण्डली

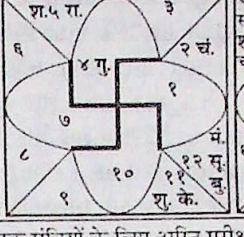

स्वतंत्र भारत की कुण्डली

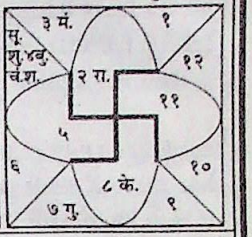

अमेरिका, अस्ट्रेलिया, अफ्रीका महाद्वीप, अल्जिरिया, अन्टार्टिका, इंग्लैण्ड, आयर लैण्ड-: इन देशों-महाद्वीपों में प्राकृतिक प्रभाव से मंगल-शनि-राहु-केतु- का ब्रह्माण्डीय प्रभाव के कारण आपत्ति कालीन स्थिति सितम्बर २००५ से नवम्बर २००५ मध्य विशेष रहेगी। अमेरिका में अप्रेल २००५ से १५ जून २००५ तक विशिष्ट नेताओं का पतन होगा। विद्युत्तीय विस्फोट से औद्योगिक विकास में बाधाएं आयेंगी। शनि ग्रह सन २००७ तक विवाद जन्य वातावरण तथा युद्धीय स्थिति बनायेगा। जल प्रपोतों का नाश जलीय मार्गो में होने से जन-धन हानि भी जून २००५ में बनती है। दिनांक २५-५-०५ से २३-८-०५ तक चुनाव सम्बंधी प्रक्रिया में काफी हस्तियां पराजित होने से राजनैतिक मंच में उदासीनता तथा परिवर्तन कारक योग बनेगा। आकाशीय दुर्घटनाएं तथा उपग्रहों के परीक्षण में भी विशेष सफलता नहीं मिलेगी। चक्रवात- अति वृष्टि तथा खण्ड वृष्टि एवं दुर्भिक्ष का प्रभाव भी होगा।

अफगानिस्तान- पाकिस्तान, बलिस्तान, तुर्की, जर्मनी, चीन, नेपाल, श्री लंका, बंगला देश, जापान आदि में- ग्रह एवं शकुन प्रभाव से इन देशों में अध्यात्मक शक्ति का प्रभाव बढ़ेगा। नारी शक्ति के शोषण से अच्छे-अच्छे पुरुष कारागृह के शिकारी बनेंगे। काफी वयोवृद्ध नेताओं का वर्चस्व घटेगा। मंगल युद्ध का घटक तथा राहु-केतु आतंकवाद के विवाद में गुप्तचर शक्ति के साथ काफी विश्वासघात होंगे। राजदूतों को अचानक संकट भी होगा। औषधि व्यापार में इन देशों का वर्चस्व बढ़ेगा। इन देशों में २८ नेताओं का पदच्युत होना या देहावसान या दुर्घटनाओं में जीवन समाप्ति का योग बनता है। दिनांक २०-४-०५ से २६-७-०५ का समय ऐतिहासिक परिवर्तन कारक रहेगा। दिनांक १२-०५ से २०-२-०६ तक स्त्री वर्ग द्वारा नारी चेतना का अभियान चलेगा। शैक्षिक एवं सामाजिक दृष्टि से अच्छी योजनाएं बनेंगी। आत्मघाती विश्वासघाती के प्राकृत्य से जनता दु:खी होगी। नये शोध संकल्प संकाय चलेंगे। अभियोग अभियोजन से नेता जनता में विवाद १०-७-०५ से १८-१०-०५ तक चलेगा। वर्षा से भी तबाही होगी, अति वृष्टि के प्रभाव से काफी हानि होने का योग बनेगा।

मोरिशस, नाइजिरिया, नागालैण्ड, रूस, उत्तरी-पूर्वी ब्रिटिश, रोम, ईराक, ईरान, सूडान, यूरोप, एशिया, केपटाऊन, तेहरान, ताशकन्द, हिन्द-चीन, बर्मा आदि देशों में- ग्रह स्थिति एवं गोचर गणना से उक्त देशों में प्रशासनिक व्यवस्थाएं अच्छी बनेंगी। जनता में आशा की लहर चलेगी। फसलें अच्छी होंगी। पुराने विवाद आपासी बात-चीत से हल होंगे। अप्रेल २००५ से २४-७-०५ तक भीषण गर्मी के कारण अचानक रोगोपद्रव बढ़ेगा तथा जनता की आवाज के आधार पर चिकित्सा व्यवस्था सुविधा बढ़ेगी और मृत्यु योग्य घटनाओं में नियंत्रण का योग बनेगा। स्त्री वर्ग का प्रशासन बढ़ेगा। सिनेमा जगत में शुक्र ग्रह के कारण ख्याति मिलेगी। आर्थिक दृष्टि से इन देशों का वर्चस्व रहेगा। पांच देशों में मध्यावधि चुनाव का योग बनेगा। ज्वार-भाटा तथा भूकंप का प्रभाव १०-५-०५ से २०-८-०५ मध्य बनेगा। भूस्खलन से अस्थिरता का वातावरण बढ़ेगा। आणवीक शक्ति का प्रभाव बढ़ेगा। ईरान-ईराक का युद्ध फिर मंगल के कारण भड़केगा।

भारत वर्ष- स्वतंत्र भारत की जन्म कुण्डली दिनांक १५ अगस्त १९४७ मध्य रात्रि ००-०० के अनुसार दिनांक १३ जनवरी २००५ के बाद शनि का वक्री होना मंगल-प्लूटो की स्थिति से बना सम मृत्यक योग के कारण असुरक्षा का वातावरण छायेगा। शासकों एवं राजनैतिक मंत्रियों के लिए अग्नि परीक्षा का समय रहेगा। उग्रवादी गतिविधियां बढ़ेंगी। प्रधान मंत्री जी को दिनांक १५-२-०५ से २८-६-०५ तक सावधानी से संसदीय कार्यों में भाग लेना होगा। अचानक युद्ध परक नीति तथा आर्थिक तंगी का बोलबाला भड़केगा। नयी कर नीति के खुले विरोध से केन्द्रिय मंत्रीमण्डल को सत्ताच्युत होने का भी मंगल-राहु-केतु के प्रभाव से योग बनेगा। उग्रवादी नेताओं के मित्र बनकर "घर की थाली में छेद करने वाली उक्ति" को चरितार्थ करेंगे। संविधान में नये संशोधन का दौर चलता रहेगा। दक्षिण भारत में राजनैतिक गृहयुद्ध जैसा वातावरण बनेगा। राजनैतिक पार्टियों के वर्चस्व में कांग्रेस अग्रगामी होगी। भारत में इस वर्ष राजनैतिक मोड़ ज्यादा बनेंगे। प्रथम १४-२-०५ से २५-५-०५ तक। द्वितीय २८-९-०५ से २४-१२-०५ तक फिर १०-१-०६ से २८-३-०६ तक। श्रीमति सोनियां गांधी को पुन: प्रधान मंत्री बाबत पार्टी की ओर से प्रस्ताव पारित होगा। वर्तमान प्रधान मंत्री २६-३-०५ से २९-६-०७ मध्य काफी चिन्ता युक्त रहकर कभी भी त्याग पत्र देकर दायित्व कम कर सकते हैं। केन्द्रिय पार्टियों के अध्यक्षों में भी परिवर्तन होंगे। तथा प्रान्तीय कार्यकारणी में काफी परिवर्तन २७-६-०५ से २८-१-२००६ तक बनेगा। श्रीमती प्रियंका बढेरा को राजनैतिक लाभ नहीं मिलेगा। कुछ नेताओं में परस्पर विवाद से पार्टियों में त्याग भी होगा। वर्तमान सरकार का भारत में पांच वर्ष व्यतीत करना ग्रहयोगानुसार संभव नहीं है। मध्यावधि-चुनाव योग मार्च २००६ से जून २००६ तथा मई २००७ से जुलाई २००७ एवं फरवरी २००८ बनता है। वाम मोर्चा की मांग के साथ गरिमा गिरेगी। मंहगाई तथा साम्प्रदायिक ताकतें सरकार को अस्थिर करेंगी। डॉ. मनमोहन जी प्रधान मंत्री भारत सरकार पांच वर्ष तक पदासीन नहीं रहेंगे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रान्तीय भविष्य कथन-भविष्य बोध (संक्षिप्त में संयोगानुसार)

१- आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, आसाम, अण्डमान-निकोबार द्वीप समूह -वर्ष २०६२ में इन प्रान्तों में राजनैतिकता का प्रभाव अस्थिर तथा उदासीन रहेगा। मंगल-राहु-केतु के प्रभाव से आर्थिक स्थिति में काफी तंगी रहेगी। अरुणाचल में प्रतिष्ठित नेता की अचानक हत्या का योग जून २००५ में बनता है। प्राकृतिक आपदा के ये प्रदेश शिकार रहेंगे। व्यक्तिगत मतभेद से पार्टियों का वर्चस्व गिरेगा। धार्मिक कृत्यों से वर्षा योग अच्छा रहेगा। शनि चतुर्थ रहकर भौतिक सुखों में कमी करेगा। वित्तीय स्थिति में संकट पैदा करेगा। महिला आयोग द्वारा नयी राजनैतिक गतिविधियों का प्रभाव बढ़ेगा। उग्रवादियों का बोलबाला रहेगा तथा वर्तमान सरकार से विवाद युक्त रहकर नृशंश हत्याएं करेंगे। भूमि विवाद तथा बजट विवाद से सरकारें कमजोर होंगी। असम में २००६ में चुनाव का योग बन सकता है। गैसीय शक्ति के प्रभाव से औद्योगिक नगरों में विशेष रोग बढ़ेगा।

२- कर्नाटका, तमिनाडु, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, झारखण्ड एवम् छत्तीसगढ़ आदि-ग्रह गति तथा शकुनानुसार इन प्रान्तों में वर्षा योग अच्छा रहेगा। मंगल ग्रह से उपद्रवों का अन्त जैसा योग बनेगा।

अग्नि काण्ड के प्रभाव से जन-धन हानि बनेगी। शुक्र ग्रह के कारण नारी जगत को पीड़ा दायक योग इन प्रान्तों में बढ़ेगा। राजकीय कर्मचारी काफी चिंतित रहेंगे। कर्नाटका-उड़ीसा में मध्यावधि चुनाव जैसा वातावरण माह जून २००६ से सितम्बर २००६ तक बनेगा। मतभेदों के द्वारा आठ वयोवृद्ध राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं की जीवन लीला खत्म होने का योग आदि अर्थात् राष्ट्रीय ध्वज झुकेगा। मांगलिक कार्यों में चोरी की वारदातें बढ़ेंगी। शनि ग्रह के कारण सरकारी घोषणओं की योजनाएं भी निरस्त होने का योग बनेगा। तामिलनाडु में शिक्षा विभागीय कार्यक्रमों में अपवाद बढ़ेगा। व्यापारिक वर्ग नये करों का बहिष्कार करेंगे। फिल्मी हस्तियां भी अपना वर्चस्व न्यून कर लेंगे। जून २००६ में महाराष्ट्र में विशेष बैठक के आयोजन में शिवसेना का विरोध एवं आग-जनी घटनाओं का योग। वाहन दुर्घटनाएं तथा अतिवृष्टि से जन-धन की हानि होगी। खादी ग्राम उद्योग एवं गुजरात के मुख्यमंत्री श्री मोदी जी का वर्चस्व घटेगा। इस राज्य में आगे कांगेस का प्रभाव जमेगा। श्री मोदी जैसे वरिष्ठ सदस्य का भाजपा भी सम्मान करें यह आवश्यक नहीं। गोधरा काण्ड के पुनः उजागर में पांच राजनेताओं का सरीक होना भी प्राय प्रमाणित होने का योग मंगल के कारण बनता है।

३- मेघालय, मिजोरम, शिमला, जम्मू-कश्मीर, पंजाब, माहाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तरांचल प्रदेश, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, भूटान, गौवा, केरल, चैन्नई, समुद्र तटीय प्रदेश, हिमालय तलहटी शहर एवम् अन्य सभी शेष प्रान्तों में- ग्रहचाल, दैनिक एवं नाक्षत्रिक ग्रह गति तथा शकुनानुसार आकाशीय घटनाओं के आधार पर उपर्युक्त प्रान्तों-कस्बों में मंगल-केतु-शनि-राहु के प्रभाव से क्षेत्रीय विवाद बढ़ेंगे। बलात्कार, आत्महत्याएं एवं प्राकृतिक आपदा का प्रभाव दिनांक १०-५-०५ से २०-९-०५ तक छाया रहेगा। किसी धार्मिक स्थल के विवाद से गोली काण्ड का योग भी उक्त अवधि में बनेगा। शिवसेना एवम् विश्व हिन्दू परिषद् तथा युवक संगठन में त्रिकोणीय संगठनों में विरोधाभास चलेगा। सरकारी कार्यों में विलम्ब तथा लम्बित प्रकरणों से दुखद घटनाएं भी घटेंगी। सिनेमा जगत की तीन विशिष्ट अभिनेत्रियों को अचानक संकट से उदासी छायेगी। विधान सभाओं-परिषदों में पूर्व में किये गये घोटालों का मामला खुलेगा। तथा कोर्ट कचहरी का विवाद भी बने। राजस्थान में वर्तमान सरकार में विरोधाभाष अक्टूबर ०५ से जनवरी २००६ तक बनेगा। वर्तमान मुख्य मंत्री एवम् राज्यपाल का भविष्य भी उज्जवल नजर नहीं आता है। राहु-केतु से ग्रसित होने से प्रतिष्ठा का मुद्दा बनकर मंत्रिमण्डल में परिवर्तन कारक योग बनेगा। मेघालय, मिजोरम, महाराष्ट्र में गुरु ग्रह के प्रभाव से आर्थिक संकट का समाधान, नये राजकीय कार्यों में प्रगति होगी परन्तु शनि के प्रभाव में प्राकृतिक अपदाओं के कारण जन-जन में त्राहि-त्राहि मचेगी। जलयान, वायुयान तथा रेलवे दुर्घटनाओं का प्रभाव नेष्ट रहेगा। तीन राजकीय नेताओं या मंत्रियों का देहान्त योग अर्थात् ध्वज झुकने का योग बनता है। प. बंगाल में बसपा का वर्चस्व घटेगा। केरल में आर्थिक संकट तथा चक्रवात का भय रहेगा। चैन्नई में महिला आयोग का अभियोजक अभियोग द्वारा स्थानीय वातावरण प्रभावित होगा। मंत्रिमण्डल में दो बार फेर बदल का विशेष अवसर बनेगा। दिनांक १६-७-०५ से १६-११-०५ तक उक्त प्रान्तों में अस्थिरता बनी रहेगी।

दिल्ली- प्रभावित क्षेत्र विशेषकर शनि तथा भौम से शासक वर्ग में असमानता तथा गुप्त रहस्योद्घाटन से आदर्श व्यक्ति भी चिंतित रहेंगे। कांग्रेस पार्टी का वर्चस्व दिल्ली में रहेगा। श्रीमति शीला दीक्षित को मान सम्मान गुरु ग्रह दिलायेगा। वर्षा योग विलम्ब से बनेगा लेकिन अच्छा रहेगा। नयी योजनाओं में दिल्ली का प्रशासक वर्ग अग्रगामी रहेगा। दिनांक २०-६-०५ से २७-९-०५ तक विस्फोटक, प्राकृतिक आपदाओं तथा बाढ़ादि के प्रभाव से निचली बस्ती में अशोभनीय असहनीय घटनाएं घटेंगी। दो नेताओं के अपहरण का योग बनता है।

अथ विंशोत्तरी एवं अष्टोत्तरी मत से लाभ-खर्च चक्र वि. सं. २०६२, शाके १९२७, सन् २००५-६ के लिए

पक्ष	आमद	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
शुक्ल	आय	८	२	८	२	५	८	२	८	५	१४	१४	५
पक्ष	व्यय	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	११	११	११
कृष्ण	आय	१४	८	११	५	८	११	८	१४	२	५	५	२
पक्ष	व्यय	१४	८	५	५	१४	५	८	१४	८	२	२	८

लाभ-खर्च चक्र देखने की विधि—चक्र में लिखी अपनी राशि के नीचे लिखे लाभ-खर्च के अंकों को जोड़ें। फिर उसमें से १ घटावें। शेष अंकों में ८ का भाग दें। यदि १ शेष रहे तो लाभ, २ से सुख, ३ से दुख, ४ से रोग, ५ से निन्दा, ६ से सम्मान, ७ से विजय ८ और ० शून्य शेष से हानि जाननी चाहिए। **नोट :**—जिनका जन्म शुक्ल पक्ष में हो वे शुक्ल पक्ष की आय व व्यय के अंकों को ही काम में लावें और जिनका जन्म कृष्ण पक्ष में हो उनको कृष्ण पक्ष के ही दोनों अंकों को काम में लाना चाहिए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

विशिष्ट राजनेताओं का संक्षिप्त भविष्य वि. सं. २०६२ में बोध

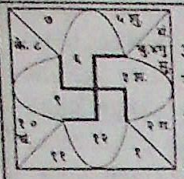

महामहिम राष्ट्रपति जी **श्रीमान ए.पी.जे. अब्दुल कलाम** साहब भारत सरकार- आपकी जन्म कुण्डली एवं शपथ कालीन ग्रह गति के अनुसार वर्ष २०६२ में आपका स्वास्थ्य दिनांक १५-५-०५ से २७-९-०५ तक नरम रहेगा। दिनांक १६-६-०५ से १७-७-०५ मध्य हवाई यात्रा में बाधा योग। फिर भी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान प्राप्ति का योग बनेगा।

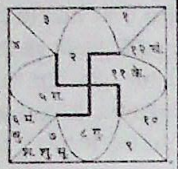

महामहिम उपराष्ट्रपति जी **श्रीमान भैरों सिंह जी शेखावत** भारत सरकार- आपकी जन्म कुण्डली के योगानुसार वि.सं. २०६२ सामान्य रहेगा। परिवार में अशोभनीय घटना के कारण मानसिक परेशानी राहु-केतु के कारण बनेगी। दिनांक १७-७-०५ से २०-१०-०५ तक स्वास्थ्य भी बिगड़ेगा। वाहन से विशेष सावधान रहें। दिनांक १५-११-०५ से २०-१-०६ तक का समय मंगलमय रहेगा। परन्तु खुशी से कुछ अशोभनीय घटना का योग भी बनता है।

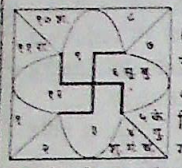

डॉ. श्री मन मोहन सिंह प्रधानमंत्री (वर्तमान) भारत सरकार- आपके ग्रह शुभ चल रहे हैं। दिनांक २६-९-०४ से २५-११-०५ तक का समय अग्नि परीक्षा का रहेगा। विश्व में वर्चस्व तो बढ़ेगा, लेकिन स्वास्थ्य में गड़बड़ी तथा प्रशासन में उदासीनता बनेगी। ग्रह योग से आप पांच वर्ष तक प्रधान मंत्री नहीं रहने के संकेत बनते हैं। आपको पार्टी का सम्मान तो मिलता रहेगा। दिनांक २०-५-०५ से २७-९-०५ मध्य त्याग पत्र भी दे सकते हैं। हवाई यात्रा में विशेष घटना का योग भी फरवरी २००६ से मार्च २००६ तक बनता है।

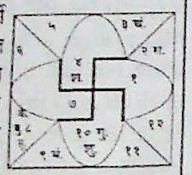

श्रीमति सोनियां गाँधी (कांग्रेस पार्टी राष्ट्रीयाध्यक्ष)- आपकी कुण्डली की स्थिति में राज भंग योग बनता है, लेकिन परिवर्तन योग के कारण राजनैतिक वर्चस्व बढ़ेगा। देश में आपकी पार्टी का वर्चस्व सन् २०१० तक रहेगा। मई २००५ से जुलाई २००५ मध्य पुनः पार्टी द्वारा नेता चुनने का योग (प्रधान मंत्री बाबत) बनेगा। देश में अशान्ति बढ़ेगी। गुरू-शनि ग्रह के कारण स्वेच्छा से पद त्याग का योग भी बनेगा। दिसम्बर २००५ में स्वास्थ्य प्रतिकूल। मार्च २००६ वाहन, वायुयान से सावधान रहें।

श्रीमति राबड़ी देवी यादव (मुख्यमंत्री बिहार)-ग्रह योग गुरु ग्रह से पारिवारिक बाधाएं आपको राजनैतिकता से हटाने की घटक बनेगी। जून २००५ से अगस्त २००५ तक अशुभ समय रहेगा। आप गुप्त रोग से भी पीड़ित राहु-केतु से होंगी। न्यायालय जन्य मामलों का चक्कर भी पार्टी पक्ष से मई २००५ से जुलाई २००५ में बनता है।

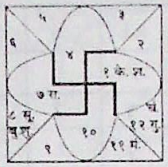

श्रीमान् मुलायम सिंह यादव (मुख्य मंत्री यू.पी.)- आपके लिए वर्ष २०६२ में राजनैतिक पतन जैसा योग बनता है। वाहन दुर्घटना का योग अगस्त २००५, नवम्बर २००५ तथा फरवरी २००६ में बनता है। पार्टी का नेतृत्व भी सामान्य रहेगा। युवा वर्ग द्वारा आपको विशेष मान-सम्मान प्राप्ति तथा चुनाव में विजय योग बनता है। आन्तरिक कलह से (कारक राहु-केतु) पारिवारिक स्थिति भी बिगड़ेगी। केन्द्रिय सरकार में मंत्री पद का योग इस वर्ष में नहीं बनता है।

सुश्री जय ललिता-आपकी जन्म-कुण्डली के योगानुसार स्वयं की पार्टी का नेतृत्व यथावत रहेगा। केन्द्र में भी बोलबाला बनेगा। अक्टूबर २००५ तक भविष्य उज्जवल है। आपको दिसम्बर २००५ से फरवरी २००६ तक सुरक्षा गार्ड से भी संभल कर रहना चाहिए। विदेशी यात्रा में जाना हानिकारक रहेगा। विपक्ष द्वारा परेशानियां बढ़ेंगी, लेकिन शनि राशि पति विजय दिलायेगा।

श्रीमति प्रियंका बढ़ेरा- आपका भविष्य राजनैतिक दृष्टि से सामान्य रहेगा। वर्ष २०६२ में आपका वर्चस्व विशेष बढ़ेगा। परिवार में अशुभ घटना के कारण मानसिकता का झटका लग सकता है। वायुयान की यात्रा में अग्नि जन्य योग भी है। आगामी मध्यावधि चुनाव में आपकी विजय का योग बनता है। मकान ढहने या रेलवे क्रॉस करते समय खतरा रहेगा। फिर भी शनि सन् २००६ तक वर्चस्व बढ़ाने का कार्य करेगा।

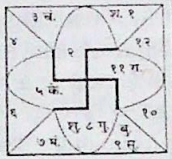

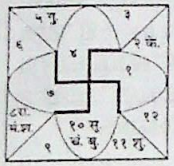

सुश्री मायावती- आपके जन्मांग से अवगत होता है कि गुप्तचर आपकी सफलता में नित्य बाधक रहेंगे। प्रान्तीय स्तर पर आपका सम्मान एवं वर्चस्व रहेगा। केन्द्रीय स्तर पर विफलता का योग मंगल, गुरु राहु-केतु से बनता है। वाम मोर्चा आपको इज्जत देंगे। आपकी पार्टी का वर्चस्व २००८ बाद विशेष बढ़ेगा। जलयान से सावधान। सितम्बर २००५ से नवम्बर २००५ तक अशोभनीय घटना, रोग, पीड़ा बाधा। सावधान रहें! ईश्वर रक्षा करें।

श्रीमति वसुन्धरा राजे सिन्धिया (मुख्यमंत्री राज. सरकार वर्तमान)-आपकी कुण्डली में गुरु ग्रह श्रेष्ठ गज केसरी योग तथा परिवर्तन योग-मंगली योग के कारण बाल्य काल से ही नेतृत्व का वर्चस्व रहा। वर्ष २०६२ में स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। पार्टी का वर्चस्व आप के कारण बढ़ेगा। सितम्बर २००५ से नवम्बर २००५ मध्य वाहन से सावधान। पारिवारिक विवाद मई ०५ में बनेगा। आपको दक्षिणी भारत में वर्चस्व ज्यादा मिलेगा। जून २००५ से जुलाई २००५ मध्य विदेश यात्रा योग भी बनता है। गुरु ग्रह की प्रधानता से रेल विभाग का वर्चस्व बढ़ेगा। पार्टी का वर्चस्व बावत शुक्र-शनि ग्रह का योगदान मिलेगा। दिनांक १५-५-०५ से १७-६-०५ तक स्वास्थ्य खराब। दिनांक १०-१०-०५ से १३-१२-०५ तक वर्चस्व में कमी यानि परेशानी। राष्ट्रीय स्तर का पार्टी दायित्व योग फरवरी २००६ से जून २००६ मध्य बनता है। राजस्थान का भौतिक विकास लक्ष्य के अनुरूप नहीं कर पायेंगी। चार बार मंत्री मण्डल में फेरबदल तथा प्रत्येक बार विरोध राहु-केतु के कारण बनेगा। सावधान रहें!

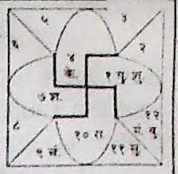

माननीय श्री अशोक गहलोत (पूर्व मुख्य मंत्री राजस्थान)- आपकी कुण्डली के अनुसार वर्ष २०६२ में राजनैतिक भविष्य उज्जवल है। सन् २००६-२००७ में आप केन्द्रिय स्तर पर पद दायित्व वहन करेंगे। राजस्थान में पार्टी का प्रभुत्व आपके नेतृत्व में दिनांक १६-७-०५ से २७-१०-०५ मध्य बनता है। आपके प्रभाव से स्थानीय निकायों में पार्टी का वर्चस्व बढ़ेगा तथा काफी स्थानों पर बोर्ड भी बनेगा। गुरु-शनि आपको पुनः नयी चेतना भी देगा।

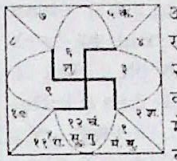

माननीय श्री अटलबिहारी जी वाजपेयी (पूर्व प्रधान मंत्री)-आपकी कुण्डली में शुभ योग जनवरी २००४ से ही कमजोर हो गये हैं, तथा गोचर में कर्त्तरी योग की पूर्व घोषित चुनाव तिथि से बना है अब आपका पुनः प्रधान मंत्री पदासीन होने का योग सन् २०१० तक नहीं बनता। आपको राष्ट्रीय सम्मान विश्वस्तरीय सम्मान सन २००७ में गुरु-शनि-मंगल के प्रभाव से मिलने का योग बनेगा। लेकिन सन् २००६ में स्वास्थ्य प्रतिकूल रहेगा। आगामी अक्टूबर २००५ में भी कुछ अशोभनीय घटनाएं घटेंगी।

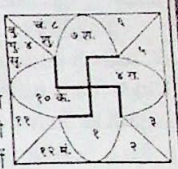

माननीय श्रीमान लालकृष्ण जी अडवानी (उपप्रधान मंत्री पूर्व)-आपको वर्ष २०६२ में काफी राजनैतिक समस्याओं के साथ न्यायालय तक पथ गमन करना पड़ेगा। भविष्य में एक बार सन् २००८ में मिश्रित सरकार के रूप में नेता-पद बाबत आमंत्रण मिलेगा। लेकिन

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विश्वास मत बिगड़ने का योग भी है। फिर भी राजनैतिक भविष्य गुरु-बुध-मंगल के कारण प्रभावी रहेगा। शिवसेना एवं बी.जे.पी. के विवाद में आपका हस्तक्षेप अशोभनीय घटना का मोड़ पैदा करेगा। उत्तरी भारत की यात्रा में विशेष सावधानी आवश्यकता है। ईश्वर रक्षा करें!

डॉ. प्रवीण जी तोगड़िया- आपकी ग्रह स्थिति के अनुसार मार्च २००५ से मई २००५ तक न्यायालय पथ गमन का योग फिर भी वर्चस्व बढ़ेगा। सन् २००८ से २०१० तक आपका वर्चस्व सर्वत्र यशस्वी रहेगा। लेकिन सन् २००७ में अशोभनीय घटना से बचने के बाद। रात्रिकालीन सभा में सावधान रहें। राजनैतिक पार्टियों द्वारा ही (राहु-केतु) कर्त्तरी योग बनेगा।

श्रीमान राहुल गांधी (सांसद वर्तमान)- ग्रहयोगानुसार आगामी वर्ष २००५-२००६ में वर्चस्व बढ़ेगा। सन् २००७ में प्रधानमंत्री पद तक आमंत्रण योग भी गुरु-मंगल-शनि-शुक्र-बुध की स्थिति से बनेगा। फिर भी मातृ पक्ष से विरोध भी होगा। दक्षिणी भारत में आपका वर्चस्व बढ़ेगा। शनि ग्रह के कारण वशानुकूल योग भी जनता को प्रभावित करेगा। आपको भी पिता की भाँति सन् २००९-१० में समसामयिक घटनाओं में हादसा होने से अशोभनीय घटना का शिकार होना पड़ सकता है। पारिवारिक बाधाएं तथा हृदय रोग का भी प्रभाव २००९-१० में बनता है। ईश्वर रक्षा करे!

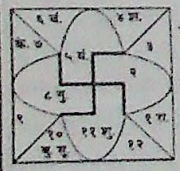

श्री प्रमोद महाजन-मंगल-शुक्र-बुध के कारण आपका भविष्य दिनांक १६-६-०५ से १७-११-०५ तक प्रगतिशील होगा तथा नया पद या पार्टी के विशेष योगदान बाबत दायित्व मिलेगा। सन् २००७ से २००९ तक का समय विशेष पद हेतु शोभित रहेगा। जलयान से जून २००६ में सावधान रहना चाहिए। ईश्वर रक्षा करे।

श्री एन. चन्द्र बाबू नायडू-वर्तमान में समय ठीक है। मार्च २००६ से २००७ अप्रेल तक अशोभनीय समय रहेगा। राजनैतिक पार्टियों से विशेष प्रभावित होकर उदासीन हो जायेंगे। यात्रा में सावधान रहें। दिनांक २५-५-०५ से २०-९-०५ तक का समय संकट दायक रहेगा। रोगादि भय तथा दुर्घटना योग। जनता से भी नाराजगी योग है।

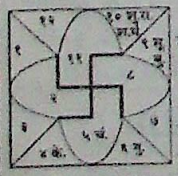

श्री मुरली मनोहर जी जोशी- आपका इस वर्ष का भविष्य राजनीति में सामान्य रहेगा। मध्य भारत में वर्चस्व बढ़ेगा। सन् २००६ में आपको अच्छा पद व मान सम्मान का योग बनता है। अंग रक्षक से सावधानी अत्यावश्यक है। परिवार में कुछ अशुभ घटना का योग है। व्यक्तित्व का प्रभाव बना रहेगा। पार्टी में आपकी अहमियत व्यक्तित्व के कारण बनी रहेगी। पानी से विशेष भय रहेगा। विदेश यात्रा के तीन योग बनेंगे।

ज्योति बसु- आपका राजनीति में आगामी भविष्य उज्ज्वल नहीं है। वर्ष विशेष कष्टदायी रहेगा। रोग भय भी रहेगा। पार्टी का उत्तराधिकारी नियुक्त करना हितकर रहेगा। २५-५-०५ से २२-८-०५ तक असामयिक घटना तथा मृत्युतुल्य कष्ट होगा। परिवार में आपका वर्चस्व बढ़ेगा। सम्मान समारोह में मान बढ़ेगा। पश्चिमी बंगाल में राजनैतिक विद्रोह का भी अचानक योग बनता है।

श्री सुनील दत्त (अभिनेता)-आपको वर्ष २०६२ में राजनैतिक क्षेत्र में उकसाया जायेगा। आर्थिक लाभ विशेष रहेगा। कुछ घटक शारीरिक हानि पहुंचाएंगे। स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। फिल्मी क्षेत्र में साख न्यून होगी। शनि ग्रह से उपद्रव जैसे अभियोग का मामला बनेगा। न्यायालय पथगमन योग बनता है।

श्री शरद पवार- आपकी नयी पार्टी का वर्चस्व घटेगा। राजकाज कार्यों में अचानक विवाद बढ़ेगा। वर्तमान पद भी जाने का योग दिनांक २६-६-०५ से पूर्व बनता है। छवि में निखार नहीं, कुंठिता योग रहेंगे। वर्ष असन्तुष्ट दायक रहेगा। यात्रा में सावधान रहना चाहिए। अग्नि जन्य या कार दुर्घटना योग है।

श्री पी. चिदंबरम-वर्ष २०६२ में काफी परिवर्तन योग बनेगा। पद मिलेगा। पद छिनेगा। स्वास्थ्य भी गड़बड़ योग दिनांक २६-६-०५ से १०-८-०५ तक। विशेष सावधान। पद के प्रभाव से त्रुटि हो गयी भी तो अपमान का झटका लगेगा। वर्तमान पद पांच वर्ष तक नहीं रहेगा। पार्टी के विवाद में आपको भी घेरे में गिनने का योग है। विभागीय कार्यप्रणाली में किये जा रहे कार्यक्रम विफल होंगे।

श्री प्रणव मुखर्जी- आपके लग्न एवं ग्रहानुसार जन्म लग्न कर्क में होने तथा शनि एवं बुध के कारण गोचरानुसार राजनीति में वर्चस्व बढ़ेगा। दिनांक २५-५-०५ से २९-६-०५ व १०-८-०५ से २०-९-०५ तक काफी लाभ दायक योग अर्थात् प्रधानमंत्री बनने तक के शुभ योग बनते हैं। पार्टी में वर्चस्व बढ़ेगा। कार्य क्षेत्र राष्ट्रीय स्तर पर मान मिलेगा।

श्री राम विलास पासवान-आपके जन्मांग के अनुसार गुप्तचर आपकी नीति से विरुद्ध प्रयास करेंगे। राजनैतिक भविष्य इस वर्ष सामान्य रहेगा। परिवार में अशुभ घटनाएं घटेंगी। नीति जन्य वार्ता भी आपको बाधित कर सकती हैं। सत्ता में मिली भागीदारी भी अचानक छूटने का योग बनता है। किसी स्त्री पक्ष से विवाद भी होगा।

एम. करुणानिधि-आपका लग्न एवं ग्रहादि के अनुसार भविष्य अच्छा रहेगा। विवाद में कोई अशुभ घटना से मृत्यु तुल्य कष्ट पैदा होगा। पार्टी के नेतृत्व में आप वर्ष २०६२ में सामान्य रहेंगे। दिनांक २६-६-०५ से २८-१०-०५ तक विशेष कष्ट योग एवं हानि का योग है।

स्वर शिरोमणि लता मंगेशकर-वर्ष २०६२ में स्वास्थ्य नेष्ट परिवार में भी अशुभ घटना जून २००५ में घटेगी। अन्तर्राष्ट्रीय मान सम्मान योग दिनांक ५-९-०४ से २६-७-०५ तक अच्छा है। विवाद के घेरे में फंसने का योग अक्टूबर ०५ है। तथा सन् २००६ में विमान दुर्घटना योग है। सावधान रहें!

श्री आर्यभट्ट संस्थान का भविष्य-शनि-गुरु-मंगल के प्रभाव से आणविक शक्ति का विशेष शोध होगा। तथा उपग्रह जन्य उपकरणों के निर्माण में भारत विश्व में वर्चस्व प्राप्त करेगा। अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में संस्थान की ख्याति बढ़ेगी।

श्री टोनी ब्लेयर (ब्रिटेन के प्रधानमंत्री)-आपका वर्ष २०६२ मध्य भविष्य अच्छा रहेगा। राजनीति में प्रभाव अच्छा तथा यात्राएं ज्यादा होंगी। लेकिन हवाई यात्रा में जून २००५ से फरवरी २००६ तक सावधानी रखें। दुर्घटना योग शनि के कारण बनेगा। अमेरिका के कार्यक्रम से चिंतित रहेंगे।

श्री नरोत्तम मिश्र (मध्य प्रदेश विधान सभा सदस्य)-ग्रह योग के अनुसार आपका आगामी राजनैतिक भविष्य उज्जवल है। आपको मंत्रिमण्डल में पद मिलने का योग बनता है। यात्रा में कार दुर्घटना जुलाई २००५ से सितम्बर ०५ तक है।

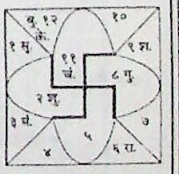

सुश्री उमा भारती- ग्रहयोगानुसार आपकी कुण्डली में शुक्र ग्रह पूर्ण सन्यासी योग भंग कर सूर्य सप्तमेश होकर विवाह योग से वंचित कर राहु-केतु-बुध ने राजनीति में प्रवेश कराया। आप आजीवन राजनीति में मंगल के कारण नहीं रहेंगी। पार्टी के वर्चस्व में तथा गुरु वर्गोत्तम के कारण असत्यता या कटुवार्ता से वर्ष २०६२ पूर्णत: विवादित रहेगा। काफी वर्गों से मतभेद चलेगा। वर्ष २०६२ में पार्टी में कोई पद प्राप्ति योग भी बनता है। जून २००४ से आपके राहु-केतु के कारण अशुभयोग चल रहा है जो राजनीति में मुख्य मंत्री पद से भी वंचित कर दिया। यह समय दिनांक १०-११-०५ तक विवादित वर्ष रहेगा।

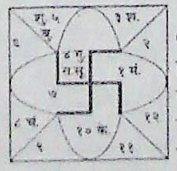

परवेज मुशर्रफ- (११-८-०४३ प्रात: ५.०० दिल्ली में जन्म) इनकी कुण्डली में मंगल द्वारा रूचक योग तथा सूर्य-गुरु-राहु के तानाशाही योग से फौजी तथा प्रशासन योग की प्राप्ति छीनकर करना या अधिकार जमा कर प्राप्त करना बनता है। वर्ष २०६२ यानि सन् २००५-०६ में आपका स्वभाव बदलेगा। शनि ग्रह लग्न में आने से पतन की ओर समय बनेगा। भारत के प्रति व्यवहार गुप्त मंत्रणा वाला रहेगा। अचानक धोखा से व्यापार व नीति तंत्र में परिवर्तन कर सकता है। दिनांक २५-५-०५ से २०-८-०५ तक का समय अशुभ रहेगा। घोषित नीति का क्रियान्वयन नहीं होगा।

कांग्रेस पार्टी कुण्डली

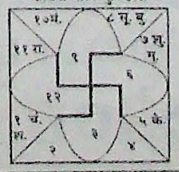

भाजपा (गठन) कुण्डली

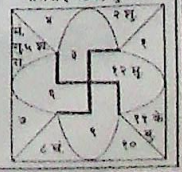

शुभम् भवतु
मंगलं भवतु

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहण विवरण विक्रम संवत् २०६२

इस वर्ष संवत् २०६२ में भारतीय भू-भाग पर तीन ग्रहण दिखाई देंगे। जिसमें सूर्य ग्रहण दो एवं एक चन्द्रग्रहण दिखाई देगा, जिनका विवरण इस प्रकार से है।

१. कंकणाकृति सूर्यग्रहण—आश्विन कृष्ण ३० सोमवार ता. ३ अक्टूबर २००५ई. को हस्त नक्षत्र व कन्या राशि के चन्द्रमा में यह ग्रहण होगा। यह ग्रहण दक्षिण पश्चिम एशिया, यूरोप, अफ्रिका, हिन्द महासागर और भारतीय भू-भाग पर खण्डग्रास दिखाई देगा। सोमालिया, सूडान, इथोपिया, केन्या, लीबिया, अल्जीरिया, स्पेन और पुर्तगाल आदि स्थानों पर ककणाकृत्ति दिखाई देगा। इस ग्रहण को पूर्णतया समझने हेतु मानचित्र देखें।

२. ग्रस्तोदित खण्डग्रास चन्द्र ग्रहण—आश्विन शुक्ल १५ सोमवार ता. १७ अक्टूबर २००५ ई. को रेवति व अश्विनी नक्षत्र तथा मीन व मेष के चन्द्रमा पर यह ग्रहण होगा। भारतीय भू-भाग पर यह ग्रहण राजस्थान व गुजरात के कतिपय पश्चिमी भाग को छोड़कर सर्वत्र दिखाई देगा। एशिया, पेसेफिक महासागर, ऑस्ट्रेलिया, उत्तरी अमेरिका, उत्तरी ग्रीनलैण्ड, पूर्वी हिन्दमहासागर, आर्कटिक आदि स्थानों पर दिखाई देगा। दिखाई न देने वाले स्थानों की जानकारी हेतु मानचित्र देखें। दिखाई न देने वाले स्थानों पर ग्रहण का वेध व पर्वकाल मान्य नहीं है।

३. खग्रास सूर्य ग्रहण—चैत्र कृष्ण ३० बुधवार ता. २९ मार्च २००६ ई. को उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र व मीन राशि के चन्द्रमा में यह ग्रहण होगा। इस ग्रहण को भारतीय भू-भाग पर उत्तरी अक्षांश २१° से ऊपर के ही भागों में देखा जा सकेगा। इससे नीचे के भागों में दिखाई न देने के कारण इन स्थानों पर ग्रहण का वेध व पर्वकाल मान्य नहीं है। पूर्णतया समझने हेतु मानचित्र देखें। यह ग्रहण ब्राजील, बेनीन, नाईजीरिया, चाड, लीबिया, ईजिप्त, तुर्की, रसिया और अफ्रिका में खग्रास व भारत में खण्डग्रास दिखाई देगा।

॥ भारतीय भू-भाग पर दृश्य ग्रहणों का समयादि॥

कंकणाकृति सूर्य ग्रहण-आश्विन कृष्ण ३० सोमवार ता. ३ अक्टूबर २००५ ई. चन्द्रमा कन्या राशिस्थ एवं हस्त नक्षत्र परमग्रासमान ०.८९०

इस ग्रहण का वेध (सूतक) आश्विन कृष्ण १४ रविवार रात्री ता. २ उपरांत ३ अक्टूबर २००५ ई. को ४।२० बजे रात्री से लगेगा। रोगियों, बालकों व वृद्धों को छोड़कर अन्य पुरुष वा स्त्रियों को वेध काल में भोजनादि करना निषेध है। ग्रहण का कुल समय (पर्वकाल) १ घंटा ०८ मिनट का काल, जप-दान, धर्मार्थ कार्य हेतु पुण्य प्रद है।

ग्रहणारम्भ (स्पर्शकाल) :- सायं १६।२० बजे

ग्रहण मध्य :- सायं १६।५५ बजे

ग्रहण समाप्ति (मोक्ष काल) :- सायं १७।२८ बजे

ग्रहण का राशियों पर शुभाशुभ ज्ञानाय कोष्ठक, कतिपय स्थानों की स्पर्श मोक्षकाल तालिका व मानचित्र निम्न प्रकार से है।

आश्विन कृष्ण ३० सोमवार ता. ३ अक्टूबर २००५ ई. कंकणाकृति सूर्यग्रहण

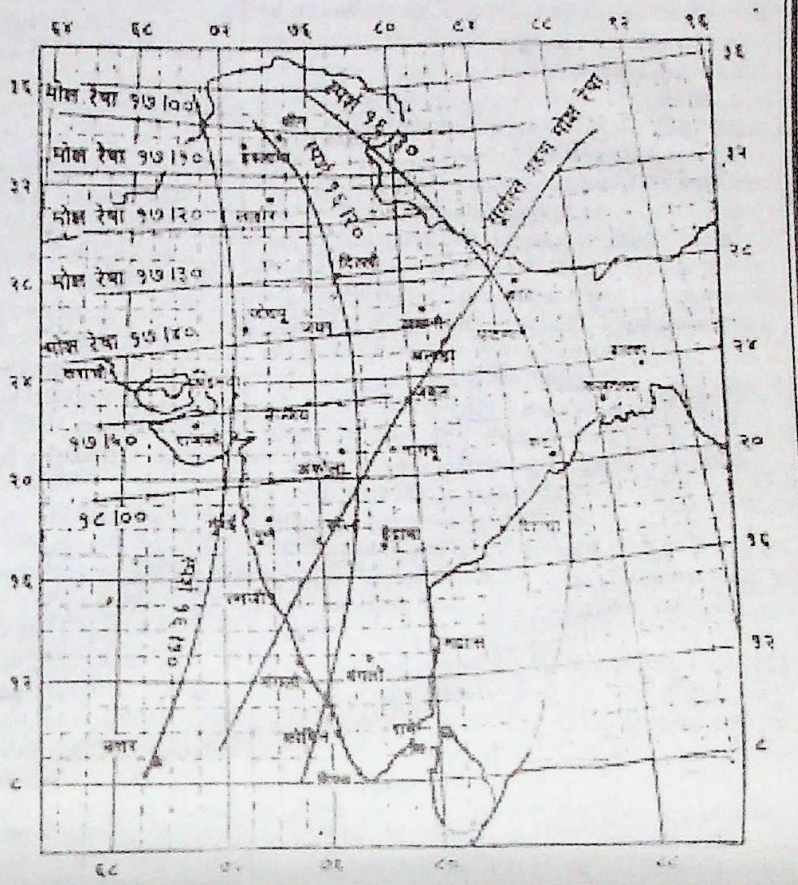

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
फलम्	मनोबल वृद्धि	मनोद्वेग	कष्ट	धन लाभ	अर्थ हानि	रोग वृद्धि	धन हानि	लाभ	सौख्य	मान हानि	रोग उत्पात	स्त्री पीड़ा

स्थान	अहमदाबाद	मुंबई	जयपुर	बीकानेर	कलकत्ता	चेन्नई	कानपुर	हिसार	चण्डीगढ़	बैंगलोर	पटना	गुवाहाटी
स्पर्श	१६.१०	१६.११	१६.१७	१६.१२	१६.३१	१६.२५	१६.२४	१६.१७	१६.२१	१६.२२	१६.३०	१६.३४
मोक्ष	१७.४९	१८.२	१७.३५	१७.३०	१७.२२	१७५७	१७.३८	१७.२६	१७.१९	१८.०८	१७.३३	१७.०७

ग्रस्तोदित खण्डग्रास चन्द्र ग्रहण

आश्विन शुक्ला १५ सोमवार ता. १७ अक्टूबर २००५ ई.-चन्द्रमा मीन व मेष राशिस्थ तथा रेवति व अश्विनी नक्षत्र पर-परम ग्रासमान ०.०६८।

इस ग्रहण का वेध आश्विन शु. १५ ता. १७ अक्टूबर प्रातः ८।४ बजे से लगेगा। निम्न मानचित्रानुसार राजस्थान व गुजरात के जिन पश्चिमी क्षेत्रों में ग्रहण दिखाई नहीं देगा, उन स्थानों में ग्रहण वेध मान्य नहीं है। ग्रहण का कुल समय (पर्वकाल) ० घं. ५८ मि. है।

ग्रहणारम्भ (स्पर्श) :- सायं १७।४ बजे, **ग्रहण मध्य :-** सायं १७।३३ बजे

ग्रहण समाप्ति (मोक्ष काल) :- सायं १८।२ बजे।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
फलम्	रोग उपद्रव	लाभ	धन अर्जन	सौख्य	मान हानि	रोग	स्त्री कष्ट	मनोबल वृद्धि	मनो द्वेग	कष्ट	धन लाभ	हानि

ग्रहण दिखाई न देने वाले स्थानों की चन्द्रोदय सारणी:

स्थान	अहमदाबाद	सुरत	बड़ौदा	जैसलमेर	नासिक	मुंबई	पुना	भुज
चन्द्रोदय	१८।७	१८।८	१८।८	१८।१०	१८।४	१८।१०	१८।६	१८।१९

शाके १९२७ अश्विन शु. १५ सोमवार, १७-१०-२००५ (ग्रस्तोदित) खंडग्रास चन्द्रग्रहण

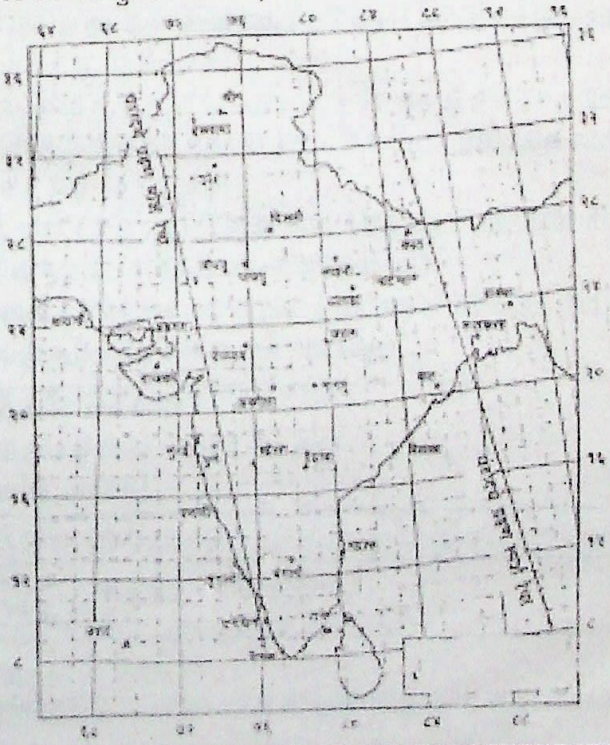

खण्डग्रास सूर्यग्रहण

चैत्र कृष्ण ३० बुधवार ता. २९ मार्च २००६ ई.

चन्द्रमा मीन राशिस्थ एवं उ.भा. नक्षत्र में -खग्रासमान १.०५२।

इस ग्रहण का वेध (सूतक) चैत्र कृष्ण १४ मंगलवार ता. २८ उपरांत २९मार्च को रात्री ४।३३ बजे लगेगा। ग्रहण का कुल समय (पर्वकाल) १घं. २९मि.। खग्रास स्थिरता कुल ४ मि. ७ सेकेण्ड है।

ग्रहणारम्भ (स्पर्शकाल) :- सायं १६।३३ बजे।

खग्रासारंभ (सम्मिलन) :- सायं १६।५६ बजे।

ग्रहण मध्य :- सायं १७।१९ बजे।

खग्रास पूर्ति (उन्मिलन):- सायं १७।४१ बजे।

ग्रहण समाप्ति (मोक्ष काल) :- सायं १८।१२ बजे।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन
फलम्	मनोद्वेग	दुख	अर्थ लाभ	धन हानि	रोग उपद्रव	हानि	लाभ	सौख्य	मान हानि	रोग	स्त्री पीड़ा	मनोबल वृद्धि

स्थान	स्पर्श	मोक्ष	स्थान	स्पर्श	मोक्ष
अहमदाबाद	१६.४२	१७.४८	चण्डीगढ़	१६.२९	१८.०६
उदयपुर	१६.३८	१७.५०	कानपुर	१६.४२	१७.५७
बीकानेर	१६.२९	१८.००	पटना	१६.४९	१७.५६
अजमेर	१६.३५	१७.५६	भोपाल	१६.४९	१७.४६
कलकत्ता	१७.०२	१७.४६	सूरत	१६.५०	१७.३५
हिसार	१६.३०	१८.०३	गुवाहाटी	१६.५१	१७.३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विक्रम सम्वत् २०६२ शाके १९२७ मध्ये विवाह मुहूर्त्ताः

समय शुद्धि

शुक्र अस्तः-वर्षारंभ से ही पूर्वास्त शुक्र चैत्र शुक्ल पूर्णिमा दिनांक २४ अप्रेल २००५ ई. को पश्चिम में उदय होगा। पौष शुक्ल नवमी रविवार दिनांक ८ जनवरी २००६ ई. को पश्चिम में अस्त होकर पुनः माघ कृष्ण चतुर्थी बुधवार दिनांक १८ जनवरी २००६ ई. को पूर्व में उदय होगा।

गुरु अस्तः-इस वर्ष संवत् २०६२ वि. में आश्विन शुक्ल पंचमी शनिवार दिनांक ८ अक्टूबर २००५ ई. को पश्चिमास्त होकर कार्तिक शुक्ल चतुर्थी शनिवार दिनांक ५ नवंबर २००५ ई. को पूर्व में उदय होगा।

धनु राशि में सूर्य (मल मास):-मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा गुरुवार दिनांक १५ दिसंबर २००५ ई. से पौष शुक्ल पूर्णिमा शनिवार दिनांक १४ जनवरी २००६ ई. तक।

होलाष्टकः-फाल्गुन शुक्ल अष्टमी मंगलवार दिनांक ७ मार्च २००६ ई. से फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा मंगलवार दिनांक १४ मार्च २००६ ई. तक।

मीन राशि में सूर्य (मल मास):-फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा मंगलवार दिनांक १४ मार्च २००६ ई. से वर्ष पर्यन्त।

इस पंचांग में गुरु-शुक्र का उदयास्त ज्योतिर्गणित की सूक्ष्म उन्नतांश पद्धति से दिया गया है। गुरु-शुक्र के अस्त काल से ३ दिन पूर्व वृद्धत्व काल से तथा उदय के ३ दिन बाद तक के बाल्यत्व काल में विवाहादि शुभ कर्म वर्जित हैं।। तदनुसार ही मुहूर्त्त दिये गए हैं।

नोटः-नीचे लिखे विवाह मुहूर्त्तों में जहां कहीं युति, वेध और दग्धा तिथि दोषों में परिहार वाक्य मिले हैं, वे विवाह मुहूर्त्त भी दिये गए हैं। इनमें क्रांति साम्य दोष स्थूल न लेकर सूक्ष्म गणितागत लिया गया है।

अथ शुद्ध विवाह मुहूर्त्ताः

	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
वैशाख कृष्ण पक्षः	७	शनि	३०	अप्रैल	उ.षा.	रे. ७ऽऽ ॥ऽ ॥॥। ल.धूलिमुखे सायंकाले।
	७	शनि	३०	अप्रैल	श्रवण	रे. ९ ॥॥॥ ॥ऽ ॥ ल.कुंभ रात्री १।५८ बजे। मीन ३।२६ बजे।
	८	रवि	१	मई	श्रवण	रे. ८ ॥॥॥ ऽ रो।ऽ ॥ ल.धूलिमुखे सायंकाले।
वैशाख शुक्ल पक्षः	१	सोम	९	मई	रोहि.	रे. ९ ॥॥॥ ॥ऽ ॥। ल.कुंभ रात्री १।२२ बजे (चतुर्थ चन्द्र आवश्यके)
	२	मंगल	१०	मई	रोहि.	रे. ९ ॥॥॥ ॥ऽ ॥। ल.कर्क दिवा १०।०१ बजे। कन्या दिवा २।३८ बजे। (राहु सप्तम पूज्य)
	२	मंगल	१०	मई	मृग.	रे. ८ ॥॥॥ ऽ रोऽ ॥। ल.कुंभ रात्री १।१८ बजे (चन्द्र चतुर्थ आवश्यके)
	३	बुध	११	मई	मृग.	रे. ९ ॥॥॥ ऽरो ॥॥ ल.कर्क दिवा ९।५७ बजे। ल.कन्या दिवा २।३४ बजे। (राहु सप्तम पूज्य)
	८	सोम	१६	मई	मघा	रे. ८ ॥॥॥ ऽग्नि ।ऽ ॥ ल. कुंभ रात्री १२।५५ बजे।
	९	मंगल	१७	मई	मघा	रे. ८ ॥॥॥ ऽग्नि ।ऽ ॥ ल. मिथुन दिवा ७।२० बजे। ल.कर्क ९।३४ बजे। (रिक्ता तिथि आवश्यके)
	११	शुक्र	२०	मई	हस्त	रे. ८ ॥ऽगु ॥ ।ऽ ॥। ल.मिथुन दिवा ७।८ बजे। ल.तुला दिवा ४।१६ बजे से ६।१८ बजे तक।
	१२	शनि	२१	मई	स्वाती	रे. ७ ।ऽ ॥ ।ऽचौऽ ॥। ल. कुंभ रात्री १२।३५ बजे।
	१३	रवि	२२	मई	स्वाती	रे. ८ ।ऽ ॥ ॥ऽ ॥। ल.मिथुन प्रातः ७।०० बजे। कन्या दिवा ९।५१ बजे। (रिक्ता व क्षय तिथि आवश्यके)
	१५	सोम	२३	मई	अनु.	रे. ६ ॥ ॥ऽसू.बु.ऽरो.ऽऽ ॥ ल.तुला दिवा ४।४ बजे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः	४	शुक्र	२७	मई	उ.षा.	रे. ६ ॥ ।ऽशु ऽ ॥ऽ ।ऽ ल.मिथुन प्रातः ६ ।४० बजे। (रिक्ता व दग्धा तिथि आवश्यके) (चन्द्र सप्तम पू.)
	९	मंग.	३१	मई	उ.भा.	रे. ८ ॥ ।ऽगु. ॥ ।ऽ ॥ ल.कुंभ रात्री १२ ।४८ बजे।
	१०	बुध	१	जून	उ.भा.	रे. ८ ॥ ।ऽगु. ॥ ।ऽ ॥ ल. मिथुन प्रातः ६ ।१९ बजे।
	११	गुरु	२	जून	अश्वि.	रे. ८ ॥ ॥ऽ ॥ऽ ॥ ल. मीन रात्री १ ।१४ बजे।
	१२	शुक्र	३	जून	अश्वि.	रे. ८ ॥ ॥ऽ ॥ऽ ॥ ल.मिथुन प्रातः ६ ।११ बजे। कर्क ८ ।२५ बजे।
ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः	५	रवि	१२	जून	मघा	रे. ८ ।ऽ ॥ ॥ऽ ॥। ल. धूलिमुखे सायं काले। धनु रात्री ७ ।२२ बजे।
	१०	शुक्र	१७	जून	स्वा.	रे. ८ ॥ ॥ ।ऽग्निऽ ॥। ल. वृष रात्री ३ ।५९ बजे।
	११	शनि	१८	जून	स्वा.	रे. ९ ॥ ॥ ॥ऽ ॥। ल. कुंभ रात्री १० ।४६ बजे।
	१२	रवि	१९	जून	अनु.	रे. ८ ॥ ॥ ।ऽनृऽ ॥। ल.मेष रात्री १ ।३५ बजे। वृष रात्री ३ ।११ बजे।
	१३	सोम	२०	जून	अनु.	रे. ८ ॥ ॥ ।ऽनृऽ ॥। ल.कर्क प्रातः ७ ।२० बजे।
	१३	सोम	२०	जून	अनु.	रे. ९ ॥ ॥ ॥ऽ ॥। ल.तुला दिवा २ ।१४ बजे।
आषाढ़ कृष्ण पक्षः	१	गुरु	२३	जून	उ.षा.	रे. ९ ॥ ॥ ।ऽरो ॥ ॥ ल.कुंभ रात्री १० ।२७ बजे। ल.मेष रात्री १ ।२०बजे। वृष २ ।५६ बजे। (तिथि क्षय आवश्यके)
	३	शुक्र	२४	जून	उ.षा.	रे. ९ ॥ ॥ ।ऽरो ॥ ॥ ल.कर्क प्रातः ७ ।५बजे। (चन्द्र सप्तम पूज्य)
	४	शनि	२५	जून	श्रवण	रे. ७ ।ऽ ॥ऽश. ।ऽ ॥। ल.कर्क प्रातः ७ ।१ बजे। (चन्द्र सप्तम पूज्य)
	७	मंगल	२८	जून	उ.भा.	रे. ८ ॥ ।ऽगु. ॥ ।ऽ ॥ ल.कर्क प्रातः ६ ।४९ बजे।
	७	मंगल	२८	जून	उ.भा.	रे. ७ ॥ ।ऽगु. ॥ ।ऽ ।ऽ ल. वृश्चिक दिवा ४ ।३ बजे। (दग्धा तिथि आवश्यके)
	७	मंगल	२८	जून	उ.भा.	रे. ६ ॥ ।ऽगु. ।ऽनृ ।ऽ ।ऽ ल.धूलिमुखे सायंकाले। ल. मेष रात्री १ ।०० बजे। (दग्धा तिथि आवश्यके)
	९	गुरु	३०	जून	अश्वि.	रे. ७ ॥ ॥ऽके ।ऽऽ ॥ ल.कर्क प्रातः ६ ।४१ बजे। (रिक्ता तिथि आव.) तुला दिवा १ ।३५ बजे। (चन्द्र सप्तम पू.)
	९	गुरु	३०	जून	अश्वि.	रे. ८ ॥ ॥ऽके ॥ऽ ॥ ल.धूलिमुखे सायं काले।
	९	गुरु	३०	जून	अश्वि.	रे. ७ ॥ ॥ऽके.ऽचौ ।ऽ ॥ ल.कुंभ रात्री ९ ।५९ बजे से १० ।५० बजे तक।
आषाढ़ शुक्ल पक्षः	३	शनि	९	जुला.	मघा	रे. १० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ल.मेष रात्री १ ।१० बजे। वृष १ ।५२ बजे। (चन्द्र चतुर्थ आवश्यके)
	४	रवि	१०	जुला.	मघा	रे. ९ ॥ ॥ ।ऽचौ ॥ ॥ ल.कर्क प्रातः ६ ।१ बजे। (रिक्ता तिथि आवश्यके) वृष रात्री ३ ।३ बजे
	६	बुध	१३	जुला.	हस्त	रे. ७ ॥ ।ऽगु. ॥ ।ऽऽ ॥ ल.तुला दिवा १२ ।४३ बजे। वृश्चिक ३ ।३ बजे। धूलिमुखे सायंकाले। वृष रात्री १ ।३६ बजे।
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षः	१	बुध	१६	नवं.	रोहि.	रे. ७ऽ ॥ ।ऽ ।ऽ ॥। ल.सिंह रात्री ११ ।४९ बजे (रविर्निरंश)।
	३	शुक्र	१८	नवं.	मृग.	रे. ९ ॥ ॥ ।ऽग्नि ॥ ॥ ल.मेष दिवा ३ ।३७ बजे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षः	७	बुध	२३	नवं.	मघा	रे. ९ ॥॥॥ ।ऽ ॥ ल.मेष दिवा ३।१७ बजे।
	११	रवि	२७	नवं.	चित्रा	रे. ७ ॥ ॥ऽऽग्नि ।ऽ ॥ ल.सिंह रात्री ११।६ बजे।
	१२	सोम	२८	नवं.	चित्रा	रे. ८ ॥ ॥ऽ ॥ऽ ॥ ल.धनु दिवा ८।१८ बजे। मिथुन रात्री ६।२९ बजे।
	१३	मंगल	२९	नवं.	स्वाती	रे. ७ ॥ऽगु. ॥ऽनृ.ऽ ॥। ल.धनु प्रातः ८।१४ बजे।
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षः	३	रवि	४	दिसं.	उ.षा.	रे. ९ ॥ऽगु. ॥ ॥ ॥। ल.मिथुन सायं ६।०० बजे। (चन्द्र सप्तम पूज्य) (रिक्ता तिथि आवश्यके)
	५	मंगल	६	दिसं.	श्रवण	रे. ७ ॥ ॥ ।ऽग्निऽऽ ॥ ल.धनु प्रातः ७।४६ बजे। कुंभ दिवा ११।३३ बजे।
	१०	शनि	१०	दिसं.	रेवति	रे. ६ ॥ ॥ऽके.ऽचौऽऽ ॥ ल.कन्या रात्री १२।३३ बजे। (चन्द्र राहु सप्तमे आवश्यके)
माघ कृष्ण पक्षः	५	गुरु	१९	जन.	उ.फा.	रे. ९ ॥ ॥ ॥ ।ऽ ॥ ल.वृष दिवा १।१० बजे। गोधूली वेलायां। धनु रात्री ४।५० बजे।
	६	शुक्र	२०	जन.	उ.फा.	रे. ९ ॥ ॥ ॥ ।ऽ ॥ ल.मीन दिवा १०।५ बजे। (चन्द्र केतु सप्तम पूज्य)
	७	रवि	२२	जन.	चित्रा	रे. ८ ॥ ॥ ।ऽरो ।ऽ ॥ ल.वृष दिवा १२।५८ बजे। मिथुन २।५४ बजे।
	७	रवि	२२	जन.	स्वाति	रे. ७ ऽ ॥ ॥ऽरो ।ऽ ॥ ल. धनु रात्री ४।३८ बजे।
	८	सोम	२३	जन.	स्वाति	रे. ८ ऽ ॥ ॥ ॥ऽ ॥ ल.मिथुन दिवा २।५० बजे। (रिक्ता तिथि आवश्यके)
	११	गुरु	२६	जन.	मूल	रे. ७ ॥ ॥ ॥ऽऽ ।ऽ ल.धनु रात्री ४।२२ बजे। (दग्धा व तिथि क्षय आवश्यके)
माघ शुक्ल पक्षः	१	सोम	३०	जन.	धनि.	रे. ९ ।ऽ ॥ ॥ ॥ ॥ ल.वृश्चिक रात्री १।५० बजे।
	१	सोम	३०	जन.	धनि.	रे. ८ ।ऽ ॥ ।ऽरो ॥ ॥ ल.धनु रात्री ४।७ बजे।
	६	शुक्र	३	फर.	रेवति	रे. ८ ॥ ॥ऽऽग्नि ॥ ॥ ल.वृष दिवा १२।१० बजे। मिथुन २।६ बजे। धूलिमुखे सायंकाले
	६	शुक्र	३	फर.	अश्वि.	रे. ७ ।ऽ ॥ ।ऽग्नि ।ऽ ॥ ल.धनु रात्री ३।५१ बजे।
	७	शनि	४	फर.	अश्वि.	रे. ८ ।ऽ ॥ ॥ ।ऽ ॥ ल.वृष दिवा १२।६ बजे। मिथुन २।२ बजे (रविर्निरंश)।
	१५	सोम	१३	फर.	मघा	रे. ७ ॥ ॥ऽ ।ऽऽ ॥ ल.मेष दिवा ९।५७ बजे। मिथुन १।२७ बजे। तुला रात्री १०।३५ बजे।
फाल्गुन कृष्ण पक्षः	२	बुध	१५	फर.	उ.फा.	रे. ९ ॥ ॥ ।ऽग्नि ॥ ॥ ल.कर्क दिवा ३।३२ बजे। धूलिमुखे सायंकाले।
	१२	शनि	२५	फर.	उ.षा.	रे. ६ऽऽऽ ॥ ।ऽ ॥। ल.कर्क दिवा २।५३ बजे। (शुक्र, चंद्र सप्तम पूज्य)
	१२	शनि	२५	फर.	श्रवण	रे. ८ ॥ ॥ऽऽनृ ॥ ॥ ल.धनु रात्री २।२४ बजे।
फाल्गुन शुक्ल पक्षः	३	गुरु	२	मार्च	रेवति	रे. ८ ॥ ॥ऽऽरो ॥ ॥ ल.मेष दिवा ८।५० बजे। कर्क दिवा २।३४ बजे।
	३	गुरु	२	मार्च	रेवति	रे. ८ ॥ ॥ऽ ॥ ॥ऽ ल.तुला रात्री ९।२८ बजे। धनु रात्री २।५ बजे। (दग्धा तिथि आवश्यके)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पंजाब आदि द्विगर्त देशीय प्रांतों हेतु विवाह मुहूर्त्ताः

ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
					श्रावण कृष्ण पक्षः
१	शुक्र	२२	जुला.	श्रवण	रे. ७॥।ऽशु.ऽसू.शु.॥ऽ॥ ल.धनु दिवा ४।४६ बजे।
१	शुक्र	२२	जुला.	धनि.	रे. ६॥।ऽशु.ऽबु.ऽचौऽ॥। ल.कुंभ रात्री ९।३२ बजे से। वृष रात्री १।१ बजे।
५	सोम	२५	जुला.	उ.भा.	रे. ६॥।ऽबु.।ऽरो.ऽऽ॥ ल.धनु दिवा ४।३५ बजे। धूलिमुखे सायंकाले। कुंभ रात्री ८।२१ बजे।
१०	शनि	३०	जुला.	रोहि.	रे. ८॥॥।ऽनृऽ॥। ल.धूलिमुखे सायं काले। कुंभ रात्री ८।१ बजे।
११	रवि	३१	जुला.	रोहि.	रे. ९॥॥॥ऽ॥। ल.सिंह प्रातः ६।५९ बजे।
११	रवि	३१	जुला.	मृग.	रे. ८॥॥॥ऽऽ॥ ल.धूलिमुखे सायंकाले। कुंभ रात्री ७।५७ बजे।
१२	सोम	१	अग.	मृग.	रे. ७॥॥।ऽचौऽऽ॥ ल.सिंह प्रातः ६।५५ बजे। धनु दिवा ४।७ बजे।
					श्रावण शुक्ल पक्षः
१	शनि	६	अग.	मघा	रे. ८॥॥।ऽग्निऽ॥। ल.धनु दिवा ३।३८ बजे। कुंभ रात्री ७।३४ बजे। वृष रात्री १२।३ बजे।
५	बुध	१०	अग.	चित्रा	रे. ६।ऽ॥ऽराऽचौ॥ऽ ल.धूलिमुखे सायं काले। वृष रात्री ११।४७ बजे। मिथुन १।४३ बजे। (दग्धा तिथि आवश्यके)
६	गुरु	११	अग.	चित्रा	रे. ६।ऽ॥ऽराऽचौ॥ऽ ल.सिंह प्रातः ६।१४ बजे। धनु दिवा ३।२८ बजे। धूलिमुखे सायं काले। (दग्धा तिथि आवश्यके)
६	गुरु	११	अग.	स्वाति	रे. ७ऽश.॥॥।ऽऽ॥ ल.मिथुन रात्री १।३९ बजे।
७	शुक्र	१२	अग.	स्वाति	रे. ७ऽश.॥॥।ऽऽ॥ ल.वृश्चिक दिवा १।६ बजे। धनु ३।२४ बजे।
७	शुक्र	१२	अग.	स्वाति	रे. ६ऽश.॥॥ऽरोऽऽ॥ ल.धूलिमुखे सायं काले।
१५	शुक्र	१९	अग.	धनि.	रे. ७॥॥।ऽग्निऽऽ॥ ल.धनु दिवा २।५६ बजे। वृष रात्री ११।११ बजे।
१५	शुक्र	१९	अग.	धनि.	रे. ८॥॥॥ऽऽ॥ ल.मिथुन रात्री १।७ बजे।
					भाद्रपद कृष्ण पक्षः
७	शुक्र	२६	अग.	रोहि.	रे. ७ऽभौ॥॥।ऽऽ॥ ल.कर्क रात्री २।५३ बजे।
					भाद्रपद शुक्ल पक्षः
३	मंगल	६	सितं.	चित्रा	रे. ७॥ऽशु.गु.।ऽराऽग्नि॥॥ ल.मिथुन रात्री ११।५७ बजे।
४	बुध	७	सितं.	चित्रा	रे. ७॥ऽशु.गु.।ऽराऽग्नि॥॥ ल.धनु दिवा १।४२ बजे।
४	गुरु	८	सितं.	स्वाति	रे. ८॥॥॥ऽऽ॥ ल.धनु दिवा १।३८ बजे।
४	गुरु	८	सितं.	स्वाति	रे. ७॥॥।ऽनृ.ऽऽ॥ ल.धूलिमुखे सायं काले।
६	शनि	१०	सितं.	अनु.	रे. ७।ऽ॥॥ऽऽ॥ ल.धनु दिवा १।३० बजे। (तिथि क्षय आवश्यके)
६	शनि	१०	सितं.	अनु.	रे. ६।ऽ॥।ऽचौऽऽ॥ ल.धूलिमुखे सायं काले। (तिथि क्षय आवश्यके)
९	सोम	१२	सितं.	मूल	रे. ९ऽगु.॥॥॥॥। ल.धनु दिवा १।२१ बजे। गोधुली वेलायां (रिक्ता तिथि आवश्यके)
१०	मंगल	१३	सितं.	उ.षा.	रे. ८॥॥॥।ऽ।ऽ ल.मिथुन रात्री ११।२८ बजे। (दग्धा तिथि आवश्यके)

नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त्त सं. २०६२ वि.

ता.	मास	वार	पक्ष तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण घं.मि.
३०	अप्रै.	शनि	वैशा. कृ.७	उ.षा.	दोष.१४।१३ भद्रा के बाद
५	मई	गुरु	वैशा. कृ.१२	उ.भा.	वृष लग्न, अभिजित
११	मई	बुध	वैशा. शु.३	मृग.	वृष, अभिजित, अक्षय ३
१५	मई	रवि	वैशा. शु.७	पुष्य	प्रा. ८।१२ तक, (रवि पुष्य योग)
२०	मई	शुक्र	वै.शु.११,१२	हस्त	मु. ६।५९ के बाद, अभिजित
२७	मई	शुक्र	ज्येष्ठ कृ.४	उ.षा.	दोष. १४।०५ के बाद
२८	मई	शनि	ज्येष्ठ कृ.५	उषा,श्र.	प्रातः ६।०७ तक विशेष मु., अभि.
१	जून	बुध	ज्येष्ठ कृ.१०	उ.भा.	मिथुन, अभिजित
३	जून	शुक्र	ज्येष्ठ कृ.१२	अश्वि.	मिथुन, अभिजित
११	जून	शनि	ज्येष्ठ शु.४,५	पुष्य	प्रातः ११।०९ के बाद, अभि.
१७	जून	शुक्र	ज्येष्ठ शु.१०	चित्रा	कर्क, सिंह (मं.दा.), अभिजित
१८	जून	शनि	ज्येष्ठ शु.११	स्वा.	प्रातः ८।१० तक, भद्रापूर्व
२०	जून	चंद्र	ज्येष्ठ शु.१३	अनु.	ल.५ (मं. का दान), अभि.
१७	नवं.	गुरु	मार्ग कृ.२	रोहि.	मुहूर्त्त प्रातः १० बजे तक, तदुपरांत मृत्युवाण
१८	नवं.	शुक्र	मार्ग कृ.३	मृग.	कुम्भ (श. दा.), अभिजित
२१	नवं.	चंद्र	मार्ग कृ.५	पुष्य	लग्न ९, ११, अभिजित
२८	नवं.	चंद्र	मार्ग कृ.१२	चित्रा	लग्न ९, ११, अभिजित
५	दिसं.	चंद्र	मार्ग शु.४	उ.षा.	प्रातः ११।०४ उप., कुंभ, अभि.
७	दिसं.	बुध	मार्ग शु.७	धनि.	कुम्भ लग्न, अभिजित
१०	दिसं.	शनि	मार्ग शु.१०	उभा./रे.	लग्न ९, ११, अभिजित
१२	दिसं.	चंद्र	मार्ग शु.१२	अश्वि.	धनु लग्न (प्रातः ८।१३ तक)

(सन् २००६ ई.)

ता.	मास	वार	पक्ष तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण घं.मि.
३०	जन.	चंद्र	मार्ग शु.१	धनि.	ल. कुम्भ (चं. दा.), अभिजित
३	फर.	शुक्र	मार्ग शु.६	रेव.	लग्न कुम्भ, अभिजित
४	फर.	शनि	मार्ग शु.७	अश्वि.	लग्न कुम्भ, अभिजित
८	फर.	बुध	मार्ग शु.११	मृग.	कुम्भ, मेष, अभिजित
१०	फर.	शुक्र	मार्ग शु.१३	पुन.	कुम्भ, मेष, अभिजित
१८	फर.	शनि	फाल्गु. कृ.५	चित्रा	मेष ल. १०।४४ के बाद, अभि.
२५	फर.	शनि	फाल्गु. कृ.१२	उ.षा.	मेष, अभिजित
२	मार्च	गुरु	फाल्गु. शु.३	रेव.	मेष (चं. दा.), अभिजित
६	मार्च	चंद्र	फाल्गु. शु.७	रोहि.	मेष, अभिजित

पुरातन (जीर्ण) गृह प्रवेश मुहूर्त्त सं. २०६२ वि.

ता.	मास	वार	पक्ष तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण घं.मि.
१	मई	रवि	वैशा. कृ.८	श्रव.	लग्न वृष, अभिजित
३०	मई	चंद्र	ज्येष्ठ कृ.७, ८	शत.	लग्न ३, अभिजित
१०	जून	शुक्र	ज्येष्ठ शु.३, ४	पुष्य	दोष. १२।३९ उप.
१८	जुला.	चंद्र	आ. शु.११,१२	अनु.	सिंह ल. प्रा. ९।१३ उप., अभि.
२१	जुला.	गुरु	आषा. शु.१५	उ.षा.	सिंह ल. ९।५४ तक, अभि.
२२	जुला.	शुक्र	श्राव. कृ.१	श्रव.	वृश्चिक, अभिजित
२३	जुला.	शनि	श्राव. कृ.२, ३	धनि.	सिंह, अभिजित
२५	जुला.	चंद्र	श्राव. कृ.५	उ.भा.	अभिजित, वृश्चिक
१०	अग.	चंद्र	श्राव. कृ.१२	मृग	सिंह, अभिजित
११	अग.	गुरु	श्राव. शु.६	चित्रा	सिंह (श. दा.), अभिजित
१२	अग.	शुक्र	श्राव. शु.७	स्वाती	सिंह (प्रा. ७।०३ उप.), अभि.
१८	अग.	गुरु	श्रा. शु.१३,१४	श्रव.	मु. दोष. १२।३० उप.
२४	अग.	बुध	भाद्र कृ.५	अश्वि.	अभिजित, धनु.
२७	अग.	शनि	भाद्र कृ.८	मृग.	मुहूर्त्त प्रातः ९।१५ तक
३१	अग.	बुध	भाद्र कृ.१२	पुन.	मुहूर्त्त प्रातः ७।१३ तक
८	सितं.	गुरु	भाद्र शु.४,५	स्वाती	अभिजित, वृश्चिक
१४	सितं.	बुध	भाद्र शु.११	उ.षा.	मु. प्रातः १०।२२ तक

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नींव रखना एवं गृहारंभ मुहूर्त्त सं. २०६२ वि.

ता.	मास	वार	पक्ष	तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण घं.मि.
३०	अप्रै.	शनि	वैशा.	कृ.७	उ.षा.	दि. मु. दोष. १४।१३ के बाद
५	मई	गुरु	वैशा.	कृ.१२	उ.भा.	ल. वृष, अभिजित
११	मई	बुध	वैशा.	शु.३	मृग.	ल. वृष, अभि., (अक्षय ३)
१५	मई	रवि	वैशा.	शु.७	पुष्य	प्रात: ८।१२ तक, आव. (रवि-पुष्य योग)
२७	मई	शुक्र	ज्येष्ठ	कृ.४,५	उ.षा.	दोष. १४।०५ के बाद, अभि.
३०	मई	चंद्र	ज्येष्ठ	कृ.७, ८	शत.	लग्न मिथुन, अभिजित
१	जून	बुध	ज्येष्ठ	कृ.१०	उ.भा.	मिथुन, अभिजित
११	जून	शनि	ज्येष्ठ	शु.४,५	पुष्य	मु. ११।०९ के बाद, अभिजित
१७	जून	शुक्र	ज्येष्ठ	शु.१०	चित्रा	ल. ४, ५, अभि. (मं. दा.)
१८	जुला.	चंद्र	आ.	शु.११,१२	अनु.	ल. सिंह ९।१३ के बाद, अभि.
२१	जुला.	गुरु	आषा.	शु.१५	उ.षा.	प्रात: ६।२७ से ८।५३ तक, अभि.
२३	जुला.	शनि	श्राव.	कृ.२,३	धनि.	सिंह ल. प्रात: ८।०२ उप., अभि.
१	अग.	चंद्र	श्राव.	कृ.१२	मृग.	ल. सिंह (श.दा.), अभिजित
११	अग.	गुरु	श्राव.	शु.६	चित्रा	सिंह (श. दा.), अभिजित
१२	अग.	शुक्र	श्राव.	शु.७	स्वाती	सिंह (श. दा.), अभिजित
१७	अग.	बुध	श्राव.	शु.१२	उ.षा.	मुहूर्त्त दोष. १४।१२ उप.
१८	अग.	गुरु	श्राव.	शु.१३	उ.षा.	प्रात: ७।०५ तक
१९	अग.	शुक्र	श्राव.	शु.१५	धनि.	मुहूर्त्त दोष. १३।१९ उप.
२७	अग.	शनि	भाद्र	कृ.८	रोहि.	मुहूर्त्त प्रात: ९।१५ तक
३१	अग.	बुध	भाद्र.	कृ.१२	पुन.	प्रात: ७।१३ तक
१४	सितं.	बुध	भाद्र.	शु.११	उ.षा.	मु. प्रात: १०।२२ तक, भद्रा पूर्वे
१७	नवं.	गुरु	मार्ग.	कृ.२	रोहि.	मु. प्रात: १० बजे तक
१८	नवं.	शुक्र	मार्ग.	कृ.३	मृग.	कुम्भ (श. दा.)
२१	नवं.	चंद्र	मार्ग.	कृ.५	पुष्य	लग्न ९, ११, अभिजित
२८	नवं.	चंद्र	मार्ग.	कृ.१२	चित्रा	ल. ९, ११, अभिजित
५	दिसं.	चंद्र	मार्ग.	शु.४,५	उ.षा.	लग्न कुम्भ, अभिजित
७	दिसं.	बुध	मार्ग.	शु.७	धनि.	कुम्भ लग्न, अभिजित
१०	दिसं.	शनि	मार्ग.	शु.१०	उ.भा.,रे	लग्न ९, ११, अभिजित

(सन् २००६ ई.)

ता.	मास	वार	पक्ष	तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण घं.मि.
३०	जन.	चंद्र	माघ	शु.१	धनि.	लग्न कुम्भ, अभिजित
४	फर.	शनि	माघ	शु.७	अश्वि.	लग्न कुम्भ, अभिजित
८	फर.	बुध	माघ	शु.११	मृग.	कुम्भ, मेष, अभिजित
१०	फर.	शुक्र	माघ	शु.१३	पुन.	कुम्भ, मेष, अभिजित
२५	फर.	शनि	फाल्गु.	कृ.१२	उ.षा.	मेष, अभिजित
२	मार्च	गुरु	फाल्गु.	शु.३	रेवती	मेष (चं. दा.) अभिजित
६	मार्च	चंद	फाल्गु.	शु.७	रोहि.	मेष, अभिजित

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त सं. २०६२ वि.

ता.	मास	वार	पक्ष	तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण घं.मि.
३०	अप्रै.	शनि	वैशा.	कृ.७	उ.षा.	दोष. १४।१३ के बाद, सूर्य, शनि
१	मई	रवि	वैशा.	कृ.८	श्रव.	लग्न वृष, अभि. श्री दुर्गा
५	मई	गुरु	वैशा.	कृ.१२	उ.भा.	वृष, अभि., श्रीविष्णु, श्रीराम-कृष्ण
१०	मई	मंग.	वैशा.	शु.२	रोहि.	ल.२, अभि. (श्रीराम, श्रीहनुमान)
११	मई	बुध	वैशा.	शु.३	मृग.	ल.२, अभि.(श्री विष्णु, श्रीराम, दुर्गा-शक्ति, कृष्ण-राधा के लिए विशेष)
१५	मई	रवि	वैशा.	शु.७	पुष्य	मु. प्रात: ८।१२ तक (सूर्य, श्री हनुमान के लिए विशेष)
२०	मई	शुक्र	वै.	शु.११,१२	हस्त	मु. प्रात: ६।५९ के बाद, अभि. (सर्वदेव के लिए)
२२	मई	रवि	वै.	शु.१३,१४	स्वाती	शिव-शक्ति, श्री हनुमान विशेष
२७	मई	शुक्र	ज्येष्ठ	कृ.४,५	उ.षा.	दोष. १४।०५ उप., (विष्णु व शेषनाग के लिए विशेष)
२८	मई	शनि	ज्येष्ठ	कृ.५, ६	श्रव.	अभि., (शिव, शक्ति, कार्तिकेय)
२९	मई	रवि	ज्येष्ठ	कृ.६	धनि.	मु. प्रात: ८।३२ तक (शिव, सूर्य, कार्तिकेय)
१	जून	बुध	ज्येष्ठ	कृ.१०	उ.भा.	मिथुन, अभि., सर्वदेव
३	जून	शुक्र	ज्येष्ठ	कृ.१२	अश्वि.	मि., अभि. श्री विष्णु लक्ष्मी
११	जून	शनि	ज्येष्ठ	शु.४,५	पुष्य	प्रात: ११।०९ के बाद, अभि. शिव, शनि
१७	जून	शुक्र	ज्येष्ठ	शु.१०	चित्रा	सिंह, अभि., सर्वदेव
१८	जून	शनि	ज्येष्ठ	शु.११	स्वाती	प्रात: ८।१० तक, शिव, शनि
२०	जून	चंद्र	ज्येष्ठ	शु.१३	अनु.	सिंह (मं. दा.), अभि., सर्वदेव
२३	अग.	मंग.	भाद्र.	कृ.४	रेवती	प्रात: १०।१० उप., श्री गणेश
७	सितं.	बुध	भाद्र.	शु.४	चित्रा	ल. ८, अभि., श्री गणेश जी
१८	नवं.	शुक्र	मार्ग.	कृ.३	मृग.	ल. कुंभ, अभि., गौरी, दुर्गा
२१	नवं.	चंद्र	मार्ग.	कृ.५, ६	पुष्य	कुंभ, अभि., गौरी, शक्ति
२७	नवं.	रवि	मार्ग.	कृ.११	हस्त	ल. धनु. अभि., शिव-शक्ति
११	दिसं.	रवि	मार्ग.	कृ.११	रेवती	मु. प्रात: ११।०२ तक, कृष्ण-राधा
१२	दिसं.	चंद	मार्ग.	शु.१२	अश्वि.	मु. प्रात: ८।१५ तक (विष्णु लक्ष्मी के लिए विशेष)

(सन् २००६ ई.)

ता.	मास	वार	पक्ष	तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण घं.मि.
१८	जन.	बुध	माघ	कृ.४	पू.फा.	श्री गणेश जी
२२	जन.	रवि	माघ	कृ.७, ८	चित्रा	ल. कुंभ, अभि. (शिव, सूर्य)
३०	जन.	चंद्र	माघ	शु.१, २	धनि.	ल. कुंभ, अभि., सर्वदेव
१	फर.	बुध	माघ	शु.३	पू.भा.	मु. प्रात: ८।५८ तक, गौरी सर्वदेव
३	फर.	शुक्र	माघ	शु.६	रेवती	ल. कुंभ, अभि., शिव परिवार
४	फर.	शनि	माघ	शु.७	अश्वि.	ल. कुंभ, अभि., सूर्यादि देव
८	फर.	बुध	माघ	शु.११	मृग.	कुंभ, मेष, अभि., सर्वदेव
१०	फर.	शुक्र	माघ	शु.१३	पुन.	कुंभ, मेष, अभि., शिव परिवार
१८	फर.	शनि	फाल्गु.	कृ.५	चित्रा	मु. १०।४४ के बाद, अभि., शिव परिवार
१९	फर.	रवि	फाल्गु.	कृ.६	स्वाती	मेष, अभि., सूर्यादि देव
२५	फर.	शनि	फाल्गु.	कृ.१२	उ.षा.	ल. मेष, अभि., श्री शिव, शनि
२	मार्च	गुरु	फाल्गु.	शु.३	रेवती	मेष (चं. दा.), अभि., श्री दुर्गा आदि शक्ति
६	मार्च	चंद	फाल्गु.	शु.७	रोहि.	ल. मेष, अभि., विष्णु, सूर्यादि

द्विरागमन मुहूर्त्त सं. २०६२ वि.

ता.	मास	वार	पक्ष	तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण घं.मि.
५	मई	गुरु	वैशा.	कृ.१२	उ.भा.	लग्न वृष, अभिजित
११	मई	बुध	वैशा.	शु.३	मृग.	लग्न वृष, अभिजित
२०	मई	शुक्र	वै.	शु.११,१२	हस्त	कर्क, अभिजित
२७	मई	शुक्र	ज्येष्ठ	कृ.४,५	उ.षा.	दोष. १४।०५ के उपरांत
२९	मई	रवि	ज्येष्ठ	कृ.६	धनि.	मु. प्रात: ८।३२ तक, सूर्य का दान
१	जून	बुध	ज्येष्ठ	कृ.१०	उ.भा.	मिथुन, अभिजित
३	जून	शुक्र	ज्येष्ठ	कृ.१२	अश्वि.	मिथुन, अभिजित
२०	जून	चंद्र	ज्येष्ठ	शु.१३	अनु.	लग्न ५ (मं.दा.), अभिजित
१७	नवं.	गुरु	मार्ग.	कृ.२	रोहि.	मु. प्रात: १० बजे तक
१८	नवं.	शुक्र	मार्ग.	कृ.२,३	मृग.	कुम्भ (श. दा.), अभिजित
२०	नवं.	रवि	मार्ग.	कृ.४,५	पुन.	लग्न कुम्भ, अभिजित
२१	नवं.	चंद्र	मार्ग.	कृ.५, ६	पुष्य	लग्न धनु, कुम्भ, अभिजित
२७	नवं.	रवि	मा.	कृ.११,१२	चित्रा	लग्न धनु, कुम्भ, अभिजित
२८	नवं.	चंद्र	मार्ग.	कृ.१२	चित्रा	लग्न धनु, कुम्भ, अभिजित
७	दिसं.	बुध	मार्ग.	शु.७	शत.	मुहूर्त्त दोष. १२।१६ उपरांत
१२	दिसं.	चंद्र	मार्ग.	शु.१२	अश्वि.	मुहूर्त्त प्रात: ८।१३ तक

(सन् २००६ ई.)

ता.	मास	वार	पक्ष	तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण घं.मि.
१९	फर.	रवि	फाल्गु.	कृ.६	स्वाती	मेष, अभिजित
२३	फर.	गुरु	फाल्गु.	कृ.१०	मूला	मुहूर्त्त प्रात: १०।५१ के बाद
१	मार्च	बुध	फाल्गु.	शु.२	पू.भा.	मेष, अभिजित
२	मार्च	गुरु	फाल्गु.	शु.३	रेवती	मेष (चं. दा.), अभिजित
६	मार्च	चंद्र	फाल्गु.	शु.७	रोहि.	मेष, अभिजित

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मुण्डन संस्कार मुहूर्त्त सं. २०६२ वि.

ता.	मास	वार	पक्ष	तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण घं.मि.
२७	अप्रै.	बुध	वैशा.	कृ.३	ज्येष्ठा	ल. वृष (चं.दा.), अभि.
१	मई	रवि	वैशा.	कृ.८	श्रवण	ल. वृष, अभि. (विप्राय)
२	मई	चंद्र	वैशा.	कृ.९	धनि.	वृष, अभि., रिक्ता तिथौ चंद्र दानं आवश्यके
३	मई	मंग.	वैशा.	कृ.१०	शत.	मु. प्रात: ७।४९ तक (क्षत्रियाणां)
११	मई	बुध	वैशा.	शु.३	मृग.	वृष ल., अभि. (अक्षया तीज)
१५	मई	रवि	वैशा.	शु.७	पुष्य	प्रात: ८।१२ स्टै.टा. तक (विप्राय)
२०	मई	शुक्र	वैशा.	शु.११	हस्त	मु. प्रात: ६।५९ के बाद, अभि.
२२	मई	रवि	वैशा.	शु.१३	स्वाती	कर्क, अभि., विप्राणां
२५	मई	बुध	ज्ये.	कृ.२	ज्येष्ठा	अभि., दोष. १२।०५ तक
२८	मई	शनि	ज्ये.	कृ.५	श्रवण	दि. ल. मिथुन, अभिजित
२९	मई	रवि	ज्ये.	कृ.६	धनि.	ल. मिथुन (८।३२), विप्राणां
३०	मई	चंद	ज्ये.	कृ.७, ८	शत.	मिथुन, अभिजित
३	जून	शुक्र	ज्ये.	कृ.१२	अश्वि.	मिथुन, अभिजित
१०	जून	शुक्र	ज्ये.	शु.३, ४	पुष्य	मु. दोष. १२।३९ के बाद
११	जून	शनि	ज्ये.	शु.४, ५	पुष्य	मु. प्रात: ११।०९ के बाद, भद्रोत्तरे (वैश्यानां)
१८	जून	शनि	ज्ये.	शु.११	स्वा.	मु.८।१० तक भद्रापूर्वे (वैश्यानां)

(सन् २००६ ई.)

ता.	मास	वार	पक्ष	तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण घं.मि.
२२	जन.	रवि	माघ	कृ.७, ८	चित्रा	कुम्भ, अभिजित
२६	जन.	गुरु	माघ	कृ.११,१२	ज्येष्ठा	कुम्भ, अभिजित
३०	जन.	चंद्र	माघ	शु.१	धनि.	कुम्भ, अभिजित
३	फर.	शुक्र	माघ	शु.६	रेवती	मु. ल. कुम्भ, अभिजित
४	फर.	शनि	माघ	शु.७	अश्वि.	कुम्भ, अभि. (वैश्यानां)
७	फर.	मंग.	माघ	शु.१	रोहि.	लग्न कुम्भ (क्षत्रियाणां)
८	फर.	बुध	माघ	शु.११	मृग.	लग्न कुम्भ, अभिजित
१०	फर.	शुक्र	माघ	शु.१३	पुन.	मु. कुम्भ लग्न, अभिजित
१८	फर.	शनि	फाल्गु.	कृ.५	चित्रा	ल. मेष १०।४४ के बाद, वैश्यानां
१९	फर.	रवि	फाल्गु.	कृ.६	स्वाती	मेष (विप्राणां), अभिजित
२२	फर.	बुध	फाल्गु.	कृ.९	ज्येष्ठा	मेष (चं.दा.), अभि. आवश्यक
२	मार्च	गुरु	फाल्गु.	शु.३	रेवती	ल. मेष (चं.दा.), अभिजित
६	मार्च	चंद्र	फाल्गु.	शु.७	रोहि.	ल. मेष, अभिजित

विपणी (दुकान) शुरू करने के मुहूर्त्त सं.२०६२ वि.

ता.	मास	वार	पक्ष	तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण घं.मि.
३०	अप्रै.	शनि	वैशा.	कृ.७	उ.षा.	मुहूर्त्त दोष. १४।१३ के बाद
१	मई	रवि	वैशा.	कृ.८	श्रव.	लग्न वृष, अभिजित
५	मई	गुरु	वैशा.	कृ.१२	उ.भा.	वृष लग्न, अभिजित
११	मई	बुध	वैशा.	शु.३	मृग.	ल. वृष, अभि. (अक्षय ३)
१५	मई	रवि	वैशा.	शु.७	पुष्य	मु. प्रात: ८।१२ बजे तक
२०	मई	शुक्र	वै.	शु.११,१२	हस्त	मु. प्रात: ६।५९ के बाद, अभि.
२७	मई	शुक्र	ज्येष्ठ	कृ.४,५	उ.षा.	दोष. १४।०५ उपरांत
२८	मई	शनि	ज्येष्ठ	कृ.५,६	श्रव.	अभिजित
२९	मई	रवि	ज्येष्ठ	कृ.६	धनि.	मु. प्रात: ८।३२ तक
१	जून	बुध	ज्येष्ठ	कृ.१०	उ.भा.	लग्न मिथुन, अभिजित
३	जून	शुक्र	ज्येष्ठ	कृ.१२	अश्वि.	मिथुन, अभिजित
११	जून	शनि	ज्येष्ठ	शु.४,५	पुष्य	प्रात: ११।०९ के बाद
१७	जून	शुक	ज्येष्ठ	शु.१०	चित्रा	लग्न सिंह, अभिजित
१८	जून	शनि	ज्येष्ठ	शु.११	स्वाती	प्रात: ८।१० तक, भद्रापूर्वे
२०	जून	चंद्र	ज्येष्ठ	शु.१३	अनु.	लग्न ५ (मं. दा.), अभिजित
२४	जून	शुक्र	आषा.	कृ.३	उ.षा.	मुहूर्त्त प्रात: ९।१२ तक
२६	जून	रवि	आषा.	कृ.५	धनि.	मुहूर्त्त प्रात: ९।३२ तक
२९	जून	बुध	आषा.	कृ.८	रेव.	मुहूर्त्त प्रात: ११।२३ तक
३०	जून	गुरु	आषा.	कृ.९,१०	अश्वि.	मुहूर्त्त प्रात: १०।५१ के बाद
१३	जुला.	बुध	आषा.	शु.६,७	हस्त	लग्न ७, अभिजित
१८	जुला.	चंद्र	आषा.	शु.११	अनु.	ल. सिंह ९।१३ के बाद, अभि.
२१	जुला.	गुरु	आषा.	शु.१५	उ.षा.	ल. सिंह (प्रात: ८।५४ तक)
२३	जुला.	शनि	श्राव.	कृ.२, ३	धनि.	ल. सिंह (८।०२ उप.), वृश्चिक
२५	जुला.	चंद्र	श्राव.	कृ.५	उ.भा.	लग्न वृश्चिक, अभिजित
३१	जुला.	रवि	श्राव.	कृ.११	रोहि.	सिंह, वृश्चिक, अभिजित
१	अग.	चंद्र	श्राव.	कृ.१२	मृग.	सिंह, अभिजित
१२	अग.	शुक्र	श्राव.	शु.७	स्वाती	सिंह, अभिजित
१७	अग.	बुध	श्रा.	शु.१२,१३	उ.षा.	मुहूर्त्त दोष. १४।१२ उप.
१९	अग.	शुक्र	श्राव.	शु.१५	धनि.	अभिजित, लग्न ८
८	सितं.	गुरु	भाद्र.	शु.४,५	स्वाती	मुहूर्त्त ६।१७ उप., अभिजित
१४	सितं.	बुध	भाद्र.	शु.११	उ.षा.	अभिजित
१८	नवं.	शुक्र	मार्ग.	कृ.३	मृग.	अभि. ल. कुंभ (चं. श. दा.)
२१	नवं.	चंद्र	मार्ग.	कृ.५, ६	पुष्य	अभिजित, कुम्भ
२७	नवं.	रवि	मार्ग.	कृ.११	हस्त	लग्न धनु, अभिजित
२८	नवं.	चंद्र	मार्ग.	कृ.१२	चित्रा	लग्न धनु, अभिजित
१०	दिसं.	शनि	मार्ग.	शु.१०	रेव.	लग्न ९, ११, अभिजित
११	दिसं.	रवि	मार्ग.	शु.११	रे.,अ.	मु. प्रात: ११।०२ तक, भद्रापूर्व
१२	दिसं.	चंद्र	मार्ग.	शु.१२	अश्वि.	लग्न धनु (प्रात: ८।१३ तक)

(सन् २००६ ई.)

ता.	मास	वार	पक्ष	तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण घं.मि.
२२	जन.	रवि	माघ	कृ.७,८	चित्रा	लग्न कुम्भ, अभिजित
३०	जन.	चंद्र	माघ	शु.१,	धनि.	लग्न कुम्भ, अभिजित
१	फर.	बुध	माघ	शु.३	पू.भा.	मु. प्रात: ८।५८ तक (चु.दा.)
३	फर.	शुक्र	माघ	शु.६	रेवती	लग्न कुम्भ, अभिजित
४	फर.	शनि	माघ	शु.७	अश्वि.	लग्न कुम्भ, अभिजित
८	फर.	बुध	माघ	शु.११	मृग.	कुम्भ, मेष, अभिजित
१०	फर.	शुक्र	माघ	शु.१३	पुन.	कुम्भ, मेष, अभिजित
१८	फर.	शनि	फाल्गु.	कृ.५	चित्रा	मे. ल. १०।४४ के बाद, अभि.
१९	फर.	रवि	फाल्गु.	कृ.६	स्वाती	लग्न मेष, अभिजित
२५	फर.	शनि	फाल्गु.	कृ.१२	उ.षा.	मेष, अभिजित
१	मार्च	बुध	फाल्गु.	शु.२	पू.भा.	मेष, अभिजित
२	मार्च	गुरु	फाल्गु.	शु.३	रेवती	मेष (चं. दा.), अभिजित
६	मार्च	चंद्र	फाल्गु.	शु.७	रोहि.	मेष, अभिजित

उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्त सं. २०६२ वि.

ता.	मास	वार	पक्ष	तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण घं.मि.
११	मई	बुध	वैशा.	शु.३	मृग.	लग्न वृष, अभिजित
१५	मई	रवि	वैशा.	शु.७	पुष्य	मुहूर्त्त लग्न ४, अभिजित
१८	मई	बुध	वैशा.	शु.१०	पू.फा.	लग्न कर्क, अभिजित
२०	मई	शुक्र	वै.	शु.११,१२	हस्त	लग्न कर्क, अभिजित
३०	मई	चंद्र	ज्येष्ठ	कृ.७	शत.	मुहूर्त्त प्रात: ६।१७ तक
९	जून	गुरु	ज्येष्ठ	शु.२, ३	आर्द्रा	लग्न सिंह, अभिजित
१२	जून	रवि	ज्येष्ठ	शु.५	आश्ले.	लग्न सिंह, अभिजित
१७	जून	शुक	ज्येष्ठ	शु.१०	चित्रा	लग्न सिंह, अभिजित
२०	जून	चंद्र	ज्येष्ठ	शु.१३	अनु.	ल. सिंह (मं. दान), अभिजित

(सन् २००६ ई.)

ता.	मास	वार	पक्ष	तिथि	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण घं.मि.
२२	जन.	रवि	माघ	कृ.७	चित्रा	लग्न ११, अभिजित
३०	जन.	चंद्र	माघ	शु.१, २	धनि.	कुम्भ, अभिजित
१	फर.	बुध	माघ	शु.३	पू.भा.	मु. प्रात: ८।५८ तक, बुध दान
३	फर.	शुक्र	माघ	शु.६	रेवती	कुम्भ, अभिजित
९	फर.	गुरु	माघ	शु.१२	आर्द्रा	कुम्भ, मेष, अभिजित
१५	फर.	बुध	फाल्गु.	कृ.२	पू.फा.	मेष, अभिजित
१	मार्च	बुध	फाल्गु.	शु.२	पू.भा.	मेष, अभिजित
२	मार्च	गुरु	फाल्गु.	शु.३	रेवती	मेष (चं.दा.), अभिजित
६	मार्च	चंद्र	फाल्गु.	शु.७	रोहि.	मेष, अभिजित

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

त्रिबल शुद्धि कोष्ठक सम्वत् २०६२ विक्रमी (दिनांक ९ अप्रेल २००५ ई. से २९ मार्च २००६ ई. तक)

विवाह के लिए श्रेष्ठ समय के ज्ञानार्थ कोष्ठक (वर-कन्या को सूर्य व गुरु बल विचार सहित)

इस पंचांग में विवाह के लिए तत्काल तारीख ज्ञानार्थ त्रिबल शुद्धि कोष्ठक पाठकों की सुविधा हेतु विगत वर्षों से देते आ रहे हैं। किस-किस महीने की किस-किस तारीख को किन-किन राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं। इन सबकी जानकारी इस त्रिबल शुद्धि कोष्ठक से मिलेगी। जिससे साधारण व्यक्ति भी एक नजर में जान सकता है कि अमुक राशि वाले लड़के व लड़की की शादी इस वर्ष किन-किन तारीखों में हो सकती है। वर के लिए "सूर्य की पूजा" तथा कन्या के लिए "गुरु की पूजा" वाला समय भी लिख दिया गया है। वर व कन्या की राशियों वाले कालम में जो तारीखें एक समान मिलें उन तारीखों में उन राशि वाले लड़के-लड़की का विवाह सम्पन्न हो सकता है। मेषादि राशि वाले लड़कों के लिए ४, ८, १२वें सूर्य व ४, ८वें चन्द्र परित्याग कर शेष सभी महीनों में मुहूर्त्तों की तारीखें लिखी गयी हैं। वर्तमान समय में लड़कियों का विवाह बड़ी आयु में किया जाता है, अतः ४, ८, १२वें गुरु की शास्त्रानुसार विशेष पूजा करके नेष्टता को दूर किया जा सकता है तथा चतुर्थ, अष्टम और बारहवें चन्द्रमा को छोड़कर विवाह मुहूर्त्तों की तारीखें लिखी गयी हैं।

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या (लड़की)	लड़की के लिए पूज्य गुरु
मेषः-अप्रैल-३०, **मई**-१, ९, १०, ११, १६, १७, २०, २१, २२, २७, **जून**-२, ३, १२, १८, १९, २३, २५, ३०, **जुलाई**-९, १०, १३, **जनवरी**-२२, २६, ३०, **फरवरी**-३, १३, १५, २५, **मार्च**-२ शुभ हैं।	१४ अप्रैल से १४ मई तक	**मेषः-अप्रैल**-३०, **मई**-१, ९, १०, ११, १६, १७, २०, २१, २२, २७, **जून**-२, ३, १२, १८, १९, २३, २५, ३०, **जुलाई**-९, १०, १३, **नवंबर**-१८, २३, २७, २८, २९, **दिसंबर**-४, ६, **जनवरी**-२२, २६, ३०, **फरवरी**-३, १३, १५, २५, **मार्च**-२ शुभ हैं।	वर्षारंभ से २७ सितंबर तक
वृषः-मई-१६, २०, २१, २२, २३, ३१, **जून**-१, २, १२, १८, १९, २०, २३, २५, २८, ३०, **जुलाई**-९, १३, **नवंबर**-१८, २३, २७, २८, २९, **दिसंबर**-४, ६, **जनवरी**-२२, २६, ३०, **फरवरी**-३, १३, १५, २५, **मार्च**-२ शुभ हैं।	१४ मई से१५ जून १५नवं.से १५दिसं. १४जन.से १३ फर.तक	**वृषः-अप्रैल**-३०, **मई**-१, ९, १०, ११, १६, २०, २१, २२, २३, ३१, **जून**-१, २, १२, १८, १९, २०, २३, २५, २८, ३०, **जुलाई**-९, १३, **नवंबर**-१८, २३, २७, २८, २९, **दिसंबर**-४, ६, **जन.**-२२, २६, ३०, **फरवरी**-३, १३, १५, २५, **मार्च**-२ शुभ हैं।	२७ सितं. से वर्ष पर्यन्त
मिथुनः-मई-११, **जून**-१८, १९, २०, २३, २५, २८, ३०, **जुलाई**-९, १०, **नवंबर**-१८, २३, २८, २९, **दिसंबर**-४, ६, **फरवरी**-१३, १५, **मार्च**-२ शुभ हैं।	१५ जून से १६जुला. १३फर.से १४ मार्च	**मिथुनः-मई**-११, १६, १७, २१, २२, २३, २७, ३१, **जून**-१, २, ३, १२, १८, १९, २०, २३, २५, २८, ३०, **जुलाई**-९, १०, **नवंबर**-१८, २३, २८, २९, **दिसंबर**-४, ६, **जनवरी**-२२, २६, ३०, **फरवरी**-३, १३, १५, **मार्च**-२ शुभ हैं।	वर्षारंभ से २७ सितं. तक
कर्कः-अप्रैल-३०, **मई**-१, ९, १०, ११, १६, १७, २०, २१, २३, २७, ३१, **जून**-१, २, ३, १२, **नवंबर**-१८, २३, २७, २८, **दिसंबर**-४, ६, **जनवरी**-२२, २६, ३०, **फरवरी**-३, शुभ हैं।	१६नवं.से १६दिसं. १४ जन.से १३फर. तक	**कर्कः-अप्रैल**-३०, **मई**-१, ९, १०, ११, १६, १७, २०, २१, २३, २७, ३१, **जून**-१, २, ३, १२, १९, २०, २३, २५, २८, ३०, **जुलाई**-९, १०, १३, **नवंबर**-१८, २३, २७, २८, **दिसंबर**-४, ६, **जनवरी**-२२, २६, ३०, **फर.**-३, १३, १५, २५, **मार्च**-२ शुभ हैं।	वर्षारंभ से वर्ष पर्यन्त
सिंहः-अप्रैल-३०, **मई**-१, ९, १०, ११, १६, १७, २०, २१, २२, २७, **जून**-२, ३, १२, १८, १९, २३, २५, ३०, **जुलाई**-९, १०, १३, **जनवरी**-२२, २६, ३०, **फरवरी**-३, १३, १५, २५, **मार्च**-२ शुभ हैं।	१४अप्रैल से १५ मई १३फर.से १४ मार्च तक	**सिंहः-अप्रैल**-३०, **मई**-१, ९, १०, ११, १६, १७, २०, २१, २२, २७, **जून**-२, ३, १२, १८, १९, २३, २५, ३०, **जुलाई**-९, १०, १३, **नवंबर**-१८, २३, २७, २८, २९, **दिसंबर**-४, ६, **जनवरी**-२२, २६, ३०, **फरवरी**-३, १३, १५, २५, **मार्च**-२ शुभ हैं।	२७ सितं. से वर्ष पर्यन्त

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या (लड़की)	लड़की के लिए पूज्य गुरु
कन्या:-मई-१६, २०, २१, २२, २३, ३१, जून-१, २, १२, १८, १९, २०, २३, २५, २८, ३०, जुलाई-९, १३, नवंबर-१८, २३, २७, २८, २९, दिसंबर-४, ६, जनवरी-२२, २६, ३०, फरवरी-३, १३, १५, २५, मार्च-२ शुभ हैं।	१५ मई से १५ जून १४ जन. से १३ फर. तक	**कन्या:**-अप्रैल-३०, मई-१, ९, १०, ११, १६, २०, २१, २२, २३, ३१, जून-१, २, १२, १८, १९, २०, २३, २५, २८, ३०, जुलाई-९, १३, नवंबर-१८, २३, २७, २८, २९, दिसंबर-४, ६, जनवरी-२२, २६, ३०, फरवरी-३, १३, १५, २५, मार्च-२ शुभ हैं।	वर्षारंभ से २७ सितं. तक
तुला:-मई-११, जून-१८, १९, २०, २३, २५, २८, ३०, जुलाई-९, १०, नवंबर-१८, २३, २८, २९, दिसंबर-४, ६, फरवरी-१३, १५, मार्च-२ शुभ हैं।	वर्षारंभ से वर्ष पर्यन्त	**तुला:**-मई-११, १६, १७, २१, २२, २३, २७, ३१, जून-१, २, ३, १२, १८, १९, २०, २३, २५, २८, ३०, जुलाई-९, १०, नवंबर-१८, २३, २८, २९, दिसंबर-४, ६, जनवरी-२२, २६, ३०, फरवरी-३, १३, १५, मार्च-२ शुभ हैं।	वर्षारंभ से वर्ष पर्यन्त तक
वृश्चिक:-अप्रैल-३०, मई-१, ९, १०, ११, १६, १७, २०, २१, २३, २७, ३१, जून-१, २, ३, १२, नवंबर-१८, २३, २७, २८, दिसंबर-४, ६, जनवरी-२२, २६, ३०, फरवरी-३, शुभ हैं।	१५ मई से १५ जून १६ नवं. से १६ दिसं. तक	**वृश्चिक:**-अप्रैल-३०, मई-१, ९, १०, ११, १६, १७, २०, २१, २३, २७, ३१, जून-१, २, ३, १२, १९, २०, २३, २५, २८, ३०, जुलाई-९, १०, १३, नवंबर-१८, २३, २७, २८, दिसंबर-४, ६, जनवरी-२२, २६, ३०, फरवरी-३, १३, १५, २५, मार्च-२ शुभ हैं।	२७ सितं. से वर्ष पर्यन्त
धनु:-अप्रैल-३०, मई-१, ९, १०, ११, १६, १७, २०, २१, २२, २७, जून-२, ३, १२, १८, १९, २३, २५, ३०, जुलाई-९, १०, १३, जनवरी-२२, २६, ३०, फरवरी-३, १३, १५, २५, मार्च-२ शुभ हैं।	१४ अप्रै. से १५ मई १५ जून से १६ जुला. १४ जन. से १३ फर.	**धनु:**-अप्रैल-३०, मई-१, ९, १०, ११, १६, १७, २०, २१, २२, २७, जून-२, ३, १२, १८, १९, २३, २५, ३०, जुलाई-९, १०, १३, नवंबर-१८, २३, २७, २८, २९, दिसंबर-४, ६, जनवरी-२२, २६, ३०, फरवरी-३, १३, १५, २५, मार्च-२ शुभ हैं।	वर्षारंभ से २७ सितं.
मकर:-मई-१६, २०, २१, २२, २३, ३१, जून-१, २, १२, १८, १९, २०, २३, २५, २८, ३०, जुलाई-९, १३, नवंबर-१८, २३, २७, २८, २९, दिसंबर-४, ६, जनवरी-२२, २६, ३०, फरवरी-३, १३, १५, २५, मार्च-२ शुभ हैं।	१५ मई से १५ जून १४ जन. से १४ मार्च	**मकर:**-अप्रैल-३०, मई-१, ९, १०, ११, १६, २०, २१, २२, २३, ३१, जून-१, २, १२, १८, १९, २०, २३, २५, २८, ३०, जुलाई-९, १३, नवंबर-१८, २३, २७, २८, २९, दिसंबर-४, ६, जनवरी-२२, २६, ३०, फरवरी-३, १३, १५, २५, मार्च-२ शुभ हैं।	२७ सितं. से वर्ष पर्यन्त
कुंभ:-मई-११, जून-१८, १९, २०, २३, २५, २८, ३०, जुलाई-९, १०, नवंबर-१८, २३, २८, २९, दिसंबर-४, ६, फरवरी-१३, १५, मार्च-२ शुभ हैं।	१५ जून से १६ जुला. १३ फर. से १४ मार्च	**कुंभ:**-मई-११, १६, १७, २१, २२, २३, २७, ३१, जून-१, २, ३, १२, १८, १९, २०, २३, २५, २८, ३०, जुलाई-९, १०, नवंबर-१८, २३, २८, २९, दिसंबर-४, ६, जनवरी-२२, २६, ३०, फरवरी-३, १३, १५, मार्च-२ शुभ हैं।	वर्षारंभ से २७ सितं.
मीन:-अप्रैल-३०, मई-१, ९, १०, ११, १६, १७, २०, २१, २३, २७, ३१, जून-१, २, ३, १२, नवंबर-१८, २३, २७, २८, दिसंबर-४, ६, जनवरी-२२, २६, ३०, फरवरी-३ शुभ हैं।	१४ अप्रैल से १५ मई १६ नवं. से १६ दिसं.	**मीन:**-अप्रैल-३०, मई-१, ९, १०, ११, १६, १७, २०, २१, २३, २७, ३१, जून-१, २, ३, १२, १९, २०, २३, २५, २८, ३०, जुलाई-९, १०, १३, नवंबर-१८, २३, २७, २८, दिसंबर-४, ६, जनवरी-२२, २६, ३०, फरवरी-३, १३, १५, २५, मार्च-२ शुभ हैं।	२७ सितं. से वर्ष पर्यन्त

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यादि ग्रहों के राशि, नक्षत्र चरण संचार, मार्गी-वक्री व उदयास्त सं. २०६२ वि.

सूर्य नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१०	अप्रैल	रेवती	४ मीन
१३	"	अश्विन	१ मेष
१७	"	"	२ "
२०	"	"	३ "
२४	"	"	४ "
२७	"	भरणी	१ "
३०	"	"	२ "
४	मई	"	३ "
७	"	"	४ "
११	"	कृत्ति.	१ "
१४	"	"	२ वृष
१८	"	"	३ "
२१	"	"	४ "
२५	"	रोहि.	१ "
२८	"	"	२ "
१	जून	"	३ "
४	"	"	४ "
७	"	मृग.	१ "
११	"	"	२ "
१४	"	"	३ मिथुन
१८	"	"	४ "
२१	"	आर्द्रा	१ "
२५	"	"	२ "
२८	"	"	३ "
२	जुलाई	"	४ "
५	"	पुन.	१ "
९	"	"	२ "
१२	"	"	३ "
१६	"	"	४ कर्क
१९	"	पुष्य	१ "
२३	"	"	२ "
२६	"	"	३ "
३०	"	"	४ "
२	अग.	श्लेषा	१ "
६	"	"	२ "

सूर्य नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
९	अग.	श्लेषा	३ कर्क
१३	"	"	४ "
१६	"	मघा	१ सिंह
२०	"	"	२ "
२३	"	"	३ "
२७	"	"	४ "
३०	"	पू.फा.	१ "
३	सितं.	"	२ "
६	"	"	३ "
९	"	"	४ "
१३	"	उ.फा.	१ "
१६	"	"	२ कन्या
२०	"	"	३ "
२३	"	"	४ "
२६	"	हस्त	१ "
३०	"	"	२ "
३	अक्टू.	"	३ "
७	"	"	४ "
१०	"	चित्रा	१ "
१३	"	"	२ "
१७	"	"	३ तुला
२०	"	"	४ "
२३	"	स्वाति	१ "
२७	"	"	२ "
३०	"	"	३ "
२	नवं.	"	४ "
६	"	विशाखा	१ "
९	"	"	२ "
१२	"	"	३ "
१६	"	"	४ वृश्चिक
१९	"	अनु.	१ "
२२	"	"	२ "
२६	"	"	३ "
२९	"	"	४ "
२	दिसं.	ज्येष्ठा	१ "

सूर्य नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
५	दिसं.	ज्येष्ठा	२ वृश्चिक
९	"	"	३ "
१२	"	"	४ "
१५	"	मूल	१ धनु
१९	"	"	२ "
२२	"	"	३ "
२५	"	"	४ "
२८	"	पू.षा.	१ "

सन् २००६ ई.

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१	जन.	पू.षा.	२ धनु
४	"	"	३ "
७	"	"	४ "
१०	"	उ.षा.	१ "
१४	"	"	२ मकर
१७	"	"	३ "
२०	"	"	४ "
२४	"	श्रवण	१ "
२७	"	"	२ "
३०	"	"	३ "
२	फर.	"	४ "
६	"	धनि.	१ "
९	"	"	२ "
१२	"	"	३ कुंभ
१६	"	"	४ "
१९	"	शत.	१ "
२२	"	"	२ "
२६	"	"	३ "
१	मार्च	"	४ "
४	"	पू.भा.	१ "
८	"	"	२ "
११	"	"	३ "
१४	"	"	४ मीन
१८	"	उ.भा.	१ "
२१	"	"	२ "
२४	"	"	३ "
२८	"	"	४ "

मंगल नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१३	अप्रैल	धनि.	१ मकर
१८	"	"	२ "
२२	"	"	३ कुंभ
२७	"	"	४ "
१	मई	शत.	१ "
६	"	"	२ "
११	"	"	३ "
१५	"	"	४ "
२०	"	पू.भा.	१ "
२५	"	"	२ "
२९	"	"	३ "
३	जून	"	४ मीन
८	"	उ.भा.	१ "
१२	"	"	२ "
१७	"	"	३ "
२२	"	"	४ "
२७	"	रेवती	१ "
२	जुला.	"	२ "
७	"	"	३ "
१२	"	"	४ "
१८	"	अश्विन	१ मेष
२३	"	"	२ "
२९	"	"	३ "
४	अग.	"	४ "
१०	"	भरणी	१ "
१६	"	"	२ "
२४	"	"	३ "
१	सितं.	"	४ "
११	"	कृत्ति.	१ "
२१	अक्टू.	व.भर.	४ "
३१	"	"	३ "
१०	नवं.	"	२ "
२१	"	"	१ "
३०	दिसं.	मा.भर.	२ "

सन् २००६ ई.

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
११	जन.	मा.भर.	३ मेष

मंगल नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२०	जन.	मा.भर.	४ मेष
२८	"	कृति.	१ "
५	फर.	"	२ वृष
१२	"	"	३ "
१९	"	"	४ "
२५	"	रोहि.	१ "
४	मार्च	"	२ "
१०	"	"	३ "
१६	"	"	४ "
२२	"	मृग.	१ "
२८	"	"	२ "

बुध नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१९	अप्रै.	मा.उ.भा.	३ मीन
२४	"	"	४ "
२७	"	रेवती	१ "
३०	"	"	२ "
३	मई	"	३ "
६	"	"	४ "
८	"	अश्विन	१ मेष
१०	"	"	२ "
१२	"	"	३ "
१४	"	"	४ "
१६	"	भरणी	१ "
१८	"	"	२ "
२०	"	"	३ "
२२	"	"	४ "
२३	"	कृति.	१ "
२५	"	"	२ वृष
२७	"	"	३ "
२८	"	"	४ "
३०	"	रोहि.	१ "
३१	"	"	२ "
२	जून	"	३ "
३	"	"	४ "
५	"	मृग.	१ "
६	"	"	२ "

बुध नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
८	जून	मृग.	३ मिथुन
१०	"	"	४ "
११	"	आर्द्रा	१ "
१३	"	"	२ "
१४	"	"	३ "
१६	"	"	४ "
१८	"	पुन.	१ "
२०	"	"	२ "
२२	"	"	३ "
२४	"	"	४ कर्क
२६	"	पुष्य	१ "
२८	"	"	२ "
१	जुला.	"	३ "
३	"	"	४ "
६	"	श्लेषा	१ "
९	"	"	२ "
१४	"	"	३ "
१	अग.	व."	२ "
५	"	"	१ "
१०	"	पुष्य	४ "
२१	"	मा.श्लेषा	१ "
२५	"	"	२ "
२८	"	"	३ "
३०	"	"	४ "
१	सितं.	मघा	१ सिंह
३	"	"	२ "
५	"	"	३ "
६	"	"	४ "
८	"	पू.फा.	१ "
१०	"	"	२ "
१२	"	"	३ "
१३	"	"	४ "
१५	"	उ.फा.	१ "
१७	"	"	२ कन्या
१९	"	"	३ "
२१	"	"	४ "

बुध नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२२	सितं.	हस्त	१ कन्या
२४	"	"	२ "
२६	"	"	३ "
२८	"	"	४ "
३०	"	चित्रा	१ "
२	अक्टू.	"	२ "
४	"	"	३ तुला
६	"	"	४ "
९	"	स्वाति	१ "
११	"	"	२ "
१३	"	"	३ "
१५	"	"	४ "
१८	"	विशा.	१ "
२०	"	"	२ "
२२	"	"	३ "
२५	"	"	४ वृश्चिक
२८	"	अनु.	१ "
३०	"	"	२ "
२	नवं.	"	३ "
६	"	"	४ "
१२	"	ज्येष्ठा	१ "
१६	"	व.अनु.	४ "
२०	"	"	३ "
२३	"	"	२ "
२६	"	"	१ "
२८	"	विशा.	४ "
९	दिसं.	मा.अनु.	१ "
१३	"	"	२ "
१६	"	"	३ "
१९	"	"	४ "
२१	"	ज्येष्ठा	१ "
२३	"	"	२ "
२६	"	"	३ "
२८	"	"	४ "
३०	"	मूल	१ धनु

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यादि ग्रहों के राशि, नक्षत्र चरण संचार, मार्गी-वक्री व उदयास्त सं. २०६२ वि.

बुध नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
		सन् २००६ ई.	
२	जन.	मूल	२ धनु
४	"	"	३ "
६	"	"	४ "
८	"	पू.षा.	१ "
१०	"	"	२ "
१२	"	"	३ "
१५	"	"	४ "
१७	"	उ.षा.	१ "
१९	"	"	२ मकर
२१	"	"	३ "
२३	"	"	४ "
२५	"	श्रवण	१ "
२७	"	"	२ "
२९	"	"	३ "
३१	"	"	४ "
१	फर.	धनि.	१ "
३	"	"	२ "
५	"	"	३ कुंभ
७	"	"	४ "
९	"	शत.	१ "
११	"	"	२ "
१३	"	"	३ "
१५	"	"	४ "
१७	"	पू.भा.	१ "
१९	"	"	२ "
२१	"	"	३ "
२४	"	"	४ मीन
९	मार्च	व.	३ कुंभ
१२	"	"	२ "
१६	"	"	१ "
२१	"	शत.	४ "
२९	"	मा.पू.भा.	१ "

गुरु नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२	मई	व.हस्त	२ कन्या
९	जुला.	मा.	३ "
५	अग.	"	४ "
२५	"	चित्रा	१ "
११	सितं.	"	२ "
२८	"	"	३ तुला
१३	अक्टू.	"	४ "
२८	"	स्वाति	१ "
१३	नवं.	"	२ "
२९	"	"	३ "
१६	दिसं.	"	४ "
		सन् २००६ ई.	
५	जन.	विशा.	१ "
३१	"	"	२ "

शुक्र नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१०	अप्रैल	अश्वि.	१ मेष
१३	"	"	२ "
१६	"	"	३ "
१९	"	"	४ "
२१	"	भरणी	१ "
२४	"	"	२ "
२७	"	"	३ "
२९	"	"	४ "
२	मई	कृति.	१ "
५	"	"	२ वृष
७	"	"	३ "
१०	"	"	४ "
१३	"	रोहि.	१ "
१६	"	"	२ "
१८	"	"	३ "
२१	"	"	४ "
२४	"	मृग.	१ "
२६	"	"	२ "
२९	"	"	३ मिथुन

शुक्र नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१	जून	मृग.	४ मिथुन
४	"	आर्द्रा	१ "
६	"	"	२ "
९	"	"	३ "
१२	"	"	४ "
१५	"	पुन.	१ "
१७	"	"	२ "
२०	"	"	३ "
२३	"	"	४ कर्क
२५	"	पुष्य	१ "
२८	"	"	२ "
१	जुला.	"	३ "
४	"	"	४ "
६	"	श्लेषा	१ "
९	"	"	२ "
१२	"	"	३ "
१५	"	"	४ "
१८	"	मघा	१ सिंह
२०	"	"	२ "
२३	"	"	३ "
२६	"	"	४ "
२९	"	पू.फा.	१ "
३१	"	"	२ "
३	अग.	"	३ "
६	"	"	४ "
९	"	उ.फा.	१ "
१२	"	"	२ कन्या
१४	"	"	३ "
१७	"	"	४ "
२०	"	हस्त	१ "
२३	"	"	२ "
२६	"	"	३ "
२८	"	"	४ "
३१	"	चित्रा	१ "
३	सितं.	"	२ "

शुक्र नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
६	सितं.	चित्रा	३ तुला
९	"	"	४ "
१२	"	स्वाति	१ "
१५	"	"	२ "
१७	"	"	३ "
२०	"	"	४ "
२३	"	विशा.	१ "
२६	"	"	२ "
२९	"	"	३ "
२	अक्टू.	"	४ वृश्चिक
५	"	अनु.	१ "
८	"	"	२ "
११	"	"	३ "
१४	"	"	४ "
१७	"	ज्येष्ठा	१ "
२०	"	"	२ "
२३	"	"	३ "
२७	"	"	४ "
३०	"	मूल	१ धनु
२	नवं.	"	२ "
५	"	"	३ "
९	"	"	४ "
१२	"	पू.षा.	१ "
१६	"	"	२ "
२०	"	"	३ "
२४	"	"	४ "
२८	"	उ.षा.	१ "
३	दिसं.	"	२ मकर
९	"	"	३ "
१७	"	"	४ "
३०	"	व.	३ "
		सन् २००६ ई.	
७	जन.	व.उ.षा.	२ "
१३	"	"	१ धनु
१९	"	पू.षा.	४ "
२६	"	"	३ "

शुक्र नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
११	फर.	मा. पू.षा.	४ धनु
१९	"	उ.षा.	१ "
२५	"	"	२ मकर
१	मार्च	"	३ "
६	"	"	४ "
१०	"	श्रवण	१ "
१३	"	"	२ "
१७	"	"	३ "
२१	"	"	४ "
२४	"	धनि.	१ "
२७	"	"	२ "

शनि नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२६	मई	पुन.	४ कर्क
२४	जून	पुष्य	१ "
२१	जुला.	"	२ "
१६	अग.	"	३ "
१४	सितं.	"	४ "
२५	अक्टू.	श्लेषा	१ "
२०	दिसं.	व.पुष्य	४ "
		सन् २००६ ई.	
४	फर.	"	३ "

राहु नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२६	मई	रेवती	३ मीन
२८	जुला.	"	२ "
२९	सितं.	"	१ "
१	दिसं.	उ.भा.	४ "
		सन् २००६ ई.	
२	फर.	उ.भा.	३ "

केतु नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२६	मई	चित्रा	१ कन्या
२८	जुला.	हस्त	४ "
२९	सितं.	"	३ "
१	दिसं.	"	२ "
		सन् २००६ ई.	
२	फर.	"	१ "

हर्षल नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
२५	मई	शत.	४ कुंभ
५	जुलाई	व.	३ "
१४	अक्टू.	"	२ "
१७	दिसं.	मा.	३ "
		सन् २००६ ई.	
२७	फर.	"	४ "

नेप्चयून नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१४	अप्रैल	धनि.	१ मकर
२५	जून	श्रवण	४ "
		सन् २००६ ई.	
५	फर.	धनि.	१ "

प्लूटो नक्षत्र चार

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१४	मई	व.ज्येष्ठा	४ वृश्चिक
६	दिसं.	मा.मूल	१ "

मंगल वक्री-मार्गी

२	अक्टूबर	वक्री
१०	दिसंबर	मार्गी

बुध वक्री-मार्गी

१२	अप्रैल	मार्गी
२३	जुलाई	वक्री
१६	अगस्त	मार्गी
१४	नवंबर	वक्री
४	दिसंबर	मार्गी
३	मार्च २००६	वक्री
२५	"	मार्गी

गुरु वक्री-मार्गी

५	जून	मार्गी
५	मार्च २००६	वक्री

शुक्र वक्री-मार्गी

२४	दिसं.	वक्री
३	फर. २००६	मार्गी

शनि वक्री-मार्गी

२२	नवंबर	वक्री

हर्षल वक्री-मार्गी

ता.	मास	नक्षत्र	पाद
१५	जून		वक्री
१६	नवंबर		मार्गी

नेप्चयून वक्री-मार्गी

२०	मई	वक्री
२७	अक्टूबर	मार्गी

प्लूटो वक्री-मार्गी

३	सितं.	मार्गी

मंगल उदयास्त

इस वर्ष सं. २०६२ में मंगल अस्त नहीं होगा।

बुध उदयास्त

२२	मई	अस्त	पूर्व
१५	जून	उदय	पश्चिम
२९	जुलाई	अस्त	"
१३	अग.	उदय	पूर्व
२	सितं.	अस्त	"
७	अक्टू.	उदय	पश्चिम
१९	नवं.	अस्त	"
३०	"	उदय	पूर्व
२	जन.०६	अस्त	"
१४	फर.	उदय	पश्चिम
५	मार्च	अस्त	"
१८	"	उदय	पूर्व

गुरु उदयास्त

८	अक्टू.	अस्त	पश्चिम
५	नवं.	उदय	पूर्व

शुक्र उदयास्त

२४	अप्रै.	उदय	पश्चिम
८	जन.०६	अस्त	पश्चिम
१८	जन.	उदय	पूर्व

शनि उदयास्त

४	जुलाई	अस्त	पश्चिम
११	अगस्त	उदय	पूर्व

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विक्रम संवत् २०६२ में बनने वाले सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, रवि पुष्य, गुरु पुष्य व द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर आदि योगों का विवरण

उपरोक्त शुभ योगों में किए गए सभी शुभ कार्यों में सफलता प्राप्त होती है। जिनका प्र. व समाप्ति समय अंग्रेजी ता. भा.स्टै.टा. अनुसार दिया गया है।

सर्वार्थ सिद्धि योग

ता. मास	घं. मि.	से	ता. मास	घं. मि. तक
१२ अप्रैल	६-००	"	१२ अप्रैल	११-५२ "
१३ "	५-५१	"	१४ "	५-५८ "
१५ "	१८-२३	"	१६ "	५-५६ "
१७ "	५-५५	"	१७ "	२४-१९ "
२७ "	५-४५	"	२७ "	६-५६ "
५ मई	१८-४७	"	७ मई	५-४० "
९ "	२०-२६	"	१० "	५-३५ "
११ "	५-३४	"	११ "	२४-०२ "
१२ "	२६-२९	"	१३ "	२१-१६ "
१५ "	५-३२	"	१५ "	८-१३ "
२१ "	१८-२३	"	२२ "	५-२८ "
२३ "	१६-३२	"	२४ "	५-२७ "
२८ "	६-०८	"	२८ "	२८-१४ "
३१ "	२४-४८	"	१ जून	५-२५ "
२ जून	५-२५	"	३ "	२५-१७ "
६ "	५-२४	"	७ "	५-२४ "
८ "	५-२४	"	८ "	७-२८ "
९ "	९-५५	"	१० "	१२-३१ "
१५ "	२६-०६	"	१६ "	५-२४ "
१८ "	५-२५	"	१९ "	५-२५ "
२० "	५-२५	"	२० "	२४-५४ "
२४ "	१४-२३	"	२५ "	११-४७ "
२८ "	६-३६	"	२९ "	५-२७ "
३० "	५-२८	"	१ जुला.	६-४५ "
४ जुला.	५-२९	"	५ "	१३-४९ "
७ "	५-३१	"	८ "	५-३१ "
१३ "	९-२५	"	१४ "	५-३४ "
१६ "	५-३८	"	१६ "	१२-५१ "
१८ "	५-३६	"	१८ "	११-०६ "
२२ जुला.	५-३८	से	२२ जुला.	२१-३२ तक
२६ "	५-४०	"	२६ "	१३-०२ "
२८ "	५-४२	"	२८ "	१२-४२ "
३० "	१५-०८	"	३१ "	५-४३ "
१ अग.	५-४४	"	१ अग.	१९-३५ "
४ "	५-४५	"	४ "	२८-०८ "
१० "	५-४९	"	१० "	१७-३७ "
१९ "	५-५४	"	१९ "	८-२१ "
२१ "	२४-०४	"	२२ "	५-५१ "
२३ "	२०-५३	"	२४ "	५-५६ "
२७ "	५-५८	"	२७ "	२३-२४ "
१ सित.	६-००	"	१ सित.	१०-१३ "
४ "	१८-४४	"	५ "	६-०२ "
९ "	२६-२६	"	१० "	६-०५ "
११ "	२६-०१	"	१२ "	६-०६ "
१८ "	१०-४७	"	१९ "	६-०९ "
२० "	६-५८	"	२० "	२९-५३ "
२१ "	२१-३६	"	२२ "	६-११ "
२४ "	६-१२	"	२४ "	७-०३ "
२ अक्टू.	६-१६	"	३ अक्टू.	६-१६ "
७ "	८-०२	"	८ "	६-१९ "
९ "	७-३८	"	१० "	६-२० "
१६ "	६-२४	"	१६ "	१८-४९ "
१८ "	६-२५	"	१८ "	१६-०५ "
११ "	१५-२६	"	२० "	६-२६ "
२४ "	२१-५१	"	२५ "	६-३० "
२५ "	२४-४३	"	२६ "	६-३० "
३० "	६-३३	"	३१ "	६-३४ "
३ नवं.	१४-३५	"	४ नवं.	१४-०८ "
१३ "	२६-०१	"	१४ "	६-४४ "
१५ "	२४-४९	"	१७ "	६-४७ "
२० "	३०-१५	"	२२ "	६-५१ "
२२ "	८-५६	"	२३ "	६-५२ "
२७ "	६-५५	"	२७ "	२२-०४ "
३० "	२३-१७	"	१ दिसं.	२२-२३ "
४ दिसं.	१७-३२	"	५ "	७-०१ "
५ दिसं.	१५-३९	से	६ दिसं.	७-०२ तक
११ "	८-३०	"	१२ "	७-०६ "
१३ "	८-२१	"	१५ "	७-०८ "
१८ "	१४-२५	"	१९ "	१६-५८ "
२० "	७-११	"	२० "	१९-५१ "
२८ "	९-२७	"	२९ "	८-३६ "

सन् २००६ ई.

१ जन.	७-१६	"	१ जन.	२४-०६ "
२ "	७-१६	"	२ "	२१-३४ "
६ "	१४-३०	"	७ "	७-१७ "
८ "	७-१७	"	८ "	१३-४५ "
१० "	७-१७	"	१० "	१४-५१ "
११ "	७-१७	"	१२ "	७-१७ "
१५ "	७-१७	"	१५ "	२४-११ "
२५ "	७-१४	"	२५ "	१८-५८ "
२९ "	७-१२	"	२९ "	१०-५५ "
३० "	७-१२	"	३० "	७-५८ "
३ फर.	७-१०	"	४ फर.	७-०९ "
६ "	२०-२३	"	७ "	७-०७ "
८ "	७-०७	"	८ "	२३-१५ "
९ "	२५-२२	"	१० "	२७-४९ "
१८ "	२३-५४	"	१९ "	६-५८ "
२० "	२७-०५	"	२१ "	६-५६ "
२५ "	२२-०७	"	२६ "	६-५१ "
२ मार्च	७-५३	"	३ मार्च	२८-१४ "
६ "	६-४३	"	७ "	६-४२ "
९ "	७-१८	"	१० "	९-४६ "
१५ "	२४-४०	"	१६ "	६-३२ "
१८ "	६-२९	"	१९ "	६-२८ "
२० "	९-०६	"	२१ "	६-२६ "
२५ "	७-२७	"	२५ "	२९-२६ "
२८ "	२१-४१	"	२९ "	६-१७ "

अमृत-सिद्धि योग

२७ अप्रैल	५-४५	"	२७ अप्रैल	६-५६ "
६ मई	५-३८	"	६ मई	१८-३४ "
७ जुला.	१९-११	"	८ जुला.	५-३१ "
३० जुला.	१५-०८	से	३१ जुला.	५-४३ तक
४ अग.	५-४५	"	५ अग.	२८-०८ "
२३ "	२०-५३	"	२४ "	५-५६ "
२७ "	५-५८	"	२७ "	२३-२४ "
१ सित.	६-००	"	१ सित.	१०-१३ "
२० "	६-५८	"	२० "	२९-५३ "
२४ "	६-१२	"	२४ "	७-०३ "
१८ अक्टू.	६-२५	"	१८ अक्टू.	१६-०५ "
३० "	११-२६	"	३१ "	६-३४ "
२७ नवं.	६-५५	"	२७ नवं.	२२-०४ "
३० "	२३-१७	"	१ "	६-५८ "
५ दिसं.	१५-३९	"	६ दिसं.	७-०२ "
२८ "	९-२७	"	२९ "	७-१५ "

सन् २००६ ई.

२ जन.	७-१६	"	२ जन.	२१-३४ "
२५ "	७-१४	"	२५ "	१८-५८ "
३० "	७-१२	"	३० "	७-५८ "
३ फर.	७-१०	"	३ फर.	२०-३२ "

रवि पुष्य, गुरु पुष्य योग

ये योग केवल विवाह को छोड़कर अन्य सभी कार्यों में सिद्धिदायक होते हैं। रविपुष्य योग तंत्र, मंत्र, यंत्रों में सिद्धिदायक तथा रत्न धारण व जड़ी-बूटी ग्रहण करने में श्रेयष्कर होते हैं। गुरु पुष्य योग व्यापारिक कार्यों में अधिक फलीभूत होते हैं।

रवि पुष्य योग

१७ अप्रैल	५-५५	"	१७ अप्रैल	२४-११ "
१५ मई	५-३२	"	१५ मई	८-१३ "
२० नवं.	३०-१५	"	२१ नवं.	६-५० "
१८ दिसं.	१४-२५	"	१९ दिसं.	७-१० "

सन् २००६ ई.

१५ जन.	७-१७	"	१५ जन.	२४-११ "

गुरु पुष्य योग

७ जुला.	१९-११	"	८ जुला.	५-३१ "
४ अग.	५-४५	"	४ अग.	२८-०८ "
१ सित.	६-००	"	१ सित.	१०-१३ "

द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योग

तिथि, वार एवं नक्षत्र आदि के संयोग से बनने वाले ये योग अपने नामानुसार शुभाशुभ सभी कार्यों का फल द्विगुणित तथा त्रिगुणित कर देते हैं। व्यापार में लगाया या बैंक आदि में जमा किया धन उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होता है।

द्विपुष्कर योग

२१ मई	५-२९	"	२१ मई	६-४५ "
२९ "	८-३५	"	२९ "	२६-४१ "
७ जून	२८-५४	"	८ जून	५-२४ "
२३ जुला.	५-३९	"	२३ जुला.	८-४७ "
३१ "	२३-४८	"	१ सित.	५-४४ "
२४ सित.	७-०३	"	२४ "	२३-२८ "
४ अक्टू.	१६-५८	"	५ अक्टू.	६-१८ "
२७ नवं.	२२-३७	"	२८ नवं.	६-५६ "
६ दिसं.	३०-१३	"	७ दिसं.	७-०२ "

सन् २००६ ई.

२१ जन.	१५-००	"	२२ जन.	८-०३ "
२५ मार्च	२९-२६	"	२६ मार्च	२६-०८ "

त्रिपुष्कर योग

२६ अप्रैल	५-४६	"	२६ अप्रैल	७-३५ "
३० "	५-४२	"	३० "	२४-०१ "
१८ जून	२७-४२	"	१९ जून	१८-१५ "
२८ "	५-२७	"	२८ "	६-३६ "
२ जुला.	११-२९	"	३ जुला.	९-३२ "
२० अग.	२६-३१	"	२१ अग.	१६-१६ "
३० "	१४-४४	"	३१ "	६-०० "
४ सित.	२६-१९	"	५ सित.	६-०२ "
२३ अक्टू.	१९-२०	"	२४ अक्टू.	६-२९ "
२९ "	९-१६	"	२९ "	२१-०२ "
८ नवं.	६-४०	"	८ नवं.	९-४३ "
१७ दिसं.	१२-१९	"	१७ दिसं.	२३-५९ "
२७ "	१६-३१	"	२८ "	७-०७ "

सन् २००६ ई.

१ जन.	७-१६	"	१ जन.	२४-०६ "
१० "	१०-५४	"	१० "	१४-५१ "
१९ फर.	२२-४९	"	२० फर.	६-५७ "
२८ "	२६-१८	"	१ "	६-४८ "
५ मार्च	१४-०६	"	५ मार्च	२७-१७ "

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

व्यापार दिशा मार्गदर्शन-वैज्ञानिक अनुसंधान पर व्यापार भविष्य

परिलेखकर्ता-मनीष कुमार जैन पोरसा वाले C/o प्रेमचन्द्र जैन पोरसा वाले, लाईट मशीनरी ठाठीपुर, ग्वालियर (म.प्र.) ४७४०११, ०७५१ पीपी ५०४०३८९

जनवरी २००५- १-१-२००५ से १९-१-२००५ के बीच उड़द में ३९९ की भड़कती तेजी। डालडा, काबली चना १९९ तेज। बड़ी इलायची, पाम आयल में भारी तेजी परन्तु जीरा, मूंग में मंदी चल सकती है। २१-१-२००५ से ७-२-२००५ के बीच सींगदाना ५५५, सरसों १५१ की तूफानी मंदी का दौर चल सकता है। १५-१-२००५ के बीच बड़ी इलायची ७७७, लाल मिर्च ७७७, गेहूं, बारदाना, चीनी, सौंफ, गुड़, देशी घी में तेजी चल सकती है। ११-१-२००५ तक चना ९९ हो सकती है। २ फर. २००५ में ७५ की तेजी बना। २७-२-२००५ चना में जोरदार मंदी आ सकती है। १५-२-२००५ होने से ३-१-२००५ से २१ मार्च २००५ तक रिलायंस ९९ तेजी। ए.सी.सी., इन्फोसिस शेयर्स में १९९ की भड़कती तेजी। २१ मार्च २००५ से ५ अप्रैल २००५ तक जोरदार मंदी आवेगी। व्यापार में जिम्मेदारी नहीं होगी। १५-१-२००५ से १५ दिनों में तेलों में अच्छी मंदी आवेगी। १०-१२-२००४ को सूर्य-बुध की Inferior Conjunction ११ दिन पूर्व से ११ दिन बाद तक शेयर्स मारकेट में A.C.C., Reliance में भारी तेजी तो बाद में ७-१४ दिन में भारी मंदी आवेगी।

फरवरी २००५- १-१-२००५ से १५-२-२००५ के बीच जीरा ११९९ तेज, छोटी इलायची २५, चीनी ६५ भड़कती तेजी। मूंग, उड़द ७५ की तेजी। चांदी १९९ तक तेजी चल सकती है। मगर सरसों ७५, काली मिर्च ३०९, मसूर १५५ मंदी आकर के बाद में तेजी चलने की आशा है। सन् २००४ में तेलों में तेजी होकर भयंकर मंदी आवेगी। चीनी, गुड़ भारी तेजी। लालमिर्च, चना, गुंवार नीचे में २५९९, सुपारी, हल्दी भारी घटबढ़ से तेजी फिर मंदी चलने की आशा है। २५ फरवरी से ५ मार्च मंदी चल सकती है। १५-२-२००५ सूर्य-बुध सुपरियर युति होने से शेयर्स मारकेट में २० जनवरी २००५ से ५-७ दिन में भारी तेजी, तो १५ फरवरी २००५ तक ए.सी.सी., एस.बी.आई., टिस्को, इनफोसिस शेयर्स में भारी मंदी में नीचे भाव बने खरीदें। व्यापार में किसी प्रकार की जिम्मेदारी नहीं होगी। जनवरी-फरवरी तैल तिलहन में मंदी चलने की आशा है। धर्म, दान-पुण्य आदि करते रहें। २० फरवरी से शेयर्स मारकेट में तेजी चल सकती है।

मार्च २००५- २-३-२००५ से ११-४-२००५ के बीच सोना २५९ चांदी की तेजी तथा छोटी इलायची मैथी ७५ की तेजी, चना १७१ की तेज, गुड़ में तूफानी तेजी आ सकती है। तो अरहर, छोटी इलायची में मंदी आ सकती है। ११-३-२००५ से ५-४-०५ के बीच उड़द ३९९ की तेजी, कलौंजी ७०७, मूंग १५५ की भारी तेजी। इसके अलावा जीरा २७-३-०५ से ५ अप्रैल ०५ से २७-४-०५ तक सरसों, रिलायंस, एसीसी, जेपी, इनफोसिस शेयर्स, बी.एस.सी में भारी तेजी आ सकती है। मैथी, लौंग, सौंठ में भारी तेजी आ सकती है। पिपरमेन्ट नीचे ३५१, ऊंचे टॉप में ११५१-११५१ टॉप बाद में २९० के भाव पिपरमेन्ट के बीच भाव हो सकते हैं। २५-३-०५ से तेलों में मंदी चल सकती है। २९-३-२००५ इक्वेरियर युति होने से १५ या १० दिन पहले से ७ दिन बाद तक, रिलायंस, ए.सी.सी., टिस्को, इन्फोसिस शेयर्स में भारी मंदी। B.S.E.Index में ३७९ पॉइंट की मंदी बन सकती है। नोट:-सन् २००५ में किस वस्तु में ड्योढ़े-दूने-ढ़ाई-तीन गुने होने की संभावना है। इस बात की जानकारी ग्राफीकल सदस्य बनकर जानकारी लें। पी.पी. फोन नं. ०७५१-५०४०३८९, व गुप्ता जी ५०४७०७८ व श्री रामचंद्र दलाल ०९८२७२,५००४५, २३४०७२२, श्री राजू अग्रवाल २३३४६७५ व फोन से हमारा पता ज्ञात करते रहें। धनियां कब किस वर्ष में १५ रुपये वाला ५०-६५ होने की संभावना है। लहसन ५ रुपये प्रति किलो वाला ५०-८० रुपये किलो, चना १५ रुपये किलो वाला २७ रुपये किलो। शेयर B.S.E. Index जो सन् २००४ में ६२५० था, कब २५०० या ३५०० और फिर कब कितने वर्षों में ७२००-८१०० होने की संभावना है। हल्दी ३२ रुपये प्रति किलो वाली कब ४५ रुपये से ५० रुपये प्रति किलो तक होगी। ग्वार १५०० वाला कब ७७७, कब ४१०० से ५०००, काली मिर्च ७५ रुपये प्रति किलो वाली कब कितने वर्षों में २५१-४०० रुपये प्रति किलो तक होगी। कब कैसे स्टॉक करें? कब कैसे कितना माल बेचें? मोटे चांसों की जानकारी ग्राफीकल सदस्य बनकर समय-समय पर ताजी सलाह मंगावें। रिलायंस शेयर जो ऊंचे में ६१० रु. वाला कब २५९-१९९ रु. होकर फिर ७००-९९९ रु. की संभावना होगी।

अप्रेल २००५- २५-३-०५ के बीच लालमिर्च ७०७, जीरा ११९१, उड़द २९९ की भारी २८१ की तेजी। अरहर ७५ तेज, सोयाबीन ५०५, मूंग १९५, मक्का २५ की तेजी आ सकती है। ३ जून ०५ सूर्य-बुध युति होने से ३० जून से १५ जुलाई ०५ तक शेयर्स मारकेट में तेजी चल सकती है। व्यापार में लाभ हानि की जिम्मेदारी नहीं होगी।

मई २००५- २५-४-०५ से ११ मई ०५ तक छोटी इलायची ४५ तेजी, कालीमिर्च ५०५, जीरा ७७७ तेजी। राजमा १७५ की भड़कती तेजी, पिपरमेन्ट तेज तथा हल्दी ५०५, लौंग तेजी २५ बन सकती है। १ मई ०५ से ७ मई २००५ तक चना में मंदी। सरसों, अरण्ड में तेजी चल सकती है। बाजरा, सोयाबीन में मंदी चल सकती है। चांदी, सोना में मंदी चल सकती है। १५ मई ०५ से मूंग, मक्का ४५ तेज, चना ७७ तेजी, इमली ७५ की तेजी आ सकती है। १५ मई किशमिश में २०० मंदी मगर लालमिर्च २०५ की तेजी बन सकती है। २३ मई ०५ से ३१ मई ०५ तक धनियां ५००, हल्दी, कालीमिर्च में तेजी, खोपरा २५० मंदी, किशमिश में तथा तिल १७५, बिनौला तैल में तेजी आ सकती है।

जून २००५- १-६-०५ से ७ जून तक पोस्तादाना ५०० तेजी, मसूर ३६, गेहूं में तेजी बन सकती है। ३ जून से २३ जून ०५ तक चांदी ५५१ की मंदी। लौंग १५, चना ३६ तेज, नारियल २५ की तेजी बन सकती है। २७ मई से ११ जून तक सरसों ७० तेजी चीनी में बन सकती है। ३ जून से १५ जून तक चावल-गेहूं १५, उड़द १२५ की तेज, सौंठ ५०१ की तेजी आ सकती है। २७ मई से ११ जून ०५ मसूर १५० तेज, उड़द २९९, पोस्तादाना ५०५ तेजी अरहर १५५ में हल्दी १५५ मंदी २५० आवेगी। २९ मई से १५ जून तक जीरा ७०७ तेज। तेल नारियल, किशमिश में तेजी। बिनौला तेल में तेजी मगर कालीमिर्च में मंदी चल सकती है। १५ जून से २७ जून तक जीरा, चना, हल्दी में मंदी आ सकती है। उत्तर भारत पंजाब सिंगदाना में पानी वर्षा तैल १५५ तेज बन सकती है। १५ जून से २२ जून ०५ तक तिल, चांदी, रुई, मसूर १५२, सोयाबीन ७०० की भड़कती तेजी आ सकती है। १५-२५ दिनों में भी सरसों मंदी चली नीचे भाव बने खरीदें। उसके १५-२५ दिन में तेजी का उछाला आवे तो ४५ माल तेजी में बेचें। २५ जून से ३ जुलाई तक हल्दी, सौंफ, जीरा ५०५ की मंदी। चीनी, गुड़, रुई में अच्छी तेजी आ सकती है। ३ जून २००५ सुपरियर युति Superior Conjuction सूर्य-बुध होने पर २५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मई २००५ से ११ जून २००५ के बीच रिलायंस शेयर में जोरदार तेजी चल सकती है। ११जून से २५ जून तक शेयर्स मार्केट में भारी मंदी चल सकती है।

जुलाई २००५-१५ जून २००५ से १ जुलाई ०५ के बीच सौंफ ७७७ की तेजी, राजमा १७५ की तेजी, तिल १५५, कलौंजी ८९९, पोस्तादाना Popy Seeds ५०५, सोना-हल्दी ५०५, छोटी इलायची ७५ की तेजी व देशी घी-मसूर ७५ में अच्छी तेजी आ सकती है। ३ जुलाई ०५ से ११ जुलाई तक मूंग ७५, कलौंजी, सौंफ, जीरा २५९, खोपरा-गोला मंदी मगर कालीमिर्च ५०५, चांदी की तेजी आ सकती है। ९ जुलाई से अगस्त ०५ के बीच कभी सोयाबीन डी.ओ.सी. ७०७ को भड़कती तेजी। तैल, सोना, चांदी २९९ तेजी। चाय २५, इसके अलावा अरहर १५५, चना ८७, गेहूं ५५ व लौंग में ७५ की तेजी बन सकती है। सौंफ, जीरा में मंदी आ सकती है। २७ जुलाई २००५ से नारियल तैल १५५ तेजी, मूंग ५५, गुड़ ५५, गेहूं २५ व चावल बासमती में ४०५ तेजी आ सकती है।

अगस्त २००५- २९ जुलाई ०५ से ७ अगस्त ०५ तक फली तैल १६५ की तेजी आ सकती है। ३० जून ०५ से २१ जुलाई ०५ के बीच सरसों १५०-२०५ एक बार अच्छी तेजी आ सकती है। २१ जुलाई से ७ अगस्त ०५ के बीच सरसों में जोरदार मंदी बन सकती है। ७ अगस्त से २५ अगस्त के बीच मूंगफली तैल २९९, बिनौला २५५ की मंदी आ सकती है। ६-८-२००५ इनफेरियर युति सूर्य-बुध होने से १८ जुलाई २००५ से ११ अगस्त के मध्य तैल, गुंवार, शेयर्स मारकेट में भारी मंदी का दौर चल सकता है। सावधानी से व्यापार करें।

सितम्बर २००५- २९ अगस्त ०५ से ११ सितम्बर २००५ तक सरसों १५५ मंदी चल सकती है। १७ जून ०५ से २९ अगस्त ०५ के बीच गुंवार २९९९ की मंदी तो ३०-८-२००५ से १८ सितम्बर २००५ तक १९९-२५५ की गुंवार में भड़कती तेजी तो १८-९-२००५ से २३-९-२००५ तक गुंवार ३९९ की जोरदार मंदी तो २३ सितम्बर २००५ से ३-१०-२००५ के बीच गुंवार में ३९९९ की तूफानी तेजी आवे, तो गुंवार ११-१०-२००५ तक ५१५ की झटकेदार मंदी आवेगी। व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी नहीं होगी। १८-९-२००५ सुपरियर युति सूर्य-बुध की होने से तैल-तिलहन Oil & Oil Seeds में भारी मंदी तथा ११-९-२००५ से १८-१०-२००५ के बीच रिलायंस, टिम्को, इनफोसिस शेयर्स में भारी मंदी तथा B.S.E. Index में ५७९ पॉइंट की जबरदस्त गिरावट का दौर चल सकता है। गुंवार में भारी मंदी तो चना में अच्छी तेजी आ सकती है।

अक्टूबर २००५- २५ सितम्बर २००५ से अक्टूबर ०५ के मध्य मूंगफली तैल Ground Nut Oil में जोरदार ७९९ से ११९९ प्रचंड मंदी। सोयाबीन तैल में ७७७, सरसों १५०-२०५ की मंदी आ सकती है। २०-१०-०५ से २७-१०-०५ तक सरसों, फली तैल, सोयाबीन तैल में एक तेजी का उछाला आ सकता है।

नवम्बर २००५- २३ अक्टूबर ०५ से ५ नवम्बर ०५ के बीच फली तैल में तेजी। ५-११-२००५ से २१-११-२००५ के बीच सरसों, बिनौला तैल में तेजी, जोरदार मंदी। २३-११-२००५ से ३०-११-२००५ में तेजी आ सकती है। २१ अक्टूबर २००५ से १५-११-२००५ कालीमिर्च ९९९ की भयंकर तेजी। बड़ी इलायची १५००-२५००, लालमिर्च ५०५ की जोरदार, छोटी इलायची ५५, धनिया Coriader Seeds २५९, सुपारी २९९, काबली चना ३०९ की तेजी। पोस्तादाना में तेजी आ सकती है। २५-११-२००५ सूर्य-बुध इनफेरियर युति होने से २५ अक्टूबर से २५ नवम्बर २००५ के बीच ए.सी.सी., रिलायंस, इनफोसिस शेयर्स में भारी तेजी तथा तैल, उड़द, चना में जोरदार तेजी चल सकती है। बाद में इनफोसिस शेयर में मंदी चल सकती है।

दिसम्बर २००५- २७ दिसम्बर २००५ से ९ दिसम्बर ०५ के बीच कभी सरसों १५५ की धमाके की मंदी, फली तैल ९९९ की भयंकर मंदी, तो ९-१२-२००५ से १५-१२-२००५ अस्थाई तेजी का उछाला तो १५-१२-२००५ तक तेजी बाद में मंदी आवेगी। तो दिसम्बर २००५ के महीने गुड़, चीनी, लालमिर्च, कलौंजी ७००, बड़ी इलायची आदि में अच्छी तेजी चल सकती है। ३-१२-२००५ से २१-१२-२००५ के बीच खोपरा गोला ५०५, पोस्तादाना ५०५, सौंठ ७९९ की, धनिया ३०९ की तेजी। तरबूज ७७७ की तेजी। उड़द, मूंग में १५५ की तेजी आ सकती है।

जनवरी २००६- १ जनवरी २००६ से ११ जनवरी २००६ तक मूंगफली २९९ की तेजी तो १४ जनवरी से २७ जनवरी २००६ तक फली तैल, सरसों २५५ की मंदी। अरण्ड, बिनौला, चना, मसूर में तेजी आ सकती है। १-१-२००६ से २१-१-०६ तक तरबूज १५६९, अरहर ५५ की तेजी। उड़द ४५, जौ ६५, सोयाबीन ३०९, तिल ३९९ की भड़कती तेजी इसके अलावा मक्का, बाजरा ४५, मौठ ५५५ की तूफानी तेजी चल सकती है। २६-१-२००६ सूर्य-बुध सुपेरियर युति होने से २७-१-२००६ से १५-२-२००६ तक शेयर्स मारकेट में अच्छी तेजी, तो १५-२-२००६ से १५-२० दिन में आगे भारी मंदी का दौर चल सकता है। व्यापार में लाभ-हानि की कोई गारण्टी नहीं होगी। हमेशा सीमित व्यापार करें।

फरवरी २००६- ३ फरवरी से ९ फरवरी ०६ तक तैलों में मंदी। ९ फरवरी ०६ से २१ फरवरी ०६ तक तैलों में अच्छी तेजी, तो २१ से २५ फरवरी ०६ तक मंदी। २५ फरवरी ०६ से ५ मार्च तक तेजी बाद मंदी आवेगी। ८ फरवरी ०६ से १५ फरवरी ०६ तक ज्वार, महुआ, तैल, चावल, बासमती चावल मंदी। चना १५५ की जोरदार मंदी मगर बड़ी इलायची, लौंग, अजवाईन, पिस्ता में तेजी चल सकती है। २७ फरवरी ०६ से ५ मई ०६ के बीच मसूर २९९, उड़द २६१ भारी तेजी आ सकती है।

मार्च २००६- ९ मार्च से १८ मार्च तक सरसों १५५ मंदी, तिल २५५ मंदी। १८ मार्च २००६ से २५ मार्च तक सरसों में ९९९ की अचानक तेजी, फली तैल, बिनौला में तेजी। तो २५ अप्रैल २००६ जोरदार मंदी आ सकती है। ११-२-२००६ से ३-३-२००६ तक उड़द १५५ की मंदी, ५ मार्च से ५ अप्रैल ०६ तक ३९९ की भड़कती तेजी तो बाद में मंदी आवेगी। २५-२-०६ से ३१ मार्च तक बिनौला तैल, तिल तैल, चना में तेजी। कालीमिर्च, धनिया में तेजी आ सकती है। १५ मार्च ०६ से १५ अप्रैल ०६ तक जीरा, गुंवार में तेजी बन सकती है। २१ मार्च से ७ अप्रैल तक मसूर, मौठ, मूंग, उड़द में तेजी आ सकती है। १२ मार्च ०६ सूर्य-बुध इनफेरियर युति होने से ५ मार्च से २१ मार्च ०६ तक B.S.E. Index में ५७५ पॉइंट की गिरावट चल सकती है। २१ मार्च से १ अप्रैल ०६ तक भारी तेजी। १५ मार्च से अप्रैल तक अलसी, सोयाबीन, सरसों ७५, चना ७० की भारी तेजी। कालीमिर्च १९९९ की भारी तेजी, गुंवार तेजी का झटका उड़द में आ सकता है।

अप्रैल २००६- ३ अप्रैल ०६ से ११ अप्रैल ०६ सरसों १५५ की तेजी। बिनौला तैल, अलसी, अरण्ड, सोयाबीन तैल २९९ की भड़कती तेजी। ११ अप्रैल से १८ अप्रैल ०६ से २५ तक तेजी, २५-४-०६ से २८-४-०६ तक मंदी। व्यापार में जिम्मेदारी नहीं होगी। ५ अप्रैल ०६ से २७ अप्रैल ०६ तक तैलों, उड़द ५०५ की जोरदार मंदी। कालीमिर्च, लौंग, जीरा ७०७ तेजी, धनिया ७०७ की जबरदस्त तेजी आ सकती है।

मई २००६- १८ मई २००६ सूर्य-बुध सुपरियर युति होने से १५ मई २००६ से २९ मई २००६ तक शेयर्स मार्केट में भारी मंदी का झटका तो १ जून से २७ जून तक तेजी आ सकती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जुलाई २००६-१८ जुलाई २००६ सूर्य-बुध इनफेरियर युति होने से १ जुलाई से १६ जुलाई तक शेयर्स मार्केट में तेजी तो १८ जुलाई से ५-८-२००६ तक मंदी चल सकती है। २७ जून से १५ जुलाई तक गुंवार, चना, सरसों में तूफानी तेजी आ सकती है।

सितम्बर २००६- १-९-२००६ सुपरियर युति होने से १५ अगस्त से ५ सितम्बर तक गुंवार में ५९९ की भड़कती तेजी। उड़द, मूंग, चना, सरसों में तेजी बन सकती है।

शेयर्स मार्केट Index की तेजी-मंदी (प्रथम विधि)

B.S.E. शेयर्स इंडेक्स २८ अप्रैल २००३ को २९३६ था वो ९ जनवरी २००४ को ६२५० के करीब होकर, १७ मई २००४ को नीचे में ४३०१ के करीब होकर अब सितम्बर २००४ में ५४०० के ऊंचे Level को छू Touch हो गया है। एक बार नीचे में ३४७५ या २५०० के स्तर छू सकता है। सन् २००६ से २७ मार्च २००८ के बीच B.S.E. Index ७२७७ या ८१९९ के Index Top स्तर को छू सकते हैं। व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी नहीं होगी।

इन चांसों का ज्यादा लाभ उन व्यापार करने वालों को मिलेगा, जो शेयर्स भावों को नोट कर, भावों को याद रखते हैं। चांस की तारीख से आगे तेजी चलेगी, यदि चांस मंदी का है। यदि चांस की तारीख के शुरू में नीचे बनें तो आगे तेजी चलेगी। मतलब चांस को शुरू में Low व Top व Index को जरूर देखना। सीमित लाईन जैसी चले वैसा व्यापार करना। नई स्पेशल रिपोर्ट बन रही है। ग्राफीकल सदस्य चार्ज भेजकर Member बनें। ०७५१ फोन ५०४०३८९ पी.पी. २३४०७२२, ५०४७०७८ पर पोरसा वाले जैन से चर्चा कर लें। कुछ विशेष लिखे नोट को जरूर पढ़ते रहें। पिछली रिपोर्ट भी पढ़ें।

(A) ५ सितम्बर २००४ से २९ सितम्बर २००४ तक B.S.E. Index २०५ से ५०१ Point की तेजी, तो ७ अक्टूबर तक, १५५ Point की मंदी, तो आगे २७-१०-२००४ तक, १५५-३७० प्वाईंट की तेजी, फिर जैसी लाईन पकड़े वैसा ही सीमित सौदा करें। व्यापार में किसी प्रकार की जिम्मेदारी कभी नहीं होगी।

(B) २७ अक्टूबर २००४ से १५ नवम्बर २००४ से भयंकर मंदी, फिर यदि तेजी चले तो बाजार देखकर तेजी का व्यापार करें। विशेष महत्वपूर्ण लाईन है। तूफानी घटाबढ़ी का Period है। १५-११-२००४ से ५ दिसम्बर २००४ भयंकर मंदी, यहां १५-११-२००४ पर Index ऊंचा या नीचा बना है। उस हिसाब से लाइन चलेगी। यदि अक्टूबर-नवंबर २००४ में इस अवधि में शेयर्स मार्केट में भयंकर मंदी चली है। और Lo2est Index बना है, तब ५-१२-२००४ से ११ फरवरी २००५ के बीच, शेयर्स मार्केट में एक बार तूफानी तेजी चल सकती है। रोज Daily का व्यापार करना ठीक नहीं होता है।

(C) ५ सितम्बर २००४ से २१ दिसम्बर या ११ जनवरी २००५ के बीच A.C.C. तेज, Reliance ९९ की तेजी, लाईन जैसी चले, वैसा व्यापार करें।

(D) ११ जनवरी २००५ से ११ फरवरी २००५ के बीच भयंकर मंदी आ सकती है। बाजार लाईन देखें। १ फरवरी से १५ फरवरी २००५ के बीच तूफानी घटबढ़ चलने की आशा है। १५ फरवरी २००५ से २८ फरवरी २००५ के मध्य तूफानी मंदी, तो ५ मार्च तक अचानक अच्छी तेजी चल सकती है। प्रथम विधि से चांस नहीं मिले तो अन्य विधि का उपयोग करें। क्योंकि शेयर्स २१९९ सम्पादित है।

(E) ५ मार्च २००५ से १९ मार्च के बीच, B.S.E. Index ३७९ से ४७० Point प्रचंड मंदी तो २५ मार्च तक अचानक १५५ Point की जोरदार तेजी, तो २ अप्रैल २००५ तक, २०५ Point की जोरदार मंदी आ सकती है। ये समय भयंकर घटाबढ़ी का है। सावधानी से व्यापार करें। चांदी सितम्बर २००३ में ७९०० थी वो ९ अप्रैल २००४ को १२१२५ के करीब थे।

(F) ३ अप्रैल २००५ से २१ अप्रैल २००५ के मध्य B.S.E. Index ३९९-५७७ Point की तूफानी तेजी, तो बाद में घटबढ़ से हल्की मंदी तो २७ अप्रैल तक पुनः तेजी आ सकती है। तो २ मई २००५ तक मंदी चल सकती है।

(G) ३ मई २००५ से २१ मई २००५ तक B.S.E. Index में २५९ Point की जोरदार तेजी, तो ११ जून २००५ तक, Index में ४५१-५५५ Point की भयंकर मंदी आ सकती है। बाजार का रुख देखकर सीमित, सावधानी से व्यापार करें।

(H) ११ जून २००५ से १५ जुलाई २००५ तक A.C.C., Reliance, Tisco Infosys, SBI में अच्छी आये तो आगे मंदी चलेगी। गत् वर्ष सन् २००४ के आर्यभट्ट पंचांग में तेजी-मंदी भविष्यवाणी- गुंवार में भयंकर तेजी, ९५० वाली १७५०-२१०० हुई। Index नीचे का सो १७ मई २००४ को B.S.E. Index, ९-१-२००४ को ६२५० था। १७ मई २००४ को नीचे में ४३०० हुआ। पिपरमेंट ३४५ वाला ७५०, ११-९-२००४ वो भाव Touch हो गए। अब नई तेजी मंदी वास्ते संशोधन आर्यभट्ट पंचांग में पढ़ें। व्यापार में जिम्मेदारी नहीं होगी।

शेयर्स मार्केट के Top या Lowest भाव बनने का Period

निम्नलिखित समय में एक या सवा महीने पूर्व ५ या १९ दिन मंदी आने की संभावना है। खास करके Reliance व Infosys शेयर्स में भंयकर मंदी चलने की संभावना है। लिखी तारीख तक Lo2est भाव बनने की संभावना है। (A) फिर भी लिखी तारीख के एक महीने पूर्व ही नीचे से नीचा भाव बन गया है तब आगे २५ दिन Share Market में तेजी चलने की संभावना है। (B) दूसरी खास बात यह कि १-१०-२००४ से १५-१२-२००४ के बीच का समय यदि इस Period में भयंकर तेजी तो ५-१२-२००४ से ११-१२-२००५ के बीच भयंकर मंदी, अन्यथा तेजी चलेगी। सावधानी से पढ़ें।

(A) २५-११-२००४ या १५ दिसम्बर २००४ पर शेयर्स में नीचे भाव, तो आगे ६५ दिन में Reliance, Tisco, Infosys शेयर्स में भयंकर तेजी आयेगी।

(B) २७ मार्च २००५, यदि २५ फरवरी २००५ तक, शेयर्स में Top भाव बने, तो आगे एक महीना में भयंकर मंदी में नीचे भाव बन सकते हैं। उसके बाद फिर तेजी आयेगी।

(C) २३ अगस्त २००५, १५ दिन बाद तक, शेयर्स मार्केट व B.S.E. Index में ५५५ या ७७७ पोइंट की तेजी, लाइन जैसी चले वैसा व्यापार करें। नहीं समझ में आये तो ग्राफीकल सदस्य बन कर ताजी तेजी-मंदी सलाह मंगावें। ०७५१ PP ५०४०३८९ पोरसा वाले जैन, PP ५०४७०७८, श्रीराम दलाल ०९८२७२-५००४५, ०७५१ PP २३३४६७५ से नया फोन नं०. ज्ञात करें।

(D) १५ जनवरी २००६, या १६ फरवरी २००६ से भयंकर तेजी-मंदी की लाइन चलेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(E) २५ जुलाई २००६, ११ दिन पूर्व से B.S.E. Index में ५९९ पोइंट की भयंकर मंदी तो तभी यदि डेढ़ महीने पूर्व से भयंकर तेजी चली होने पर तभी मंदी चल सकती है। व्यापार में जिम्मेदारी कभी नहीं होगी।

(F) ११ अक्टूबर २००६,१५ दिन पूर्व से १५ दिन बाद तक, कभी भयंकर तेजी का दौर चलेगा। जो भी लाइन चलेगी वो बहुत ही खतरनाक होगी। सावधानी से व्यापार करें।

(G)१५ अगस्त २००५ से १६ सितम्बर २००५ तक A.C.C. ७७, Reliance ९९ को भारी तेजी चल सकती है, जिससे बाद में मंदी आयेगी।

(H) १५-१०-२००५ से ५-११-२००५ के बीच, शेयर्स मार्केट भयंकर मंदी, तो १५ नवम्बर २००५ तक तेजी आ सकती है। यदि तेजी आगे बढ़ी, तो ११ दिसम्बर २००५ तक A.C.C., Wipro, S.B.I., Tisco, Reliance शेयर्स में अच्छी बन सकती है।

(I) २१ फरवरी २००६ से ५ मार्च २००६ तक शेयर्स मार्केट में अचानक एकदम तेजी आ सकती है। अथवा ये तेजी, ५ अप्रेल २००६ तक चल सकती है। बाजार लाइन देखकर ही व्यापार करें।

(J) ५ अप्रेल २००६ से १५ मई २००६ तक, भयंकर मंदी आ सकती है। बाजार लाइन जैसी चले वैसा व्यापार करें।

चाँदी-सोना तेजी-मंदी स्पेशल चाँस

७ अप्रेल २००४ को चाँदी के अब तक के, १२१५० से ऊंचे भाव बन चुके हैं। एक बार चाँदी नीचे में ८७०० के आस-पास होकर अब ९२०० होकर ९८०० के आसरे भाव चल रहे हैं। चाँदी व Gold सोना में अब से २५-८-०४ या २७-९-०४ के बीच अच्छी तेजी आ जाने की संभावना है। व्यापार में लाभ - हानि की जिम्मेदारी नहीं होगी। चाँदी १२१५० वाली आगे ५-७-२००५ तक घटकर ६५००-७०९९ के भाव रहने की संभावना है।

(4-10-2M)- घटबढ़ का ग्राफ बतलाता है कि जुलाई ०४ से २५-९-०४ के बीच का समय Period जो है। बड़ा तीव्र घटाबढ़ी का है। मतलब सन् १९९९ से २००१ के बीच २००-४०० रुपये की तेजी २-३ महीने कभी-कभी आ पाती थी, मगर ७-४-०४ से ऐसी घटाबढ़ी जो चल रही है। वो चाँदी के बाजार की चाल बहुत थोड़े समय में बहुत ज्यादा तेजी आकर फिर बड़ी मंदी आ जाती है। चाँदी Silver में ५००-की तेजी २-५ दिन में आ जाती है। जो पहले कुछ वर्ष में ५००-७०० की तेजी ५-७ महीने में आ पाती थी वो अब ५-१५ दिन में आ जाती है। अब ऐसी चाल सितम्बर २००४ चलकर ऐसी घटबढ़ खत्म हो जायेगी।

नोट-

(१) इतनी सब बातें कहने का मतलब इतना ही है कि ५-७ दिन ५००-४५० की तेजी चाँदी में तो बेचकर नफा Profit ले लिया करें। इसके बाद ७-११ दिन में २०५-२७७ की मंदी आने पर फिर से खरीदें पुनः ३०६-५०० की तेजी आने पर बेचें।

(२) १५-७-०४ से ३१-८-०४ तक के बीच चाँदी सोना में एक तेजी आ सकती है। २५-९-०४ से २९-१०-०४ के बीच चाँदी-सोना में अच्छी मंदी चल सकती है। व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी नहीं होगी।

(३) और खास बात यह कि ७ अप्रेल ०४ चाँदी १२००१ के टोप भाव जो बने हैं। वो २१-६-०५ तक घटते-घटते चाँदी ६९००-६५०० के करीब भाव रह सकते हैं। बड़ी सावधानी से व्यापार करें। ऐसे ही २१-१२-०४ या २७-१-०५ के आसपास चाँदी भयंकर मंदी Lowest भाव रह सकते हैं। फिर नीचे भाव बनने के बाद एक अच्छी तेजी आती है। इस बात का ध्यान रखें।

सरसों-सोयाबीन तेल

(A)२५-११-२००४ से २५-२-२००५ तक तेलों में, रुई Cotton में भयंकर मंदी आ सकती है। सरसों २००० वाली १२९९ रह सकती है। व्यापार में जिम्मेदारी नहीं होगी।

(B) २५-२-२००५ से १८-४-२००५ तक एक बार तैल, गुड़, रुई में अच्छी तेजी बन सकती है।

(C) २१-१०-२००४ से २३-११-२००४ के बीच सरसों २५०, अरहर ५०५ की तूफानी तेजी, तो बाद में भयंकर मंदी चल सकती है। चना २०५, मसूर १५५ की तेजी।

(D) पिपरमेन्ट नीचे में ३४५ बिका अभी ६५० वो डेढ़ वर्ष में कभी भी ११७९ या २१९९ के स्तर को Touch कर सकता है। सावधानी से सीमित व्यापार करें।

(E) गुंवार अभी १९००-२१०० एक बार १४५० फिर १८०० या फिर गुंवार २७५५ फिर ७९९ फिर ३ वर्ष में कभी ४१७७ या ४८९९ के ऊंचे भाव बनने की संभावना है।

व्यापार दिग्दर्शिका वैज्ञानिक अनुसंधान पर

जन. २००५ से जून २००६ तक, १८ महीने की तेजी-मंदी गाईड लाइनें

परिलेखकर्ता:- श्रीमती चम्पादेवी जैन c/o श्री प्रेमचन्द जैन पोरसा वाले

पुस्तक मूल्य १६३ रुपये डाक खर्च सहित

इस तेजी-मंदी पुस्तक में सरसों, अरहर, चना, रुई, सोना-चांदी, गुड़-चीनी, कालीमिर्च, हल्दी, शेयर्स आदि की लम्बे समय के मोटे चांस दिए गए हैं। कुछ वस्तुओं के ऊंचे-नीचे भावों के अनुमानित भाव भी पुस्तक में छापे जावेंगे। सन् २००५ से अप्रैल २००६ तक विशेष घटाबढ़ी का वर्ष है। सरसों १९०० वाली ११९९, सरसों तैल ५१ वाला २५-२८ रुपये के भाव रह सकते हैं। व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी नहीं होगी। हमेशा बाजार रुख देखकर सीमित व्यापार करें। तिल ३७०१-३९०९ वाला १८९९ के भाव रह सकते हैं। उड़द १४०० वाला ढाई साल में ३३९९, मूंग १६०० वाला ३१९९, काबली चना २१०० वाला ३८०१-४५०० तीन साल में भाव बनने की संभावना है। ग्राफीकल सदस्य बनकर किस वस्तु में ड्योढ़े-दूने, किस वस्तु में आधे भाव बनने की संभावना है। स्वपनों व वर्षा पानी तंजी-मंदी विचार पुस्तक में सुझाए गए हैं। कैसे कब कितना वस्तु का स्टॉक करके कब कितना बेचने का विचार ग्राफीकल सदस्य बनकर ज्ञात कर सकते हैं। जैसे कि आपको याद होगा सन् २००२ में जो गुंवार नीचे ६७५ के करीब भाव थे, वो सितम्बर १९९१-२०५० के आसरे Top भाव बने। ऐसे ऊंचे भावों में गुंवार नहीं बेच पाए, फिर वही गुंवार ९०९ के आसरे बिना फायदा नहीं ले पाए। ग्राफीकल सदस्य बनकर व्यापार में खरीदने-बेचने का समय समझें। शेयर्स में B.S.E. Index, जो कभी ऊंचे में ६२५० के करीब वो एक बार नीचे में ३५५५ या २१९९ फिर सन् २००६ से मार्च २००८ के बीच Top से Top Index 7999-8199 Highest Top भाव बन सकते हैं। पुस्तक की 1.P.P. नहीं होगी। मनीआर्डर कूपन पर आप अपना पता स्पष्ट लिखें। मनीआर्डर ही भेजें।

☞ **श्रीमती चम्पादेवी जैन c/o श्री पी.सी.जैन पोरसा वाले**, ग्रोवर हॉस्पीटल के पीछे, इंदौर बैंक के पीछे, बारादरी चौराहा, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)-४७४००६ फोन नं. ०७५१-पी.पी.५०४०३८९, २३४०७२२ से पता बदलने पर वहां ज्ञात कर लें।
२३३४६७५, ०९८२७२५००४५ पी.पी. पोरसा वाले जैन

☞ **श्री मनीष कुमार जैन पोरसा वाले**, लाईट मशीनरी डिवीजन के पास, चम्बल कॉलोनी, थाटीपुर, ग्वालियर (म.प्र.)-४७४०११

☞ **कु. रेनु जैन D/o श्री पी.सी. जैन पोरसा वाले**, ग्रोवर हॉस्पीटल के पीछे, इंदौर बैंक के पीछे, बारादरी चौराहा, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)-४७४००६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

द्वादश राशियों का मासिक भविष्यफल सं. २०६२

नोट-यह राशिफल गोचर ग्रह एवं नाम राशि के आधार पर लिखा गया है।

मेष-चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

वर्ष प्रारम्भ की बेला में शनि ३रा, गुरु केतु छठां, मंगल १०वें, सूर्य-शुक्र-श्ले.-बुध-राहु १२वें रहेंगे। २६ मई से शनि का ढैय्या का योग बनता है जो बनते काल को रोकने का घटक बनेगा। वर्ष में सावधान रहें। **अप्रैल २००५**-इस माह में व्यावसायिक कार्यों में उदासीनता रहेगी। पारिवारिक कार्यों में तनाव तथा अपमान जनक वातावरण बनेगा। नवीन कार्यों में बाधाएं उत्पन्न होंगी। वाहन दुर्घटना का योग भी बनेगा। **मई २००५**-इस माह में समय अनुकूल रहेगा। पारिवारिक कार्यों में मांगलिक खर्चा आयेगा। उदर विकार जन्य चिन्ता रोग का भय रहेगा। राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी। भूति-भवन का लेन-देन होगा। मित्र वर्ग सहयोग देंगे। यात्राएं भी होंगी, सफलता मिलेगी। **जून २००५**-इस माह में मानसिकता की दृष्टि से चिन्तायुक्त रहेंगे। संतान पक्ष से पीड़ा का योग। पत्नि के विकार उत्पन्न होने का योग बनेगा। नौकरी व्यवसाय का योग बनेगा। पारिवारिक विवादों से बचकर चलना हितकर रहेगा। राजनैतिक लाभ होगा। **जुलाई २००५**-यह माह आपके लिए प्रत्येक कार्य के लिए शुभ रहेगा। लेकिन भारी वाहन से बचाव रखें। माता-पिता का पूर्णत: सहयोग मिलेगा। किसी राजनेता से संपर्क, मान-सम्मान बढ़ेगा। भूमि-भवन का लेन-देन होगा। रचनात्मक प्रवृति बढ़ेगी। **अगस्त २००५**-राजकीय एवं कानूनी कार्यों में यह मास अच्छा रहेगा। मेल-जोलकर प्रतिष्ठा बढ़ायेंगे। आत्म विश्वास बढ़ेगा। आध्यात्मिक चेतना की ओर बढ़ेंगे। अचानक पुरस्कार योग भी बनेगा। विजय कारक योग से मानसिक शांति मिलेगी। **सितम्बर २००५**-इस माह में शनि ग्रह के प्रभाव से बनते कार्यों में बाधाएं आयेंगी। शत्रु पक्ष प्रबल होगा। दौड़-धूप का भी यथावत् लाभ नहीं मिलेगा। घर में अशुभ घटना का भी योग बनेगा। स्त्री पक्ष को विशेष कष्ट तथा उदासीनता रहेगी। **अक्टूबर २००५**-यह माह आपको नव संदेश दिलायेगा। पारिवारिक कार्यों में विशेष लाभ होगा। गाय, भैंस, वाहन क्रय में भी लाभार्जन होगा। पत्नि का भाग्योदय योग भी बनता है। व्यवसाय, नौकरी में विशेष लाभ मिलेगा। यह माह आत्मा का संतोष दिलायेगा। **नवंबर २००५**-इस माह में नवीन कार्य योजना बनेंगी। मान सम्मान बढ़ेगा। मांगलिक खर्चा भी होगा। कहीं पर विशेष आमंत्रित सदस्य भी बनेंगे। लेकिन परिवार-जनों से क्लेश-क्रोध बढ़ेगा। मानसिक अशांति के कारण उदासीनता आयेगी। शुभ यात्रा योग भी बनेगा। **दिसंबर २००५**- इस माह में आलस्य बढ़ेगा। किसी व्यक्ति से विवाद योग भी बनता है। चर्म रोग की भी संभावना बनती है। कोर्ट कचहरी में विजय का योग है। किसी मांगलिक कार्यों का नेतृत्व करना पड़ सकता है। वाहन-पशुओं से सावधान रहें ताकि मानसिक परेशानी एवं शारीरिक परेशानी नहीं हो। **जनवरी २००६**- इस माह में कलेश की भावना से परिवार में उपद्रव बढ़ेगा। मौसमी बीमारियों का शिकार बनना पड़ सकता है। मित्र वर्ग के सहयोग से भूमि भवन का लेन-देन बनेगा। स्वयं को अचानक ग्लानि जैसे भाव बनेंगे। पशुओं से बचकर रहें। माता-पिता का सहयोग मिलेगा। **फरवरी २००६**- इस माह में पूर्व के अधूरे कार्य सम्पन्न होने का योग बनेगा। दाम्पत्य सुख में वृद्धि होगी। नये कार्यों के लिये आमंत्रण पत्र मिलेंगे। घरेलू कार्यों में कुछ विवाद भी बढ़ेगा। शत्रु पक्ष की ओर से भयावह-आत्म ग्लानि युक्त वातावरण बनाया जायेगा। **मार्च २००६**- इस माह में शत्रु की हार, आपकी विजय होगी। राजकीय कार्यक्रमों में भी सफलता तथा अधिक लाभ मिलेगा। शुभ कार्यों के लिए आपको दौड़-धूप करनी पड़ेगी। तीर्थाटन का योग भी बनता है। सन्तान पक्ष का स्वास्थ्य न्यून रोगी होगा।

वृष-ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

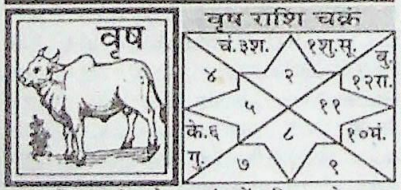

विक्रम संवत के शुभारंभ में शनि २रा, केतु-गुरु ५वे, मंगल ९वे, राहु-बुध ११वे तथा शुक्र-सूर्य १२वे एवं चन्द्र २रा होने से वर्ष में भागदौड़ तथा कुछ अचानक चिन्ताएं बढ़ेंगी। स्थान परिवर्तन का योग एवं विविध वर्ग से सम्पर्क बढ़ेगा। **अप्रेल २००५**- इस महीने में भ्रमण कार्यों की ओर बढ़ना पड़ेगा। यात्राएं ज्यादा होंगी। खर्चा भी बढ़ेगा तथा सन्तान पक्ष की ओर से लाभ भी मिलेगा। स्त्री पक्ष को कोई बीमारी का योग बनेगा। मानसिकता को ज्यादा प्रयोग में लायेंगे। **मई २००५**-इस माह में राजकीय कार्यों में लाभ होगा। व्यापारिक क्षेत्रों व सामाजिक स्थानों पर प्रभाव बढ़ेगा। नवीन योजना के अनुसार कार्य में लाभ होगा। मित्र वर्ग काफी सहयोग करेंगे। शत्रु पक्ष निर्बल होगा। आपका आत्म विश्वास बढ़ेगा। शुभ मांगलिक कार्यों में भी आपका वर्चस्व रहेगा। **जून २००५**-इस माह में काफी आर्थिक लाभ मिलेगा। ससुराल पक्ष से भी मान-सम्मान प्राप्ति का योग बनेगा। सामाजिक परिलाभ मिलेगा। स्त्री पक्ष से नयी योजना का विचार विमर्श होगा, जिनका विवाह होना है। संबंध योग बनेंगे। लेकिन इस माह में यात्रा नहीं करें। **जुलाई २००५**-इस माह में रिश्तेदारों का आवागमन ज्यादा होगा। यात्राएं भी ज्यादा होंगी। नवीन व्यक्तियों से संपर्क बढ़ेगा। राज पक्ष का मामला हितकारक रहेगा। विश्वास के साथ संयुक्त कार्य योजना बनेगी जिससे आर्थिक लाभ होगा। शत्रु पक्ष भी मित्र बनने का प्रयास करेंगे। कृषक वर्ग को विशेष लाभ का योग है। **अगस्त २००५**-इस माह में समय आपके प्रतिकूल रहेगा। व्यवसाय, नौकरी या अन्य कार्यों में बाधा आयेगी। अनावश्यक विवाद के कारण क्रोध आवेश बढ़ेगा। घुटनशीलता, परेशानी तथा विवाद से मानसिक स्थिति भी अस्थिर होगी। अन्य लोग अचानक धोखा देकर आर्थिक हानि करायेंगे। सावधान! दुर्गा सप्तशती का पाठ करें। **सितंबर २००५**-इस मास में व्यवसायिक स्थिति सुधरेगी। लेकिन परिवार में विवाद का योग बनेगा। जमीन-जायदाद जैसा विवाद ज्यादा तूल पकड़ेगा जिससे हताश होने जैसा वातावरण बनेगा। राजकीय क्षेत्र में वर्चस्व रहेगा। विवाद के क्षेत्र में भाग कम लेवें। कुछ असामाजिक तत्व आपको उकसा कर शारीरिक कष्ट पहुंचायेंगे। **अक्टूबर २००५**-व्यापारिक स्थिति सुधरेगी। परिवार में नये सदस्य का आगमन। दाम्पत्य जीवन अच्छा रहेगा। मांगलिक कार्यों, उत्सवों में खर्चा बढ़ेगा। श्रम साधना का प्रभाव न्यून रहेगा। रिश्तेदारों में अशुभ घटना घटने से आप प्रभावित होंगे। किसी महिला के द्वारा नया संदेश मिलेगा। राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी। **नवंबर २००५**-इस माह में भ्रमणशील जीवन रहेगा। अचानक विदेशी यात्रा का योग भी बन सकता है। शारीरिक सुख का लाभ मिलेगा। तीर्थाटन में व्यय ज्यादा होगा। रचनात्मक प्रवृति भी बढ़ेगी। काव्य करने में कृतित्व का लाभ मिलेगा। किसी संत के दर्शन लाभ से नया परिवर्तन योग बनेगा। **दिसम्बर २००५**-इस माह में कुछ अनबन जैसा वातावरण होगा। कुछ लोग आपसे चापलूसी भी करेंगे। आर्थिक दृष्टि से यह माह अच्छा रहेगा। शारीरिक निर्बलता तथा रोगोपद्रव का प्रभाव बढ़ेगा। स्त्री पक्ष से शुभ संदेश मिलेगा। व्यवसाय में वृद्धि का योग बनता है। मोटर-वाहन, रेलादि से सावधान रहें। **जनवरी २००६**-इस माह में शत्रु पक्ष बढ़ेगा। विवाद न्यायालय तक पहुंच सकता है। लेकिन पंच परमेश्वर न्याय करेंगे। बेमतलब भागदौड़ के कारण अपव्यय बढ़ेगा। मानसिक परेशानी का मुकाबला करना पड़ सकता है। वाहन प्राप्ति का योग। पुरस्कार प्राप्ति का योग भी बनता है। **फरवरी २००६**-इस माह में शत्रु पक्ष परेशान करेगा। राजकीय कार्यों में रुकावटें आयेंगी। कानूनी कार्यवाही जैसा वातावरण बनेगा। मन में स्थिरता बढ़ेगी। पानी, कूप से भी सावधान रहें। व्यवसाय, नौकरी कार्यों में बाधाएं आयेंगी। स्वभाव में क्रोधावेश बढ़ेगा। पशुधन क्रय-विक्रय में लाभ। पश्चिमोत्तर देशों-प्रांतों से आर्थिक लाभ रहेगा। **मार्च २००६**-इस माह में आपके निकटतम व्यक्ति ही परेशानियां पैदा करेंगे। कार्यों में रुकावटें बढ़ेंगी। मिथ्या खर्च बढ़ेगा। मित्र वर्ग के सहयोग से नया कार्य होगा। विविध कार्यों में स्त्री पक्ष का सहयोग मिलेगा। बैंकिंग लेन-देन में कुछ हानि हो सकती है। आर्थिक तंगी के वातावरण से मानसिक अस्थिरता रहेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मिथुन-क, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह

मिथुन राशि चक्र

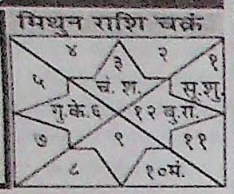

इस वर्ष आपके वर्ष प्रारंभ में प्रथम भाव में शनि-चन्द्र, चौथे भाव में गुरु-केतु, मंगल आठवां, बुध-राहु दशवें, शुक्र-सूर्य ११वे भाव में होना वर्ष में कार्यों में मनमुटाव बनेगा। शनि की साढ़ेसाती के प्रभाव से वर्ष पर्यन्त व्यवसाय में परेशानी का योग बढ़ेगा। परिवार में असमाजिक घटना घटेगी। **अप्रैल २००५**-इस माह में भवन-निर्माण संबंधी विवाद बढ़ेगा। स्वयं का स्वभाव क्रोधित होकर शारीरिक बाधाएं बढ़ेंगी। व्यापारिक कार्यों में अवरोध होगा। ऋण चिन्ता आदि का मामला बनेगा। मानसिक द्वेषता बढ़ेगी। पारिवारिक विवाद से आप चिन्तित रहेंगे। संतान को अचानक रोग होने का योग है। यात्रा न करें। **मई २००५**-इस माह में कठिन परिश्रम से कार्य बनेंगे। लेन-देन का प्रभाव बढ़ेगा। कृषि कार्य में हानि। व्यापारिक कार्यों में लाभ। सूत, रुई तथा बिनौला के धंधे में लाभ। वाहन का लेन-देन नहीं करें। रोजगार प्राप्ति के अवसर बनेंगे। पारिवारिक एवं सामाजिक मर्यादा में न्यूनता आयेगी। विवाद जन्य मामला घरेलू पक्षों से ही बनेगा। **जून २००५**-इस माह साथी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। पारिवारिक कष्ट बढ़ेंगे। मिथ्या लोग आपको कार्य में बाधा पहुंचाएंगे। राजपक्ष का कार्य ठीक होगा। किसी लोकप्रिय स्थान का भ्रमण होगा। रुपयों पैसों का विवाद बनेगा। रुकावटों के कारण पुराना उधार प्राप्ति के आसार इस माह नहीं हैं। **जुलाई २००५**- इस माह में व्यापारिक गतिविधियां बढ़ेंगी। कुछ स्वार्थी तत्व परेशान करेंगे। अचानक कुछ कार्य स्वत: ही बनेंगे। पारिवारिक विवाद के कारण मानसिक अशांति रहेगी। कुछ कार्यों में स्त्री पक्ष से विशेष सहयोग मिलेगा। नए धंधे का असार भी है। विशेषकर मणिहारी बाजार के व्यापारी लाभार्जन पाएंगे। **अगस्त २००५**- राजपक्ष के मामलों में विवाद नहीं प्रभाव बढ़ेगा। सामाजिक कार्यों का योग तथा प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलेगी। शत्रु पक्ष से सावधान रहें। वाहन आदि से भी सावधान रहें। स्वास्थ्य की दृष्टि से माह अशान्त रहेगा। विवाद भी बढ़ सकता है। चोरी का योग है। अनावश्यक खर्चा बढ़ेगा। किसी से अचानक शत्रुता हो सकती है। **सितम्बर २००५**- इस माह में भी देह-जलन, वात-पित्त दोष का योग बनेगा। क्रोधावेश के कारण बना बनाया कार्य भी नष्ट हो जाएगा। स्थान परिवर्तन, राजनैतिक हलचल में भी चिन्ता बनी रहेगी। कुछ नया दृष्टिकोण मित्र वर्ग की ओर से बनेगा। अनावश्यक भ्रमण न करें। किसी भी स्थान पर पशु व विष जन्य बाधा का योग बनता है। **अक्टूबर २००५**- इस माह में आर्थिक-सामाजिक तथा राजनैतिक तीनों लाभ के अवसर मिलेंगे। स्त्री पक्ष द्वारा नवीन योजना की प्रस्तुति होगी। मित्र वर्ग भी सहयोग देंगे। कुछ स्थानों के भ्रमण में भी लाभार्जन होगा। नैतिकता के तौर पर मान-सम्मान भी बढ़ेगा। वाहन क्रय-विक्रय का योग बनेगा। अग्नि से सावधान रहें। **नवम्बर २००५**- इस माह में नये व्यक्तियों से परिचय होगा। किसी भी कार्य में इस माह में लाभ मिलेगा। न्यायालय में विजय का योग बनता है। राजकीय मामलों में भी पुराना अटका मामला खुलकर बाहर आएगा। सामाजिक जीवन का लाभ अच्छा मिलेगा। पड़ौसी भी भाईयों जैसा कार्य करेंगे। बैंक कार्यों में आपको विशेष लाभ भी होगा। गिरने का भय है। **दिसम्बर २००५**- इस माह में मानसिकता का रोग बढ़ सकता है। शत्रु पक्ष वाले मौका देखकर धोखा देंगे, जिससे जीवन में ठेस पहुंचने का योग भी है। बाजार में भी मौन रह कर चलें, अन्यथा विवाद योग है। व्यापार की दृष्टि से यह माह व्यापारियों के लिये शुभ दायक रहेगा। मांगलिक कार्य योग भी है। मान-सम्मान प्राप्ति भी होगी। भ्रमण न करें। **जनवरी २००६**- स्वयं के रिश्तेदारों से समझौता योग बनता है। व्यापार कार्य में नवीनता का योग बनता है। विविध स्थानों पर आप कीर्ति प्राप्त करेंगे। राजकीय यात्रा योग भी बनता है। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। रचनात्मक कार्य में रुचि बढ़ेगी। पशुधन में भी लाभ मिलेगा। मांगलिक कार्य भी होगा। पुस्तक लेखन का योग भी बनेगा। **फरवरी २००६**- इस माह आर्थिक हानि का योग बनता है। कार्यों में कुछ नवीनता लाने का प्रयास करना हितकर होगा। शिर-शूल का अचानक योग बनेगा। स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करें। किसी भी नये व्यक्ति से सम्पर्क होगा। इसके द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त होंगे, जो व्यवसाय में लाभ-दायक होंगे। वाहन विक्रय में भी कुछ लाभ बनता है। **मार्च २००६**- इस माह में स्वास्थ्य में सुधार होगा। भाग-दौड़ यात्रा का योग विशेष बनेगा। अत्यावश्यक कार्यों में व्यस्त रहेंगे। कारोबार में प्रगति रहेगी। मनोबल भी बढ़ता रहेगा। विशेषकर कृषक वर्ग के लिए माह लाभदायक रहेगा। प्रकाशन सम्बंधी योजना का निर्माण भी होगा। नित्य कार्य में नवीनता का आभास होगा। **चिन्तन**- **श्री आर्यवृत क्षेत्र** में ब्रह्मांड बोध का चक्र हमें शिक्षा प्रदान कर पंचतत्व के रहस्यों की महत्ता भी बताता है।

कर्क-ही, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

कर्क राशि चक्र

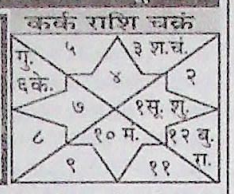

इस वर्ष आपकी राशि में गुरु -केतु ३रे, मंगल ७वां, राहु-बुध नौवे। सूर्य-शुक्र दसवें, शनि-चन्द्र १२वें होने से, तथा शनि की साढ़े साती एवं २७ सितम्बर २००६ से गुरु ४था होने के कारण स्वास्थ्य में कुछ गड़बड़ होगी। पारिवारिक विवाद भी बढ़ेंगे। नौवां राहु-बुध नया धंधा भी करायेगा। शनि प्राकृतिक बाधा का योग बनेगा। सावधान रहें। विष जन्य पीड़ा योग बनता है। **अप्रैल २००५**- इस माह में व्यापारिक कार्य ठीक चलेंगे। बाहरी क्षेत्रों में मान सम्मान बढ़ेगा। विवाद जन्य मामलों में मौन ही रहना हितकर रहेगा। राज-काज में भी जल्दी नहीं करें। मांगलिक कार्य बनेगा। विशेषकर आय कम खर्च ज्यादा होने का योग बनता है। स्त्री पक्ष से लाभ होगा। सामाजिक कार्यों में वर्चस्व बढ़ेगा। **मई २००५**- आपका इस माह में स्वभाव में कुछ परिवर्तन जैसा योग यानि चिड़चिड़ा-पन बनेगा। क्रोधावेश से हानि भी हो सकती है। लेकिन व्यापार जगत में तेजी आयेगी। लाभ भी होगा। भूमि भवन का मामला भी बढ़ेगा। पशुधन में भी लाभ मिलेगा। यात्रा योग भी बनता है। **जून २००५**- इस माह में शत्रु पक्ष की गुप्त चाल से बचना चाहिए। नीच विचारक व्यक्तियों का संग नहीं करें, मिथ्या योग से आर्थिक हानि भी होगी। स्वास्थ्य भी नरम या रोगोपद्रव की स्थिति बनेगी। कुछ नया धंधा करना इस माह में लाभदायक नहीं होगा। राम रक्षा पाठ करें। **जुलाई २००५**- इस माह में मित्र वर्ग लाभ दायक योग बनायेंगे। राज-पक्ष भी हितकर रहेगा। आय के नवीन साधन बनेंगे। शत्रु भी भयभीत होंगे। बच्चों की तरफ से कुछ नया मार्गदर्शन मिलेगा। स्थान परिवर्तन या नया भवन में प्रवेश या यात्रादि का योग बनता है। सामाजिक कार्यों में मान सम्मान की प्राप्ति भी होगी। **अगस्त २००५**- व्यापारिक लेन-देन में लाभ। खाद्यान्न में भी लाभ है। प्रभावशाली लोगों से सम्पर्क बढ़ेगा। स्त्री-सन्तान के सहयोग से नये धंधे में लाभदायक योग बनेगा। भूमि विवाद से बचना चाहिए। वाहन क्रय योग बनता है। मित्र जनों के सहयोग से आर्थिक लाभ भी होगा। नवीन व्यापारी-एजेन्टों से सम्पर्क भी होगा। **सितम्बर २००५**- इस माह में अहम् भाव बढ़ने का योग बनता है। पुरानी रंजिश या विवाद का मुद्दा भी बनेगा। रिश्तेदार भी मदद नहीं करेंगे। धंधा अच्छा चलेगा। कोर्ट-कचहरी से बचने के लिए शान्त रह कर अपना कार्य साधन हितकर कर सकते हैं। विदेशी व्यवसाय या विदेशी यात्रा का योग। पश्चिमोत्तर प्रान्त में वर्चस्व बढ़ेगा। **अक्टूबर २००५**- नवीन कार्यों में सफलता। मांगलिक कार्य भी होंगे। कुछ नवीन मित्रों का मिलन। लेकिन स्वास्थ्य बिगड़ने का योग है। पत्नि भी अचानक बिमार हो सकती है। भूमि भवन विक्रय योग भी बनता है। राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी। पशु से भय है, सावधान रहें। **नवम्बर २००५**- इस माह में वैचारिक मतभेद से परिवार में भी मन मुटाव होगा। शत्रु पक्ष भी अवसर देखकर कुछ हानि पहुंचाएंगे। राजकीय कार्यों में भी बाधा योग है। किसी नये धंधे का शुभारंभ नहीं करें। तथा यात्रा भी नहीं करें। हो सके तो श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ करें तथा शनि ग्रह की अंगूठी धारण करें। **दिसम्बर २००५**- इस माह में यात्रादि योग बनते हैं कुछ स्थानों पर हानि के संकेत बनते हैं। जीवन का एक नया मोड़ साबित शुभारंभ योग बनेगा। चोरी डकैती का मामला भी बनेगा। राजकीय कार्यों में भी बाधाएं आयेंगी। विकास की दृष्टि से मन अशान्त रहेगा। पुरानी कार्य प्रणाली का लाभ इस माह में बनने का योग बनता है। **जनवरी २००६**- इस माह में मानसिक परेशानी बढ़ेगी। स्त्री-पक्ष की ओर नयी योजना की प्राप्ति होगी। सम्मति पत्रों के कारण मान सम्मान भी बढ़ेगा। नये धंधे का योग अच्छा है। किसी व्यक्ति विशेष से आर्थिक लाभ भी होगा। मांगलिक खर्चा व अच्छा कार्य होगा। **फरवरी २००६**- इस माह में राजकीय कार्यों के सम्पादन में परेशानी आयेगी। कुछ वर्ग आपको उदासीन भी कर देंगे। लेकिन व्यवसाय एवं आय की दृष्टि से यह माह श्रेष्ठ रहेगा। औपचारिक गतिविधियों में राजकीय कार्यों में रुकावट आयेंगी। **मार्च २००६**- इस माह में मित्र वर्ग के सहयोग के कारण आर्थिक राजनैतिक एवं सामाजिक मंच पर लाभार्जन होगा। कुछ स्थानों का भ्रमण करने से मानसिक तनाव से मुक्ति मिलेगी। मनोबल बढ़ेगा। व्यवसायिक कार्यों में सफलता तथा मान सम्मान का विशेष योग बनेगा। जीवन साथी का भाग्योदय भी होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सिंह-मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

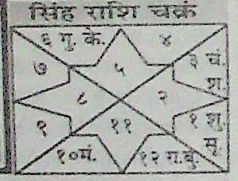

इस वर्ष आपकी राशि में मंगल छठे शत्रु बाधा विवाद कारक, गुरु-केतु दूसरे-विवाद धन का बंटवारा तथा अस्त्र-शस्त्र भय कारक। राहु-बुध आठवें दुर्घटनाओं का घटक। सूर्य-शुक्र भाग्योदय कारक, शनि-चन्द्र ११वें व्यवसाय में लाभदायक रहेंगे। दिनांक २५ मई २००५ से साढ़े साती भी आयेगी। जोकि खर्चा कारक एवं भाग्योदय कारक होगी। **अप्रैल २००५-** भाई बंधु (स्वजनों) से आर्थिक लाभ होगा। किसी नवीन कार्य के प्रति मन बढ़ेगा। नये धंधे के भी आसार हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से माह सामान्य रहेगा। स्थान परिवर्तन या नये भवन में प्रवेश का योग बन सकता है। मित्र वर्ग सहयोग देंगे। **मई २००५-** इस माह में चढ़ती साढ़े साती जवानी का जोश देकर परिवार में मन मुटाव करा देगा। लेकिन रोजगार का अवसर मिलेगा। किसी नये तीर्थाटन या विदेश यात्रा का योग बनता है। मित्र वर्ग का विशेष योगदान रहेगा। मान-सम्मान भी बढ़ेगा। अग्नि का भय है। **जून २००५-** व्यवसायिक स्थिति मजबूत बनेगी। अनावश्यक खर्चों का योग। सन्तान पक्ष को पीड़ा योग बनता है। स्वास्थ्य में गिरावट आयेगी। स्त्री-पक्ष से भी सावधान रहें, कोई अचानक धोखा भी हो सकता है। नया वाहन क्रय नहीं करें तो ठीक है। अचानक चोट का योग भी बनता है। **जुलाई २००५-** इस माह में पारिवारिक कार्यों की विशेष यात्राएं होंगी। कानूनी कार्य एवं राजकीय कार्यों में भी बाधा आयेगी। सामाजिक गतिविधियों का पालन करना अनिवार्य माना गया है। कुछ योग व्यवसाय चयन में तथा रोजगार अभिवृद्धि में योगदान बनता है। सन्तान पक्ष की ओर से चिन्ता बनेगी। प्रसव काल में भी बाधा योग। **अगस्त २००५-** इस माह में आकस्मिक कार्यों में परिवर्तन होकर नये कार्यों की ओर बढ़ना पड़ेगा। सामाजिक स्थिति सुधरेगी। कानूनी कार्यों में लाभ बनेगा। कोर्ट-कचहरी के मामलों में विजय योग। सामाजिक कार्यों में आपका वर्चस्व बढ़ेगा। जल का भय रहेगा। **सितम्बर २००५-** मानसिकता में परिवर्तन होगा। अच्छे कार्य के लिए जन-जन सम्मान देंगे। किसी नये उद्योग की स्थापना, का भवन भूमि का, रोजगार अवसर प्राप्ति का योग बनता है। मित्र वर्ग का अच्छा सहयोग बनेगा। कार्यों में काफी नवीनता आयेगी। कुछ व्यक्ति आपको प्रेरक व्यक्ति मानकर सम्मान भी देंगे। **अक्टूबर २००५-** नवीन कार्यों में आपको आर्थिक लाभ होगा। व्यापारिक सम्पर्क सूत्र बढ़ेगा। किसी नये स्थान में व्यापार का योग भी बनता है। सामाजिक गतिविधियां एवं धार्मिक कार्यों का भी आप आयोजन करेंगे। स्त्री वर्ग इस माह में आपको आर्थिक तथा स्वास्थ्य लाभ करायेगी। मांगलिक कार्यों की रुचि बढ़ेगी। **नवम्बर २००५-** इस माह में मानसिक चंचलता एवं कार्य क्षमता बढ़ेगी। स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। पुत्री का मांगलिक कार्य होगा। आय के साधन भी अच्छे बनेंगे। अहम् भाव नहीं बढ़ायें, कार्य प्रगतिशील रहेगा। कुछ सामाजिक बंधु कर्त्तव्य निर्वहन के रूप में सामाजिक दायित्व भी सौंपेंगे। पुराने विवाद में भी विजय का योग बनता है। **दिसम्बर २००५-** इस माह में आपको विशेष यात्रा व्यय का योग तथा क्रोधावेश का प्रभाव बनेगा। रिश्तेदारों में तनाव का योग बनेगा। राजकीय कार्यों में गति धीमी रहेगी। स्त्री-पक्ष द्वारा भाग्योदय के अवसर बनेंगे। कृषि आय में अच्छा लाभ होगा। भूमि भवन स्थाई सम्पत्ति का योग मित्रों के सहयोग से बनेगा। **जनवरी २००६-** इस माह में अनावश्यक जोश-होश में अपमान-जनक घटनाएं घटेंगी। व्यापारिक कार्यों में भी लाभ न्यून रहेगा। यात्रा में वाहन से सावधानी रखें। चोट या गिरने का योग भी बनेगा। अनावश्यक व्यक्तियों से सम्पर्क इस माह में नहीं करें। राजनैतिक लाभ बनेगा। किसी भी स्थान पर चिन्तन मनन का योग बनेगा। **फरवरी २००६-** इस माह में स्वास्थ्य बिगड़ कर सुधार हो जायेगा। कुछ स्थानों पर मान सम्मान प्राप्ति भी होगी। सन्तान योग तथा सन्तान का भाग्योदय कारक योग विशेष बनता है। स्त्री के स्वास्थ्य में कुछ निर्बलता का योग है। पुरानी उधार प्राप्ति के योग बनते हैं। **मार्च २००६-** इस माह में नवीन योजना का निर्माण। मित्रों के सहयोग से रोजगार में लाभ। सम्पर्क सूत्र बढ़ेगा। सम्बंध योग। अध्यात्म कार्य योजना बनेगी। निर्माण कार्यों में कुछ मरम्मत जन्य कार्य होगा। सोचकर कार्यों में सफलता मिलेगी। पशुओं से सावधान रहें।

कन्या-टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

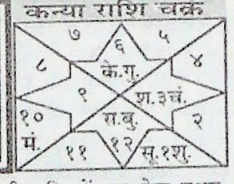

इस वर्ष आपकी राशि में गुरु-केतु प्रथम, मंगल ५वें, सूर्य-शुक्र आठवें, शनि-चन्द्र १०वें होने से वर्ष में अचल सम्पत्ति प्राप्ति का योग बनता है। कुल वृद्धि, मांगलिक कार्य तथा धंधा का विस्तार होगा। उद्योग भी बढ़ेंगे। वर्ष में काफी नयापन या परिवर्तन कारक योग बनता है। तथा यात्राएं होंगी। **अप्रैल २००५-** आर्थिक लाभ होगा। मित्र वर्ग का विशेष सहयोग। स्त्री वर्ग की ओर से नया कार्य योग बनेगा। यात्रादि योग भी है। शुभ मांगलिक कार्यों का योग। परीक्षा में सफलता मिलेगी। पशु-पक्षी के क्रय विक्रय में हानि योग बनेगा। भवन प्राप्ति योग भी है। स्त्री-मित्र द्वारा गुप्त जानकारी प्राप्त होगी। अग्नि से सावधान रहें। **मई २००५-** आर्थिक कार्यों में सफलता योग। शारीरिक थकान बढ़ने का योग बनता है। कानूनी झगड़ों से भी बचना आवश्यक है। माह के अगामी पन्द्रह दिन काफी अच्छे रहेंगे। जीवन में नयी योजना का प्रभाव बढ़ेगा। एकान्त में वार्ता करें तो लाभ होगा। **जून २००५-** इस माह में व्यवसाय अच्छा रहेगा। बेरोजगारों को रोजगार की प्राप्ति का योग भी बनेगा। स्थान परिवर्तन जैसा योग भी बनता है। धंधों व्यवसाय की गति बढ़ेगी। स्वजनों में कुछ मतभेद हो सकता है। कुछ स्थायी सम्पत्ति क्रय का योग भी बनता है। अर्थोपार्जन अच्छा होगा। स्वयं का आत्मबल बढ़ेगा। प्रतियोगिताओं में सफलता मिलेगी। **जुलाई २००५-** इस माह में शत्रु पक्ष हावी रहेगा। राजकीय कार्यों में उतार चढ़ाव आयेगा। धार्मिक कृत्यों की भागीदारी बढ़ेगी। कुछ वर्गों में विवाद होगा। आपको भी मतभेद में दलाली से हानि होगी। कृषि कार्य में अच्छा लाभ होगा। मनोबल बढ़ेगा। कुछ असामाजिक कार्यों के प्रति सामाजिक दबाव भी बढ़ेगा। **अगस्त २००५-** इस माह में स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। कुछ स्थानों की यात्रा में भी अपमान होगा। परिवार में शोकाकुल वातावरण भी बन सकता है। औषधी क्रय में व्यय अधिक होगा। शत्रु पक्ष अनेक रुकावटें तथा पारिवारिक बाधाएं उत्पन्न करेंगे। **सितम्बर २००५-** इस माह में शत्रु पक्ष का भय कम होगा। स्त्री-पक्ष द्वारा बतायी गयी तरकीब से स्वास्थ्य लाभ एवं आर्थिक लाभ होगा। राजनैतिक कार्यों में अभिवृद्धि होगी। परिजनों का सहयोग मिलने से पुराने रुके हुए कार्यों में भी अभिवृद्धि यानि बाधाओं का योग है। शान्त रहकर यह माह व्यतीत करें। विष भय भी है। **अक्टूबर २००५-** व्यवसाय-धंधों में सुधार होगा। स्वास्थ्य भी अनुकूल रहेगा। मांगलिक योग-सम्बंध पुत्र प्राप्ति उत्सव या देशाटन या आध्यात्मिक कार्यक्रम का योग बनता है। मित्र वर्ग से मधुर व्यवहार रहेगा। वाहन प्राप्ति का योग भी बनता है। **नवम्बर २००५-** व्यापार में अच्छा संचालन। कुछ विदेशी कम्पनियों का आमन्त्रण तथा एजेंसी प्राप्ति जैसा योग बनेगा। शत्रु पक्ष से अग्नि काण्ड का भय सावधान रहें। सन्तान पक्ष से सुख की प्राप्ति का योग बनता है। रोजगार के अवसर भी बनेंगे। **दिसम्बर २००५-** इस माह में भूमि-भवन क्रय-विक्रय का योग बनता है। निर्माण कार्य, गृह प्रवेश कार्य, अध्ययन में उच्च उपाधि प्राप्ति तथा तकनीकि कार्य में अभिवृद्धि योग बनता है। परिवार में मान सम्मान की विशेष प्राप्ति तथा वाहन योग भी है। **जनवरी २००६-** इस माह में राजनैतिक हलचलें बढ़ेंगी। कुछ पुराना विवाद बढ़ेगा। स्वास्थ्य में भी गड़बड़ी का योग। घर में चोरी का भय। स्त्री-पक्ष के विशेष सहयोग से सफलता मिलेगी। **फरवरी २००६-** इस माह में नवीन कार्यों के लिए धन का व्यय नहीं करें। भूमि भवन के मामलों में कठिनाई आयेगी। भूकम्प से भवन की क्षति योग। सावधान रहें। रक्त विकार तथा अन्य अपराधिक मामलों का झंझट बनेगा। मन उदास व अशान्त रहेगा। **मार्च २००६-** इस माह में ग्रह गतिशीलता के कारण पारिवारिक वातावरण दूषित होने का योग बनता है। व्यापारिक कार्य तथा राजकीय कार्यों में गति बढ़ेगी। आर्थिक लाभ अच्छा होगा। किसी अच्छे पर्यटन की यात्रा भी होगी। स्त्री-पक्ष से धन प्राप्ति तथा मान प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तुला-रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते

तुला राशि चक्र

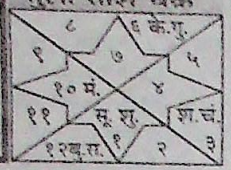

इस वर्ष ग्रहयोग से मंगल चौथा, बुध-राहु छठा, सूर्य-शुक्र सातवें, चन्द्र-शनि नौवें, तथा केतु-गुरु १२वें होना कार्यों में काफी परिवर्तन कारक योग बनेंगे। शान्ति में अशांति का वातावरण बनेगा। पारिवारिक भूमि विवाद कोर्ट-कचहरी तक पहुंच सकता है। आप स्वांस, दमा एवं नैत्र रोग से परेशान होंगे। मांगलिक कार्यों में खर्चा ज्यादा होगा। यात्राएं ज्यादा होंगी। वर्ष सामान्य है। **अप्रेल २००५-** इस माह में मंगल ग्रह के कारण घर में चिड़चिड़ा-पन छाया रहेगा। लेकिन व्यवसाय धंधा अच्छा चलेगा। किसी नये व्यक्ति से भेंट (परिचय) होगा। स्त्री-पक्ष से कुछ निर्देश मिलेंगे उनकी पालना से लाभ होगा। आर्थिक लाभ ठीक होगा। राजकीय कार्यों में विशेष भाग-दौड़ रहेगी। वाहन क्रय एवं विक्रय का योग है। **मई २००५-** इस माह में भी व्यवसाय धंधा प्रगति पर रहेगा। नयी कम्पनी से भेंट-व्यवहार तथा व्यापार उन्नयन की धारणा बनेगी। विवाद जनक वातावरण में मौन धारण हितकर रहेगा। कुछ नये स्थानों की यात्राएं होंगी। आत्म-बल बढ़ेगा। कुछ नया काम होगा। **जून २००५-** परिश्रम जितना फल प्राप्त होना सम्भव नहीं है। कुछ वर्ग आपको उत्तेजित कर सकते हैं। निर्यंत्रण रखने में ही लाभ है। स्वयं के निर्णय पर ही इस माह में कार्य सम्पादन करें तो अच्छा है। पुत्र-पुत्रियों के कारण चिन्ता बनेगी। उदर पीड़ा का योग भी है। **जुलाई २००५-** इस माह में शत्रु पक्ष प्रबल होगा। स्त्री के स्वास्थ्य में कमजोरी आयेगी। व्यापारिक लेन-देन अच्छे चलेंगे। होटल वालों को इस माह में हानि का योग बनता है। प्रकाशक-बुक सेलर लाभ प्राप्त करेंगे। घर में उत्सव आदि का शुभ योग भी बनेगा। **अगस्त २००५-** इस माह में राजकीय कार्यों में लाभार्जन होगा। कुछ पारिवारिक घटकों से नयी सूचना प्राप्ति योग बनते हैं। मित्र वर्ग भी तत्पर रहकर कार्य सम्पादन करायेंगे। माता-पिता का स्वास्थ्य नरम होगा। बाहक द्वारा नवीन समाचारों की प्राप्ति होगी। **सितम्बर २००५-** इस माह में सामाजिक दायित्व बढ़ेंगे। कुछ वर्ग आपको परेशान भी करेंगे। देर रात्रि तक भ्रमण नहीं करें तो अच्छा रहेगा। अनायास हानि से बचें। रोजगार प्राप्ति के योग बनेंगे। सहयोगी वर्ग आपका मनोबल बढ़ायेंगे। पशुओं से सावधान। **अक्टूबर २००५-** इस माह में आपके ही मित्र अफवाह फैलाकर मान सम्मान घटायेंगे। स्वयं को भयभीत समझेंगे। श्री हनुमान चालीसा के १०पाठ करना हितकर रहेगा। धार्मिक यात्रा योग भी बनता है। आय के साधन समान रहेंगे। ससुराल पक्ष से कुछ संकेत भाग्योदय कारक मिलेंगे। भूमि क्रय का योग बनता है। **नवम्बर २००५-** इस माह में पारिवारिक एवं सामाजिक तनाव बना रहेगा। राजकीय कार्यों में अच्छा लाभ होगा। मित्र वर्ग सहयोग देंगे। मानसिक चिन्ता न्यून होगी। स्वास्थ्य नरम रहेगा। व्यापारिक लेन-देन में अड़चनें आयेंगी। श्री दुर्गासप्तशती का पाठ अनिवार्य है। अन्य अपरिचित सज्जनों का संग नहीं करें। लम्बी यात्राएं नहीं करें। **दिसम्बर २००५-** इस माह में भाग्य काफी परिवर्तन करायेगा। कुछ नवीन स्थानों का दर्शन-तीर्थाटन योग बनता है। माता-पिता का स्वास्थ्य नरम रहेगा- भवन निर्माण योग, तथा रोजगार प्राप्ति का योग भी बनता है। आर्थिक तनाव के साथ भी खर्चा बढ़ता जाएगा। मन में अशांति बनी रहेगी। खाद्यान्न में लाभ भी होगा। **जनवरी २००६-** इस माह में आपके उत्साह में कमी आएगी। कुछ शत्रु आपको भगाने की भी चेष्टा करेंगे। व्यापारिक कार्य अच्छे संचालित होंगे। उद्वेग एवं मानसिकता की स्थिति यथावत रहेगी। धार्मिक आयोजन का योग भी बनता है। **फरवरी २००६-** इस माह में आपका स्वास्थ्य नरम रहेगा। धंधा रोजगार यथावत गतिशील रहेगा। बाहरी यात्रा या रोजगार प्राप्ति का अवसर भी बनेगा। पारिवारिक कलह होने का योग बनता है। ऋणादि से मुक्त होने का योग भी है। आय ठीक होगी। **मार्च २००६-** इस माह में वाहन चोट का योग। सावधान रहें! माता-पिता को भी अचानक कष्ट होगा। शत्रु पक्ष बढ़ता रहेगा। भूमि भवन निर्माण योग अच्छे बनते हैं। बच्चों का भाग्योदय होगा। राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी। भ्रमण योग उत्तम है। यातायात का साधन क्रय योग भी बनता है।

वृश्चिक-तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

वृश्चिक राशि चक्र

इस वर्ष आपके ग्रहयोग से मंगल ३रे, राहु-बुध पांचवें, सूर्य-शुक्र छठे, शनि-चन्द्र आठवें, गुरु व केतु ग्यारहवें तथा २५ मई तक शनि ढैया लघुकल्याणी का निवारण स्वत: होगा। २७ सितम्बर को गुरू ग्रह तुला में १२वां आएगा। जो खर्चा कारक योग करता है। शनि-चन्द्र यात्रा में बाधक। मंगल पारिवारिक बाधा। सूर्य-शुक्र शत्रु पक्ष से गुप्त बाधा, राहु-बुध पांचवां होना अध्ययन में बाधक योग बनाता है। इस माह में उतरती शनि लघु कल्याणी ढैया भय और प्रभाव दोनों का कारक रहेगा। राजकीय कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक कार्यों में लाभ प्राप्ति के साथ नया कारोबार का योग बनता है। सामाजिक दायित्व बढ़ेंगे। कुछ वर्ग विशेष सहयोग भी देंगे। त्रुटि पूर्ण कार्यों में सुधार का योग बनता है। पशुओं से सावधान रहें। **मई २००५-** इस माह में उदर पीड़ा जैसा रोग, अर्थोपार्जन में बाधा गुप्त शत्रुओं द्वारा तनाव युक्त वातावरण बनेगा। स्थान परिवर्तन का योग भी बनता है। दायित्व बढ़ सकते हैं। मान सम्मान प्राप्ति भी होगी। रचनात्मक, सृजनात्मक कार्यों में प्रगति होगी। **जून २००५-** इस माह में सम्पत्ति विवाद, घरेलू विवाद बढ़ेगा। परेशानियों के कारण चिन्ता युक्त रहोगे। पारिवारिक कार्यों में भी विवाद बढ़ेगा। स्वजन विमुख रहेंगे। भाग-दौड़ एवं परेशानियां बनी रहेंगी। स्थान परिवर्तन योग है। धंधा अच्छा चलेगा। **जुलाई २००५-** इस माह में विवाद ग्रस्त वार्ताओं से विजय प्राप्त करेंगे। राजनैतिक कार्यों में मान बढ़ेगा। किसी पुस्तक का प्रकाशन या सम्पादन का योग बनता है। मित्र वर्ग कुछ सहयोग देंगे। आप पूर्वोत्तर प्रान्तों की यात्रा में भी अर्थ लाभ तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। **अगस्त २००५-** इस माह में साहसिक कार्य करने से मान सम्मान में विशेष रुचि बढ़ेगी। सन्तान का भाग्योदय योग बनता है। पारिवारिक कार्यों में भी शान्ति मिलेगी। कुछ लोग आपको सत्कार प्रदान कर अपना गौरव समझेंगे। राजकीय कार्यों में भी सफलता मिलेगी। **सितम्बर २००५-** इस माह में सामाजिक चिन्तन बढ़ेगा। कार्यों का मूल्यांकन मान सम्मान से होगा। कुछ स्थानों पर सम्मेलनों का भी आयोजन करते हुए साहसिक कार्य करेंगे। आर्थिक काम भी होगा। सम्पत्ति योग भी बनता है। लेन-देन अच्छे रहेंगे। **अक्टूबर २००५-** इस माह में मानसिक हर्षोल्लास से मन में प्रसन्नता रहेगी। समाज कार्य कर्त्ताओं के रूप में अच्छे मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। कुछ वर्ग अपका अनुकरण भी करेंगे। रचनात्मक प्रवृत्ति बढ़ेगी। रिश्तेदारों से आपको मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। **नवम्बर २००५-** इस माह में शत्रु वर्ग आपको अचानक कपट पूर्ण व्यवहार से हानि पहुंचाएंगे। सावधान- बजरंग बाण का पाठ करें। मनोबल में गिरावट का योग, अचानक रोग, नैत्र पीड़ा का प्रभाव। रक्त-विकार योग भी बनता है। लम्बी यात्राएं नहीं करें। **दिसम्बर २००५-** इस माह में अनावश्य व्यय का योग बनता है। परिवार में नया कार्य, अशुभ कार्य, घटना तथा वाद-विवाद भी हो सकता है। किसी नवीन व्यक्ति के सम्पर्क से समस्याओं का समाधान भी होगा। वाहन क्रय योग भी बनता है। पशुओं से सावधान। **जनवरी २००६-** यह माह उत्तम रहेगा। कुछ स्थानों में धार्मिक आयोजनों का खर्चा भी होगा तथा प्राप्ति योग भी बनेगा। रोजगार प्राप्ति के अच्छे अवसर बनेंगे। राजनैतिक हलचलों का भी लाभ प्राप्त कर सकेंगे। राजकीय कार्यों से सम्मान मिलेगा। **फरवरी २००६-** इस माह में अच्छे लोगों से सम्पर्क सूत्र बढ़ेगा। कुछ पुराने अधूरे कार्यों का समाधान भी होगा। विवेकशीलता के कारण प्रतियोगिता में भी सफलता का योग है। कुछ वर्ग आपको सम्मान की दृष्टि से अनुकरणीय भी मानेंगे। चोट का भय है। **मार्च २००६-** इस माह में व्यापारिक कार्यों का लेन-देन हितकर रहेगा। राजनैतिक काम, प्रतियोगिता में, परीक्षा में सफलता तथा विविध उत्सवों का काम मिलेगा। पुराने विवाद में विजय का योग भी बनता है। सामाजिक कार्यों में सम्मान मिलेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

धनु-ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे

धनु राशि चक्र

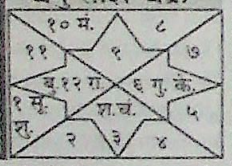

इस वर्ष आपकी राशि में मंगल २रा, उच्च राशि में बुध-राहु चौथे, सूर्य-शुक्र पांचवे, शनि-चन्द्र सातवें, गुरू-केतु दसवें भाव में बैठकर आपकी कार्यशाला में काफी परिवर्तन कारक रहेंगे। तारीख २५-५-२००५ से शनि लघु कल्याणी ढैया भी चलेगा। इसमें वाहन द्वारा भय योग बनेगा। किसी भी नवीन स्थान में व्यवसाय का अच्छा नया योग बनेगा। पारिवारिक कलह रहेंगे। रोगोपद्रव बढ़ेंगे। विवाद जैसे घटक बनेंगे। **अप्रेल २००५-** आपके मनोबल में वृद्धि आयेगी। कार्य साधना में मन भी बनेगा। अर्थ प्राप्ति का योग बनेगा। राजकीय कार्यों में काफी लाभदायक योग बनेगा। स्त्री-पक्ष द्वारा वांछित सहयोग मिलेगा। मांगलिक कार्य होंगे। किसी भी नये सदस्य का परिवार में आगमन होगा। **मई २००५-** इस माह में व्यवसाय में नवीन परिवर्तन योग है। स्वास्थ्य में भी सुधार होगा। कल्याणी ढैया माह के उत्तरार्द्ध में बाधक बनेगा। कोई शोक जन्य घटना बनेगी। प्रभावशाली व्यक्ति के जन्म के साथ आपका भी उसकी जयंती पर सम्मान बढ़ेगा। आर्थिक लाभ अच्छा होगा। **जून २००५-** इस माह में अचानक रोगोपद्रव का योग बनेगा। कोई नयी योजना मिलेगी। एजेंसी जैसा कार्य भी होगा। विविध स्थानों की यात्राएं होंगी। राजकीय व्यवस्था अथवा कार्य साधना में बाधाएं। नकारात्मक भावनाएं बढ़ेंगी। किसी भी स्त्री द्वारा अपमानित भी होंगे। **जुलाई २००५-** इस माह में विवाद योग बनेंगे। कुछ व्यक्ति जोकि सम्बंधी भी हैं, कार्य में बाधक बनेंगे। वैचारिक भावनाएं काफी अस्थिर रहेंगी। व्यवसाय नया नहीं करें। इस माह में यथावत् स्थिति रखें। महामृत्युंजय जप की साधना करें तो लाभ होगा। **अगस्त २००५-** इस माह में स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। किसी भी स्त्री द्वारा आर्थिक लाभ का योग बनता है। व्यापार कार्य में भी लाभ होगा। नौकरी व्यवसाय जैसा योग भी बनता है। मानसिकता अच्छी बनेगी। विवाद जन्य मामलों में सुधार होगा। कुछ वर्गों में वर्चस्व बढ़ेगा। **सितम्बर २००५-** इस माह में घरेलू कार्य क्षमता बढ़ेगी। घर में नये सदस्य(बच्चा-बच्ची) का आगमन होगा। खुशियां भी रहेंगी। यात्रा योग भी बनता है। पारिवारिक घटक कुछ उदासीनता की बातें करेंगे। व्यवसाय सम्पर्क तथा व्यवहार में अभिवृद्धि का योग है। **अक्टूबर २००५-** इस माह में क्रोधवेश के कारण बने बनाए कार्य में विफलता मिलेगी। प्रातियोगिता कार्यक्रम में हिस्से की भावना बनेगी लेकिन अचानक विवाद से कार्य अस्थिर हो जायेगा। स्थान परिवर्तन का योग भी बनता है। पुराने विवादों के कारण आपको मानसिक अशान्ति होगी। चिन्तन बढ़ेगा। **नवम्बर २००५-** इस माह में शारीरिक अस्वस्थता, व्यापारिक कार्यों में बाधाएं, विशेष कार्य से आंशिक आर्थिक लाभ। शत्रु तथा मनोबल की स्थिति सुधरेगी। किसी पशु द्वारा चोट का भय रहेगा। स्त्री तथा सन्तान पक्ष में भी रोगोपद्रव रहेगा। भूमि भवन का योग भी बनेगा। **दिसम्बर २००५-** इस माह में स्वास्थ्य सुधार होगा। आय-व्यवसाय द्वारा बनेगी। राजकीय कार्यों में बाधाएं लेकिन वर्चस्व के कारण लाभ होगा। उच्च वर्ग से सम्पर्क सूत्र बढ़ेगा। कानूनी कार्यों में सफलता मिलेगी। वाहन प्राप्ति योग भी बनता है। जल से सावधान। **जनवरी २००६-** इस माह में उच्चाटन बना रहेगा। कार्यों में भी अवरोध बनेगा। नवीन कार्य योजना का विशेष योग, आय भी बढ़ेगी। उत्सुकता से यात्राएं भी करेंगे। पारिवारिक कार्यों में भी सफलता योग। अचानक कुछ स्थानों पर विवाद लेकिन विजय आपकी ही होगी। **फरवरी २००६-** इस माह में राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी। आर्थिक लाभ भी होगा। रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। प्रगतिशील कार्य बनेंगे। रचनात्मक सृजनशीलता का योग, मान सम्मान प्राप्ति का योग भी है। विदेशी यात्रा का योग। मांगलिक खर्चा होगा। ऐजेंसी प्राप्ति का योग भी। **मार्च २००६-** इस माह में भाई-बंधुओं का सहयोग रहेगा। धंधा भी बढ़ेगा। कानूनी कार्यों में सफलता का योग। आत्म विश्वास बढ़ेगा। राजनैतिक लाभ प्राप्ति का अवसर मिलेगा। जमीन-जायदाद सम्बंधी उलझनें दूर होंगी। किसी कम्पनी से पुरस्कार प्राप्ति का योग भी बनता है।

मकर-भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी

मकर राशि चक्र

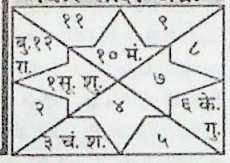

इस वर्ष आपकी राशि में लग्न में मंगल उच्च का, बुध-राहु ३रे, सूर्य-शुक्र ४थे, चन्द्र-शनि ६ठे, गुरु-केतु ९वे भाव में स्थित होने से वर्ष में विजय कारक तथा सफलता दायक योग बनेंगे। पदोन्नति का योग भी है। बेरोजगारों को रोजगार का अवसर भी मिलेगा। २७ सितम्बर से गुरु दसवां चल अचल सम्पत्ति में वृद्धि करेगा। २५ मई से शनि सातवां मांगलिक कार्य तथा भाग्योदय कारक होगा। **अप्रेल २००५-** इस माह में व्यापारिक तथा पारिवारिक कार्यों में लाभ होगा। मनोबल बढ़ेगा। अर्थ की तंगी का समाधान होगा। नवीन व्यवसाय की जिज्ञासा बढ़ेगी। कार्यों में प्रगति का योग बनता है। स्त्री तथा सन्तान-बीमार रहने का योग बनता है। वाहन से आप सावधान रहें। **मई २००५-** इस माह में मित्रों का सहयोग। काव्य कला में सम्मान योग। पारिवारिक मामलों में बढ़ावा, कार्य-भार बढ़ेगा। किसी नये स्थान में आर्थिक लाभ बनता है। किसी को टोका-टाकी नहीं करें तो अच्छा रहेगा। **जून २००५-** सामाजिक कार्यों में मन उदासीन होगा। किसी स्त्री-पक्ष से आर्थिक लाभ जैसी वार्ताएं होंगी। मांगलिक खर्चा भी बढ़ेगा। मन-मुटाव जैसी स्थिति बनेगी। पारिश्रमिक कार्यों का विशेष लाभ नहीं, चिंता का योग बनेगा। अशुभ कार्य योग है। बजरंग बाण का ११०८ पाठ करें। **जुलाई २००५-** इस माह में कार्य बढ़ेगा। आर्थिक लाभ भी अच्छा होगा। अपव्यय से बचना चाहिए। पुराने सम्बंधियों से कोई घटना का एक आदर्श मिलेगा। उसका अनुकरण भाग्योदय में सहायक होगा। किसी सन्त के दर्शन का योग भी बनता है। सन्तान का सहयोग मिलेगा। **अगस्त २००५-** इस माह में स्वास्थ्य में कुछ गड़बड़ रहेगी। पेट में कुछ कीटाणुओं का भय बनेगा। समय रहते औषधि सेवन करना है। खान-पान, रहन-सहन पर विशेष ध्यान देना होगा। रोजगार प्राप्ति का योग बनता है। यात्रा योग अच्छा बनता है। पशुओं से भय रहेगा। **सितम्बर २००५-** आपके मित्र वर्ग सहयोग देंगे। रिश्तेदारों से लाभ मिलेगा। मानसिक शान्ति मिलेगी। नवीन व्यवसाय का योग बनेगा। कार्यों में प्रगति, रचनात्मक साहित्य बढ़ेगा। सृजनात्मक कार्य होगा। आत्म विश्वास में वृद्धि होगी। अर्थोपार्जन अच्छा होगा। **अक्टूबर २००५-** स्वास्थ्य की दृष्टि से यह माह अच्छा होगा। नवीन मित्र वर्गों के सहयोग से मित्रवत् कार्य सफल होगा। वाहन से भय होगा। अनेच्छिक कार्यों का भी योग तथा सफलता मिलने से विविध कार्यों में हस्तक्षेप एवम् आध्यात्मिक आयोजन कराने का योग बनता है। गिरने या चोट का योग भी है। **नवम्बर २००५-** इस माह में शत्रु पक्ष निर्बल होंगे। मित्रों के सहयोग से कार्य लाभ। डॉक्टरों जैसा योग बनता है। विद्या लाभ अच्छा। मान-सम्मान प्राप्ति का अवसर बनेगा। सन्तान का भी यथा योग्य सहयोग मिलेगा। वाद-विवाद में विजय का योग है। **दिसम्बर २००५-** इस माह में आय के साधन बढ़ेंगे। पुराने भवन जमीन जायदाद सम्बंधी लाभ होगा। विवादों के मामलों में विजय होगी। साहित्यिक सेवाओं में आपका आना शोभनीय होगा। शत्रु पक्ष हार मानेंगे। मांगलिक कार्यों का आयोजन होगा। **जनवरी २००६-** इस माह में सन्तान पक्ष को लाभ मिलेगा। मन प्रसन्नचित होगा। धार्मिक उत्सवों का आयोजन भी होगा। अच्छे तथा उच्च वर्ग के लोगों से सम्पर्क बढ़ेगा। एवं रचित रचनाओं के विशेष प्रकाशन से आर्थिक लाभ होगा। वाहन प्राप्ति का योग भी है। **फरवरी २००६-** इस माह में आत्म-बल बढ़ेगा। समाज व परिवार में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। व्यवसाय में अभिवृद्धि होगी। स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। विदेशी यात्रा अथवा अर्थोपार्जन हेतु जाने का योग है। माता-पिता का आशीर्वाद मिलेगा। स्त्री पक्ष द्वारा भी सम्मान प्राप्ति। **मार्च २००६-** इस माह में रोगोपद्रव तथा धन का अपव्यय होगा। आय-व्यय में समानता रहेगी। यात्रा आदि में फालतू खर्चा होगा। फलस्वरूप आर्थिक तंगी आ सकती है। घरेलू कार्यों में विशेष लाभ होगा। समता यथावत रहेगी। कपट से सावधान रहें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कुंभ-गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

कुंभ राशि चक्र

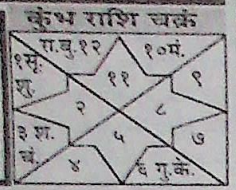

इस वर्ष आपकी राशि में ग्रह वर्षारंभ में राहु-बुध २रे, सूर्य-शुक्र ३रे, शनि-चन्द्र ५वे, गुरु-केतु ६ठे तथा मंगल ग्रह १२वां रहेगा। इन ग्रहों का वर्ष पर्यन्त संचलन के कारण स्त्री पक्ष का इस वर्ष योगदान मिलेगा। प्रशासनिक यद प्राप्ति का योग तथा कोर्ट-कचहरी के मामलों में विजय होगी। अग्नि जन्य उपकरणों से सावधान। मांगलिक कार्य होंगे। उच्च पद जन्य सेवा से परिवार में खुशी छायी रहेगी। इस वर्ष २७ सितम्बर२००५ से स्त्री पक्ष द्वारा विशेष योगदान मिलेगा। यात्राएं होंगी। **अप्रेल २००५-** इस माह में स्वास्थ्य समस्या रहेगी। घरेलू कार्य बढ़ेंगे। कृषि कार्य में अच्छा लाभ मिलेगा। जमीन जायदाद जन्य विवाद का योग तथा मानसिक अशान्ति बनेगी। बिगड़े हुए कार्यों में भी मित्रों के सहयोग से सफलता मिलेगी। धार्मिक यात्राएं तथा शुभ कार्य भी आयोजित होंगे। **मई २००५-** इस माह में सन्तान के स्वास्थ्य में दुर्बलता, रोगादि का भय। खर्चा अधिक, आय न्यून तथा विविध कार्यों में भी उदासीनता बनी रहेगी। राजकीय कार्यों में भी कुछ गड़बड़ रहेगी। उधार लेन-देन नहीं करें तथा पारिवारिक कार्यों में दायित्व बढ़ेगा। विष भय का योग है। **जून २००५-** इस माह में क्रोधावेश बढ़ेगा। मन में खिन्नता रहेगी। कुछ अश्लील हरकतों के माध्यम से शारिरिक पीड़ा का योग बनता है। रिश्तेदारों से कुछ कहा सुनी होने से मानवीय कार्यों में रुकावट आयेगी। धंधा-व्यवसाय ठीक चलेगा। पूर्वोत्तर में यात्राएं होंगी। **जुलाई २००५-** इस माह में पुराना विवाद सुलझेगा। अन्याय पक्ष से भी न्याय की ओर आकर्षण बढ़ेगा। आत्म-बल में भी धर्म बना रहेगा। सांसारिक कार्यों से मन में उदासीनता का योग। यात्रा आदि से चोट का भय रहेगा। सामाजिक दायित्वों से मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। **अगस्त २००५-** इस माह में उच्च वर्ग तथा उच्चाधिकारियों से सम्पर्क बढ़ेगा। जिससे मान-प्रतिष्ठा आपकी बढ़ेगी। ससुराल पक्ष से आय होगी। व्यवसाय परिवर्तन या अन्यत्र स्थानान्तरण करने का योग बनता है। आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। यात्रा योग। **सितम्बर २००५-** इस माह में सगे सम्बंधियों से तनाव रहेगा। राज्य सरकार द्वारा कुछ आर्थिक सहयोग प्रदान करने का योग बनता है। वाणी में कठोरता का उपयोग नहीं करें। मानसिक शान्ति भंग होगी। सन्तान पक्ष से आर्थिक लाभ मिलेगा। विष योग भी। **अक्टूबर २००५-** इस माह में आय के कार्यों में रुकावटें होंगी। न्यायालय में भी विफलता का योग बनेगा। निजी व्यक्तियों द्वारा सम्मान में भी आपत्तियां प्रस्तुत होंगी। व्यवहारिक कार्यों में भी मन नहीं लगेगा। सुन्दर काण्ड के २४ पाठ करना हितकर रहेगा। **नवम्बर २००५-** इस माह में घरेलू कार्यों में सुधार होगा। रहन-सहन, खाना-पीना क्रियाओं में सुधार होगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। उधोग-धंधों में धीरे-धीरे सुधार का योग बनेगा। रचनात्मक कार्यों में अभिवृद्धि होगी। रोजगार प्राप्ति केअच्छे योग बनेंगे। **दिसम्बर २००५-** इस माह में नवीन कार्य का योग है, तथा सगे सम्बंधी भी मदद करेंगे। पुरस्कार प्राप्ति की घोषणा का योग भी बनता है। वांछित कार्यों में लाभ मिलेगा। व्यापारिक कार्यों में अच्छा लाभ मिलेगा। मांगलिक कार्यों का योग भी बनता है। **जनवरी २००६-** इस माह में आपका प्रभाव बढ़ेगा। चिन्तनशील कार्यों का विशेष योग तथा सफलता योगे है। परिवार एवं समाज में इज्जत की वृद्धि होगी। शत्रु वर्ग भयभीत रहेगा। व्यापारिक कार्यों में अच्छा लाभ तथा शेयर मार्केटिंग में भी उत्तरार्द्ध समय अनुकूल रहेगा। **फरवरी २००६-** इस माह में रोगादि का उपद्रव बढ़ेगा। कुछ लोग मान-हानि का दावा भी आप पर करेंगे। इस माह में मौन-धारण करते हुए अपने पापों को बताना पड़ेगा। परिवार में अशुभ घटना का योग भी बनता है। विवाद में अंग-भंग का योग बनता है। **मार्च २००६-** इस माह में तनाव के कारण आप मानसिकता के रोगी बन सकते हैं। रक्तचाप (बी.पी.) का योग भी अचानक बनेगा। स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखें। व्यापारिक कार्यों में भी रुकावटें आयेंगी। सामाजिक तनाव बढ़ेगा। श्री दुर्गा सप्तशती का पाठ करना चाहिए।

मीन-दी, दू, श, झ, ञ, दे, दो, च, ची

मीन राशि चक्र

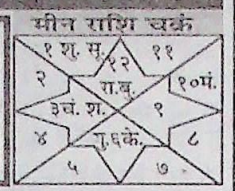

इस वर्ष आरंभ में आपकी राशि में ग्रह स्थिति राहु-बुध लग्न में, शुक्र सूर्य २रे, शनि-चन्द्र ४थे, गुरु-केतु सातवें तथा मंगल ११वें भाग में स्थित होने से तथा २५ मई से लघु कल्याणी ढैया वर्ष पर्यन्त रहेगी। जिससे बक्री भाव तथा अस्त योग यथावत रहेंगे। आपको वर्ष में पारिवारिक बाधाएं ज्यादा रहेंगी, तथा पत्नि के रोगादि का भय रहेगा। भूमि भवन तथा सम्मान प्राप्ति जन्य घटनाएं घटेंगी। यात्राएं ज्यादा होंगी। कपटी से सावधान। **अप्रेल २००५-** इस माह में पारिवारिक एवं गृहस्थी कार्यों में अधिक खर्चा होगा। स्वयं के स्वास्थ्य में गड़बड़ का योग है। अधिक परिश्रम करने पर भी सामान्य लाभ मिलेगा। गृहस्थी कार्यों में जिम्मेदारियां बढ़ेंगी। राजकीय कार्यों में रुकावट होगी। कृषि कार्यों में लाभ बनेगा। **मई २००५-** इस माह में परिवार जनों से वाद-विवाद बढ़ेगा। मित्रों के सहयोग से वातावरण शुद्ध शान्त बनेगा। रक्त-चाप (बी.पी.) जैसे रोगों से सावधान रहें, यानि औषधि का सेवन करना शुभ रहेगा। आर्थिक सन्तुलन ठीक रहेगा। यात्राएं तथा जन-सम्पर्क योग अच्छा है। **जून २००५-** इस माह में काफी कार्य इच्छानुसार सम्पन्न होंगे। राज्यादि कार्यों में मित्र वर्ग भाग-दौड़ करेंगे। सफलता के आसार हैं। आन्तरिक घुटनशीलता बनकर मानसिकता को प्रभावित करेगी। जन-जन में वर्चस्व बढ़ेगा। माता-पिता का स्वास्थ्य सुधरेगा। मांगलिक कार्यों में खर्चा बढ़ेगा। **जुलाई २००५-** इस माह में घरेलू कार्यों में वृद्धि होगी। स्वजनों में कुछ विवाद योग बनेगा। यात्रादि का शुभ संयोग के कारण वर्चस्व भी बढ़ेगा। आर्थिक लाभ अच्छा होगा। पारिवारिक कार्यों में कुछ तनाव भी बनने का योग शनि के कारण है। आर्थिक सन्तुलन यथावत बना रहेगा। **अगस्त २००५-** इस माह में अत्यधिक कार्य व्यस्तता के कारण भाग-दौड़ ज्यादा रहेगी। परिवार में नये सदस्य का आगमन होगा। कृषि जन्य कार्यों में लाभ होगा। किसी महापुरुष के दर्शन से भी भाग्योदय होगा। मानसिक शान्ति मिलेगी। मांगलिक कार्य भी होंगे। **सितम्बर २००५-** इस माह में व्यापार आदि में तरक्की होगी। सन्तान का भाग्योदय तथा रोजगार का अवसर मिलेगा। व्यापार के कार्यों में सांझा योग भी बनता है। सन्तान पक्ष तथा मित्र वर्ग के सहयोग से कीर्ति प्रतिष्ठा में वृद्धि का योग बनता है। जल से भय है। **अक्टूबर २००५-** इस माह में शत्रु परास्त होंगे। विवाद जन्य वार्ता में विजय योग। विदेशी यात्रा अथवा रोजगार का अवसर प्राप्ति का विशेष योग बनता है। स्त्री पक्ष से कुछ कष्टदायी योग भी बनेंगे। मांगलिक कार्यों में भी रुकावटें आयेंगी। विष बाधा योग। **नवम्बर २००५-** इस माह में स्वयं की गलती से सब लोग (परिवार वालों से) विमुखता होगी। क्लेश बढ़ेगा। अशान्ति फैलेगी। कोर्ट-कचहरी जैसा मामला बन सकता है। अनावश्यक क्रोध के कारण चोट आदि भी। उपाय महामृत्युंजय का जप सविधि करें। **दिसम्बर २००५-** इस माह में परिवारिक स्थिति सुधरेगी। कुछ मित्र आपको विशेष योजना हेतु आमंत्रित करेंगे। राजकीय कार्यों में लाभ होगा। रोजगार का अवसर तथा मांगलिक कार्यों की प्रक्रिया में दायित्व बढ़ेगा। जमीन जायदाद प्राप्ति का योग भी बनता है। **जनवरी २००६-** इस माह में लम्बी यात्राओं का योग यानि देश-विदेश सम्बंधी घटनाएं घटेंगी। इच्छानुसार आप सम्पर्क सूत्र भी बढ़ा सकेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। सन्तान पक्ष की सेवा का विशेष योग बनता है। वाहन क्रय विक्रय का योग भी बनता है। उत्साह वर्द्धन रहेगा। गायों से सावधान। **फरवरी २००६-** इस माह में पारिवारिक सदस्यों का शुभ सहयोग मिलेगा। लेकिन ऊपर से गिरने का भय रहेगा। व्यवसाय, धंधे में नवीनता का अवसर बना हुआ है। रचनात्मक सहयोग से आप लेखक बनने के प्रयास में सफलता हासिल करेंगे। सन्तान को रोजगार प्राप्ति का योग भी बनता है। वाहन से सावधान रहें। **मार्च २००६-** इस माह में भौतिक सुविधाओं का विशेष लाभ मिलेगा। समाज व परिवार में इज्जत बढ़ेगी। वाहन क्रय का योग बनता है। कार्यक्षमता का विकास होगा। किसी स्थान की यात्रा का विशेष लाभ मिलेगा। व्यापारिक कार्यों में वृद्धि तथा संतुष्टि मिलेगी। विदेश यात्रा योग भी बनता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

सन् २००५ ई. में शनि की साढ़ेसाती और ढैया विचार

शुभ मिति भाद्रकृष्ण सप्तमी रविवार वि.सं. २०६१ दिनांक ५ सितम्बर २००४ को शनि ग्रह कर्क राशि पर संचरण करेगा। परन्तु वि.सं. २०६१ में ही १३ जनवरी २००५ को दोपहर ३।०४ सं. मि० पर वक्र गति से पुनः मिथुन राशि में प्रवेश करेंगे। जोकि दिनांक २६ मई २००५ तक मिथुन में संचरण रहेगा।

कर्क राशिस्थ शनि की साढ़े साती, ढैय्या दिनांक ५ सितम्बर २००४ से दिनांक १३ जनवरी २००५ तक की गणना

मिथुन-साढ़े साती, पाद-लौहा, उत्तरीपाद, शरीर पीड़ा, रक्त विकार, पशु-धन हानि, व्यापार हानि रोग ❖ **कर्क**-साढ़े साती, पाद-स्वर्ण, हृदय, निजीजन विरोध, शत्रु बढ़े, कलेश, रोग, वृथा व्यय ❖ **सिंह**-साढ़े साती, पाद-ताम्र, मस्तक चढ़ती, सुख-सम्पत्ति दायक, व्यापार अच्छा, सन्तति सुख, शुभ ❖ **धनु**-ढैय्या, पाद-सुवर्ण, निजि जन विरोध, कलेश, रोग, परेशानी, दुर्घटना योग ❖ **मेष**-ढैय्या, पाद-रजत, अच्छा समय रहेगा। कार्य में बढ़ोत्तरी का अवसर बनेगा। यही फल संवत् २०६२ में जब जब कर्क राशि में शनि आयेगा फल देगा। **उपाय**-शनि का दान, मंत्र, जप तथा आराधना करनी चाहिए।

इस वर्ष १३ जनवरी २००५ ई. को शनि वक्र गति से मिथुन राशि में घंटा १५ मि. ४ बजे प्रवेश करेंगे। उस समय तात्कालिक चन्द्रमा शतभिषा नक्षत्र, कुंभ राशि पर रहेगा। ता. २२ मार्च से २००५ ई. को शनि मार्गी हो जाऐगा। फलतः

(१) **मेषः**-तृतीयस्थ शनि लाभप्रद है। पठन-पाठन में सामान्य सफलता मिलेगी। प्रायः मन में चंचलता बनी रहेगी। मन में नवीन रुचि जागृत होगी। किसी शोध कार्य अथवा निर्माण कार्य में आपकी तल्लीनता प्रशंसनीय होगी। २६ मई से पुनः चतुर्थ ढैय्या शनि अशांतिप्रद बन जाएगा। स्वभाव गर्म और अशांत रहेगा। घर के अन्दर कलह, अशांति, रोग, शत्रु से परेशानी अनुभव होगा।

(२) **वृषः**-पुनः द्वितीयस्थ अंतिम साढ़ेसाती शनि कष्टप्रद होगी। किसी प्राकृतिक आपदा एवं रोग, बिमारी, चोट-चपेट से पारिवारिक जीवन अस्त-व्यस्त रहेगा। स्वजनों से वैमनस्य, आर्थिक कष्ट, मान-यश में हानि। २६ मई से पुनः तृतीयस्थ शनि शुभ है। साहस, पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। शिक्षा-परीक्षा में सफलता मिलेगी। असंतोष की भावना दूर होगी।

(३) **मिथुनः**-पुनः जन्मस्थ मध्य साढ़ेसाती शुभाशुभ मिश्रित फलकारक है। क्रमशः सभी परिस्थितियों में धीरे-धीरे सुधार दृष्टिगोचर होगा। नौकरी, व्यापार में उतार-चढ़ाव और स्थिरता बनी रहेगी। कन्या अथवा संतान के आकार जैसे मानसिक कष्ट अनुभव होगा। २६ मई से द्वितीयस्थ अंतिम साढ़ेसाती शनि पूज्य है। कभी-कभी प्रतिकूल स्थिति का अनुभव होगा। शरीर रोगग्रस्त हो सकता है। विपरीत चिन्तन धाराओं में डुबकियां लगानी पड़ेंगी। निकट संबंधी की मृत्यु भी संभव है।

(४) **कर्कः**-व्ययस्थ प्रारंभिक साढ़ेसाती अपव्ययप्रद है। अनर्गल अपव्यय से मानसिक कष्ट होगा। मन में छिपाव की भावना बलवान होगी। दूसरों की सलाह पर चलना हानिप्रद होगा। कुटुम्ब में विरोध, सज्जनों से विछोह, वैमनस्य कष्ट कारक है। २६ मई से पुनः जन्मस्थ मध्य साढ़ेसाती मध्यम फलदायी है। प्रयास करने पर बकाया रकम की प्राप्ति, शिक्षा-परीक्षा में सफलता, दौड़-धूप और यात्राओं की अधिकता होगी। कोई महत्वपूर्ण कार्यों का संपादन होगा।

(५) **सिंहः**-लाभस्थ शनि संतोषजनक लाभ करावेगा। शिक्षा-परीक्षा में सफलता, नौकरी-व्यापार में मनोनुकूल फल प्राप्ति, कानूनी विवादों में मित्र-कुटुम्बियों का अविस्मरणीय सहयोग प्राप्त होगा। भूमि-भवन, वाहन का क्रय होगा। २६ मई से पुनः व्ययस्थ प्रारंभिक साढ़ेसाती अशुभ है। जनप्रियता और सम्पत्ति की हानि होगी। नौकरी-व्यापार में अल्प लाभ होगा। कलह और रोग पीड़ा से कष्ट होगा। निरर्थक दौड़-धूप अधिक करनी पड़ेगी। अचानक कानून से भय संचार होगा।

(६) **कन्याः**-दशमस्थ शनि शुभ है। नवीन कार्यों में रुचि जागृत होगी। शरीर स्वस्थ्य रहेगा। मांगलिक कार्यों का संपादन होगा। नवीन संकल्प लेने और नया कार्य करने का सुअवसर प्राप्त होगा। धन संचय का सभी सुयोग बनेगा। २६ मई से लाभस्थ शनि शुभ कारक होने से मन में सेवा भावना की अनुराग वृद्धि होगी। शिक्षा-परीक्षा में किया गया प्रयास सार्थक होगा। साहस पुरुषार्थ की वृद्धि होगी। परन्तु स्त्री-संतान के शारीरिक पीड़ा से धन अपव्यय होगा। वाहन, शत्रु से भी सावधानी अपेक्षित है।

(७) **तुलाः**-९ वां शनि पूज्य है। अधिकतर शनिवार को रात्री में कुछ कष्ट-अनुभव होगा। मित्र और कुटुम्बियों से संबंधों में अचानक कटुता आएगी। स्वास्थ्य भी अधिकतर बाधित रहेगा। धन अपव्यय से कष्ट अनुभव होगा। संतान के अवकार्य से कष्ट और मान-हानि की संभावना है। २६ मई से पुनः १०वां शनि शुभ होने से सभी परिस्थितियों में सुधार होगा। भूमि-भवन, वाहन का लाभ होगा। महत्वपूर्ण कार्यों का संपादन होगा। वाद-विवाद में सफलता एवम् पुत्र रत्न की प्राप्ति संभव है।

(८) **वृश्चिकः**- ८वां शनि की ढैया है। इस अवधि में ऋण के लेन-देन में सावधानी बरतें। मन कुछ परेशान रहेगा। निरर्थक यात्राएं अधिक होंगी। मित्र-कुटुम्ब से अत्यधिक लगाव हानिकारक होगा। कोई नया कार्य प्रारंभ करने पर विफलता की आशंका है। २६ मई से ९वां शनि मध्यम फल कारक है। इष्ट मित्रों से अनेक उलझनों का सामना करना पड़ेगा। दौड़-धूप और यात्राओं की अधिकता होगी। पारिवारिक कलह से मानसिक कष्ट होगा। कोई महत्वपूर्ण कार्यों का सम्पादन करने के लिए समय अनुकूल है।

(९) **धनुः**- ७वां शनि पूज्य है। पार्टनरों से आपस में विवाद-पूर्ण संबंध बनेगा। परिवार में भी वाद-विवाद होगा। कार्य क्षेत्रों में अनर्गल बाधाएं उपस्थित होंगी। आर्थिक संतुलन को बनाए रखना सहज नहीं होगा। आमदनी की अपेक्षा व्यय अधिक होगा। २६ मई से ८वां शनि की ढैया है। ऐसे समय में रोजी-रोटी के लिए संघर्षशील रहना पड़ेगा। शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक तनाव बढ़ेगा। पारिवारिक जीवन में अशांति अनुभव होगी।

(१०) **मकरः**- ६ठा शनि उत्तम है। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। व्यावसायिक सफलता से मानसिक हर्ष होगा। वाद-विवाद में विजय प्राप्त होगी। राजकीय सहयोग से महत्वपूर्ण कार्यों का संपादन होगा। रचनात्मक कार्यों में वृद्धि होगी। मांगलिक कार्यों का संपादन होगा। २६ मई से ७वां शनि कण्टक कहा जाता है। अतः उधार लेन-देन में सावधानी अपेक्षित है। स्वजनों से वैमनस्य बढ़ेगा। अकल्पित कष्टों की वृद्धि होगी। चोट-चपेट, शरीर पीड़ा, नौकरी-व्यापार में हानि। संतान से कष्ट की अनुभूति होगी।

(११) **कुंभः**-५वां शनि पूज्य है। पुनरागमन परिश्रम के अनुरूप सफलता दिलाने में सहायक होगा। शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। मानसिक चिन्ता, मतिभ्रम की स्थिति से कठिनाई महसूस होगी। निरर्थक वाद-विवाद से कष्ट अनुभव होगा। २६ मई से ६ठा शनि शुभ होने से रोजी-रोजगार में कुछ सुधार होगा। बौद्धिक शक्तियों का विकास होगा। तथागत कठिनाईयों का निवारण होगा। परन्तु स्त्री-संतान को कष्ट होगा।

(१२) **मीनः**-४थे शनि का ढैया है। इस अवधि में इष्ट-मित्र, पास-पड़ोस की ओर से आपका मन प्रायः भयभीत रहेगा। शारीरिक स्वास्थ्य में भी कष्ट अनुभव होगा। आकस्मिक दुर्घटनाओं के प्रति सावधानी अपेक्षित है। नौकरी-व्यापार में हानि की संभावना है। २६ मई से पांचवां शनि शुभा-शुभ मिश्रित फलदायी है। पारिवारिक मर्यादाओं का पक्षधर बने रहना उचित होगा। आमदनी कम और खर्च की अधिकता अधिक रहेगी। कुछ नए मित्र आलोचक सिद्ध होंगे। आर्थिक स्थिति मध्यम में रहेगी। शत्रु रोग से सावधानी अपेक्षित है।

शनिकृत दोष परिहार के लिए **श्री महामृत्युंजय कवच लॉकेट एवं नवरत्न लॉकेट, मलयागिरि चंदन माला** के साथ किसी शनिवार को संध्या में धारण करें। विशेष परिस्थिति में कोई योग्य विद्वान से **श्री महामृत्युंजय जप** ५१००० कराना अपेक्षित है। संभव हो तो स्वयं शनि मंत्र- नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्, छायामार्तण्डसम्भूतं तन्नमामि शनैश्चरम्। जप कम से कम १०८ बार नियमित करना चाहिए। या शनिस्तोत्र का पाठ करना भी शांतिदायक माना जाता है। ऐसे तो श्री महामृत्युंजय कवच लॉकेट प्राण प्रतिष्ठा युक्त धारण करने से समस्त ग्रह दोष ही परिहार हो जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

साढ़े पांच बजे (प्रातः ५ बजकर ३० मिनट) के अतिरिक्त अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

नीचे दी गई सारणी द्वारा यदि आपको भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम साढ़े पांच बजे के ग्रह स्पष्टों के अलावा किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों तो आप नीचे लिखी सारणी द्वारा समुचित संस्कार करके अभिष्ट समय के ग्रह स्पष्ट कर सकते हैं। आपने **१५ अगस्त १९९६ शाम ८ बजकर ४५ मिनट का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करना है।** इसके लिए १६ अगस्त प्रातः ५-३० बजे के सूर्य स्पष्ट में से ८-४५ घंटे की गति घटायेंगे। १६ अगस्त के सूर्य स्पष्ट (३-२९-३५-४५) में से १५ अगस्त के सूर्य स्पष्ट (३-२८-३८-०४) घटा देने से २४ घंटे की गति पता चलेगी जोकि ५७।४१ कलादि प्राप्त हुई। सारणी में देखने से हमें ५७ कला के सामने ८ घंटे के नीचे हमें १९.०० मिले। इसमें ४५ मिनट की गति १।४७ कलादि जमा कर देने से हमें २०।४७ कलादि योग प्राप्त हुआ। अब ४१ विकला (५४।४१) के संस्कार समीपस्थ ४१ कला के (८।४५ घंटे) संस्कार १५ विकला जमा कर देने से हमें २१।०२ कलादि ८ घण्टे ४५ मिनट की गति प्राप्त हुई इसको १६ अगस्त साढ़े पांच के सूर्य स्पष्ट (३।२९।३५।४५) में से घटा देने से शाम **८ बजकर ४५** मिनट का सूर्य स्पष्ट ३/२९/१४/४३ राशि अंश आदि प्राप्त हुआ। इस प्रकार किसी भी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट निकाले जा सकते हैं। **मार्गी ग्रहों के किसी अन्य समय के स्पष्ट करने के लिए अगले दिन के ग्रह स्पष्ट में घटाने से प्राप्त होता है। वक्री ग्रह के लिए घटाने के स्थान पर जोड़ने से स्पष्ट होता है।**

कृपया पाठक इन (❖ को $\frac{१}{४}$) (★ को $\frac{१}{२}$) (● को $\frac{३}{४}$) पढ़ें।

५.३० बजे के ग्रह स्पष्ट में किसी दो दिनों के बीच के किसी भी समय का गृह स्पष्ट करना बहुत सरल है। इसके लिए आप बिना सारणी को उपयोग में लाए, नीचे दिए गए उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं। मार्गी और वक्री ग्रहों के स्पष्ट करने की क्रिया प्रथक-प्रथक नीचे के उदाहरणों से स्पष्ट हो जायगी। मान लीजिये **१५ अगस्त सन् १९९६ को शाम के ८ बजकर ४५ मिनट** के ग्रह स्पष्ट करने हैं।

मार्गी ग्रहों के लिए: सूर्य: १५ अग. के प्रातः ५-३० बजे का सूर्य स्पष्ट ३।२८।३८।४ है और अगले दिन १६ अगस्त के प्रातः ५-३० बजे का सूर्य स्पष्ट ३।२९।३५।४५ है। मार्गी ग्रहों के लिए अगले दिन के ग्रहस्पष्ट में से पहले दिन के ग्रह स्पष्ट घटाये जाते हैं-यहां १६ तारीख के सूर्य स्पष्ट में से १५ तारीख का सूर्य स्पष्ट घटायें:-

	रा.	अं.	क.	वि.
१६ ता. को सूर्य स्पष्ट	३	२९	३५	४५
१५ ता. के सूर्य स्पष्ट घटाएं	(-)३	२८	३८	०४
	०	०	५७	४१

अतः ५७' कला ४१'' विकला सूर्य की दैनिक गति हुई। ५७'-४१'' के विकला बनाये: ५७x६०+४१= ३४६१ विकला। सूर्य की यह गति १५ ता. के ५-३० बजे से १६ ता. के ५-३० बजे तक २४ घंटे (१४४० मि.) की है। अब अपने इष्ट समय ८ बजकर ४५ मिनट में से ५-३० बजे को घटाया तो समयान्त राल १५ घंटे १५ मिनट (९१५ मिनट) आया। अब त्रैराशिक से गणना की - १४४० मि. में सूर्य की गति ३४६१ विकला है। ९१५ मि. में सूर्य की गति=३४६१×९१५ ÷ १४४० = २१९९ विकला = २१९९÷६० कला = ३६ कला ३९ विकला ३६'३९'' इसको १५ अग. के सूर्योदय में जोड़ दें। (३-२८-३८-४)+(३६-३९)=३-२९-१४-४३ अतः १५ अगस्त की **शाम ८ बजकर १५ मिनट का सूर्य स्पष्ट ३-२९-१४-४३ बना।** इसी प्रकार अन्य सभी मार्गी ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।

वक्री ग्रहों के लिए:- शनि वक्री अतः उलटी क्रिया करनी होगी अर्थात् १५ अगस्त के शनिस्पष्ट में १६ अगस्त के शनि स्पष्ट घटाने होंगे:- १५ अगस्त के शनि स्पष्ट ११-१२-५८-२२ में से १६ अगस्त के शनि स्पष्ट ११-१२-५५-३४ को घटायें = २-४८ यह शनि की दैनिक वक्र गति हुई। २ क. ४८ वि. = १६८ विकला अतः क्रिया पूर्ववत १६८×९१५÷१४४० = १०७ वि.=१ क. ४७ वि.। १'४७'' को १५ अगस्त के शनि-स्पष्ट में से घटाया (११-१२-५८-२२)-(१-४७)=११-१२-५६-३५ अतः **१५ अगस्त को ८ बजकर ४५ मि. पर वक्री शनि स्पष्ट ११-१२-५६-३५** आया।

यदि ग्रह स्पष्ट सूर्योदय कालीन दिये हों तो ५-३० बजे के बजाय सूर्योदय काल लेकर ग्रह स्पष्ट इसी प्रकार किये जा सकते हैं। **इस प्रकार अन्य सभी ग्रहों के किसी भी समय के ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।**

दैनिक गति (२४घंटे)	गति (३०मि.) क. वि.	गति (१ घं.) क. वि.	गति (२ घं.) क. वि.	गति (३ घं.) क. वि.	गति (४ घं.) क. वि.	गति (५ घं.) क. वि.	गति (६ घं.) क. वि.	गति (७ घं.) क. वि.	गति (८ घं.) क. वि.	गति (९ घं.) क. वि.	गति (१०घं.) क. वि.	गति (११घं.) क. वि.	गति (१२घं.) क. वि.
१	०।०१ ❖	०।०२ ★	०।०५	०।०७ ★	०।१०	०।१२ ★	०।१५	०।१७ ★	०।२०	०।२२ ★	०।२५	०।२७ ★	०।३०
२	०।०२ ★	०।०५	०।१०	०।१५	०।२०	०।२५	०।३०	०।३५	०।४०	०।४५	०।५०	०।५५	१।००
३	०।०३ ●	०।०७ ★	०।१५	०।२२ ★	०।३०	०।३७ ★	०।४५	०।५२ ★	१।००	१।०७ ★	१।१५	१।२२ ★	१।३०
४	०।०५	०।१०	०।२०	०।३०	०।४०	०।५०	१।००	१।१०	१।२०	१।३०	१।४०	१।५०	२।००
५	०।०६ ❖	०।१२ ★	०।२५	०।३७ ★	०।५०	१।०२ ★	१।१५	१।२७ ★	१।४०	१।५२ ★	२।०५	२।१७ ★	२।३०
६	०।०७ ★	०।१५	०।३०	०।४५	१।००	१।१५	१।३०	१।४५	२।००	२।१५	२।३०	२।४५	३।००
७	०।०८ ●	०।१७ ★	०।३५	०।५२ ★	१।१०	१।२७ ★	१।४५	२।०२ ★	२।२०	२।३७ ★	२।५५	३।१२ ★	३।३०
८	०।१०	०।२०	०।४०	१।००	१।२०	१।४०	२।००	२।२०	२।४०	३।००	३।२०	३।४०	४।००
९	०।११ ❖	०।२२ ★	०।४५	१।०७ ★	१।३०	१।५२ ★	२।१५	२।३७ ★	३।००	३।२२ ★	३।४५	४।७ ★	४।३०
१०	०।१२ ★	०।२५	०।५०	१।१५	१।४०	२।०५	२।३०	२।५५	३।२०	३।४५	४।१०	४।३५	५।००
११	०।१३ ●	०।२७ ★	०।५५	१।२२ ★	१।५०	२।१७ ★	२।४५	३।१२ ★	३।४०	४।७ ★	४।३५	५।२ ★	५।३०
१२	०।१५	०।३०	१।००	१।३०	२।००	२।३०	३।००	३।३०	४।००	४।३०	५।००	५।३०	६।००
१३	०।१६ ❖	०।३२ ★	१।०५	१।३७ ★	२।१०	२।४२ ★	३।१५	३।४७ ★	४।२०	४।५२ ★	५।२५	५।५७ ★	६।३०
१४	०।१७ ★	०।३५	१।१०	१।४५	२।२०	२।५५	३।३०	४।०५	४।४०	५।१५	५।५०	६।२५	७।००
१५	०।१८ ●	०।३७ ★	१।१५	१।५२ ★	२।३०	३।०७ ★	३।४५	४।२२ ★	५।००	५।३७ ★	६।१५	६।५२ ★	७।३०
१६	०।२०	०।४०	१।२०	२।००	२।४०	३।२०	४।००	४।४०	५।२०	६।००	६।४०	७।२०	८।००
१७	०।२१ ❖	०।४२ ★	१।२५	२।०७ ★	२।५०	३।३२ ★	४।१५	४।५७ ★	५।४०	६।२२ ★	७।०५	७।४७ ★	८।३०
१८	०।२२ ★	०।४५	१।३०	२।१५	३।००	३।४५	४।३०	५।१५	६।००	६।४५	७।३०	८।१५	९।००
१९	०।२३ ●	०।४७ ★	१।३५	२।२२ ★	३।१०	३।५७ ★	४।४५	५।३२ ★	६।२०	७।७ ★	७।५५	८।४२ ★	९।३०
२०	०।२५	०।५०	१।४०	२।३०	३।२०	४।१०	५।००	५।५०	६।४०	७।३०	८।२०	९।१०	१०।००
२१	०।२६ ❖	०।५२ ★	१।४५	२।३७ ★	३।३०	४।२२ ★	५।१५	६।०७ ★	७।००	७।५२ ★	८।४५	९।३७ ★	१०।३०
२२	०।२७ ★	०।५५	१।५०	२।४५	३।४०	४।३५	५।३०	६।२५	७।२०	८।१५	९।१०	१०।०५	११।००
२३	०।२८ ●	०।५७ ★	१।५५	२।५२ ★	३।५०	४।४७ ★	५।४५	६।४२ ★	७।४०	८।३७ ★	९।३५	१०।३२ ★	११।३०
२४	०।३०	१।००	२।००	३।००	४।००	५।००	६।००	७।००	८।००	९।००	१०।००	११।००	१२।००
२५	०।३१ ❖	१।०२ ★	२।०५	३।०७ ★	४।१०	५।१२ ★	६।१५	७।१७ ★	८।२०	९।२२ ★	१०।२५	११।२७ ★	१२।३०
२६	०।३२ ★	१।०५	२।१०	३।१५	४।२०	५।२५	६।३०	७।३५	८।४०	९।४५	१०।५०	११।५५	१३।००
२७	०।३३ ●	१।०७ ★	२।१५	३।२२ ★	४।३०	५।३७ ★	६।४५	७।५२ ★	९।००	१०।७ ★	११।१५	१२।२२ ★	१३।३०
२८	०।३५	१।१०	२।२०	३।३०	४।४०	५।५०	७।००	८।१०	९।२०	१०।३०	११।४०	१२।५०	१४।००
२९	०।३६ ❖	१।१२ ★	२।२५	३।३७ ★	४।५०	६।०२ ★	७।१५	८।२७ ★	९।४०	१०।५२ ★	१२।५	१३।१७ ★	१४।३०
३०	०।३७ ★	१।१५	२।३०	३।४५	५।००	६।१५	७।३०	८।४५	१०।००	११।१५	१२।३०	१३।४५	१५।००

दैनिक गति (२४घंटे)	गति (३०मि.) क. वि.	गति (१ घं.) क. वि.	गति (२ घं.) क. वि.	गति (३ घं.) क. वि.	गति (४ घं.) क. वि.	गति (५ घं.) क. वि.	गति (६ घं.) क. वि.	गति (७ घं.) क. वि.	गति (८ घं.) क. वि.	गति (९घं.) क. वि.	गति (१०घं.) क. वि.	गति (११घं.) क. वि.	गति (१२घं.) क. वि.
३१	०।३८ ●	१।१७ ★	२।३५	३।५२ ★	५।१०	६।२७ ★	७।४५	९।०२ ★	१०।२०	११।३७ ★	१२।५५	१४।१२ ★	१५।३०
३२	०।४०	१।२०	२।४०	४।००	५।२०	६।४०	८।००	९।२०	१०।४०	१२।००	१३।२०	१४।४०	१६।००
३३	०।४१ ❖	१।२२ ★	२।४५	४।०७ ★	५।३०	६।५२ ★	८।१५	९।३७ ★	११।००	१२।२२ ★	१३।४५	१५।०७ ★	१६।३०
३४	०।४२ ★	१।२५	२।५०	४।१५	५।४०	७।०५	८।३०	९।५५	११।२०	१२।४५	१४।१०	१५।३५	१७।००
३५	०।४३ ●	१।२७ ★	२।५५	४।२२ ★	५।५०	७।१७ ★	८।४५	१०।१२ ★	११।४०	१३।०७ ★	१४।३५	१६।०२ ★	१७।३०
३६	०।४५	१।३०	३।००	४।३०	६।००	७।३०	९।००	१०।३०	१२।००	१३।३०	१५।००	१६।३०	१८।००
३७	०।४६ ❖	१।३२ ★	३।०५	४।३७ ★	६।१०	७।४२ ★	९।१५	१०।४७ ★	१२।२०	१३।५२ ★	१५।२५	१६।५७ ★	१८।३०
३८	०।४७ ★	१।३५	३।१०	४।४५	६।२०	७।५५	९।३०	११।०५	१२।४०	१४।१५	१५।५०	१७।२५	१९।००
३९	०।४८ ●	१।३७ ★	३।१५	४।५२ ★	६।३०	८।०७ ★	९।४५	११।२२ ★	१३।००	१४।३७ ★	१६।१५	१७।५२ ★	१९।३०
४०	०।५०	१।४०	३।२०	५।००	६।४०	८।२०	१०।००	११।४०	१३।२०	१५।००	१६।४०	१८।२०	२०।००
४१	०।५१ ❖	१।४२ ★	३।२५	५।०७ ★	६।५०	८।३२ ★	१०।१५	११।५७ ★	१३।४०	१५।२२ ★	१७।०५	१८।४७ ★	२०।३०
४२	०।५२ ★	१।४५	३।३०	५।१५	७।००	८।४५	१०।३०	१२।१५	१४।००	१५।४५	१७।३०	१९।१५	२१।००
४३	०।५३ ●	१।४७ ★	३।३५	५।२२ ★	७।१०	८।५७ ★	१०।४५	१२।३२ ★	१४।२०	१६।०७ ★	१७।५५	१९।४२ ★	२१।३०
४४	०।५५	१।५०	३।४०	५।३०	७।२०	९।१०	११।००	१२।५०	१४।४०	१६।३०	१८।२०	२०।१०	२२।००
४५	०।५६ ❖	१।५२ ★	३।४५	५।३७ ★	७।३०	९।२२ ★	११।१५	१३।०७ ★	१५।००	१६।५२ ★	१८।४५	२०।३७ ★	२२।३०
४६	०।५७ ★	१।५५	३।५०	५।४५	७।४०	९।३५	११।३०	१३।२५	१५।२०	१७।१५	१९।१०	२१।०५	२३।००
४७	०।५८ ●	१।५७ ★	३।५५	५।५२ ★	७।५०	९।४७ ★	११।४५	१३।४२ ★	१५।४०	१७।३७ ★	१९।३५	२१।३२ ★	२३।३०
४८	१।००	२।००	४।००	६।००	८।००	१०।००	१२।००	१४।००	१६।००	१८।००	२०।००	२२।००	२४।००
४९	१।०१ ❖	२।०२ ★	४।०५	६।०७ ★	८।१०	१०।१२ ★	१२।१५	१४।१७ ★	१६।२०	१८।२२ ★	२०।२५	२२।२७ ★	२४।३०
५०	१।०२ ★	२।०५	४।१०	६।१५	८।२०	१०।२५	१२।३०	१४।३५	१६।४०	१८।४५	२०।५०	२२।५५	२५।००
५१	१।०३ ●	२।०७ ★	४।१५	६।२२ ★	८।३०	१०।३७ ★	१२।४५	१४।५२ ★	१७।००	१९।०७ ★	२१।१५	२३।२२ ★	२५।३०
५२	१।०५	२।१०	४।२०	६।३०	८।४०	१०।५०	१३।००	१५।१०	१७।२०	१९।३०	२१।४०	२३।५०	२६।००
५३	१।०६ ❖	२।१२ ★	४।२५	६।३७ ★	८।५०	११।०२ ★	१३।१५	१५।२७ ★	१७।४०	१९।५२ ★	२२।०५	२४।१७ ★	२६।३०
५४	१।०७ ★	२।१५	४।३०	६।४५	९।००	११।१५	१३।३०	१५।४५	१८।००	२०।१५	२२।३०	२४।४५	२७।००
५५	१।०८ ●	२।१७ ★	४।३५	६।५२ ★	९।१०	११।२७ ★	१३।४५	१६।०२ ★	१८।२०	२०।३७ ★	२२।५५	२५।१२ ★	२७।३०
५६	१।१०	२।२०	४।४०	७।००	९।२०	११।४०	१४।००	१६।२०	१८।४०	२१।००	२३।२०	२५।४०	२८।००
५७	१।११ ❖	२।२२ ★	४।४५	७।०७ ★	९।३०	११।५२ ★	१४।१५	१६।३७ ★	१९।००	२१।२२ ★	२३।४५	२६।०७ ★	२८।३०
५८	१।१२ ★	२।२५	४।५०	७।१५	९।४०	१२।०५	१४।३०	१६।५५	१९।२०	२१।४५	२४।१०	२६।३५	२९।००
५९	१।१३ ●	२।२७ ★	४।५५	७।२२ ★	९।५०	१२।१७ ★	१४।४५	१७।१२ ★	१९।४०	२२।०७ ★	२४।३५	२७।०२ ★	२९।३०
६०	१।१५	२।३०	५।००	७।३०	१०।००	१२।३०	१५।००	१७।३०	२०।००	२२।३०	२५।००	२७।३०	३०।००

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक ग्रह-स्पष्ट

इस पंचांग में नीचे यहाँ सभी ग्रहों के राशि, अंश, कला, विकला सूक्ष्म गणितागत दिये गये हैं। प्रत्येक तारीख के सामने उस दिन के प्रातः ५।३० बजे के भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम की ग्रह स्थिति विकला पर्यन्त अंकित है। यह ग्रह स्थिति समस्त भूमण्डल पर सभी स्थानों के लिए स्वीकार्य है। केवल अन्य देशों के लिए उचित समय का संस्कार कर लें। जैसे-जापान के स्टैं. टा. का भारतीय स्टैं.टा. से अन्तर +३ घं. ३० मि. है। अतः ये स्पष्ट ग्रह जापान के स्टैं.टा. के अनुसार प्रातः ९ घं. ०० मि. के हैं। किसी भी समय के तात्कालिक ग्रह स्पष्ट जानने के लिए समय के अन्तर के घटी पल बनाकर उस दिन की दैनिक ग्रह गति के साथ त्रैराशिक विधि से गुणा करने पर प्राप्त लब्धि को मार्गी ग्रह में जोड़ने से एवं वक्री ग्रह में घटाने से उस दिन के अभीष्ट समय की ग्रह स्थिति प्राप्त होगी। ग्रहों की दैनिक गति जानने के लिए अभीष्ट दिन के ग्रहों को अगले दिन के स्पष्ट ग्रहों में से घटाने से जो शेष रहे वह गति होगी।

अप्रैल सन् २००५ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५४' ४५"

ता.	सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु (वक्री)				शुक्र				शनि				राहु				हर्शल				नेपच्यून				प्लूटो				ता.
अप्रैल	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अप्रैल
९	११	२५	१८	३८	११	२७	०७	१३	०९	२०	००	३९	११	०८	१८	४३	०५	१९	२१	१८	११	२७	३४	२७	०२	२६	४५	२९	११	२९	१२	२०	१०	१५	०७	५५	०९	२३	१३	१९	०८	००	३२	२८	९
१०	११	२६	१७	३५	००	१०	३६	२४	०९	२०	४४	१३	११	०८	०३	३१	०५	१९	१३	३९	११	२८	४८	४९	०२	२६	४७	२९	११	२९	०९	०९	१०	१५	१०	४४	०९	२३	१४	३६	०८	००	३२	०२	१०
११	११	२७	१६	३०	००	२३	४६	३८	०९	२१	२७	४६	११	०७	५३	४३	०५	१९	०६	०२	००	००	०३	१०	०२	२६	४९	३६	११	२९	०५	५९	१०	१५	१३	३०	०९	२३	१५	५१	०८	००	३१	३४	११
१२	११	२८	१५	२३	०१	०६	३७	४२	०९	२२	११	२०	११	०७	४९	१९	०५	१८	५८	२८	००	०१	१७	३०	०२	२६	५१	४९	११	२९	०२	४८	१०	१५	१६	१५	०९	२३	१७	०४	०८	००	३१	०५	१२
१३	११	२९	१४	१३	०१	१९	१०	४९	०९	२२	५४	५३	११	०७	५०	१४	०५	१८	५०	५६	००	०२	३१	४९	०२	२६	५४	०८	११	२८	५९	३७	१०	१५	१८	५८	०९	२३	१८	१६	०८	००	३०	३३	१३
१४	००	००	१३	०२	०२	०१	२८	१९	०९	२३	३८	२७	११	०७	५६	२२	०५	१८	४३	२८	००	०३	४६	०६	०२	२६	५६	३३	११	२८	५६	२६	१०	१५	२१	३९	०९	२३	१९	२५	०८	००	३०	००	१४
१५	००	०१	११	४८	०२	१३	३३	३३	०९	२४	२२	००	११	०८	०७	३३	०५	१८	३६	०२	००	०५	००	२३	०२	२६	५९	०४	११	२८	५३	१५	१०	१५	२४	१८	०९	२३	२०	३३	०८	००	२९	२५	१५
१६	००	०२	१०	३२	०२	२५	३०	३२	०९	२५	०५	३४	११	०८	२३	३९	०५	१८	२८	४१	००	०६	१४	३८	०२	२७	०१	४१	११	२८	५०	०४	१०	१५	२६	५५	०९	२३	२१	३९	०८	००	२८	४९	१६
१७	००	०३	०९	१४	०३	०७	२३	४४	०९	२५	४९	०८	११	०८	४४	२८	०५	१८	२१	२३	००	०७	२८	५२	०२	२७	०४	२५	११	२८	४६	५४	१०	१५	२९	३१	०९	२३	२२	४४	०८	००	२८	१०	१७
१८	००	०४	०७	५३	०३	१९	१७	४९	०९	२६	३२	४१	११	०९	०९	४९	०५	१८	१४	०९	००	०८	४३	०४	०२	२७	०७	१४	११	२८	४३	४३	१०	१५	३२	०४	०९	२३	२३	४७	०८	००	२७	३०	१८
१९	००	०५	०६	३१	०४	०१	१७	२२	०९	२७	१६	१५	११	०९	३९	३१	०५	१८	०७	००	००	०९	५७	१६	०२	२७	१०	१०	११	२८	४०	३२	१०	१५	३४	३६	०९	२३	२४	४७	०८	००	२६	४८	१९
२०	००	०६	०५	०६	०४	१३	२६	३७	०९	२७	५९	४९	११	१०	१३	२३	०५	१७	५९	५६	००	११	११	२६	०२	२७	१३	११	११	२८	३७	२१	१०	१५	३७	०५	०९	२३	२५	४६	०८	००	२६	०५	२०
२१	००	०७	०३	३९	०४	३५	४९	१६	०९	२८	४३	२२	११	१०	५१	१३	०५	१७	५२	५७	००	१२	२५	३५	०२	२७	१६	१८	११	२८	३४	११	१०	१५	३९	३२	०९	२३	२६	४३	०८	००	२५	२०	२१
२२	००	०८	०२	१०	०५	०८	२८	१६	०९	२९	२६	५६	११	११	३२	५०	०५	१७	४६	०३	००	१३	३९	४३	०२	२७	१९	३१	११	२८	३१	००	१०	१५	४१	५७	०९	२३	२७	३९	०८	००	२४	३३	२२
२३	००	०९	००	३९	०५	२१	२५	२९	१०	००	१०	२९	११	१२	१८	०६	०५	१७	३९	१५	००	१४	५३	४९	०२	२७	२२	५०	११	२८	२७	४९	१०	१५	४४	२०	०९	२३	२८	३२	०८	००	२३	४४	२३
२४	००	०९	५९	०६	०६	०४	४१	३६	१०	००	५४	०२	११	१३	०६	४८	०५	१७	३२	३३	००	१६	०७	५४	०२	२७	२६	१४	११	२८	२४	३९	१०	१५	४६	४१	०९	२३	२९	२४	०८	००	२२	५४	२४
२५	००	१०	५७	३१	०६	१८	१५	५५	१०	०१	३७	३५	११	१३	५८	५०	०५	१७	२५	५६	००	१७	२१	५९	०२	२७	२९	४३	११	२८	२१	२८	१०	१५	४९	००	०९	२३	३०	१३	०८	००	२२	०२	२५
२६	००	११	५५	५४	०७	०२	०६	२२	१०	०२	२१	०८	११	१४	५४	०१	०५	१७	१९	२६	००	१८	३६	०२	०२	२७	३३	१९	११	२८	१८	१७	१०	१५	५१	१६	०९	२३	३१	०१	०८	००	२१	०९	२६
२७	००	१२	५४	१६	०७	१६	०९	४७	१०	०३	०४	४१	११	१५	५२	१४	०५	१७	१३	०३	००	१९	५०	०४	०२	२७	३७	००	११	२८	१५	०६	१०	१५	५३	३१	०९	२३	३१	४७	०८	००	२०	१४	२७
२८	००	१३	५२	३५	०८	००	२२	१८	१०	०३	४८	१३	११	१६	५३	२२	०५	१७	०६	४६	००	२१	०४	०५	०२	२७	४०	४६	११	२८	११	५५	१०	१५	५५	४३	०९	२३	३२	३१	०८	००	१९	१८	२८
२९	००	१४	५०	५४	०८	१४	३९	४४	१०	०४	३१	४५	११	१७	५७	१८	०५	१७	००	३६	००	२२	१८	०५	०२	२७	४४	३८	११	२८	०८	४४	१०	१५	५७	५२	०९	२३	३३	१३	०८	००	१८	२०	२९
३०	००	१५	४९	१०	०८	२८	५८	०८	१०	०५	१५	१७	११	१९	०३	५५	०५	१६	५४	३४	००	२३	३२	०४	०२	२७	४८	३५	११	२८	०५	३४	१०	१५	६०	००	०९	२३	३३	५३	०८	००	१७	२१	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मई सन् २००५ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५४' ४६"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
मई	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	मई
१	०० १६ ४७ २६	०९ १३ १४ ०५	१० ०५ ५८ ४९	११ २० १३ ०८	०५ १६ ४८ ३८	०० २४ ४६ ०२	०२ २७ ५२ ३७	११ २८ ०२ २३	१० १६ ०२ ०५	०९ २३ ३४ ३२	०८ ०० १६ २०	१
२	०० १७ ४५ ३९	०९ २७ २४ ५०	१० ०६ ४२ १९	११ २१ २४ ५२	०५ १६ ४२ ५१	०० २५ ६० ००	०२ २७ ५६ ४५	११ २७ ५९ १२	१० १६ ०४ ०८	०९ २३ ३५ ०८	०८ ०० १५ १८	२
३	०० १८ ४३ ५२	१० ११ २८ २०	१० ०७ २५ ४९	११ २२ ३९ ०३	०५ १६ ३७ ११	०० २७ १३ ५६	०२ २८ ०० ५८	११ २७ ५६ ०१	१० १६ ०६ ०८	०९ २३ ३५ ४२	०८ ०० १४ १४	३
४	०० १९ ४२ ०३	१० २५ २३ ०१	१० ०८ ०९ १८	११ २३ ५५ ३५	०५ १६ ३१ ४०	०० २८ २७ ५२	०२ २८ ०५ १६	११ २७ ५२ ५१	१० १६ ०८ ०६	०९ २३ ३६ १५	०८ ०० १३ ०९	४
५	०० २० ४० १२	११ ०९ ०७ ३९	१० ०८ ५२ ४६	११ २५ १४ २६	०५ १६ २६ १६	०० २९ ४१ ४६	०२ २८ ०९ ३९	११ २७ ४९ ४०	१० १६ १० ०१	०९ २३ ३६ ४५	०८ ०० १२ ०३	५
६	०० २१ ३८ २०	११ २२ ४१ ०६	१० ०९ ३६ १३	११ २६ ३५ ३२	०५ १६ २१ ०२	०१ ०० ५५ ४०	०२ २८ १४ ०७	११ २७ ४६ २९	१० १६ ११ ५४	०९ २३ ३७ १४	०८ ०० १० ५५	६
७	०० २२ ३६ २७	०० ०६ ०२ २१	१० १० १९ ३९	११ २७ ५८ ५०	०५ १६ १५ ५६	०१ ०२ ०९ ३२	०२ २८ १८ ४०	११ २७ ४३ १८	१० १६ १३ ४५	०९ २३ ३७ ४०	०८ ०० ०९ ४६	७
८	०० २३ ३४ ३१	०० १९ १० २६	१० ११ ०३ ०४	११ २९ २४ १९	०५ १६ १० ५८	०१ ०३ २३ २४	०२ २८ २३ १८	११ २७ ४० ०८	१० १६ १५ ३३	०९ २३ ३८ ०५	०८ ०० ०८ ३५	८
९	०० २४ ३२ ३५	०१ ०२ ०४ ४२	१० ११ ४६ २७	०० ०० ५१ ५६	०५ १६ ०६ १०	०१ ०४ ३७ १५	०२ २८ २८ ०१	११ २७ ३६ ५७	१० १६ १७ १८	०९ २३ ३८ २८	०८ ०० ०७ २४	९
१०	०० २५ ३० ३६	०१ १४ ४४ ५३	१० १२ २९ ४८	०० ०२ २१ ४०	०५ १६ ०१ ३१	०१ ०५ ५१ ०४	०२ २८ ३२ ४९	११ २७ ३३ ४६	१० १६ १९ ०१	०९ २३ ३८ ४८	०८ ०० ०६ ११	१०
११	०० २६ २८ ३६	०१ २७ ११ २८	१० १३ १३ ०९	०० ०३ ५३ ३०	०५ १५ ५७ ०२	०१ ०७ ०४ ५३	०२ २८ ३७ ४१	११ २७ ३० ३५	१० १६ २० ४१	०९ २३ ३९ ०७	०८ ०० ०४ ५७	११
१२	०० २७ २६ ३४	०२ ०९ २५ ३८	१० १३ ५६ २७	०० ०५ २७ २४	०५ १५ ५२ ४२	०१ ०८ १८ ४०	०२ २८ ४२ ३८	११ २७ २७ २४	१० १६ २२ १८	०९ २३ ३९ २३	०८ ०० ०३ ४२	१२
१३	०० २८ २४ ३१	०२ २१ २९ २९	१० १४ ३९ ४४	०० ०७ ०३ २३	०५ १५ ४८ ३१	०१ ०९ ३२ २६	०२ २८ ४७ ४०	११ २७ २४ १३	१० १६ २३ ५३	०९ २३ ३९ ३८	०८ ०० ०२ २५	१३
१४	०० २९ २२ २५	०३ ०३ २५ ५६	१० १५ २२ ५९	०० ०८ ४१ २५	०५ १५ ४४ ३१	०१ १० ४६ ११	०२ २८ ५२ ४७	११ २७ २१ ०२	१० १६ २५ २६	०९ २३ ३९ ५१	०८ ०० ०१ ०८	१४
१५	०१ ०० २० १८	०३ १५ १८ ३७	१० १६ ०६ १३	०० १० २१ ३२	०५ १५ ४० ४०	०१ ११ ५९ ५५	०२ २८ ५७ ५७	११ २७ १७ ५२	१० १६ २६ ५५	०९ २३ ४० ०२	०७ २९ ५९ ४९	१५
१६	०१ ०१ १८ १०	०३ २७ ११ ४९	१० १६ ४९ २४	०० १२ ०३ ४१	०५ १५ ३६ ५९	०१ १३ १३ ३८	०२ २९ ०३ १३	११ २७ १४ ४१	१० १६ २८ २२	०९ २३ ४० १०	०७ २९ ५८ ३०	१६
१७	०१ ०२ १५ ५९	०४ ०९ १० १२	१० १७ ३२ ३४	०० १३ ४७ ५५	०५ १५ ३३ २८	०१ १४ २७ २०	०२ २९ ०८ ३२	११ २७ ११ ३०	१० १६ २९ ४७	०९ २३ ४० १७	०७ २९ ५७ ०९	१७
१८	०१ ०३ १३ ४७	०४ २१ १८ ३७	१० १८ १५ ४२	०० १५ ३४ १२	०५ १५ ३० ०८	०१ १५ ४१ ००	०२ २९ १३ ५६	११ २७ ०८ २०	१० १६ ३१ ०८	०९ २३ ४० २२	०७ २९ ५५ ४८	१८
१९	०१ ०४ ११ ३३	०५ ०३ ४१ ४६	१० १८ ५८ ४८	०० १७ २२ ३३	०५ १५ २६ ५८	०१ १६ ५४ ३९	०२ २९ १९ २४	११ २७ ०५ ०९	१० १६ ३२ २७	०९ २३ ४० २५	०७ २९ ५४ २६	१९
२०	०१ ०५ ०९ १८	०५ १६ २३ ५१	१० १९ ४१ ५२	०० १९ १२ ५७	०५ १५ २३ ५८	०१ १८ ०८ १७	०२ २९ २४ ५६	११ २७ ०१ ५८	१० १६ ३३ ४३	०९ २३ ४० २६	०७ २९ ५३ ०२	२०
२१	०१ ०६ ०७ ०१	०५ २९ २८ ०८	१० २० २४ ५३	०० २१ ०५ २४	०५ १५ २१ ०८	०१ १९ २१ ५४	०२ २९ ३० ३२	११ २६ ५८ ४७	१० १६ ३४ ५६	०९ २३ ४० २५	०७ २९ ५१ ३८	२१
२२	०१ ०७ ०४ ४२	०६ १२ ५६ ३०	१० २१ ०७ ५३	०० २२ ५९ ५४	०५ १५ १८ २९	०१ २० ३५ २९	०२ २९ ३६ १२	११ २६ ५५ ३७	१० १६ ३६ ०६	०९ २३ ४० २२	०७ २९ ५० १३	२२
२३	०१ ०८ ०२ २२	०६ २६ ४८ ४७	१० २१ ५० ५१	०० २४ ५६ २४	०५ १५ १६ ०१	०१ २१ ४९ ०४	०२ २९ ४१ ५६	११ २६ ५२ २६	१० १६ ३७ १४	०९ २३ ४० १७	०७ २९ ४८ ४७	२३
२४	०१ ०९ ०० ०१	०७ ११ ०२ ३५	१० २२ ३३ ४६	०० २६ ५४ ५२	०५ १५ १३ ४३	०१ २३ ०२ ३७	०२ २९ ४७ ४४	११ २६ ४९ १५	१० १६ ३८ १९	०९ २३ ४० १०	०७ २९ ४७ २०	२४
२५	०१ ०९ ५७ ३८	०७ २५ ३३ ०५	१० २३ १६ ३९	०० २८ ५५ १६	०५ १५ ११ ३५	०१ २४ १६ ०९	०२ २९ ५३ ३५	११ २६ ४६ ०४	१० १६ ३९ २१	०९ २३ ४० ०१	०७ २९ ४५ ५३	२५
२६	०१ १० ५५ १४	०८ १० १३ ४२	१० २३ ५९ ३०	०१ ०० ५७ ३२	०५ १५ ०९ ३८	०१ २५ २९ ४०	०२ २९ ५९ ३१	११ २६ ४२ ५३	१० १६ ४० २०	०९ २३ ३९ ५०	०७ २९ ४४ २५	२६
२७	०१ ११ ५२ ४९	०८ २४ ५७ ००	१० २४ ४२ १८	०१ ०३ ०१ ३३	०५ १५ ०७ ५२	०१ २६ ४३ ११	०३ ०० ०५ ३०	११ २६ ३९ ४२	१० १६ ४१ १७	०९ २३ ३९ ३८	०७ २९ ४२ ५६	२७
२८	०१ १२ ५० २४	०९ ०९ ३५ ५०	१० २५ २५ ०४	०१ ०५ ०७ १४	०५ १५ ०६ १६	०१ २७ ५६ ४०	०३ ०० ११ ३२	११ २६ ३६ ३१	१० १६ ४२ ११	०९ २३ ३९ २३	०७ २९ ४१ २७	२८
२९	०१ १३ ४७ ५७	०९ २४ ०४ २२	१० २६ ०७ ४८	०१ ०७ १४ २७	०५ १५ ०४ ५२	०१ २९ १० ०८	०३ ०० १७ ३९	११ २६ ३३ २०	१० १६ ४३ ०१	०९ २३ ३९ ०७	०७ २९ ३९ ५७	२९
३०	०१ १४ ४५ २९	१० ०८ १८ ४२	१० २६ ५० २८	०१ ०९ २३ ०१	०५ १५ ०३ ३८	०२ ०० २३ ३५	०३ ०० २३ ४८	११ २६ ३० १०	१० १६ ४३ ४९	०९ २३ ३८ ४८	०७ २९ ३८ २६	३०
३१	०१ १५ ४३ ०१	१० २२ १६ ५२	१० २७ ३३ ०५	०१ ११ ३२ ४६	०५ १५ ०२ ३४	०२ ०१ ३७ ०२	०३ ०० ३० ०२	११ २६ २६ ५९	१० १६ ४४ ३४	०९ २३ ३८ २८	०७ २९ ३६ ५५	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

जून सन् २००५ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५४' ४६"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जून
१	०१ १६ ४० ३२	११ ०५ ५८ ३६	१० २८ १५ ४०	०१ १३ ४३ २८	०५ १५ ०१ ४२	०२ ०२ ५० २८	०३ ०० ३६ १८	११ २६ २३ ४८	१० १६ ४५ १६	०९ २३ ३८ ०६	०७ २९ ३५ २३	१
२	०१ १७ ३८ ०२	११ १९ २४ ४०	१० २८ ५८ ११	०१ १५ ५४ ५५	०५ १५ ०१ ००	०२ ०४ ०३ ५२	०३ ०० ४२ ३८	११ २६ २० ३७	१० १६ ४५ ५६	०९ २३ ३७ ४२	०७ २९ ३३ ५१	२
३	०१ १८ ३५ ३२	०० ०२ ३६ २३	१० २९ ४० ३८	०१ १८ ०६ ४९	०५ १५ ०० २९	०२ ०५ १७ १६	०३ ०० ४९ ०२	११ २६ १७ २७	१० १६ ४६ ३२	०९ २३ ३७ १६	०७ २९ ३२ १८	३
४	०१ १९ ३३ ००	०० १५ ३५ ०७	११ ०० २३ ०२	०१ २० १८ ५६	०५ १५ ०० १०	०२ ०६ ३० ३९	०३ ०० ५५ २८	११ २६ १४ १६	१० १६ ४७ ०५	०९ २३ ३६ ४८	०७ २९ ३० ४५	४
५	०१ २० ३० २८	०० २८ २२ ०१	११ ०१ ०५ २२	०१ २२ ३० ५९	०५ १५ ०० ०१	०२ ०७ ४४ ०१	०३ ०१ ०१ ५८	११ २६ ११ ०५	१० १६ ४७ ३६	०९ २३ ३६ १९	०७ २९ २९ १२	५
६	०१ २१ २७ ५५	०१ १० ५७ ५७	११ ०१ ४७ ३८	०१ २४ ४२ ४१	०५ १५ ०० ०२	०२ ०८ ५७ २२	०३ ०१ ०८ ३१	११ २६ ०७ ५४	१० १६ ४८ ०४	०९ २३ ३५ ४७	०७ २९ २७ ३८	६
७	०१ २२ २५ २१	०१ २३ २३ ३२	११ ०२ २९ ५०	०१ २६ ५३ ४७	०५ १५ ०० १५	०२ १० १० ४३	०३ ०१ १५ ०६	११ २६ ०४ ४३	१० १६ ४८ २८	०९ २३ ३५ १४	०७ २९ २६ ०४	७
८	०१ २३ २२ ४६	०२ ०५ ३९ २४	११ ०३ ११ ५८	०१ २९ ०४ ०१	०५ १५ ०० ३९	०२ ११ २४ ०२	०३ ०१ २१ ४५	११ २६ ०१ ३२	१० १६ ४८ ५०	०९ २३ ३४ ३९	०७ २९ २४ ३०	८
९	०१ २४ २० ११	०२ १७ ४६ २५	११ ०३ ५४ ०१	०२ ०१ १३ ०८	०५ १५ ०१ १३	०२ १२ ३७ २०	०३ ०१ २८ २७	११ २५ ५८ २१	१० १६ ४९ ०९	०९ २३ ३४ ०२	०७ २९ २२ ५५	९
१०	०१ २५ १७ ३४	०२ २९ ४५ ५४	११ ०४ ३६ ००	०२ ०३ २० ५५	०५ १५ ०१ ५९	०२ १३ ५० ३७	०३ ०१ ३५ ११	११ २५ ५५ ११	१० १६ ४९ २५	०९ २३ ३३ २४	०७ २९ २१ २१	१०
११	०१ २६ १४ ५६	०३ ११ ३९ ४७	११ ०५ १७ ५४	०२ ०५ २७ ११	०५ १५ ०२ ५५	०२ १५ ०३ ५२	०३ ०१ ४१ ५८	११ २५ ५२ ००	१० १६ ४९ ३७	०९ २३ ३२ ४४	०७ २९ १९ ४६	११
१२	०१ २७ १२ १८	०३ २३ ३० ४६	११ ०५ ५९ ४४	०२ ०७ ३१ ४५	०५ १५ ०४ ०१	०२ १६ १७ ०७	०३ ०१ ४८ ४८	११ २५ ४८ ४९	१० १६ ४९ ४७	०९ २३ ३२ ०१	०७ २९ १८ ११	१२
१३	०१ २८ ०९ ३९	०४ ०५ २२ २१	११ ०६ ४१ २८	०२ ०९ ३४ २८	०५ १५ ०५ १९	०२ १७ ३० २०	०३ ०१ ५५ ४१	११ २५ ४५ ३८	१० १६ ४९ ५५	०९ २३ ३१ १८	०७ २९ १६ ३६	१३
१४	०१ २९ ०६ ५८	०४ १७ १८ ४२	११ ०७ २३ ०८	०२ ११ ३५ १३	०५ १५ ०६ ४७	०२ १८ ४३ ३३	०३ ०२ ०२ ३६	११ २५ ४२ २८	१० १६ ४९ ५९	०९ २३ ३० ३२	०७ २९ १५ ०१	१४
१५	०२ ०० ०४ १७	०४ २९ २४ ३७	११ ०८ ०४ ४३	०२ १३ ३३ ५४	०५ १५ ०८ २६	०२ १९ ५६ ४३	०३ ०२ ०९ ३३	११ २५ ३९ १७	१० १६ ५० ००	०९ २३ २९ ४५	०७ २९ १३ २६	१५
१६	०२ ०१ ०१ ३५	०५ ११ ४५ ०७	११ ०८ ४६ १३	०२ १५ ३० २७	०५ १५ १० १५	०२ २१ ०९ ५३	०३ ०२ १६ ३३	११ २५ ३६ ०६	१० १६ ४९ ५८	०९ २३ २८ ५६	०७ २९ ११ ५१	१६
१७	०२ ०१ ५८ ५२	०५ २४ २५ १२	११ ०९ २७ ३८	०२ १७ २४ ४७	०५ १५ १२ १५	०२ २२ २३ ०१	०३ ०२ २३ ३५	११ २५ ३२ ५५	१० १६ ४९ ५४	०९ २३ २८ ०६	०७ २९ १० १६	१७
१८	०२ ०२ ५६ ०८	०६ ०७ २९ १९	११ १० ०८ ५७	०२ १९ १६ ५३	०५ १५ १४ २५	०२ २३ ३६ ०८	०३ ०२ ३० ३९	११ २५ २९ ४५	१० १६ ४९ ४६	०९ २३ २७ १४	०७ २९ ०८ ४१	१८
१९	०२ ०३ ५३ २३	०६ २१ ०० ४१	११ १० ५० ११	०२ २१ ०६ ४१	०५ १५ १६ ४५	०२ २४ ४९ १४	०३ ०२ ३७ ४६	११ २५ २६ ३४	१० १६ ४९ ३६	०९ २३ २६ २०	०७ २९ ०७ ०६	१९
२०	०२ ०४ ५० ३८	०७ ०५ ०० २९	११ ११ ३१ २०	०२ २२ ५४ ११	०५ १५ १९ १६	०२ २६ ०२ १८	०३ ०२ ४४ ५५	११ २५ २३ २३	१० १६ ४९ २३	०९ २३ २५ २५	०७ २९ ०५ ३१	२०
२१	०२ ०५ ४७ ५२	०७ १९ २७ ०३	११ १२ १२ २३	०२ २४ ३९ २१	०५ १५ २१ ५७	०२ २७ १५ २१	०३ ०२ ५२ ०५	११ २५ २० १२	१० १६ ४९ ०७	०९ २३ २४ २८	०७ २९ ०३ ५७	२१
२२	०२ ०६ ४५ ०५	०८ ०४ १५ २८	११ १२ ५३ २०	०२ २६ २२ ११	०५ १५ २४ ४७	०२ २८ २८ २२	०३ ०२ ५९ १८	११ २५ १७ ०१	१० १६ ४८ ४८	०९ २३ २३ ३०	०७ २९ ०२ २३	२२
२३	०२ ०७ ४२ १९	०८ १९ १७ ५०	११ १३ ३४ १२	०२ २८ ०२ ३९	०५ १५ २७ ४८	०२ २९ ४१ २३	०३ ०३ ०६ ३३	११ २५ १३ ५०	१० १६ ४८ २६	०९ २३ २२ ३०	०७ २९ ०० ४९	२३
२४	०२ ०८ ३९ ३१	०९ ०४ २४ २४	११ १४ १४ ५८	०२ २९ ४० ४६	०५ १५ ३० ५९	०३ ०० ५४ २२	०३ ०३ १३ ५०	११ २५ १० ३९	१० १६ ४८ ०१	०९ २३ २१ २९	०७ २८ ५९ १६	२४
२५	०२ ०९ ३६ ४४	०९ १९ २५ ०८	११ १४ ५५ ३७	०३ ०१ १६ ३०	०५ १५ ३४ २०	०३ ०२ ०७ १९	०३ ०३ २१ ०८	११ २५ ०७ २८	१० १६ ४७ ३४	०९ २३ २० २६	०७ २८ ५७ ४३	२५
२६	०२ १० ३३ ५६	१० ०४ ११ ३१	११ १५ ३६ ११	०३ ०२ ४९ ५१	०५ १५ ३७ ५१	०३ ०३ २० १६	०३ ०३ २८ २८	११ २५ ०४ १७	१० १६ ४७ ०४	०९ २३ १९ २२	०७ २८ ५६ १०	२६
२७	०२ ११ ३१ ०९	१० १८ ३७ ४०	११ १६ १६ ३८	०३ ०४ २० ४८	०५ १५ ४१ ३१	०३ ०४ ३३ ११	०३ ०३ ३५ ५१	११ २५ ०१ ०७	१० १६ ४६ ३१	०९ २३ १८ १६	०७ २८ ५४ ३७	२७
२८	०२ १२ २८ २१	११ ०२ ४० ४५	११ १६ ५६ ५८	०३ ०५ ४९ २०	०५ १५ ४५ २२	०३ ०५ ४६ ०५	०३ ०३ ४३ १४	११ २४ ५७ ५६	१० १६ ४५ ५५	०९ २३ १७ ०९	०७ २८ ५३ ०५	२८
२९	०२ १३ २५ ३३	११ १६ २० ३८	११ १७ ३७ ११	०३ ०७ १५ २६	०५ १५ ४९ २१	०३ ०६ ५८ ५८	०३ ०३ ५० ४०	११ २४ ५४ ४५	१० १६ ४५ १६	०९ २३ १६ ०१	०७ २८ ५१ ३४	२९
३०	०२ १४ २२ ४६	११ २९ ३९ ०३	११ १८ १७ १७	०३ ०८ ३९ ०४	०५ १५ ५३ ३१	०३ ०८ ११ ५०	०३ ०३ ५८ ०७	११ २४ ५१ ३४	१० १६ ४४ ३५	०९ २३ १४ ५१	०७ २८ ५० ०३	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जुलाई सन् २००५ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५४' ४६"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
जुलाई	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जुलाई
१	०२ १५ १९ ५९	०० १२ ३८ ४५	११ १८ ५७ १६	०३ १० ०० १२	०५ १५ ५७ ५०	०३ ०९ २४ ४०	०३ ०४ ०५ ३५	११ २४ ४८ २४	१० १६ ४३ ५१	०९ २३ १३ ४०	०७ २८ ४८ ३३	१
२	०२ १६ १७ १२	०० २५ २२ ४७	११ १९ ३७ ०७	०३ ११ १८ ४८	०५ १६ ०२ १८	०३ १० ३७ ३०	०३ ०४ १३ ०५	११ २४ ४५ १३	१० १६ ४३ ०४	०९ २३ १२ २८	०७ २८ ४७ ०३	२
३	०२ १७ १४ २५	०१ ०७ ५३ ५८	११ २० १६ ५०	०३ १२ ३४ ४८	०५ १६ ०६ ५६	०३ ११ ५० १८	०३ ०४ २० ३६	११ २४ ४२ ०२	१० १६ ४२ १४	०९ २३ ११ १४	०७ २८ ४५ ३४	३
४	०२ १८ ११ ३८	०१ २० १४ ४३	११ २० ५६ २५	०३ १३ ४८ ११	०५ १६ ११ ४३	०३ १३ ०३ ०५	०३ ०४ २८ ०९	११ २४ ३८ ५१	१० १६ ४१ २२	०९ २३ ०९ ५९	०७ २८ ४४ ०५	४
५	०२ १९ ०८ ५१	०२ ०२ २६ ५७	११ २१ ३५ ५१	०३ १४ ५८ ५१	०५ १६ १६ ४०	०३ १४ १५ ५०	०३ ०४ ३५ ४३	११ २४ ३५ ४०	१० १६ ४० २७	०९ २३ ०८ ४३	०७ २८ ४२ ३७	५
६	०२ २० ०६ ०४	०२ १४ ३२ ०७	११ २२ १५ ०८	०३ १६ ०६ ४५	०५ १६ २१ ४५	०३ १५ २८ ३५	०३ ०४ ४३ १८	११ २४ ३२ २९	१० १६ ३९ ३०	०९ २३ ०७ २६	०७ २८ ४१ १०	६
७	०२ २१ ०३ १८	०२ २६ ३१ २४	११ २२ ५४ १७	०३ १७ ११ ४९	०५ १६ २७ ००	०३ १६ ४१ १८	०३ ०४ ५० ५४	११ २४ २९ १८	१० १६ ३८ ३०	०९ २३ ०६ ०७	०७ २८ ३९ ४४	७
८	०२ २२ ०० ३९	०३ ०८ २६ ००	११ २३ ३३ १७	०३ १८ १३ ५६	०५ १६ ३२ २३	०३ १७ ५३ ५९	०३ ०४ ५८ ३१	११ २४ २६ ०७	१० १६ ३७ २७	०९ २३ ०४ ४८	०७ २८ ३८ १८	८
९	०२ २२ ५७ ४४	०३ २० १७ २१	११ २४ १२ ०७	०३ १९ १३ ०२	०५ १६ ३७ ५६	०३ १९ ०६ ३९	०३ ०५ ०६ ०९	११ २४ २२ ५७	१० १६ ३६ २१	०९ २३ ०३ २७	०७ २८ ३६ ५४	९
१०	०२ २३ ५४ ५८	०४ ०२ ०७ २६	११ २४ ५० ४८	०३ २० ०९ ००	०५ १६ ४३ ३७	०३ २० १९ १७	०३ ०५ १३ ४८	११ २४ १९ ४६	१० १६ ३५ १४	०९ २३ ०२ ०५	०७ २८ ३५ ३०	१०
११	०२ २४ ५२ ११	०४ १३ ५८ ५९	११ २५ २९ २०	०३ २१ ०१ ४४	०५ १६ ४९ २७	०३ २१ ३१ ५४	०३ ०५ २१ २८	११ २४ १६ ३५	१० १६ ३४ ०३	०९ २३ ०० ४२	०७ २८ ३४ ०७	११
१२	०२ २५ ४९ २५	०४ २५ ५४ ५८	११ २६ ०७ ४१	०३ २१ ५१ ०५	०५ १६ ५५ २६	०३ २२ ४४ २९	०३ ०५ २९ ०९	११ २४ १३ २५	१० १६ ३२ ५०	०९ २२ ५९ १९	०७ २८ ३२ ४५	१२
१३	०२ २६ ४६ ३८	०५ ०७ ५९ ५४	११ २६ ४५ ५२	०३ २२ ३६ ५८	०५ १७ ०१ ३३	०३ २३ ५७ ०२	०३ ०५ ३६ ५०	११ २४ १० १४	१० १६ ३१ ३५	०९ २२ ५७ ५४	०७ २८ ३१ २४	१३
१४	०२ २७ ४३ ५२	०५ २० १८ १६	११ २७ २३ ५३	०३ २३ १९ १२	०५ १७ ०७ ४९	०३ २५ ०९ ३४	०३ ०५ ४४ ३२	११ २४ ०७ ०३	१० १६ ३० १७	०९ २२ ५६ २८	०७ २८ ३० ०४	१४
१५	०२ २८ ४१ ०५	०६ ०२ ५५ ०४	११ २८ ०१ ४४	०३ २३ ५७ ४१	०५ १७ १४ १३	०३ २६ २२ ०३	०३ ०५ ५२ १५	११ २४ ०३ ५२	१० १६ २८ ५७	०९ २२ ५५ ०१	०७ २८ २८ ४५	१५
१६	०२ २९ ३८ १९	०६ १५ ५५ ०६	११ २८ ३९ २४	०३ २४ ३२ १५	०५ १७ २० ४५	०३ २७ ३४ ३१	०३ ०५ ५९ ५८	११ २४ ०० ४२	१० १६ २७ ३४	०९ २२ ५३ ३४	०७ २८ २७ २७	१६
१७	०३ ०० ३५ ३२	०६ २९ २२ २७	११ २९ १६ ५३	०३ २५ ०२ ४५	०५ १७ २७ २५	०३ २८ ४६ ५७	०३ ०६ ०७ ४१	११ २३ ५७ ३१	१० १६ २६ ०९	०९ २२ ५२ ०५	०७ २८ २६ १०	१७
१८	०३ ०१ ३२ ४६	०७ १३ १९ ३०	११ २९ ५४ ११	०३ २५ २९ ०२	०५ १७ ३४ १३	०३ २९ ५९ २१	०३ ०६ १५ २५	११ २३ ५४ २०	१० १६ २४ ४२	०९ २२ ५० ३६	०७ २८ २४ ५४	१८
१९	०३ ०२ ३० ००	०७ २७ ४५ ५६	०० ०० ३१ १८	०३ २५ ५० ५७	०५ १७ ४१ ०९	०४ ०१ ११ ४२	०३ ०६ २३ ०९	११ २३ ५१ ०९	१० १६ २३ १३	०९ २२ ४९ ०६	०७ २८ २३ ३९	१९
२०	०३ ०३ २७ १४	०८ १२ ३८ ००	०० ०१ ०८ १४	०३ २६ ०८ २१	०५ १७ ४८ १३	०४ ०२ २४ ०२	०३ ०६ ३० ५४	११ २३ ४७ ५८	१० १६ २१ ४१	०९ २२ ४७ ३६	०७ २८ २२ २६	२०
२१	०३ ०४ २४ २९	०८ २७ ४८ २३	०० ०१ ४४ ५८	०३ २६ २१ ०६	०५ १७ ५५ २४	०४ ०३ ३६ २०	०३ ०६ ३८ ३९	११ २३ ४४ ४७	१० १६ २० ०७	०९ २२ ४६ ०४	०७ २८ २१ १३	२१
२२	०३ ०५ २१ ४४	०९ १३ ०६ ५३	०० ०२ २१ ३१	०३ २६ २९ ०४	०५ १८ ०२ ४३	०४ ०४ ४८ ३६	०३ ०६ ४६ २४	११ २३ ४१ ३६	१० १६ १८ ३१	०९ २२ ४४ ३२	०७ २८ २० ०२	२२
२३	०३ ०६ १८ ५९	०९ २८ २२ ०९	०० ०२ ५७ ५१	०३ २६ ३२ १०	०५ १८ १० १०	०४ ०६ ०० ४९	०३ ०६ ५४ ०९	११ २३ ३८ २५	१० १६ १६ ५३	०९ २२ ४३ ००	०७ २८ १८ ५२	२३
२४	०३ ०७ १६ १६	१० १३ २३ ४२	०० ०३ ३३ ५९	०३ २६ ३० १८	०५ १८ १७ ४४	०४ ०७ १३ ०१	०३ ०७ ०१ ५४	११ २३ ३५ १५	१० १६ १५ १३	०९ २२ ४१ २६	०७ २८ १७ ४४	२४
२५	०३ ०८ १३ ३३	१० २८ ०३ ३१	०० ०४ ०९ ५४	०३ २६ २३ २६	०५ १८ २५ २५	०४ ०८ २५ १०	०३ ०७ ०९ ३९	११ २३ ३२ ०४	१० १६ १३ ३१	०९ २२ ३९ ५३	०७ २८ १६ ३६	२५
२६	०३ ०९ १० ५१	११ १२ १७ ०७	०० ०४ ४५ ३६	०३ २६ ११ ३५	०५ १८ ३३ १४	०४ ०९ ३७ १८	०३ ०७ १७ २४	११ २३ २८ ५३	१० १६ ११ ४७	०९ २२ ३८ १८	०७ २८ १५ ३०	२६
२७	०३ १० ०८ १०	११ २६ ०३ १८	०० ०५ २१ ०४	०३ २५ ५४ ४९	०५ १८ ४१ १०	०४ १० ४९ २४	०३ ०७ २५ ०८	११ २३ २५ ४२	१० १६ १० ०१	०९ २२ ३६ ४३	०७ २८ १४ २५	२७
२८	०३ ११ ०५ ३०	०० ०९ २३ ३४	०० ०५ ५६ १९	०३ २५ ३३ १३	०५ १८ ४९ १३	०४ १२ ०१ २७	०३ ०७ ३२ ५३	११ २३ २२ ३२	१० १६ ०८ १३	०९ २२ ३५ ०८	०७ २८ १३ २२	२८
२९	०३ १२ ०२ ५१	०० २२ २० ५७	०० ०६ ३१ १९	०३ २५ ०७ ००	०५ १८ ५७ २३	०४ १३ १३ २९	०३ ०७ ४० ३८	११ २३ १९ २१	१० १६ ०६ २३	०९ २२ ३३ ३२	०७ २८ १२ २०	२९
३०	०३ १३ ०० १३	०१ ०४ ५९ १६	०० ०७ ०६ ०५	०३ २४ ३६ २५	०५ १९ ०५ ४०	०४ १४ २५ २९	०३ ०७ ४८ २२	११ २३ १६ १०	१० १६ ०४ ३१	०९ २२ ३१ ५६	०७ २८ ११ १९	३०
३१	०३ १३ ५७ ३६	०१ १७ २२ २४	०० ०७ ४० ३५	०३ २४ ०१ ४९	०५ १९ १४ ०४	०४ १५ ३७ २७	०३ ०७ ५६ ०६	११ २३ १२ ५९	१० १६ ०२ ३७	०९ २२ ३० १९	०७ २८ १० २०	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अगस्त सन् २००५ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५१' ४६"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
अग.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अग.
१	०३ १४ ५५ ००	०१ २९ ३४ ०२	०० ०८ १४ ५०	०३ २३ २३ ३८	०५ १९ २२ ३५	०४ १६ ४९ २२	०३ ०८ ०३ ४९	११ २३ ०९ ४८	१० १६ ०० ४२	०९ २२ २८ ४२	०७ २८ ०९ २२	१
२	०३ १५ ५२ २५	०२ ११ ३७ १७	०० ०८ ४८ ४९	०३ २२ ४२ २५	०५ १९ ३१ १२	०४ १८ ०१ १६	०३ ०८ ११ ३२	११ २३ ०६ ३७	१० १५ ५८ ४५	०९ २२ २७ ०५	०७ २८ ०८ २६	२
३	०३ १६ ४९ ५१	०२ २३ ३४ ४४	०० ०९ २२ ३१	०३ २१ ५८ ४७	०५ १९ ३९ ५६	०४ १९ १३ ०७	०३ ०८ १९ १४	११ २३ ०३ २७	१० १५ ५६ ४६	०९ २२ २५ २७	०७ २८ ०७ ३२	३
४	०३ १७ ४७ १८	०३ ०५ २८ २४	०० ०९ ५५ ५७	०३ २१ १३ २५	०५ १९ ४८ ४७	०४ २० २४ ५६	०३ ०८ २६ ५६	११ २३ ०० १६	१० १५ ५४ ४५	०९ २२ २३ ५०	०७ २८ ०६ ३८	४
५	०३ १८ ४४ ४७	०३ १७ १९ ५७	०० १० २९ ०६	०३ २० २७ ०६	०५ १९ ५७ ४४	०४ २१ ३६ ४३	०३ ०८ ३४ ३७	११ २२ ५७ ०५	१० १५ ५२ ४३	०९ २२ २२ १२	०७ २८ ०५ ४७	५
६	०३ १९ ४२ १६	०३ २९ १० ५४	०० ११ ०१ ५७	०३ १९ ४० ४१	०५ २० ०६ ४८	०४ २२ ४८ २८	०३ ०८ ४२ १७	११ २२ ५३ ५४	१० १५ ५० ४०	०९ २२ २० ३४	०७ २८ ०४ ५७	६
७	०३ २० ३९ ४६	०४ ११ ०२ ५१	०० ११ ३४ ३१	०३ १८ ५४ ५९	०५ २० १५ ५७	०४ २४ ०० १०	०३ ०८ ४९ ५७	११ २२ ५० ४४	१० १५ ४८ ३५	०९ २२ १८ ५६	०७ २८ ०४ ०८	७
८	०३ २१ ३७ १७	०४ २२ ५७ ४७	०० १२ ०६ ४६	०३ १८ १० ५५	०५ २० २५ १३	०४ २५ ११ ५०	०३ ०८ ५७ ३५	११ २२ ४७ ३३	१० १५ ४६ २९	०९ २२ १७ १८	०७ २८ ०३ २२	८
९	०३ २२ ३४ ४९	०५ ०४ ५८ ११	०० १२ ३८ ४२	०३ १७ २९ १८	०५ २० ३४ ३५	०४ २६ २३ २७	०३ ०९ ०५ १३	११ २२ ४४ २२	१० १५ ४४ २१	०९ २२ १५ ३९	०७ २८ ०२ ३६	९
१०	०३ २३ ३२ २२	०५ १७ ०७ ०६	०० १३ १० १९	०३ १६ ५१ ००	०५ २० ४४ ०३	०४ २७ ३५ ०१	०३ ०९ १२ ४९	११ २२ ४१ १२	१० १५ ४२ १२	०९ २२ १४ ०१	०७ २८ ०१ ५३	१०
११	०३ २४ २९ ५६	०५ २९ २८ १०	०० १३ ४१ ३७	०३ १६ १६ ४७	०५ २० ५३ ३७	०४ २८ ४६ ३३	०३ ०९ २० २४	११ २२ ३८ ०१	१० १५ ४० ०२	०९ २२ १२ २३	०७ २८ ०१ ११	११
१२	०३ २५ २७ ३१	०६ १२ ०५ २७	०० १४ १२ ३५	०३ १५ ४७ २२	०५ २१ ०३ १६	०४ २९ ५८ ०२	०३ ०९ २७ ५८	११ २२ ३४ ५०	१० १५ ३७ ५०	०९ २२ १० ४५	०७ २८ ०० ३१	१२
१३	०३ २६ २५ ०६	०६ २५ ०३ १०	०० १४ ४३ १२	०३ १५ २३ २३	०५ २१ १३ ०१	०५ ०१ ०९ २८	०३ ०९ ३५ ३१	११ २२ ३१ ३९	१० १५ ३५ ३७	०९ २२ ०९ ०७	०७ २७ ५९ ५२	१३
१४	०३ २७ २२ ४३	०७ ०८ २५ १०	०० १५ १३ २९	०३ १५ ०५ २४	०५ २१ २२ ५२	०५ ०२ २० ५१	०३ ०९ ४३ ०३	११ २२ २८ २८	१० १५ ३३ २४	०९ २२ ०७ २९	०७ २७ ५९ १५	१४
१५	०३ २८ २० २०	०७ २२ १४ १३	०० १५ ४३ २५	०३ १४ ५३ ५३	०५ २१ ३२ ४८	०५ ०३ ३२ ११	०३ ०९ ५० ३३	११ २२ २५ १७	१० १५ ३१ ०९	०९ २२ ०५ ५१	०७ २७ ५८ ४०	१५
१६	०३ २९ १७ ५८	०८ ०६ ३१ ००	०० १६ १३ ००	०३ १४ ४९ १२	०५ २१ ४२ ५०	०५ ०४ ४३ २८	०३ ०९ ५८ ०२	११ २२ २२ ०७	१० १५ २८ ५३	०९ २२ ०४ १४	०७ २७ ५८ ०७	१६
१७	०४ ०० १५ ३८	०८ २१ १३ २२	०० १६ ४२ १३	०३ १४ ५१ ३८	०५ २१ ५२ ५७	०५ ०५ ५४ ४२	०३ १० ०५ २९	११ २२ १८ ५६	१० १५ २६ ३६	०९ २२ ०२ ३७	०७ २७ ५७ ३६	१७
१८	०४ ०१ १३ १८	०९ ०६ १५ ५२	०० १७ ११ ०४	०३ १५ ०१ २४	०५ २२ ०३ ०९	०५ ०७ ०५ ५२	०३ १० १२ ५५	११ २२ १५ ४५	१० १५ २४ १९	०९ २२ ०१ ००	०७ २७ ५७ ०६	१८
१९	०४ ०२ ११ ००	०९ २१ २९ ५९	०० १७ ३९ ३२	०३ १५ १८ ३८	०५ २२ १३ २६	०५ ०८ १६ ५९	०३ १० २० १९	११ २२ १२ ३४	१० १५ २२ ०१	०९ २१ ५९ २४	०७ २७ ५६ ३८	१९
२०	०४ ०३ ०८ ४३	१० ०६ ४५ १५	०० १८ ०७ ३७	०३ १५ ४३ २२	०५ २२ २३ ४८	०५ ०९ २८ ०३	०३ १० २७ ४१	११ २२ ०९ २३	१० १५ १९ ४१	०९ २१ ५७ ४८	०७ २७ ५६ १२	२०
२१	०४ ०४ ०६ २७	१० २१ ५१ ०३	०० १८ ३५ १९	०३ १६ १५ ३५	०५ २२ ३४ १५	०५ १० ३९ ०३	०३ १० ३५ ०२	११ २२ ०६ १३	१० १५ १७ २२	०९ २१ ५६ १२	०७ २७ ५५ ४७	२१
२२	०४ ०५ ०४ १३	११ ०६ ३८ १७	०० १९ ०२ ३६	०३ १६ ५५ १४	०५ २२ ४४ ४७	०५ ११ ५० ०१	०३ १० ४२ २१	११ २२ ०३ ०२	१० १५ १५ ०१	०९ २१ ५४ ३७	०७ २७ ५५ २५	२२
२३	०४ ०६ ०२ ००	११ २१ ०० ४६	०० १९ २९ २८	०३ १७ ४२ १०	०५ २२ ५५ २४	०५ १३ ०० ५५	०३ १० ४९ ३८	११ २१ ५९ ५१	१० १५ १२ ४०	०९ २१ ५३ ०२	०७ २७ ५५ ०४	२३
२४	०४ ०६ ५९ ५०	०० ०४ ५५ ३५	०० १९ ५५ ५४	०३ १८ ३६ १२	०५ २३ ०६ ०६	०५ १४ ११ ४५	०३ १० ५६ ५३	११ २१ ५६ ४१	१० १५ १० १८	०९ २१ ५१ २८	०७ २७ ५४ ४५	२४
२५	०४ ०७ ५७ ४०	०० १८ २२ ४७	०० २० २१ ५४	०३ १९ ३७ ०५	०५ २३ १६ ५२	०५ १५ २२ ३३	०३ ११ ०४ ०७	११ २१ ५३ ३०	१० १५ ०७ ५६	०९ २१ ४९ ५४	०७ २७ ५४ २८	२५
२६	०४ ०८ ५५ ३३	०१ ०१ २४ ३३	०० २० ४७ २७	०३ २० ४४ ३४	०५ २३ २७ ४३	०५ १६ ३३ १७	०३ ११ ११ १८	११ २१ ५० १९	१० १५ ०५ ३४	०९ २१ ४८ २१	०७ २७ ५४ १३	२६
२७	०४ ०९ ५३ २७	०१ १४ ०४ २६	०० २१ १२ ३२	०३ २१ ५८ १६	०५ २३ ३८ ३८	०५ १७ ४३ ५७	०३ ११ १८ २७	११ २१ ४७ ०८	१० १५ ०३ ११	०९ २१ ४६ ४९	०७ २७ ५३ ५९	२७
२८	०४ १० ५१ २३	०१ २६ २६ ३३	०० २१ ३७ ०८	०३ २३ १७ ५२	०५ २३ ४९ ३८	०५ १८ ५४ ३५	०३ ११ २५ ३४	११ २१ ४३ ५८	१० १५ ०० ४८	०९ २१ ४५ १७	०७ २७ ५३ ४८	२८
२९	०४ ११ ४९ २१	०२ ०८ ३५ १४	०० २२ ०१ १६	०३ २४ ४२ ५५	०५ २४ ०० ४२	०५ २० ०५ ०८	०३ ११ ३२ ३९	११ २१ ४० ४७	१० १४ ५८ २४	०९ २१ ४३ ४६	०७ २७ ५३ ३८	२९
३०	०४ १२ ४७ २१	०२ २० ३४ ३३	०० २२ २४ ५३	०३ २६ १२ ५९	०५ २४ ११ ५१	०५ २१ १५ ३९	०३ ११ ३९ ४१	११ २१ ३७ ३६	१० १४ ५६ ००	०९ २१ ४२ १६	०७ २७ ५३ ३१	३०
३१	०४ १३ ४५ २३	०३ ०२ २८ १३	०० २२ ४८ ००	०३ २७ ४७ ३६	०५ २४ २३ ०४	०५ २२ २६ ०६	०३ ११ ४६ ४२	११ २१ ३४ २५	१० १४ ५३ ३६	०९ २१ ४० ४६	०७ २७ ५३ २५	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सितंबर सन् २००५ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५४' ४६"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
सितं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	सितं.
१	०४ १४ ४३ २६	०३ १४ १९ २२	०० २३ १० ३५	०३ २९ २६ १८	०५ २४ ३४ २१	०५ २३ ३६ २९	०३ ११ ५३ ३९	११ २१ ३१ १४	१० १४ ५१ १२	०९ २१ ३९ १७	०७ २७ ५३ २१	१
२	०४ १५ ४१ ३२	०३ २६ १० ३२	०० २३ ३२ ३९	०४ ०१ ०८ ३४	०५ २४ ४५ ४२	०५ २४ ४६ ४९	०३ १२ ०० ३५	११ २१ २८ ०३	१० १४ ४८ ४९	०९ २१ ३७ ५०	०७ २७ ५३ १९	२
३	०४ १६ ३९ ३९	०४ ०८ ०३ ५३	०० २३ ५४ ०९	०४ ०२ ५३ ५५	०५ २४ ५७ ०७	०५ २५ ५७ ०४	०३ १२ ०७ २७	११ २१ २४ ५३	१० १४ ४६ २५	०९ २१ ३६ २३	०७ २७ ५३ १९	३
४	०४ १७ ३७ ४७	०४ २० ०१ १३	०० २४ १५ ०६	०४ ०४ ४१ ५३	०५ २५ ०८ ३६	०५ २७ ०७ १६	०३ १२ १४ १७	११ २१ २१ ४२	१० १४ ४४ ०१	०९ २१ ३४ ५७	०७ २७ ५३ २१मा	४
५	०४ १८ ३५ ५८	०५ ०२ ०४ १७	०० २४ ३५ २९	०४ ०६ ३२ ००	०५ २५ २० ०८	०५ २८ १७ २४	०३ १२ २१ ०४	११ २१ १८ ३२	१० १४ ४१ ३७	०९ २१ ३३ ३१	०७ २७ ५३ २५	५
६	०४ १९ ३४ १०	०५ १४ १४ ५१	०० २४ ५५ १६	०४ ०८ २३ ५०	०५ २५ ३१ ४५	०५ २९ २७ २८	०३ १२ २७ ४९	११ २१ १५ २१	१० १४ ३९ १४	०९ २१ ३२ ०७	०७ २७ ५३ ३१	६
७	०४ २० ३२ २३	०५ २६ ३४ ५९	०० २५ १४ २८	०४ १० १६ ५८	०५ २५ ४३ २५	०६ ०० ३७ २८	०३ १२ ३४ ३०	११ २१ १२ १०	१० १४ ३६ ५१	०९ २१ ३० ४४	०७ २७ ५३ ३९	७
८	०४ २१ ३० ३९	०६ ०९ ०६ ३१	०० २५ ३३ ०३	०४ १२ ११ ०२	०५ २५ ५५ ०८	०६ ०१ ४७ २३	०३ १२ ४१ ०९	११ २१ ०९ ००	१० १४ ३४ २८	०९ २१ २९ २२	०७ २७ ५३ ४९	८
९	०४ २२ २८ ५५	०६ २१ ५२ २१	०० २५ ५१ ०२	०४ १४ ०५ ४३	०५ २६ ०६ ५५	०६ ०२ ५७ १४	०३ १२ ४७ ४४	११ २१ ०५ ४९	१० १४ ३२ ०६	०९ २१ २८ ०१	०७ २७ ५४ ००	९
१०	०४ २३ २७ १४	०७ ०४ ५५ ००	०० २६ ०८ २२	०४ १६ ०० ४३	०५ २६ १८ ४६	०६ ०४ ०७ ००	०३ १२ ५४ १७	११ २१ ०२ ३८	१० १४ २९ ४४	०९ २१ २६ ४१	०७ २७ ५४ १४	१०
११	०४ २४ २५ ३४	०७ १८ १७ ००	०० २६ २५ ०५	०४ १७ ५५ ४७	०५ २६ ३० ३९	०६ ०५ १६ ४१	०३ १३ ०० ४६	११ २० ५९ २७	१० १४ २७ २२	०९ २१ २५ २२	०७ २७ ५४ ३०	११
१२	०४ २५ २३ ५५	०८ ०२ ०० १६	०० २६ ४१ ०८	०४ १९ ५० ४२	०५ २६ ४२ ३६	०६ ०६ २६ १८	०३ १३ ०७ १२	११ २० ५६ १६	१० १४ २५ ०२	०९ २१ २४ ०४	०७ २७ ५४ ४७	१२
१३	०४ २६ २२ १८	०८ १६ ०५ २८	०० २६ ५६ ३२	०४ २१ ४५ १७	०५ २६ ५४ ३६	०६ ०७ ३५ ४९	०३ १३ १३ ३५	११ २० ५३ ०५	१० १४ २२ ४२	०९ २१ २२ ४८	०७ २७ ५५ ०७	१३
१४	०४ २७ २० ४२	०९ ०० ३१ ३०	०० २७ ११ १५	०४ २३ ३९ २४	०५ २७ ०६ ३९	०६ ०८ ४५ १६	०३ १३ १९ ५४	११ २० ४९ ५५	१० १४ २० २२	०९ २१ २१ ३३	०७ २७ ५५ २८	१४
१५	०४ २८ १९ ०८	०९ १५ १४ ५६	०० २७ २५ १७	०४ २५ ३२ ५३	०५ २७ १८ ४५	०६ ०९ ५४ ३६	०३ १३ २६ १०	११ २० ४६ ४४	१० १४ १८ ०४	०९ २१ २० १९	०७ २७ ५५ ५१	१५
१६	०४ २९ १७ ३६	१० ०० १० ०२	०० २७ ३८ ३८	०४ २७ २५ ४०	०५ २७ ३० ५४	०६ ११ ०३ ५२	०३ १३ ३२ २३	११ २० ४३ ३३	१० १४ १५ ४६	०९ २१ १९ ०६	०७ २७ ५६ १७	१६
१७	०५ ०० १६ ०६	१० १५ ०९ ०७	०० २७ ५१ १५	०४ २९ १७ ४०	०५ २७ ४३ ०५	०६ १२ १३ ०२	०३ १३ ३८ ३२	११ २० ४० २२	१० १४ १३ २९	०९ २१ १७ ५५	०७ २७ ५६ ४४	१७
१८	०५ ०१ १४ ३७	११ ०० ०३ ३७	०० २८ ०३ १०	०५ ०१ ०८ ४९	०५ २७ ५५ १९	०६ १३ २२ ०६	०३ १३ ४४ ३८	११ २० ३७ १२	१० १४ ११ १४	०९ २१ १६ ४५	०७ २७ ५७ १३	१८
१९	०५ ०२ १३ १०	११ १४ ४५ १८	०० २८ १४ २०	०५ ०२ ५९ ०४	०५ २८ ०७ ३६	०६ १४ ३१ ०४	०३ १३ ५० ४०	११ २० ३४ ०१	१० १४ ०८ ५९	०९ २१ १५ ३६	०७ २७ ५७ ४४	१९
२०	०५ ०३ ११ ४५	११ २९ ०७ ३०	०० २८ २४ ४५	०५ ०४ ४८ २२	०५ २८ १९ ५६	०६ १५ ३९ ५७	०३ १३ ५६ ३८	११ २० ३० ५०	१० १४ ०६ ४५	०९ २१ १४ २९	०७ २७ ५८ १७	२०
२१	०५ ०४ १० २२	०० १३ ०५ ५१	०० २८ ३४ २४	०५ ०६ ३६ ४४	०५ २८ ३२ १८	०६ १६ ४८ ४३	०३ १४ ०२ ३२	११ २० २७ ४०	१० १४ ०४ ३२	०९ २१ १३ २३	०७ २७ ५८ ५२	२१
२२	०५ ०५ ०९ ०२	०० २६ ३८ ३४	०० २८ ४३ १७	०५ ०८ २४ ०७	०५ २८ ४४ ४२	०६ १७ ५७ २४	०३ १४ ०८ २३	११ २० २४ २९	१० १४ ०२ २१	०९ २१ १२ १९	०७ २७ ५९ २८	२२
२३	०५ ०६ ०७ ४३	०१ ०९ ४६ ०८	०० २८ ५१ २१	०५ १० १० ३३	०५ २८ ५७ ०९	०६ १९ ०५ ५९	०३ १४ १४ १०	११ २० २१ १८	१० १४ ०० १०	०९ २१ ११ १६	०७ २८ ०० ०७	२३
२४	०५ ०७ ०६ २७	०१ २२ ३० ४७	०० २८ ५८ ३७	०५ ११ ५५ ५९	०५ २९ ०९ ३८	०६ २० १४ २७	०३ १४ १९ ५२	११ २० १८ ०७	१० १३ ५८ ०१	०९ २१ १० १५	०७ २८ ०० ४८	२४
२५	०५ ०८ ०५ १३	०२ ०४ ५५ ५९	०० २९ ०५ ०४	०५ १३ ४० २८	०५ २९ २२ १०	०६ २१ २२ ५०	०३ १४ २५ ३१	११ २० १४ ५७	१० १३ ५५ ५३	०९ २१ ०९ १५	०७ २८ ०१ ३०	२५
२६	०५ ०९ ०४ ०१	०२ १७ ०५ ५६	०० २९ १० ४१	०५ १५ २४ ००	०५ २९ ३४ ४४	०६ २२ ३१ ०५	०३ १४ ३१ ०६	११ २० ११ ४६	१० १३ ५३ ४७	०९ २१ ०८ १७	०७ २८ ०२ १४	२६
२७	०५ १० ०२ ५२	०२ २९ ०५ ०७	०० २९ १५ २६	०५ १७ ०६ ३६	०५ २९ ४७ २०	०६ २३ ३९ १५	०३ १४ ३६ ३६	११ २० ०८ ३५	१० १३ ५१ ४२	०९ २१ ०७ २०	०७ २८ ०३ ०१	२७
२८	०५ ११ ०१ ४५	०३ १० ५८ ००	०० २९ १९ २०	०५ १८ ४८ १५	०५ २९ ५९ ५८	०६ २४ ४७ १८	०३ १४ ४२ ०३	११ २० ०५ २४	१० १३ ४९ ३८	०९ २१ ०६ २५	०७ २८ ०३ ४९	२८
२९	०५ १२ ०० ४०	०३ २२ ४८ ४८	०० २९ २२ २२	०५ २० २९ ००	०६ ०० १२ ३८	०६ २५ ५५ १४	०३ १४ ४७ २४	११ २० ०२ १३	१० १३ ४७ ३६	०९ २१ ०५ ३१	०७ २८ ०४ ३९	२९
३०	०५ १३ ५९ ३७	०४ ०४ ४२ १६	०० २९ २४ ३२	०५ २२ ०८ ५१	०६ ०० २५ २०	०६ २७ ०३ ०३	०३ १४ ५२ ४२	११ १९ ५९ ०३	१० १३ ४५ ३६	०९ २१ ०४ ४०	०७ २८ ०५ ३०	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्टूबर सन् २००५ ई. प्रातः स्टेण्डर्ड टाइम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भ स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५४' ।४६"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
अक्टू.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अक्टू.
१	०५ १३ ५८ ३७	०४ १६ ३८ ३४	०० २९ २५ ४८	०५ २३ ४७ ४८	०६ ०० ३८ ०३	०६ २८ १० ४५	०३ १४ ५७ ५५	११ १९ ५५ ५२	१० १३ ४३ ३७	०९ २१ ०३ ४९	०७ २८ ०६ २४	१
२	०५ १४ ५७ ३८	०४ २८ ४३ २१	०० २९ २६ ११	०५ २५ २५ ५४	०६ ०० ५० ४९	०६ २९ १८ १९	०३ १५ ०३ ०४	११ १९ ५२ ४१	१० १३ ४१ ४०	०९ २१ ०३ ०१	०७ २८ ०७ २०	२
३	०५ १५ ५६ ४२	०५ १० ५७ ४१	०० २९ २५ ४०	०५ २७ ०३ ०९	०६ ०१ ०३ ३६	०७ ०० २५ ४६	०३ १५ ०८ ०८	११ १९ ४९ ३१	१० १३ ३९ ४५	०९ २१ ०२ १४	०७ २८ ०८ १७	३
४	०५ १६ ५५ ४८	०५ २३ २३ १०	०० २९ २४ १४	०५ २८ ३९ ३३	०६ ०१ १६ २५	०७ ०१ ३३ ०५	०३ १५ १३ ०७	११ १९ ४६ २०	१० १३ ३७ ५२	०९ २१ ०१ २९	०७ २८ ०९ १६	४
५	०५ १७ ५४ ५५	०६ ०६ ०० ५२	०० २९ २१ ५५	०६ ०० १५ ०९	०६ ०१ २९ १५	०७ ०२ ४० १६	०३ १५ १८ ०१	११ १९ ४३ ०९	१० १३ ३६ ००	०९ २१ ०० ४६	०७ २८ १० १७	५
६	०५ १८ ५४ ०५	०६ १८ ५१ ३४	०० २९ १८ ४१	०६ ०१ ४९ ५६	०६ ०१ ४२ ०६	०७ ०३ ४७ १९	०३ १५ २२ ५१	११ १९ ३९ ५९	१० १३ ३४ १०	०९ २१ ०० ०४	०७ २८ ११ २०	६
७	०५ १९ ५३ १७	०७ ०१ ५५ ४६	०० २९ १४ ३४	०६ ०३ २३ ५७	०६ ०१ ५४ ५९	०७ ०४ ५४ १३	०३ १५ २७ ३५	११ १९ ३६ ४८	१० १३ ३२ २२	०९ २० ५९ २५	०७ २८ १२ २५	७
८	०५ २० ५२ ३०	०७ १५ १३ ५३	०० २९ ०९ ३२	०६ ०४ ५७ ११	०६ ०२ ०७ ५३	०७ ०६ ०० ५८	०३ १५ ३२ १५	११ १९ ३३ ३७	१० १३ ३० ३७	०९ २० ५८ ४७	०७ २८ १३ ३१	८
९	०५ २१ ५१ ४५	०७ २८ ४६ ०७	०० २९ ०३ ३८	०६ ०६ २९ ३९	०६ ०२ २० ४९	०७ ०७ ०७ ३३	०३ १५ ३६ ५०	११ १९ ३० २६	१० १३ २८ ५३	०९ २० ५८ ११	०७ २८ १४ ३९	९
१०	०५ २२ ५१ ०३	०८ १२ ३२ २७	०० २८ ५६ ५०	०६ ०८ ०१ २१	०६ ०२ ३३ ४५	०७ ०८ १३ ५९	०३ १५ ४१ २०	११ १९ २७ १५	१० १३ २७ ११	०९ २० ५७ ३७	०७ २८ १५ ४९	१०
११	०५ २३ ५० २१	०८ २६ ३२ २३	०० २८ ४९ ०९	०६ ०९ ३२ १८	०६ ०२ ४६ ४२	०७ ०९ २० १५	०३ १५ ४५ ४४	११ १९ २४ ०४	१० १३ २५ ३२	०९ २० ५७ ०४	०७ २८ १७ ००	११
१२	०५ २४ ४९ ४२	०९ १० ४४ ४४	०० २८ ४० ३७	०६ ११ ०२ ३०	०६ ०२ ५९ ४१	०७ १० २६ २०	०३ १५ ५० ०४	११ १९ २० ५४	१० १३ २३ ५५	०९ २० ५६ ३४	०७ २८ १८ १३	१२
१३	०५ २५ ४९ ०४	०९ २५ ०७ २३	०० २८ ३१ १४	०६ १२ ३१ ५७	०६ ०३ १२ ४०	०७ ११ ३२ १५	०३ १५ ५४ १८	११ १९ १७ ४३	१० १३ २२ २०	०९ २० ५६ ०५	०७ २८ १९ २८	१३
१४	०५ २६ ४८ २८	१० ०९ ३७ ०७	०० २८ २१ ००	०६ १४ ०० ३९	०६ ०३ २५ ४०	०७ १२ ३७ ५८	०३ १५ ५८ २७	११ १९ १४ ३२	१० १३ २० ४७	०९ २० ५५ ३९	०७ २८ २० ४५	१४
१५	०५ २७ ४७ ५४	१० २४ ०९ ३५	०० २८ ०९ ५७	०६ १५ २८ ३६	०६ ०३ ३८ ४०	०७ १३ ४३ ३०	०३ १६ ०२ ३०	११ १९ ११ २२	१० १३ १९ १७	०९ २० ५५ १४	०७ २८ २२ ०३	१५
१६	०५ २८ ४७ २१	११ ०८ ३९ ३६	०० २७ ५८ ०५	०६ १६ ५५ ४६	०६ ०३ ५१ ४१	०७ १४ ४८ ५०	०३ १६ ०६ २८	११ १९ ०८ ११	१० १३ १७ ४८	०९ २० ५४ ५१	०७ २८ २३ २३	१६
१७	०५ २९ ४६ ५१	११ २३ ०१ ३५	०० २७ ४५ २६	०६ १८ २२ ०९	०६ ०४ ०४ ४३	०७ १५ ५३ ५८	०३ १६ १० २१	११ १९ ०५ ००	१० १३ १६ २३	०९ २० ५४ ३०	०७ २८ २४ ४४	१७
१८	०६ ०० ४६ २२	०० ०७ १० १४	०० २७ ३२ ००	०६ १९ ४७ ४५	०६ ०४ १७ ४५	०७ १६ ५८ ५३	०३ १६ १४ ०८	११ १९ ०१ ४९	१० १३ १४ ५९	०९ २० ५४ ११	०७ २८ २६ ०७	१८
१९	०६ ०१ ४५ ५६	०० २१ ०१ ११	०० २७ १७ ५०	०६ २१ १२ ३२	०६ ०४ ३० ४८	०७ १८ ०३ ३५	०३ १६ १७ ५०	११ १८ ५८ ३९	१० १३ १३ ३८	०९ २० ५३ ५४	०७ २८ २७ ३२	१९
२०	०६ ०२ ४५ ३२	०१ ०४ ३१ ३२	०० २७ ०२ ५५	०६ २२ ३६ २९	०६ ०४ ४३ ५१	०७ १९ ०८ ०४	०३ १६ २१ २६	११ १८ ५५ २८	१० १३ १२ २०	०९ २० ५३ ३९	०७ २८ २८ ५८	२०
२१	०६ ०३ ४५ १०	०१ १७ ४० ०६	०० २६ ४७ १९	०६ २३ ५९ ३२	०६ ०४ ५६ ५४	०७ २० १२ १९	०३ १६ २४ ५६	११ १८ ५२ १७	१० १३ ११ ०४	०९ २० ५३ २६	०७ २८ ३० २६	२१
२२	०६ ०४ ४४ ५०	०२ ०० २७ २५	०० २६ ३१ ०२	०६ २५ २१ ४०	०६ ०५ ०९ ५८	०७ २१ १६ २१	०३ १६ २८ २१	११ १८ ४९ ०६	१० १३ ०९ ५०	०९ २० ५३ १५	०७ २८ ३१ ५५	२२
२३	०६ ०५ ४४ ३२	०२ १२ ५५ ३३	०० २६ १४ ०६	०६ २६ ४२ ५०	०६ ०५ २३ ०२	०७ २२ २० ०७	०३ १६ ३१ ४०	११ १८ ४५ ५५	१० १३ ०८ ३९	०९ २० ५३ ०६	०७ २८ ३३ २६	२३
२४	०६ ०६ ४४ १६	०२ २५ ०७ ४३	०० २५ ५६ ३४	०६ २८ ०२ ५७	०६ ०५ ३६ ०६	०७ २३ २३ ३९	०३ १६ ३४ ५३	११ १८ ४२ ४५	१० १३ ०७ ३१	०९ २० ५२ ५९	०७ २८ ३४ ५८	२४
२५	०६ ०७ ४४ ०३	०३ ०७ ०८ ०४	०० २५ ३८ २७	०६ २९ २१ ५८	०६ ०५ ४९ १०	०७ २४ २६ ५६	०३ १६ ३८ ००	११ १८ ३९ ३४	१० १३ ०६ २५	०९ २० ५२ ५४	०७ २८ ३६ ३२	२५
२६	०६ ०८ ४३ ५२	०३ १९ ०१ १४	०० २५ १९ ४८	०७ ०० ३९ ४८	०६ ०६ ०२ १४	०७ २५ २९ ५७	०३ १६ ४१ ०१	११ १८ ३६ २३	१० १३ ०५ २२	०९ २० ५२ ५१	०७ २८ ३८ ०७	२६
२७	०६ ०९ ४३ ४३	०४ ०० ५२ ०४	०० २५ ०० ४०	०७ ०१ ५६ २०	०६ ०६ १५ १७	०७ २६ ३२ ४१	०३ १६ ४३ ५६	११ १८ ३३ १२	१० १३ ०४ २२	०९ २० ५२ ५०	०७ २८ ३९ ४३	२७
२८	०६ १० ४३ ३७	०४ १२ ४५ २०	०० २४ ४१ ०५	०७ ०३ ११ २९	०६ ०६ २८ २१	०७ २७ ३५ ०९	०३ १६ ४६ ४५	११ १८ ३० ०२	१० १३ ०३ २४	०९ २० ५२ ५१	०७ २८ ४१ २१	२८
२९	०६ ११ ४३ ३२	०४ २४ ४५ २७	०० २४ २१ ०६	०७ ०४ २५ ०६	०६ ०६ ४१ २४	०७ २८ ३७ १९	०३ १६ ४९ २८	११ १८ २६ ५१	१० १३ ०२ ३०	०९ २० ५२ ५४	०७ २८ ४३ ०१	२९
३०	०६ १२ ४३ ३०	०५ ०६ ५६ २०	०० २४ ०० ४५	०७ ०५ ३७ ०४	०६ ०६ ५४ २७	०७ २९ ३९ ११	०३ १६ ५२ ०५	११ १८ २३ ४०	१० १३ ०१ ३८	०९ २० ५२ ५९	०७ २८ ४४ ४२	३०
३१	०६ १३ ४३ ३०	०५ १९ २१ ०५	०० २३ ४० ०६	०७ ०६ ४७ १०	०६ ०७ ०७ ३०	०८ ०० ४० ४४	०३ १६ ५४ ३६	११ १८ २० ३०	१० १३ ०० ४८	०९ २० ५३ ०६	०७ २८ ४६ २४	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नवम्बर सन् २००५ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५१' ५६"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
नवं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	नवं.
१	०६ १४ ४३ ३१	०६ ०२ ०१ ५२	०० २३ ११ ११	०७ ०७ ५५ १५	०६ ०७ २० ३२	०८ ०१ ४१ ५८	०३ १६ ५७ ००	११ १८ १७ १९	१० १३ ०० ०२	०९ २० ५३ १५	०७ २८ ४८ ०७	१
२	०६ १५ ४३ ३५	०६ १४ ५९ ४१	०० २२ ५८ ०५	०७ ०९ ०१ ०४	०६ ०७ ३३ ३३	०८ ०२ ४२ ५२	०३ १६ ५९ १८	११ १८ १४ ०८	१० १२ ५९ १८	०९ २० ५३ २६	०७ २८ ४९ ५२	२
३	०६ १६ ४३ ४१	०६ २८ १४ २०	०० २२ ३६ ५०	०७ १० ०४ २२	०६ ०७ ४६ ३३	०८ ०३ ४३ २८	०३ १७ ०१ २९	११ १८ १० ५७	१० १२ ५८ ३८	०९ २० ५३ ३९	०७ २८ ५१ ३८	३
४	०६ १७ ४३ ४८	०७ ११ ४४ ३०	०० २२ १५ २९	०७ ११ ०४ ५२	०६ ०७ ५९ ३३	०८ ०४ ४३ ३५	०३ १७ ०३ ३४	११ १८ ०७ ४६	१० १२ ५८ ००	०९ २० ५३ ५५	०७ २८ ५३ ३५	४
५	०६ १८ ४३ ५७	०७ २५ २७ ५९	०० २१ ५४ ०६	०७ १२ ०२ १४	०६ ०८ १२ ३२	०८ ०५ ४३ २४	०३ १७ ०५ ३३	११ १८ ०४ ३५	१० १२ ५७ २५	०९ २० ५४ १२	०७ २८ ५५ १४	५
६	०६ १९ ४४ ०८	०८ ०९ २१ ५९	०० २१ ३२ ४५	०७ १२ ५६ ०६	०६ ०८ २५ ३०	०८ ०६ ४२ ४८	०३ १७ ०७ २५	११ १८ ०१ २५	१० १२ ५६ ५३	०९ २० ५४ ३१	०७ २८ ५७ ०३	६
७	०६ २० ४४ २०	०८ २३ २३ ३९	०० २१ ११ २७	०७ १३ ४६ ०१	०६ ०८ ३८ २६	०८ ०७ ४१ ४८	०३ १७ ०९ ११	११ १७ ५८ १४	१० १२ ५६ २४	०९ २० ५४ ५३	०७ २८ ५८ ५४	७
८	०६ २१ ४४ ३४	०९ ०७ ३० १३	०० २० ५० १८	०७ १४ ३१ ३४	०६ ०८ ५१ २२	०८ ०८ ४० २३	०३ १७ १० ५०	११ १७ ५५ ०३	१० १२ ५५ ५८	०९ २० ५५ १७	०७ २९ ०० ४६	८
९	०६ २२ ४४ ४९	०९ २१ ३९ २२	०० २० २९ १९	०७ १५ १२ ११	०६ ०९ ०४ १६	०८ ०९ ३८ ३०	०३ १७ १२ २३	११ १७ ५१ ५२	१० १२ ५५ ३६	०९ २० ५५ ४२	०७ २९ ०२ ३९	९
१०	०६ २३ ४५ ०६	१० ०५ ४९ ०८	०० २० ०८ ३४	०७ १५ ४७ १८	०६ ०९ १७ ०९	०८ १० ३६ १०	०३ १७ १३ ४९	११ १७ ४८ ४१	१० १२ ५५ १६	०९ २० ५६ १०	०७ २९ ०४ ३३	१०
११	०६ २४ ४५ २४	१० १९ ५७ ५१	०० १९ ४८ ०५	०७ १६ १६ १८	०६ ०९ ३० ०१	०८ ११ ३३ २०	०३ १७ १५ ०८	११ १७ ४५ ३१	१० १२ ५४ ५९	०९ २० ५६ ३९	०७ २९ ०६ २९	११
१२	०६ २५ ४५ ४३	११ ०४ ०३ ५०	०० १९ २७ ५६	०७ १६ ३८ ३०	०६ ०९ ४२ ५१	०८ १२ ३० ००	०३ १७ १६ २१	११ १७ ४२ २०	१० १२ ५४ ४५	०९ २० ५७ ११	०७ २९ ०८ २५	१२
१३	०६ २६ ४६ ०४	११ १८ ०५ ०८	०० १९ ०८ ०९	०७ १६ ५३ १३	०६ ०९ ५५ ३९	०८ १३ २६ ०९	०३ १७ १७ २७	११ १७ ३९ ०९	१० १२ ५४ ३४	०९ २० ५७ ४५	०७ २९ १० २२	१३
१४	०६ २७ ४६ २६	०० ०१ ५९ २६	०० १८ ४८ ४६	०७ १६ ५९ ४३	०६ १० ०८ २६	०८ १४ २१ ४४	०३ १७ १८ २७	११ १७ ३५ ५८	१० १२ ५४ २६	०९ २० ५८ २०	०७ २९ १२ २१	१४
१५	०६ २८ ४६ ५०	०० १५ ४४ ०५	०० १८ २९ ५०	०७ १६ ५७ १७	०६ १० २१ ११	०८ १५ १६ ४६	०३ १७ १९ १९	११ १७ ३२ ४८	१० १२ ५४ २१	०९ २० ५८ ५८मा	०७ २९ १४ २०	१५
१६	०६ २९ ४७ १५	०० २९ १६ १९	०० १८ ११ २३	०७ १६ ४५ २०	०६ १० ३३ ५५	०८ १६ ११ १२	०३ १७ २० ०६	११ १७ २९ ३७	१० १२ ५४ २०	०९ २० ५९ ३८	०७ २९ १६ २०	१६
१७	०७ ०० ४७ ४२	०१ १२ ३३ ४०	०० १७ ५३ २८	०७ १६ २३ १८	०६ १० ४६ ३६	०८ १७ ०५ ०२	०३ १७ २० ४५	११ १७ २६ २६	१० १२ ५४ २१	०९ २१ ०० १९	०७ २९ १८ २१	१७
१८	०७ ०१ ४८ ११	०१ २५ ३४ २४	०० १७ ३६ ०५	०७ १५ ५० ५४	०६ १० ५९ १६	०८ १७ ५८ १४	०३ १७ २१ १८	११ १७ २३ १५	१० १२ ५४ २५	०९ २१ ०१ ०३	०७ २९ २० २३	१८
१९	०७ ०२ ४८ ४१	०२ ०८ १७ ५२	०० १७ १९ १७	०७ १५ ०८ ०४	०६ ११ १९ ५३	०८ १८ ५० ४६	०३ १७ २१ ४४	११ १७ २० ०४	१० १२ ५४ ३३	०९ २१ ०१ ४९	०७ २९ २२ २६	१९
२०	०७ ०३ ४९ १३	०२ २० ४४ ३९	०० १७ ०३ ०७	०७ १४ १५ ०८	०६ ११ २४ २९	०८ १९ ४२ ३६	०३ १७ २२ ०३	११ १७ १६ ५३	१० १२ ५४ ४३	०९ २१ ०२ ३६	०७ २९ २४ २९	२०
२१	०७ ०४ ४९ ४७	०३ ०२ ५६ ४१	०० १६ ४७ ३५	०७ १३ १२ ५२	०६ ११ ३७ ०२	०८ २० ३३ ४५	०३ १७ २२ १६	११ १७ १३ ४२	१० १२ ५४ ५७	०९ २१ ०३ २६	०७ २९ २६ ३४	२१
२२	०७ ०५ ५० २२	०३ १४ ५७ ०२	०० १६ ३२ ४३	०७ १२ ०२ ३२	०६ ११ ४९ ३३	०८ २१ २४ ०९	०३ १७ २२ २१	११ १७ १० ३२	१० १२ ५५ १३	०९ २१ ०४ १७	०७ २९ २८ ३९	२२
२३	०७ ०६ ५० ५९	०३ २६ ४९ ४६	०० १६ १८ ३२	०७ १० ४५ ५६	०६ १२ ०२ ०२	०८ २२ १३ ४७	०३ १७ २२ २०	११ १७ ०७ २१	१० १२ ५५ ३३	०९ २१ ०५ ११	०७ २९ ३० ४५	२३
२४	०७ ०७ ५१ ३८	०४ ०८ ३९ ३८	०० १६ ०५ ०५	०७ ०९ २५ १८	०६ १२ १४ २९	०८ २३ ०२ ३७	०३ १७ २२ १३	११ १७ ०४ १०	१० १२ ५५ ५६	०९ २१ ०६ ०६	०७ २९ ३२ ५२	२४
२५	०७ ०८ ५२ १९	०४ २० ३१ ४८	०० १५ ५२ २१	०७ ०८ ०३ १५	०६ १२ २६ ५३	०८ २३ ५० ३७	०३ १७ २१ ५८	११ १७ ०० ५९	१० १२ ५६ २२	०९ २१ ०७ ०४	०७ २९ ३४ ५९	२५
२६	०७ ०९ ५३ ०१	०५ ०२ ३१ ३५	०० १५ ४० २३	०७ ०६ ४२ ३०	०६ १२ ३९ १४	०८ २४ ३७ ४५	०३ १७ २१ ३७	११ १६ ५७ ४९	१० १२ ५६ ५१	०९ २१ ०८ ०३	०७ २९ ३७ ०७	२६
२७	०७ १० ५३ ४४	०५ १४ ४४ ०३	०० १५ २९ ११	०७ ०५ २५ ४७	०६ १२ ५१ ३३	०८ २५ २४ ००	०३ १७ २१ ०९	११ १६ ५४ ३८	१० १२ ५७ २३	०९ २१ ०९ ०४	०७ २९ ३९ १६	२७
२८	०७ ११ ५४ २९	०५ २७ १३ ४३	०० १५ १८ ४६	०७ ०४ १५ ३२	०६ १३ ०३ ४८	०८ २६ ०९ १८	०३ १७ २० ३४	११ १६ ५१ २७	१० १२ ५७ ५८	०९ २१ १० ०७	०७ २९ ४१ २५	२८
२९	०७ १२ ५५ १६	०६ १० ०४ ०३	०० १५ ०९ ०९	०७ ०३ १३ ४७	०६ १३ १६ ०१	०८ २६ ५३ ३८	०३ १७ १९ ५२	११ १६ ४८ २६	१० १२ ५८ ३६	०९ २१ ११ १२	०७ २९ ४३ ३५	२९
३०	०७ १३ ५६ ०४	०६ २३ १७ ०३	०० १५ ०० २१	०७ ०२ २२ ०५	०६ १३ २८ ११	०८ २७ ३६ ५७	०३ १७ १९ ०४	११ १६ ४५ ०६	१० १२ ५९ १७	०९ २१ १२ १८	०७ २९ ४५ ४५	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दिसंबर सन् २००५ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५४' ४६"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
दिसं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	दिसं.
१	०७ १४ ५६ ५३	०७ ०६ ५२ ४३	०० १४ ५२ २२	०७ ०१ ४१ २४	०६ १३ ४० १८	०८ २८ १९ १२	०३ १७ १८ ०९	११ १६ ४१ ५५	१० १३ ०० ०१	०९ २१ १३ २७	०७ २९ ४७ ५६	१
२	०७ १५ ५७ ४४	०७ २० ४८ ५०	०० १४ ४५ १२	०७ ०१ १२ १२	०६ १३ ५२ २२	०८ २९ ०० २१	०३ १७ १७ ०७	११ १६ ३८ ४४	१० १३ ०० ४९	०९ २१ १४ ३७	०७ २९ ५० ०७	२
३	०७ १६ ५८ ३५	०८ ०५ ०१ २७	०० १४ ३८ ५२	०७ ०० ५४ ३१	०६ १४ ०४.२२	०८ २९ ४० २२	०३ १७ १५ ५८	११ १६ ३५ ३३	१० १३ ०१ ३९	०९ २१ १५ ४९	०७ २९ ५२ १९	३
४	०७ १७ ५९ २८	०८ १९ २४ ३७	०० १४ ३३ २२	०७ ०० ४८ ०१	०६ १४ १६ १९	०९ ०० १९ १०	०३ १७ १४ ४३	११ १६ ३२ २२	१० १३ ०२ ३३	०९ २१ १७ ०३	०७ २९ ५४ ३१	४
५	०७ १९ ०० २२	०९ ०३ ५३ ०७	०० १४ २८ ४२	०७ ०० ५२ ०८	०६ १४ २८ १३	०९ ०० ५६ ४२	०३ १७ १३ २१	११ १६ २९ ११	१० १३ ०३ २९	०९ २१ १८ १९	०७ २९ ५६ ४४	५
६	०७ २० ०१ १६	०९ १८ १८ ०७	०० १४ २४ ५२	०७ ०१ ०६ ०६	०६ १४ ४० ०२	०९ ०१ ३२ ५७	०३ १७ ११ ५३	११ १६ २६ ००	१० १३ ०४ २९	०९ २१ १९ ३७	०७ २९ ५८ ५७	६
७	०७ २१ ०२ १२	१० ०२ ३७ ५८	०० १४ २१ ५२	०७ ०१ २९ ०७	०६ १४ ५१ ४९	०९ ०२ ०७ ४९	०३ १७ १० १९	११ १६ २२ ४९	१० १३ ०५ ३१	०९ २१ २० ५६	०८ ०० ०१ १०	७
८	०७ २२ ०३ ०८	१० १६ ४८ ४३	०० १४ १९ ४२	०७ ०२ ०० १७	०६ १५ ०३ ३१	०९ ०२ ४१ १५	०३ १७ ०८ ३७	११ १६ १९ ३९	१० १३ ०६ ३७	०९ २१ २२ १७	०८ ०० ०३ २४	८
९	०७ २३ ०४ ०४	११ ०० ४८ ५५	०० १४ १८ २१	०७ ०२ ३८ ४७	०६ १५ १५ ०९	०९ ०३ १३ १३	०३ १७ ०६ ५०	११ १६ १६ २८	१० १३ ०७ ४५	०९ २१ २३ ४०	०८ ०० ०५ ३७	९
१०	०७ २४ ०५ ०२	११ १४ ३८ २१	०० १४ १७ ४८	०७ ०३ २३ ४६	०६ १५ २६ ४८	०९ ०३ ४३ ३७	०३ १७ ०४ ५६	११ १६ १३ १७	१० १३ ०८ ५६	०९ २१ २५ ०४	०८ ०० ०७ ५१	१०
११	०७ २५ ०५ ५९	११ २८ १७ १९	०० १४ १८ ०४	०७ ०४ १४ ३०	०६ १५ ३८ १५	०९ ०४ १२ २५	०३ १७ ०२ ५६	११ १६ १० ०६	१० १३ १० ११	०९ २१ २६ ३०	०८ ०० १० ०६	११
१२	०७ २६ ०६ ५८	०० ११ ४८ १२	०० १४ १९ ०७	०७ ०५ १० १७	०६ १५ ४९ ४१	०९ ०४ ३९ ३३	०३ १७ ०० ४९	११ १६ ०६ ५६	१० १३ ११ २८	०९ २१ २७ ५७	०८ ०० १२ २०	१२
१३	०७ २७ ०७ ५७	०० २५ ०५ ००	०० १४ २० ५७	०७ ०६ १० २९	०६ १६ ०१ ०३	०९ ०५ ०४ ५६	०३ १६ ५८ ३७	११ १६ ०३ ४५	१० १३ १२ ४८	०९ २१ २९ २७	०८ ०० १४ ३४	१३
१४	०७ २८ ०८ ५६	०१ ०८ १३ २२	०० १४ २३ ३३	०७ ०७ १४ ३४	०६ १६ १२ २१	०९ ०५ २८ ३१	०३ १६ ५६ १९	११ १६ ०० ३८	१० १३ १४ ११	०९ २१ ३० ५७	०८ ०० १६ ४९	१४
१५	०७ २९ ०९ ५७	०१ २१ १० ३०	०० १४ २६ ५५	०७ ०८ २२ ०१	०६ १६ २३ ३४	०९ ०५ ५० १३	०३ १६ ५३ ५४	११ १५ ५७ २३	१० १३ १५ ३७	०९ २१ ३२ ३०	०८ ०० १९ ०४	१५
१६	०८ ०० १० ५८	०२ ०३ ५५ ३२	०० १४ ३१ ०१	०७ ०९ ३२ २५	०६ १६ ३४ ४४	०९ ०६ १० ००	०३ १६ ५१ २४	११ १५ ५४ १२	१० १३ १७ ०५	०९ २१ ३४ ०३	०८ ०० २१ १८	१६
१७	०८ ०१ १२ ००	०२ १६ २७ ५३	०० १४ ३५ ५१	०७ १० ४५ २४	०६ १६ ४५ ४८	०९ ०६ २७ ४८	०३ १६ ४८ ४७	११ १५ ५१ ०१	१० १३ १८ ३७	०९ २१ ३५ ३०	०८ ०० २३ ३३	१७
१८	०८ ०२ १३ ०२	०२ २८ ४७ ३२	०० १४ ४१ २५	०७ ११ ०० ३६	०६ १६ ५६ ४८	०९ ०६ ४३ ३२	०३ १६ ४६ ०५	११ १५ ४७ ५०	१० १३ २० ११	०९ २१ ३७ १६	०८ ०० २५ ४७	१८
१९	०८ ०३ १४ ०५	०३ १० ५५ २२	०० १४ ४७ ४१	०७ १३ १७ ४६	०६ १७ ०७ ४३	०९ ०६ ५७ ०८	०३ १६ ४३ १७	११ १५ ४४ ३९	१० १३ २१ ४८	०९ २१ ३८ ५४	०८ ०० २८ ०२	१९
२०	०८ ०४ १५ ०९	०३ २२ ५३ १९	०० १४ ५४ ३८	०७ १४ ३६ ३९	०६ १७ १८ ३३	०९ ०७ ०८ ३४	०३ १६ ४० २६	११ १५ ४१ २८	१० १३ २३ २८	०९ २१ ४० ३६	०८ ०० ३० १७	२०
२१	०८ ०५ १६ १४	०४ ०४ ४४ २२	०० १५ ०२ १७	०७ १५ ५७ ०१	०६ १७ २९ १९	०९ ०७ १७ ४६	०३ १६ ३७ २५	११ १५ ३८ १८	१० १३ २५ १०	०९ २१ ४२ १५	०८ ०० ३२ ३१	२१
२२	०८ ०६ १७ १९	०४ १६ ३२ २९	०० १५ १० ३६	०७ १७ १८ ४३	०६ १७ ३९ ५९	०९ ०७ २४ ४१	०३ १६ ३४ २१	११ १५ ३५ ०७	१० १३ २६ ५६	०९ २१ ४३ ५८	०८ ०० ३४ ४५	२२
२३	०८ ०७ १८ २६	०४ २८ ३२ ३४	०० १५ १९ ३४	०७ १८ ४१ ३४	०६ १७ ५० ३४	०९ ०७ २९ १५	०३ १६ २१ ११	११ १५ ३१ ५६	१० १३ २८ ४३	०९ २१ ४५ ४२	०८ ०० ३६ ५९	२३
२४	०८ ०८ १९ ३२	०५ १० १९ २८	०० १५ २९ १२	०७ २० ०५ २६	०६ १८ ०१ ०४	०९ ०७ ३१ २६	०३ १६ २७ ५६	११ १५ २८ ४६	१० १३ ३० ३४	०९ २१ ४७ २७	०८ ०० ३९ १३	२४
२५	०८ ०९ २० ४०	०५ २२ २९ १४	०० १५ ३९ २७	०७ २१ ३० १८	०६ १८ ११ २९	०९ ०७ ३१ ११	०३ १६ २४ ३५	११ १५ २५ ३५	१० १३ ३२ २७	०९ २१ ४९ १४	०८ ०० ४१ २७	२५
२६	०८ १० २१ ४८	०६ ०४ ५७ १०	०० १५ ५० २०	०७ २२ ५५ ५१	०६ १८ २१ ४८	०९ ०७ २८ ३०	०३ १६ २१ १०	११ १५ २२ २४	१० १३ ३४ २३	०९ २१ ५१ ०२	०८ ०० ४३ ४०	२६
२७	०८ ११ २२ ५७	०६ १७ ४८ ०८	०० १६ ०१ ५०	०७ २४ २२ ११	०६ १८ ३२ ०१	०९ ०७ २३ १९	०३ १६ १७ ३९	११ १५ १९ १३	१० १३ ३६ २१	०९ २१ ५२ ५२	०८ ०० ४५ ५३	२७
२८	०८ १२ २४ ०६	०७ ०१ ०५ २८	०० १६ १३ ५६	०७ २५ ४९ १२	०६ १८ ४२ ०९	०९ ०७ २५ ४०	०३ १६ १४ ०४	११ १५ १६ ०२	१० १३ ३८ २२	०९ २१ ५४ ४२	०८ ०० ४८ ०६	२८
२९	०८ १३ २५ ११	०७ १४ ५० ४६	०० १६ २६ ३७	०७ २७ १६ ४९	०६ १८ ५२ ११	०९ ०७ ०५ ३१	०३ १६ १० २३	११ १५ १२ ५१	१० १३ ४० २५	०९ २१ ५६ ३४	०८ ०० ५० १८	२९
३०	०८ १४ २६ २६	०७ २९ ४२ ५३	०० १६ ३९ ५३	०७ २८ ४५ ००	०६ १९ ०२ ०७	०९ ०६ ५२ ५७	०३ १६ ०६ २९	११ १५ ०९ ४०	१० १३ ४२ ३१	०९ २१ ५८ २७	०८ ०० ५२ ३०	३०
३१	०८ १५ २८ ४०	०८ १५ ४३ ५९	०० १६ ५३ ४३	०८ ०० १३ ०१	०६ १९ १२ ५७	०९ ०६ ३७ ४७	०३ १६ ०२ ४९	११ १५ ०६ २९	१० १३ ४४ ४०	०९ २२ ०० २१	०८ ०० ५४ ४२	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जनवरी सन् २००६ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५४' ५६"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
जनवरी	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जनवरी
१	०८ १६ २८ ४६	०८ २८ २५ ४३	०० १७ ०८ ०६	०८ ०१ ४२ ५३	०६ १९ २१ ४०	०९ ०६ २० १७	०३ १५ ५८ ५६	११ १५ ०३ १९	१० १३ ४६ ५१	०९ २२ ०२ १७	०८ ०० ५६ ५३	१
२	०८ १७ २९ ५७	०९ १३ २० ५२	०० १७ २३ ०२	०८ ०३ १२ ३१	०६ १९ ३१ १८	०९ ०६ ०० २४	०३ १५ ५४ ५८	११ १५ ०० ०८	१० १३ ४९ ०४	०९ २२ ०४ १३	०८ ०० ५९ ०४	२
३	०८ १८ ३१ ०७	०९ २८ १३ ०३	०० १७ ३८ ३०	०८ ०४ ४२ ३७	०६ १९ ४० ४९	०९ ०५ ३८ १४	०३ १५ ५० ५६	११ १४ ५६ ५७	१० १३ ५१ १९	०९ २२ ०६ ११	०८ ०१ ०१ १४	३
४	०८ १९ ३२ १७	१० १२ ५४ ३३	०० १७ ५४ २९	०८ ०६ १३ ०८	०६ १९ ५० १४	०९ ०५ १३ ५१	०३ १५ ४६ ४९	११ १४ ५३ ४६	१० १३ ५३ ३७	०९ २२ ०८ १०	०८ ०१ ०३ २३	४
५	०८ २० ३३ २७	१० २७ २० ००	०० १८ १० ५८	०८ ०७ ४४ ०४	०६ १९ ५९ ३२	०९ ०४ ४७ २४	०३ १५ ४२ ४०	११ १४ ५० ३५	१० १३ ५५ ५८	०९ २२ १० ०९	०८ ०१ ०५ ३२	५
६	०८ २१ ३४ ३७	११ ११ २६ ४७	०० १८ २७ ५८	०८ ०९ १५ २५	०६ २० ०८ ४३	०९ ०४ १८ ५८	०३ १५ ३८ २६	११ १४ ४७ २५	१० १३ ५८ २०	०९ २२ १२ १०	०८ ०१ ०७ ४०	६
७	०८ २२ ३५ ४६	११ २५ १४ ३४	०० १८ ४५ २५	०८ १० ४७ १०	०६ २० १७ ४८	०९ ०३ ४८ ४५	०३ १५ ३४ ०९	११ १४ ४४ १४	१० १४ ०० ४५	०९ २२ १४ १२	०८ ०१ ०९ ४८	७
८	०८ २३ ३६ ५५	०० ०८ ४४ ३१	०० १९ ०३ २१	०८ १२ १९ २०	०६ २० २६ ४५	०९ ०३ १६ ५४	०३ १५ २९ ४८	११ १४ ४१ ०३	१० १४ ०३ १२	०९ २२ १६ १४	०८ ०१ ११ ५५	८
९	०८ २४ ३८ ०३	०० २१ ५८ ३५	०० १९ २१ ४५	०८ १३ ५१ ५५	०६ २० ३५ ३६	०९ ०२ ४३ ३६	०३ १५ २५ २५	११ १४ ३७ ५२	१० १४ ०५ ४१	०९ २२ १८ १८	०८ ०१ १४ ०१	९
१०	०८ २५ ३९ ११	०१ ०४ ५८ ४५	०० १९ ४० ३४	०८ १५ २४ ५५	०६ २० ४४ २०	०९ ०२ ०९ ०६	०३ १५ २० ५८	११ १४ ३४ ४१	१० १४ ०८ १२	०९ २२ २० २२	०८ ०१ १६ ०७	१०
११	०८ २६ ४० १८	०१ १७ ४६ ४६	०० १९ ५९ ५०	०८ १६ ५८ २०	०६ २० ५२ ५६	०९ ०१ ३३ ३७	०३ १५ १६ २८	११ १४ ३१ ३१	१० १४ १० ४५	०९ २२ २२ २७	०८ ०१ १८ ११	११
१२	०८ २७ ४१ २५	०२ ०० २३ ५६	०० २० १९ ३१	०८ १८ ३२ १२	०६ २१ ०१ २६	०९ ०० ५७ २३	०३ १५ ११ ५६	११ १४ २८ २०	१० १४ १३ २१	०९ २२ २४ ३४	०८ ०१ २० १५	१२
१३	०८ २८ ४२ ३१	०२ १२ ५१ ०४	०० २० ३९ ३६	०८ २० ०६ ३०	०६ २१ ०९ ४८	०९ ०० २० ३९	०३ १५ ०७ २१	११ १४ २५ ०९	१० १४ १५ ५८	०९ २२ २६ ४०	०८ ०१ २२ १८	१३
१४	०८ २९ ४३ ३७	०२ २५ ०८ ४७	०० २१ ०० ०५	०८ २१ ४१ १५	०६ २१ १८ ०२	०८ २९ ४३ ४२	०३ १५ ०२ ४३	११ १४ २१ ५८	१० १४ १८ ३७	०९ २२ २८ ४८	०८ ०१ २४ २१	१४
१५	०९ ०० ४४ ४३	०३ ०७ १७ ३५	०० २१ २० ५७	०८ २३ १६ २९	०६ २१ २६ ०९	०८ २९ ०६ ४७	०३ १४ ५८ ०३	११ १४ १८ ४७	१० १४ २१ १९	०९ २२ ३० ५६	०८ ०१ २६ २२	१५
१६	०९ ०१ ४५ ४८	०३ १९ १८ १४	०० २१ ४२ ११	०८ २४ ५२ १३	०६ २१ ३४ ०८	०८ २८ ३० ०९	०३ १४ ५३ २१	११ १४ १५ ३६	१० १४ २४ ०२	०९ २२ ३३ ०५	०८ ०१ २८ २२	१६
१७	०९ ०२ ४६ ५३	०४ ०१ १२ ०५	०० २२ ०३ ४८	०८ २६ २८ २६	०६ २१ ४२ ००	०८ २७ ५४ ०५	०३ १४ ४८ ३७	११ १४ १२ २५	१० १४ २६ ४७	०९ २२ ३५ १५	०८ ०१ ३० २२	१७
१८	०९ ०३ ४७ ५७	०४ १३ ०१ १०	०० २२ २५ ४६	०८ २८ ०५ ११	०६ २१ ४९ ४४	०८ २७ १८ ५०	०३ १४ ४३ ५१	११ १४ ०९ १५	१० १४ २९ ३४	०९ २२ ३७ २६	०८ ०१ ३२ २१	१८
१९	०९ ०४ ४९ ०१	०४ २४ ४८ २५	०० २२ ४८ ०५	०८ २९ ४२ २७	०६ २१ ५७ १९	०८ २६ ४४ ३८	०३ १४ ३९ ०४	११ १४ ०६ ०४	१० १४ ३२ २२	०९ २२ ३९ ३७	०८ ०१ ३४ १८	१९
२०	०९ ०५ ५० ०५	०५ ०६ ३७ ३४	०० २३ १० ४४	०९ ०१ २० १६	०६ २२ ०४ ४७	०८ २६ ११ ४१	०३ १४ ३४ १४	११ १४ ०२ ५३	१० १४ ३५ १३	०९ २२ ४१ ४८	०८ ०१ ३६ १५	२०
२१	०९ ०६ ५१ ०८	०५ १८ ३३ ०७	०० २३ ३३ ४३	०९ ०२ ५८ ३९	०६ २२ १२ ०६	०८ २५ ४० १४	०३ १४ २९ २४	११ १३ ५९ ४३	१० १४ ३८ ०५	०९ २२ ४४ ०१	०८ ०१ ३८ १०	२१
२२	०९ ०७ ५२ ११	०६ ०० ४० ०६	०० २३ ५७ ०२	०९ ०४ ३७ ३६	०६ २२ १९ १८	०८ २५ १० २७	०३ १४ २४ ३२	११ १३ ५६ ३२	१० १४ ४० ५९	०९ २२ ४६ १३	०८ ०१ ४० ०५	२२
२३	०९ ०८ ५३ १३	०६ १३ ०३ ५३	०० २४ २० ४०	०९ ०६ १७ ०९	०६ २२ २६ २०	०८ २४ ४२ ३०	०३ १४ १९ ३९	११ १३ ५३ २१	१० १४ ४३ ५४	०९ २२ ४८ २६	०८ ०१ ४१ ५८	२३
२४	०९ ०९ ५४ १५	०६ २५ ४९ ४२	०० २४ ४४ ३६	०९ ०७ ५७ १७	०६ २२ ३३ १४	०८ २४ १६ ३३	०३ १४ १४ ४५	११ १३ ५० १०	१० १४ ४६ ५१	०९ २२ ५० ४०	०८ ०१ ४३ ५०	२४
२५	०९ १० ५५ १६	०७ ०९ ०२ ०३	०० २५ ०८ ५१	०९ ०९ ३८ ०२	०६ २२ ४० ००	०८ २३ ५२ ४३	०३ १४ ०९ ५१	११ १३ ४६ ५९	१० १४ ४९ ५०	०९ २२ ५२ ५४	०८ ०१ ४५ ४१	२५
२६	०९ ११ ५६ १७	०७ २२ ४३ ५१	०० २५ ३३ २३	०९ ११ १९ २५	०६ २२ ४६ ३७	०८ २३ ३१ ०७	०३ १४ ०४ ५६	११ १३ ४३ ४८	१० १४ ५२ ५०	०९ २२ ५५ ०९	०८ ०१ ४७ ३१	२६
२७	०९ १२ ५७ १८	०८ ०६ ५५ ३२	०० २५ ५८ १३	०९ १३ ०१ २५	०६ २२ ५३ ०५	०८ २३ ११ ५०	०३ १४ ०० ००	११ १३ ४० ३७	१० १४ ५५ ५२	०९ २२ ५७ २३	०८ ०१ ४९ २०	२७
२८	०९ १३ ५८ १७	०८ २१ ३४ १९	०० २६ २३ २०	०९ १४ ४४ ०३	०६ २२ ५९ २४	०८ २२ ५४ ५५	०३ १३ ५५ ०५	११ १३ ३७ २७	१० १४ ५८ ५५	०९ २२ ५९ ३९	०८ ०१ ५१ ०७	२८
२९	०९ १४ ५९ १६	०९ ०६ ३३ ५७	०० २६ ४८ ४४	०९ १६ २७ २०	०६ २३ ०५ ३४	०८ २२ ४० २६	०३ १३ ५० ०९	११ १३ ३४ १६	१० १५ ०१ ५९	०९ २३ ०१ ५४	०८ ०१ ५२ ५४	२९
३०	०९ १६ ०० १४	०९ २१ ४५ १७	०० २७ १४ २४	०९ १८ ११ १३	०६ २३ ११ ३४	०८ २२ २८ २५	०३ १३ ४५ १३	११ १३ ३१ ०५	१० १५ ०५ ०५	०९ २३ ०४ १०	०८ ०१ ५४ ३९	३०
३१	०९ १७ ०१ ११	१० ०६ ५७ ४५	०० २७ ४० २०	०९ १९ ५५ ४३	०६ २३ १७ २६	०८ २२ १८ ५२	०३ १३ ४० १८	११ १३ २७ ५४	१० १५ ०८ १३	०९ २३ ०६ २६	०८ ०१ ५६ २२	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फरवरी सन् २००६ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५४' ४६"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
फरवरी	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	फरवरी
१	०९ १८ ०२ ०७	१० २२ ०१ ०८	०० २८ ०६ ३२	०९ २१ ४० ४९	०६ २३ २३ ०८	०८ २२ ११ ४७	०३ १३ ३५ २४	११ १३ २४ ४३	१० १५ ११ २१	०९ २३ ०८ ४२	०८ ०१ ५८ ०४	१
२	०९ १९ ०३ ०२	११ ०६ ४७ १५	०० २८ ३२ ५८	०९ २३ २६ २९	०६ २३ २८ ४०	०८ २२ ०७ ११	०३ १३ ३० ३०	११ १३ २१ ३३	१० १५ १४ ३१	०९ २३ १० ५९	०८ ०१ ५९ ४५	२
३	०९ २० ०३ ५५	११ २१ १० ५२	०० २८ ५९ ४०	०९ २५ १२ ४०	०६ २३ ३४ ०३	०८ २२ ०५ ०१	०३ १३ २५ ३७	११ १३ १८ २२	१० १५ १७ ४२	०९ २३ १३ १५	०८ ०२ ०१ २५	३
४	०९ २१ ०४ ४७	०० ०५ ०९ ५४	०० २९ २६ ३५	०९ २६ ५९ २०	०६ २३ ३९ १६	०८ २२ ०५ १७	०३ १३ २० ४५	११ १३ १५ ११	१० १५ २० ५४	०९ २३ १५ ३२	०८ ०२ ०३ ०३	४
५	०९ २२ ०५ ३८	०० १८ ४४ ४४	०० २९ ५३ ४५	०९ २८ ४६ २६	०६ २३ ४४ १९	०८ २२ ०७ ५६	०३ १३ १५ ५४	११ १३ १२ ००	१० १५ २४ ०७	०९ २३ १७ ४८	०८ ०२ ०४ ३९	५
६	०९ २३ ०६ २७	०१ ०१ ५७ २४	०१ ०० २१ ०८	१० ०० ३३ ५२	०६ २३ ४९ १३	०८ २२ १२ ५६	०३ १३ ११ ०५	११ १३ ०८ ५०	१० १५ २७ २१	०९ २३ २० ०५	०८ ०२ ०६ १४	६
७	०९ २४ ०७ १५	०१ १४ ५० ४५	०१ ०० ४८ ४३	१० ०२ २१ ३४	०६ २३ ५३ ५७	०८ २२ २० १५	०३ १३ ०६ १७	११ १३ ०५ ३९	१० १५ ३० ३६	०९ २३ २२ २२	०८ ०२ ०७ ४८	७
८	०९ २५ ०८ ०१	०१ २७ २७ ५८	०१ ०१ १६ ३२	१० ०४ ०९ २३	०६ २३ ५८ ३१	०८ २२ २९ ४८	०३ १३ ०१ ३१	११ १३ ०२ २८	१० १५ ३३ ५२	०९ २३ २४ ३८	०८ ०२ ०९ २०	८
९	०९ २६ ०८ ४५	०२ ०९ ५१ ४८	०१ ०१ ४४ ३३	१० ०५ ५७ १२	०६ २४ ०२ ५४	०८ २२ ४१ ३३	०३ १२ ५६ ४७	११ १२ ५९ १७	१० १५ ३७ ०९	०९ २३ २६ ५५	०८ ०२ १० ५१	९
१०	०९ २७ ०९ २९	०२ २२ ०५ ०८	०१ ०२ १२ ४५	१० ०७ ४४ ५०	०६ २४ ०७ ०८	०८ २२ ५५ २७	०३ १२ ५२ ०५	११ १२ ५६ ०६	१० १५ ४० २७	०९ २३ २९ १२	०८ ०२ १२ २०	१०
११	०९ २८ १० १०	०३ ०४ १० ०६	०१ ०२ ४१ ०९	१० ०९ ३२ ०५	०६ २४ ११ ११	०८ २३ ११ २५	०३ १२ ४७ २५	११ १२ ५२ ५५	१० १५ ४३ ४६	०९ २३ ३१ २८	०८ ०२ १३ ४८	११
१२	०९ २९ १० ५१	०३ १६ ०८ ३३	०१ ०३ ०९ ४५	१० ११ १८ ४२	०६ २४ १५ ०५	०८ २३ २९ २५	०३ १२ ४२ ४८	११ १२ ४९ ४५	१० १५ ४७ ०६	०९ २३ ३३ ४४	०८ ०२ १५ १४	१२
१३	१० ०० ११ २९	०३ २८ ०२ ०३	०१ ०३ ३८ ३१	१० १३ ०४ २५	०६ २४ १८ ४८	०८ २३ ४९ २२	०३ १२ ३८ १३	११ १२ ४६ ३४	१० १५ ५० २६	०९ २३ ३६ ००	०८ ०२ १६ ३८	१३
१४	१० ०१ १२ ०७	०४ ०९ ५२ १२	०१ ०४ ०७ २९	१० १४ ४८ ५४	०६ २४ २२ २०	०८ २४ ११ १३	०३ १२ ३३ ४१	११ १२ ४३ २३	१० १५ ५३ ४७	०९ २३ ३८ १६	०८ ०२ १८ ०१	१४
१५	१० ०२ १२ ४३	०४ २१ ४० ४६	०१ ०४ ३६ ३६	१० १६ ३१ ४७	०६ २४ २५ ४२	०८ २४ ३४ ५३	०३ १२ २९ ११	११ १२ ४० १३	१० १५ ५७ ०९	०९ २३ ४० ३२	०८ ०२ १९ २२	१५
१६	१० ०३ १३ १८	०५ ०३ २९ ५५	०१ ०५ ०५ ५४	१० १८ १२ ३९	०६ २४ २८ ५४	०८ २५ ०० २०	०३ १२ २४ ४४	११ १२ ३७ ०२	१० १६ ०० ३१	०९ २३ ४२ ४७	०८ ०२ २० ४२	१६
१७	१० ०४ १३ ५१	०५ १५ २२ २१	०१ ०५ ३५ २१	१० १९ ५१ ०१	०६ २४ ३१ ५४	०८ २५ २७ २८	०३ १२ २० २१	११ १२ ३३ ५१	१० १६ ०३ ५४	०९ २३ ४५ ०३	०८ ०२ २२ ००	१७
१८	१० ०५ १४ २३	०५ २७ २१ १९	०१ ०६ ०४ ५९	१० २१ २६ २३	०६ २४ ३४ ४४	०८ २५ ५६ १५	०३ १२ १६ ००	११ १२ ३० ४१	१० १६ ०७ १८	०९ २३ ४७ १७	०८ ०२ २३ १६	१८
१९	१० ०६ १४ ५४	०६ ०९ ३० ३६	०१ ०६ ३४ ४६	१० २२ ५८ ११	०६ २४ ३७ २४	०८ २६ २६ ३७	०३ १२ ११ ४३	११ १२ २७ ३०	१० १६ १० ४२	०९ २३ ४९ ३२	०८ ०२ २४ ३०	१९
२०	१० ०७ १५ २४	०६ २१ ५४ २६	०१ ०७ ०४ ४२	१० २४ २५ ४८	०६ २४ ३९ ५२	०८ २६ ५८ ३०	०३ १२ ०७ ३०	११ १२ २४ १९	१० १६ १४ ०६	०९ २३ ५१ ४६	०८ ०२ २५ ४३	२०
२१	१० ०८ १५ ५२	०७ ०४ ३७ १५	०१ ०७ ३४ ४७	१० २५ ४८ ३७	०६ २४ ४२ १०	०८ २७ ३१ ५०	०३ १२ ०३ २०	११ १२ २१ ०८	१० १६ १७ ३१	०९ २३ ५३ ५९	०८ ०२ २६ ५४	२१
२२	१० ०९ १६ १९	०७ १७ ४३ १४	०१ ०८ ०५ ०१	१० २७ ०५ ५८	०६ २४ ४४ १६	०८ २८ ०६ ३५	०३ ११ ५९ १३	११ १२ १७ ५७	१० १६ २० ५६	०९ २३ ५६ १२	०८ ०२ २८ ०४	२२
२३	१० १० १६ ४८	०८ ०१ १५ ४०	०१ ०८ ३५ २४	१० २८ १७ १२	०६ २४ ४६ १२	०८ २८ ४२ ४०	०३ ११ ५५ ११	११ १२ १४ ४६	१० १६ २४ २२	०९ २३ ५८ २५	०८ ०२ २९ ११	२३
२४	१० ११ १७ ०८	०८ १५ १६ १५	०१ ०९ ०५ ५५	१० २९ २१ ४०	०६ २४ ४७ ५६	०८ २९ २० ०३	०३ ११ ५१ १३	११ १२ ११ ३६	१० १६ २७ ४८	०९ २४ ०० ३७	०८ ०२ ३० १७	२४
२५	१० १२ १७ ३१	०८ २९ ४४ १०	०१ ०९ ३६ ३५	११ ०० १८ ४४	०६ २४ ४९ २९	०८ २९ ५८ ४०	०३ ११ ४७ १८	११ १२ ०८ २५	१० १६ ३१ १४	०९ २४ ०२ ४९	०८ ०२ ३१ २१	२५
२६	१० १३ १७ ५३	०९ १४ ३५ ३६	०१ १० ०७ २४	११ ०१ ०७ ५०	०६ २४ ५० ५१	०९ ०० ३८ २८	०३ ११ ४३ २९	११ १२ ०५ १४	१० १६ ३४ ४०	०९ २४ ०५ ००	०८ ०२ ३२ २३	२६
२७	१० १४ १८ १३	०९ २९ ४३ ३६	०१ १० ३८ २०	११ ०१ ४८ २५	०६ २४ ५२ ०२	०९ ०१ १९ २४	०३ ११ ३९ ४३	११ १२ ०२ ०३	१० १६ ३८ ०७	०९ २४ ०७ १०	०८ ०२ ३३ २३	२७
२८	१० १५ १८ ३१	१० १४ ५८ ५३	०१ ११ ०९ २४	११ ०२ २० ०५	०६ २४ ५३ ०१	०९ ०२ ०१ २५	०३ ११ ३६ ०२	११ ११ ५८ ५३	१० १६ ४१ ३३	०९ २४ ०९ २०	०८ ०२ ३४ २२	२८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्च सन् २००६ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° १५' ४६"

ता. मार्च	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	राहु रा. अं. क. वि.	हर्शल रा. अं. क. वि.	नेपच्यून रा. अं. क. वि.	प्लूटो (वक्री) रा. अं. क. वि.	ता. मार्च
१	१० १६ १८ ४७	११ ०० ११ ०८	०१ ११ ४० ३६	११ ०२ ४२ ३०	०६ २४ ५३ ४९	०९ ०२ ४४ २९	०३ ११ ३२ २६	११ ११ ५५ ४२	१० १६ ४५ ००	०९ २४ ११ २९	०८ ०२ ३५ १८	१
२	१० १७ १९ ०२	११ १५ १० ३८	०१ १२ ११ ५६	११ ०२ ५५ २५	०६ २४ ५४ २६	०९ ०३ २८ ३२	०३ ११ २८ ५४	११ ११ ५२ ३१	१० १६ ४८ २७	०९ २४ १३ ३७	०८ ०२ ३६ १३	२
३	१० १८ १९ १४	११ २९ ४९ ४८	०१ १२ ४३ २३	११ ०२ ५८ ४८	०६ २४ ५४ ५१	०९ ०४ १३ ३३	०३ ११ २५ २८	११ ११ ४९ २०	१० १६ ५१ ५३	०९ २४ १५ ४५	०८ ०२ ३७ ०६	३
४	१० १९ १९ २५	०० १४ ०३ ५३	०१ १३ १४ ५७	११ ०२ ५२ ४४	०६ २४ ५५ ०५	०९ ०४ ५९ २९	०३ ११ २२ ०६	११ ११ ४६ १०	१० १६ ५५ २०	०९ २४ १७ ५२	०८ ०२ ३७ ५७	४
५	१० २० १९ ३४	०० २० ५१ ०४	०१ १३ ४६ ३८	११ ०२ ३७ २७	०६ २४ ५५ ०८	०९ ०५ ४६ १८	०३ ११ १८ ५०	११ ११ ४२ ५९	१० १६ ५८ ४६	०९ २४ १९ ५८	०८ ०२ ३८ ४६	५
६	१० २१ १९ ४०	०१ ११ १९ ५५	०१ १४ १८ २६	११ ०२ १३ २७	०६ २४ ५४ ५९	०९ ०६ ३३ ५७	०३ ११ १५ ३९	११ ११ ३९ ४८	१० १७ ०२ १३	०९ २४ २२ ०३	०८ ०२ ३९ ३३	६
७	१० २२ १९ ४४	०१ २४ ०८ ४७	०१ १४ ५० २०	११ ०१ ४१ ११	०६ २४ ५४ ४०	०९ ०७ २२ २६	०३ ११ १२ ३३	११ ११ ३६ ३७	१० १७ ०५ ३९	०९ २४ २४ ०८	०८ ०२ ४० १८	७
८	१० २३ १९ ४७	०२ ०६ ४५ ०२	०१ १५ २२ २१	११ ०१ ०१ ५४	०६ २४ ५४ ०८	०९ ०८ ११ ४२	०३ ११ ०९ ३२	११ ११ ३३ २७	१० १७ ०९ ०५	०९ २४ २६ ११	०८ ०२ ४१ ०१	८
९	१० २४ १९ ४७	०२ १९ ०४ ३१	०१ १५ ५४ २७	११ ०० १६ ११	०६ २४ ५३ २६	०९ ०९ ०१ ४३	०३ ११ ०६ ३७	११ ११ ३० १६	१० १७ १२ ३०	०९ २४ २८ १४	०८ ०२ ४१ ४३	९
१०	१० २५ १९ ४५	०३ ०१ ११ १३	०१ १६ २६ ४०	१० २९ २५ १९	०६ २४ ५२ ३२	०९ ०९ ५२ २८	०३ ११ ०३ ४८	११ ११ २७ ०५	१० १७ १५ ५५	०९ २४ ३० १६	०८ ०२ ४२ २२	१०
११	१० २६ १९ ४०	०३ १३ ०८ ५०	०१ १६ ५८ ५८	१० २८ ३० ३२	०६ २४ ५१ २७	०९ १० ४३ ५५	०३ ११ ०१ ०४	११ ११ २३ ५४	१० १७ १९ २०	०९ २४ ३२ १६	०८ ०२ ४२ ५९	११
१२	१० २७ १९ ३४	०३ २५ ०० ४३	०१ १७ ३१ २२	१० २७ ३३ ११	०६ २४ ५० ११	०९ ११ ३६ ०२	०३ १० ५८ २६	११ ११ २० ४३	१० १७ २२ ४५	०९ २४ ३४ १६	०८ ०२ ४३ ३५	१२
१३	१० २८ १९ २६	०४ ०६ ४९ ४६	०१ १८ ०३ ५२	१० २६ ३४ ३६	०६ २४ ४८ ४४	०९ १२ २८ ४९	०३ १० ५५ ५३	११ ११ १७ ३३	१० १७ २६ ०९	०९ २४ ३६ १५	०८ ०२ ४४ ०९	१३
१४	१० २९ १९ १६	०४ १८ ३८ २९	०१ १८ ३६ २६	१० २५ ३६ ०६	०६ २४ ४७ ०६	०९ १३ २२ १३	०३ १० ५३ २७	११ ११ १४ २२	१० १७ २९ ३२	०९ २४ ३८ १३	०८ ०२ ४४ ४०	१४
१५	११ ०० १९ ०३	०५ ०० २९ ०८	०१ १९ ०९ ०६	१० २४ ३८ ५७	०६ २४ ४५ १७	०९ १४ १६ १४	०३ १० ५१ ०६	११ ११ ११ ११	१० १७ ३२ ५५	०९ २४ ४० १०	०८ ०२ ४५ १०	१५
१६	११ ०१ १८ ४९	०५ १२ २३ ४७	०१ १९ ४१ ५१	१० २३ ४४ १६	०६ २४ ४३ १६	०९ १५ १० ४९	०३ १० ४८ ५१	११ ११ ०८ ०१	१० १७ ३६ १७	०९ २४ ४२ ०५	०८ ०२ ४५ ३८	१६
१७	११ ०२ १८ ३३	०५ २४ २४ ३०	०१ २० १४ ४१	१० २२ ५३ ०३	०६ २४ ४१ ०५	०९ १६ ०५ ५९	०३ १० ४६ ४२	११ ११ ०४ ५०	१० १७ ३९ ३९	०९ २४ ४४ ००	०८ ०२ ४६ ०४	१७
१८	११ ०३ १८ १४	०६ ०६ ३३ २३	०१ २० ४७ ३५	१० २२ ०६ ०८	०६ २४ ३८ ४३	०९ १७ ०१ ४०	०३ १० ४४ ३९	११ ११ ०१ ४०	१० १७ ४३ ००	०९ २४ ४५ ५३	०८ ०२ ४६ २७	१८
१९	११ ०४ १७ ५४	०६ १८ ५२ ४८	०१ २१ २० ३४	१० २१ २४ ११	०६ २४ ३६ १०	०९ १७ ५७ ५३	०३ १० ४२ ४३	११ १० ५८ २९	१० १७ ४६ २१	०९ २४ ४७ ४५	०८ ०२ ४६ ४९	१९
२०	११ ०५ १७ ३३	०७ ०१ २५ ०८	०१ २१ ५३ ३८	१० २० ४७ ४२	०६ २४ ३३ २६	०९ १८ ५४ ३६	०३ १० ४० ५२	११ १० ५५ १८	१० १७ ४९ ४०	०९ २४ ४९ ३६	०८ ०२ ४७ ०९	२०
२१	११ ०६ १७ ०१	०७ १४ १३ १६	०१ २२ २६ ४७	१० २० १७ ०२	०६ २४ ३० ३१	०९ १९ ५१ ४९	०३ १० ३९ ०८	११ १० ५२ ०७	१० १७ ५२ ५९	०९ २४ ५१ २६	०८ ०२ ४७ २७	२१
२२	११ ०७ १६ ४४	०७ २७ १९ ५०	०१ २३ ०० ००	१० १९ ५२ २५	०६ २४ २७ २६	०९ २० ४९ २९	०३ १० ३७ ३०	११ १० ४८ ५६	१० १७ ५६ १७	०९ २४ ५३ १५	०८ ०२ ४७ ४३	२२
२३	११ ०८ १६ १७	०८ १० ४७ १०	०१ २३ ३३ १७	१० १९ ३२ ५६	०६ २४ २४ ११	०९ २१ ४७ ३६	०३ १० ३५ ५८	११ १० ४५ ४५	१० १७ ५९ ३५	०९ २४ ५५ ०२	०८ ०२ ४७ ५७	२३
२४	११ ०९ १५ ४८	०८ २४ ३६ ४५	०१ २४ ०६ ३९	१० १९ २१ ३३	०६ २४ २० ४८	०९ २२ ४६ ०९	०३ १० ३४ ३२	११ १० ४२ ३५	१० १८ ०२ ५१	०९ २४ ५६ ४८	०८ ०२ ४८ ०९	२४
२५	११ १० १५ १८	०९ ०८ ४८ ४५	०१ २४ ४० ०६	१० १९ १५ १४	०६ २४ १७ ०८	०९ २३ ४५ ०७	०३ १० ३३ १३	११ १० ३९ २४	१० १८ ०६ ०६	०९ २४ ५८ ३३	०८ ०२ ४८ १९	२५
२६	११ ११ १४ ४६	०९ २३ २१ २५	०१ २५ १३ ३६	१० १९ १४ ४८	०६ २४ १३ २१	०९ २४ ४४ २९	०३ १० ३२ ००	११ १० ३६ १३	१० १८ ०९ २१	०९ २५ ०० १६	०८ ०२ ४८ २७	२६
२७	११ १२ १४ १२	१० ०८ १० ४६	०१ २५ ४७ ११	१० १९ २० ०४	०६ २४ ०९ २४	०९ २५ ४४ १३	०३ १० ३० ५४	११ १० ३३ ०२	१० १८ १२ ३४	०९ २५ ०१ ५८	०८ ०२ ४८ ३३	२७
२८	११ १३ १३ ३६	१० २३ १० ३३	०१ २६ २० ५०	१० १९ ३० ५०	०६ २४ १७	०९ २६ ४४ २०	०३ १० २९ ५४	११ १० २९ ५२	१० १८ १५ ४७	०९ २५ ०३ ३९	०८ ०२ ४८ ३७	२८
२९	११ १४ १२ ५८	११ ०८ २३ ४०	०१ २६ ५४ ३३	१० १९ ४६ ५०		०१ ००	०९ २७ ४४ ४८	०३ १० २८ ०१	११ १० २६ ४९	१० १८ १८ ५८	०९ २५ ०५ १८	०८ ०२ ४८ ३९	२९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सम्वत्सर फल श्रवण

अचिन्त्या व्यक्त रूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः॥ १॥
विनायकं प्रणम्यादौ देवी वाग्देवतां गुरुम्। संवत्सर फलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया॥ २॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नूतन सम्वत्सर प्रारम्भ होता है, उस दिन प्रति घर पर ध्वज लगावें। तोरणादि से गृह सुशोभित करें, मंगल स्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा करें। स्त्रियां, शिशु आदि वस्त्र-आभूषण आदि धारण करके उत्सव मनावें, ज्योतिषी जी का सत्कार कर उनसे सम्वत्सर का फल श्रवण करें।

प्रातःकाल में कटु नीम के कोमल पत्ते और पुष्प लेकर उसमें काली मिर्च, हींग, नमक (सेंधा), आजवायन, जीरा और खांड मिलाकर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह भक्षण करें, इस प्रयोग से अनेक रोगों की शान्ति होती है।

सम्वत्सर के फल श्रवण का माहात्म्य—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नव सम्वत् का वर्षफल किसी ब्राह्मण या ज्योतिषी द्वारा सुनें एवं गायत्री मंत्र "ॐ भूर्भुवः स्वः सम्वत्सर अधिपति आवाहयामि पूजयामि च" मंत्र का जप कर पूजन करें तथा पंचांगस्थ गणेश जी और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर याचकों को दान मिष्ठान्नादि युक्त भोजन करवा कर उन्हें नव वर्ष पंचांग, वस्त्र, फल, मिठाई आदि दक्षिणा सहित यथाशक्ति दान देकर उनका आशीर्वाद ग्रहण करें, तदुपरान्त सम्वत्सर फल श्रवण कर सम्पूर्ण दिन आनन्द पूर्वक व्यतीत करें, जैसे कहा है—

"यश्चैव शुक्ल प्रतिपदे धीमान् शृंणोति वार्षीय फल पवित्रं भवेद् धनाढ्यों बहुसस्य भोगो जह्याश्च पीड़ां तनुजां च वार्षिकीम्।"

अर्थात् जो व्यक्ति चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को इस पवित्र वर्ष फल का श्रवण करता है, वह बहुत धन धान्य से युक्त होता है और उसके अनेक दुःखों की निवृत्ति होती है। इस दिन से श्रीराम नवमी तक श्री दुर्गा पूजन एवं पाठादि का भी विशेष माहात्म्य होता है।

अथ युग व्यवस्था—(काल गणना) चारों युग एक हजार बार बीत जाने पर ब्रह्मा जी का एक दिन पूरा होता है। चतुर्युगी का मान ४३,२०,००० सौर वर्ष है। इस प्रकार १००० चतुर्युगी बीत जाने पर ब्रह्मा जी का एक दिन होता है। ब्रह्माजी के एक दिन में १४ मन्वन्तर होते हैं। एक मन्वन्तर में ७१ महायुग (चतुर्युगी) होती है। अब तक ६ मन्वन्तर के २८ महायुग बीत गये हैं और २७वाँ महायुग चल रहा है। इस महायुग में सतयुग, त्रेता, द्वापर बीत गये हैं। कलियुग की आयु ४,३२,००० वर्ष है। इसमें ५१०६ वर्ष बीत गये हैं। ब्रह्माजी की आयु का ५६वां वर्ष चल रहा है, प्रथम दिन का उदय होकर १३ घड़ी ४२ पल ३ विपल ४३ प्रतिपल बीत गये हैं।

चतुर्युगानां व्यवस्था

सतयुग—इसकी उत्पत्ति कार्तिक शुक्ल नवमी को हुई। इसकी आयु १७,२८,००० वर्ष की थी। इसमें मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह यह चार अवतार हुए, मत्स्य जी ने वेदों का उद्धार किया, नृसिंह जी ने हिरण्यकश्यप का वध किया। इस युग में हर जाति अपने-अपने धर्म पर स्थिर थी, ब्राह्मण लोग वेदों के ज्ञाता और सत्य बोलने वाले तथा त्यागी होते थे। शाप और वरदान देने में समर्थ होते थे। क्षत्रिय अपने बाहुबल से संसार की मर्यादा को बांधे हुए थे। वैश्य व्यापार में तत्पर, सत्यवक्ता थे। शूद्र सेवा करते हुए अपने धर्म में तत्पर थे। समय पर वर्षा होती थी। फसलें अच्छी होती थीं। स्त्रियाँ पतिव्रता होती थीं। गौएं दूध अधिक देती थीं। मनुष्य की परमायुः १,००,००० वर्ष, बाल्यावस्था १०,००० वर्ष, देह की लम्बाई २१ हाथ थी। पुण्य २० विश्वे, पाप का नाम तक भी न था। सुवर्ण और रत्नादि का व्यवहार था और पुष्कर तीर्थ प्रधान था। सूर्य ग्रहण २०,००० और चन्द्र ग्रहण २,००० थे।

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ल तृतीया को त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु १२,९६,००० वर्ष थी। इस युग में तीन अवतार—वामन, परशुराम, रामचन्द्र हुए। श्री वामन जी ने राजा बलि से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर बाद में समस्त पृथ्वी को तीन पैर में नाप कर राजा बलि को पाताल का राज्य दिया। श्री परशुराम जी ने अभिमानी क्षत्रियों का २१ बार बध करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था। श्री रामचन्द्रजी ने रावणादि राक्षसों का वध किया। मनुष्य की परमायुः १०,००० वर्ष और बाल्यावस्था १,००० वर्ष थी। पुण्य १५ विश्वे, पाप ५ विश्वे था। पुरुष का देहमान १४ हाथ था, ब्राह्मण वेदों के ज्ञाता थे और किंचिन्नचून तपोनिष्ट त्यागी थी। वे शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां पतिव्रता थीं। सुवर्ण का सिक्का चलता था। सूर्य ग्रहण २०,००० और चन्द्र ग्रहण ३०,००० थे। तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

द्वापर युग—माघ कृष्ण ३० को द्वापर युग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ८,६४,०० वर्ष थी। इसमें २ अवतार श्री कृष्ण जी ने कंस, शिशुपालादि का वध किया और बलराम ने धर्म का उद्धार किया। पुरुष की परमायु १,००० वर्ष थी। बाल्यावस्था १०० वर्ष थी। पुरुष का देहमान ७ हाथ था। ब्राह्मण कुछ धर्म में तत्पर कुछ सत्यवक्ता, कुछ झूठ भी बोलते थे। अपने धर्म-कर्म पर स्थित परन्तु लोभयुक्त थे। चांदी के सिक्के का व्यवहार अधिक था। कुरुक्षेत्र तीर्थ प्रधान था। पुण्य १० विश्वे था। सूर्यग्रहण २४,००० और चन्द्र ग्रहण ३६,००० थे।

कलियुग—भाद्र कृष्ण १३ को कलियुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ४,३२,००० वर्ष है। इसमें बुद्ध व कल्कि अवतार हैं। उनका काम धर्म का उद्धार करना है। मनुष्य की परमायु १२० वर्ष और बाल्यावस्था १० वर्ष है। पुरुष का देहमान साढ़े तीन हाथ है। पुण्य ५ विश्वे, पाप १५ विश्वे है। गंगा तीर्थ प्रधान है। इस युग में मिट्टी के पात्र और पत्र व ताम्र का सिक्का व्यवहार में लाया जाएगा। सब जाति के लोग अपने धर्म से गिर जायेंगे। ब्राह्मण लोग वेदों से विमुख तप, यज्ञादि धर्म-कर्म से विमुख शाप देने में असमर्थ होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को छोड़ देंगे। वैश्य लोग व्यवहार में खोटे होंगे। धूर्त विद्या की पूजा होगी। सूर्य और चन्द्र ग्रहण ४६,००० होंगे। सं. २०६२ में कलियुग के ५१०६ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और शेष कलियुग के ४,२६,८९४ वर्ष रह रहे हैं। कलियुग के अंत में सम्भल ग्राम में विष्णुयश नामक ब्राह्मण के घर में कल्कि अवतार होगा। कलियुग में नीच लोगों की पूजा होगी। अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। व्यभिचारी स्त्रियाँ अपने को सती कहेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में चलेंगे। पिता कन्या को बेचेंगे। स्त्रियों को छोटी आयु में गर्भ होने लगेंगे। लोग गौ, ब्राह्मण की हत्या से भय नहीं करेंगे। संतान का माता-पिता के साथ धन के कारण ही प्रेम रहेगा। धर्म गौण व अर्थ प्रधान रहेगा। मुख्य तीर्थ श्रीगंगा होंगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सम्वत् २०६२ वि. मध्ये सम्वत्सर राजादि फलम्

अथास्मिन् सम्वत्सर २०६२ वर्षे सृष्टिसंवत्शब्दा सौर वर्ष संख्या १९५५८८५१०६, तत्र कृतयुग प्रमाणम् १७२८०००, त्रेतायुग प्रमाणम् १२९६०००, द्वापर युग प्रमाणम् ८६४०००, कलियुगं प्रमाणम् ४३२०००, तन्मध्ये गतकलिः ५१०६, भौग्यकलिः सौर वर्ष संख्या ४२६८९४, श्रीकृष्ण जन्मतोगताब्दाः ५२४१, श्रीमन्नृपति वीर विक्रमादित्य राज्यात् गताब्दाः २०६२, शकाब्दाः १९२७, बार्हस्पत्यमानेन वर्षनाम फाल्गुनः, ईस्वीय सन् २००५-२००६, हिजरी सन् १४२६-२७, श्रीमहावीर निर्वाण जैन संवत् २५३१-३२, भारतीय गणराज्य सम्वत् ५६-५७ प्रवर्तते।

समय विश्वा ५, समय वाहन "महिष", स्तम्भाः ३ जल, अन्न, वायु, सोमवती अमावस्या २, सोमवती पंचमी १, अंगार की चतुर्थी ३, भानु सप्तमी १, बुधाष्टमी २, रवि दशमी १, समय मुहूर्त्ताः ३९०, समय दिनानि ३५५, तिथि क्षयः १८, तिथि वृद्धिः १३, उत्पत्ति विश्वा ९३, खपति विश्वा ९३, वर्षा विश्वा १७, धान्यम् १३, तृण ९, शीत १५, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, तयोरैक्यम् ११९, सत्य आधा, धर्म डयोढ़ा, पाप १८, शनि दृष्टि पूर्वे नेष्टं, वर्षेऽस्मिन्-भारते दृश्य ग्रहण ३ चन्द्रस्य १, सूर्यस्य २। मेघनाम "संवर्त", रोहिणी तटे, समय निवासो रजक गृहे। दैवज्ञं शुभाशुभ चिन्तनीयम्। वर्षारम्भ में गुरुमान से विष्णुविंशति का १२वां "विलम्ब" नाम का सम्वत्सर है। जिसका फल पूर्वाचार्यों ने इस प्रकार लिखा है।

विलम्ब नाम संवत्सर फलम्

विलम्ब वत्सरे भूपाः परस्पर विरोधिनः।
प्रजा पीड़ा अनर्थत्वं तथापि सुखिनो जनाः॥

जिस वर्ष विलम्ब नामक संवत्सर हो। शासक वर्गों में परस्पर वैर भाव बढ़ता है, प्रजा-पीड़न, अत्याचार जैसे कार्यों के बावजूद प्रजा सुखी भी रहती है।

अखिलेश्वर काल के कर्त्ता, अभियन्ता, लोकनायक, परमपिता परमात्मा की आज्ञा से चुने गये वर्ष के नागरिकारी राजा-मन्त्री आदि का फल न्यूनाधिक मात्रा में सर्वत्र होता है। किन्तु राजा का प्रभाव सर्वाधिक वसुन्धरा के स्वर्ग व भारत के ताज काश्मीर व अफगानिस्तान में होता है। इसी प्रकार मन्त्री का पूर्व के देश कलिंग में, सस्येश का ईशान (पूर्वोत्तर के मध्य) विदर्भ देश में, धान्येश का नर्मदा तट मध्यप्रदेश में, मेघेश का मगध देश में, रसेश का कौंकण व गोआ में, नीरसेश का उज्जैन, इन्दौर व मालवा देश में, फलेश का पश्चिमी भूभाग के साथ-साथ काश्मीरादि प्रदेशों में विशेष शुभाशुभ प्रभाव पड़ता है। धान्येश तथा दुर्गेश का फल सर्वत्र एक समान होता है।

राजा शनिः तत्फलम्

शनैश्चरे भूमिपतौ सकृज्जलं प्रभूत रोगैः परिपीड्यते जनाः।
युद्धं नृपाणां गदतस्करात्र्यै भ्रमंति लोकाः क्षुधिताश्च देशान्॥

वर्ष का राजा शनि का फल—इस वर्ष राजा शनि हैं इससे पृथ्वी पर अतिवृष्टि होगी। प्रजा अनेक रोगों से पीड़ित होगी तथा चोर, तस्कर, डाकू आदि असमाजिक तत्वों का शासक वर्ग से टकराव एवं मूर्ख लोग आजीविकार्थ देश में भटकेंगे।

मंत्री बुध तत्फलम्

शशि सुते शुभ मंत्रि समागते स्वपतिना कुरुते मदनक्रियाम्।
बहुधनं बहुवारि समन्वितं यव मसूरिचणान्न महर्घता॥

मंत्री बुध का फल—बुध मंत्री पदासीन होने पर वसुन्धरा प्रसन्न रहकर धन-धान्य से परिपूर्ण व जल से सराबोर होती है और जौ, मसूर, चना आदि महंगे होते हैं।

सस्येश शनिः तत्फलम्

रवि सुते यदि धान्य पतौ जनो नृपतिभिः परिपीड़ित विग्रहः।
गद भयं तुषधान्यहरं सदा दुरित वाद विवाद युता नराः॥

सस्येश शनि का फल—शनिदेव सस्येश होने पर प्रजा पर शासक वर्ग का अत्याचार बढ़ता है तथा लोग धान्यादि की चोरी, पाप व वाद-विवाद में रत रहते हैं।

धान्येश गुरुः तत्फलम्

गुरौ धान्य पतौयाति यद [illegible] शालयः।
पच्यंते सर्वदेशेषु यज्ञा[illegible] वादिनः॥

धान्येश गुरु का फल—धान्येश गुरु होने पर पृथ्वी पर सर्वत्र जौ, गेहूं, शालि आदि धान्यों का उत्पादन श्रेष्ठ होता है तथा ब्राह्मणों व धर्म गुरुजनों का पृथ्वी पर सभी देशों में आदर पूजादि होता है।

मेघेश भौमः तत्फलम्

अवनिजे जलदस्य पतौ भुवि श्रुति विचार विहीनधरा भवाः।
क्वचिदपि प्रचुरं जलमल्पकं क्वचिदपि प्रचुर बहुलापदम्॥

मेघेश मंगल का फल—मंगल के मेघेश होने पृथ्वी पर लोग श्रुति पुराण आदि के उल्लंघक होते हैं और कहीं अनावृष्टि एवं कहीं अतिवृष्टि जैसे कुयोग होते हैं।

रसेशो चन्द्रः तत्फलम्

यदि विधौ रसपे भुवि मानवो नवनवां युवतिं बुभुजे प्रियाम्।
जलधराः बहु वारिविधायकाः रसवति धनधान्यवती मही॥

रसेश चन्द्र का फल—चन्द्रदेव रसपति हों तो पुरुषों को स्त्रियों से अच्छे अच्छे स्वादिष्ट पकवान प्राप्त होते हैं। एवं मेघ प्रचुर वर्षा करने से धरा धन-धान्य व रसों से पूर्ण रहती है।

नीरसेशो शनिः तत्फलम्

त्रपुणिण्डादि लौहाणां कृष्ण वस्त्रादि वस्तुनाम्।
अर्घवृद्धि प्रजायेत मंदे नीरस नायके॥

नीरसेश शनि का फल—नीरसेश शनि हो तो काली वस्तुएं, जस्ता, लौहादि एवं काले वस्त्रों में महंगाई का जोर रहता है।

फलेशो भौमः तत्फलम्

फलपतिर्यदि भूतनयो भवेप्सु बहुपुष्प फलान्वित मेदिनी।
गत भयानृत देशजनास्तदा नृपतयो बहु विग्रह कारकाः॥

फलेश मंगल का फल—वर्ष में फलेश मंगल हो तो पृथ्वी पुष्प, पल्लव, फलादि से लदी रहती है। नागरिक लोग शासक वर्गों से निर्भय होकर असत्य भाषण व वाद-विवादादि करने वाले होते हैं।

धनेशो शुक्र : तत्फलम्

द्रविणपो भृगुजो द्रविणैर्युता समधनाः सकला भुविमानवाः।
समसुखाः क्रय-विक्रय जीविनो नृपतयो जनपालन तत्पराः॥

धनेश शुक्रः का फल—धनेश जिस वर्ष शुक्र हो, उस वर्ष प्रजा सम संपत्तिवान होकर सुखी एवं व्यापारशील होते हैं। तथा शासक वर्ग प्रजा पालक होते हैं।

दुर्गेश भौमः तत्फलम्

अवनिजे महानायकाः गतो विविध दुःखविशेष समन्वितः।
[illegible]

दुर्गेश मंगल का फल—जिस वर्ष दुर्ग अधिपति मंगल हों उस वर्ष प्रजा में अनेक दुःखों व वियोग का प्रसार होकर व्यापारी वर्ग को खरीद व बिक्री के कार्य में भय व लाभ की हानि होती है।

वर्षनाम फाल्गुन तत्फलम्

सुभिक्षं प्रचुरावृष्टि रुत्तरे याम्य पश्चिमे।
पूर्वस्यां गौरवं घोरं फाल्गुने वत्सरे शुभम्॥

वर्षनाम फाल्गुन का फल—पश्चिमी, उत्तरी और दक्षिणी देशों में प्रचुर वर्षा होकर सुभिक्ष होता है और पूर्वी देशों में प्राकृतिक बाधाएं अधिक होती हैं।

मेघनाम "संवर्तः" तत्फलम्—"संवर्ते जलपूरिता" के अनुसार इस वर्ष संवर्त नामक मेघ होने से पृथ्वी पर सर्वत्र वर्षा होकर अच्छी पैदावार होती है।

रोहिणीवासः "तटे" तत्फलम्—इस वर्ष रोहिणी का वास "तट" पर है। जिसका फल—"तटे वृष्टि सुशोभना॥" इस शास्त्र वचनानुसार सर्वत्र समान व अच्छी वर्षा होगी। जिससे धान्य तृण आदि उचित मात्रा में पैदा होते हैं।

समय निवासो "रजक" गृहे तत्फलम्—समय का निवास धोबी के घर होने से वर्ष में सर्वत्र उत्तम वर्षा होती है। यथा—"जल पूर्णानि दृश्यन्ते वासो रजकः गृहे"॥

समय वाहन "महिष" तत्फलम्—समय वाहन महिष होने से मंद गति तथा मुंह का सवाल कई वार्ताएं तथा अशुभ घटनाएं घटेंगी।

पांच-समय विश्वाः-समय विश्वा ५ होना-उन्नतिदायक वर्ष नहीं होगा। सम रूप मध्यम रूप का होगा।

जल वायु अन्न-स्तंभ ३:-वायु ज्यादा, जल कम, अन्न अल्प से जनता को उदासीनता रहेगी।

एक-चन्द्रग्रहणः-(१) दिनांक १७.१०.०५ सोमवार के कारण व्यापारी वर्ग विशेष प्रभावित होगा।

दो-सूर्य ग्रहणः-(१) दिनांक ३.१०.०५ सोमवार (२) दिनांक २९.३.०६ बुधवार, प्राकृतिक आपदा योग।

विवरण-उत्पत्ति खपतिः-विंशोत्तरी मतेन उत्पत्ति ८१ तथा खपति ११८ होना हानि का [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चैत्र शुक्ल पक्ष-१

श्री सं. २०६२ शाके १९२७ दिन मान

स्टे.टा. सूर्योदयास्त दिनांक प्र. मु. अ. चन्द्र संचार दै. रवि स्पष्ट प्रातः चन्द्रोदयास्त दिल्ली

ना. ९ से २४ अप्रैल तक सन् २००५ ई., राष्ट्रीय मिति १९ चैत्र से ४ वैशाख तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, वसंत-ग्रीष्म ऋतु।

| मि. | तिथि | स्टे.टा. | नक्षत्र | स्टे.टा. | योग | स्टे.टा. | करण | स्टे.टा. | उदय | अस्त | | |

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वैशाख कृष्ण पक्ष-२

श्री सं. २०६२ शाके १९२७

ता. २५ अप्रैल से ८ मई सन् २००५ ई., राष्ट्रीय मिति ५ से १८ वैशाख तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घटी	पल	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र. मु. अं. वि.	रा.	अ.	अ.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. ग.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
५	चं	१	२१	१६	१४	१८	स्वा	६	४८	०८	३०	सि	१५	५६	१२	१०	का	२१	१६	१४	१८	३२	४०	५	४७	१८	५१	१३	१५	25	वृ.२५।५१	००	१०	५७	३१	[illegible]	२०	४	६	८	
६	मं	२	१६	५५	१२	३२	वि	४	३१	०७	३५	व्य	९	४६	०९	४१	ग	१६	५५	१२	३२	३२	४४	५	४६	१८	५२	१४	१६	26	वृश्चिक	००	११	५५	५४	२२	२१	१२	६	४८	भ. २३।३२ से, व्यतिपात पुण्यम्
७	बु	३	११	४८	१०	२९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वि	११	४८	१०	२९	३२	४७	५	४५	१८	५२	१५	१७	27	ध.२८।५१	००	१२	५४	१६	१९	२२	२०	७	३६	भ. १०।२९ तक, भरणी में सूर्य १६।६, रेवति में बुध २४।११, कृष्ण ४ व्रतम्, A
८	गु	४	६	०९	०८	१२	मूल	५३	४५	२७	१५	शि	४८	०८	२५	००	बा	६	९	८	१२	३२	५१	५	४४	१८	५३	१६	१८	28	धनु	००	१३	५२	३५	१९	२३	२६	८	३२	
९	शु	५	०	१४	०५	४९	पू.षा	४९	४२	२५	३७	सि	४०	३१	२१	५६	तै	०	१४	५	४९	३२	५५	५	४३	१८	५४	१७	१९	29	धनु	००	१४	५०	५४	१६	२४	०	९	३५	भ. २७।२५ से, गुरु तेग बहादुर जयंती (प्रा. मत से)
क्षय	शु	६	५४	१३	२७	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	षष्ठी तिथि क्षय:
१०	श	७	४८	२३	२५	४	उ.षा	४५	४६	२४	०१	सा	३२	५९	१८	५४	वि	२१	१८	१४	१४	३२	५९	५	४२	१८	५४	१८	२०	30	म.०७।१२	००	१५	४९	१०	१६	२४	२५	१०	४३	भ. १४।१४ तक, गुरु अर्जुन देव जयंती (प्रा. मत से), शीतला पूजन B
११	र	८	४२	५०	२२	५०	श्रव	४२	०७	२२	३३	शुभ	२५	३९	१५	५८	बा	१५	३५	११	५६	३३	०२	५	४२	१८	५५	१९	२१	M1	मकर	००	१६	४७	२६	१३	२५	१६	११	५२	शतभिषा में मंगल २८।१४, कालाष्टमी, विश्व मजदूर दिवस, C
१२	चं	९	३७	४२	२०	४६	ध	३८	५४	२१	१५	शु	१८	३९	१३	०९	तै	१०	१३	९	४६	३३	०६	५	४१	१८	५६	२०	२२	2	कुं.१०।२७	००	१७	४५	३९	१३	२६	०	१२	५९	पंचक १०।२७ से, कृतिका में शुक्र १८।३०
१३	मं	१०	३३	०६	१८	५५	श	३६	१२	२०	०९	ब	१२	०२	१०	२९	व	५	२१	७	४९	३३	०९	५	४०	१८	५६	२१	२३	3	कुंभ	००	१८	४३	५२	११	२६	३७	१४	४	भ. ७।४९ से १८।५५ तक, मुनि सुव्रत नाथ जन्म जैन
१४	बु	११	२९	०८	१७	१९	पू.भा	३४	०९	१९	१९	ऐं	५	५५	०८	०२	बव	१	३	६	५	३३	१३	५	३९	१८	५७	२२	२४	4	मी.१३।३०	००	१९	४२	०३	९	२७	११	१५	७	वरूथिनी एकादशी व्रत सबका, श्री वल्लभाचार्य जयंती
१५	गु	१२	२५	५५	१६	०१	उ.भा	३२	५०	१८	४७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	तै	२५	५५	१६	१	३३	१६	५	३९	१८	५७	२३	२५	5	मीन	००	२०	४०	१२	८	२७	४३	१६	८	वृष में शुक्र ११।२५, प्रदोष व्रत
१६	शु	१३	२३	३१	१५	०२	रेव	३२	२१	१८	३४	प्री	५१	१३	२६	०७	व	२३	३१	१५	२	३३	२०	५	३८	१८	५८	२४	२६	6	मे.१८।३४	००	२१	३८	२०	७	२८	१४	१७	८	भ. १५।२ से २६।४२ तक, पंचक १८।३४ तक, मास शिवरात्री व्रत
१७	श	१४	२२	०४	१४	२७	अ	३२	४९	१८	४५	आ	४७	५०	२४	४५	श	२२	४	१४	२७	३३	२३	५	३७	१८	५८	२५	२७	7	मेष	००	२२	३६	२७	४	२८	४५	१८	९	रविन्द्र नाथ टैगोर जयंती
१८	र	३०	२१	४१	१४	१७	भर	३४	२२	१९	२१	सौ	४५	१९	२३	४४	ना	२१	४१	१४	१७	३३	२७	५	३६	१८	५९	२६	२८	8	वृ.२५।३५	००	२३	३४	३१	४	२९	१९	१९	११	अश्विनी मेष में बुध १५।२०, देवपितृकार्याऽमावस्या, श्री शुकदेव D

A अनुसूया जयंती B (बूढा बासीड़ा), ठंडा (बासी) भोजन करना चाहिए C मई मास ५ ता. ३१प्रा. D जयंती, मेला पिंजोर (हरियाणा), सहादत्ते इमाम हसन (मु.)

वैशाख कृ. ८ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १ मई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	९	१०	११	५	०	२	११	५	१०	९	८
१६	१३	५	२०	१६	२४	२७	२८	२८	१६	२३	०
४७	१४	५८	१३	४८	४६	५२	२	२	२	३४	१६
२६	५	४९	८	३८	२	३७	२३	२३	५	३२	२०
५८	५५	४३	७१	५	७३	४	३	३	२	०	१
१३	४५	३०	४४	४७	५८	८	११	११	३	३६	२
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
भरणी २	श्रवण २	धनि. ४	रेवती २	हस्त ३	भरणी ४	पुन. ३	रेवती ४	चित्रा २	शत. ३	धनि. १	मूल १

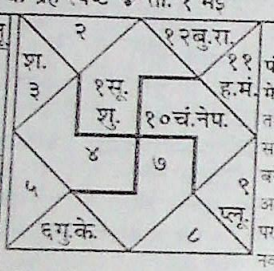

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

इस मास में पांच सोमवारों का योग बना हुआ है। यथा- "सोमस्य पंचवाराश्च यत्र मासे भवन्ति हि। धन-धान्य समृद्धिश्च सुखी भवति मेदिनी॥" अर्थात् सुख का संचार होगा। धन-धान्य की वृद्धि होगी। आर्थिक समृद्धि तथा सरकार द्वारा भी सुनियोजित योजना का शुभारंभ होने का योग है। वर्षा समयानुकूल होने का योग बनता है। सभी तरह के व्यवसाय में मंदी का कारक बनेगा। वातावरण दूषित होकर शुभ बन जायेगा। पंचमी तिथि का क्षय होना अशुभदायक है। बुध-राहु का योग तथा गुरु-केतु के योग से विदेशी वर्चस्व भारत पर बढ़ेगा। वैशाख बदी ३ बुधवार को सूर्यदेव भरणी नक्षत्र में प्रवेश करने से एकाएक नवीन वातावरण व्यापारी वर्ग में बनेगा। व्यापारिक कम्पनी का नया निर्माण भी होने का योग बना है। दिल्ली, उत्तरांचल, कश्मीर, कर्नाटक तथा पूर्वोत्तर प्रदेशों में अशांति का योग बनेगा। सत्ता पक्ष को विपक्ष फुटबॉल बनाने के प्रयास में रहेगा। भावी राष्ट्रनायक के लिए समय अनुकूल नहीं है। उद्योग-धंधों में क्रांति के योग बनेंगे। रेल, सड़क दुर्घटनाओं का प्रभाव बढ़ेगा। पक्ष में सत्ता पक्ष शांत रहेगा। **तेजी-मंदी विचार (व्यापार)**-पेय पदार्थ, रसकस, गुड़, चीनी, चावल, सूती वस्त्र, सोना, पीतल, शेयर बाजार तेज रहेगा। कहा है- "कृष्ण पक्ष की तिथि घटे, शुक्ल पक्ष बढ़ जाय। एक चीज तो क्या बढ़े, सभी चीज बढ़ जाय॥" अर्थात् इस माह में सभी वस्तुओं की तेजी का योग बनता है। विदेशी व्यापार की सीमा में परिवर्तन योग बनता है। औषधि बाजार विशेष तेज रहेगा। **आकाश लक्षण**-वैशाख मास में ग्रीष्म ऋतु का प्रकोप रहेगा। जल-संबंधी रोगों का उपद्रव बढ़ेगा। अग्निकांड का योग भी बनता है। समतल प्रदेशों में वायु वेग तीव्र चलेगा। पूर्वी देशों में चीन, मंगोलिया, थाईलैण्ड, आस्ट्रेलिया, जापान, तिब्बत आदि में भूकम्प या प्राकृतिक आपदा का योग बनता है। **शकुन विचार**- "कृष्ण पक्ष वैशाख का, तिथि आठम का संग। मेघ गाज नभ बिजली, संवत सुखद सुरंग॥ सोमवार की प्रतिपदा, स्वाती नक्षत्र योग। कृषक वर्ग की कामना, आशा युक्त संयोग॥ माह के कृष्ण पक्ष की दशमी तिथि भौमवार की होय। प्रजा में कलह बढ़े, अरु अग्नि काण्ड ज्यादा होय॥" अग्नि तथा वायु युक्त प्रभावशाली पक्ष रहेगा।

ता. ८ मई ❖ वैशाख कृ. ३० रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

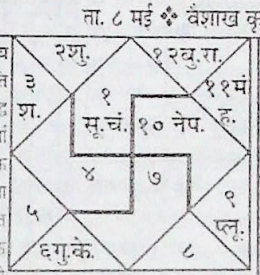

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	०	१०	११	५	१	२	११	५	१०	९	८
२३	१९	११	२९	१६	३	२८	२७	२७	१६	२३	०
३४	१०	३	२४	१०	२३	२३	४०	४०	१५	३८	८
३१	२६	४	१९	५८	२४	१८	८	८	३३	५	३५
५८	७७४	४३	८७	४	७३	४	३	३	१	०	१
४	१६	२३	३७	४८	५१	४३	११	११	४५	२३	११
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
भरणी ४	भरणी २	शत. २	रेवती ४	हस्त २	कृति. ३	पुन. ३	रेवती ४	चित्रा २	शत. ३	धनि. १	मूल १

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आर्यभट्ट पंचांगम्

वैशाख शुक्ल पक्ष-3

श्री सं. २००२ शाके १९२७ | दिन मान | सूर्योदयास्त | दिनांक प्र. मु. अ. | चन्द्र संचार | है. रवि स्पष्ट प्रातः | चन्द्रोदयास्त दिल्ली

ता. ९ से २३ मई सन् २००५ ई., राष्ट्रीय मिति १९ वैशाख से २ ज्येष्ठ तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

ता.	वा.	तिथि	स्टैं.टा.	नक्षत्र	स्टैं.टा.	योग	स्टैं.टा.	करण	स्टैं.टा.	उदय	अस्त	दि.	रा.	भा.स्टैं.टा. ५ घं ३० मि.	उदय	अस्त
९	सो	१	२३।५१	कृ	३।५५	शो	४।३०	व	२३।५१	५।३२	१९।०३	५	३२	वृष ००।२४।३२।३५	५।५	२०।१३
१०	मं	२	२४।३१	रो	४।००	अ	४।५१	बा	२४।५१	५।३२	१९।०४	५	३३	वृष ००।२५।३०।३६	६।३९	२१।२२
११	बु	३	२०।४८	मृ	४।०८	ग	५।२६	वि	२५।४१	५।३२	१९।०४	५	३४	मि.००।२६।२८।३६	७।२६	२२।९
१२	गु	४	३२।४८	आ	४।२०	सु	५।५९	ब	२६।३१	५।३२	१९।०५	५	३५	मिथुन ००।२७।२६।३४	८।१३	२३।१
१३	शु	५	३०।३६	पुन	४।३९	सु	६।३३	ब	२७।२१	५।३२	१९।०५	५	३६	क.००।२८।२४।३१	९।११	२३।५७
१४	श	६	३३।३१	पु	५।००।	ग	७।०८	को	२८।१०	५।३२	१९।०३	५	३७	कर्क ००।२९।२२।२५	१०।८	२४।०
१५	र	७	३५।३१	पु	६।०२	वृ	७।४३	ग	२९।०३	५।३२	१९।०३	५	३८	कर्क ०१।००।२०।१८	११।४	२४।२७
१६	चं	८	३५।०१	श्ले	६।२९	ध	८।२३	वि	२९।५८	५।३१	१९।०४	५	३९	सिं.०१।००। ०१।०१।१८।१०	११।५९	२५।२
१७	मं	९	३५।२१	म	६।५६	व्या	९।०३	बा	३०।४६	५।३१	१९।०५	५	४०	सिंह ०१।०२।१५।०५	१२।५४	२५।३४
१८	बु	१०	६०।००।	-	-	रा	७।२९	बा	३१।२८	५।३०	१९।०५	५	४१	क.०१।०२।१३।४७	१३।४६	२६।३
१९	गु	१०	२।३३	पू	७।५३	ग	८।५८	व	१।२०	५।३०	१९।०६	५	४२	कन्या ०१।०४।११।३३	१४।४०	२६।३१
२०	शु	११	४।५९	उ	८।५०	मि	१०।२५	वि	३।०९	५।२९	१९।०६	५	४३	कन्या ०१।०५।०९।१८	१५।३३	२६।०
२१	श	१२	७।२९	चि	९।४६	व्य	१२।०८	बा	५।०५	५।२९	१९।०८	५	४४	तु.०१।०६।०७।०१	१६।२६	२५।३०
२२	र	१३	९।५९	स्वा	११।४५	ब	१३।५१	ते	७।०१	५।२९	१९।०९	५	४५	तुला ०१।०७।०४।४२	१७।१७	२५।२८
२३	चं	१४	१२।२९	वि	१३।५०	प	१५।३२	व	९।००	५।२९	१९।१०	५	४६	० ० ० ० ० ० ० ०	१८।९	२५।२६
२४	मं	१५	१४।५०	वि	१५।५४	वि	१७।१२	ब	१०।५६	५।२८	१९।१०	५	४७	वृ.०१।०८।०२।२७	१८।५३	२५।२४

A कल्पादि ३, श्री बद्री केदार नाथ यात्रा, वर्धमान तप समाप्त जैन B श्री रामानुजाचार्य जयंती (द भा.) C श्री रामानुजाचार्य जयंती (उ.भा.), चन्दन षष्ठी (बिहार), संक्रांति पुण्यं

D व्यतिपात पुण्यम्, फातिहा यजद हूम (मु.)

भ. १८।५१ से

भ. ७।१९ तक, पू.भा. में मंगल १५।३७, मोहिनी एकादशी व्रत सबका J

शनि प्रदोष व्रत, रुकमणी द्वादशी, अशोक त्रिरात्री व्रत प्रा., D

भ. २८।१४ से, वृष पूर्व में अस्त ७।३०, रा. ज्येष्ठारंभ, नृसिंह चतुर्दशी, E

चतुर्दशी तिथि क्षय: E छिन्नमस्ता जयंती

भ. १५।०१ तक, कृतिका में वृष २६।३१, सत्य व्रत, पूर्णिमा व्रत, F

F पूर्णिमा पुण्यं, बुद्ध पूर्णिमा, पीपल पूजन, यमाय जलकुंभ दानं, कूर्म जयंती, वैशाखी पूर्णिमा, वैशाख स्नान पूर्ति, अशोक त्रिरात्री व्रत पूर्ति J सायन सूर्य मिथुन में सूर्य २८।४१,

वैशाख शु. ८ चंद्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १६ मई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लु
१	३	२०	०	५	१	२	११	५	१०	९	७
२	२७	१६	२८	५	१३	२०	२७	२०	१६	२३	२९
१८	१९	४१	३	३६	१३	३	१४	१८	२८	८०	५८
१९	४९	२४	४१	५९	३८	१३	०१	४१	२२	१०	३०
५७	२६	४३	५१	३	३१	५	३	३	१	०	१
५९	२३	१०	२४	३१	४२	१९	११	११	५५	७	२१
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	व	व
३	३	३	३	३	३	३	अ	अ	-	-	-
८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
हि.	हि.	हि.	हि.	हि.	हि.	हि.	हि.	हि.	हि.	हि.	हि.
ह.	ह.	ह.	ह.	ह.	ह.	ह.	ह.	ह.	ह.	ह.	ह.

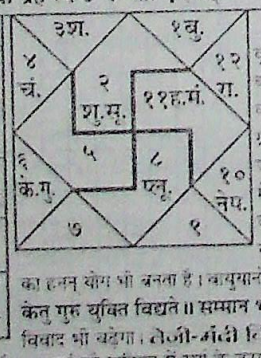

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

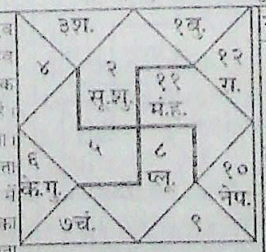

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लु
१	६	१०	०	५	१	२	११	५	१०	९	७
८	२६	२१	२४	१५	२१	२९	२६	२६	१६	२३	२९
२	४८	५०	५६	१६	४९	४१	५२	५२	३७	४०	४८
२२	७७	५१	२४	१	४	५६	२६	२६	१४	१७	७७
५७	०१	४२	११	२	३३	५	३	३	१	०	१
३९	४८	५५	२८	१८	३३	४८	११	११	५	७	२८
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	व	व
३	३	३	अ	३	३	३	अ	अ	-	-	-
८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
हि.	हि.	हि.	हि.	हि.	हि.	हि.	हि.	हि.	हि.	हि.	हि.
ह.	ह.	ह.	ह.	ह.	ह.	ह.	ह.	ह.	ह.	ह.	ह.

ता. २३ मई ❖ वैशाख शु. १५ चंद्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

वैशाख शुक्ल ६ शनिवार ता. १४ मई २००५ को २१।०५ बजे सूर्यदेव वृषभ राशि में पदार्पण करेंगे। वृषभ संक्रांति के प्रभाव से वर्षा, धान्य भाव का मध्यम् योग बना है। संक्रांति ३० मुहूर्त बैठी अवस्था में है। धार्मिक कार्यों का वर्चस्व बढ़ेगा। प्रतिपदा सोमवार को चन्द्र दर्शन शुभ दायक है ग्रह योग से सूर्य-शुक्र की युक्ति से अपमान जनक कार्यों का प्रभाव बढ़ेगा। जनता में विश्वासघात की भावना बढ़ेगी। गुरु-केतु के कारण केन्द्रीय सत्ता में विद्वेष बढ़ेगा। अन्तर्कलह के कारण वरिष्ठ नागरिकों के मान-सम्मान में कमी आयेगी। राजनैतिक क्षेत्र में उठा-पटक जारी रहेगी। राज-विग्रह का योग बनता है। हिंसक तथा पाखंडियों का पर्दाफाश होगा। वरिष्ठतम नेता का हनन् योग भी बनता है। वायुयानों का टकराव ज्यादा होगा। अपहरण का सामना बढ़ेगा। "आदित्य शुक्र युक्ति धन भावो जायते। षष्ठ भाव केतु गुरु युक्ति विद्यते॥ सम्मान भंग राजविग्रह, वरिष्ठं नेतारो मृत्युदायकः। पाखण्डी हिंसायुक्त प्राणी रहस्य प्रकट दायक:॥" सम्प्रदाय विवाद भी बढ़ेगा। **तेजी-मंदी विचार (व्यापार)**-उड़द, मूंग, सूत, कपड़ा में मंदी का योग। चन्द्रमा कृतिका नक्षत्र में उदय के कारण गेहू, जौ, चना, चावल, गुड़ में तेजी का योग बनता है। ११ मई को कृतिका में सूर्य के कारण चांदी, सोना, रुई, अलसी, गेहू, चना, मूंग मोठ ग्वार, बाजरा में तेजी का योग बनता है। सुपारी सम रहेगी। **आकाश लक्षण**-तीव्र गर्मी का प्रकोप रहेगा। ल के कारण जन-धन हानि बढ़ेगी। तेज हवा तथा आंधी-तूफान का भय रहेगा। केरल, गोवा, कर्नाटक, तमिलनाडु व पश्चिमी बंगाल में वर्षा का योग बनता है। समुद्रतटीय प्रदेशों में वर्षा योग बनता है। पशुओं के चारे में कमी का वातावरण बनेगा सावधान! **शकुन विचार**-वैशाख सुदी तीज को वायु चले पूर्व की ओर। आर्द्रता में बढ़ोतरी वर्षा चारों ओर॥ वैशाख सुदी प्रथमे दिवस बादल बिजली करोय। दामा बिना विराताजे पूरा साख भोय॥ अग्नि कांड की आपदा चिन्ता योग विचार। सुदी तीज को रोहिणी भौम करे पुर जोर॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष-४

श्री सं. २०६२ शाके १९२७ | दिन मान | स्टैं.टा. सूर्योदयास्त | दिनांक प. मु. अ | चन्द्र संचार | दै. रवि स्पष्ट प्रातः | चन्द्रोदयास्त दिल्ली

24 May to 6 June-2004 — 60

ता. २४ मई से ६ जून सन् २००५ ई., राष्ट्रीय मिति ३ से १६ ज्येष्ठ तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

रा. मि.	ह	तिथि	स्टैं.टा.	नक्षत्र	स्टैं.टा.	योग	स्टैं.टा.	करण	स्टैं.टा.	उदय घ मि	अस्त घ मि	भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	५ घं. ३० मि. रा. अं. क. वि.	ह	उदय घ. मि.	अस्त घ. मि.
३	मं	१	४४ १६	२३ १०	अ	२३ २४	१४ २९	शि	२५ ४८	१५ ४७	बा	१७ ४२	१२ ३२	३४ १३	५	२० १९	०९ ११	१५	24	वृश्चिक	२१ ०९	०० ०१		२० ४	२९ २८
४	बु	२	३६ ५५	२० १२	ज्ये	१८ १७	१२ ४६	सि	२७ १७	२२ २२	तै	१० ४०	९ ४३	३४ १५	५	२० १९	०९ १२	१६	25	ध.१२।४८	२१ ०९	५७ ३८	३६	२१ १३	६ २०
५	गु	३	२२ १६	१७ ०९	मूल	१२ ४३	१० ३२	व्य	२९ ५९	२८ २९	व	३ ७	६ ४२	३४ १७	५	२० १९	०९ १३	१७	26	धनु	२१ १०	५५ १४	३५	२२ १६	७ २३
६	शु	४	२१ ००	१४ ०६	पू.षा	७ ०५	०८ १७	शु	५० ३९	२५ ४२	बा	२१ ४०	१४ ६	३३ १९	५	२६ १९	०९ १४	१८	27	म.१३।४४	२१ ११	५२ ४९	३५	२३ १३	८ ३१
७	श	५	१४ २६	१९ १३	उ.षा	१९ ५	१५ ५१	ब	४२ २०	२२ २२	तै	१४ २६	९७ १३	३४ २२	५	२६ १९	११ १५	१९	28	मकर	२१ १२	५० २४	३३	२३ ५९	९ ४२
८	र	६	७ ५२	०८ ३५	श्र	५३ ०७	२६ ४१	ऐं	३४ ४०	१९ २८	व	७ ५२	८ ३५	३४ २४	५	२६ १९	११ १६	२०	29	कुं.१५।५५	२१ १३	४७ ५७	३२	२४ ०	१० ५२
९	चं	७	२ ११	०८ १८	श्र	५० १४	२५ ३१	वै	२७ ४८	१६ ३३	ब्रव	२ ११	६ १८	३४ २६	५	२६ १९	१२ १७	२१	30	कुंभ	२१ १४	४५ २९	३२	२४ ३९	११ ५८
क्षय	चं	८	५७ २१	२८ १६	०	० ०	० ०	०	० ०	० ०	०	० ०	० ०	० ०	०	० ०	० ०	०	0	० ० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
१०	मं	९	५३ ५८	२९ ०१	पुष्य	४८ २७	२४ ४८	वि	२१ ४१	१४ ०९	तै	२५ ३७	१५ ४०	३४ २८	५	२५ १९	१२ १८	२२	31	मी.१८।५६	२१ १५	४३ ०१	३१ २५	१४ १३	१
११	बु	१०	५१ ३३	२६ ०२	आश्ले	४४ ४७	२४ ३२	प्री	१६ ४४	१२ ०७	व	२२ ३८	१४ २८	३४ २९	५	२५ १९	१३ १९	२३	J1	मीन	२१ १६	४० ३२	३० २५	१४ ४६	१४ २
१२	गु	११	५० २४	२५ ३०	रेव	४८ १३	२४ ४२	आ	१२ ३४	१० २६	ब्रव	२० ४६	१३ ४३	३४ ३१	५	२५ १९	१३ २०	२४	2	मे.२४।४२	२१ १७	३८ ०२	३० २६	१६ १५	१
१३	शु	१२	४९ ५७	२५ २४	अ	४९ ४०	२५ १७	सौ	९ १५	०९ ०७	कौ	१९ ५८	१३ २४	३४ ३३	५	२५ १९	१४ २१	२५	3	मेष	२१ १८	३५ ३२	२८ २६	४७ १६	१
१४	श	१३	५० ४२	२५ ४१	भ	५२ ०७	२६ १६	शो	६ ४६	०८ ०७	ग	२० १२	१३ ३०	३४ ३४	५	२५ १९	१४ २२	२६	4	मेष	२१ १९	३३ ००	२८ २७	१९ १७	१
१५	र	१४	५२ २५	२६ २२	कृ	५५ ३२	२७ ३७	अ	५ ०५	०७ २६	वि	२१ २६	१३ ५९	३४ ३६	५	२४ १९	१५ २३	२७	5	वृ.०८।३४	२१ २०	३० २८	२७ २७	५५ १८	२
१६	चं	३०	५५ ०६	२७ २०	रो	५९ ५३	२९ २२	मृ	४ ०९	०७ ०४	च	२३ ३८	१४ ५२	३४ ३७	५	२४ १९	१५ २४	२८	6	वृष	२१ २१	२७ ५५	२६ २८	३५ १९	२

चन्द्रोदयास्त दिल्ली

ता. २४ मई से ६ जून सन् २००५ ई., राष्ट्रीय मिति ३ से १६ ज्येष्ठ तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

मृग. में शुक्र ११।११, ज्येष्ठ जिनवर व्रत प्रा. जैन

वृष में बुध १८।१५, रोहिणी में सूर्य ६।३०

भ. ६।४२ से १७।९ तक, पुन ४ कर्क में शनि ७।२८, श्री नारद जयंती, A

जवाहर लाल नेहरू पुण्यादि

--

भ. ८।३५ से १९।२४ तक, पंचक १५।२५ से, मिथुन में शुक्र २१।४७

रोहिणी में बुध १२।२२, कालाष्टमी, दादूदयाल पुण्यम्, मेला चानाणी माता

अष्टमी तिथि क्षय:

--

भ. १४।२८ से २६।२ तक, जून मास ६ ता.३० प्रा.

पंचक २४।४२ तक, अपरा एकादशी व्रत सबका

मंगल मीन में १६।२७, मधुसूदन द्वादशी, अनन्त नाथ जन्म तप

भ. २५।४१ से, आर्द्रा में शुक्र ८।३४, शनि प्रदोष व्रत

भ. १३।५९ तक, मृगशिरा में बुध १४।२६, भास शिवरात्री व्रत, B

देवपितृकार्याऽमावस्या, भावुका ३०, शनि जयंती, वट सावित्री व्रत, C

A वाद्य यंत्र वीणादि दान दिवस, मां आनन्दमयी जयंती, श्री कृष्ण चतुर्थी व्रत B विश्व पर्यावरण दिवस, मार्गी गुरु ११।४२ C सोमवती अमावस्या

ज्येष्ठ कृ. ७ चंद्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ३० मई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	१०	१०	१	५	२	३	११	५	१०	९	७
१४	८	२६	९	१५	०	०	२६	२६	१६	२३	२९
४५	१८	५०	२३	३	२३	२३	३०	३०	४३	३८	३८
२९	४२	२८	१	३८	३५	४८	१०	१०	४९	४८	२६
५७	३४	४२	११	१	७३	६	३	३	०	०	१
३२	१०	३७	४५	४	२७	१४	११	११	४५	२०	३६
म	मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
तिहि.	नक्ष.	यो.	करण	दि. मा.	दि.	रविवि	दि.	क्षय	वृ.	वृ.

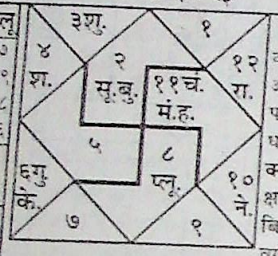

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

इस पक्ष के ग्रह योग में चन्द्र-मंगल युक्ति दृष्ट में उफान जैसा योग करेगा। गृह क्लेश बढ़ेंगे। सूर्य-बुध की युक्ति बुधादित्य योग से विद्वान वर्ग अपनी बुद्धि का सदुपयोग कर धन खर्च करेंगे। इस माह में पांच मंगल तथा पांच बुध होने से साम्प्रदायिक घटकों का प्रभाव बढ़ेगा। बुधवारों के कारण धान्यादि में सम तेजी, उतार-चढ़ाव रहेगा। "पांच भौम भय कारका, द्वेष क्लेश को बढ़ाय। पांच बुध धान्य भाव में खण्ड वृष्टि बढ़ाय॥ अष्टमी क्षय कृष्ण पक्ष में शुक्ल में द्वितीया बढ़ जाय। लोग भ्रमित हो जायसी, बिना आज्ञा चले जाय॥" ता. २४ को मृगशिरा में शुक्र के प्रभाव से स्त्री वर्ग की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। नव गठित व्यापारिक प्रतिष्ठानों का वर्चस्व बढ़ेगा। धार्मिक आड़ में चोरी धंधा बढ़ेगा। सूर्य-चन्द्र-बुध का वृषभ राशि शुक्र क्षेत्र में होना राजनैतिक-वैश्यावृत्ति तथा पाखण्डियों का रहस्य खुलेगा। पार्टियों का परिवर्तन योग जारी रहेगा। सत्ता हड़पने के प्रयास बढ़ेंगे। यत्र-तत्र प्राकृतिक आपदा का प्रभाव रहेगा। सोमवती अमावस्या के प्रभाव से जनरल वस्तुओं के भाव बढ़ेंगे। **सोमवती अमावस्या शनिश्चरी जयंती रोहिणी नक्षत्र मान। युद्ध की आशंका बने, चेतन रहो नित कर साधे बान॥** युद्ध का वातावरण बनेगा। **तेजी-मंदी विचार (व्यापार)**-कपास, सूत वस्त्र, पाट, बारदाना, अरण्डी, तिल, तेल, सोना, चांदी, अरहर, गुड़, घी तथा चावलों में घटाबढ़ी सोमवती अमावस्या के कारण रहेगी। ३० मई को रोहिणी का बुध के कारण चांदी, सोना, तिल, सरसों, चावल, राई में तेजी का योग बनता है। ३ जून को मीन का मंगल के कारण रुई, तृण (घास), आंवला, जीरा, औषधि के भाव बढ़ेंगे। ४ जून को अचानक चांदी में मंदी आयेगी। **आकाश लदाण-कौन वासग है यों पोखूं॥** चन्द्र शुक्र सूर गुरु के वारा। होय तो अन्न भरे भण्डारा॥ यदि ज्येष्ठ पंचमी को दक्षिण पवन चले तो घृत, तैल, तिल खरीदने में अधिक लाभ होगा। पूर्वोत्तर में कहीं-कहीं वर्षा होगी। खण्ड वृष्टि के योग बनेंगे। उत्तर-मध्य-पश्चिम भारत में लू तथा गर्मी का भीषण प्रकोप बढ़ेगा। पेय जल के संकट से सरकार भी विफल होगी। उष्मता रहेगी। **शकुन विचार-जेठ आगली परिवा देखूं।**

ता. ६ जून ❖ ज्येष्ठ कृ. ३० चंद्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	१	११	१	५	२	३	११	५	१०	९	७
२१	१०	१	२४	१५	८	१	२६	२६	१६	२३	२९
२७	५७	४७	४२	०	५७	८	७	७	४८	३५	२७
५५	५७	३८	४१	२	२२	३१	५४	५४	४	४७	३८
५७	३५	४२	११	०	७३	६	३	३	०	०	१
२६	३५	१२	०६	१३	२१	३५	११	११	२४	३३	३४
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
तिहि.	नक्ष.	यो.	करण	दि. मा.	दि.	रविवि	दि.	क्षय	वृ.	वृ.

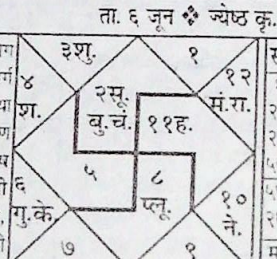

7 to 22 June-2005 — 61

ता. ७ से २२ जून सन २००५ ई., रा. मिति १७ ज्येष्ठ से १ आषाढ

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-५

श्री सं. २०६२ शाके १९२७

दिन मान

स्टैं.टा. सूर्योदयास्त

दिनांक प्र. मु. अं

चन्द्र संचार

दै. रवि स्पष्ट प्रातः

चन्द्रोदयास्त दिल्ली

ता. ७ से २२ जून सन् २००५ ई., रा. मिति १७ ज्येष्ठ से १ आषाढ़ तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिणायने-उत्तर गोले, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु।

रा. मि.		तिथि	स्टैं.टा.	नक्षत्र	स्टैं.टा.	योग	स्टैं.टा.	करण	स्टैं.टा.	उदय	अस्त			भा.स्टैं.टा.	५ घं. ३० मि.		उदय	अस्त	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
														रा.घं.मि.	रा. अं.	क. वि.	घं. मि.	घं. मि.	
१७	म	१	५८	मृ	६०	-	-	धृ	३	५९	०७	००क	३६	८८	१६	८	२४	३९	५
१८	बु	२	६०	मृ	५	०९	०७	२८	शु	४	३३	०७	१२	बा	२०	५३	१७	४६	३४
१९	गु	२	३	२६	०६	४२	आ	११	१६	०९	५५	गं	५	४७	०४	४३	को	३	१५
२०	शु	३	८	३४	०८	५०	पुन	१८	०८	१३	३०	वृ	७	३८	०८	२७	ग	८	३४
२१	श	४	१४	२७	११	२१	पु	२५	३०	१५	४६	थ	९	५५	०९	२२	वि	१४	२७
२२	र	५	२०	३३	१३	३८	श्ले	३३	०१	१८	३७	व्या	१२	२४	१०	२२	बा	२०	३३
२३	चं	६	२६	२७	१५	५१	प	४०	१५	२१	३०	ह	१४	०६	११	१९	तै	२६	२७
२४	मं	७	३१	३६	१८	०३	पूफ	४६	३१	२४	०८	व	१६	३९	१२	०४	व	३१	३६
२५	बु	८	३५	२९	१९	३६	उफ	५१	४४	२६	०६	मि	१७	३९	१३	२८	वि	३	४४
२६	गु	९	३७	४१	२०	२९	ह	५५	०५	२७	२७	व्य	१९	२५	१३	२३	बा	६	४०
२७	शु	१०	३९	५४	२०	३४	चि	५६	२७	२७	५९	व	१५	४२	११	४१	तै	८	३
२८	श	११	३६	०१	१९	४९	स्वा	५५	४८	२७	४२	ष	१२	२७	१०	२१	व	७	१३
२९	र	१२	३२	०५	१८	१५	वि	५३	०८	२६	३९	शि	७	१८	०८	२०	ब्रव	४	१७
३०	चं	१३	२६	२१	१५	५८	अ	५८	४२	२४	५४	-	-	-	-	-	तै	२६	२१
३१	मं	१४	१९	०८	१३	०५	ज्ये	४३	००	२२	७७	शू	४३	४१	२२	५४	व	१९	८
आ	बु	१५	१०	५०	०९	०८	मूल	३६	२४	१९	५९	शु	३३	५४	१८	५९	ब्रव	१०	५०

| | | | | | | | | | | | | | |

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आषाढ़ कृष्ण पक्ष-६

श्री सं. २०६२ शाके १९२७

दिन मान | स्टैं.टा. सूर्योदयास्त | दिनांक प्र. मु. अं | चन्द्र संचार | दै. रवि स्पष्ट प्रातः | नक्षत्र | चन्द्रोदयास्त दिल्ली

ता. २३ जून से ६ जुलाई सन् २००५ ई., राष्ट्रीय मिति २ से १५ आषाढ़ तक। रवि दक्षिणायणे, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

रा.मि.	दि	तिथि	स्टैं.टा.	नक्षत्र	स्टैं.टा.	योग	स्टैं.टा.	करण	स्टैं.टा.	उदय	अस्त	भा.स्टैं.टा.	५ घं. ३० मि.	उदय	अस्त
												रा.घं.मि.	गु. अं. क. वि.	घ. मि.	घ. मि.
१	बु	१	१.५१	श्र	२.२२	व	२.२१	बा	१.५५	५.२६	१९.२१	२३ म.२२।४८	०२ ०७ ४२ १९	२१ ०	६ १२
२	गु	२	५२	ध	२३	ध	२२	कौ	५६	२६	२१	० ० ० ०	० ० ० ०	० ०	० ०
३	शु	३	५३	श	२४	व	२३	ब	५७	२६	२१	११ १६	२४ मकर	०२ ०८ ३९ ३१	१३ २१ ५३ ०	६ २५
४	श	४	५४	श	२५	ध	२४	ए	५८	२६	२१	१२ १९	२५ कुं.२२।३७	०२ ०९ ३६ ४४	१२ २२ ३८ ८	६ ३८
५	र	५	५५	ध	२६	श	२५	बी	५९	२६	२१	१३ १८	२६ कुंभ	०२ १० ३३ ५६	१३ २३ १५ ९	६ ५२
६	चं	६	५६	श	५.५१	आ	२६	व	५.५९	५.२६	१९.२१	१४ १९	२७ मी.२४।५०	०२ ११ ३१ ०९	१२ २३ ४८ १०	७ ५
७	मं	७	५७	पू	२.५३	मी	३३	ब	६.००	२६	२१	१५ २०	२८ मीन	०२ १२ २८ २१	१२ २४ ० ११	७ १६
८	बु	८	५८	उ	२	को	३४	को	०१	२६	२१	१६ २१	२९ मीन	०२ १३ २५ ३३	१३ २४ २० १२	७ २७
९	गु	९	५९	पू	१.५९	मे	१	अ	०२	२६	२१	१७ २२	३० मे.०६।७७	०२ १४ २२ ४६	१३ २४ ५० १३	७ ३८
१०	शु	१०	६०	उ	२	अ	३	मु	०३	२६	२१	१८ २३	J1 मेष	०२ १५ १९ ५९	१३ २५ २२ १४	७ ४९
११	श	११	६१	उ	२.०१	भ	४	धृ	०४	२६	२१	१९ २४	२ वृ.१४।१७	०२ १६ १७ १२	१३ २५ ५६ १५	७ ६०
१२	र	१२	६२	उ	०२	कृ	१	शू	०५	२६	२१	२० २५	३ वृष	०२ १७ १४ २५	१३ २६ ३४ १६	७ ७१
१३	चं	१३	६३	उ	०३	गं	२	गं	०६	२६	२१	२१ २६	४ मि.२४।३८	०२ १८ ११ ३८	१३ २६ १६ १७	७ ८२
१४	मं	१४	६४	उ	०४	मृ	३	वृ	०७	२६	२१	२२ २७	५ मिथुन	०२ १९ ०८ ५१	१३ २८ ४ १८	७ ९३
१५	बु	३०	६५	उ	२.०५	आ	४	ध्रु	२.०८	२६	२१	२३ २८	६ मिथुन	०२ २० ०६ ०४	१४ २८ ५६ १९	७ १०४

A जयंती (प्र. मत से) B २५।४७, कृष्ण ४ व्रत

आषाढ़ कृ. ८ बुधे प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २९ जून

स	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लु
२	११	१९	३	५	३	३	११	५	१०	९	७
१३	२६	२७	७	१५	६	३	२४	२४	१६	२३	२८
२५	२०	३०	१५	४९	२८	२०	५४	४४	३५	१६	४१
३३	३८	१११	२६	२१	५८	४०	०५	०५	१६	१	३४
५७	०१	४०	८३	४	३२	७	३	३	१	१	१
१३	२५	६	३८	१०	५२	२०	११	१२	४१	१०	३१
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७
आर्द्रा	पुन	पुन	पुन	पुन	पुष्य	पुष्य	पुन	पुन	पुष्य	पुष्य	पुष्य

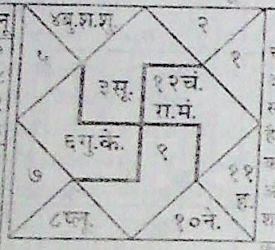

[तीनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

ता. ६ जुलाई ❖ आषाढ़ कृ. ३० बुधे प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

स	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लु
२	२	१९	३	५	३	३	११	५	१०	९	७
२०	२४	२२	१६	१६	१५	४	२४	२४	१६	२३	२८
६	३२	१५	६	२१	२८	४३	३२	३२	३९	७	४१
४	७	८	०५	४५	३५	१८	२९	२९	३०	२६	१०
५७	०१	३९	६५	५	३२	७	३	३	१	१	१
१४	१७	०९	४	१५	४३	३६	११	११	०	१९	२६
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
पुन.	पुन	पुन	पुन	पुन	पुष्य	पुष्य	पुन	पुन	पुष्य	पुष्य	पुष्य

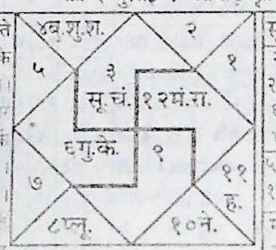

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

कर्क में शुक्र ११।३७, वट सावित्री व्रत धारणा, गुरु हर गोविन्द सिंह A

द्वितीया तिथि क्षय:

भ. १२।४३ से २२।५७ तक, बुध कर्क में १०।१६, पुष्य १ में शनि R

पंचक २२।३७ से, पुष्य में शुक्र २९।२५

पुष्य में बुध १३।२४, नाग पंचमी (बंगाल)

भ. १४।२२ से २५।२४ तक, रेवति में मंगल १९।२४

कालाष्टमी, मेला भृन्तर (हि.प्र.)

भ. २२।५० से, पंचक ६।७ तक

भ. १०।५५ तक, जुलाई मा. ७ ता. ३१ प्रा.

योगिनी एकादशी व्रत सबका, गोपद्म व्रतोद्यापन

प्रदोष व्रत

भ. १३।५३ से २६।४२ तक, मास शिवरात्री व्रत, शनि पश्चिम में अस्त १३।२९

पुनर्वसु में सूर्य २६।५८

श्लेषा में बुध १७।३८, श्लेषा में शुक्र २९।५, देवपितृकार्येऽमावस्या

इस माह में पांच गुरुवारों का योग है। "यत्र मासे पंच वारा जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे पीड़ा युद्ध च जायते॥" इस योग के अनुसार विश्व के पश्चिमी देशों में जनता को कष्ट, पीड़ा का योग बनेगा। संघर्षमय वातावरण तथा तनाव के साथ युद्ध की स्थिति बनने का आसार है। "आषाढ़ बदी द्वितीया क्षय। जनता में बढ़े बीमारी का भय॥" कर्क का शुक्र ११।३७ अस्त होगा। यत्र-तत्र नारी शोषण का वातावरण बढ़ेगा। औषधि बाजार में मिलावट बढ़ेगी। वायुवेग से धन हानि का योग भी है। शनि-शुक्र-बुध की युक्ति कर्क राशि में होने से प्रशासनिक ढांचा व राजनीति कलात्मक प्रभावित होगा। तिब्बत, हिमालय, कश्मीर, चीन, रूस तथा जापान में नई क्रांति जैसा वातावरण बनेगा। अंतर्राष्ट्रीय जगत में आतंकवाद मिटाने के प्रयास संचालित होंगे। जापान, जर्मनी का वर्चस्व रहेगा। वायुयान आपदाएं के दो मामले बनेंगे। सत्ता पक्ष के वरिष्ठतम नेता का रहस्य खुलेगा। पशु रोग बढ़ेगा। **तेजी-मंदी विचार (व्यापार)**-पक्षांत में एकादशी का व्रत होना बाजार तेजी का घटक बनता है। "सोमे शुक्रे सुर गुरे, जो पौढे सुरसाथ। अन्न जौ बहुला नीपजै, पृथ्वी में सुखधाव॥" देवशयनी एकादशी को यह योग है। अन्न, घरेलू सामग्री के भाव तेजी होंगे। स्वादु पदार्थ तेज होंगे। २३ जून को कर्क में शुक्र के कारण रुई में उछाल (मंदी-तेजी युक्त) रहेगा। २५ जून को पुष्य में शुक्र के कारण रुई, सत, सन, रेशम, ऊन, धान्य में तेजी आयेगी। चमड़ा, कपूर, सौन्दर्य प्रसाधन सामग्री भी तेज होगी। सोना-चांदी, धातु बाजार में मान भाव रहेगा। गेहूं, चना, बाजरा, जीरा, तिल, मोठ, मूंग तेज रहेंगे। **आकाश लक्षण**-पूर्वोत्तर आसाम, उड़ीसा, बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, केरल, गोवा में कहीं कहीं वर्षा का योग बनेगा। राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात में हल्की चलेगी। तथा यत्र तत्र छिटपुट वर्षा भी होगी। **शकुन विचार**-आषाढ़ कृष्णा प्रतिपदा को चमके बिजली और मेघ गाज। आगे दो मास तक वर्षा को तरसे, मत बेचो अब अनाज॥ बुध-शनि शुक्र राशि एक में युक्त, वर्षा कारक योग। जन धन की रक्षा करे अन्न उपजै सर्वत्र सुयोग॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आर्यभट्ट पंचांगम्

आषाढ़ शुक्ल पक्ष-७

श्री सं. २०६२ शाके १९२७

दिन मान — सूँ.टा. सूर्योदयास्त — दिनांक प्र. मु. अं. — चन्द्र संचार — दै. रवि स्पष्ट प्रातः — चन्द्रोदयास्त दिल्ली

ता. ७ से २१ जुलाई सन् २००५ ई., राष्ट्रीय मिति १६ से ३० आषाढ़ तक। रवि दक्षिणायणे, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.सूँ. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वि	तिथि	सूँ.टा.	नक्षत्र	सूँ.टा.	योग	सूँ.टा.	करण	सूँ.टा.	उदय	अस्त	भा.सूँ.टा.	५ घं. ३० मि.	वि	उदय	अस्त
१६	गु	१	७५ ८० १९ ४७	पुन	३४ १० १९ ११	व्या	२६ ४१ १६ २१	कि	२ ५२ ६ ३९	३४ ३६	५ ३१ १९ २१	२४ २९	7 क.११.८८	०२ २१ ०३ १८	२९ ५२	२० २३
१७	शु	२	४१ ३६ २२ ९	पु	४१ ३२ २२ ०८	ह	२८ ५१ १७ ०७	बा	८ ३५ ८ ५७	३४ ३४	५ ३१ १९ २१	२५	8 कर्क	०२ २२ ०० ३१ १३	६	४८ २१ २
१८	श	३	८० ४४ २४ ३७	श्ले	४९ ०६ २५ १७	व	३१ ३० १८ ०८	तै	१४ ३९ १९ २३	३४ ३३	५ ३२ १९ २१	२६ २	9 सिं.२५.४०	०२ २२ ५७ ४४ १४	७	४५ २१ ३५
१९	र	४	५३ ४० ३३ ०३	म	५६ ३५ २८ १४	सि	३४ ०० १९ ०८	व	२० ४७ १३ ५१	३४ ३१	५ ३३ १९ २०	२७ ३	10 सिंह	०२ २३ ५४ ५८ १३	८	३९ २२ ६
२०	चं	५	५९ २२ २९ १०	पूफा	६० ०० - -	व्य	३६ ४५ २० २२	वव	२६ ३९ १६ १२	३४ २९	५ ३३ १९ २०	२८ ४	11 सिंह	०२ २४ ५२ ११ १४	९	३३ २२ ३४
२१	म	६	६० ०० - -	उफा	३ ३४ ०६ ५८	व	३७ ५४ २४ ३३	को	३१ ११ १८ १७	३४ २८	५ ३३ १९ २०	२९ ५	12 कं.१३.३८	०२ २५ ४९ २५ १३	१०	२६ २३ १
२२	बु	६	३ ५९ ०३ ०९	हस्त	९ ३८ ०९ २५	प	२८ ३७ २१ ००	तै	३ ५९ ७ ९	३४ २६	५ ३३ १९ २०	३० ६	13 कन्या	०२ २६ ४६ ३८ १४	११	१९ २३ २८
२३	गु	७	७ १४ ०८ २८	ह	१४ २० २१ १८	शि	३८ ०५ २० ४८	व	७ १४ ८ २८	३४ २४	५ ३४ १९ २१	७ १४	14 तु.२३.५९	०२ २७ ४३ ५२ १३	१२	१४ २३ ५६
२४	शु	८	८ ४३ ०९ २८	चि	१७ २० २२ २९	मि	२६ ०३ २० ००	व	८ ४३ ९ ४	३४ २२	५ ३४ १९ २२	८ १५	15 तुला	०२ २८ ४१ ०५ १४	१३	११ २४ ०
२५	श	९	८ ०९ ०८ ५१	स्वा	१८ ०९ २३ ५१	मा	३२ २० १८ ३९	कौ	८ ९ ८ ५१	३४ २०	५ ३५ १९ १९	ब्रा ९	16 तुला	०२ २९ ३८ १९ १३	१४	१५ २४ २८
२६	र	१०	५ २८ ०७ ४७	वि	१६ ५७ २३ २२	शु	२६ ५४ २४ २१	ग	५ २८ ७ ४७	३४ १७	५ ३५ १९ १८	२ १०	17 वृ.१६.३४	०३ ०० ३५ ३२ १४	१५	१९ २५ ६
२७	च	११	० ४३ ०५ ५३	अ	२३ ०५ १९ ०६	शु	१९ ५१ २३ ३३	वि	० ४३ ५ ५३	२४ १५	५ ३६ १९ १८	३ ११	18 वृश्चिक	०३ ०१ ३२ ४६ १४	१६	२८ २५ ५०
क्षय	च	१२	५० २० २७ २६	०	० ० ० ०	०	० ० ० ०	०	० ० ० ०	० ०	० ० ० ०	० ०	0	० ० ०	० ० ०	० ० ० ०
२८	मं	१३	४८ ३७ २४ ०३	ज्ये	८ ४७ ०१ ०७	ब्र	११ २३ १० १०	को	२० २८ २३ ४४	३४ २३	५ ३७ १९ १८	४ १२	19 ध.०१.७७	०३ ०२ ३० ०० १४	१७	३७ २६ ४४
२९	बु	१४	३७ ०० २० २५	मू	१५ ४५ ०५ ५५	ग	११ ३१ २० १७	३४ १०	५ ३७ १९ १७	५ १२	20 धनु	०३ ०३ २७ १४ १५	१८	४२ २७ ४८
३०	गु	१५	२७ १६ १६ ३२	द्वषा	४७ २५ ३४ ३६	वि	४० ३८ २१ ५३	वि	२ १० ६ ३०	३४ ०८	५ ३८ १९ १७	६ १४	21 म.०८.५५	०३ ०४ २४ २९ १५	१९	३९ २८ ५१

A जैन अट्ठाई प्रा. B कन्दर्प ९, मेला शरीफ भवानी (का.) C पिण्डिका पूजा, उल्टी रथ यात्रा (उड़ीसा), चातुर्मास व्रत नियमादि प्रा., अजमेर दादा मेला प्रा., जिनदत्त सूरी ज. जैन

D देवशयनी एका. व्रत वैष्णव, हरियासर ५.५३ से ११.६ तक E पवित्रा, पूर्णिमा व्रत F मेला नैमिषारण्य, मनसा पूजारंभ, सन्यासियों का चातुर्मास व्रत नियमादि प्रा., आषाढ़ी पूर्णिमा

आषाढ़ शु. ८ शुक्रे प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १५ जुलाई

म	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लु
२	६	११	३	५	३	३	११	५	१०	१	७
२८	२	२८	२३	१७	२६	५	२८	२८	१६	२२	२८
२९	५	१	७	१८	२२	२३	३	३	२८	५५	२८
०	८	२८	२१	१३	२	१५	२२	२२	२७	१	५५
५७	११	३३	३८	६	७२	७	३	३	१	१	१
२४	२	५८	३४	३२	२८	२३	११	११	२३	२३	१८
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
३	३	३	३	३	३	३	अ	अ	अ	-	-
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९

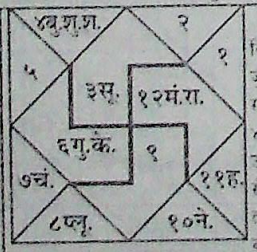

दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं।

ता. २१ जुलाई ❖ आषाढ़ शु. १५ गुरौ प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लु
३	८	०	३	५	४	३	११	५	१०	१	७
४	२७	१	२६	१७	३	६	२३	२३	१६	२२	२८
२४	४८	४८	२१	५५	३६	३८	४४	४४	२०	०६	२१
२९	२३	५८	६	२४	२०	३९	४७	४७	७	४	१३
५७	१८	३६	७	७७	७२	७	३	३	१	१	१
१५	२०	३३	५८	१९	१६	८५	११	११	३६	३२	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
३	३	३	३	३	३	अ	अ	अ	-	-	-
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.	शु.
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९

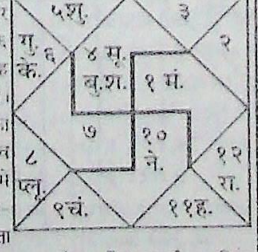

आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा गुरुवार को चन्द्रोदय (दर्शन) के अनुसार विश्व में चेतना का कार्यक्रम बनेगा। आषाढ़ शुक्ल ९ शनिवार ता. १६ जुलाई २००५ को १४.३६ बजे सूर्यदेव कर्क राशि में प्रवेश करेंगे। यह संक्रांति अयन संक्रांति मानी जाती है। सूर्य दक्षिणायन की ओर गमन करेगा। ४५ मुहूर्त यह संक्रांति शनिवार को होने के कारण लोहा जैसी वस्तुओं का उद्योग बढ़ेगा। मुश्किश कारक योग भी बनता है। मंगल तथा शनि के प्रभाव से वायु रोग, अग्निकांड, कलह-द्वेष बढ़ेगा। चीन, जापान, अरब देशों में तथा समुद्र तटीय प्रदेशों में गजनैतिक तथा प्राकृतिक आपदा बढ़ेगी। सूर्य-बुध-मंगल-गुरु के कारण विदेशी बाजार का घोटाला भी खुलेगा। अराजकता का वातावरण बढ़ेगा। बुद्धिजीवी त्रस्त रहेंगे। सरकार को विधेयक संबंधी नया संशोधन करने का विशेष योग बनता है। सर्वोच्च पदासीन व्यक्ति के लिए समय अनुकूल नहीं है। "मेघे च यदा भौमाः अग्नि तत्व प्रबल भवेत।" तेज गर्मी से जनता अशांत रहेगी। **तेजी-मंदी विचार (व्यापार)**-कर्क संक्रांति, विशाखा नक्षत्र, संक्रांति नाम राक्षसी, वाहन भैंसा के योग से कृषि सामग्री में मंदी का योग बनता है। वर्षा का आसार दर्शाता है। फलों में तेजी का योग बनता है। फल महंगे होंगे। १८ जुलाई को मघा तथा सिंह के शुक्र गेहूं, चना, बाजरा, ज्वार, ग्वार में तेजी का रुख करेगा। १८ को अश्विनी का मंगल तृण के भाव तेज करेगा। १९ को पुष्य का सूर्य तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, जावल, मौसं-चाँदी, हींग, हल्दी, घाट, बारदाना में तेजी का घटक बनेगा। **आकाश लक्षण**-देश के अधिकांश भागों/क्षेत्रों में मानसूनी वर्षा का योग बनता है। उत्तर प्रदेश, बिहार, पूर्वोत्तर क्षेत्रों में बाद के आसार से धन हानि योग बनता है। चीन, जर्मनी तथा श्रीलंका में भी प्राकृतिक आपदा का प्रभाव बढ़ेगा। **शतुल्ला विचार**-आषाढ़ शुक्ल पंचमी को, यदि पश्चिम की वायु हो तेज। वर्षा हो, इन्द्र गरजे, वर्षा योग बने सर्वत्र सुलभ सेज॥

आषाढ़ सुदी चतुर्दशी वायु परीक्षा शुभ विचार योग। घाघ कहे सुन भड्डरी वर्षा योग शुभ बने जोग॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रावण कृष्ण पक्ष-८

श्री सं. २०६२ शाके १९२७

दिन मान

सूर्योदयास्त

दिनांक प्र. मु. अं

चन्द्र संचार

दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घ. ३० मि.

चन्द्रोदयास्त दिल्ली

ता. २२ जुला. से ५ अगस्त सन् २००५ ई., रा. मिति ३१ आषाढ़ से १४ श्रावण तक। रवि दक्षिणायणे, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	वा	तिथि	स्टैं.टा.	नक्षत्र	स्टैं.टा.	योग	स्टैं.टा.	करण	स्टैं.टा.	उदय	अस्त	दि. मा.	दि. घ.	दि. मि.	भा.स्टैं.टा रा.घं.मि.	रा.	अं.	क.	ति.	उदय घ	उदय मि	अस्त घ	अस्त मि	
३१	शु	१	१७।३१	उ.भा	३।२६	अति	२।२३	२।३२	धृ	२।०८	१२।३०	को	७	१५	22 मकर	७३	०५	२१	४५	२०	२८	६	१४	सायन सूर्य सिंह में २३।३५
१	श	२	७।५०	०८।४७	४	३२	३३	१८।४०	आ	१९।२३	१३।२४	ग	७	५०	८	४७।२४	०३	५	३९	१९।१६	८	१६	23 कुं.८।०४	७३	०६	१८	५९	१७	२१	१०	७	२७	भ. १८।५९ से २९।१६ तक, पंचक ८।८ से, अशून्य शयन २ व्रत, A
२	श	३	५९।०४	२९।१६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0 ० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथि क्षय:
३	र	४	५९।३०	२७।१४	३	२५।२२	१६।२८	मो	९।००	२।३१	ब	२५	५	१५	४९	२४।००	०	३९	१९	१५	९	१७	24 कुंभ	७३	०७	१६	१६	१७	२१	४६	८	३८	कृष्ण चतुर्थी व्रत
४	चं	५	५।५०	२।२०	२३	४८।०४	२१।३३	१७।१०	कौ	१८।११	१२।५६	ब	३३	५०	५	४०	१९	१५	१०	१८	२५	25 मी.८।४२	७३	०८	१३	३३	१८	२२	२०	९	४८	नाग पंचमी (मरुस्थले), श्रावण सोमवार व्रत
५	मं	६	४०।५८	२२।०४	३।४१	१८	२३	१३।०२	म	३३।४८	२४।०५	ग	१२	१५	१०	००	३३	५५	५	४०	२२	१४	११	१९	26 मीन	७३	०९	१०	५१	१९	२२	५१	१०	८	भ. २२।४ से
५	बु	७	३८।२७	२३।०४	१७	१७।०२	१२	३०	धृ	४३।५५	२२।५३	वि	१	२७	९	२८	३३	५२	५	४१	१९	१४	१२	२०	27 मे.१२।३०	७३	१०	०८	१०	२०	२३	२३	११	४९	भ. ९।२८ तक, पंचक १२।३० तक, शीतला सप्तमी (उड़ीसा)
६	गु	८	३७	४७	२०	४८	अ	१७	३२	१९	४०	शु	४०	१८	२१	४७	खा	७	५३	८	५१	३३	४९	५	४२	१९	१३	१३	२१	28 मेष	७३	११	०५	३०	२१	२३	५७	१२	५०	कालाष्टमी, मन्वादि ८
७	शु	९	३८।५०	२१।१४	भर	१९	४७	१३	३७	ग	३८	४२	२१	११	नै	८	६	८	५६	३३	४६	५	४२	१९	१३	१४	२२	२९	वृ.९।५६	७३	१२	०२	५१	२२	२४	०	१३	५०	पू.फा में शुक्र ७।४१, मंगला गौरी पूजा, केर पूजा (त्रिपुरा), गुरु B
८	श	१०	४१	५४	२२	१६	कृ	२३	३४	९५	०८	ब	३	१७	२१	०१	व	९	५६	९	४१	३३	४२	५	४३	१९	१२	१५	२३	३०	वृष	७३	१३	००।१३	२३	२४	२४	१४	५०	भ. ९।४१ से २२।१६ तक
९	र	११	४५।११	२३।४८	ने	२८	३०	१५।१०	ध	३८	४१	२१	५५	ब	१३	९	१०	५९	३३	००	५	४३	१९	११	१६	२४	३१	वृष	७३	१३	५७	३६	२४	२५	१५	१५	४९	कामदा एकादशी व्रत सबका
१०	चं	१२	४२	५४	२५	४२	मृ	३४	३८	१९	३५	व्या	४०	५५	२१	४५	को	१७	२६	१२	४१	३३	३७	५	४४	१९	११	१७	२५	A1	मि.७।४०	७३	१४	५५	००	२५	२६	१	१६	४०	श्रावण सोमवार व्रत, अगस्त मास ८ ता. ३१ प्रा., लोकमान्य तिलक पुण्य
११	मं	१३	५५	०७	२७	५१	आ	४१	२०	२२	१७	ह	४१	५२	१२	३०	ग	२२	३१	१४	४०	३३	३४	५	४४	१९	१०	१८	२६	2	मिथुन	७३	१५	५२	२५	२६	२६	५१	१७	३६	भ. २७।५१ से, श्लेषा में सूर्य २५।२३, भौम प्रदोष व्रत
१२	बु	१४	८०।००	-	-	पुन	४८	३०	२५	०९	ब	४४	०२	२३	२२	वि	२८	८	१७	००	३३	३१	५	४५	१९	०९	१९	२७	3	क.८।१५	७३	१६	४९	५१	२७	२७	४६	१८	२२	भ. १७।०० तक, मास शिवरात्री व्रत
१३	गु	१४	१	७४	०६	१९	पु	५५	५५	२८	०८	मि	४६	२४	२४	२९	श	१	४	६	११	३३	२७	५	४५	१९	०८	२०	२८	4	कर्क	७३	१७	४७	१८	२९	२८	४२	१९	२	चतुर्दशी वृद्धि
१४	शु	३०	७	४६	०१	२७	श्ले	८।००	-	-	-	ब	४८	०१	२५	२८	न	७	५	८	३६	३३	२४	५	४६	१९	०८	२१	२९	5	कर्क	७३	१८	४४	०७	२९	२८	३९	१९	३७	देवपितृकार्ये ऽमावस्या, हरियाली अमा., चितलगी ३० (उड़ीसा). C

A मंगला गौरी पूजन, राष्ट्रीय श्रावणारंभ, लोकमान्य तिलक जयंती, बुध वक्री ७।२० B हरिकिशन सिंह जयंती (प्रा. मत से), बुध पश्चिम में अस्त २३।८ C सरस माधुरी जयंती, लक्ष्मी पोल यात्रा, व्यतिपात पुण्यं

श्रावण कृ. ८ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २८ जुलाई

स	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लु
३	०	३	५	४	३	११	५	१०	९	७	
१९	९	५	२५	१८	१२	७	२३	२६	२२	२८	
५	२३	२०	३२	०९	१	२२	२२	८	२५	१३	
३०	३४	२९	१३	१३	०	४३	२२	१३	८	२२	
५७	००	३०	३०	८	०	३	३	१	१	१	
२१	२३	०	१३	१०	२	०५	१९	४०	२६	३	
मा	मा	मा	व	मा	व	मा	व	व	व	व	
उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ	-	-	-
८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
मंद	मंद	मंद	मंद	मंद	मंद	मंद	मंद	मंद	मंद	मंद	मंद

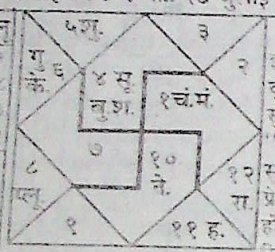

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

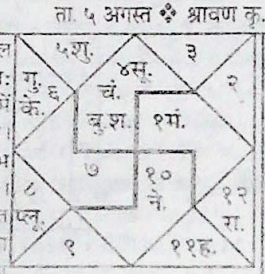

ता. ५ अगस्त ❖ श्रावण कृ. ३० शुक्रे प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

स	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लु
३	३	०	३	५	४	३	११	५	१०	९	७
१८	१७	२०	२०	१९	२१	८	२२	२२	१५	२२	२८
४	१९	२९	२७	५०	३६	३४	५७	५०	५२	२२	५
३७	५७	६	६	४८	४३	३७	५	५	४३	१२	४७
५७	५७	३२	४६	९	७१	०७	३	३	२	१	०
२९	५७	५१	२५	४	४५	४०	११	११	३	२८	५०
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ	-	-	-
८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
मंद	मंद	मंद	मंद	मंद	मंद	मंद	मंद	मंद	मंद	मंद	मंद

श्रावण मास में पांच शुक्रवारों का योग बन रहा है। जिसका फल इस प्रकार है- "शुक्रस्य पंचवारारुच्च यत्र मासे निरन्तरम। प्रजा: वृद्धः सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते॥" इस योग के कारण जनता में सुख शांति का वातावरण बनेगा। सुभिक्ष (सुकाल) का योग बनेगा। "श्रावण बदी एकादशी रोहिणी नक्षत्र मान। भानुवारे योग शुभ सुभिक्ष जान॥" इस मास में आमोद-प्रमोद जैसा वातावरण बनेगा। प्रेमी-प्रेमिका का वर्चस्व बढ़ेगा। स्त्री वर्ग की चर्चा चक्र-तंत्र चर्चित होगी। राजनैतिक वातावरण में अस्थिरता तथा पार्टियां परिवर्तन का सिलसिला चलेगा। अमेरिका, अफ्रीका, टोकियो, अरबी देश तथा समुद्र तटीय देशों-प्रदेशों में वर्षा के कारण प्राकृतिक बाधा, बिजली गिरना, बाढ़, तूफान या अन्य भू-स्खलन जैसा योग बनेगा। राजस्थान, दिल्ली, मध्य प्रदेश तथा झारखण्ड एवं छत्तीसगढ़ की प्रशासन व्यवस्था में शांति घटेगी। सत्ता पक्ष विचलित होगा। तेजी-मंदी। **तिजारत (व्यापार)**-ग्रह योग से शेयर बाजार में मंदी का योग बनेगें। ता. २३ की बुध वक्री होने से अनाज सस्ता, तांबा-पीतल आदि में जोरदार झटका से तेजी या मंदी। व्यापारी चिन्तित। ता. २९ जुलाई को पू.फा. के शुक्र के कारण गेहूं, चना, ज्वार, बाजरा, उड़द, मूंग, मोठ का भाव मंदा तथा वर्षा श्रेष्ठ का योग बनेगा। २ अगस्त को अश्लेषा के सूर्य से देश के पर्वोत्तर भाग में व्यापारी वर्ग में विवाद उत्पन्न होगा। निष्कर्ष, दलहन का भाव सम रहेगा। **आकाश लक्षण**-देश में सर्वत्र वर्षा तथा बाढ़ के प्रकोप का योग बनता है। उत्तर प्रदेश के मैदानी भागों तथा राजस्थान के दक्षिणी-पूर्वी भागों में जन-धन की हानि वर्षा के कारण होगी। पशु धन में विशेष कमी तथा नया रोगोपद्रव बढ़ेगा। **शकुन विचार**-श्रावण बदी एकादशी के कारण अग्नि कोण में वर्षा की रुकावट पैदा होती है। उत्तर तथा वायव्य की वायु से वर्षा अच्छा संयोग सूचकदायक होती है॥ श्रावण शुक्ल अमावस्या हरियाली जो बरसे शुभ सम जानुसार। भादों मास में वर्षा हो घास कहे करसे कृषक खूब पैदावार॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रावण शुक्ल पक्ष-९

श्री सं. २०६२ शाके १९२७

ता. ६ से १९ अगस्त सन् २००५ ई., राष्ट्रीय मिति १५ से २८ श्रावण तक। रवि दक्षिणायणे, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घटी	पल	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र. मु. अं.			चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा	अं	क	वि	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं	मि	अस्त घं	मि	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
१५	श	१	१३	१०	११	०३	श्ले	३	२३	०७	०८	व	५१	१३	२६	१६	बव	१३	१०	११	३	३३	२१	५	४७	१९	०७	२२	३०	6	सिं.०७।०८	०३	१९	४२	१६	[illegible]	६	३४	२०	९	चन्द्रदर्शन मु. ३० समता कारक, नक्त व्रतारंभ, सोमेश्वर पूजा
१६	र	२	१९	०६	१३	२६	म	१०	४६	१०	०५	प	५३	२३	२७	०८	कौ	१९	६	१३	२६	३३	१७	५	४७	१९	०६	२३	[illegible]	7	सिंह	०३	२०	३९	४६	३१	७	२९	२०	३७	रज्जब मु. मा ७ प्रा., सिंधारा
१७	चं	३	२४	३७	१५	३८	पूष्य	१७	४६	१२	५४	शि	५५	०६	२७	५०	ग	२४	३७	१५	३८	३३	१४	५	४८	१९	०५	२४	२	8	कं.१९।३४	०३	२१	३७	१७	३२	८	२२	२१	४	भ. २८।३९ से, मधुश्रवा (छोटी) तीज, हरियाली ३, श्रावण सोमवार व्रत
१८	मं	४	२९	२५	१७	३४	उ.फा.	२४	०७	१५	२७	सि	५६	०९	२८	१६	वि	२९	२५	१७	३४	३३	१०	५	४८	१९	०४	२५	३	9	कन्या	०३	२२	३४	४९	३३	९	१५	२१	३१	भ. १७।३४ तक, उ.फा. में शुक्र ११।३, भा. क्रांति दिवस, विनायक ४ A
१९	बु	५	३३	१०	१९	०५	ह	२९	२९	१७	३७	सा	५६	१७	२८	२०	ब	१	२६	६	२३	३३	०७	५	४९	१९	०४	२६	४	10	कन्या	०३	२३	३२	२२	३४	१०	८	२१	५९	भरणी में मंगल १२।५४, वक्री बुध पुष्य में १२।५४, नागपंचमी B
२०	गु	६	३५	३१	२०	०२	चि	३३	३१	१९	१४	शुभ	५५	१५	२७	५५	कौ	४	३१	७	३८	३३	०३	५	४९	१९	०३	२७	५	11	तु.०६।३०	०३	२४	२९	५६	३५	११	४	२२	२८	वर्ण श्रृयाल षष्ठी, अस्वत्थ मारुति ६, पार्श्वनाथ मोक्ष, शनि पूर्व में ❑
२१	शु	७	३६	१२	२०	१९	स्वा	३५	५६	२०	१२	शु	५२	४९	२६	५८	ग	६	४	८	१६	३३	००	५	५०	१९	०२	२८	६	12	तुला	०३	२५	२७	३१	३५	१२	३	२३	२	भ. २०।१९ से, कन्या में शुक्र ६।१०, गोस्वामी तुलसी दास जयंती, C
२२	श	८	३४	५९	१९	५०	वि	३६	२९	२०	२६	ब्र	४८	५२	२५	२३	वि	५	४९	८	१०	३२	५६	५	५०	१९	०१	२९	७	13	वृ.१४।२७	०३	२६	२५	०६	३७	१३	५	२३	४२	भ. ८।१० तक, श्री दुर्गाष्टमी, मंगला गौरी पूजन, मेला नयनादेवी चिंतपूर्णि ❖
२३	र	९	३१	५०	१८	३५	अ	३५	०७	१९	५४	ऐं	४३	२१	२३	११	बा	३	३९	७	१९	३२	५२	५	५१	१९	००	३०	८	14	वृश्चिक	०३	२७	२२	४३	३७	१४	११	२४	०	❖ (हि.प्र.), दूर्वाष्टमी व्रत, बुध पूर्व में उदय २३।५०
२४	चं	१०	२६	४९	१६	३५	ज्ये	३१	५४	१८	३७	वै	३६	२०	२०	२३	ग	२६	४९	१६	३५	३२	४९	५	५२	१८	५९	३१	९	15	ध.१८।३७	०३	२८	२०	२०	३८	१५	१८	२४	३०	भ. २७।२० से, भा. स्वतंत्रता दिवस वर्ष ५९ वाँ, श्रावण सोमवार J
२५	मं	११	२०	०७	१३	५५	मूल	२७	०२	१६	४१	वि	२७	५८	१७	०३	वि	२०	७	१३	५५	३२	४५	५	५२	१८	५८	भा	१०	16	धनु	०३	२९	१७	५८	४०	१६	२३	२५	२७	भ. १३।५५ तक, मघा सिंह में सूर्य २३।०० मु. ३०, संक्रांति पुण्यं, D
२६	बु	१२	१२	०४	१०	४२	पू.षा	२०	५०	१४	१३	प्री	१८	३१	१३	१७	बा	१२	४	१०	४२	३२	४१	५	५३	१८	५७	२	११	17	म.१९।३२	०४	००	१५	३८	४०	१७	२३	२६	३४	प्रदोष व्रत ❑ उदय २९।४४
२७	गु	१३	३	०३	०७	०६	उ.षा	१३	४४	११	२३	आ	८ ५७	१८ ३९	०९ २८	१२ ५७	तै	३	३	७	६	३२	३८	५	५३	१८	५६	३	१२	18	मकर	०४	०१	१३	१८	४२	१८	१५	२७	४६	भ. २७।१७ से, श्रावणी उपाकर्म (ऋग्वेदीनां), हयग्रीव जयंती
क्षय	गु	१४	५३	२९	२७	१७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथि क्षयः
२८	शु	१५	४३	४८	२३	२५	[illegible]	६ ५८	०९ ३६	०८ २९	२१ २०	शो	४६	५६	२४	४०	वि	१८	३७	१३	२०	३२	३४	५	५४	१८	५५	४	१३	19	कुं.१८।५०	०४	०२	११	००	४३	१९	०	२९	०	भ. १३।२० तक, पंचक १८।५० से, सत्य व्रत, पूर्णिमा व्रतं पुण्यं च, E

A व्रत, दूर्वा गणपति व्रत, वरद ४ व्रत B (देशाचार), तक्षक भित्ति चित्रित नाग पूजन, अमरनाथ यात्रा, जीवंतिका पूजन C शीतला पूजन (सिंध) D पवित्रा एकादशी व्रत सबका, मार्गी बुध ८।१२

E रक्षा बन्धन, अमरनाथ दर्शन (काश्मीर), झुलन यात्रा समापन, मंगला गौरी पूजन, हजरत अली जन्म दिवस (मु.), श्रावणी पूर्णिमा J व्रत, कल्की जयंती,

श्रावण शु. ८ शनौ प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १३ अगस्त

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	६	०	३	५	५	३	११	५	१०	९	७
२६	२५	१४	१५	२१	१	९	२२	२२	१५	२२	२७
२५	३	४३	२३	१३	९	३५	३१	३१	३५	९	५९
६	१०	१२	२३	१	२८	३१	३९	३९	३७	७	५२
५७	००	३०	१७	९	७१	७	३	३	२	१	०
३७	०	१७	५९	५२	२३	३२	११	११	१३	३८	३७
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

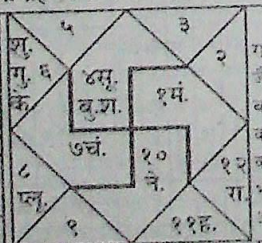

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

इस पक्ष में प्रतिपदा को शनिवार ६ अगस्त को चन्द्र दर्शन होने से सिंह राशि में संचरण करता हुआ सैन्य कर्मियों के लिए बाधक रहेगा। राष्ट्रपति जैसे उच्च पदासीन अधिकारियों में रोगोपद्रव योग तथा देहावसान जैसा घटक बनता है। गुरु शुक्र केतु के प्रभाव से सीमा विवाद तथा साम्प्रदायिकवाद का योग यत्र-तत्र-सर्वत्र बनेगा। मासांत में चतुर्दशी का क्षय होना धार्मिक कार्यक्रमों में उपद्रव कारक योग करता है। पृथ्वी पर खाद्य सामग्री का अभाव भी बनता है। पश्चिमी राष्ट्रों में प्राकृतिक आपदा योग बनता है। जल से बाढ़ आदि की हलचल रहेगी। राजनीतिक हत्या जैसे विवाद संसद में उठेंगे। सत्ता पक्ष में फूट के कारण विपक्ष प्रबल होगा। "श्रावण शुक्ले पक्षे च क्षीणा काऽपि तिथिर्भवेत। तदा वै कार्तिक मासे छत्र भंग प्रजायते॥" चतुर्दशी क्षय से कार्तिक मास में छत्र भंग योग विश्व में बनता है। उत्तरांचल, आसाम, बिहार, भूटान, नेपाल, कश्मीर तथा पश्चिमी बंगाल में प्राकृतिक आपदाओं के भय से जन-धन हानि होगी। सुदी ३ से १० तक उल्कापात प्रभाव। वायु वेग से प्रभावित हो जन सेलाब॥ तेजी-मंदी विचार (व्यापार)-शनिवार को चन्द्रदर्शन से मघा नक्षत्र में होने के कारण अफीम में तेजी तथा सोना-चांदी, अनाज इत्यादि में मंदी का योग बनेगा। रुई, सूत, कपड़ा बाजार, सरसों, मूंगफली आदि में तेजी योग। ११ अगस्त को भरणी में मंगल के कारण गेहूं, सोना-चांदी में तेजी का योग बनता है। १३ अगस्त को कन्या राशि के शुक्र के कारण चांदी में घटाबढ़ी रहेगी। १२ अगस्त को शनि का उदय होने से सभी वस्तुओं में तेजी का घटक बनेगा। १५ अगस्त को बुधोदय के कारण दुर्भिक्ष की स्थिति बने। तिलहन के भाव तेज हों। १६ अगस्त को बुध मार्गी कर्क राशि में होने से चावल, कपड़ा, दूध, जलयान-नौकायान सामग्री में तेजी। आकाश लक्षण-मानसून भारत में सक्रिय रहेगा। अधिकतर क्षेत्रों में व्यापक वर्षा तथा यत्र-तत्र बाढ़ के हालात भी बनेंगे। पश्चिमी देशों में भू-स्खलन संबंधी घटना का योग बनता है। शकुन विचार-ईख शर्करा मिष्ठ रस गुड़ हल्दी तिल तेल। सोना तांबा तेज हो सूर्य सिंह के मेल॥ पक्षांत में तिथि क्षय फल छत्र भंग योग करन्त। एकाएक क्षुब्ध घटना घटे चिन्ता सर्व करन्त॥

ता. १९ अगस्त ❖ श्रावण शु. १५ शुक्रे प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

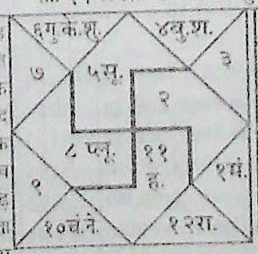

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	९	०	३	५	५	३	११	५	१०	९	७
२	२१	१७	१५	२२	८	१०	२२	२२	१५	२१	२७
११	२९	३९	१८	१३	१६	२०	१२	१२	२२	५९	५६
०	५९	३२	३८	२६	५९	१९	३४	३४	१	२४	३८
५७	१५	२८	२४	१०	७१	७	३	३	२	१	०
४३	१६	०५	४४	२२	०४	२२	११	११	२०	३६	२६
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भाद्रपद कृष्ण पक्ष-१० श्री सं. २०६२ शाके १९२७

ता. २० अगस्त से ३ सितं. सन् २००५ ई., रा. मिति २१ श्रावण से १२ भाद्रपद तक। रवि दक्षिणायणे, उत्तर गोले, शरद-वर्षा ऋतु।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिन मान घं	मि	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र. मु. अं. भाद्र	रजब	अगस्त	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
२९	श	१	३४	२७	१९	४१	श	५१	३१	२६	३१	अ	३६	३२	२०	३१	बा	९	३	९	३१	३२	३०	५	५४	१८	५४	५	१४	20	कुंभ	०४	०३	०८	४३	५३/४४	१९	३९	६	१३	हस्त में शुक्र १६।१८, अशून्य शयन २ व्रत, मनसा पूजा पूर्ति (बंगाल)
३०	र	२	२५	५४	१६	१६	पूभा	४५	२२	२४	०४	सु	२६	४८	१६	३८	तै	०	२	५	५६	३२	२६	५	५५	१८	५३	६	१५	21	मी.१८।३८	०४	०४	०६	२७	४६	२०	१५	७	२३	भ. २६।४४ से, श्लेषा में बुध २०।४८, सिंधारा
३१	चं	३	१८	३२	१३	२०	उभा	४०	३३	२२	०८	धृ	१८	०४	१३	०९	वि	१८	३२	१३	२०	३२	२२	५	५५	१८	५२	७	१६	22	मीन	०४	०५	०४	१३	४७	२०	४८	८	२९	भ. १३।२० तक, कज्जली (बड़ी) तीज, सातुड़ी तीज, जीवंतिका पूजन, A
भा१	मं	४	१२	४२	११	०१	रेव	३७	२३	२०	५३	शू	१०	३६	१०	१०	बा	४२	४२	११	१	३२	१८	५	५६	१८	५१	८	१७	23	मे.२०।५३	०४	०६	०२	००	५०	२१	२१	९	३४	पंचक २०।५३ तक, राष्ट्रीय भाद्रपदारंभ, शरद ऋतु प्रारंभ, सायन ✡
२	बु	५	८	४०	०९	२५	अ	३६	०६	२०	२३	गं	४	३६	०७	४७	तै	८	४०	९	२५	३२	१४	५	५६	१८	५०	९	१८	24	मेष	०४	०६	५९	५०	५०	२१	५५	१०	३७	रक्षा पंचमी, अश्वत्थ मारुति पूजन, चन्द्र (ऊभी) छठ व्रत
३	गु	६	६	३६	०८	३५	भर	३६	४६	२०	३९	पू/प	०/५७	१०/२०	०८/२८	०१/५३	व	६	३६	८	३५	३२	१०	५	५७	१८	४९	१०	१९	25	वृ.२६।५१	०४	०७	५७	४०	५३	२२	३२	११	४०	भ. ८।३५ से २०।२९ तक, चित्रा १ में गुरु १२।२७, हल षष्ठी, ललही B
४	शु	७	६	३१	०८	३४	कृ	३६	२०	२१	४१	व्या	५५	५७	२८	२०	ब	६	३१	८	३४	३२	०७	५	५७	१८	४८	११	२०	26	वृष	०४	०८	५५	३३	५४	२३	१२	१२	४२	श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मार्त, कालाष्टमी, मेला द्रोण दनकौर C
५	श	८	८	१७	०९	१७	रो	४३	३५	२३	२४	ह	५५	५३	२८	१९	कौ	८	१७	९	१७	३२	०३	५	५८	१८	४७	१२	२१	27	वृष	०४	०९	५३	२७	५६	२३	५७	१३	४२	श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्णव ✡ सूर्य कन्या में ६।४०
६	र	९	११	४०	१०	३८	मृ	४९	१२	२५	३९	व	५६	५०	२८	४३	ग	११	४०	१०	३८	३१	५८	५	५८	१८	४६	१३	२२	28	मि.१२।२८	०४	१०	५१	२३	५८	२४	०	१४	४०	भ. २३।३१ से, गोगा नवमी, नन्दोत्सव (गोकुल)
७	चं	१०	१६	१९	१२	३०	आ	५५	५०	२८	१९	सि	५८	३३	२९	२४	वि	१६	१९	१२	३०	३१	५४	५	५९	१८	४५	१४	२३	29	मिथुन	०४	११	४९	२१	५८/०	२४	४७	१५	३३	भ. १२।३० तक
८	मं	११	२१	५०	१४	४४	पुन	६०	००	-	-	व्य	६०	००	-	-	बा	२१	५०	१४	४४	३१	५०	५	५९	१८	४४	१५	२४	30	क.२४।२९	०४	१२	४७	२१	२	२५	४०	१६	२०	पू.फा. में सूर्य १९।१, व्यतिपात पुण्यम्, अजा एकादशी व्रत सबका
९	बु	१२	२७	५१	१७	०८	पुन	३	०३	०७	१३	व्य	०	४३	०६	१७	तै	२७	५१	१७	८	३१	४६	६	००	१८	४२	१६	२५	31	कर्क	०४	१३	४५	२३	३	२६	३६	१७	२	चित्रा में शुक्र २३।५३, वत्स द्वादशी, महाद्वादशी व्रत, अश्वत्थ मारुती पूजन
१०	गु	१३	३४	००	१९	३७	पु	१०	३३	१०	१३	व	३	०६	०७	१५	ग	०	५५	६	२३	३१	४२	६	००	१८	४१	१७	२६	S1	कर्क	०४	१४	४३	२६	६	२७	३३	१७	३९	भ. १९।३७ से, मघा सिंह में बुध १३।३०, प्रदोष व्रत, कैलाश यात्रा २ D
११	शु	१४	४०	०१	२२	०१	आ	१७	५९	१३	१२	प	५	२८	०८	१२	वि	७	२	८	५०	३१	३८	६	०१	१८	४०	१८	२७	2	सिं.१३।१२	०४	१५	४१	३२	७	२८	२९	१८	११	भ. ८।५० तक, मास शिवरात्री व्रत, अघोरा १४, बुध पूर्व में अस्त २२।२४
१२	श	३०	४५	३९	२४	१७	म	२५	०७	१६	०४	शि	७	३८	०९	०५	च	१२	५३	११	११	३१	३४	६	०१	१८	३९	१९	२८	3	सिंह	०४	१६	३९	३९	८	२९	२३	१८	४१	देवपितृकार्येऽमावस्या, कुशोत्पाटिनी ३० (ऊँ हुम् फट् स्वाहा) मंत्र E

A कृष्ण ४ व्रत, बहुला ४, संकष्ट ४ B ६, पुत्रार्थी व्रत, माधवदेव तिथि (आसाम) C (उ.प्र.), संत ज्ञानेश्वर जयंती D दिन, शब्बे मिराज (मु.), सितम्बर मास ९ ता. ३० प्रा., पर्युषण पर्व प्रा. जैन E से, पिठोरी ३०, सती पूजन, मन्वादि ३०, मेला सुथरे शाह दिल्ली, वृषभोत्सव, नक्त व्रत पूर्ति

भाद्रपद कृ. ८ शनौ प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २७ अगस्त

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	१	०	३	५	५	३	११	५	१०	९	७
९	१४	२१	२१	२३	१७	११	२१	२१	१५	२१	२७
५३	४	१२	५८	३८	४३	१८	४७	४७	३	४६	५३
२७	२६	३२	१६	३८	५७	२७	८	८	११	४९	५९
५७	७३२	२४	७९	११	७०	७	३	३	२	१	०
५६	०७	३६	३६	०	३८	०७	११	११	२३	३२	११
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
मघा ३	रोहि. २	भरणी ३	श्लेषा २	चित्रा १	हस्त २	पुष्य ३	रेवती २	हस्त ४	शत. ३	श्रवण ४	ज्येष्ठा ४

६गु.शु.के. ४बु.श. ७ ५ सू. २चं. ३ ८प्लू. ११ ह. ९ १मं. १०नेप. १२रा.

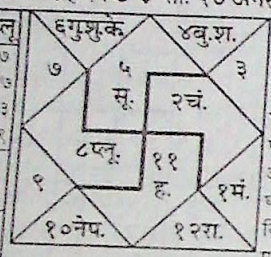

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

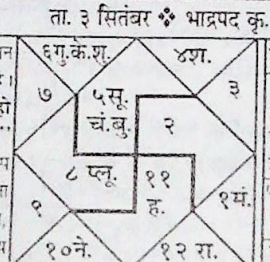

इस मास में पांच शनिवारों तथा पांच रविवारों का मिश्रित योग बन रहा है। जिनका फल निम्न प्रकार से ज्योतिष ग्रन्थों में बताया गया है। "शनिवारा यदा पंच पाताले कम्पते फणी। ईशान देश भंगश्च वह्निदाहो महर्घता॥ रविवारो यदा पंच जायते। द्वेष घृणा विवाद सर्वत्र विद्यते॥" पांच शनिवारों के अनुसार पाताल में शेष नाग कम्पित होकर भूमि में भूकम्प आदि का योग करता है। ईशान कोण की देशों की सरकार गिरने की घटना घटेगी। अग्नि कांड का भय रहेगा। रविवार पांच के कारण घृणा, द्वेषता, विवाद अचानक यत्र-तत्र-सर्वत्र बनने का योग बनता है। पूर्व उत्तर मध्य एशिया, अरब राष्ट्र, पाक, अफगानिस्तान, चीन, फ्रांस, अमेरिका तथा ब्रिटेन के लिए आपातकाल स्थिति युक्त रहेगी। यत्र-तत्र इन देशों में हत्याओं का सिलसिला चलेगा। पांच रविवारों के कारण दुर्भिक्ष तथा उपद्रवों का विश्व व्यापी प्रभाव रहेगा। वायुयान, रेलयान तथा सड़क परिवहन की दुर्घटनाओं का प्रभाव बना रहेगा। हड़तालों का भी बोलबाला चलेगा। स्त्री वर्ग के लिए यह माह रोग कारक, अपमान कारक रहेगा। प्राकृतिक आपदा का प्रभाव यत्र-तत्र बनेगा। साम्प्रदायिक वैमनस्यता बढ़ेगी। केन्द्र में तीन मंत्रियों को आपत्ति। **तेजी-मंदी विचार (व्यापार)**-गुरु-शुक्र-केतु की युक्ति बाजार का संतुलन बिगाड़ेगा। खाद्यान्न महंगे होंगे। सरकार द्वारा जारी समर्थन मूल्य नगण्य रहेगा। २० अगस्त को हस्त का शुक्र के कारण रुई, चांदी, जीरा, ग्वार, बाजरा, ज्वार आदि के भावों में मंदी का घटक बनेगा। ३० अगस्त को पू.फा. के सूर्य के कारण १४ दिन तक जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड के भावों में मंदी आयेगी। ३१ अगस्त को चित्रा में शुक्र के कारण १३ दिन सरसों, तिल, तेल, घृत, गेहूं, चावल आदि तेज रहेंगे। **आकाश लक्षण**-भाद्र बदी में वर्षा के योग न्यून या मध्यम रहेंगे। मेघ छाये रहेंगे। खण्ड वृष्टि का योग, कहीं-कहीं बाढ़ का प्रभाव तथा दिल्ली में केतु के कारण प्राकृतिक आपदा रहेगी। **शकुन विचार**-भादों बदी एकादशी जो ना छिटके मेघ। चार मास बरसे सही कहे भड्डरी देख॥ भादों जै दिन पछियो व्यारि। ते दिन माघ में पड़े तुषारि॥ भाद्र कृष्ण द्वितीया को चन्द्रमा रात भर मेघों से ढका रहे तो अगले वर्ष वर्षा अच्छी, खाद्यान्न मंदे।

ता. ३ सितंबर ❖ भाद्रपद कृ. ३० शनौ प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

६गु.के.शु. ४श. ७ ५सू. चं.बु. २ ३ ८ प्लू. ११ ह. ९ १मं. १०ने. १२ रा.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	४	०	४	५	५	३	११	५	१०	९	७
१६	८	२३	२	२४	२५	१२	२१	२१	१४	२१	२७
३९	३	५४	५३	५७	५७	७	२४	२४	४६	३६	५३
३९	५३	९	५५	७	४	२७	५३	५३	२५	२३	१९
५८	७१७	२०	१०७	११	७०	६	३	३	२	१	०
८	२०	५७	५८	२९	१२	५०	११	११	२४	२६	२
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
पू.फा. १	मघा ३	भरणी ४	मघा १	चित्रा १	चित्रा १	पुष्य ३	रेवती २	हस्त ४	शत. ३	श्रवण ४	ज्येष्ठा ४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आर्यभट्ट पंचांगम्

भाद्रपद शुक्ल पक्ष-११

श्री सं. २०६२ शाके १९२७

दिन मान

स्टै.टा. सूर्योदयास्त

दिनांक प्र. मु. अं.

चन्द्र संचार

दै. रवि स्पष्ट प्रातः

चन्द्रोदयास्त दिल्ली

ता. ४ से १८ सितंबर सन् २००५ ई., राष्ट्रीय मिति १३ से २७ भाद्रपद तक। रवि दक्षिणायणे, उत्तर गोले, शरद् ऋतु।

रा. मि.	वार	तिथि	स्टै.टा.	नक्षत्र	स्टै.टा.	योग	स्टै.टा.	करण	स्टै.टा.	उदय	अस्त	भा.स्टै.टा.	५ घ. ३० मि.	उदय	अस्त
१३	र	१	५०।४३	२६।१९	पूर्व	३१।४६	१८।४४	मि	९	२७।०९	२१।२१	वा	२२।५८	१५।१३	२०।३१
१४	चं	२	५५।०१	२८।०३	उत्त	३५।४४	२१।०८	वा	१०	००।१०	२२।०१	ति	२३।२६	१६।०२	२१।३०
१५	मं	३	५८।२३	२९।२४	ह	४२।५१	२३।११	गृ	११	२७।१०	००।३८	ते	२६।०९	१६।४७	२२।२९
१६	बु	४	६०।००	- -	चि	४६।५६	२४।५०	शु	११	२४।१०	२७।३०	ब	२९।००	१७।०५	२३।१८
१७	गु	४	० ।३८	०६।१९	स्वा	४९।४८	२५।५९	ब	१०	२७।१०	२९।२८	वि	० ।३८	१७।१९	२३।५३
१८	शु	५	१ ।३६	०६।४३	वि	५२।३८	२६।३६	ए	८	२८।०५	२८।४८	बा	१ ।३६	१८।४३	२४।०९
१९	श	६	१ ।०९	०६।३३	अ	५१।१९	२६।३६	वै	५	२१।०८	२३।१३	तै	१ ।९	१८।३३	२४।०५
क्षय	श	७	५१।२२	२७।०५	०	० ।०	० ।०	०	०	० ।०	० ।०	०	० ।०	० ।०	० ।०
२०	र	८	५५।४१	२८।२२	ज्ये	४७।८८	२६।०१	म	८	२८।०५	२९।२०	वि	२७।३०	१७।८	२४।०१
२१	चं	९	५०।४२	२६।२३	मूल	४८।४९	२४।५०	आ	४८	४२।२५	३५।४	बा	२३।२२	१५।२६	२३।५७
२२	म	१०	४४।२५	२३।५२	पूषा	४२।३१	२२।०७	सा	४०	५२।२२	२७।३	ते	२७।४२	१३।११	२३।५२
२३	बु	११	३७।०३	२०।५६	उषा	३७।०८	२०।५८	शो	३२	०७।१८	५८।८	व	१०।५०	१२।२०	२३।४८
२४	गु	१२	२८।५५	१७।४१	श्रव	३०।५८	१८।३१	अ	२२	४२।१५	१२।२	ब	३ ।३	७ ।२०	३०।४४
२५	शु	१३	२०।२१	१४।१६	ध	२४।२३	१५।५३	सु	११	५८।११	१७।१	ते	२०।२१	१४।१६	३०।४०
२६	श	१४	११।०५	१०।५०	श	१९।४८	१३।१५	ई	७	२२।००	२२।२९	व	११।०५	१०।५०	३०।३६
२७	र	१५	३ ।२९	०७।३२	पूषा	११।३६	१०।४७	ग	४४	१६।२३	२१।१२	ब	३ ।२९	७ ।३२	३०।३२

रा. मि.	तिथि	स्टै.टा.	नक्षत्र	स्टै.टा.	योग	स्टै.टा.	करण	स्टै.टा.	उदय	अस्त	भा.स्टै.टा.	५ घ. ३० मि.	उदय	अस्त
१३	१	५०।४३	२६।१९	पूर्व	३१।४६	१८।४४	मि	९	२७।०९	२१।२१	वा	२२।५८	१५।१३	२०।३१
१४	२	५५।०१	२८।०३	उत्त	३५।४४	२१।०८	वा	१०	००।१०	२२।०१	ति	२३।२६	१६।०२	२१।३०
१५	३	५८।२३	२९।२४	ह	४२।५१	२३।११	गृ	११	२७।१०	००।३८	ते	२६।०९	१६।४७	२२।२९
१६	४	६०।००	- -	चि	४६।५६	२४।५०	शु	११	२४।१०	२७।३०	ब	२९।००	१७।०५	२३।१८
१७	४	० ।३८	०६।१९	स्वा	४९।४८	२५।५९	ब	१०	२७।१०	२९।२८	वि	० ।३८	१७।१९	२३।५३
१८	५	१ ।३६	०६।४३	वि	५२।३८	२६।३६	ए	८	२८।०५	२८।४८	बा	१ ।३६	१८।४३	२४।०९
१९	६	१ ।०९	०६।३३	अ	५१।१९	२६।३६	वै	५	२१।०८	२३।१३	तै	१ ।९	१८।३३	२४।०५
क्षय	७	५१।२२	२७।०५	०	० ।०	० ।०	०	०	० ।०	० ।०	०	० ।०	० ।०	० ।०
२०	८	५५।४१	२८।२२	ज्ये	४७।८८	२६।०१	म	८	२८।०५	२९।२०	वि	२७।३०	१७।८	२४।०१
२१	९	५०।४२	२६।२३	मूल	४८।४९	२४।५०	आ	४८	४२।२५	३५।४	बा	२३।२२	१५।२६	२३।५७
२२	१०	४४।२५	२३।५२	पूषा	४२।३१	२२।०७	सा	४०	५२।२२	२७।३	ते	२७।४२	१३।११	२३।५२
२३	११	३७।०३	२०।५६	उषा	३७।०८	२०।५८	शो	३२	०७।१८	५८।८	व	१०।५०	१२।२०	२३।४८
२४	१२	२८।५५	१७।४१	श्रव	३०।५८	१८।३१	अ	२२	४२।१५	१२।२	ब	३ ।३	७ ।२०	३०।४४
२५	१३	२०।२१	१४।१६	ध	२४।२३	१५।५३	सु	११	५८।११	१७।१	ते	२०।२१	१४।१६	३०।४०
२६	१४	११।०५	१०।५०	श	१९।४८	१३।१५	ई	७	२२।००	२२।२९	व	११।०५	१०।५०	३०।३६
२७	१५	३ ।२९	०७।३२	पूषा	११।३६	१०।४७	ग	४४	१६।२३	२१।१२	ब	३ ।२९	७ ।३२	३०।३२

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

क्रू.	कल्य सूत्र पाठ जैन
ख.	चन्द्रदर्शन मु. ४५ समर्पता कारक, नक्त व्रतोद्यापन, तेलाभर तप जैन.
ग.	शाबान मु. मा. ८ प्रा., तुला में शुक्र १६।३९, गौरी तृतीया, हरितालिका
घ.	भ. १७।५५ से. श्रीगणेश जन्म चतुर्थी, विनायक ४, पत्थर चौथ,
ङ.	भ. ६।१९ तक, पू.फा. में बुध १९।५७, ऋषि पंचमी व्रत, जैन संवत्सरी
च.	मेला चारभुजानाथ गढ़बोर (राज.), हरिवासर २०।५८ से, भा. हिन्दी दि.
छ.	भ. २९।०५ से. सूर्य षष्ठी, ललिता ६, बलदेव ६, मेला ब्रजमंडल,
ज.	सप्तमी तिथि क्षय:
झ.	भ. १७।४ तक, कृतिका में मंगल २७।०६, श्री दुर्गाष्टमी, राधाष्टमी,
ञ.	स्वाति में शुक्र १०।१४, श्री चन्द नवमी, अदुःख ९ (उदासीन संप्रदाय).
ट.	उ.फा. में सूर्य १२।०७, दशावतार १०, बाबा रामदेव मेला पूर्ण (राज.)
ठ.	भ. १०।२७ से २०।५६ तक, पद्मा (जलझूलनी) एकादशी व्रत सबका,
ड.	पंचक २९।१२ से, उ.फा. में बुध १९।०६, श्री वामन ज., भुवनेश्वरी ज.
ढ.	सूर्य कन्या में २२।५४ मु. १५, गोत्रिरात्रि व्रतारंभ, संक्रांति पुण्यम्
ण.	भ. १०।५० से २१।१० तक, कन्या में बुध १४।३७, अनंत चतुर्दशी व्रत,
त.	प्रतिपदा श्राद्ध ७।३२ बाद
थ.	स्वाति में शुक्र १०।१४, श्री चन्द नवमी, अदुःख ९ (उदासीन संप्रदाय).
द.	उ.फा. में सूर्य १२।०७, दशावतार १०, बाबा रामदेव मेला पूर्ण (राज.)
ध.	भ. १०।२७ से २०।५६ तक, पद्मा (जलझूलनी) एकादशी व्रत सबका,
न.	पंचक २९।१२ से, उ.फा. में बुध १९।०६, श्री वामन ज., भुवनेश्वरी ज.
प.	सूर्य कन्या में २२।५४ मु. १५, गोत्रिरात्रि व्रतारंभ, संक्रांति पुण्यम्
फ.	भ. १०।५० से २१।१० तक, कन्या में बुध १४।३७, अनंत चतुर्दशी व्रत,
ब.	प्रतिपदा श्राद्ध ७।३२ बाद

A बाबा रामदेव मेला प्रा. रुणीचा (राज.) B ३, बागह ज., मन्वादि ३ C कलंकी ४, चन्द्र दर्शन निषेध, गणेश जन्मोत्सव (महाराष्ट्र), जैन संवत्सरी (च.पक्ष), पर्युषण पर्व पूर्ति जैन E अनुराधा नक्षत्र में ज्येष्ठा गौरी आवाहन, मुक्ता भरण ७, संतान ७, अपराजिता ७, महालक्ष्मी चतार्रभ

G मूल नक्षत्र में ज्येष्ठा, गौरी विसर्जन

H मेला चारभुजानाथ गढ़बोर (राज.), हरिवासर २०।५८ से, भा. हिन्दी दि. J हरिवासर २७।५१ तक, प्रदोष व्रत, श्रवण १२ व्रत, भा. इंजीनियर्स डे K मेला सोडल (जालन्धर), सत्य व्रत, पूर्णिमा व्रत व पुण्यम्, गोत्रिरात्रि व्रत पूर्ति, भागवत सप्ताह पूर्ति, प्रौष्ठपदी पूर्णिमा श्राद्ध, महालयारंभ

भाद्रपद शु. ८ रवौ प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ११ सितं.

ग्र	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	७	०	४	५	६	३	११	५	१०	९	७
२४	१८	२६	१७	२६	५	१३	२०	२०	१४	२१	२७
२५	१७	२५	५५	३०	१६	०	५९	५९	२७	२५	५६
२४	०	५	४७	३१	४१	०६	२७	२७	२२	२२	३०
५८	२३	१६	१४	११	६९	६	३	३	२	१	०
२१	१६	२	५५	५७	३७	२६	११	११	२०	१८	१७
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
३	३	३	अ	३	३	३	अ	अ	-	-	-

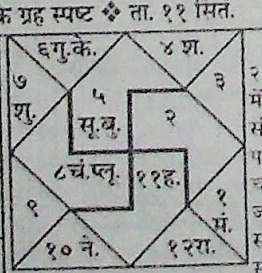

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

ता. १८ सितंबर ❖ भाद्रपद शु. १५ रवौ प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

ग्र	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	११	०	५	५	६	३	११	५	१०	९	७
१	०	२८	१	२७	१३	१३	२०	२०	१४	२१	२७
२४	३	३	८	५५	२२	४४	७०	३७	११	१६	५७
२७	३७	१०	४९	१९	६	३८	१२	१२	१४	४५	१३
५८	...	११	१७	१२	६८	६	३	३	२	१	०
२३	४१	१०	१५	१७	५८	२	११	१९	१५	०९	२१
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
३	३	३	अ	३	३	३	अ	अ	-	-	-

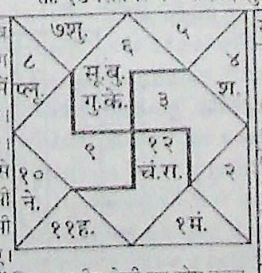

भाद्रपद सुदी का चन्द्रोदय द्वितीया (तीज) सोमवार को (गोचर २२।५५ या कन्या में उ.फा. नक्षत्र में होता हुआ) हो रहा है। इसके योग में काफी लोगों में संघर्ष का वातावरण बनेगा। शासक वर्ग भी आपस में संघर्षमय होकर अस्थिरता की ओर बढ़ेगा। पशुओं में महामारी रोग बढ़ेगा। पश्चिमी राष्ट्रों में प्राकृतिक प्रकोप के कारण हानि का योग बनता है। चालू बाजार का संतुलन बिगड़ेगा। पूर्वी प्रदेशों में बाढ़ के हालात से जनता पीड़ित होगी। मंगल का स्वगांश में संचरण होना एकाधिकार जैसी संकीर्ण भावनाएं उजागर होंगी। भारत सरकार को पड़ोसी देशों से भी सावधानी अत्यावश्यक है। सैनिक बल (सुरक्षा बल) बढ़ाना चाहिए।

"सिंह राशौ बुधः स्याच्चेन सर्वधान्य महर्घताः। सुवर्ण देवदारुश्च महर्घ प्रभवेत्तदा॥" बाजार में विश्व स्तरीय तेजी का योग उच्च कारण से बनेगा। कनाडा, तुर्की, अफगानिस्तान, ब्रह्मा, लक्षद्वीप, हिन्द, चीन आदि में प्राकृतिक आपदा, जल, अग्नि या लूटमार का वातावरण बनेगा। भारत में भी बाह्य शक्ति का वर्चस्व बढ़ने जैसा योग बनेगा। चक्राकार वायु चौतरफा अतितीव्र गति से बढ़ेगी। **तेजी-मंदी विचार (व्यापार)**-चन्द्रदर्शन सोमवार तथा कन्या संक्रांति का प्रवेश १६ सितम्बर को होना १५ मुहूर्त्त संक्रांति के प्रभाव के कारण धान्य के भावों में तेजी आयेगी। अनावृष्टि की स्थिति बनेगी। "रवि संक्रमण शुक्रवार को करता मंगल विचार। जीवन में शुभ कामना शुक्र को नित पार॥ राजतंत्र नूतन गति आंदोलित जनादेश। तरल द्रव्य तेजी बने शासन दक्ष विशेष॥" ता. ४ से १८ सितम्बर तक सभी सामान्य वस्तुओं सहित भावों में तेजी का रुख बनता है। रुई तथा चांदी में मंदी का योग बनता है। **आकाश लक्षण**-देश के कुछ क्षेत्रों में रुक-रुककर वर्षा होगी। कहीं पर तेज आंधी व तूफान का योग है। देश के पूर्वी भागों में तेज गर्मी का प्रकोप प्रारंभ होगा। उमश का वातावरण रहेगा। **शकुन विचार-भादों सुदी पंचमी स्वाती संजोनी होय। दोनों शुभ योग मिले मंगल बरती लोय॥ भादों मासे ऊजरी, लखो मूल विचार। तो भाषे यों भड्डरी साख भली निरधार॥**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आश्विन कृष्ण पक्ष-१२ श्री सं. २०६२ शाके १९२७

दिन मान — स्टैं.टा. सूर्योदयास्त — दिनांक प्र. मु. अ — चन्द्र संचार — दै. रवि स्पष्ट प्रातः — चन्द्रोदयास्त दिल्ली

ता. १९ सितं. से ३ अक्टू. सन् २००५ ई., रा. मिति २८ भाद्र. से ११ आश्विन तक। रवि दक्षिणायणे, उत्तर-दक्षिण गोले, शरद ऋतु।

गा. मि.	वि.	तिथि	घ	प	ब	मि	स्टैं.टा.	नक्षत्र	घ	प	ब	मि	स्टैं.टा.	योग	घ	प	ब	मि	स्टैं.टा.	करण	घ	प	ब	मि	स्टैं.टा.	उदय घ	उदय मि	अस्त घ	अस्त मि	भा.स्टैं.टा. रा.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	उदय घ	उदय मि	अस्त घ	अस्त मि
अश्व	२	१	५५	३०	२८	३२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२८	चं	२	४९	३५	२५	५९	ध्रुवा	६	१२	०८	३८	वृ	३६	००	२७	३३	ते	२२	३०	१५	१२	३०	२७	६	०९	१८	२०	४	१४	19	मीन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२९	मं	३	४४	३८	२७	०१	व्य	६	१०	०५	४३	ध	२८	५२	१७	३३	व	१६	५०	१२	५५	३०	२३	६	१०	१८	१९	५	१५	20	मी.०६	५	०३	११	४५	३७	१९	५०	८	१७
३०	बु	४	४१	४०	२२	४४	भा	५	५८	२२	२९	३१	ब्या	२३	०४	१५	२३	ब	१२	४७	११	१०	३०	१९	६	१०	१८	१८	६	१६	21	मेष	५	०४	१०	२२	४०	२०	२६	९	२२
३१	गु	५	४०	०५	२२	१३	कृ	५	१९	२९	५४	ह	१८	३५	१३	४१	कौ	१०	३०	१०	२३	३०	१५	६	११	१८	१७	७	१७	22	वृ.११।३३	५	०५	०९	०२	४१	२१	६	१०	२७
१	शु	६	४०	५२	२२	२८	मृ	६	००'	—	—	व	१५	५८	१२	३४	ग	१०	८	१०	१५	३०	१०	६	११	१८	१५	८	१८	23	वृष	५	०६	०७	४३	४४	२१	५०	११	३०
२	श	७	४३	१०	२३	२८	मृ	२	००	०४	०३	मि	१४	४०	१२	०४	वि	११	४२	१०	५३	३०	०६	६	१२	१८	१४	९	१९	24	मि.१९।५३	५	०७	०६	२७	४६	२२	३९	१२	३१
३	र	८	४७	१४	२४	०६	मृ	६	४०	०८	५२	व्य	१४	४१	१३	०५	बा	१५	१	१२	१३	३०	०२	६	१२	१८	१३	१०	२०	25	मिथुन	५	०८	०५	२३	४८	२३	३३	१३	२६
४	च	९	५२	३०	२४	१३	आ	१२	३७	११	१५	व	१५	४८	१२	३२	तै	११	४४	१४	६	२९	५७	६	१३	१८	१२	११	२१	26	मिथुन	५	०९	०४	०१	५१	२४	०	१४	१७
५	मं	१०	५८	३१	२५	३८	पुन	१९	३३	१४	०२	ध	१७	३९	१३	१७	व	२५	२६	१६	२४	२९	५३	६	१३	१८	११	१२	२२	27	क.०७।११	५	१०	०२	५२	५३	२४	२८	१५	१
६	बु	११	६०	००	—	—	पु	२६	५१	१७	०१	शि	१९	५५	१४	१२	ब	३१	३८	१८	५३	२९	४९	६	१४	१८	०९	१३	२३	28	कर्क	५	११	०१	४५	५५	२५	२५	१५	३९
७	गु	११	४	४४	०८	०८	श्ले	३०	२६	२७	०१	सि	२२	१५	१५	०८	बा	४	४४	८	८	२९	४५	६	१४	१८	०८	१४	२४	29	सिं.२०।४१	५	१२	००	४०	५७	२६	२१	१६	१३
८	शु	१२	१०	४६	१०	३३	म	४९	२१	२२	५१	मा	२४	१८	१५	५८	तै	१०	४६	१०	३३	२९	४०	६	१५	१८	०७	१५	२५	30	सिंह	५	१२	५९	३७	५९	२७	१६	१६	४३
९	श	१३	१६	१२	१२	४४	पूर्व	४७	५३	२५	२०	फा	२५	५२	१६	३६	व	१६	१२	१२	४४	२९	३६	६	१५	१८	०६	१६	२६	O1	सिंह	५	१३	५८	३७	१	२८	१०	१७	११
१०	र	१४	२०	१६	१४	३४	पूर्व	५३	२१	२४	३६	शु	२६	४५	१६	५८	श	२०	४६	१४	३४	२९	३२	६	१६	१८	०५	१७	२७	2	कं.०८।००	५	१४	५७	३८	४	२९	४	१७	३८
११	च	३०	२४	१८	१६	००	ह	५७	४८	२९	२२	ब	२६	५०	१७	०१	ना	२४	१८	१६	०	२९	२८	६	१६	१८	०४	१८	२८	3	कन्या	५	१५	५६	४२	६	२९	५८	१८	५

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

प्रतिपदा तिथि क्षय:

अशून्य शयन २ व्रत, द्वितीया श्राद्ध, शव ए- बारात (मु.)

भ. १२।५५ से २४।१ तक, पंचक ६।५८ तक, तृतीया श्राद्ध

वक्री मंगल भरणी में १६।२४, कृष्ण चतुर्थी व्रत, चतुर्थी श्राद्ध, A

हस्त में बुध २७।७, पंचमी श्राद्ध, सायन सूर्य तुला में २८।१७

भ. २२।२८ से, विशाखा में शुक्र २४।२६, चन्दन षष्ठी, षष्ठी श्राद्ध, B

भ. १०।५३ तक, सप्तमी श्राद्ध, महालक्ष्मी व्रत पूर्ण

कालाष्टमी, जीवित्पुत्रिकाष्टमी व्रत, अष्टमी श्राद्ध, व्यतिपात पुण्यम्

हस्त में सूर्य २८।२०, मातृ नवमी, नवमी श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध, C

भ. १६।२४ से २९।३८ तक, चित्रा ३ तुला में गुरु २९।३४, दशमी श्राद्ध, D

इन्दिरा एकादशी व्रत स्मार्त, एकादशी श्राद्ध

इन्दिरा एकादशी व्रत वैष्णव, द्वादशी श्राद्ध

चित्रा में बुध २२।४५, द्वादशी श्राद्ध, सन्यासियों का श्राद्ध, प्रदोष व्रत

भ. १२।४४ से २५।४२ तक, त्रयोदशी श्राद्ध, मास शिवरात्री व्रत, E

वृश्चिक में शुक्र २०।१९, चतुर्दशी श्राद्ध, विषाग्नि शस्त्रादि मृतकों F

देवपितृ कार्येऽमावस्या, सर्व पितृ श्राद्ध व विसर्जन, गजच्छाया योग

A दशरथ ललिता व्रत B राष्ट्रीय आश्विन प्रा., दक्षिण गोल प्रा. C भूदान जयंती D गुरु नानक देव शहीद दिवस (प्रा. मत से) E अक्टूबर मास १० ता. ३१ प्रा., मंगल वक्री २६।२६ F का श्राद्ध, महात्मा गांधी व शास्त्री जन्म दिवस

आश्विन कृ. ८ रवौ प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २५ सितंबर

स	च	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	२	०	५	५	६	३	११	५	१०	९	७
८	४	२९	१३	२१	२१	१४	२०	२०	१३	२१	२८
५	५५	५	२०	२२	२२	२५	१४	१२	५५	९	१
१३	५९	४	२८	१०	१०	३१	५०	५३	२२	१५	३०
५८	३१	५	१८	१२	६८	५	३	३	३	०	०
४८	५७	३०	३२	३४	१५	३५	११	११	०६	५८	४४
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	च	व	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
८	८	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
प्रा.	प्रा.	प्रा.	प्रा.	प्रा.	प्रा.	प्रा.	प्रा.	प्रा.	प्रा.	प्रा.	प्रा.
मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.
मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.
शि.	शि.	शि.	शि.	शि.	शि.	शि.	शि.	शि.	शि.	शि.	शि.
ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.
ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.

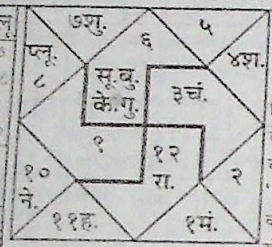

इस मास में पांच रविवार तथा पांच सोमवार होने का फल तथा प्रभाव निम्नांकित रहेगा- "यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच सन्ततम्। दुर्भिक्षं छत्र भंग च तदाऽस्ते च महद्भयम्॥ सोमस्य पंचवारास्च यत्र मासे भवन्ति हि। धन-धान्य समृद्धिश्च सुखी भवति मेदिनी॥" अर्थात् पांच रविवारों के कारण दुर्भिक्ष: (अकाल), छत्र भंग (बड़े नेताओं के) योग विशेष बनता है। महाभय का वातावरण भी बनने का योग है। पूर्व योगानुसार- "सिंह शुक्र जब होय भवानी, चाले पवन नहीं बरसे पानी।" (इस योग की घटना पूर्व माह का आभास से होता है) महत्वपूर्ण व्यक्ति का अवसान योग भी बनता है। दुर्घटना का योग ज्यादा बनेगा। पांच सोमवार के फलानुसार धन-धान्य की वृद्धि का योग बनता है। अत: रवि-सोम का मिश्रित प्रभाव रहेगा। तथा सामान्यत: उदासीनता छायी रहेगी। फ्रांस, इंगलैंड, तुर्की, कनाडा आदि में प्राकृतिक आपदा के प्रभाव से जनता त्रस्त रहेगी। विश्व व्यापी अंतर्राष्ट्रीय तनाव के योग भी बनते हैं। वसुन्धरा पर कहीं रुण्ड-मुण्ड होने की घटना भी घटेगी। भारत सरकार सचेत रहेगी। **तेजी-मंदी विचार (व्यापार)**-इस माह में पापड़, दूध, शक्कर, घृत, तेल का भाव बढ़ेगा। रंगने रंग की वस्तुएं तेज रहेंगी। शेयर्स बाजार का भाव मंदा होगा। कपास, रुई, पाट, बारदाना भी सस्ता होगा। खाद्यान्न में भी मंदी का योग बनेगा। हींग, जीरा, पेट्रोल, तिल, तेल, बिलौला के भाव बढ़ेंगे। तृण सस्ता होगा। गुड़, लाल चन्दन, कॉपर, गुलाल, सब्जी बाजार समभाव रहेगा। नमक के भाव तेज होंगे। **आकाश लक्षण**-उत्तरी भारत में कहीं-कहीं प्राकृतिक आपदा, हिमालय में भी चिन्तनीय स्थिति बनेगी। मास पर्यंत पूर्वोत्तर-ईशान कोणीय देश-प्रदेशों की स्थिति दयनीय रहेगी। जनता त्रहि-त्राहि करेगी। **शुभ-अशुभ विचार**-"जेहि पखवारे तिथि घटे, ताही में बढ़ जाय। सभी वस्तु मंदी बिके महंगाई हट जाय॥ सोमवती अमावस्या पितु पक्ष, शुभ तिथि मान: धर्म जगत में प्रगति करे आगे हो सम्मान॥" **विशेष**-सनातन धर्मानुसार यह पक्ष पितृ पक्ष को समर्पित है। पितृ तर्पण, मार्जन, अर्चन अपनी सामर्थ्य के अनुसार करते हुए पूर्वजों की श्रद्धानुसार पूजा करें। पितृदेवो भव:, मातृदेवो भव:, अतिथिदेवो भव:।

आश्विन कृ. ३० चंद्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ३ अक्टूबर

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

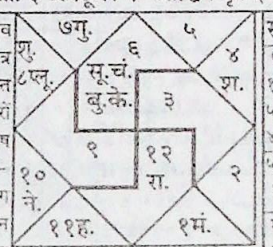

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	५	०	५	६	७	३	११	५	१०	९	७
१५	१०	२९	२७	१	०	१५	१९	१९	१३	२१	२८
५६	५७	२५	३	३	२५	८	३९	४९	३९	२	८
४२	४१	४०	९	३६	४६	८	३१	३१	४५	१४	१७
५९	४५	०२	९६	१२	६७	४	३	३	१	०	०
६	२९	२६	२४	४९	३९	५९	११	११	५३	४५	५९
मा	मा	व	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
९	९	९	०	९	९	९	९	९	९	९	९
प्रा.	प्रा.	प्रा.	प्रा.	प्रा.	प्रा.	प्रा.	प्रा.	प्रा.	प्रा.	प्रा.	प्रा.
मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.	मि.
मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.	मृ.
शि.	शि.	शि.	शि.	शि.	शि.	शि.	शि.	शि.	शि.	शि.	शि.
ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.
ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.	ख.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आर्यभट्ट पंचांगम्

आश्विन शुक्ल पक्ष-१३

श्री सं. २०६२ शाके १९२७

दिन मान

स्टै.टा. सूर्योदयास्त

दिनांक प्र. मु. अं.

चन्द्र संचार

दै. रवि स्पष्ट प्रातः

चन्द्रोदयास्त दिल्ली

ता. ४ से १७ अक्टूबर सन् २००५ ई., राष्ट्रीय मिति १२ से २५ आश्विन तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, शरद ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

ता.	वा	तिथि	स्टै.टा.	नक्षत्र	स्टै.टा.	योग	स्टै.टा.	करण	स्टै.टा.	उदय	अस्त	भा.स्टै.टा.	५ घं. ३० मि.	उदय	अस्त
१३	मं	१	२६।३०	रे	०७।१६	चि	६।००	ए	२६।०३	१६।४२	ब	२६।०२	१६।८८	२०।२३	६ ५३।१८	३४
१३	बु	२	२७।५९	अ	१७।२१	चि	१।०२	बै	२७।२३	१६।०३	कौ	२७।५१	१७।२९	२१।१९	६ ५४।१८	३५
१४	गु	३	२८।२९	अ	१७।३३	स्वा	३।१३	वि	२९।४८	१५।०१	ग	२८।२०	१७।३३	२१।५९	६ १८।८०	०१
१५	शु	४	२९।५९	ज्ये	१८।१	वि	५।२४	गं	१८।२१	१३।३१	वि	२९।४७	१८।०९	२२।११	६ १९।८२	०३
१६	श	५	२५।०३	ज्ये	१६।२०	अ	४।२८	ब	२५।३	१६।२०	चा	२५।३	१६।२०	२२।०५	६ १९।८३	०४
१७	र	६	२१।५६	मू	१५।०६	ध	३।१६	मै	८।५८	०९।२३	त	२१।५६	१५।५	२३।०२	६ २०।८४	०५
१८	चं	७	१७।५२	मू	१३।२१	ध	३।०८	व	१७।५२	१३।२९	२८।८	६	२०।१५	२५।५	६	१०
१९	मं	८	१३।५५	पू	११।२१	श	५।४१	ब	१७।५५	१२।११	२१।५४	६	२२।१५	२६।५	६	११
२०	बु	९	७।४२	पू	०९।२०	श	५।०१	कौ	७।२९	९।४८	२८।५०	६	२१।१५	२७।५	७	१२
२१	गु	१०	०।५८	उ	०८।१९	ध्रु	४।२०	वि	०।५४	८।४४	२८।४८	६	२२।१५	२८।८	८	१३
२२	शु	११	५८।२२	उ	०८।१८	श	४।०१	गं	२८।०९	१८।०८	ब	२०।८०	१४।४९	२९।५२	६	२३।१५	२९।५	९	१४
२३	श	१२	५०।४९	उ	०९।२०	मृ	२५।२८	वृ	२५।५८	१३।२९	कौ	२३।५९	२२।५८	२८।३७	६	२४।१५	३०।५	१०	१५
२४	र	१३	४०।३१	उ	१०।२६	मृ	३५।०२	ग	७।१३	१।१७	२८।३३	६	२५।१५	३१।५	११	१६
२५	चं	१४	२८।२२	रे	१०।५०	रे	२७।०७	वि	२।७	६।५१	२८।२२	६	२५।१५	३२।५	१२	१७

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कार्तिक कृष्ण पक्ष-१५ श्री सं. २०६२ शाके १९२७

दिन मान | स्टैं.टा. सूर्योदयास्त | दिनांक प्र. मु. अं | चन्द्र संचार | दै. रवि स्पष्ट प्रातः | चन्द्रोदयास्त दिल्ली

ता. १८ अक्टू. से २ नवं. सन् २००५ ई., रा. मिति २६ आश्विन से ११ कार्तिक तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, शरद-हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.		तिथि	स्टैं.टा.	नक्षत्र	स्टैं.टा.	योग	स्टैं.टा.	करण	स्टैं.टा.	उदय	अस्त	भा.स्टैं.टा. ५ घ. ३० मि.	उदय	अस्त
२६	म	१	२३।३८	१५।५२	अ	२४।००	१६।०५	व	४८।१५	२४।५५	को	२३।३८	१५।५२	२४।२५
२७	बु	२	२०।१२	१४।३१	भ	२२।२०	१५।२६	मि	४२।०५	२२।५२	ग	२०।१२	१४।३१	२४।२१
२८	गु	३	१८।२०	१३।०६	क	२२।२३	१५।२८	ब्य	३७।१२	२१।१९	वि	१८।२०	१३।४६	२४।१७
२९	शु	४	१८।११	१३।२३	रो	२३।५६	१६।०२	व	३३।४१	२०।२०	बा	१८।११	१३।४३	२४।१३
३०	श	५	१९।०९	१४।२३	मृ	२४।१४	१५।२१	प	३३।३४	१९।५३	तै	१९।०९	१४।२३	२४।०९
कार्ति	र	६	२३।१०	१५।४०	आ	३२।०९	१९।२०	शि	३३।४३	१९।५७	व	२३।१०	१५।४५	२४।०५
२	चं	७	२७।५९	१७।४०	पुन	३८।२४	२१।५१	मि	३३।५४	२०।२७	ब	२७।५९	१७।४०	२४।०१
३	मं	८	३३।४८	२०।०१	पु	४५।३२	२४।४३	सा	३६।४८	२१।१३	वा	०।४७	६।४८	२४।५७
४	बु	९	४०।०६	२२।३३	श्ले	५३।०२	२७।४३	शु	३९।०२	२२।००	तै	६।५५	९।१६	२४।५३
५	गु	१०	४६।१७	२५।०२	म	६०।००	– –	शु	४१।११	२३।००	व	१३।१४	११।४९	२४।४९
६	शु	११	५१।०६	२७।१५	म	०।१६	०६।३८	ब	४२।५२	२३।४०	ब	१९।९	१४।११	२४।४५
७	श	१२	५६।१४	२९।०२	पू	६।४८	०९।१६	ऐं	४३।४५	२४।०२	की	२४।१०	१६।१२	२४।४२
८	र	१३	५९।१७	३०।१६	उफ	१२।१३	१९।२६	वै	४३।३७	२४।००	ग	२७।५६	१७।४३	२४।३८
९	चं	१४	६०।००	– –	ह	१६।१६	१३।०४	वि	४२।२१	२३।३०	वि	३०।१४	१८।३१	२४।३४
१०	मं	१४	०।४८	०६।५४	चि	१८।५१	१४।०७	धृ	३९।५५	२२।३३	श	०।४८	६।५४	२४।३०
११	बु	३०	०।५३	०६।५६	स्वा	२०।०२	१४।३६	आ	३६।२४	२१।०९	ना	०।५३	६।५६	२४।२७

| | | |

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आर्यभट्ट पंचांगम्

कार्तिक शुक्ल पक्ष-१५

श्री सं. २०६२ शाके १९२७

दिन मान

स्टैं.टा. सूर्योदयास्त

दिनांक प्र. मु. अं.

चन्द्र संचार

दै. रवि स्पष्ट प्रातः

चन्द्रोदयास्त दिल्ली

ता. ३ से १५ नवंबर सन् २००५ ई., राष्ट्रीय मिति १२ से २४ कार्तिक तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

रा. मि.		तिथि	स्टैं.टा.	नक्षत्र	स्टैं.टा.	योग	स्टैं.टा.	करण	स्टैं.टा.	उदय	अस्त	भा.स्टैं.टा.	५ घं. ३० मि.	उदय	अस्त
			घ प		घ मि		घ प		घ मि	घ मि	घ मि	रा अं ब वि		घ मि	घ मि
क्षय	बु	१	५९ ३७	३०	२६ ०	०	० ०	०	० ०	० ०	० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ०	० ०
१२	गु	२	५७ १०	२९	२८ वि	१९	५७ १४	३५	मी ३१	५३ १९	२१ बा	२८ ३१ १८ ०	२७ २३ ६ ३६	१७ ३३	१८ २९
१३	शु	३	५३ ४५	२८	०७ अ	१८	४३ १४	०८	शो २६	३२ १७	१४ नै	२५ ३३ १६ ५०	२७ १९ ६ ३७	१७ ३३	१९ ३१
१४	श	४	४९ ३६	२६	२८ ज्ये	१६	४६ १३	२०	अ २५	३१ १५	५० व	२१ ४८ १५ १९	२७ १६ ६ ३७	१७ ३२	२० २
१५	र	५	४४ ५६	२५	३० मूल	१४	०६ १२	१७	म २४	०० १२	१४ व	१७ १८ १३ ३४	२७ १२ ६ ३८	१७ ३१	२१ ३
१६	चं	६	३९ ५४	२२	३० पूषा	११	०० ११	०३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१७	मं	७	३४ ४०	२०	३२ उ.षा	७	३७ ०९	४३	ग ५२	२६ २४	४६ ग	७ १७ ९ २५	२७ ०५ ६ ४०	१७ ३०	२३ २३
१८	बु	८	२९ २२	१८	२५ श्रव	४	०६ ०८	१९	वृ ४५	२० २४	५२ वि	२ ० ७ २९	२७ ०२ ६ ४१	१७ २९	२४ ६
१९	गु	९	२४ ०४	१६	१९ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२०	शु	१०	१८ ५४	१४	१६ पूभा	५३	४१ २४	१८	व्या ३८	०५ १९	०८ ग	१८ ५४ १४ १६	२६ ५५ ६ ४२	१७ २८	२६ ८
२१	श	११	१३ ५६	१२	१७ उभा	५०	०९ २३	०२	ह २४	०८ १६	२२ वि	१३ ५६ १२ १७	२६ ५२ ६ ४३	१७ २८	२७ ९
२२	र	१२	९ २०	१०	२८ रेव	४८	१४ २६	०१	व १३	२९ १३	४३ बा	९ २० १० २८	२६ ४८ ६ ४४	१७ २७	२८ १०
२३	चं	१३	५ १३	०८	५० अ	४६	१८ २५	१५	मि ११	१५ ११	१५ नै	५ १३ ८ ५०	२६ ४५ ६ ४५	१७ २७	२९ ११
२४	मं	१४	१ ०८	०७	२९ भर	४५	१० २४	४९	व्य ५	३५ ८	५० व	१ ०८ ७ २९	२६ ४२ ६ ४५	१७ २६	३० १२
क्षय	मं	१५	५९ २०	३०	२१ ०	०	० ०	०	० ०	० ०	० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ०	० ०

रा. मि.		तिथि	स्टैं.टा.	नक्षत्र	स्टैं.टा.	योग	स्टैं.टा.	करण	स्टैं.टा.	उदय	अस्त	भा.स्टैं.टा.	५ घं. ३० मि.	उदय	अस्त
			घ प		घ मि		घ प		घ मि	घ मि	घ मि	रा अं ब वि		घ मि	घ मि
१६	चं	६	३९ ५४	२२	३० पूषा	११	०० ११	०३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
१७	मं	७	३४ ४०	२०	३२ उ.षा	७	३७ ०९	४३	ग ५२	२६ २४	४६ ग	७ १७ ९ २५	२७ ०५ ६ ४०	१७ ३०	२३ २३
१८	बु	८	२९ २२	१८	२५ श्रव	४	०६ ०८	१९	वृ ४५	२० २४	५२ वि	२ ० ७ २९	२७ ०२ ६ ४१	१७ २९	२४ ६
१९	गु	९	२४ ०४	१६	१९ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
२०	शु	१०	१८ ५४	१४	१६ पूभा	५३	४१ २४	१८	व्या ३८	०५ १९	०८ ग	१८ ५४ १४ १६	२६ ५५ ६ ४२	१७ २८	२६ ८
२१	श	११	१३ ५६	१२	१७ उभा	५०	०९ २३	०२	ह २४	०८ १६	२२ वि	१३ ५६ १२ १७	२६ ५२ ६ ४३	१७ २८	२७ ९
२२	र	१२	९ २०	१०	२८ रेव	४८	१४ २६	०१	व १३	२९ १३	४३ बा	९ २० १० २८	२६ ४८ ६ ४४	१७ २७	२८ १०
२३	चं	१३	५ १३	०८	५० अ	४६	१८ २५	१५	मि ११	१५ ११	१५ नै	५ १३ ८ ५०	२६ ४५ ६ ४५	१७ २७	२९ ११
२४	मं	१४	१ ०८	०७	२९ भर	४५	१० २४	४९	व्य ५	३५ ८	५० व	१ ०८ ७ २९	२६ ४२ ६ ४५	१७ २६	३० १२
क्षय	मं	१५	५९ २०	३०	२१ ०	०	० ०	०	० ०	० ०	० ०	० ० ० ०	० ० ० ०	० ०	० ०

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

प्रातपदा क्षय: ✤ गुरु गोविन्द सिंह बलिदान दिवस (प्रा. मत से)
चन्द्रदर्शन मु. ३० समता कारक, भैया दूज, यम द्वितीया, यमुना स्नान
शव्वाल मु. मा. १० प्रा., ईद-उल-फितर ईद (मु.)
भ. १५।१९ से २६।२८ तक, विनायक चौथ, सूर्य षष्ठी व्रत प्रा. ३ दिन का ❑
विशाखा में सूर्य ११।५०, सौभाग्य पंचमी, पांडव ५, ज्ञान ५ जैन, ✤
सूर्य षष्ठी, डाला छठ (बिहार), सूर्य षष्ठी व्रत पूर्ति
भ. २०।३२ से, कल्पादि ७, जलराम जयंती, सहस्त्रार्जुन जयंती
भ. ७।२९ तक, पंचक १९।३७ से, दुर्गाष्टमी, गोपाष्टमी, गौ पूजा, A
अक्षय नवमी, कूष्माण्ड ९, आंवला ९, कृत युगादि ९, जगद्धात्री पूजा, B
भ. २५।१६ से, भीष्म पंचकारंभ D कालीदास जयंती
भ. १२।१७ तक, ज्येष्ठा में बुध ७।२८, पूषा. में शुक्र २६।५२, देव C
पंचक २६।१ तक, प्रदोष व्रत, मन्वादि १२, हरिवासर १०।२८ तक, D
वैकुण्ठ चतुर्दशी, बाल दिवस, पं. नेहरू जन्म दिवस, बाल मेला E
भ. ७।२९ से १८।५६ तक, सत्य व्रत, पूर्णिमा व्रत-पुण्यं, कार्तिक स्नानF
पूर्णिमा तिथि क्षय: पूर्वोदयं गुरो: ५ नवंबर

B मथुरा परिक्रमा ❑ (बिहार), पूर्व में गुरु उदय २०।२

A यवधान्यादि दान, गोशाला निर्माण, गोसंवर्धन सप्ताह पूर्ति, अष्टान्हिक व्रतारंभ जैन C प्रबोधिनी एका. व्रत सवका, तुलसी विवाह, चातुर्मास व्रत, नियमादि पूर्ति, मेला पुष्कर (राज.), पुण्डरपुर यात्रा (महाराष्ट्र), हरिवासर २७।२ से F पूर्ति, मेला पुष्कर (राज.) व रेणुका तीर्थ गढ़गंगा, भीष्म पंचक पूर्ति, नानक ज., अष्टान्हिक व्रत पूर्ति जैन, रथ यात्रा जैन, निंबार्काचार्य जयंती, देव दीवाली, व्यतिपात पुण्यं E (दिल्ली), काशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा दिवस, चौमासी १४ जैन, बुध वक्री १०।३

कार्तिक शु. ८ बुधे प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ✤ ता. ९ नवं. [दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लु
६	९	०	७	६	८	३	११	५	१०	९	७
२२	२१	२०	१५	९	९	१७	१७	१७	१२	२०	२९
४८	३९	२९	१२	४	३८	१२	५१	५१	५५	५५	२
४९	२२	१९	११	१६	३०	२३	५२	५२	३६	४२	३९
६०	८८	२०	३०	१२	५७	१	३	३	०	०	१
१७	४६	४५	७	५३	४०	२६	११	११	२०	२८	५४
मा	मा	ब	मा	मा	मा	मा	ब	ब	ब	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-

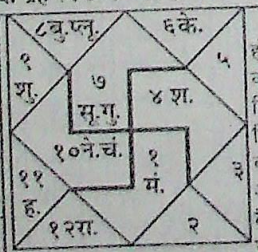

कार्तिक सुदी प्रतिपदा का क्षय होना तथा यह पक्ष तेरह दिवसीय होना, दोनों योग ही भय एवं अनिष्ट कारक घटक हैं। द्वितीय गुरुवार को चन्द्र दर्शन वृश्चिक भचक्र में होना अग्निकांड का द्योतक है। तथा विविध क्षेत्रों में विघटनकारी योग बनेंगे। सरकार स्वयं चिन्तित होकर नियंत्रण में विफल होगी। असमाजिक तत्व वायु मार्ग को बाधित करेंगे। अपहरण का मामला बढ़ेगा। सूर्य के साथ गुरु का योग अध्यात्मिकता की ओर जनता को आकर्षित करेगा। "यदा देवत्यगुरुश्चैव सुरगुरु राशि प्रवर्तते। मेदिन्यां क्षेममारोग्यं किंचित स्थाने उपद्रव गुप्त रहस्य प्रकटति॥" इस माह में राजकीय घटक विशेष उदासीन रहेंगे। गुजरात, आंध्रप्रदेश, उड़ीसा में जनता में विशेष आक्रोश बढ़ेगा। टोकियो, तुर्की, लन्दन, बेबीसियो, जर्मनी, जापान में प्राकृतिक आपदा का संकट घटेगा। भारत में नवीन गजनैतिक पार्टी का उदय का योग बनता है। तेजी-मंदी विचार (व्यापार)-अनुराधा में चन्द्रोदय होने से रुई, सरसों, तेल, घी तेज होंगे। सोना, चांदी, गुड़ में मंदी का योग बनता है। वृश्चिक राशि में चन्द्रोदय होने से उत्तर दिशा में प्रत्येक वस्तु में तेजी का माहौल बनेगा। ६ नवम्बर को विशाखा के सूर्य के कारण चावल, गेहूं, मसूर, गुड़, रुई, सूत, सरसों, तिल में तेजी कारक तथा अलसी, चांदी में घटाबढ़ी का योग बनता है। नमक, तिल का स्टॉक कर्ता बाजार का रुख देखकर कार्य करें। आकाश लक्षण-कार्तिक मासे मावठा योग बने उत्तराखण्ड को विशेष। ऐसा विचार कृषि काम में फसलों का उत्तम बने अयेश॥ भूस्खल का योग भी बनता चन्द्र भौम के योग से। उत्तरी पूर्वी देशों में ग्रह गति का प्रभाव बने जोर से॥ शकुन विचार-कार्तिक मास में किसी दिन मेघ गर्जन करे तो अन्न की उत्पत्ति उत्तम होने की संभावना रहती है। वायु गति तेज हो। महंगा चावल तृण हो।

ता. १५ नवं. ✤ कार्तिक शु. १४ भौमे प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लु
६	०	०	७	६	८	३	११	५	१०	९	७
२८	१५	१८	१६	२०	१५	१७	१७	१७	१२	२०	२९
४८	४४	२१	१७	२१	१६	१९	३२	३२	५४	५८	१४
५०	५	५०	१७	११	४६	१९	४८	४८	२१	५८	२०
६०	२२	१८	११	१२	५४	०	३	३	०	०	२
२५	१४	२७	५७	४८	२६	११	११	११	१	४०	०
मा	मा	ब	ब	मा	मा	मा	ब	ब	ब	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-

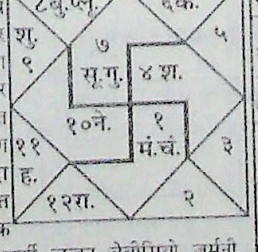

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष-१६ श्री सं. २०६२ शाके १९२७

दिन मान	सू.टा. सूर्योदयास्त	दिनांक प्र. मु. अं	चन्द्र संचार	दै. रवि स्पष्ट प्रातः	चन्द्रोदयास्त दिल्ली	
				५ घ. ३० मि.	उदय	अस्त
	उदय अस्त		भा.स्टे.टा. रा.घं.मि.	रा. अं. क. वि.	घ. मि.	घ. मि.
३०।५६	६।३५ १७।५६	१ १३ 16	बु.८।५७	६ २९ ७७ १५	२७ ३२	६ ५८
३०।५६	६।३५ १७।५६	२ १४ 17	वृष	७ ० ८७ ४२	२९ १८	१८ ७ ५८
३०।५६	६।३५ १७।५६	३ १५ 18	मि.११।३८	७ ० ९१ ८८ ११	३० १९	९ ९ ०
३०।५६	६।३५ १७।५६	४ १६ 19	मिथुन	७ ० ९२ ८८ ४१	३२ २०	५ ९ ५७
३०।५६	६।३५ १७।५६	५ १७ 20	क.२३।३१	७ ० ९३ ८९ १३	३४ २१	३ १० ४८
३०।५६	६।३५ १७।५६	६ १८ 21	कर्क	७ ० ९४ ८९ ४७	३५ २२	० ११ ३२
३०।५६	६।३५ १७।५६	७ १९ 22	कर्क	७ ० ९५ ९० २२	३७ २२	५५ १२ ९
३०।५६	६।३५ १७।५६	८ २० 23	सि.११।५८	७ ० ९६ ९० ५९	३९ २३	५३ १२ ४२
३०।५६	६।३५ १७।५६	९ २१ 24	सिंह	७ ० ९७ ९१ ३८	४१ २४	० १३ १२
३०।५६	६।३५ १७।५६	१० २२ 25	कं.२४।२७	७ ० ९८ ९२ १९	४२ २४	४४ १३ ३९
३०।५६	६।३५ १७।५६	३ ९९ ८ २६ २६ १२	६ ५४ १७ २३ ११	२३ २६ 26	कन्या	७ ० ९९ ९३ ०१	४३ २५	३७ १४ ६
३०।५६	६।३५ १७।५६	४ २६ ९० ६ ५५ १७ २३ १२	२४ 27	कन्या	७ ० १० ९३ ४४	४५ २६	३१ १४ ३३
३०।५६	६।३५ १७।५६	० २६ ०७ ६ ५६ १७ २३ १३	२५ 28	तु.१०।४३	७ ० ११ ९४ २९	४७ २७	२६ १५ २
३०।५६	६।३५ १७।५६	४ २६ ०५ ६ ५६ १७ २२ १४	२६ 29	तुला	७ ० १२ ९५ १६	४८ २८	२४ १५ ३५
३०।५६	६।३५ १७।५६	७ २६ ०३ ६ ५७ १७ २२ १५	२७ 30	वृ.१७।२५	७ ० १३ ९५ ०४	४९ २९	२७ १६ १३
३०।५६	६।३५ १७।५६	९ २६ ०१ ६ ५८ १७ २२ १६	२८ D1	वृश्चिक	७ ० १४ ९५ ५३	५१ ६	३२ १६ ५९

ता. १६ नवं. से १ दिसं. सन् २००५ ई., राष्ट्रीय मिति २५ कार्तिक से १० मार्ग. तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टें. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा.	तिथि	स्टें.टा.	नक्षत्र	स्टें.टा.	योग	स्टें.टा.	करण	स्टें.टा.
मि.	ति घ मि	न घ मि	न घ मि	यो घ मि	क घ मि	क घ मि
२०	चु १	५७।८८	२९	५०	कृ	३० ०७	२४	४९	- -	बा	२८	२८	२८	९	२६	३२
२०	गु २	५७।५९	२९	५१	रो	३० १९	२५	१८	लि	५३	३८	२८	४	वै	२७	०५
२०	शु ३	५९	२४	३०	३३	मृ	३८	५९	२५	२२	मि	५१	३७	२५	३०	व	२८	२७
२८	श ४	६०	००	- -	- -	आ	५३	०३	२८	०२	सा	५१	०६	२५	१५	ब	२०	४२
२९	र ४	२	२३	०७	४०	पुन	५८	३४	३०	१५	वृ	५१	३२	२४	२६	बा	२	२३
३०	च ५	६	५२	०९	३५	पु	६०	००	- -	- -	श	५१	५९	२४	००	तै	६	५२
भार्ग	मं ६	१२	३०	११	५१	पु	५	१२	०५	५६	ब	५१	५५	२४	४९	व	१२	३०
२	बु ७	१८	५२	१४	२४	आ	१२	३७	१९	५४	ऐं	५१	११	२९	४४	ब	१८	५२
३	गु ८	२५	२०	१५	००	म	२७	१०	१४	५७	वै	५१	१५	३०	३४	को	२५	२०
४	श ९	३१	१६	१९	२४	पुन्य	२४	१६	१४	४८	वि	५०	००	- -	- -	ग	३१	१६
५	श १०	३६	०३	२१	१९	पु	३३	१९	२०	१४	वि	०	३८	०५	०९	व	३	०९
६	र ११	३९	१६	२२	३०	श्ले	२९	५२	२२	०४	प्री	१	०३	०५	२०	ब	७	५२
७	चं १२	४०	३०	२३	११	वि	४०	३९	२३	११	- -	- -	- -	- -	- -	को	१०	१०
८	मं १३	४०	०५	२२	५१	मघा	४१	३५	२३	३५	जो	५४	०१	२४	३३	ग	१०	३४
९	बु १४	३०	४०	२२	०४	वि	४०	४१	२३	१०	अ	४८	५१	२६	३०	वि	९	८
१०	गु ३०	३३	१६	२०	२२	अ	३८	३३	२२	२३	मु	४२	३२	२३	५९	च	६	१

करण	स्टें.टा.
क	घ मि
ब	२८	४९
ब	२७	४३
ब	२६	३६
ब	२५	२९
ब	२४	२२
त	२३	१५
त	२२	०८
व	२१	०१
व	२०	५४
व	१९	४७
व	१८	४०
व	१७	३३
व	१६	२६
व	१५	१९
व	१४	१२
व	१३	०५
ब	१२	५८
ब	१२	५१
ब	११	४४
ब	११	३७
ब	१०	३०
ब	१०	२३
ब	९	१६
ब	९	०९
ब	८	०२
ब	७	५५
ब	७	४८
ब	६	४१
ब	६	३४
ब	५	२७
ब	५	२०
ब	४	१३
ब	४	०६
ब	३	५९
ब	३	५२
ब	२	४५
ब	२	३८
ब	१	३१
ब	१	२४
ब	१	१७
ब	१	१०
ब	०	०३
ब	०	५६
ब	०	४९
ब	०	४२
ब	०	३५
ब	०	२८
ब	०	२१
ब	०	१४
ब	०	०७
ब	०	००

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टें. टा. घण्टा मिनटों में है।

सूर्य वृश्चिक में १० ।३४ मु. ३०, वक्री बुध अनुराधा में ८ ।२८, संक्रांति पुण्यम्, अशून्य शयन २ व्रत

भ. १८ ।११ से ३० ।३३ तक, सौभाग्य सुन्दरी व्रत

अनुराधा में सूर्य १७ ।५५, कृष्ण चतुर्थी व्रत, श्रीमती इन्दिरा गांधी जन्म दिवस A

सुविधानाथ जन्म व दीक्षा दिवस जैन, उर्स ख्वाजा अमीर खुसरो मु. (दिल्ली)

भ. ११ ।५१ से २५ ।८ तक, राष्ट्रीय मार्गशीर्षारंभ, वक्री शनि B

श्री काल भैरवाष्टमी, प्रथमाष्टमी (उड़ीसा), भैरव जी दर्शन पूजन

भ. ८ ।२६ से २१ ।१९ तक, श्री महावीर स्वामी दीक्षादि (जैन)

उत्पत्ति एकादशी व्रत सबका, वैतरणी व्रत

वक्री बुध विशाखा में २६ ।५५, उ.षा. में शुक्र २२ ।४

भ. २२ ।५९ से, भौम प्रदोष व्रत, संत ज्ञानेश्वर पुण्य दिवस

भ. १० ।३६ तक, मास शिवरात्री व्रत, बुध पूर्व में उदय ११ ।२५

देव पितृकार्येऽमावस्या, श्री बालाजी जयंती, मेला पुरमण्डल, देवी C

A बुध पश्चिम में अस्त ९ ।५६ B १३ ।२४, सायन सूर्य धनु में ११ ।९ C का स्नान (जम्मू), दिसम्बर मा. १२ ता. ३१ प्रा., विश्व एड्स डे

मार्ग. कृ. ८ गुरौ प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २४ नवं.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लु
७	४	०	७	६	८	३	११	५	१०	९	७
७	८	१६	९	१२	२३	१०	२०	१७	१२	२१	२९
५९	३०	५	२५	१४	२	२२	४	४	५५	६	३२
३८	३८	५	१८	२९	२७	२३	१०	१०	५६	६	५२
६०	०१	१२	८२	१२	४८	०	३	३	०	०	२
४१	१०	०४	३	२४	०	१५	११	११	२६	५८	७

मा	मा	च	व	मा	मा	च	व	व	मा	मा	ना
उ	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-

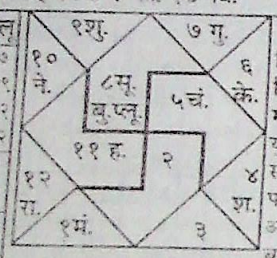

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

इस मार्गशीर्ष मास में पांच बुधवार तथा गुरुवार का योग बना है। जिसका फल इस प्रकार है-"बुधस्य पंचवारश्च जायन्ते च निरन्तरम्। प्रजाञ्च सुख सम्पन्नाः सुभिक्षम् च प्रजायते ॥""यत्र मासे पञ्चवारा जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रह पश्चिमे देशे पीडा युद्धम् च जायते ॥" अर्थात् पांच बुधवार होनें से जनता सुखी रहे। सर्वत्र सुकाल योग बने एवं कलह आदि का वातावरण न बने। लेकिन पांच गुरु होने से पश्चिम प्रान्तों-देशों में विग्रह योग, जनता में पीड़ा, और युद्ध की स्थिति बनती है। जनता में विषमता पूर्ण वातावरण बनेगा। राहु-केतु के प्रभाव से प्राकृतिक प्रकोप से जनता बाधित होगी। हत्या एवं आत्म हत्याएँ बढ़ेगी। जापान, कनाडा, आस्ट्रेलिया, अमेरिका में राजनैतिक विद्रोह का योग बनेगा। केन्द्रिय सरकार में भ्रष्टाचार का मुद्दा उछलेगा। सर्वत्र भय बना रहेगा। **तेजी मन्दी विचार (व्यापार)**-दिनांक १६ नवंबर को वृश्चिक संक्रान्ति ३० मुहूर्त्ति बुधवार को होने से विष्णु पद संज्ञक मानी गयी है। इस योग से खाद्यान्न मन्दा होगा। १९ नवंबर को अनुराधा में सूर्य के प्रभाव से चना, चावल, दूध, चाँदी, कपड़ा, रुई, सूत, बारदाना व शेयर बाजार में तेजी आयेगी। ता. २८ नवंबर को उत्तराषाढ़ा के शुक्र के कारण गुड़, शक्कर, सोना, पीतल, ताम्बा, स्टील, जस्ता में तेजी व घटा-बढ़ी दोनों रुख बाजार की मांग के अनुसार रहेंगे। जल तत्व संबंधी सामग्री के भाव सम रहेंगें। **आकाश लक्षण**-उत्तरांचल-हिमालय परिक्षेत्र में बर्फीली हवाएं तथा हिमपात का योग बनता है। मध्यप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली में शीत लहर तथा भावदा का योग बनता है। **शकुन विचार**-मंगसिर माह में जो जेठ तपैन सूर। तो यों बोले भड़डरी, निपाते सातों नूर॥ मार्ग. बदी आठे घटा, बिजु समेती जोई। तो सावण बरसे भलो सातों साख उपजाई॥ मार्ग. मास में जोयशी होगी पश्चिम जंग। भारत प्यारा देश यह भए क्रोध सु उमंग॥ बुधवारी संक्रान्ति सूर्य संक्रमण वृश्चिक। जोयसी व्यापारी ध्यान रखें सावधान हर अंक॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

ता. २ से १५ दिसं. सन २००५ ई., राष्ट्रीय मिति ११ से २४

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लु
७	७	०	७	६	८	३	११	५	१०	९	७
१४	६	१४	१	१३	२८	१७	१६	१६	१३	२१	२९
५६	५२	५२	४१	४०	१९	१८	४१	४१	०	१३	४७
५३	४३	२२	२४	१८	१२	९	५५	५५	१	२७	५६
६०	३६	७	२९	१२	४१	१	३	३	०	१	२
५१	१२	१०	१२	४	९	२	११	११	४८	१०	११

मा	मा	च	व	मा	मा	च	व	व	मा	मा	ना
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-

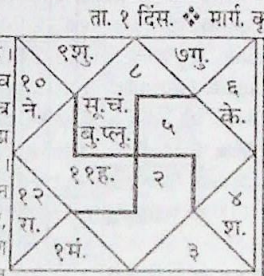

ता. १ दिसं. ❖ मार्ग. कृ. ३० गुरौ प्रातः ५ घ. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष-१७ श्री सं. २०६२ शाके १९२७

दिन मान | स्टैं.टा. सूर्योदयास्त | दिनांक प्र. मु. अं | चन्द्र संचार | दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. | चन्द्रोदयास्त दिल्ली

ता. २ से १५ दिसं. सन् २००५ ई., राष्ट्रीय मिति ११ से २४ मार्गशीर्ष तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

रा. मि.	दि	तिथि	स्टैं.टा.	नक्षत्र	स्टैं.टा.	योग	स्टैं.टा.	करण	स्टैं.टा.	उदय	अस्त	भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रा.	अं.	क.	वि.	उदय घ.	मि.	अस्त घ.	मि.
११	शु	१	२८।४१	ज्ये	३५।०८	वि	२५।०२	ध	३५।१८	२२।०८	६	५९	१७	२२	२७	२९	2	ध.२१।४२	७	२५	५७	४४	७	४०	१७	५३
१२	श	२	२३।०१	१६।२३	मूल	३०।५६	१९	२३	शू	२५।५०	१७	५९	१७	२२	१८	वि	3	धनु	७	२६	५८	३५	५३	८	४६	१८	५५
१३	र	३	१६।४०	१३।४०	पूर्षा	२६।२८	१७	३२	गं	२५।५०	१७	५९	१७	४०	१३	४०	4	म.२३।०३	७	२७	५९	२८	५४	९	४८	२०	३
१४	चं	४	१०।१९	११।०८	उषा	२१।३६	१५	२९	वृ	२०।००	१८	२१	२२	५	२५	५८	5	मकर	७	२९	००	२३	५४	१०	४१	२१	१४
१५	म	५	३।२०	८।४८	अभि	२७।००	१५	२९	वा	३।०२	८	३४	२२	२१	४	५८	6	कुं.२५।०३	७	३०	०१	१६	५६	११	२६	२२	२०
१६	बु	६	५७।२१	३०।१३	श्रव	२९।००	१५	२९	वि	०।००	०	०	२३	२१	५	५८	0	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१६	बु	७	५२।०८	२८।०६	ध	२९।०५	१२	१७	व	२९।५०	८	३५	२३	२२	५	५८	7	कुंभ	७	३१	०२	१२	५६	१२	५	२३	२९
१७	गु	८	४७।५८	२६।१४	श	९।३९	१४	५५	व	४४।२०	२३	४८	२४	२३	६	५८	8	मी.२८।०४	७	३२	०३	०८	५६	१२	३९	२४	०
१८	शु	९	४४।०२	२४।४०	पूर्भा	६।५८	०५	४९	वि	२४।०८	२०	४१	२५	२४	८	५८	9	मीन	७	३३	०४	०४	५८	१३	१८	२५	३३
१९	श	१०	४०।२४	२३।२८	उभा	८।५२	०९	०३	व्य	२८।२२	१८	३८	२६	२५	८	५८	10	मीन	७	३४	०५	००	५७	१३	४३	२५	३५
२०	र	११	३८।४०	२२।२८	रेव	३।३३	०८	४०	व	२३।२०	१६	२६	२७	६	९	५८	11	मी.०८।०५	७	३५	०५	५९	५९	१४	१५	२६	२७
२१	चं	१२	३२।५६	२१।४०	अ	२।५७	०८	२७	व	२३।२०	१७	०१	२८	७	१०	५८	12	मेष	७	३६	०६	५८	५९	१४	४९	२७	३९
२२	म	१३	२५।४१	२१।२३	श्वा	३।०६	०८	२१	वि	१४।००	२३	५१	२८	८	११	५८	13	वृ.१४।०६	७	३७	०७	५७	५९	१५	२८	२८	४२
२३	बु	१४	२५।००	२१।०२	कृ	८।०९	०८	४०	वि	२१।००	२३	५१	२९	९	१२	५८	14	वृष	७	२८	०८	५६	३६	१६	१९	२९	४५
२४	गु	१५	२५।३०	२१।४०	रो	५।५७	०९	३१	वा	८।००	२३	५१	३०	१०	१३	५८	15	मि.२२।०३	७	२९	०९	५७	१	१७	०	६	४०

A जन्म दिवस, निर्वाण दिवस, मार्गी बुध ३०।०५ B गुरु तेगबहादुर बलिदान दिवस (प्रा. भत से), श्री राम विवाहोत्सव, चम्पा षष्ठी व्रत, स्कन्द ६, गुह्य ६, मूलक रूपिणी ६ (बंगाल)
C आजम अली जिला घ. D सप्तमी, श्री गीता जयंती, मार्गशी ज., वैकुण्ठ ११, मेला जोड़ 3 दिन का प्रारंभ (पंजाब) E पूर्णिमा व्रतं पुण्यं च, श्री दत्तात्रेय जयंती, अन्नपूर्णा, त्रिपुर सुन्दरी जयंती

मार्ग. शु. ८ गुरौ प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ८ दिसं.

मृ	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लु
०	१	०	७	६	९	३	११	५	१०	९	८
२२	२१	१८	८	१६	५	२६	१५	१३	२१	०	
९	२०	२६	२२	२३	०	७३	५७	९	१५	२२	१९
७	३०	५	१	२४	२३	५८	२३	२३	३०	३०	४
६	१९	८	७०	१९	२	३	३	१	२	२	
१	२	६	२८	२०	८०	३०	११	११	२८	३३	१४
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
३	३	३	३	३	३	अ	अ	-	-	-	-
४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६
७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७
८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२

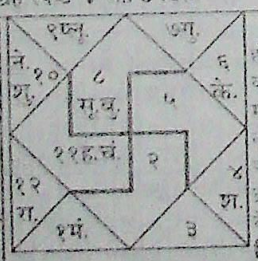

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

ता. १५ दिसं. ❖ मार्ग. शु. १५ गुरौ प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

मृ	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लु
०	१	०	७	६	९	३	११	५	१०	९	८
२२	२१	१८	८	१६	५	२६	१५	१३	२१	०	
९	२०	२६	२२	२३	०	७३	५७	९	१५	२२	१९
७	३०	५	१	२४	२३	५८	२३	२३	३०	३०	४
६	१९	८	७०	१९	२	३	३	१	२	२	
१	२	६	२८	२०	८०	३०	११	११	२८	३३	१४
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
३	३	३	३	३	३	अ	अ	-	-	-	-
४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६
७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७
८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२

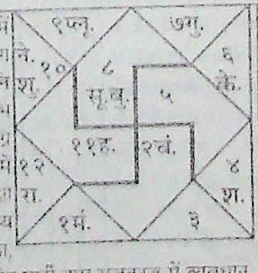

इस पक्ष में चन्द्रोदय दर्शन शुक्रवार को ज्येष्ठा नक्षत्र धनु राशि में होने से चन्द्रमा का श्रृंग उत्तरी होना उत्तम कार्य के योजनाओं का योग करता है। "शमित्रेत्री यदा मेषे सुभिक्षं सर्व धान्यकम्। प्रवालानि महार्घाणि ब्रीव्हयवास्तु अर्घतुल्यः॥" मंगल मेष राशि में होना शुभ कारक है, तीक्ष्ण प्रवाल (मूंगा) महंगा होगा। राजकाज में कोमलि जन्य वातावरण बनेगा। सर्व धान्य में मन्दा पन करेगा। शासक वर्ग में क्रोध की भावना भड़केगी। सूर्य-बुध की युति से नयी योजना शिक्षा के विकास एवं उत्थान वाचक बनेगी। "मकरे यदा शुक्रः सर्व सस्य विनाश कृतः। जायते महर्घाणि सत्र कार्या विचारणाः" अफ्रिका, ग्रीक, हिन्दचीन, जापान, रोकियो, रूस, इंगलैण्ड में भी राजनीतिक स्थिति बिगड़ेगी। श्रीलंका में नवीन पार्टी द्वारा राजकाज में व्यवधान उत्पन्न होगा। पाकिस्तान बंगाल में राजनेता की हत्या का योग है। **तेजी-मन्दी। बिचार- (व्यापार)**-उत्तरी श्रृंग चन्द्रमा तेजी का घटक बनेगा। २ दिसंबर को ज्येष्ठा के सूर्य से चन्द्र, सोना, चांदी, गेहूं, चना, सरसों, हींग, गुड़, शक्कर, पताशा, मिश्री, मिठाई में तेजी का योग है। रुई, शेयर बाजार, घृत, तेल, तिल में घटा-बढ़ा रहेगी। ४ दिसंबर को बुध मार्गी होने से गुजरात, कच्छ, महाराष्ट्र, कर्नाटका, तमिलनाडु, आदि दक्षिणी क्षेत्रों में अन्नादि के भाव तेज होंगे। स्टील, लोहा, विद्युत एवं श्रृंगार संबंधी सामग्री भी तेज होगी। लकड़ी का भाव एकाएक तेज होगा। **आकाश लक्षण-** इस पक्ष में बुध सूर्य के साथ है तथा शुक्र बुध सूर्य के आगे है अतः तेज वायु के साथ शीत लहर का प्रकोप बढ़ेगा। पंजाब, हरियाणा, बंगाल, जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, बिहार, झारखण्ड, उत्तरांचल, उत्तर प्रदेश में शीत लहर के साथ बूंदाबांदी का योग बनता है। पर्वतीय क्षेत्रों में शीत लहर के साथ ओला वृष्टि की भी संभावना है। **शकुन बिचार-** मार्ग. शुक्ला पंचमी जो बादल घटा उठ जाय। कहे भइडली खाद्यान्न में तेजी बहुत बढ़ जाय॥ मार्ग. शुक्ला षष्ठी क्षय करे उत्पाती योग। प्रजा में विद्रोह करे हो जावे वियोग।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पौष कृष्ण पक्ष-१८

श्री सं. २०६२ शाके १९२७

दिन मान

स्टैं.टा. सूर्योदयास्त

दिनांक प. मु. अं

चन्द्र संचार

दै. रवि स्पष्ट प्रातः

चन्द्रोदयास्त दिल्ली

ता. १६ से ३१ दिसं. सन् २००५ ई., रा. मिति २५ मार्ग. से १० पौष तक। रवि दक्षिणायने-उत्तरायणे, दक्षिण गोले, हेमन्त-शिशिर ऋतु।

रा. मि.	वा	तिथि	स्टैं.टा.	नक्षत्र	स्टैं.टा.	योग	स्टैं.टा.	करण	स्टैं.टा.	उदय घ. मि.	अस्त घ. मि.	दिनांक	भा.स्टैं.टा. रा. घं. मि.	रा.	अं.	क.	वि.	उदय घ. मि.	अस्त घ. मि.
२५	शु	१ ३८	०५ २२	३९ मृ	८ ५२	१० ४१	शू	७ ०४	०९ ५८	बा	७ ३२	९० ९	२५ ४२	७	०८	१७	२५	२	१४
२६	श	२ ४२	०५ २३	५९ आ	१२ ५५	१२ १९	शु	६ १३	०९ ३८	तै	१० १५	११ १५	२५ ४१	७	०९	१७	२६	३	१५
२७	र	३ ४६	३९ २५	४९ पु	१८ ०९	१४ २५	ब	६ १८	०९ ४१	व	१४ १३	१२ ५१	२५ ४१	७	१०	१७	२६	४	१६
२८	चं	४ ५२	१८ २८	०५ पु	२४ २९	१६ ५८	ऐं	७ १७	१० ०५	ब	१९ २०	१४ ५४	२५ ४१	७	१०	१७	२६	५	१७
२९	मं	५ ५८	४४ ३०	४० श्ले	३१ ४२	१९ ५१	वै	९ ००	१० ४७	कौ	२५ २६	१७ २२	२५ ४०	७	११	१७	२७	६	१८
३०	बु	६ ६०	०० -	- म	३९ २५	२२ ५७	वि	११ १४	१९ ४१	ग	३२ ५	२० १	२५ ४०	७	११	१७	२७	७	१९
पौष	गु	६ ५	२७ ०९	२३ पू फ	४७ ०४	२६ ०१	प्री	१३ ३७	१२ ३९	व	५ २७	९ २३	२५ ४०	७	१२	१७	२८	८	२०
२	शु	७ ११	५४ १९	५८ उ फ	५४ ०४	२८ ५०	आ	१५ ४३	१३ २९	ब	११ ५४	११ ५८	२५ ४०	७	१२	१७	२८	९	२१
३	श	८ १७	२४ १४	१० ह	५९ ४७	३१ ०८	सौ	१७ ०५	१४ ०३	कौ	१७ २४	१४ १०	२५ ४१	७	१३	१७	२९	१०	२२
४	र	९ २१	२२ १५	४६ चि	६० ००	- -	शे	१५ १८	१४ ०८	ग	२१ २१	१५ ४६	२५ ४१	७	१३	१७	३०	११	२३
५	चं	१० २३	२२ १६	३४ चि	३ ४४	०८ ४३	अ	१६ ०४	१३ ३९	वि	२३ २२	१६ ३४	२५ ४१	७	१३	१७	३०	१२	२४
६	मं	११ २३	१२ १६	३१ स्वा	५ ४१	०५ ३०	सु	१३ ११	१२ ३०	बा	२३ १३	१६ ३१	२५ ४२	७	१४	१७	३१	१३	२५
७	बु	१२ २०	५५ १५	३६ वि	५ ३१	०९ २७	धृ	८ ३७	१० ४१	तै	२० ५५	१५ ३६	२५ ४२	७	१४	१७	३१	१४	२६
८	गु	१३ १६	३९ १३	५४ वि	२ ५९	२३ ०८	२५	पू	२ २८	०८ १९	व	१६ ३९	१३ ५४	२५ ४३	७	१५	१७	३२	१५
९	शु	१४ १०	४७ ११	३४ मू	५४ २६	२९ ०१	वृ	४६ २२	२५ ४८	श	१० ४७	११ ३४	२५ ४४	७	१५	१७	३३	१६	२८
१०	श	३० ३	०० ०८	४३ वृ	४८ २७	२६ ३८	धु	३७ ००	२२ ०३	ना	३ ४०	८ ४३	२५ ४५	७	१५	१७	३३	१७	२९

रा. मि.	वा	तिथि	स्टैं.टा.	नक्षत्र	स्टैं.टा.	योग	स्टैं.टा.	करण	स्टैं.टा.	उदय घ. मि.	अस्त घ. मि.	दिनांक	भा.स्टैं.टा. रा. घं. मि.	रा.	अं.	क.	वि.	उदय घ. मि.	अस्त घ. मि.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आर्यभट्ट पंचांगम्

पौष शुक्ल पक्ष-१९

श्री सं. २०६२ शाके १९२७

ता. १ से १४ जनवरी सन् २००६ ई., राष्ट्रीय मिति ११ से २४ पौष तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घटी	पल	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र. मु. अं. पौष	जिल्हा	जन.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
क्षय	श	१	५५	४८	२९	३५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथि क्षय:
११	र	२	४७	३६	२६	१८	उषा	४२	०५	२४	०६	व्या	२७	१५	१८	९	बा	२१	४२	१५	५५	२५	४६	७	१६	१७	३४	१८	३०	J1	म.०८।००	०८	१६	२८	४६	६१/११	८	३०	१८	५६	चन्द्रदर्शन मु. ४५ समर्घता कारक, यतीन्द्र सुरीश्वर पुण्य, त्रिस्तुती जैन, A
१२	चं	३	३९	२९	२३	०३	श्रव	३५	४६	२१	३४	ह	१७	२६	१४	४०	तै	१३	३०	१२	४०	२५	४७	७	१६	१७	३५	१९	जि१	2	मकर	०८	१७	२९	५७	१०	९	२०	२०	८	जिल्हेज मु. मा. १२ प्रा., बुध पूर्व में अस्त २०।१
१३	मं	४	३१	५२	२०	०१	ध	२९	५५	१९	१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	व	५	३५	९	३०	२५	४८	७	१६	१७	३५	२०	२	3	कुं.०८।२२	०८	१८	३१	०७	१०	१०	३	२१	१८	भ. ९।३० से २०।१ तक, पंचक ८।२२ से, विनायक चौथ
१४	बु	५	२५	०३	१७	१७	श	२४	५२	१७	१३	व्य	५०	४२	२७	३३	बा	२५	३	१७	१७	२५	५०	७	१६	१७	३६	२१	३	4	कुंभ	०८	१९	३२	१७	१०	१०	४०	२२	२५	विशाखा १ में गुरु ३०।४३, व्यतिपात पुण्यं
१५	गु	६	१९	१८	१४	५०	पूभा	२०	५१	१५	३७	व	४३	२४	२४	३८	तै	१९	१८	१४	५०	२५	५१	७	१६	१७	३७	२२	४	5	मी.०९।५८	०८	२०	३३	२७	१०	११	१४	२३	२९	--- शुक्रास्त पश्चिमे ८ जनवरी
१६	शु	७	१४	४६	१३	११	उभा	१८	०३	१४	३०	प	३७	०६	२२	०७	व	१४	४६	१३	११	२५	५३	७	१६	१७	३८	२३	५	6	मीन	०८	२१	३४	३७	९	११	४६	२४	०	भ. १३।११ से २४।२८ तक, गुरु गोविन्द सिंह जयंती (प्रा. मत से), B
१७	श	८	११	३१	११	५३	रेव	१६	३०	१३	५३	शि	३१	४९	२०	००	ब	११	३१	११	५३	२५	५४	७	१७	१७	३८	२४	६	7	मे.१३।५३	०८	२२	३५	४६	९	१२	१८	२४	३१	पंचक १३।५३ तक, श्री दुर्गाष्टमी, श्री शाकंभरी यात्रा
१८	र	९	९	३२	११	०५	अ	१६	११	१३	४५	सि	२७	३१	१८	१७	कौ	९	३२	११	५	२५	५६	७	१७	१७	३९	२५	७	8	मेष	०८	२३	३६	५५	८	१२	५१	२५	३३	पू.षा. में बुध २१।१५, शुक्र पश्चिम में अस्त ३०।५५
१९	च	१०	८	४४	१०	४६	भा	१७	०१	१४	०५	सा	२४	०७	१६	५६	ग	८	४४	१०	४६	२५	५८	७	१७	१७	४०	२६	८	9	वृ.२०।१४	०८	२४	३८	०३	८	१३	२७	२६	३५	भ. २२।४७ से, शाम्ब दशमी (उड़ीसा)
२०	मं	११	९	०३	१०	५४	कृ	१८	५५	१४	५१	शुभ	२१	३४	१५	५४	वि	९	३	१०	५४	२५	५९	७	१७	१७	४१	२७	९	10	वृष	०८	२५	३९	११	७	१४	८	२७	३८	भ. १०।५४ तक, उ.षा. में सूर्य २९।२३, पवित्रा (पुत्रदा) एकादशी C
२१	बु	१२	१०	२४	११	२६	रो	२१	४८	१६	००	शु	१९	४७	१५	१२	बा	१०	२४	११	२६	२६	०१	७	१७	१७	४१	२८	१०	11	मि.२८।४३	०८	२६	४०	१८	७	१४	५५	२८	३९	प्रदोष व्रत, ईद-उल-जुहा (बकरीद) मु.
२२	गु	१३	१२	४३	१२	२२	मृ	२५	३६	१७	३१	ब्र	१८	४४	१४	४६	तै	१२	४३	१	२२	२६	०३	७	१७	१७	४२	२९	११	12	मिथुन	०८	२७	४१	२५	६	१५	४६	२९	३९	D लोहड़ी उत्सव (पंजाब)
२३	शु	१४	१५	५७	१३	४०	आ	३०	१७	१९	२४	ऐ	१८	२४	१४	३८	व	१५	५७	१३	४०	२६	०६	७	१७	१७	४३	३०	१२	13	मिथुन	०८	२८	४२	३१	६	१६	४२	६	३३	भ. १३।४० से २६।२७ तक, वक्री शुक्र धनु में १८।५५, पूर्णिमा व्रत, D
२४	श	१५	२०	०८	१५	२०	पुन	३५	५२	२०	३७	वै	१८	४५	१४	४७	व	२०	८	१५	२०	२६	०८	७	१७	१७	४४	मा१	१३	14	कं.१५।०२	०८	२९	४३	३७	६	१७	४०	७	२२	सूर्य मकर में ११।५६ मु. ४५, मकर संक्रांति पुण्यं, सत्य व्रत, E

A जनवरी मा. १ ता. ३१ सन् २००६ ई. प्रारंभ B राजेन्द्र सुरीश्वर जन्म पुण्य जैन, अपी फैनी डे C व्रत सबका, मन्वादि ११, वैकुण्ठ ११ (द.भा.), हज्ज मु.

E पूर्णिमा पुण्यं, मलमास पूर्ति, पोंगल उत्सव (द.भा.), माघ बिहु (असम), गंगा सागर यात्रा, माघ स्नान प्रा., काशी घाटे दशाश्वमेध स्नान प्रा., शाकंभरी जयंती

पौष शु. ८ शनौ प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ७ जन.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	११	०	८	६	९	३	११	५	१०	९	८
२२	२५	१८	१०	२०	३	१५	१४	१४	१४	२२	१
३५	१४	४५	४७	१७	४८	३४	४४	४४	०	१४	९
४६	३४	२५	१०	४८	४५	९	१४	१४	४५	१२	४८
६१	८४१	१७	९२	८	३१	४	३	३	२	२	२
९	५७	५६	१०	५७	५१	२१	११	११	२७	२	७
मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
पू.षा. ३	रेवती ३	भरणी २	मूल ४	विशा. १	उ.षा. ३	पुष्य ४	उ.भा. ४	हस्त २	शत. ३	श्रवण ४	मूल १

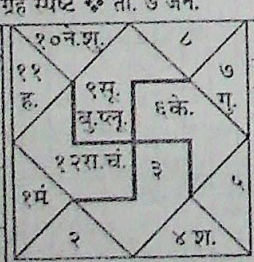

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

पौष सुदी प्रतिपदा का क्षय होना-जनता में विद्रोह का कारक बना है। शुक्ल द्वितीया रविवार को चन्द्र दर्शन उषा नक्षत्र मकर राशि में दोनों श्रृंग बराबर होने से वातावरण सामाजिक दृष्टि से समानता का बनेगा। सूर्य-बुध-शुक्र के योग में नाटकीय घटना बढ़ेगी। चतुराई से चोरी जारी की वारदातें बढ़ेंगी। राहु-केतु के प्रभाव से अर्ध अंशात्मक काल सर्प योग भी बनता है। ग्रह चाल के प्रभाव से आकाश-पृथ्वी या पाताल-अमेरिका, अफ्रीका, रूस, ब्रिटेन आदि देशों में कोई विशेष घटना क्रम जान लेवा या कोर्ट-कचहरी जन्य बनेगा। शीर्षस्थ नेता स्त्री वर्ग से पीड़ित रहेंगे। प्रभु राष्ट्र नायकों को सद्बुद्धि देवें ताकि राष्ट्रों का विनाश न हो, ऐसा मोड़ जानने का योग है। आतंकवादी घटनाक्रम अनियंत्रित होने से गरीबों की हत्याएं तथा दैनिक उपभोग की सामग्री का प्राप्त होना बाधित होगा। ट्रक-मोटर यूनियनों का हड़ताली मोड़ भी विकास में बाधक बनेगा। तेजी-मन्दी विचार (व्यापार) - ४ जनवरी को विशाखा के गुरु में रुई मंदी, आम के भावों में तेजी तथा सौन्दर्य सामग्री के भाव सम रहेंगे। ८ जनवरी को शुक्र अस्त होने के कारण व्यापार में लाभ कम तथा सभी वस्तुओं के भावों में समानता रहेगी। ८ जनवरी को पूर्वाषाढ़ा में बुध बिनौला में तेजी का योग करेगा। तथा अनाज में मंदी। शनिवारी मकर संक्रान्ति के कारण तिल-तैल में तेजी का योग है। माह में चना, उड़द, चावल, खशखश, सूखा मेवा, शक्कर, सरसों, जीरा, लहसून में तेजी रहेगी। आकाश लक्षण-भारत में शीत लहर का योग बनेगा। घना कोहरा भी उत्तरी क्षेत्र में होने का योग है। पूर्वोत्तर भारत में प्राकृतिक आपदा का योग भी बनता है। विशिष्ट नगर में आतंक प्राकृतिक रहेगा। प्रतिपदा पौषी सुदी जिस वर्ष क्षय हो जाय। घाघ कहे विग्रह रूप में प्राकृतिक आपदा आय॥ शकुन विचार- पौष सुदी पंचमी बादल छावैं बरसे नहीं। तो जाने आगे का वर्ष दुर्भिक्ष पड़े नहीं॥ शनिवारी मकर संक्रान्ति का योग जानिये। कष्ट रोग पैदा होवे दुनियां दुःखी मानिये॥ पौष उजैली सातमी अष्टमी नौवी गाज। मेघ होय तो जान लो अब शुभ होवे काज॥

ता. १४ जन. ❖ पौष शु. १५ शनौ प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	२	०	८	६	८	३	११	५	१०	९	८
२९	२५	२१	२१	२१	२९	१५	१४	१४	१४	२२	१
४३	८	०	४१	१८	४३	२	२१	२१	१८	२८	२४
३७	४७	५	१५	२	४२	४३	५८	५८	३७	४८	२१
६१	७२८	२०	१५	०८	३६	४	३	३	२	२	२
६	४८	५२	१४	७	५५	४०	११	११	४२	८	१
मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
उ.षा. १	पुन. २	भरणी ३	पू.षा. ३	विशा. १	उ.षा. १	पुष्य ४	उ.भा. ४	हस्त २	शत. ३	श्रवण ४	मूल १

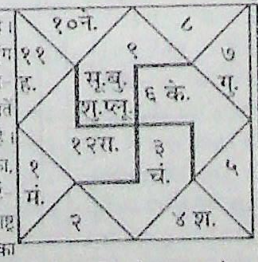

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

माघ कृष्ण पक्ष-२० श्री सं. २०६२ शाके १९२७

दिन मान	स्टै.टा. सूर्योदयास्त	दिनांक प्र. मु. अं.	चन्द्र संचार	दै. रवि स्पष्ट प्रातः	चन्द्रोदयास्त दिल्ली
	उदय अस्त			भा.स्टैं.टा. ५ घं. ३० मि. रा.नं.मि.	उदय अस्त
	घ मि न घ मि			रा. अं. कु. ति.	घ मि घ मि
३२	६ ९ ० ७	१४ 15	कर्क	९ ९ ० ० ४४ ४३	८ १८ ३७ ८ ३१
३२	६ १९ ० ७	१५ 16	सिं.२०।५५	९ ९ ० १ ४५ ४८	५ १९ ३४ ८ ४०
३२	६ १९ ० ७	१६ 17	सिंह	९ ९ ० २ ४६ ५३	४ २० २८ ९ १२
३२	६ १९ ० ७	१७ 18	सिंह	९ ९ ० ३ ४७ ५७	४ २१ २० ९ ४०
३२	६ १९ ० ७	१८ 19	कं.१६।०२	९ ९ ० ४ ४९ ०१	४ २२ १२ १० ७
३२	६ १९ ० ७	१९ 20	कन्या	९ ९ ० ५ ५० ०५	३ २३ ४ १० ३३
३२	६ १९ ० ७	२० 21	तु.२८।१०	९ ९ ० ६ ५१ ०८	३ २३ ५८ १० ५९
३२	६ १९ ० ७	२१ 22	तुला	९ ९ ० ७ ५२ ११	२ २४ ० ११ २८
३२	६ १९ ० ७	२२ 23	तुला	९ ९ ० ८ ५३ १३	२ २४ ५४ १२ ०
३२	६ १९ ० ७	२३ 24	वृ.१३।०९	९ ९ ० ९ ५४ १५	१ २५ ५४ १२ ३७
३२	६ १९ ० ७	२४ 25	वृश्चिक	९ ९ ० १० ५५ १६	१ २६ ५८ १३ २२
३२	६ १९ ० ७	२५ 26	ध.१७।५२	९ ९ ० ११ ५६ १७	१ २८ ४ १४ १५
०	० ० ० ०	२६ 0	० ० ०	० ० ० ० ० ० ० ०	० ० ० ० ० ०
३२	६ १९ ० ७	२७ 27	धनु	९ ९ २ ५७ १८	२९ १० १५ १९
३२	६ १९ ० ७	२८ 28	म.११।०१	९ ९ ३ ५८ १७	५९ ६ १२ १६ २९
३२	६ १९ ० ७	२९ 29	मकर	९ ९ ४ ५९ १६	५८ ७ ६ १७ ४३

तां. १५ से २९ जन. सन् २००६ ई., राष्ट्रीय मिति २५ पौष से ९ माघ तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

भारतीय थल सेना दिवस

✡ शुक्र पूर्व में उदय २८।२४

भ. ९।० से २२।१९ तक, उषा में बुध ८।२३, सौभाग्य सुन्दरी व्रत

कृष्ण चतुर्थी व्रत, संकट चौथ, वरद ४, मेला मस्तुआणा (पंजाब), ✡ मकर में बुध ९।४९, वक्री शुक्र पू.फा. में ८।४९

भ. ३०।९ से, सायन सूर्य कुंभ में ११।९

भ. १९।११ तक, स्वामी विवेकानन्द जयंती, श्री रायानन्दाचार्य ज.,A

कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयंती पूर्वोदयं शुक्रं १८ जनवरी

भ. २१।३० से, श्रवण में सूर्य ७।४८

भ. ९।७ तक, श्रवण में बुध १०।४३

षट्तिला एका. व्रत सबका, वंजुली महाद्वादशी व्रत, श्री शीतलनाथ B

द्वादशी तिथि क्षयः

भ. २६।४२ से, प्रदोष व्रत

भ. १३।६ तक, कृतिका में मंगल २१।२७, मास शिवरात्री व्रत, C

देवपितृकार्याऽमावस्या, मौनी अमावस्या, द्वापर युगादि ३०, विशाल D

A राष्ट्रीय माघ मास प्रा. B जन्म जैन, भारतीय गणतंत्र दिवस ५७ वाँ वर्ष C लाला लाजपत राय जन्म D मेला हरिद्वार व प्रयाग, महोदय योग १०।५५ से १९।४६ तक

माघ कृ. ७ रवौ प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ✡ ता. २२ जन.

म	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लु
९	६	०	९	६	८	३	११	५	१०	९	८
७	०	२३	४	२२	२५	१४	१३	१३	१४	२२	१
२५	२०	५७	३०	९९	१०	२४	९६	५६	४०	४६	४०
१९	६	२	३६	८	२०	२२	२५	२२	५९	१३	५
६९	६०	२३	२९	७	२०	५	३	२	२	२	१
२	४०	३८	२३	२	५०	५३	११	११	५५	१३	५३

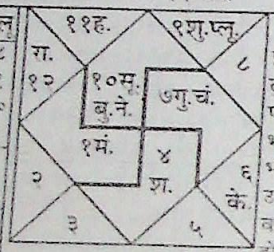

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

इस माह में पांच रविवार और पांच सोमवार के आने से निम्नांकित प्रभाव योग बनता है- "यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पन्च सन्ततम्। दुर्भिक्षं छत्र भंगश्च तदाऽस्ते च महद्भयम् ॥" "सोमस्य पन्चवाराश्च यत्र मासे भवन्तिहि। धन-धान्य समृद्धिश्च सुखी भवती मेदिनी ॥" अर्थात् पांच रविवार के आने से दुर्भिक्ष (अकाल) छत्र भग (राजकीय कार्यालयों के झण्डा झुकना) यानि सरकारी पद विभूषित उच्च शासनाधिकारी का देह अवसान का योग बनता है। अचानक वायुयान दुर्घटना में विशेष हानि का घटक बनेगा। लेकिन पांच सोमवार होने से कुछ घटनाओं में न्यूनता आ सकती है। सुभिक्ष कारक घटनाएँ घटेंगी। सुख के योग बनेंगे। विश्व मे सात देशों में छत्र भंग के योग दुर्घटनाओं के कारण घटेंगी। साम्प्रदायक दंगे भी बढ़ेंगे। मन्दिर-मस्जिद-गिरजाघर पर विवाद बढेगा। किसी प्रभावी गष्ट्र नेता का पतन योग बनता है। तेजी-मन्दी विचार (व्यापार)- १७ जनवरी को उषा का बुध अनाज के भावों में मंदी कारक होगा १९ को मकर का बुध रुई, सोना, चांदी में तेजी और अन्य प्रकार की खाद्य सामग्री (खाद्यान्न) के भाव मध्यम रहेंगे। १८ जनवरी को माघ मास में शुक्रोदय होने से अनाजों के भावों में तेजी आयेगी। २४ को श्रवण के सूर्य काफी तेजी सभी में आयेगी। आकाश लक्षण- माघ कृष्ण में देश में कहीं-कहीं हल्की वर्षा होगी। मध्य तथा उत्तरी भारत में शीत लहर का प्रकोप रहेगा। हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, छत्तीस गढ़, बिहार, बंगाल में रोगादि भय होगा। केतु रोगारकश्चैक राशि ऋक्ष गतो तथा। महा भयं च सस्यानां न च वृष्टि प्रजायते ॥ अर्थात् आगामी वर्ष में अल्प वर्षा का द्योतक- वर्तमान में धोखा कपट की राह को बढ़ाएगा। शकुन विचार- माघ बदी प्रतिपदा वायु चले बादल नहीं होय। जानो तिल अरु तैल में तेजी बहुत होय ॥ माघ अमावस गर्भमयग्गो कछु भांति विचार। भातों की पूनो दिवस बरसा खूब जानें प्रहर ॥

ता. २९ जन. ✡ माघ कृ. ३० रवौ प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लु
९	९	०	९	६	८	३	११	५	१०	९	८
१४	६	२६	१६	२३	२२	१३	१३	१३	१५	२३	१
५९	३३	४८	२७	५	४०	५०	३४	३४	१	१	५२
२६	५७	४४	२०	३४	२६	९	१६	१६	५९	५४	५४
६०	११	२५	०३	६	१२	४	३	३	३	२	१
५८	२०	४०	५३	०	१	५६	११	११	६	१६	४५

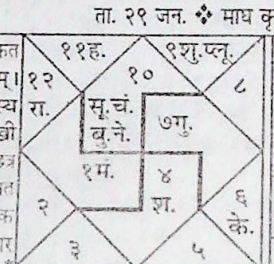

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आर्यभट्ट पंचांगम्

माघ शुक्ल पक्ष-२१

श्री सं. २०६२ शाके १९२७

दिन मान

स्टे.टा. सूर्योदयास्त

दिनांक प्र. मु. अं

चन्द्र संचार

दै. रवि स्पष्ट प्रातः

चन्द्रोदयास्त दिल्ली

ता. ३० जन. से १३ फर. सन् २००६ ई., राष्ट्रीय मिति १० से २४ माघ तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

गा. मि.	दि	तिथि	स्टे.टा.	नक्षत्र	स्टे.टा.	योग	स्टे.टा.	करण	स्टे.टा.	दिनांक प्र.	मु.	अं	भा.स्टे.टा. रा. घं. मि.	५ घ. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	उदय घ.	मि.	अस्त घ.	मि.
०	च	१	२२।६	२६।७	ब	८।४	३०।५	व	२८।५	३०	कु.	२९	३०	कुं.	९	१६	०	१४	७	५४	१८	५७
१०	मं	२	१२।०	१२।२	श	८।४	३०।६	व	१८।०	१	मी.	२९	१	कुंभ	९	१७	०	१९	७	५६	१८	५७
१९	बु	३	४	२८।०	पू	८।५	३०।६	व	८।४	२	मी.	२९	२	मी.१८।२३	९	१७	०	२३	७	५७	१९	०
१२	बु	३	४	२८।०	पू	४।१	२३।४	व	८।४	३	मी.	२९	३	मी.१८।२३	९	१८	०	२७	७	५९	१९	०
क्षया	बु	४	५६	५५	२०	५०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१३	गु	५	५०	४३	२४	२८	३०	ब	२३	२०	१६	३८	२०	३	२	मीन	९	१९	०	३	५	३	९	४५	२२	२०
१४	शु	६	४५	३१	२५	३५	च	३२	२५	२०	३१	मा	५३	५१	२४	५५	को	१८	२२	१८	२६	२०	०	४	३	मीन	९	२०	०	३	५	३	९	५१	२२	२८
१५	श	७	४०	०१	२४	२२	अ	३१	०१	१९	५०	ग	१४	२०	१३	५३	२७	१०	७	०	१८	०१	२३	६	५	मेष	९	२१	०	४	७	३	९	५२	१०	५१	२४	०
१६	र	८	४१	०२	२३	४९	भ	३१	३७	१९	५०	शु	३४	१७	२०	५१	वि	२०	१०	१२	१	२७	१३	७	०९	१८	०२	२३	६	७	वृ.३५।५३	९	२२	०	५	३	७	९	५३	११	२०	२४	२८
१७	चं	९	४१	५०	२३	५८	कृ	३३	०८	२०	२३	ब	३४	२२	१९	४१	बा	२१	४८	२१	४८	२७	२१	७	०७	१८	०२	२४	७	७	वृष	९	२३	०	६	२७	४८	१२	७	५	२१	२६	३४
१८	मं	१०	४२	५६	२४	३८	रो	३४	०७	२१	३०	तै	२२	४३	२२	१३	२७	२१	७	०७	१८	०४	२५	८	८	वृष	९	२४	०	७	२५	४६	१२	५	२१	२६	३४
१९	बु	११	४३	५०	२५	५१	मृ	४०	२१	२३	१५	व	२५	५८	१८	४०	व	१५	१०	१३	११	२७	२८	७	०७	१८	०४	२६	९	८	मि.१०।२१	९	२५	०	८	२१	४८	१३	४	५	४२	२७	३४
२०	गु	१२	४५	०१	२६	३०	आ	४०	३९	२५	२२	वि	२९	०३	१८	४३	ब	१८	४८	१४	२७	२८	७	०६	१८	०५	२७	१०	९	मिथुन	९	२६	०	८	४	४८	१४	३६	२८	२९
२१	शु	१३	४६	०१	२७	३०	पुन	५४	४९	२४	४९	श्री	२९	५४	१९	०३	को	२२	२०	१६	२०	२७	३२	७	०५	१८	०६	२८	११	१०	क.२१।५०	९	२७	०	९	१५	३३	१४	२९	११
२२	श	१४	४७	००	-	-	पु	५८	२९	२७	३२	आ	३१	२०	१९	३७	ग	२८	४९	१८	३६	२७	३५	७	०४	१८	०७	२९	१२	११	कर्क	९	२८	१०	१०	४९	१६	३१	६	३	४१
२३	र	१५	१	४७	०७	४६	श्ले	६०	००	-	-	मी	३३	१३	२०	२१	व	१	४७	७	४६	२७	३९	७	०३	१८	०७	२९	१३	१२	कर्क	९	२९	१०	११	५१	३२	५१	६	४	४१
२४	चं	१५	८	४७	१०	१६	श्ले	६	०१	२७	३०	शे	३५	२७	२१	१८	व	८	३	१०	१६	२७	४३	७	०३	१८	०८	२	१४	१३	मिं.०१।४७	१०	०	११	२९	३८	१८	२२	७	१४

A जयंती, महात्मा गांधी पुण्यं, व्यतिपात पुण्यम् B तिल चौथ, वरद ४, कुंद चौथ, फरवरी मा. २ ता. २८ प्र.

E (राज.) ३ दिन का, गुरु हरराय जयंती (प्र. मत से), कल्यादि १३ F रविदास जयंती, भैरव जयंती, ललिता जयंती, वेणेश्वर मेला (बांसवाड़ा)

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टें. टा. घण्टा मिनटों में है।

चन्द्र दर्शन मु. ३० समता कारक, पंचक १८।२९ से, श्री वल्लभाचार्य A

मुहर्रम मु. मा. १ हिजरी सन् १४२७ प्रा.

भ. १९।२४ से २५।५७ तक, धनिष्ठा में बुध २८।२. गौरी तृतीया, B

चतुर्थी तिथि क्षय:

वसंत पंचमी, सरस्वति पूजा, तक्षक पूजा

पंचक २०।३२ तक, मार्गी शुक्र १३।३८

भ. २४।२२ से, मन्वादि ७, रथ सप्तमी, आरोग्य ७, अचल ७, C

भ. १२।६ तक, वृष में मंगल ११।००, कुंभ में बुध २१।५६, श्री दुर्गाष्टमी, D

धनिष्ठा में सूर्य १०।५१, श्री महानन्दा नवमी

C चन्द्रभाग ७, श्री माधवाचार्य जयंती D भीष्माष्टमी

भ. १३।११ से २५।५१ तक, जया एकादशी व्रत सबका

शत. में बुध १५।३, भीष्म द्वादशी, भीष्म तर्पण, मोहर्रम ताजिया मु.

प्रदोष व्रत, मेला पंचखण्ड पीठ बिराटनगर (राज.), मेला जैसलमेर E

श्री राम चरण स्नेही जयंती, श्री जोतेन्द्र नाथ रथयात्रा जैन

भ. ७।४६ से २१।० तक, सूर्य कुंभ में २४।५७ मु. १५, सत्य व्रत, पूर्णिमा व्रत

पूर्णिमा पुण्यं, संक्रांति पुण्य, माघी पूर्णिमा, माघ स्नान पूर्ति, श्री F

माघ श. ८ रवी प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ५ फर.

मु	च	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लु
९	०	०	९	६	८	३	११	५	१०	९	८
२२	१८	२९	२८	२३	२२	१३	१३	१३	१५	२३	२
८	४८	५३	८६	४४	७	१५	१२	२२	२४	१७	४
३८	४८	४०	२०	१९	५६	४४	०	०	७	४८	३९
६०	५९	२७	००	४	५	४	३	३	३	२	१
४९	४०	२३	२६	५४	०	४९	११	११	१४	२७	३५
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-	-	-
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	कृष्ण	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल

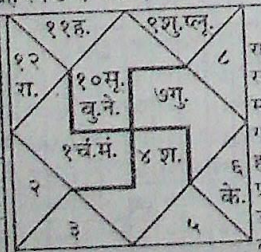

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

"माघ शुक्ला प्रातिपदा सोम चन्द्र दर्शन होय। नक्षत्र धनिष्ठा राशि कुंभ नयी सूचना देय॥" मोहर्रम भी द्वितीया को मंगल से हो रहा है। ईस्लामी संवत १४२७ का मान। रखे सर्वत्र वृद्धी का मान॥" सूर्य-बुध-चंद्र-शनि की युक्ति के प्रभाव से राजनैतिक गतिविधियों में विशेष तनाव बनेगा। चतुर्थी का क्षयादि वृद्धि चतुर्दशी होय। प्राकृतिक आपदा अचानक घटे प्रजा दुखी होय॥ किसी प्रभावी राष्ट्र नेता का देहावसान तथा राष्ट्रीय स्तर की महिला का रहस्य उजागर होगा। साम्प्रदायिक दंगों का प्रभाव बढ़ेगा। तुर्की, टोकियो, बरमा, जर्मनी, ईराक, ईरान व अफगानिस्तान में विशेष समस्याओं का प्रादुर्भाव होगा। सेवा कर्मी चिन्तित हड़तालें तथा विभियोजन संबंधी बैंकिंग मामलों में लूट खसौट होगी। मित्र देश में नया नेता का नाम चमकेगा। अमेरिका में विद्रोह का योग बनता है। तकनीकी व्यवसाय बढ़ेगा। तेजी-मन्दी विचार (व्यापार)-व्यापारिक भविष्य में किराना बाजार में घटा बढ़ी रहेगी। उड़द, मूंग, मोठ, चना, अरहर, मसूर का भाव तेज होगा। सोना-चांदी आदि धातुएं अस्थिर रहेंगी। धनिष्ठा के बुध के कारण चावल, सोना, चांदी में मंदी रहेगी तेज होकर एकाएक मन्दी होगी। १२ फर. को २४।५७ घं.मि. में सूर्य देव कुंभ राशि में प्रवेश करेंगे। यह संक्रान्ति विष्णु पाद संज्ञक होने से रसादि भावों में तेजी करेगी। आकाश लक्षण-सामान्यत: मौसम साफ होगा। शीत लहर का प्रकोप रुकेगा। प्रात: काल में बादल छाये रहना या हल्का कोहरा का योग, धनु राशि में शुक्र मार्गी के अनुसार रुई, सूत, कपड़ा बाजार मंदा रहेगा। भावं पूर्वांचल मार्गी में बना रहेगा। दिल्ली, हरियाणा, व नेपाल में ठंड बढ़ेगी। उल्कापात का योग भी बनता है। कहीं तेज ठंड तो कहीं तेज गर्मी का प्रभाव रहेगा। शकुन विचार- "माघ छटी गरजे नहीं मंहगो होय कपास। सातें देखी निर्मली हो नाहीं कुछ आश॥" "माघ सप्तमी उजली बादल मेघ करन्त। तो आषाढ़ में भड़ी (भदुडरी) घनो मेघ बरसन्त॥" माघ सुदी पूनो दिवस चन्द्र निर्मली होय। पशु बेचो संग्रह करो काल हजाहल होय॥

ता. १३ फर. ❖ माघ श. १५ चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

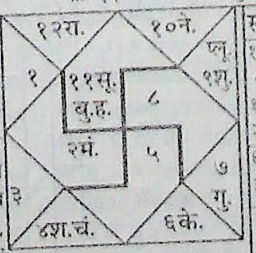

मु	च	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लु
१०	३	१	१०	६	८	३	११	५	१०	९	८
०	२८	३	१३	२४	२३	१२	१२	१२	१५	२३	२
११	२	२८	४	१८	४९	२८	४६	४६	५०	३६	१६
६०	३९	२८	१०५	३	२१	४	३	३	३	२	१
३८	९	५८	२९	३२	५१	३२	११	११	२१	१६	२३
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	-	-	-	-
९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल	शुक्ल

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फाल्गुन कृष्ण पक्ष-२२ श्री सं. २०६२ शाके १९२७

दिन मान | स्टैं.टा. सूर्योदयास्त | दिनांक प. मु. अं | चन्द्र संचार | दै. रवि स्पष्ट प्रातः | चन्द्रोदयास्त दिल्ली

ता. १४ से २७ फरवरी सन् २००६ ई., राष्ट्रीय मिति २५ माघ से ८ फाल्गुन तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर-वसन्त ऋतु।

रा.मि.	दि	तिथि	स्टैं.टा.	नक्षत्र	स्टैं.टा.	योग	स्टैं.टा.	करण	स्टैं.टा.	उदय	अस्त	भा.स्टैं.टा.	५ घं. ३० मि.	उदय	अस्त
२५	मं	९ १४ ३९	१३ ५४	म १३ ३२	१३ ३१	अ ३७ ५२	२२ ११	कौ १४ ३९	१२ ५४	२७ ४७	७ ०२	१८ ०९	३ १५ 14	सिंह	१० ०१ १२ ०७ ३५	१९ १५	७ ४३	वेलेण्टाइन डे, बुध पश्चिम में उदय १८।३३
२६	बु	२ २१ २१	१५ ३४	पू फा २१ २९	१५ ३०	मु ४० १७	२३ ०८	ग २१ २१	१५ ३१	२७ ५१	७ ०१	१८ १०	४ १६ 15	कं.२१।३	१० ०२ १२ ४३ ३५	२० ७	८ १०	भ. २८।५३ से
२७	गु	३ २७ ५२	१८ ०९	उ फा २९ ०५	१८ ३८	धृ ४२ ३०	२४ ०१	वि २७ ५२	१८ ९	२७ ५५	७ ००	१८ १०	५ १७ 16	कन्या	१० ०३ १३ १८ ३३	२० ५९	८ ३६	भ. १८।९ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत
२८	शु	४ ३३ ५०	२० ३२	ह ३६ ०९	२१ २७	शू ४४ १५	२४ ४२	व ० ५८	७ २३	२७ ५९	७ ००	१८ ११	६ १८ 17	कन्या	१० ०४ १३ ५१ ३२	२१ ५२	९ २	पू.भा. में बुध ७।४४, श्री पद्म प्रभु जयंती जैन
२९	श	५ ३८ ५०	२२ ३१	चि ३२ १८	२३ ५४	गं ४५ १४	२५ ०४	कौ ६ ३०	९ ३५	२८ ०३	६ ५९	१८ १२	७ १९ 18	तु.१०।४४	१० ०५ १४ २३ ३१	२२ ४६	९ २९	सायन सूर्य मीन में २५।२०
३०	र	६ ४२ २९	२३ ५७	स्वा ४४ ०९	२५ ४९	वृ ४५ ११	२५ ०२	ग १० ५३	११ १९	२८ ०७	६ ५८	१८ १३	८ २० 19	तुला	१० ०६ १४ ५४ ३०	२३ ४४	९ ५९	भ. २३।५७ से, शतभिषा में सूर्य १५।२८, उ.षा. में शुक्र १५।४३
फा १	चं	७ ४४ २५	२४ ४२	वि ५० १९	२७ ०५	धृ ४३ ४९	२४ २८	वि १२ ४२	१२ २६	२८ ११	६ ५७	१८ १३	९ २१ 20	वृ.२०।५०	१० ०७ १५ २४ ५८	२४ ०	१० ३३	भ. १२।२६ तक, राष्ट्रीय फाल्गुन मास प्रा., वसन्त ऋतु प्रा.
२	मं	८ ४४ २५	२४ ४२	अ ५१ ३६	२७ ३५	व्या ४४ ५७	२३ १९	बा १४ ४१	१२ ४८	२८ १५	६ ५६	१८ १४	१० २२ 21	वृश्चिक	१० ०८ १५ ५२	२७ २४	४४ ११	१३ कालाष्टमी, सीताष्टमी, जानकी जयंती, अष्टका श्राद्ध
३	बु	९ ४२ २१	२३ ५१	ज्ये ५० ५४	२७ १७	ह ३६ २९	२१ ३१	तै १३ ३९	१२ २३	२८ १९	६ ५५	१८ १५	११ २३ 22	ध.२०।१६	१० ०९ १६ १९ २५	२५ ४८	१२ १	समर्थ गुरु रामदास जयंती
४	गु	१० ३८ १८	२२ १३	मू ४८ १६	२६ १२	व ३० २७	१९ ०५	व १० ३५	११ ८	२८ २३	६ ५४	१८ १५	१२ २४ 23	धनु	१० १० १६ ४४	२४ २६	५२ १२	५९ भ. ११।८ से २२।१३ तक, स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती, आर्य A
५	शु	११ ३२ २८	१९ ५२	पू षा ४३ ५४	२४ २७	मि २२ ५४	१६ ०४	ब ५ ३७	९ ८	२८ २७	६ ५३	१८ १६	१३ २५ 24	म.१९।५५	१० ११ १७ ०८ २३	२७ ५४	१४ ४	मीन में बुध २१।१५, मकर में शुक्र ३०।१९, विजय एकादशी व्रत सबका
६	श	१२ २५ ०८	१६ ५५	उ षा ३८ ०७	२४ ०७	व्य १४ ११	१२ ३२	तै २५ ८	१६ ५५	२८ ३१	६ ५२	१८ १७	१४ २६ 25	मकर	१० १२ १७ ३१ २२	२८ ५१	१५ १५	रोहिणी में मंगल २३।४५, शनि प्रदोष व्रत, व्यतिपात पुण्यं
७	र	१३ १६ ४०	१३ ३१	श्र व ३९ १९	२३ ५०	१ ५३ २९ ५८	३० २२	व १६ ४०	१३ ३१	२८ ३६	६ ५१	१८ १७	१५ २७ 26	कुं.२१।५४	१० १३ १७ ५३ २०	२९ ४०	१६ २९	भ. १३।३१ से २३।४२ तक, पंचक २९।५४ से, महाशिवरात्री व्रत, B
८	चं	१४ ७ ३०	०९ ०५	ध २३ ५५	१६ २४	शि ४३ १३	२४ ०७	श ७ ३०	९ ५	२८ ४०	६ ५०	१८ १८	१६ २८ 27	कुंभ	१० १४ १८ १३ १८	६ २४	१७ ४१	श्री वासुदेव पूज्य जयंती जैन, शिव खप्परपूजा, देव पितृ कार्या ऽमावस्या, C
०	चं	३० ५८ ००	३० ०२	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० 0	० ० ०	० ० ० ० ०	० ० ०	० ० ०	अमावस्या तिथि क्षय:

A समाज सप्ताह प्रा. B द्वादश ज्योतिर्लिंग पूजा व रुद्राभिषेक, श्री बैद्यनाथ जयंती C आर्य समाज सप्ताह पूर्ति

फाल्गुन कृ. ८ भौमे प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २१ फर. [दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं] **ता. २७ फरवरी ❖ फाल्गुन कृ. १४ चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट**

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	७	१	१०	६	८	३	११	५	१०	९	८
८	४	७	२५	२४	२७	१२	१२	१२	१६	२३	२
१५	३७	३४	४८	४२	३१	३	२१	२१	१७	५३	२६
५२	१५	४०	३७	१०	५०	२०	८	८	३१	५१	५४
६०	८४	३०	७७	२	३४	४	३	३	३	२	१
२७	५९	१४	२१	६	४५	७	११	११	२५	१३	१०
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
प्रात.	प्रति.	कृति.	पू.भा.	विशा.	उषा.	पुष्य	उ.भा.	हस्त	प्रात.	प्रति.	कृति.

१२रा. | १०ने. | ९शु. प्लू. | ८ चं. | ११बु. सू.ह. | २मं. ५ | ३ | ४ श. | ६के. | ७गु.

इस माह में पांच मंगलवार (भौमवार) का योग बना है। जिसका फल निम्नांकित शास्त्र मत से होता है। "यत्र मासे महीसूनो जायन्ते पञ्चवासराः। रक्तेन पूरिताः पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत्॥" मंगल पांच वार से प्रशासन पीड़ित होगा। छत्र भंग का योग एकाएक गठित होगा॥ अर्थात् पांच मंगलवार आने से योग अनिष्टकारी बना है। रक्तपात, दंगा-फसाद, हिंसा भड़केगी। हम सब सावधान होकर कार्य करें। राष्ट्र की शासनाधिकारी महिला के लिये पूर्व योग उदित होंगे। ता. १४ फरवरी को फाल्गुन में बुधोदय दुर्भिक्ष का कारण बनेगा। "सोमवती अमावस्या का क्षय होना बुरा है। विश्व में शान्ति बनाना अधूरा है॥" प्रकाशकों-सम्पादकों तथा फाइनेंस कम्पनियों के लिये कार्य में बाधा आयेगी। राजनैतिक उठापटक के कारण हत्या योग भी बनता है। विमान अपहरण तथा नवा आकाशीय पिण्ड का वैज्ञानिक पता कर नवीन जानकारी देंगे। आतंकवाद को बढ़ावा मिलेगा। **तेजी-मन्दी विचार (व्यापार)**-इस पक्ष में बुधोदय के कारण अन्नादि में तेजी आयेगी। १७ फरवरी को पूर्वाभाद्रपद में बुध सोना, चांदी, सूत, सन, कपड़ा, तिल, तेल, अरण्ड, सरसों, हींग, दाख, हल्दी, गेहूं, गुड़, चना के भाव तेज होंगे। २४ को मीन राशि का बुध रुई, गुड़, शक्कर में मंदी का योग भी करता है। सोना चांदी, ताम्बा, जस्ता, पाट, बारदाना, शेयर बाजार में चटबढ़ (उतार चढ़ाव) रहेगा। **आकाश लदाण**-पूर्वी मैदानों में कहीं-कहीं हल्की बर्फ वारी का योग बनता है। आम रूप से मौसम साफ रहेगा। भूस्खलन का योग दक्षिण प्रान्तों एवं दक्षिणी देशों में मंगल के कारण बनेगा। नवीन खनिज का शोध पर्वतीय क्षेत्रों में होगा। हिमपात से जन-धन को विशेष हानि भी होगी। **शकुन विचार**-फागुन बदी सु दूज दिन बादल होय तीज। बरसे सावन भादों खेलो छोटी तीज॥ पितृ पक्ष अमावस्या जो क्षय पख में होय। निश्चय रोग ज्यादा बढ़े घर-घर लोग रोय॥ फागुन पंचमी को बादल बरजे गाजे। अन्न भाव मंदी की ओर राजे॥

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	९	१	११	६	९	३	११	५	१०	९	८
१४	२९	१०	१	२४	१	११	१२	१२	१६	२४	२
१८	४३	३८	४८	५२	१९	३९	२	२	३८	७	३३
१३	३६	२०	२५	२	२४	४३	३	३	७	१०	२३
६०	१५	३१	३१	०	४२	३	३	३	३	२	०
१८	२७	४	४०	५९	१	४१	२१	११	२६	१०	५९
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
प्रात.	प्रति.	कृति.	पू.भा.	विशा.	उषा.	पुष्य	उ.भा.	हस्त	प्रात.	प्रति.	कृति.

१२बु.रा. | १०ने.शु.चं. | ९ प्लू. | ८ | ११ सू.ह. | २मं. ५ | ३ | ४ श. | ६ के. | ७ गु.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

ता. २८ फा. से १४ मार्च सन् २००६ ई., राष्ट्रीय मिति ९ से २३

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आर्यभट्ट पंचांगम्

फाल्गुन शुक्ल पक्ष-२३

श्री सं. २०६२ शाके १९२७

ता. २८ फर. से १४ मार्च सन् २००६ ई., राष्ट्रीय मिति ९ से २३ फाल्गुन तक। रावे उत्तरायणे, दक्षिण गोले, वसन्त ऋतु।

रा. मि.	वार	तिथि ति	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिन मान घटी	पल	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र. मु. अं. फाल्गुन	मुहर्रम	फरवरी	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
९	मं	१	४८	४३	२६	१८	श	१६	२४	१३	२३	सि	३२	३०	१९	४९	कि	२३	२०	१६	९	२८	४४	६	४९	१८	१९	१७	२९	28	मी.२१।११	१०	१५	१८	३१	१०/१६	७	३	१८	५१	---
१०	बु	२	४०	०२	२२	४९	पूभा	९	१२	१०	२१	सा	२२	१०	१५	४०	बा	१४	१८	१२	३१	२८	४८	६	४८	१८	१९	१८	३०	M1	मीन	१०	१६	१८	४७	१५	७	३८	१९	५९	चन्द्र दर्शन मु. ४५ समर्घता कारक, फुलरिया दूज, श्री राम कृष्ण A
११	गु	३	३२	२०	१९	४३	उभा	२	४६	०७	५३	शुभ	१२	३३	११	४८	तै	६	३	९	१२	२८	५२	६	४७	१८	२०	१९	स१	2	मे.२१।४६	१०	१७	१९	०२	१२	८	१२	२१	६	भ. ३०।२२ से, सफर मु. मा. २ प्रा., पंचक २९।४५ तक, पं. लेखराम B
१२	शु	४	२५	५९	१७	१०	अ	५३	३९	२८	१४	गु	३	५७	०८	२१	वि	२५	५९	१७	१०	२८	५७	६	४६	१८	२१	२०	२	3	मेष	१०	१८	१९	१४	११	८	४७	२२	१३	भ. १७।१० तक, विनायक ४ व्रत, संत चतुर्थी (उडीसा)
१३	श	५	२१	१६	१५	१६	भर	५१	३५	२७	२३	ऐं	५०	३५	२६	५९	बा	२१	१६	१५	१६	२९	०१	६	४५	१८	२१	२१	३	4	मेष	१०	१९	१९	२५	९	९	२३	२३	१९	पू.भा. में सूर्य २१।४२, याज्ञवल्क जयंती
१४	र	६	१८	२४	१४	०६	कृ	५१	२४	२७	१७	वै	४६	०९	२५	११	तै	१८	२४	१४	६	२९	०५	६	४४	१८	२२	२२	४	5	वृ.०९।१७	१०	२०	१९	३४	६	१०	३	२४	०	गोरूपिणी षष्ठी बंगाल, वक्री गुरु २२।१८, बुध पश्चिम में अस्त १०।४९
१५	चं	७	१७	२८	१३	४२	रो	५३	०५	२७	५७	वि	४३	१४	२४	००	व	१७	२८	१३	४२	२९	०९	६	४३	१८	२३	२३	५	6	वृष	१०	२१	१९	४०	४	१०	४७	२४	२४	भ. १३।४२ से २५।४७ तक
१६	मं	८	१८	२६	१४	०४	मृ	५६	३३	२९	१९	प्री	४१	४५	२३	२४	ब	१८	२६	१४	४	२९	१४	६	४२	१८	२३	२४	६	7	मि.१६।३३	१०	२२	१९	४४	३	११	३६	२५	२६	श्री दुर्गाष्टमी, अन्नपूर्णाष्टमी, होलाष्टक प्रा., श्री दादूदयाल जयंती, C
१७	बु	९	२१	०८	१५	०८	आ	६०	००	-	-	आ	४१	३२	२३	१८	कौ	२१	८	१५	८	२९	१८	६	४१	१८	२४	२५	७	8	मिथुन	१०	२३	१९	४७	०	१२	३०	२६	२४	विश्व महिला दिवस
१८	गु	१०	२५	२०	१६	४७	आ	१	३६	०७	१८	सौ	४२	२३	२३	३७	ग	२५	२०	१६	४७	२९	२२	६	३९	१८	२४	२६	८	9	क.२७।०७	१०	२४	१९	४७	५९/५८	१३	२७	२७	१६	भ. २९।४८ से, वक्री बुध कुंभ में १५।३२, मेला श्री श्याम जी खाटू D
१९	शु	११	३०	४०	१८	५४	पुन	७	४९	०९	४६	शो	४४	०१	२४	१५	वि	३०	४०	१८	५४	२९	२७	६	३८	१८	२५	२७	९	10	कर्क	१०	२५	१९	४५	५५	१४	२४	२८	२	भ. १८।५४ तक, श्रवण में शुक्र ९।३, आमलकी एकादशी व्रत सबका
२०	श	१२	३६	४७	२१	२०	पु	१४	५४	१२	३५	अ	४६	११	२५	०६	ब	३	४०	८	५	२९	३१	६	३७	१८	२६	२८	१०	11	कर्क	१०	२६	१९	४०	५४	१५	२१	२८	४२	गोविन्द द्वादशी, श्याम जी मेला ३ दिन का पूर्ति (राज.)
२१	र	१३	४३	१९	२३	५६	श्ले	२२	३०	१५	३६	सु	४८	३८	२६	०३	कौ	१०	२	१०	३७	२९	३५	६	३६	१८	२६	२९	११	12	सिं.१५।३६	१०	२७	१९	३४	५२	१६	१७	२९	१६	प्रदोष व्रत
२२	चं	१४	४९	५७	२६	३४	म	३०	१७	१८	४२	धृ	५१	०८	२७	०२	ग	१६	४०	१३	१५	२९	३९	६	३५	१८	२७	३०	१२	13	सिंह	१०	२८	१९	२६	५०	१७	१०	२९	४६	भ. २६।३४ से
२३	मं	१५	५६	२३	२९	०७	पूफा	३७	५८	२१	४५	शू	५३	३०	२७	५८	वि	२३	१४	१५	५१	२९	४४	६	३४	१८	२७	चै१	१३	14	कं.२८।३०	१०	२९	१९	१६	४७	१८	३	६	१४	भ. १५।५१ तक, सूर्य मीन में २१।५१ मु. ४५, संक्रांति पुण्यं, मीन E

A परमहंस जयंती, मार्च मा. ३ ता. ३१ प्रा. B वीर तृतीया, बुध वक्री २४।५० C अष्टान्हिक व्रत प्रा. जैन D (राज.) ३ दिन का प्रा.

E मलमास प्रा., सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रत व पुण्य, होलिका दहन, मन्वादि १५, चैतन्य महाप्रभु जयंती, अष्टान्हिक व्रत पूर्ति जैन, होलाष्टक पूर्ति

फाल्गुन शु. ८ भौमे प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ७ मार्च

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	१	१	११	६	९	३	११	५	१०	९	८
२२	२४	१८	१	२४	७	११	११	११	१७	२४	२
१९	८	५०	४१	५४	२२	१२	३६	३६	५	२४	४०
४४	४७	२०	१९	४०	२६	३३	३७	३७	३९	८	१८
६०	७५६	३२	३९	०	४९	३	३	३	३	२	०
३	१५	१	२५	३२	१६	१	११	११	२६	३	४३
मा	मा	मा	व	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
पू.भा. १	मृग. १	रोहि. २	पू.भा. ४	विशा. २	उ.षा. ४	पुष्य ३	उ.भा. ३	हस्त. १	शत. ४	धनि. १	मूल १

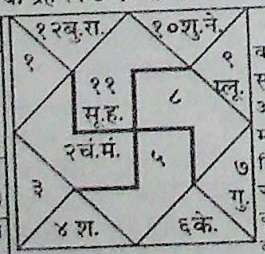

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

फाल्गुन सुदी दूज वार बुधवार, राशि में चन्द्र दर्शन होय। अन्नादि वस्तु मन्दी करे जन-जन हर्षित होय॥ सुभिक्ष योग चन्द्र दर्शन से बना सुखद भाव सब ओर। ग्रह गति राशि मीन चन्द्र बरसे अमृत चारों ओर॥ राहु बुध युक्ति भई राग द्वेष बढ़ जाय। घाघ कहें इस लोक में मानवता घट जाय॥ ग्रहयोग से अमानवीय व्यवहार बढ़ेगा। कृषि वर्ग भी चिंतित होगा। राजपक्ष में चिन्ता छायी रहेगी। युक्ति भई मंगल चन्द्र की ज्वार भाटा का योग। बलशाली शासन करे-कानूनी करे वियोग॥ कूर्म चक्रानुसार इस माह में ग्रहों के दुष्प्रभाव के कारण पंजाब, हिमाचल, कश्मीर, दिल्ली, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, पुर्तगाल, सहारा-रेगिस्तान, टर्की, स्वीटजरलैण्ड, यूनान, मरुस्थल, बगदाद आदि स्थानों में नयी क्रान्ति का उदय तथा खतरे के बादल छाये रहेंगे। प्रजा में और राज में वैमनस्यता बनी रहेगी। अन्नादि का भाव तेज, विद्रोह बढ़ेगा। बाढ़ादि से, अग्नि भय से यत्र-तत्र सर्वत्र शासन कर्त्ता चिंतित रहेंगे। **तेजी-मंदी विचार (व्यापार)**-चन्द्रोदय के कारण मन्दी का योग बनता है। ता. १४ मार्च को २१ घं. ५१ मि. पर सूर्यदेव मीन राशि में प्रवेश, मंगलवार को ४५ मुहूर्ती करने के कारण बाजार भाव में नवीनता का रुख बढ़ेगा। पीले रंग की वस्तुएं तेज होंगी। पीतल, सोना, केसर, चना, मिठाइयां तेज रहेंगी। ता. ४ मार्च को पूर्वाभाद्रपद में सूर्य रेशम, सोना, चांदी, चना, उड़द, चावल, सरसों, तिल, तेल, गुड़ और रुई में तेजी का घटक बनेगा। गुरु ५ मार्च को वक्री होने के कारण रस, सुगंधित सामग्री, कांच, सौन्दर्य सामग्री तेज करेगा। **आकाश लक्षण**-ग्रीष्म ऋतु का शुभारंभ जैसी स्थिति बनेगी। मौसम सामान्य रहेगा। हल्के बादल छाये रहेंगे। दक्षिणी पूर्वी प्रान्तों में कहीं-कहीं वर्षा का योग भी बनता है। अग्नि काण्ड का भय रहेगा। वायु तेज बहेगी। गर्मी-सर्दी के मिश्रण से रोगादि उपद्रव बढ़ेगा। कीट पलायन की घटना घटेगी। **शकुन विचार**-होली झार को करी विचार। शुभ अरु अशुभ तहां फल सार॥ पश्चिम वायु वहे अति मुन्दा। सययो निपजै जल वसुन्धरा॥ पूरब दिशी को वहे बंध नाश। सयया निपजै सवई घास॥ उपजै तान झार होरी की भाई। निर्णय करो समय कैसो होई॥

ता. १४ मार्च ❖ फाल्गुन शु. १५ भौमे प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

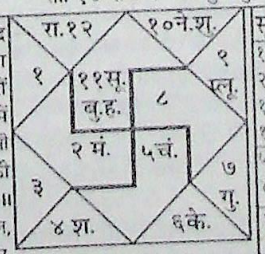

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	४	१	१०	६	९	३	११	५	१०	९	८
२९	१८	१८	२५	२४	१३	१०	११	११	१७	२४	२
१९	३८	३६	३६	४७	२२	५३	१४	१४	२९	३८	४४
१६	२९	२६	६	६	१३	२७	२२	२२	३२	१३	४०
५९	७१०	३२	५७	१	५४	२	३	३	३	१	०
४७	३९	४०	०९	४९	१	२१	११	११	२३	५७	३०
मा	मा	मा	व	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
पू.भा. ३	पू.फा. २	रोहि. ३	पू.भा. २	विशा. २	श्रवण २	पुष्य ३	उ.भा. ३	हस्त. १	शत. ४	धनि. १	मूल १

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चैत्र कृष्ण पक्ष-२४

श्री सं. २०६२ शाके १९२७

15 to 29 March-2006

ता. १५ से २९ मार्च सन् २००६ ई., राष्ट्रीय मिति २४ फाल्गुन से ८ चैत्र तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण-उत्तर गोले, वसन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

ग. मि.		तिथि	स्टैं.टा.	नक्षत्र	स्टैं.टा.	योग	स्टैं.टा.	करण	स्टैं.टा.	दिन मान	सूर्योदयास्त उदय	अस्त	दिनांक प्र. मु. अं.			चन्द्र संचार	दै. रवि स्पष्ट प्रातः				चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय	अस्त	
२५	बु	१	६०:००	-	उत्त	४५	१७	२८	४०	ग	५५	३३	२८	४६	ब्रा	२९	२९	१८	२०	२९	४८	६	३३	१७	२८	२	१०	15	कन्या	११	००'	१९	०३'	६	१८	५५	६	४०
२५	गु	९	२	२६	०५	३०	ह	५२	०२	२७	२०	वृ	५३	०७	२९	२२	की	२	२६	७	३०	२९	५२	६	३२	१८	२९	३	९५	16	कन्या	११	०१	१८	४९	४४	१९	४८	७	६
२६	शु	२	७	३४	०९	३६	चि	५७	५८	२९	४३	श	७	४४	९	३६	२९	५७	६	३०	१८	२९	४	९६	17	तु.९६:४४	११	०२	१८	३३	४१	२०	४३	७	३३
२७	श	३	१२	०९	११	२२	स्वा	६०	००	-	-	-	व्या	५८	०८	२९	५५	चि	१२	९	२१	२१	३०	०१	६	२९	१८	३०	५	१७	18	तुला	११	०३	१८	१४	४०	२१	३८	८	२
२८	र	४	१५	२७	१२	३९	स्वा	२	५६	०७	३८	ह	५७	१८	२९	२३	वा	१५	२७	१२	३९	३०	०५	६	२८	१८	३०	६	१८	19	वृ. २६:०७	११	०४	१७	५४	४०	२२	३७	८	३४
२९	च	५	१७	२६	१३	२६	वि	६	३०	००	२६	ब	५५	२१	२८	२६	मे	१७	२६	१३	२६	३०	१०	६	२७	१८	३१	७	१९	20	वृश्चि.	११	०५	१७	३३	३६	२३	३९	९	१२
३०	मं	६	१७	५७	१३	३०	अ	८	५५	१०	००	मि	५२	१३	२७	१९	च	१७	५७	१३	३०	३०	१४	६	२६	१८	३१	८	२०	21	वृश्चि.	११	०६	१७	०९	३५	२४	०	९	५६
३१	बु	७	२६	५३	१४	१०	ज्ये	९	०२	१०	१७	व्य	४७	४९	२५	३२	व	१६	५३	१३	१०	३०	१८	६	२५	१८	३२	९	२१	22	ध.१०:१७	११	०७	१६	४४	३३	२४	४२	१०	४८
२	गु	८	१४	१३	१५	०५	मूल	८	५३	०९	५७	व	४२	०८	२३	१५	की	१४	१३	१२	५	३०	२३	६	२३	१८	३३	१०	२३	23	धनु	११	०८	१६	१७	३१	२५	४३	११	४८
३	शु	९	५८	१०	२२	५६	पूर्व	६	३२	०८	५१	प	३५	१५	२०	२९	ग	९	५८	१०	२२	३०	२७	६	२२	१८	३३	११	२३	24	म.१४:३९	११	०९	१५	४८	३०	२६	३९	१२	५५
४	श	१०	४	१७	०८	४	मी	-	-	-	-	मि	२७	१७	१७	१६	वि	४	१७	८	४	३०	३१	६	२१	१८	३४	१२	२४	25	मकर	११	१०	१५	१८	२८	२७	३०	१४	५
क्षय	श	११	५७	२१	२१	१८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
५	र	१२	४९	३१	२६	०८	ध	५१	४६	२७	०३	मि	१८	२५	१३	४१	की	२३	३३	१५	४५	३०	३५	६	२०	१८	३४	१३	२५	26	कुं.१६:१७	११	११	१४	४६	२६	२८	१४	१५	१६
६	चं	१३	४१	०३	२९	४१	श	५५	१४	२४	५४	-	-	-	-	-	ग	१५	२२	१२	२८	३०	४०	६	१९	१८	३५	१४	२६	27	कुंभ	११	१२	१४	१२	२४	२८	५४	१६	२५
७	मं	१४	३२	११	१९	१४	पू.भा	२८	२१	४१	शु	४८	४९	२५	४९	वि	६	४८	८	५९	३०	४४	६	१८	१८	३५	१५	२७	28	मी.१६:२२	११	१३	१३	३६	२२	२९	३०	१७	३४
८	बु	३०	२३	०६	१५	४७	उभा	३१	५२	१९	०२	ब	३८	४९	२१	५२	ना	२३	४६	१५	४७	३०	४८	६	१७	१८	३६	१६	२८	29	मीन	११	१४	१२	५८	२०	६	५	१८	४२

पृ. भा. में बुध २१.९, देव पितृ कार्या ऽमावस्या, मन्वादि ३०, C

A व्यतिपात पुण्यं, शीतला सप्तमी, मेला शीतला माता कुराली (पंजाब) B मास शिवरात्री व्रत C चांद्र संवत्सर २०६२ पूर्ण. आखरी चाहर शम्बा मु.

चैत्र कृ. ८ गुरौ प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २३ मार्च

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	८	१	१०	६	९	३	११	५	१०	९	८
८	१०	२३	१९	२४	२१	१०	१०	१०	१८	२५	२
१६	४७	३३	३३	२४	४७	३५	४५	४५	५९	५५	४७
१७	१०	१७	५६	१२	२६	५८	४५	४५	३५	२	५७
५९	२१	३३	१२	३	५८	१	३	३	३	१	०
३१	३५	२२	२३	२०	३३	२६	११	११	१६	०६	१२
मा	मा	मा	व	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
७	४	९	४	७	४	७	९	७	९	७	९
भा.	भा.	भा.	भा.	भा.	भा.	भा.	भा.	भा.	भा.	भा.	भा.
क्रांति	क्रांति	क्रांति	क्रांति	क्रांति	क्रांति	क्रांति	क्रांति	क्रांति	क्रांति	क्रांति	क्रांति

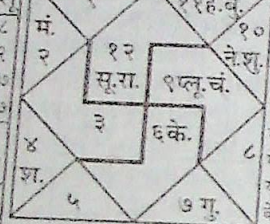

इस माह में पांच बुधवार तथा पांच गुरुवार की गणना बनी है। इनका प्रतिफल इस प्रकार है- "बुधस्य पंचवारश्च जायते च निरन्तरम्। प्रजाश्चव सुख सम्पन्नाः सुभिक्षं च प्रशाधते॥ यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमे देशे पीड़ा युद्धम् च जायते॥" अर्थात् इस माह में पांच-पांच इन वारों के कारण बुधवार से सुख समृद्धि, सुभिक्ष तथा सम्पदा वृद्धि का योग बनता है। लेकिन पांच गुरुवारों का फल पश्चिम प्रांतों में विग्रह पीड़ा और युद्ध का वातावरण बनता है। अरब देशीय, यूनान, यूरोप, अफ्रिका, ग्रीक, पाकिस्तान आदि देशों में विद्रोह बढ़ेगा। सत्ता पक्ष के नेता की हत्या या अपहरण जैसा योग बनेगा। जेहि पखवारे तिथि बढ़े वाही में घट जाए। सभी वस्तु मंदी बिके महंगाई हट जाए। अर्थात् विश्व बाजार में मंदापन का योग बनेगा। जिससे मुद्रा बाजार चमकेगा। "भौमवारी होलिका। तानै मारै त्रिलोका॥" होली भौमवार को आना विश्व में अशांति का दायक तथा कहीं पर अग्नि कांड के भय से शासन तंत्र भी चिन्तित होगा। भारत सरकार में भी नेता में विद्रोह बढ़ेगा। **तेजी-मंदी विचार (व्यापार)**- १७ मार्च की उत्तराभाद्रपद के सूर्य के कारण चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, तेल में तेजी का योग। ता.१८ मार्च को चैत्र में बुधोदय होने का योग से खाद्यान्न में तेजी आयेगी। माह माघ के स्टॉक कर्त्ता को लाभ मिलेगा। २१ को शतभिषा के बुध से चांदी, सोने में मंदी, अन्न के भाव कुछ तेजी कारक होंगे। २२ मार्च को मृगशिरा का मंगल- तिल, चांदी में तेजी कारक रहेगा। २४ मार्च को धनिष्ठा में शुक्र चावल, मूंग, मोठ, दही, दूध, घृत, चूना, पत्थर, ज्वार, मेवा, शक्कर में तेजी कारक तथा गेहूं में मंदी कारक योग करता है। सोना, चांदी, सांचा, जस्ता, धातु बाजार सम्भाव रहेगा। **आकाशीय लक्षण**- गर्मी तपन योग बना है इस माह के अंत में। कहीं तो तेज वायु बहे कहीं हो जाय बरसात में॥ मौसम सामान्य तथा साफ रहेगा। दक्षिण भारत में तूफान का योग भी है। कृषक वर्ग बिना बारे जो वर्षा हो जाय। खलिहानों में लूट पचे मत भागो रुक जाय॥ **शकुन विचार**-चैत्र सुदी जो पंचमी दक्षिण पूरब वाय। वर्षा भी होवे कुछ भादो तेज बिकाय॥ चैत्र कृष्णा आकाश में निर्मल रहे आकाश। समय आगमा अच्छा हो यह कृषक्क भी आश॥ चैत्र मास दशमी रहता जो कहु सोर जाय। चौमासे भर चलता पानी आंति अपाय॥ सूर्य पहला इस मास में पाल सीत वृद्धि गय। पाप कर्म जिन लेश में अरु अकाल अन्य।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

ता. २९ मार्च ❖ चैत्र कृ. ३० बुधे प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	२२	१	१०	६	९	३	११	५	१०	९	८
१४	८	२६	१९	२४	२३	१०	१०	१०	१८	२५	२
१२	१२	५४	०६	१	४४	२९	२६	२६	१८	५	४८
५८	०९	३३	५१	०	४८	१	४१	४१	५८	१८	३९
५९	१६	३३	२९	४	६०	०	३	३	३	१	०
२०	०६	४८	१	२६	४८	४७	११	११	१०	३८	०
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
७	४	९	४	७	४	७	९	७	९	७	९
भा.	भा.	भा.	भा.	भा.	भा.	भा.	भा.	भा.	भा.	भा.	भा.
क्रांति	क्रांति	क्रांति	क्रांति	क्रांति	क्रांति	क्रांति	क्रांति	क्रांति	क्रांति	क्रांति	क्रांति

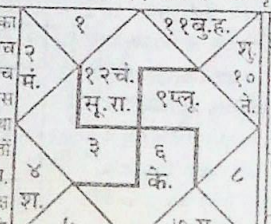

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

भौगोलिक परिचय

अक्षांशा-रेखांशा-रविक्रान्ति

पृथ्वी गोल है। इस पृथ्वी रूपी गोले को उत्तर-दक्षिण बराबर विभाजित करने वाली रेखा भूमध्य रेखा है, जिसका अक्षांश ० शून्य है। इसके उत्तर भाग को उत्तर गोल तथा दक्षिण भाग को दक्षिण गोल कहते हैं। पृथ्वी के उत्तर भाग में ९० और दक्षिण भाग में ९० अक्षांश हैं। उत्तर-दक्षिण अंशों को अक्षांश कहते हैं। जैसे दिल्ली २८ ३८ उत्तर अक्षांश पर स्थित है। अर्थात् दिल्ली भूमध्य रेखा से उत्तर गोल में २८ व २९ अक्षांश के बीच में स्थित है, प्रत्येक अक्षांश को ६० भागों में विभाजित किया गया है, उसमें दिल्ली २९वें अक्षांश के ३८वें भाग पर है। एक अक्षांश की दूरी लगभग ७५ मील होती है, इसलिए एक अक्षांश को भी आगे ६० छोटे भागों में विभाजित किया जाता है। पृथ्वी पर किसी स्थान की भौगोलिक स्थिति जानने के लिए उस स्थान के अक्षांश व रेखांश बताकर जानकारी दी जाती है।

किसी भी गोले को या अंडाकार पदार्थ को लम्बाई में अर्थात् उत्तरी ध्रुव व दक्षिणी ध्रुव के मध्य स्थान में काटे तो उसका मध्य भाग एक ही निश्चित स्थान पर आयेगा। इसलिए भूमध्य रेखा एक ही स्थान पर हो सकती है। भूमध्य रेखा ० शून्य अक्षांश पर है, इसके दक्षिण ० से ९० अंश तक दक्षिण अक्षांश और उत्तर में उत्तरी ध्रुव तक ० से ९० अंश तक उत्तर अक्षांश है। आपने बचपन में लट्टू घुमाया होगा या घूमते हुए देखा होगा। लट्टू अपनी कीली पर तो घूमता ही है, साथ ही वह एक गोलाकार अंडाकार परिधि में भी चक्कर लगाता है। ऐसे करते समय वह अपने केन्द्रस्थान की तरफ थोड़ा झुका हुआ रहता है। पृथ्वी भी सूर्य के चारों ओर इसी प्रकार घूमती है और उसके इस बदले झुकाव के कारण सूर्य उत्तरायण तथा दक्षिणायण होता रहता है। सूर्य के साथ पृथ्वी के इस झुकाव का जो कोण बनता है वह २३.५ अंश है। समझाने के लिए लट्टू का उदाहरण दिया है, परन्तु लट्टू तो पृथ्वी के धरातल पर घूमता है और पृथ्वी आकाश में अधर में घूमती है।

२१ मार्च को सायन सूर्य मेष राशि में अर्थात् पहली राशि में प्रवेश करता है। उस समय पृथ्वी का भूमध्य रेखा वाला भाग सूर्य के ठीक सामने होता है। रवि क्रान्ति शून्य होती है। दिन-रात उस समय पृथ्वी के मध्य भाग में बराबर होते हैं। उसके बाद सूर्य उत्तर गोल में ऊपर को चढ़ता जाता है और सूर्य की उत्तर क्रान्ति प्रतिदिन बढ़ती जाती है। २१ जून को सूर्य कर्क रेखा पर पहुंच जाता है। उस दिन सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करता है और उत्तर रवि क्रान्ति अपने चरम अंश २३ पर पहुंच जाती है। आकाशीय क्रान्ति पथ के साथ पृथ्वी का क्रान्ति पथ २३.५° का कोण बनाता है। उस समय दिन सबसे अधिक और रात न्यूनतम होती है। दुनिया का कोई नक्शा उठाकर देखो, भूमध्य रेखा ० अक्षांश भारत के दक्षिण में काफी दूर समुद्र पर होकर गुजरती है। कर्क रेखा (Tropic of Cancer) भारत में अहमदाबाद, भोपाल, रांची से कुछ उत्तर में होकर निकलती है। सूर्य जब कर्क रेखा पर होता है उस समय भारत के मध्य भाग उसके सीधे प्रभाव में होने से अधिकतम गर्मी की ऋतु का अनुभव करते हैं।

२१ जून के लगभग सूर्य उत्तरायण से दक्षिणायन होता है। २१ सितम्बर तक सूर्य भूमध्य रेखा पर ० अक्षांश पर पहुंच जाता है, तब उसकी उत्तर क्रान्ति भी कम होते-होते शून्य हो जाती है। इसके बाद भी सूर्य रहता तो दक्षिणायण ही है यानि दक्षिण की ओर ही जाने वाला, परन्तु २१ सितम्बर तक तो पृथ्वी के उत्तरी गोलार्ध में था. इसके बाद वह दक्षिण गोलार्ध में प्रवेश करता है। इस समय सूर्य भारत से काफी दूरी पर पहुंच जाता है। अतः भारत में शरद ऋतु आरम्भ हो जाती है। सूर्य निरन्तर दक्षिणायण रहते हुए दक्षिण गोल में अग्रसर होता रहता है और उसकी दक्षिण क्रान्ति २१ दिसम्बर तक चरम पर पहुंच जाती है। २१ सितम्बर को दिन-रात बराबर हो जाते हैं। २१-२२ दिसम्बर को दिन सबसे छोटा और रात सबसे बड़ी होती है। यहाँ से दिन बढ़ना शुरू होता है और इसी कारण २५ दिसम्बर को बड़े दिन का उत्सव मनाया जाता है। २१ दिसम्बर के लगभग सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है और अपनी दक्षिण यात्रा के चरम बिन्दु मकर रेखा पर पहुंच जाता है। मानचित्र में मकर रेखा (Tropic of Capricorn) हिन्द महासागर में भारत से बहुत दूर दक्षिण में है। यह रेखा दक्षिण अमरीका के मध्य भाग, दक्षिण अफ्रीका और आस्ट्रेलिया के मध्य से होकर गुजरती है। सूर्य जब मकर रेखा पर होता है उस समय इन देशों में ग्रीष्म ऋतु होती है। भारत से दूर होने के कारण यहां मौसम ठंडा होता है। २१ दिसम्बर के बाद सूर्य उत्तर की ओर आने लगता है, वैसे सूर्य तो आकाश में स्थिर है, परन्तु पृथ्वी की गति में क्रान्ति में परिवर्तन के कारण वह इस प्रकार स्थान परिवर्तन करता प्रतीत होता है और बोलचाल तथा लिखने की भाषा में यही कहा जाता है कि सूर्य चल रहा है।

२१ दिसम्बर के लगभग सूर्य उत्तरायण हो जाता है, परन्तु २१ मार्च तक वह दक्षिण गोलार्ध में ही रहता है। २१ मार्च को सूर्य भूमध्य रेखा पर आ जाता है, २१ मार्च से २१ सितम्बर तक सूर्य उत्तर गोल में रहता है और २१ सितम्बर से २१ मार्च तक दक्षिण गोल में। २१ दिसम्बर से २१ जून तक सूर्य उत्तरायण रहता है और २१ जून से २१ दिसम्बर तक दक्षिणायण। सूर्य के इस परिवर्तन को आप अपने यहाँ के पूरब-पश्चिम क्षितिज में सूर्योदय व सूर्यास्त को देखकर अथवा ऊपर के आकाश में सूर्य के भ्रमण पर ध्यान देकर या अपने घर में आने वाली धूप तथा सूर्य की किरणों के बदलते कोणों को देख कर भी बड़ी आसानी से ज्ञात कर सकते हैं।

सूर्य के उपरोक्त उत्तरायण-दक्षिणायण होने से प्रत्येक स्थान पर सूर्योदय तथा दिन मान आदि में प्रतिदिन जो अन्तर आता है उसे चरान्तर द्वारा निकाला जाता है। इसमें सूर्य की उत्तर-दक्षिण क्रान्ति और प्रत्येक स्थान के उत्तर-दक्षिण अक्षांश के अनुसार भिन्न-भिन्न परिवर्तन होते हैं। पंचांग में दी हुई चरान्तर सारिणी उत्तर अक्षांश ८ से ३६ तक के लिए हैं और भारत के किसी भी भाग के लिए प्रयोग में लाई जा सकती है। चरान्तर सारिणी पृ. ९८ तथा रवि क्रान्ति सारिणी इस पंचांग के पृ. ९७ पर दी हुई है।

उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक १८० अक्षांश हैं, जिसमें ९० उत्तर अक्षांश हैं और ९० दक्षिण अक्षांश हैं, इनकी गिनती भूमध्य रेखा से आरम्भ होती है। भूमध्य रेखा ० अक्षांश पर है, जिस प्रकार पृथ्वी को उत्तर-दक्षिण १८० अंशों में विभाजित किया गया है उसी प्रकार इसको पूरब-पश्चिम ३६० अंशों में विभाजित किया गया है, इनको पूर्व रेखांश और पश्चिम रेखांश कहते हैं। उत्तर-दक्षिण विभाजित करने पर तो भूमध्य रेखा जहां है वहीं हो सकती है, परन्तु पूर्व-पश्चिम विभाजन में किसी भी रेखा को ० माना जा सकता है। आजकल इसे लन्दन के पास ग्रीनविच पर जो रेखा है उसे ० रेखांश मानकर इसके पूर्व के रेखांशों को पूर्व रेखांश तथा पश्चिम के रेखाँशों को पश्चिम रेखांश माना जाता है। ग्रीनविच में ग्रहों का निरीक्षण करने के लिए अत्याधुनिक वेधशाला है, इस कारण इसे यह महत्व दिया गया है। कभी यह सम्मान भारत की उज्जैन नगरी को प्राप्त था। पृथ्वी की परिधि भूमध्य रेखा पर २९४०० मील है। अतएव भूमध्य रेखा पर एक रेखांश की दूरी लगभग ७० मील होती है, पृथ्वी की २९४०० मील की दूरी अर्थात् ३६० अंश २४ घंटे में सूर्य के सामने से गुजर जाते हैं। एक रेखांश पर यह अन्तर ४ मिनट का होता है। सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है. मान लो कलकत्ता नगर में सूर्योदय ५-३० पर हुआ, कलकत्ता ८८-२३ पूर्व रेखांश पर है तो ८९-२३ पर स्थित नगर में सूर्योदय ४ मिनट पहले होगा और इस प्रकार प्रति रेखांश ४ मिनट का अन्तर कलकत्ता के समय से आता जाएगा।

कुछ समय पहले तक प्रत्येक नगर अपना-अपना अलग समय निर्धारण अपनी धूपघड़ियों या अन्य प्रकार की रेत घड़ियों, जल घड़ियों की सहायता से मध्याह्न और सूर्योदय के आधार पर किया करते थे। सन् १९०६ से पूरे भारत के लिए एक ही स्टैण्डर्ड टाईम रखने की व्यवस्था अंग्रेजी राज में रेलवे तथा डाक विभाग के लिए की गई। यह समय ग्रीनविच समय से ५.३० घंटे आगे था और ८२.३० पूर्व रेखांश पर आधारित था। समस्त भारत में यह स्टैण्डर्ड समय १ सितम्बर १९१७ से लागू कर दिया गया। परन्तु बंगाल प्रान्त और आसपास के कुछ भागों में स्थानीय समय पूर्ववत् चलता रहा। इन प्रान्तों ने सितम्बर १९४१ में स्टैण्डर्ड टाईम को व्यवहार में लाना आरम्भ किया। द्वितीय विश्व युद्ध के चलते १ सितम्बर १९४२ से १५ अक्टूबर १९४५ तक पूरे भारत वर्ष में जिसमें आज के पाकिस्तान तथा बंगला देश भी शामिल थे, समय एक घंटा बढ़ा दिया

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गया था, अर्थात् ग्रीनविच समय से ६ घं. ३० मिनट आगे। अब समस्त भारत में एक ही स्टैण्डर्ड समय चलता है जो ग्रीनविच समय से ५-३० घंटा आगे है और ८२.३० पूर्व रेखांश पर आधारित है।

यदि प्रत्येक नगर अपना अलग-अलग स्थानीय समय रखे तो कामकाज में काफी गड़बड़ी पैदा हो सकती है। इसलिए अपने काम को सुचारु रूप से सम्पादन करने के लिए प्रत्येक देश अपने लिए एक स्टैण्डर्ड समय निर्धारित करता है और उसको सीमा में सर्वत्र वही समय काम में लाया जाता है। यह समय निर्धारण ग्रीनविच से उसकी दूरी पर निर्भर करता है। वह देश ग्रीनविच से जितने घण्टे की दूरी पर होता है उसका समय उतने ही अन्तर पर रखा जाता है। यह तो आपको बताया ही जा चुका है कि एक रेखांश पर ४ मिनट का अन्तर होता है। अतएव १५ रेखांश पर १ घण्टे का अन्तर हुआ, जो देश ग्रीनविच से लगभग १५ रेखांश की दूरी पर है, उनका स्टैण्डर्ड समय ग्रीनविच से एक घण्टे के अन्तर पर निर्धारित है। हालैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, बेलजियम, हंगरी, युगोस्लाविया, डेन्मार्क, स्विटजरलैण्ड, स्पेन, पोर्तगाल, नार्वे, स्वीडन आदि देशों का स्टैण्डर्ड समय ग्रीनविच से एक घण्टा आगे है। मिश्र, तुर्की, यूनान, रोमानिया, फिनलैण्ड, सीरिया, इजराइल, सूडान, बल्गेरिया आदि देशों का समय दो घण्टे आगे है। यह देश २ घंटे के समय क्षेत्र में हैं। ईराक, कुवैत, लेनिनग्राद, यमन, इथोपिया, मास्को, सऊदी अरब, ईरान आदि देश ३ घंटे के क्षेत्र में हैं। अफगानिस्तान ४ घंटे ३० मिनट तथा पाकिस्तान ५ घंटे के समय क्षेत्र में आता है। बंगला देश का समय ग्रीनविच से ६ घंटे तथा बर्मा ६ घंटे ३० मिनट आगे है। थाईलैण्ड, इन्डोनेशिया, वियतनाम, कम्बोडिया ७ घंटे के क्षेत्र में हैं। चीन, हांगकांग, फिलीपीन्स ८ घंटे तथा कोरिया व जापान ९ घंटे के अन्तर पर हैं। आस्ट्रेलिया १० घंटे और न्यूजीलैण्ड १२ घंटे के अन्तर पर हैं। जिस प्रकार ग्रीनविच से पूर्व के देशों का समय उनके रेखांशों के अनुसार ग्रीनविच समय से आगे रहता है उसी प्रकार ग्रीनविच से पश्चिम के देशों का समय उनके रेखांशों के अनुसार कम रहता है। समस्त इंग्लैण्ड तथा स्काटलैण्ड में ग्रीनविच समय माना जाता है। ग्रीनविच से न्यूयार्क, वाशिंगटन, टोरन्टो, ओटावा, बोस्टन आदि नगर ५ घंटे कम, शिकागो, मैक्सिको ७ घंटे कम के समय क्षेत्र में पड़ते हैं। लासऐंजिल्स का समय ग्रीनविच से ८ घंटे कम है। किसी भी एटलस में दुनिया का नक्शा देखकर आप उपरोक्त जानकारी की पुष्टि कर सकते हैं।

इस प्रकार देशों के स्टैण्डर्ड समय निर्धारण में किन-किन बातों का ध्यान रखा जाता है। यह आपको ज्ञात हुआ। भारत वर्ष की सीमायें लगभग ६८ पूर्व रेखांश से ९३ पूर्व रेखांश के मध्य में आती हैं। पश्चिम की ओर के पड़ोसी देश पाकिस्तान को ५ घंटे के समय क्षेत्र में रखा गया है और पूर्व की ओर के पड़ोसी बंगलादेश को ६ घंटे का समय क्षेत्र ग्रीनविच से निर्धारित हुआ है। अतएव बीच के देश भारत के लिए ५ घंटा ३० मिनट का समय क्षेत्र ही युक्ति संगत था। यह तो आपको बताया जा चुका है कि एक रेखांश पर ४ मिनट का अन्तर आता है तो ५ घंटे ३० मिनट का अन्तर ८२.३० रेखांश पर आता है (८२.३०×४=३३० मि.=५ घंटा ३० मिनट)। भारत में ८२.३० अक्षांश इलाहाबाद, अयोध्या के आसपास उत्तर से दक्षिण काकीनाडा, मछलीपट्टम आदि नगरों के समीप होकर स्थित है। सारे भारत में एक जैसा स्टैण्डर्ड समय रहता है, परन्तु ज्योतिष गणित के लिए जब किसी स्थान का स्थानीय सूर्योदय निकालना होता है या लग्नादि का गणित करना होता है तब हमें उस स्थान का स्थानीय समय निकालना पड़ता है। जिस स्थान का स्थानीय समय निकालना हो उसके रेखांश तथा अक्षांश अक्षांशादि सारिणी से ज्ञात कर लिये जाते हैं और तत्पश्चात् उनकी सहायता से स्थानीय समय निकाल लिया जाता है।

जैसे दिल्ली का पूर्व रेखांश ७७।१३ है। (कुछ आचार्य ७७।१२ कुछ ७७।१४ भी मानते हैं)। यह रेखांश ८२.३० से ५।१७ कम है। प्रति रेखांश ४ मिनट के हिसाब से ५-१७×४=२१.०८ अर्थात् २१ मिनट ८ सैकिण्ड। दिल्ली का स्थानीय समय स्टैण्डर्ड समय से २१ मिनट ८ सैकिण्ड कम होगा। यदि किसी स्थान का रेखांश ८२.३० से अधिक है तो वहां का स्थानीय समय अधिक होगा। जैसे पटना का पूर्व रेखांश ८५.१३ है, जो ८२.३० से २ ४३ अधिक है तो वहां का स्थानीय समय (२.४३×४=१०.५२)= १० मिनट ५२ सैकिण्ड स्टैण्डर्ड समय से अधिक होगा।

अक्षांशादि सारिणी इस पंचांग में पृष्ठ ९९ पर दी गई है। इसमें मुख्य-२ नगरों के अक्षांश-रेखांश स्टैण्डर्ड समय से उनका अन्तर तथा दिल्ली के समय से देशान्तर समय दिया हुआ है। यदि किसी छोटे नगर का नाम आपको इसमें न मिले तो उसके पास के बड़े नगर के विवरण की सहायता से आप इष्ट नगर या स्थान के अक्षांश-रेखांश आदि ज्ञात कर सकते हैं। मान लो आपको करौली के बारे में उपरोक्त विवरण प्राप्त करना है। अक्षांशादि सारिणी में यह नाम नहीं है। मानचित्र में यह धौलपुर तथा ग्वालियर के बीच में कुछ पश्चिम की ओर है अथवा आपको भिण्ड के बारे में जानकारी प्राप्त करनी है। यह स्थान मानचित्र में धौलपुर, ग्वालियर के मध्य कुछ पूर्व की ओर है। स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों के पास एटलस होती है। आप चाहें तो एक एटलस अपने पास रख सकते हैं। मानचित्र में उसका माप दिया रहता है कि एक इंच या एक सैंटीमीटर में कितने मील या किलोमीटर को लिया गया है। उसकी सहायता से आप उपरोक्त स्थानों की पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण दूरी नापकर उनके अक्षांश-रेखांश का पता कर सकते हैं। एक रेखांश की दूरी लगभग ७० मील या ११० किलोमीटर होती है। करौली तथा भिण्ड का अक्षांश-रेखांश जो उपरोक्त विधि से ज्ञात हुआ, वह इस प्रकार है—

स्थान	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टै. अन्तर	देशान्तर	स्थान	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टै. अन्तर	देशान्तर
धौलपुर	२६-४२	७७।५३	-१८-२८	+२-४०	करौली	२६-३८	७७।०५	-२१-४०	+०-३२
ग्वालियर	२६-१४	७८-१०	-१७-२०	+३-४८	भिण्ड	२६-४०	७८-५०	-१८-४०	+२-२८

लग्न परिचय

पृथ्वी २४ घण्टे में अपनी धुरी पर (अक्ष पर) एक बार पूरी घूम जाती है। यह समय ठीक-ठीक तो २३ घंटे ५६ मिनट १५ सैकिण्ड है। इस २४ घंटे के समय में बारहों राशियां इसके सामने से गुजर जाती हैं। राशियां आकाश में स्थित तारागणों के समूह से बनती हैं। पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती हुई सूर्य की एक प्रदक्षिणा ३६५ दिन ६ घंटे ९ सै. में पूरी करती है। पृथ्वी वासियों को सूर्य आकाश स्थित जिस राशि में दिखाई देता है, हम लोग यही कहते हैं कि सूर्य इस राशि में है और इतने अंश पर है। निरयन सूर्य प्रायः १३ अप्रैल को मेष राशि के ० शून्य अंश पर होता है। प्रतिदिन लगभग एक अंश आगे बढ़ता रहता है। सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में जाने को संक्रांति कहते हैं। सूर्योदय के समय सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है पूर्व क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंश पर उदित होती है। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न होती है।

२४ मई को दिल्ली में सूर्योदय भारतीय स्टैण्डर्ड समय के अनुसार ५-३० बजे होता है। पंचांग में दिए गए ग्रहस्पष्ट भी ५-३० प्रात: के ही हैं। सूर्य उस दिन सूर्योदय के समय वृष राशि के ९ अंश पर है तो सूर्योदय के समय दिल्ली में ५-३० प्रात: पर लग्न भी वृष के ९ अंश पर ही होगी। सूर्य आकाश में ऊपर चढ़ता रहता है और पूर्वी क्षितिज पर राशियां भी आगे चलती रहती हैं। स्थूल गणित से यदि प्रत्येक लग्न को दो घंटे का मानें तो ७-३० बजे मिथुन के ९ अंश, ९-३० बजे कर्क के ९ अंश, ११-३० बजे सिंह के ९ अंश, इस प्रकार लग्न क्षितिज पर आगे बढ़ती रहती है। इस प्रकार मध्याह्न के समय लग्न सिंह होती है और सूर्य दशम भाव में अर्थात् लग्न से दसवीं राशि में होता है। दूसरे शब्दों में मध्याह्न के समय लग्न सूर्य से चौथी राशि, सूर्यास्त के समय सातवीं राशि और मध्यरात्रि के समय दसवीं होती है। यानि मध्यरात्रि के समय की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न से चौथे भाव में आयेगा। मध्याह्न को दशम भाव में तथा सूर्यास्त के समय सप्तम भाव में आएगा। यदि जन्म समय ज्ञात नहीं है तो कुण्डली में सूर्य की स्थिति से जन्म का लगभग समय जाना जा सकता है।

२४ घंटे में १२ लग्नें होती हैं तो प्रत्येक लग्न २ घंटे की होनी चाहिए, पर ऐसा नहीं है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है, परन्तु उसका यह पथ पूरा गोलाकार नहीं है, अण्डाकार है। इसीलिए कुछ राशियां दो घंटे में निकल जाती हैं, कुछ को २ घंटे से ज्यादा और कुछ को दो घंटे से कम समय लगता है। अब आपको लग्न निकालने की एक सरल प्रक्रिया बताते हैं, जिसकी सहायता से भारत के किसी भी स्थान की लग्न निकाली जा सकती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारिणी देखने की विधि

इस पंचांग में दी गई यह लग्न सारिणी दिल्ली के अक्षांश-रेखांश पर है। इसका समय ऊपर दिए गए लग्न के समाप्तिकाल भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में घण्टा-मिनट के रूप में लिखा है। जिस लग्न के नीचे समाप्तिकाल है वह आगे के लग्न का प्रारम्भकाल है।

उदाहरण—१५ जुलाई को सारिणी के तुला लग्न के नीचे घण्टे १४ मिनट ५६ लिखे हैं। अत: तुला लग्न मध्याह्न २ बजकर ५६ मिनट पर समाप्त हुआ। इसमें लिखे घण्टा-मिनट आधी रात के बाद शून्य से आरम्भ होंगे जैसे रात के १२ बजकर २५ मिनट पर ०।२५ लिखे हुए हैं। इसी तरह दोपहर के पश्चात् १ बजे के स्थान पर १३।०० लिखे हुए हैं।

लग्न सारिणी परिवर्तन उदाहरण

यदि आर्यभट्ट पंचांग से अन्य स्थान का लग्न ज्ञात करना हो तो प्रथम दैनिक लग्न सारिणी से अभीष्ट तारीख के लग्न का समाप्ति काल ज्ञात करना। पश्चात् अक्षांशादि सारिणी से अभीष्ट नगर के अक्षांश व देशान्तर मिनट सेकंड लेना यदि देशान्तर मिनट सेकंड धन हो तो लग्न समाप्ति काल में से घटा दें और यदि देशांतर मिनट सेकंड ऋण हो तो लग्न समाप्ति काल में जोड़ दें। यह अभीष्ट नगर का मध्यम लग्न समाप्ति काल ज्ञात हुआ। पश्चात् दैनिक लग्न परिवर्तन की सहायक सारिणी से अभीष्ट लग्न के नीचे अभिष्ट अक्षांश की सीध में दिये गये मिनटों को चिन्हानुसार लग्न में जोड़ने या घटाने पर अभीष्ट लग्न का समाप्तिकाल ज्ञात होगा।

उदाहरण—१५ जुलाई को नासिक में वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल ज्ञात करना है। नासिक के अक्षांश २१।०० व देशांतर (—) १३ मिनट ४८ सेकण्ड दिया है। दैनिक लग्न सारिणी में १५ जुलाई को वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल १७।१४ दिया है।

	घं.मि.
सारिणी से प्राप्त १५ जुलाई को वृश्चिक समाप्त	१७।१४
देशान्तर ऋण लेने से धन किया	+ ०।१४
(१३ मिनट ४८ सेकंड आधे से अधिक होने से १४ लिये)	= १७।२८
मध्यम लग्न समाप्त	= १७।२८

दैनिक लग्न परिवर्तन की सहायक सारिणी से अक्षांश २१ की सीध में वृश्चिक लग्न के सामने —१७ मिनट दिये हैं।

मध्यम लग्न समाप्ति	= १७।२८
दै. लग्न सारिणी परिवर्तन की सहायक सारिणी से प्राप्त मान	—०।१७
	१७।११

अत: नासिक में वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल १७ बजकर ११ मिनट पर होगा।

नवांश का प्रारम्भ तथा अन्त जानने की विधि

ऊपर लिखे अनुसार जिस लग्न में नवांश समय लाना हो उस लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल साधन करें, पश्चात् समाप्तिकाल में से प्रारम्भ समय हीन करें। शेष घं.मि. रहेंगे, घण्टा को ६० से गुणाकर मिनट मिला देवें, यह कुल लग्न मान के मिनट होंगे। उन मिनटों को ९ का भाग देवें, लब्धि १ नवांश के मिनट प्राप्त होंगे शेष को ६० से गुणाकर फिर ९ का भाग देने पर सैकेण्ड आयेंगे, यह मिनट और सैकेण्ड एक नवांश का मान होने से जो नवांश लेना हो उससे गत नवांश तक की संख्या से एक नवांश के मान को गुणाकर जो मिनट हों वह मिनट लग्न प्रारम्भकाल में मिलाने से नवांश प्रारम्भ समय आएगा और इस नवांश प्रारम्भ समय में एक नवांश का मान मिला देने पर नवांश समप्तिकाल आयेगा। मेष, सिंह, धनु लग्न में नवांश का प्रारम्भ मेष से होगा। वृष, कन्या, मकर लग्न में नवांश का प्रारम्भ मकर से मिथुन, तुला, कुम्भ लग्न में नवांश का प्रारम्भ तुला से तथा कर्क, वृश्चिक, मीन लग्न में नवांश का प्रारम्भ कर्क से होगा। इसी प्रकार सर्वत्र जानें। विवाह, यज्ञोपवीत, गृह प्रवेशादि में लग्न तथा नवांश इस प्रकार से सूक्ष्म साधन करने से मुहूर्त योग्य समय होता है और फल भी जो मिलना चाहिए वह मिलता है। ज्योतिर्विदों को चाहिए कि नवांश सूक्ष्म से सूक्ष्म साधन करके विवाह आदि का समय निश्चित करें।

श्री आर्यभट्ट पंचांग की दैनिक लग्न सारिणी परिवर्तन की सहायक सारिणी

लग्न अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
८	+३२	+४१	+३६	+२३	+४	-१५	-३२	-४१	-३६	-२३	-४	+१५
९	+३०	+३९	+३५	+२२	+४	-१५	-३०	-३९	-३५	-२२	-४	+१५
१०	+२९	+३७	+३३	+२१	+४	-१४	-२९	-३७	-३३	-२१	-४	+१४
११	+२८	+३५	+३१	+२०	+४	-१४	-२८	-३५	-३१	-२०	-४	+१४
१२	+२६	+३३	+३०	+१९	+४	-१३	-२६	-३३	-३०	-१९	-४	+१३
१३	+२५	+३२	+२८	+१८	+३	-१२	-२५	-३२	-२८	-१८	-३	+१२
१४	+२३	+३०	+२७	+१७	+३	-१२	-२३	-३०	-२७	-१७	-३	+१२
१५	+२२	+२८	+२५	+१६	+३	-११	-२२	-२८	-२५	-१६	-३	+११
१६	+२१	+२४	+२३	+१५	+३	-१०	-२१	-२६	-२३	-१५	-३	+१०
१७	+१९	+२४	+२१	+१४	+३	-९	-१९	-२४	-२१	-१४	-३	+९
१८	+१८	+२२	+२०	+१३	+२	-९	-१८	-२३	-२०	-१३	-२	+९
१९	+१६	+२०	+१८	+१२	+२	-८	-१६	-२१	-१८	-१२	-२	+८
२०	+१५	+१८	+१६	+११	+२	-७	-१५	-१९	-१६	-११	-२	+७
२१	+१३	+१६	+१४	+१०	+२	-६	-१३	-१७	-१४	-१०	-२	+६
२२	+१२	+१४	+१२	+८	+२	-५	-१२	-१५	-१२	-९	-२	+५
२३	+१०	+१२	+१०	+७	+१	-५	-१०	-१२	-१०	-७	-१	+५
२४	+८	+१०	+८	+६	+१	-४	-८	-१०	-८	-६	-१	+४
२५	+७	+८	+७	+५	+१	-३	-६	-८	-६	-५	-१	+३
२६	+५	+५	+५	+३	+१	-२	-५	-६	-५	-४	-१	+२
२७	+३	+३	+३	+२	+१	-१	-३	-४	-३	-३	-१	+१
२८	+१	+१	+१	+१	०	-१	-१	-१	-१	-१	०	+१
२९	०	-१	-१	-१	०	०	०	+१	+१	०	०	०
३०	-२	-३	-३	-२	०	+१	+२	+३	+३	+१	०	-१
३१	-४	-६	-५	-३	०	+२	+४	+६	+५	+२	०	-२
३२	-६	-८	-८	-५	०	+३	+६	+८	+८	+४	०	-३
३३	-८	-११	-१०	-६	-१	+३	+८	+११	+१०	+५	+१	-४
३४	-१०	-१३	-१३	-८	-१	+४	+१०	+१३	+१३	+७	+१	-५
३५	-१२	-१६	-१५	-९	-१	+५	+१२	+१६	+१५	+८	+१	-६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्च दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर
१	७ २८	८ ५४	१० ३०	१२ २४	१४ ३८	१६ ५८	१९ १५	२१ ३२	२३ ५२	२ ०९	४ १३	५ ५५
२	७ २४	८ ५०	१० २६	१२ २०	१४ ३४	१६ ५४	१९ ११	२१ २८	२३ ४८	२ ०५	४ ०९	५ ५१
३	७ २०	८ ४६	१० २२	१२ १६	१४ ३०	१६ ५०	१९ ०७	२१ २४	२३ ४४	२ ०१	४ ०५	५ ४७
४	७ १६	८ ४२	१० १८	१२ १२	१४ २६	१६ ४६	१९ ०३	२१ २०	२३ ४०	१ ५७	४ ०१	५ ४३
५	७ १२	८ ३८	१० १४	१२ ०८	१४ २२	१६ ४२	१८ ५९	२१ १६	२३ ३६	१ ५३	३ ५७	५ ३९
६	७ ०८	८ ३४	१० १०	१२ ०४	१४ १८	१६ ३८	१८ ५५	२१ १२	२३ ३२	१ ४९	३ ५३	५ ३५
७	७ ०४	८ ३०	१० ०६	१२ ००	१४ १४	१६ ३४	१८ ५१	२१ ०८	२३ २८	१ ४५	३ ४९	५ ३१
८	७ ००	८ २६	१० ०२	११ ५६	१४ १०	१६ ३०	१८ ४७	२१ ०४	२३ २४	१ ४१	३ ४५	५ २७
९	६ ५६	८ २२	९ ५८	११ ५२	१४ ०६	१६ २६	१८ ४३	२१ ००	२३ २०	१ ३७	३ ४१	५ २३
१०	६ ५२	८ १८	९ ५४	११ ४८	१४ ०२	१६ २२	१८ ३९	२० ५६	२३ १६	१ ३३	३ ३७	५ १९
११	६ ४८	८ १४	९ ५०	११ ४४	१३ ५८	१६ १८	१८ ३५	२० ५२	२३ १२	१ २९	३ ३३	५ १५
१२	६ ४४	८ १०	९ ४६	११ ४०	१३ ५४	१६ १४	१८ ३१	२० ४८	२३ ०८	१ २५	३ २९	५ ११
१३	६ ४०	८ ०६	९ ४२	११ ३६	१३ ५०	१६ १०	१८ २७	२० ४४	२३ ०४	१ २१	३ २५	५ ०७
१४	६ ३६	८ ०२	९ ३८	११ ३२	१३ ४६	१६ ०६	१८ २३	२० ४०	२३ ००	१ १७	३ २१	५ ०३
१५	६ ३२	७ ५८	९ ३४	११ २८	१३ ४२	१६ ०२	१८ १९	२० ३६	२२ ५६	१ १३	३ १७	४ ५९
१६	६ २८	७ ५४	९ ३०	११ २४	१३ ३८	१५ ५८	१८ १५	२० ३२	२२ ५२	१ ०९	३ १३	४ ५५
१७	६ २४	७ ५०	९ २६	११ २०	१३ ३४	१५ ५४	१८ ११	२० २८	२२ ४८	१ ०५	३ ०९	४ ५१
१८	६ २०	७ ४६	९ २२	११ १६	१३ ३०	१५ ५०	१८ ०७	२० २४	२२ ४४	१ ०१	३ ०५	४ ४७
१९	६ १६	७ ४२	९ १८	११ १२	१३ २६	१५ ४६	१८ ०३	२० २०	२२ ४०	० ५७	३ ०१	४ ४३
२०	६ १२	७ ३८	९ १४	११ ०८	१३ २२	१५ ४२	१७ ५९	२० १६	२२ ३६	० ५३	२ ५७	४ ३९
२१	६ ०८	७ ३४	९ १०	११ ०४	१३ १८	१५ ३८	१७ ५५	२० १२	२२ ३२	० ४९	२ ५३	४ ३५
२२	६ ०४	७ ३०	९ ०६	११ ००	१३ १४	१५ ३४	१७ ५१	२० ०८	२२ २८	० ४५	२ ४९	४ ३१
२३	६ ००	७ २६	९ ०२	१० ५६	१३ १०	१५ ३०	१७ ४७	२० ०४	२२ २४	० ४१	२ ४५	४ २७
२४	५ ५६	७ २२	८ ५८	१० ५२	१३ ०६	१५ २६	१७ ४३	२० ००	२२ २०	० ३७	२ ४१	४ २३
२५	५ ५२	७ १८	८ ५४	१० ४८	१३ ०२	१५ २२	१७ ३९	१९ ५६	२२ १६	० ३३	२ ३७	४ १९
२६	५ ४८	७ १४	८ ५०	१० ४४	१२ ५८	१५ १८	१७ ३५	१९ ५२	२२ १२	० २९	२ ३३	४ १५
२७	५ ४४	७ १०	८ ४६	१० ४०	१२ ५४	१५ १४	१७ ३१	१९ ४८	२२ ०८	० २५	२ २९	४ ११
२८	५ ४०	७ ०६	८ ४२	१० ३६	१२ ५०	१५ १०	१७ २७	१९ ४४	२२ ०४	० २१	२ २५	४ ०७
२९	५ ३६	७ ०२	८ ३८	१० ३२	१२ ४६	१५ ०६	१७ २३	१९ ४०	२२ ००	० १७	२ २१	४ ०३
३०	५ ३२	६ ५८	८ ३४	१० २८	१२ ४२	१५ ०२	१७ १९	१९ ३६	२१ ५६	० १३	२ १७	३ ५९
३१	५ २८	६ ५४	८ ३०	१० २४	१२ ३८	१४ ५८	१७ १५	१९ ३२	२१ ५२	० ०९	२ १३	३ ५५

अप्रैल दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ
१	६ ५०	८ २६	१० २२	१२ ३५	१४ ५६	१७ १३	१९ २९	२१ ४९	० ०७	२ १०	३ ५३	५ २१
२	६ ४६	८ २२	१० १८	१२ ३१	१४ ५२	१७ ०९	१९ २५	२१ ४५	० ०३	२ ०६	३ ४९	५ १७
३	६ ४२	८ १८	१० १४	१२ २७	१४ ४८	१७ ०५	१९ २१	२१ ४१	२३ ५९	२ ०२	३ ४५	५ १३
४	६ ३८	८ १४	१० १०	१२ २३	१४ ४४	१७ ०१	१९ १७	२१ ३७	२३ ५५	१ ५८	३ ४१	५ ०९
५	६ ३४	८ १०	१० ०६	१२ १९	१४ ४०	१६ ५७	१९ १३	२१ ३३	२३ ५१	१ ५४	३ ३७	५ ०५
६	६ ३०	८ ०६	१० ०२	१२ १५	१४ ३६	१६ ५३	१९ ०९	२१ २९	२३ ४७	१ ५०	३ ३३	५ ०१
७	६ २६	८ ०२	९ ५८	१२ ११	१४ ३२	१६ ४९	१९ ०५	२१ २५	२३ ४३	१ ४६	३ २९	४ ५७
८	६ २२	७ ५८	९ ५४	१२ ०७	१४ २८	१६ ४५	१९ ०१	२१ २१	२३ ३९	१ ४२	३ २५	४ ५३
९	६ १८	७ ५४	९ ५०	१२ ०३	१४ २४	१६ ४१	१८ ५७	२१ १७	२३ ३५	१ ३८	३ २१	४ ४९
१०	६ १४	७ ५०	९ ४६	११ ५९	१४ १९	१६ ३७	१८ ५३	२१ १३	२३ ३१	१ ३४	३ १७	४ ४५
११	६ १०	७ ४६	९ ४२	११ ५५	१४ १५	१६ ३३	१८ ४९	२१ ०९	२३ २७	१ ३०	३ १३	४ ४१
१२	६ ०६	७ ४२	९ ३८	११ ५१	१४ ११	१६ २९	१८ ४५	२१ ०५	२३ २३	१ २६	३ ०९	४ ३७
१३	६ ०२	७ ३८	९ ३४	११ ४७	१४ ०७	१६ २५	१८ ४१	२१ ०१	२३ १९	१ २२	३ ०५	४ ३३
१४	५ ५८	७ ३४	९ ३०	११ ४३	१४ ०३	१६ २१	१८ ३७	२० ५७	२३ १५	१ १८	३ ०१	४ २९
१५	५ ५४	७ ३०	९ २६	११ ३९	१३ ५९	१६ १७	१८ ३३	२० ५३	२३ ११	१ १४	२ ५७	४ २५
१६	५ ५१	७ २७	९ २३	११ ३६	१३ ५६	१६ १४	१८ ३०	२० ५०	२३ ०८	१ ११	२ ५४	४ २२
१७	५ ४७	७ २३	९ १९	११ ३२	१३ ५२	१६ १०	१८ २६	२० ४६	२३ ०४	१ ०७	२ ५०	४ १८
१८	५ ४३	७ १९	९ १५	११ २८	१३ ४८	१६ ०६	१८ २२	२० ४२	२३ ००	१ ०३	२ ४६	४ १४
१९	५ ३९	७ १५	९ ११	११ २४	१३ ४४	१६ ०२	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	० ५९	२ ४२	४ १०
२०	५ ३५	७ ११	९ ०७	११ २०	१३ ४०	१५ ५८	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	० ५५	२ ३८	४ ०६
२१	५ ३१	७ ०७	९ ०३	११ १६	१३ ३६	१५ ५४	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	० ५१	२ ३४	४ ०२
२२	५ २७	७ ०३	८ ५९	११ १२	१३ ३२	१५ ५०	१८ ०६	२० २६	२२ ४४	० ४७	२ ३०	३ ५८
२३	५ २३	६ ५९	८ ५५	११ ०८	१३ २८	१५ ४६	१८ ०२	२० २२	२२ ४०	० ४३	२ २६	३ ५४
२४	५ १९	६ ५५	८ ५१	११ ०४	१३ २४	१५ ४२	१७ ५८	२० १८	२२ ३६	० ३९	२ २२	३ ५०
२५	५ १५	६ ५१	८ ४७	११ ०	१३ २०	१५ ३८	१७ ५४	२० १४	२२ ३२	० ३५	२ १८	३ ४६
२६	५ ११	६ ४७	८ ४३	१० ५६	१३ १६	१५ ३४	१७ ५०	२० १०	२२ २८	० ३१	२ १४	३ ४२
२७	५ ०७	६ ४३	८ ३९	१० ५२	१३ १२	१५ ३०	१७ ४६	२० ०६	२२ २४	० २७	२ १०	३ ३८
२८	५ ०३	६ ३९	८ ३५	१० ४८	१३ ०८	१५ २६	१७ ४२	२० ०२	२२ २०	० २३	२ ०६	३ ३४
२९	४ ५९	६ ३५	८ ३१	१० ४४	१३ ०४	१५ २२	१७ ३८	१९ ५८	२२ १६	० १९	२ ०२	३ ३०
३०	४ ५५	६ ३१	८ २७	१० ४०	१३ ००	१५ १८	१७ ३४	१९ ५४	२२ १२	० १५	१ ५८	३ २६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मई दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.रटैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
१	६ २६	८ २२	१० ३६	१२ ५५	१५ १३	१७ ३०	१९ ४९	२२ ०७	० ११	१ ५३	३ २१	४ ४६
२	६ २२	८ १८	१० ३२	१२ ५१	१५ ०९	१७ २६	१९ ४५	२२ ०३	० ०७	१ ४९	३ १७	४ ४२
३	६ १८	८ १४	१० २८	१२ ४७	१५ ०५	१७ २२	१९ ४१	२१ ५९	० ०३	१ ४५	३ १३	४ ३८
४	६ १४	८ १०	१० २४	१२ ४३	१५ ०१	१७ १८	१९ ३७	२१ ५५	२३ ५९	१ ४१	३ ०९	४ ३४
५	६ ११	८ ०७	१० २१	१२ ४०	१४ ५८	१७ १५	१९ ३४	२१ ५२	२३ ५६	१ ३८	३ ०६	४ ३१
६	६ ०७	८ ०३	१० १७	१२ ३६	१४ ५४	१७ ११	१९ ३०	२१ ४८	२३ ५२	१ ३४	३ ०२	४ २७
७	६ ०३	७ ५९	१० १३	१२ ३२	१४ ५०	१७ ०७	१९ २६	२१ ४४	२३ ४८	१ ३०	२ ५८	४ २३
८	५ ५९	७ ५५	१० ०९	१२ २८	१४ ४६	१७ ०३	१९ २२	२१ ४०	२३ ४४	१ २६	२ ५४	४ १९
९	५ ५५	७ ५१	१० ०५	१२ २४	१४ ४२	१६ ५९	१९ १८	२१ ३६	२३ ४०	१ २२	२ ५०	४ १५
१०	५ ५१	७ ४७	१० ०१	१२ २०	१४ ३८	१६ ५५	१९ १४	२१ ३२	२३ ३६	१ १८	२ ४६	४ ११
११	५ ४७	७ ४३	९ ५७	१२ १६	१४ ३४	१६ ५१	१९ १०	२१ २८	२३ ३२	१ १४	२ ४२	४ ०७
१२	५ ४३	७ ३९	९ ५३	१२ १२	१४ ३०	१६ ४७	१९ ०६	२१ २४	२३ २८	१ १०	२ ३८	४ ०३
१३	५ ३९	७ ३५	९ ४९	१२ ०८	१४ २६	१६ ४३	१९ ०२	२१ २०	२३ २४	१ ०६	२ ३४	३ ५९
१४	५ ३५	७ ३१	९ ४५	१२ ०४	१४ २२	१६ ३९	१८ ५८	२१ १६	२३ २०	१ ०२	२ ३०	३ ५५
१५	५ ३१	७ २७	९ ४१	१२ ००	१४ १८	१६ ३५	१८ ५४	२१ १२	२३ १६	० ५८	२ २६	३ ५१
१६	५ २८	७ २४	९ ३८	११ ५७	१४ १५	१६ ३२	१८ ५१	२१ ०९	२३ १३	० ५५	२ २३	३ ४८
१७	५ २४	७ २०	९ ३४	११ ५३	१४ ११	१६ २८	१८ ४७	२१ ०५	२३ ०९	० ५१	२ १९	३ ४४
१८	५ २०	७ १६	९ ३०	११ ४९	१४ ०७	१६ २४	१८ ४३	२१ ०१	२३ ०५	० ४७	२ १५	३ ४०
१९	५ १६	७ १२	९ २६	११ ४५	१४ ०३	१६ २०	१८ ३९	२० ५७	२३ ०१	० ४३	२ ११	३ ३६
२०	५ १२	७ ०८	९ २२	११ ४१	१३ ५९	१६ १६	१८ ३५	२० ५३	२२ ५७	० ३९	२ ०७	३ ३२
२१	५ ०८	७ ०४	९ १८	११ ३७	१३ ५५	१६ १२	१८ ३१	२० ४९	२२ ५३	० ३५	२ ०३	३ २८
२२	५ ०४	७ ००	९ १४	११ ३३	१३ ५१	१६ ०८	१८ २७	२० ४५	२२ ४९	० ३१	१ ५९	३ २४
२३	५ ००	६ ५६	९ १०	११ २९	१३ ४७	१६ ०४	१८ २३	२० ४१	२२ ४५	० २७	१ ५५	३ २०
२४	४ ५६	६ ५२	९ ०६	११ २५	१३ ४३	१६ ००	१८ १९	२० ३७	२२ ४१	० २३	१ ५१	३ १६
२५	४ ५२	६ ४८	९ ०२	११ २१	१३ ३९	१५ ५६	१८ १५	२० ३३	२२ ३७	० १९	१ ४७	३ १२
२६	४ ४८	६ ४४	८ ५८	११ १७	१३ ३५	१५ ५२	१८ ११	२० २९	२२ ३३	० १५	१ ४३	३ ०८
२७	४ ४४	६ ४०	८ ५४	११ १३	१३ ३१	१५ ४८	१८ ०७	२० २५	२२ २९	० ११	१ ३९	३ ०४
२८	४ ४१	६ ३७	८ ५१	११ १०	१३ २८	१५ ४५	१८ ०४	२० २२	२२ २६	० ०८	१ ३६	३ ०१
२९	४ ३७	६ ३३	८ ४७	११ ०६	१३ २४	१५ ४१	१८ ००	२० १८	२२ २२	० ०४	१ ३२	२ ५७
३०	४ ३३	६ २९	८ ४३	११ ०२	१३ २०	१५ ३७	१७ ५६	२० १४	२२ १८	२४ ०	१ २८	२ ५३
३१	४ २९	६ २५	८ ३९	१० ५८	१३ १६	१५ ३३	१७ ५२	२० १०	२२ १४	२३ ५६	१ २४	२ ४९

जून दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.रटैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	६ १९	८ ३३	१० ५३	१३ १०	१५ २७	१७ ४७	२० ०४	२२ ०८	२३ ५१	१ १८	२ ४४	४ २०
२	६ १५	८ २९	१० ४९	१३ ०६	१५ २३	१७ ४३	२० ००	२२ ०४	२३ ४७	१ १४	२ ४०	४ १६
३	६ ११	८ २५	१० ४५	१३ ०२	१५ १९	१७ ३९	१९ ५६	२२ ००	२३ ४३	१ १०	२ ३६	४ १२
४	६ ०७	८ २१	१० ४१	१२ ५८	१५ १५	१७ ३५	१९ ५२	२१ ५६	२३ ३९	१ ०६	२ ३२	४ ०८
५	६ ०४	८ १८	१० ३८	१२ ५५	१५ १२	१७ ३२	१९ ४९	२१ ५३	२३ ३६	१ ०३	२ २९	४ ०५
६	६ ००	८ १४	१० ३४	१२ ५१	१५ ०८	१७ २८	१९ ४५	२१ ४९	२३ ३२	० ५९	२ २५	४ ०१
७	५ ५६	८ १०	१० ३०	१२ ४७	१५ ०४	१७ २४	१९ ४१	२१ ४५	२३ २८	० ५५	२ २१	३ ५७
८	५ ५२	८ ०६	१० २६	१२ ४३	१५ ०	१७ २०	१९ ३७	२१ ४१	२३ २४	० ५१	२ १७	३ ५३
९	५ ४८	८ ०२	१० २२	१२ ३९	१४ ५६	१७ १६	१९ ३३	२१ ३७	२३ २०	० ४७	२ १३	३ ४९
१०	५ ४४	७ ५८	१० १८	१२ ३५	१४ ५२	१७ १२	१९ २९	२१ ३३	२३ १६	० ४३	२ ०९	३ ४५
११	५ ४१	७ ५५	१० १५	१२ ३२	१४ ४९	१७ ०९	१९ २६	२१ ३०	२३ १३	० ४०	२ ०६	३ ४२
१२	५ ३७	७ ५१	१० ११	१२ २८	१४ ४५	१७ ०५	१९ २२	२१ २६	२३ ०९	० ३६	२ ०२	३ ३८
१३	५ ३३	७ ४७	१० ०७	१२ २४	१४ ४१	१७ ०१	१९ १८	२१ २२	२३ ०५	० ३२	१ ५८	३ ३४
१४	५ २९	७ ४३	१० ०३	१२ २०	१४ ३७	१६ ५७	१९ १४	२१ १८	२३ ०१	० २८	१ ५४	३ ३०
१५	५ २५	७ ३९	९ ५९	१२ १६	१४ ३३	१६ ५३	१९ १०	२१ १४	२२ ५७	० २४	१ ५०	३ २६
१६	५ २१	७ ३५	९ ५५	१२ १२	१४ २९	१६ ४९	१९ ०६	२१ १०	२२ ५३	० २०	१ ४६	३ २२
१७	५ १८	७ ३२	९ ५२	१२ ०९	१४ २६	१६ ४६	१९ ०३	२१ ०७	२२ ५०	० १७	१ ४३	३ १९
१८	५ १४	७ २८	९ ४८	१२ ०५	१४ २२	१६ ४२	१८ ५९	२१ ०३	२२ ४६	० १३	१ ३९	३ १५
१९	५ १०	७ २४	९ ४४	१२ ०१	१४ १८	१६ ३८	१८ ५५	२० ५९	२२ ४२	० ०९	१ ३५	३ ११
२०	५ ०६	७ २०	९ ४०	११ ५७	१४ १४	१६ ३४	१८ ५१	२० ५५	२२ ३८	० ०५	१ ३१	३ ०७
२१	५ ०२	७ १६	९ ३६	११ ५३	१४ १०	१६ ३०	१८ ४७	२० ५१	२२ ३४	० ०१	१ २७	३ ०३
२२	४ ५८	७ १२	९ ३२	११ ४९	१४ ०६	१६ २६	१८ ४३	२० ४७	२२ ३०	२३ ५७	१ २३	२ ५९
२३	४ ५४	७ ०९	९ २९	११ ४६	१४ ०३	१६ २३	१८ ४०	२० ४४	२२ २७	२३ ५४	१ २०	२ ५६
२४	४ ५२	७ ०५	९ २५	११ ४२	१३ ५९	१६ १९	१८ ३६	२० ४०	२२ २३	२३ ५०	१ १६	२ ५२
२५	४ ४७	७ ०१	९ २१	११ ३८	१३ ५५	१६ १५	१८ ३२	२० ३६	२२ १९	२३ ४६	१ १२	२ ४८
२६	४ ४३	६ ५७	९ १७	११ ३४	१३ ५१	१६ ११	१८ २८	२० ३२	२२ १५	२३ ४२	१ ०८	२ ४४
२७	४ ३९	६ ५३	९ १३	११ ३०	१३ ४७	१६ ०७	१८ २४	२० २८	२२ ११	२३ ३८	१ ०४	२ ४०
२८	४ ३५	६ ४९	९ ०९	११ २६	१३ ४३	१६ ०३	१८ २०	२० २४	२२ ०७	२३ ३४	१ ००	२ ३६
२९	४ ३१	६ ४५	९ ०५	११ २२	१३ ३९	१५ ५९	१८ १६	२० २०	२२ ०३	२३ ३०	०० ५६	२ ३२
३०	४ २७	६ ४१	९ ०१	११ १८	१३ ३५	१५ ५५	१८ १२	२० १६	२१ ५९	२३ २६	०० ५२	२ २८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जुलाई दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
१	६ ३७	८ ५७	११ १५	१३ ३१	१५ ५१	१८ ०९	२० १२	२१ ५५	२३ २३	० ४८	२ २४	४ २०
२	६ ३३	८ ५३	११ ११	१३ २७	१५ ४७	१८ ०५	२० ०८	२१ ५१	२३ १९	० ४४	२ २०	४ १६
३	६ २९	८ ४९	११ ०७	१३ २३	१५ ४३	१८ ०१	२० ०४	२१ ४७	२३ १५	० ४०	२ १६	४ १२
४	६ २५	८ ४५	११ ०३	१३ १९	१५ ३९	१७ ५७	२० ००	२१ ४३	२३ ११	० ३६	२ १२	४ ०८
५	६ २१	८ ४१	१० ५९	१३ १५	१५ ३५	१७ ५३	१९ ५६	२१ ३९	२३ ०७	० ३२	२ ०८	४ ०४
६	६ १७	८ ३७	१० ५५	१३ ११	१५ ३१	१७ ४९	१९ ५२	२१ ३५	२३ ०३	० २८	२ ०४	४ ००
७	६ १३	८ ३३	१० ५१	१३ ०७	१५ २७	१७ ४५	१९ ४८	२१ ३१	२२ ५९	० २४	२ ००	३ ५६
८	६ ०९	८ २९	१० ४७	१३ ०३	१५ २३	१७ ४१	१९ ४४	२१ २७	२२ ५५	० २०	१ ५६	३ ५२
९	६ ०५	८ २५	१० ४३	१२ ५९	१५ १९	१७ ३७	१९ ४०	२१ २३	२२ ५१	० १६	१ ५२	३ ४८
१०	६ ०१	८ २१	१० ३९	१२ ५५	१५ १५	१७ ३३	१९ ३६	२१ १९	२२ ४७	० १२	१ ४८	३ ४४
११	५ ५७	८ १७	१० ३५	१२ ५१	१५ ११	१७ २९	१९ ३२	२१ १५	२२ ४३	० ०८	१ ४४	३ ४०
१२	५ ५३	८ १३	१० ३१	१२ ४७	१५ ०७	१७ २५	१९ २८	२१ ११	२२ ३९	० ०४	१ ४०	३ ३६
१३	५ ४९	८ ०९	१० २७	१२ ४३	१५ ०३	१७ २१	१९ २४	२१ ०७	२२ ३५	२४ ००	१ ३६	३ ३२
१४	५ ४५	८ ०५	१० २३	१२ ३९	१४ ५९	१७ १७	१९ २०	२१ ०३	२२ ३१	२३ ५६	१ ३२	३ २८
१५	४ ४२	८ ०२	१० २०	१२ ३६	१४ ५६	१७ १४	१९ १७	२१ ००	२२ २८	२३ ५३	१ २९	३ २५
१६	५ ३८	७ ५८	१० १६	१२ ३२	१४ ५२	१७ १०	१९ १३	२० ५६	२२ २४	२३ ४९	१ २५	३ २१
१७	५ ३४	७ ५४	१० १२	१२ २८	१४ ४८	१७ ०६	१९ ०९	२० ५२	२२ २०	२३ ४५	१ २१	३ १७
१८	५ ३०	७ ५०	१० ०८	१२ २४	१४ ४४	१७ ०२	१९ ०५	२० ४८	२२ १६	२३ ४१	१ १७	३ १३
१९	५ २६	७ ४६	१० ०४	१२ २०	१४ ४०	१६ ५८	१९ ०१	२० ४४	२२ १२	२३ ३७	१ १३	३ ०९
२०	५ २२	७ ४२	१० ००	१२ १६	१४ ३६	१६ ५४	१८ ५७	२० ४०	२२ ०८	२३ ३३	१ ०९	३ ०५
२१	५ १८	७ ३८	९ ५६	१२ १२	१४ ३२	१६ ५०	१८ ५३	२० ३६	२२ ०४	२३ २९	१ ०५	३ ०१
२२	५ १४	७ ३४	९ ५२	१२ ०८	१४ २८	१६ ४६	१८ ४९	२० ३२	२२ ००	२३ २५	१ ०१	२ ५७
२३	५ ११	७ ३१	९ ४९	१२ ०५	१४ २५	१६ ४३	१८ ४६	२० २९	२१ ५७	२३ २२	० ५८	२ ५३
२४	५ ०७	७ २७	९ ४५	१२ ०१	१४ २१	१६ ३९	१८ ४२	२० २५	२१ ५३	२३ १८	० ५४	२ ४९
२५	५ ०३	७ २३	९ ४१	११ ५७	१४ १७	१६ ३५	१८ ३८	२० २१	२१ ४९	२३ १४	० ५०	२ ४५
२६	४ ५९	७ १९	९ ३७	११ ५३	१४ १३	१६ ३१	१८ ३४	२० १७	२१ ४५	२३ १०	० ४६	२ ४१
२७	४ ५५	७ १५	९ ३३	११ ४९	१४ ०९	१६ २७	१८ ३०	२० १३	२१ ४१	२३ ०६	० ४२	२ ३७
२८	४ ५१	७ ११	९ २९	११ ४५	१४ ०५	१६ २३	१८ २६	२० ०९	२१ ३७	२३ ०२	० ३८	२ ३३
२९	४ ४७	७ ०७	९ २५	११ ४१	१४ ०१	१६ १९	१८ २२	२० ०५	२१ ३३	२२ ५८	० ३४	२ २९
३०	४ ४३	७ ३	९ २१	११ ३७	१३ ५७	१६ १५	१८ १८	२० ०१	२१ २९	२२ ५४	० ३०	२ २५
३१	४ ३९	६ ५९	९ १७	११ ३३	१३ ५३	१६ ११	१८ १४	१९ ५७	२१ २५	२२ ५०	० २६	२ २१

अगस्त दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
१	६ ५५	९ १३	११ ३०	१३ ४९	१६ ०७	१८ ११	१९ ५३	२१ २१	२२ ४७	० २२	२ १८	४ ३१
२	६ ५१	९ ०९	११ २६	१३ ४५	१६ ०३	१८ ०७	१९ ४९	२१ १७	२२ ४३	० १८	२ १४	४ २७
३	६ ४७	९ ०५	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ ०३	१९ ४५	२१ १३	२२ ३९	० १४	२ १०	४ २३
४	६ ४३	९ ०१	११ १८	१३ ३७	१५ ५५	१७ ५९	१९ ४१	२१ ०९	२२ ३५	० १०	२ ०६	४ १९
५	६ ४०	८ ५८	११ १५	१३ ३४	१५ ५२	१७ ५६	१९ ३८	२१ ०६	२२ ३२	० ०७	२ ०३	४ १६
६	६ ३६	८ ५४	११ ११	१३ ३०	१५ ४८	१७ ५२	१९ ३४	२१ ०२	२२ २८	० ०३	१ ५९	४ १२
७	६ ३२	८ ५०	११ ०७	१३ २६	१५ ४४	१७ ४८	१९ ३०	२० ५८	२२ २४	२३ ५९	१ ५५	४ ०८
८	६ २८	८ ४६	११ ०३	१३ २२	१५ ४०	१७ ४४	१९ २६	२० ५४	२२ २०	२३ ५५	१ ५१	४ ०४
९	६ २४	८ ४२	१० ५९	१३ १८	१५ ३६	१७ ४०	१९ २२	२० ५०	२२ १६	२३ ५१	१ ४७	४ ००
१०	६ २०	८ ३८	१० ५५	१३ १४	१५ ३२	१७ ३६	१९ १८	२० ४६	२२ १२	२३ ४७	१ ४३	३ ५६
११	६ १६	८ ३४	१० ५१	१३ १०	१५ २८	१७ ३२	१९ १४	२० ४२	२२ ०८	२३ ४३	१ ३९	३ ५२
१२	६ १२	८ ३०	१० ४७	१३ ०६	१५ २४	१७ २८	१९ १०	२० ३८	२२ ०४	२३ ३९	१ ३५	३ ४८
१३	६ ०८	८ २६	१० ४३	१३ ०२	१५ २०	१७ २४	१९ ०६	२० ३४	२२ ००	२३ ३५	१ ३१	३ ४४
१४	६ ०४	८ २२	१० ३९	१२ ५८	१५ १६	१७ २०	१९ ०२	२० ३०	२१ ५६	२३ ३१	१ २७	३ ४०
१५	६ ००	८ १८	१० ३५	१२ ५४	१५ १२	१७ १६	१८ ५८	२० २६	२१ ५२	२३ २७	१ २३	३ ३६
१६	५ ५६	८ १४	१० ३१	१२ ५०	१५ ०८	१७ १२	१८ ५४	२० २२	२१ ४८	२३ २३	१ १९	३ ३२
१७	५ ५२	८ १०	१० २७	१२ ४६	१५ ०४	१७ ०८	१८ ५०	२० १८	२१ ४४	२३ १९	१ १५	३ २८
१८	५ ४८	८ ०६	१० २३	१२ ४२	१५ ००	१७ ०४	१८ ४६	२० १४	२१ ४०	२३ १५	१ ११	३ २४
१९	५ ४४	८ ०२	१० १९	१२ ३८	१४ ५६	१७ ००	१८ ४२	२० १०	२१ ३६	२३ ११	१ ०७	३ २०
२०	५ ४०	७ ५८	१० १५	१२ ३४	१४ ५२	१६ ५६	१८ ३८	२० ०६	२१ ३२	२३ ०७	१ ०३	३ १६
२१	५ ३७	७ ५५	१० १२	१२ ३१	१४ ४९	१६ ५३	१८ ३५	२० ०३	२१ २९	२३ ०४	१ ००	३ १३
२२	५ ३३	७ ५१	१० ०८	१२ २७	१४ ४५	१६ ४९	१८ ३१	१९ ५९	२१ २५	२३ ००	० ५६	३ ०९
२३	५ २९	७ ४७	१० ०४	१२ २३	१४ ४१	१६ ४५	१८ २७	१९ ५५	२१ २१	२२ ५६	० ५२	३ ०५
२४	५ २५	७ ४३	१० ००	१२ १९	१४ ३७	१६ ४१	१८ २३	१९ ५१	२१ १७	२२ ५२	० ४८	३ ०१
२५	५ २१	७ ३९	९ ५६	१२ १५	१४ ३३	१६ ३७	१८ १९	१९ ४७	२१ १३	२२ ४८	० ४४	२ ५७
२६	५ १७	७ ३५	९ ५२	१२ ११	१४ २९	१६ ३३	१८ १५	१९ ४३	२१ ०९	२२ ४४	० ४०	२ ५३
२७	५ १३	७ ३१	९ ४८	१२ ०७	१४ २५	१६ २९	१८ ११	१९ ३९	२१ ०५	२२ ४०	० ३६	२ ४९
२८	५ १०	७ २८	९ ४५	१२ ०४	१४ २२	१६ २६	१८ ०८	१९ ३६	२१ ०२	२२ ३७	० ३३	२ ४६
२९	५ ०६	७ २४	९ ४१	१२ ००	१४ १८	१६ २२	१८ ०४	१९ ३२	२० ५८	२२ ३३	० २९	२ ४२
३०	५ ०२	७ २०	९ ३७	११ ५६	१४ १४	१६ १८	१८ ००	१९ २८	२० ५४	२२ २९	० २५	२ ३८
३१	४ ५८	७ १६	९ ३३	११ ५२	१४ १०	१६ १४	१७ ५६	१९ २४	२० ५०	२२ २५	० २१	२ ३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

अक्टूबर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सितम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.रदैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
१	७ १२	९ २९	११ ४९	१४ ०६	१६ १०	१७ ५३	१९ २०	२० ४६	२२ २२	० १७	२ ३१	४ ५०
२	७ ०८	९ २५	११ ४५	१४ ०२	१६ ०६	१७ ४९	१९ १६	२० ४२	२२ १८	० १३	२ २७	४ ४६
३	७ ०४	९ २१	११ ४१	१३ ५८	१६ ०२	१७ ४५	१९ १२	२० ३८	२२ १४	० ०९	२ २३	४ ४२
४	७ ००	९ १७	११ ३७	१३ ५४	१५ ५८	१७ ४१	१९ ०८	२० ३४	२२ १०	० ०५	२ १९	४ ३८
५	६ ५६	९ १३	११ ३३	१३ ५०	१५ ५४	१७ ३७	१९ ०४	२० ३०	२२ ०६	० ०१	२ १५	४ ३४
६	६ ५२	९ ०९	११ २९	१३ ४६	१५ ५०	१७ ३३	१९ ००	२० २६	२२ ०२	२३ ५७	२ ११	४ ३०
७	६ ४८	९ ०५	११ २५	१३ ४२	१५ ४६	१७ २९	१८ ५६	२० २२	२१ ५८	२३ ५३	२ ०७	४ २६
८	६ ४४	९ ०१	११ २१	१३ ३८	१५ ४२	१७ २५	१८ ५२	२० १८	२१ ५४	२३ ४९	२ ०३	४ २२
९	६ ४०	८ ५७	११ १७	१३ ३४	१५ ३८	१७ २१	१८ ४८	२० १४	२१ ५०	२३ ४५	१ ५९	४ १८
१०	६ ३६	८ ५३	११ १३	१३ ३०	१५ ३४	१७ १७	१८ ४४	२० १०	२१ ४६	२३ ४१	१ ५५	४ १४
११	६ ३२	८ ४९	११ ०९	१३ २६	१५ ३०	१७ १३	१८ ४०	२० ०६	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १०
१२	६ २७	८ ४४	११ ०४	१३ २१	१५ २५	१७ ०८	१८ ३५	२० ०१	२१ ३७	२३ ३२	१ ४६	४ ०५
१३	६ २३	८ ४०	११ ००	१३ १७	१५ २१	१७ ०४	१८ ३१	१९ ५७	२१ ३३	२३ २८	१ ४२	४ ०१
१४	६ १९	८ ३६	१० ५६	१३ १३	१५ १७	१७ ००	१८ २७	१९ ५३	२१ २९	२३ २४	१ ३८	३ ५७
१५	६ १५	८ ३२	१० ५२	१३ ०९	१५ १३	१६ ५६	१८ २३	१९ ४९	२१ २५	२३ २०	१ ३४	३ ५३
१६	६ ११	८ २८	१० ४८	१३ ०५	१५ ०९	१६ ५२	१८ १९	१९ ४५	२१ २१	२३ १६	१ ३०	३ ४९
१७	६ ०७	८ २४	१० ४४	१३ ०१	१५ ०५	१६ ४८	१८ १५	१९ ४१	२१ १७	२३ १२	१ २६	३ ४५
१८	६ ०३	८ २०	१० ४०	१२ ५७	१५ ०१	१६ ४४	१८ ११	१९ ३७	२१ १३	२३ ०८	१ २२	३ ४१
१९	५ ५९	८ १६	१० ३६	१२ ५३	१४ ५७	१६ ४०	१८ ०७	१९ ३३	२१ ०९	२३ ०४	१ १८	३ ३७
२०	५ ५५	८ १२	१० ३२	१२ ४९	१४ ५३	१६ ३६	१८ ०३	१९ २९	२१ ०५	२३ ००	१ १४	३ ३३
२१	५ ५१	८ ०८	१० २८	१२ ४५	१४ ४९	१६ ३२	१७ ५९	१९ २५	२१ ०१	२२ ५६	१ १०	३ २९
२२	५ ४७	८ ०४	१० २४	१२ ४१	१४ ४५	१६ २८	१७ ५५	१९ २१	२० ५७	२२ ५२	१ ०६	३ २५
२३	५ ४३	८ ००	१० २०	१२ ३७	१४ ४१	१६ २४	१७ ५१	१९ १७	२० ५३	२२ ४८	१ ०२	३ २१
२४	५ ३९	७ ५६	१० १६	१२ ३३	१४ ३७	१६ २०	१७ ४७	१९ १३	२० ४९	२२ ४४	० ५८	३ १७
२५	५ ३५	७ ५२	१० १२	१२ २९	१४ ३३	१६ १६	१७ ४३	१९ ०९	२० ४५	२२ ४०	० ५४	३ १३
२६	५ ३१	७ ४८	१० ०८	१२ २५	१४ २९	१६ १२	१७ ३९	१९ ०५	२० ४१	२२ ३६	० ५०	३ ०९
२७	५ २७	७ ४४	१० ०४	१२ २१	१४ २५	१६ ०८	१७ ३५	१९ ०१	२० ३७	२२ ३२	० ४६	३ ०५
२८	५ २३	७ ४०	१० ००	१२ १७	१४ २१	१६ ०७	१७ ३१	१८ ५७	२० ३३	२२ २८	० ४२	३ ०१
२९	५ १९	७ ३६	९ ५६	१२ १३	१४ १७	१६ ०४	१७ २७	१८ ५३	२० २९	२२ २४	० ३८	२ ५७
३०	५ १५	७ ३२	९ ५२	१२ ०९	१४ १३	१५ ५६	१७ २३	१८ ४९	२० २५	२२ २०	० ३४	२ ५३

अक्टूबर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.रदैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
१	७ ३०	९ ५०	१२ ०८	१४ ११	१५ ५४	१७ २२	१८ ४७	२० २३	२२ १९	० ३२	२ ५२	५ ०९
२	७ २६	९ ४६	१२ ०४	१४ ०७	१५ ५०	१७ १८	१८ ४३	२० १९	२२ १५	० २८	२ ४८	५ ०५
३	७ २२	९ ४२	१२ ००	१४ ०३	१५ ४६	१७ १४	१८ ३९	२० १५	२२ ११	० २४	२ ४४	५ ०१
४	७ १८	९ ३८	११ ५६	१३ ५९	१५ ४२	१७ १०	१८ ३५	२० ११	२२ ०७	० २०	२ ४०	४ ५७
५	७ १३	९ ३३	११ ५१	१३ ५४	१५ ३७	१७ ०५	१८ ३०	२० ०६	२२ ०२	० १५	२ ३५	४ ५२
६	७ ०९	९ २९	११ ४७	१३ ५०	१५ ३३	१७ ०१	१८ २६	२० ०२	२१ ५८	० ११	२ ३१	४ ४८
७	७ ०५	९ २५	११ ४३	१३ ४६	१५ २९	१६ ५७	१८ २२	१९ ५८	२१ ५४	० ०७	२ २७	४ ४४
८	७ ०१	९ २१	११ ३९	१३ ४२	१५ २५	१६ ५३	१८ १८	१९ ५४	२१ ५०	० ०३	२ २३	४ ४०
९	६ ५७	९ १७	११ ३५	१३ ३८	१५ २१	१६ ४९	१८ १४	१९ ५०	२१ ४६	२३ ५९	२ १९	४ ३६
१०	६ ५३	९ १३	११ ३१	१३ ३४	१५ १७	१६ ४५	१८ १०	१९ ४६	२१ ४२	२३ ५५	२ १५	४ ३२
११	६ ४९	९ ०९	११ २७	१३ ३०	१५ १३	१६ ४१	१८ ०६	१९ ४२	२१ ३८	२३ ५१	२ ११	४ २८
१२	६ ४५	९ ०५	११ २३	१३ २६	१५ ०९	१६ ३७	१८ ०२	१९ ३८	२१ ३४	२३ ४७	२ ०७	४ २४
१३	६ ४१	९ ०१	११ १९	१३ २२	१५ ०५	१६ ३३	१७ ५८	१९ ३४	२१ ३०	२३ ४३	२ ०३	४ २०
१४	६ ३७	८ ५७	११ १५	१३ १८	१५ ०१	१६ २९	१७ ५४	१९ ३०	२१ २६	२३ ३९	१ ५९	४ १६
१५	६ ३३	८ ५३	११ ११	१३ १४	१४ ५७	१६ २५	१७ ५०	१९ २६	२१ २२	२३ ३५	१ ५५	४ १२
१६	६ २९	८ ४९	११ ०७	१३ १०	१४ ५३	१६ २१	१७ ४६	१९ २२	२१ १८	२३ ३१	१ ५१	४ ०८
१७	६ २५	८ ४५	११ ०३	१३ ०६	१४ ४९	१६ १७	१७ ४२	१९ १८	२१ १४	२३ २७	१ ४७	४ ०४
१८	६ २१	८ ४१	१० ५९	१३ ०२	१४ ४५	१६ १३	१७ ३८	१९ १४	२१ १०	२३ २३	१ ४३	४ ००
१९	६ १७	८ ३७	१० ५५	१२ ५८	१४ ४१	१६ ०९	१७ ३४	१९ १०	२१ ०६	२३ १९	१ ३९	३ ५६
२०	६ १३	८ ३३	१० ५१	१२ ५४	१४ ३७	१६ ०५	१७ ३०	१९ ०६	२१ ०२	२३ १५	१ ३५	३ ५२
२१	६ ०९	८ २९	१० ४७	१२ ५०	१४ ३३	१६ ०१	१७ २६	१९ ०२	२० ५८	२३ ११	१ ३१	३ ४८
२२	६ ०५	८ २५	१० ४३	१२ ४६	१४ २९	१५ ५७	१७ २२	१८ ५८	२० ५४	२३ ०७	१ २७	३ ४४
२३	६ ०१	८ २१	१० ३९	१२ ४२	१४ २५	१५ ५३	१७ १८	१८ ५४	२० ५०	२३ ०३	१ २३	३ ४०
२४	५ ५७	८ १७	१० ३५	१२ ३८	१४ २१	१५ ४९	१७ १४	१८ ५०	२० ४६	२२ ५९	१ १९	३ ३६
२५	५ ५३	८ १३	१० ३१	१२ ३४	१४ १७	१५ ४५	१७ १०	१८ ४६	२० ४२	२२ ५५	१ १५	३ ३२
२६	५ ५०	८ १०	१० २८	१२ ३१	१४ १४	१५ ४२	१७ ०७	१८ ४३	२० ३९	२२ ५२	१ १२	३ २९
२७	५ ४६	८ ०६	१० २४	१२ २७	१४ १०	१५ ३८	१७ ०३	१८ ३९	२० ३५	२२ ४८	१ ०८	३ २५
२८	५ ४२	८ ०२	१० २०	१२ २३	१४ ०६	१५ ३४	१६ ५९	१८ ३५	२० ३१	२२ ४४	१ ०४	३ २१
२९	५ ३८	७ ५८	१० १६	१२ १९	१४ ०२	१५ ३०	१६ ५५	१८ ३१	२० २७	२२ ४०	१ ००	३ १७
३०	५ ३४	७ ५४	१० १२	१२ १५	१३ ५८	१५ २६	१६ ५१	१८ २७	२० २३	२२ ३६	० ५६	३ १३
३१	५ ३०	७ ५०	१० ०८	१२ ११	१३ ५४	१५ २२	१६ ४७	१८ २३	२० १९	२२ ३२	० ५२	३ ०९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नवम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	७ ४५	९ ०३	१२ ०७	१३ ४९	१५ १७	१६ ४३	१८ १८	२० १४	२२ २८	० ४७	३ ०५	५ २१
२	७ ४१	९ ५९	१२ ०३	१३ ४५	१५ १३	१६ ३९	१८ १४	२० १०	२२ २४	० ४३	३ ०१	५ १७
३	७ ३७	९ ५५	११ ५९	१३ ४१	१५ ०९	१६ ३५	१८ १०	२० ०६	२२ २०	० ३९	२ ५७	५ १३
४	७ ३३	९ ५१	११ ५५	१३ ३७	१५ ०५	१६ ३१	१८ ०६	२० ०२	२२ १६	० ३५	२ ५३	५ ०९
५	७ २९	९ ४७	११ ५१	१३ ३३	१५ ०१	१६ २७	१८ ०२	१९ ५८	२२ १२	० ३१	२ ४९	५ ०५
६	७ २५	९ ४३	११ ४७	१३ २९	१४ ५७	१६ २३	१७ ५८	१९ ५४	२२ ०८	० २७	२ ४५	५ ०१
७	७ २१	९ ३९	११ ४३	१३ २५	१४ ५३	१६ १९	१७ ५४	१९ ५०	२२ ०४	० २३	२ ४१	४ ५७
८	७ १८	९ ३६	११ ४०	१३ २२	१४ ५०	१६ १६	१७ ५१	१९ ४७	२२ ०१	० २०	२ ३८	४ ५४
९	७ १४	९ ३२	११ ३६	१३ १८	१४ ४६	१६ १२	१७ ४७	१९ ४३	२१ ५७	० १६	२ ३४	४ ५०
१०	७ १०	९ २८	११ ३२	१३ १४	१४ ४२	१६ ०८	१७ ४३	१९ ३९	२१ ५३	० १२	२ ३०	४ ४६
११	७ ०६	९ २४	११ २८	१३ १०	१४ ३८	१६ ०४	१७ ३९	१९ ३५	२१ ४९	० ०८	२ २६	४ ४२
१२	७ ०२	९ २०	११ २४	१३ ०६	१४ ३४	१६ ००	१७ ३५	१९ ३१	२१ ४५	० ०४	२ २२	४ ३८
१३	६ ५८	९ १६	११ २०	१३ ०२	१४ ३०	१५ ५६	१७ ३१	१९ २७	२१ ४१	२४ ००	२ १८	४ ३४
१४	६ ५४	९ १२	११ १६	१२ ५८	१४ २६	१५ ५२	१७ २७	१९ २३	२१ ३७	२३ ५६	२ १४	४ ३०
१५	६ ५१	९ ०९	११ १३	१२ ५५	१४ २३	१५ ४९	१७ २४	१९ २०	२१ ३४	२३ ५३	२ ११	४ २७
१६	६ ४७	९ ०५	११ ०९	१२ ५१	१४ १९	१५ ४५	१७ २०	१९ १६	२१ ३०	२३ ४९	२ ०७	४ २३
१७	६ ४३	९ ०१	११ ०५	१२ ४७	१४ १५	१५ ४१	१७ १६	१९ १२	२१ २६	२३ ४५	२ ०३	४ १९
१८	६ ३९	८ ५७	११ ०१	१२ ४३	१४ ११	१५ ३७	१७ १२	१९ ०८	२१ २२	२३ ४१	१ ५९	४ १५
१९	६ ३५	८ ५३	१० ५७	१२ ३९	१४ ०७	१५ ३३	१७ ०८	१९ ०४	२१ १८	२३ ३७	१ ५५	४ ११
२०	६ ३१	८ ४९	१० ५३	१२ ३५	१४ ०३	१५ २९	१७ ०४	१९ ००	२१ १४	२३ ३३	१ ५१	४ ०७
२१	६ २७	८ ४५	१० ४९	१२ ३१	१३ ५९	१५ २५	१७ ००	१८ ५६	२१ १०	२३ २९	१ ४७	४ ०३
२२	६ २३	८ ४१	१० ४५	१२ २७	१३ ५५	१५ २१	१६ ५६	१८ ५२	२१ ०६	२३ २५	१ ४३	३ ५९
२३	६ १९	८ ३७	१० ४१	१२ २३	१३ ५१	१५ १७	१६ ५२	१८ ४८	२१ ०२	२३ २१	१ ३९	३ ५५
२४	६ १५	८ ३३	१० ३७	१२ १९	१३ ४७	१५ १३	१६ ४८	१८ ४४	२० ५८	२३ १७	१ ३५	३ ५१
२५	६ ११	८ २९	१० ३३	१२ १५	१३ ४३	१५ ०९	१६ ४४	१८ ४०	२० ५४	२३ १३	१ ३१	३ ४७
२६	६ ०८	८ २६	१० ३०	१२ १२	१३ ४०	१५ ०६	१६ ४१	१८ ३७	२० ५१	२३ १०	१ २८	३ ४४
२७	६ ०४	८ २२	१० २६	१२ ०८	१३ ३६	१५ ०२	१६ ३७	१८ ३३	२० ४७	२३ ०६	१ २४	३ ४०
२८	६ ००	८ १८	१० २२	१२ ०४	१३ ३२	१४ ५८	१६ ३३	१८ २९	२० ४३	२३ ०२	१ २०	३ ३६
२९	५ ५६	८ १४	१० १८	१२ ००	१३ २८	१४ ५४	१६ २९	१८ २५	२० ३९	२२ ५८	१ १६	३ ३२
३०	५ ५२	८ १०	१० १४	११ ५६	१३ २४	१४ ५०	१६ २५	१८ २१	२० ३५	२२ ५४	१ १२	३ २८

दिसम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	८ ०६	१० १०	११ ५३	१३ २०	१४ ४६	१६ २२	१८ १७	२० ३१	२२ ५१	१ ०८	३ २५	५ ४४
२	८ ०२	१० ०६	११ ४९	१३ १६	१४ ४२	१६ १८	१८ १३	२० २७	२२ ४७	१ ०४	३ २१	५ ४०
३	७ ५८	१० ०२	११ ४५	१३ १२	१४ ३८	१६ १४	१८ ०९	२० २३	२२ ४३	१ ००	३ १७	५ ३६
४	७ ५४	९ ५८	११ ४१	१३ ०८	१४ ३४	१६ १०	१८ ०५	२० १९	२२ ३९	० ५६	३ १३	५ ३२
५	७ ५०	९ ५४	११ ३७	१३ ०४	१४ ३०	१६ ०६	१८ १	२० १५	२२ ३५	० ५२	३ ०९	५ २८
६	७ ४६	९ ५०	११ ३३	१३ ००	१४ २६	१६ ०२	१७ ५७	२० ११	२२ ३१	० ४८	३ ०५	५ २४
७	७ ४२	९ ४६	११ २९	१२ ५६	१४ २२	१५ ५८	१७ ५३	२० ०७	२२ २७	० ४४	३ ०१	५ २०
८	७ ३९	९ ४३	११ २६	१२ ५३	१४ १९	१५ ५५	१७ ५०	२० ०४	२२ २४	० ४१	२ ५८	५ १७
९	७ ३५	९ ३९	११ २२	१२ ४९	१४ १५	१५ ५१	१७ ४६	२० ००	२२ २०	० ३७	२ ५४	५ १३
१०	७ ३१	९ ३५	११ १८	१२ ४५	१४ ११	१५ ४७	१७ ४२	१९ ५६	२२ १६	० ३३	२ ५०	५ ०९
११	७ २७	९ ३१	११ १४	१२ ४१	१४ ०७	१५ ४३	१७ ३८	१९ ५२	२२ १२	० २९	२ ४६	५ ०५
१२	७ २३	९ २७	११ १०	१२ ३७	१४ ०३	१५ ३९	१७ ३४	१९ ४८	२२ ०८	० २६	२ ४२	५ ०१
१३	७ १९	९ २३	११ ०६	१२ ३३	१३ ५९	१५ ३५	१७ ३०	१९ ४४	२२ ०४	० २१	२ ३८	४ ५७
१४	७ १५	९ १९	११ ०२	१२ २९	१३ ५५	१५ ३१	१७ २६	१९ ४०	२२ ००	० १७	२ ३४	४ ५३
१५	७ ११	९ १५	१० ५८	१२ २५	१३ ५१	१५ २७	१७ २२	१९ ३६	२१ ५६	० १३	२ ३०	४ ४९
१६	७ ०७	९ ११	१० ५४	१२ २१	१३ ४७	१५ २३	१७ १८	१९ ३२	२१ ५२	० ०९	२ २६	४ ४५
१७	७ ०३	९ ०७	१० ५०	१२ १७	१३ ४३	१५ १९	१७ १४	१९ २८	२१ ४८	० ०५	२ २२	४ ४१
१८	६ ५९	९ ०३	१० ४६	१२ १३	१३ ३९	१५ १५	१७ १०	१९ २४	२१ ४४	० ०१	२ १८	४ ३७
१९	६ ५५	८ ५९	१० ४२	१२ ०९	१३ ३५	१५ ११	१७ ०६	१९ २०	२१ ४०	२३ ५७	२ १४	४ ३३
२०	६ ५१	८ ५५	१० ३८	१२ ०५	१३ ३१	१५ ०७	१७ ०२	१९ १६	२१ ३६	२३ ५३	२ १०	४ २९
२१	६ ४७	८ ५१	१० ३४	१२ ०१	१३ २७	१५ ०३	१६ ५८	१९ १२	२१ ३२	२३ ४९	२ ०६	४ २५
२२	६ ४३	८ ४७	१० ३०	११ ५७	१३ २३	१४ ५९	१६ ५४	१९ ०८	२१ २८	२३ ४५	२ ०२	४ २१
२३	६ ४०	८ ४४	१० २७	११ ५४	१३ २०	१४ ५६	१६ ५१	१९ ०५	२१ २५	२३ ४२	१ ५९	४ १८
२४	६ ३६	८ ४०	१० २३	११ ५०	१३ १६	१४ ५२	१६ ४७	१९ ०१	२१ २१	२३ ३८	१ ५५	४ १४
२५	६ ३२	८ ३६	१० १९	११ ४६	१३ १२	१४ ४८	१६ ४३	१८ ५७	२१ १७	२३ ३४	१ ५१	४ १०
२६	६ २८	८ ३२	१० १५	११ ४२	१३ ०८	१४ ४४	१६ ३९	१८ ५३	२१ १३	२३ ३०	१ ४७	४ ०६
२७	६ २४	८ २८	१० ११	११ ३८	१३ ०४	१४ ४०	१६ ३५	१८ ४९	२१ ०९	२३ २६	१ ४३	४ ०२
२८	६ २०	८ २४	१० ०७	११ ३४	१३ ००	१४ ३६	१६ ३१	१८ ४५	२१ ०५	२३ २२	१ ३९	३ ५८
२९	६ १७	८ २१	१० ०४	११ ३१	१२ ५७	१४ ३३	१६ २८	१८ ४२	२१ ०२	२३ १९	१ ३६	३ ५५
३०	६ १३	८ १७	१० ००	११ २७	१२ ५३	१४ २९	१६ २४	१८ ३८	२० ५८	२३ १५	१ ३२	३ ५१
३१	६ ०९	८ १३	९ ५६	११ २३	१२ ४९	१४ २५	१६ २०	१८ ३४	२० ५४	२३ ११	१ ३८	३ ४७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

फरवरी दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जनवरी दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
१	८ ०९	९ ५२	११ २०	१२ ४५	१४ २१	१६ १७	१८ ३०	२० ५०	२३ ०८	१ २४	३ ४४	६ ०१
२	८ ०५	९ ४८	११ १६	१२ ४१	१४ १७	१६ १३	१८ २६	२० ४६	२३ ०४	१ २०	३ ४०	५ ५७
३	८ ०१	९ ४४	११ १२	१२ ३७	१४ १३	१६ ०९	१८ २२	२० ४२	२३ ००	१ १६	३ ३६	५ ५३
४	७ ५७	९ ४०	११ ०८	१२ ३३	१४ ०९	१६ ०५	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १२	३ ३२	५ ४९
५	७ ५३	९ ३६	११ ०४	१२ २९	१४ ०५	१६ ०१	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	१ ०८	३ २८	५ ४५
६	७ ४९	९ ३२	११ ००	१२ २५	१४ ०१	१५ ५७	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	१ ०४	३ २४	५ ४१
७	७ ४५	९ २८	१० ५६	१२ २१	१३ ५७	१५ ५३	१८ ०६	२० २६	२२ ४४	१ ००	३ २०	५ ३७
८	७ ४२	९ २५	१० ५३	१२ १८	१३ ५४	१५ ५०	१८ ०३	२० २३	२२ ४१	० ५७	३ १७	५ ३४
९	७ ३८	९ २१	१० ४९	१२ १४	१३ ५०	१५ ४६	१७ ५९	२० १९	२२ ३७	० ५३	३ १३	५ ३०
१०	७ ३४	९ १७	१० ४५	१२ १०	१३ ४६	१५ ४२	१७ ५५	२० १५	२२ ३३	० ४९	३ ०९	५ २६
११	७ ३०	९ १३	१० ४१	१२ ०६	१३ ४२	१५ ३८	१७ ५१	२० ११	२२ २९	० ४५	३ ०५	५ २२
१२	७ २६	९ ०९	१० ३७	१२ ०२	१३ ३८	१५ ३४	१७ ४७	२० ०७	२२ २५	० ४१	३ ०१	५ १८
१३	७ २२	९ ०५	१० ३३	११ ५८	१३ ३४	१५ ३०	१७ ४३	२० ०३	२२ २१	० ३७	२ ५७	५ १४
१४	७ १८	९ ०१	१० २९	११ ५४	१३ ३०	१५ २६	१७ ३९	१९ ५९	२२ १७	० ३३	२ ५३	५ १०
१५	७ १४	८ ५७	१० २५	११ ५०	१३ २६	१५ २२	१७ ३५	१९ ५५	२२ १३	० २९	२ ४९	५ ०६
१६	७ १०	८ ५३	१० २१	११ ४६	१३ २२	१५ १८	१७ ३१	१९ ५१	२२ ०९	० २५	२ ४५	५ ०२
१७	७ ०६	८ ४९	१० १७	११ ४२	१३ १८	१५ १४	१७ २७	१९ ४७	२२ ०५	० २१	२ ४१	४ ५८
१८	७ ०२	८ ४५	१० १३	११ ३८	१३ १४	१५ १०	१७ २३	१९ ४३	२२ ०१	० १७	२ ३७	४ ५४
१९	६ ५८	८ ४१	१० ०९	११ ३४	१३ १०	१५ ०६	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १३	२ ३३	४ ५०
२०	६ ५४	८ ३७	१० ०५	११ ३०	१३ ०६	१५ ०२	१७ १५	१९ ३५	२१ ५३	० ०९	२ २९	४ ४६
२१	६ ५०	८ ३३	१० ०१	११ २६	१३ ०२	१४ ५८	१७ ११	१९ ३१	२१ ४९	० ०५	२ २५	४ ४२
२२	६ ४६	८ २९	९ ५७	११ २२	१२ ५८	१४ ५४	१७ ०७	१९ २७	२१ ४५	० ०१	२ २१	४ ३८
२३	६ ४२	८ २५	९ ५३	११ १८	१२ ५४	१४ ५०	१७ ०३	१९ २३	२१ ४१	२३ ५७	२ १७	४ ३४
२४	६ ३८	८ २१	९ ४९	११ १४	१२ ५०	१४ ४६	१६ ५९	१९ १९	२१ ३७	२३ ५३	२ १३	४ ३०
२५	६ ३४	८ १७	९ ४५	११ १०	१२ ४६	१४ ४२	१६ ५५	१९ १५	२१ ३३	२३ ४९	२ ०९	४ २६
२६	६ ३०	८ १३	९ ४१	११ ०६	१२ ४२	१४ ३८	१६ ५१	१९ ११	२१ २९	२३ ४५	२ ०५	४ २२
२७	६ २६	८ ०९	९ ३७	११ ०२	१२ ३८	१४ ३४	१६ ४७	१९ ०७	२१ २५	२३ ४१	२ ०१	४ १८
२८	६ २२	८ ०५	९ ३३	१० ५८	१२ ३४	१४ ३०	१६ ४३	१९ ०३	२१ २१	२३ ३७	१ ५७	४ १४
२९	६ १९	८ ०२	९ ३०	१० ५५	१२ ३१	१४ २७	१६ ४०	१९ ००	२१ १८	२३ ३४	१ ५४	४ ११
३०	६ १५	७ ५८	९ २६	१० ५१	१२ २७	१४ २३	१६ ३६	१८ ५६	२१ १४	२३ ३०	१ ५०	४ ०७
३१	६ ११	७ ५४	९ २२	१० ४७	१२ २३	१४ १९	१६ ३२	१८ ५२	२१ १०	२३ २६	१ ४६	४ ०३

फरवरी दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन
१	७ ५०	९ १८	१० ४४	१२ १८	१४ १४	१६ २८	१८ ४७	२१ ०५	२३ २२	१ ४१	३ ५९	६ ०२
२	७ ४६	९ १४	१० ४०	१२ १४	१४ १०	१६ २४	१८ ४३	२१ ०१	२३ १८	१ ३७	३ ५५	५ ५८
३	७ ४२	९ १०	१० ३६	१२ १०	१४ ०६	१६ २०	१८ ३९	२० ५७	२३ १४	१ ३३	३ ५१	५ ५४
४	७ ३८	९ ०६	१० ३२	१२ ०६	१४ ०२	१६ १६	१८ ३५	३० ५३	२३ १०	१ २९	३ ४७	५ ५०
५	७ ३५	९ ०३	१० २९	१२ ०३	१३ ५९	१६ १३	१८ ३२	२० ५०	२३ ०७	१ २६	३ ४४	५ ४७
६	७ ३१	८ ५९	१० २५	११ ५९	१३ ५५	१६ ०९	१८ २८	२० ४६	२३ ०३	१ २२	३ ४०	५ ४३
७	७ २७	८ ५५	१० २१	११ ५५	१३ ५१	१६ ०५	१८ २४	२० ४२	२२ ५९	१ १८	३ ३६	५ ३९
८	७ २३	८ ५१	१० १७	११ ५१	१३ ४७	१६ ०१	१८ २०	२० ३८	२२ ५५	१ १४	३ ३२	५ ३५
९	७ १९	८ ४७	१० १३	११ ४७	१३ ४३	१५ ५७	१८ १६	२० ३४	२२ ५१	१ १०	३ २८	५ ३१
१०	७ १५	८ ४३	१० ०९	११ ४३	१३ ३९	१५ ५३	१८ १२	२० ३०	२२ ४७	१ ०६	३ २४	५ २७
११	७ ११	८ ३९	१० ०५	११ ३९	१३ ३५	१५ ४९	१८ ०८	२० २६	२२ ४३	१ ०२	३ २०	५ २३
१२	७ ०७	८ ३५	१० ०१	११ ३५	१३ ३१	१५ ४५	१८ ०४	२० २२	२२ ३९	० ५८	३ १६	५ १९
१३	७ ०३	८ ३१	९ ५७	११ ३१	१३ २७	१५ ४१	१८ ००	२० १८	२२ ३५	० ५४	३ १२	५ १५
१४	६ ५९	८ २७	९ ५३	११ २७	१३ २३	१५ ३७	१७ ५६	२० १४	२२ ३१	० ५०	३ ०८	५ ११
१५	६ ५५	८ २३	९ ४९	११ २३	१३ १९	१५ ३३	१७ ५२	२० १०	२२ २७	० ४६	३ ०४	५ ०७
१६	६ ५१	८ १९	९ ४५	११ १९	१३ १५	१५ २९	१७ ४८	२० ०६	२२ २३	० ४२	३ ००	५ ०३
१७	६ ४७	८ १५	९ ४१	११ १५	१३ ११	१५ २५	१७ ४४	२० ०२	२२ १९	० ३८	२ ५६	४ ५९
१८	६ ४३	८ ११	९ ३७	११ ११	१३ ०७	१५ २१	१७ ४०	१९ ५८	२२ १५	० ३४	२ ५२	४ ५५
१९	६ ३९	८ ०७	९ ३३	११ ०७	१३ ०३	१५ १७	१७ ३६	१९ ५४	२२ ११	० ३०	२ ४८	४ ५१
२०	६ ३४	८ ०२	९ २८	११ ०२	१२ ५८	१५ १२	१७ ३१	१९ ४९	२२ ०६	० २५	२ ४३	४ ४६
२१	६ ३०	७ ५८	९ २४	१० ५८	१२ ५४	१५ ०८	१७ २७	१९ ४५	२२ ०२	० २१	२ ३९	४ ४२
२२	६ २६	७ ५४	९ २०	१० ५४	१२ ५०	१५ ०४	१७ २३	१९ ४१	२१ ५८	० १७	२ ३५	४ ३८
२३	६ २२	७ ५०	९ १६	१० ५०	१२ ४६	१५ ००	१७ १९	१९ ३७	२१ ५४	० १३	२ ३१	४ ३४
२४	६ १८	७ ४६	९ १२	१० ४६	१२ ४२	१४ ५६	१७ १५	१९ ३३	२१ ५०	० ०९	२ २७	४ ३०
२५	६ १५	७ ४३	९ ०९	१० ४३	१२ ३९	१४ ५३	१७ १२	१९ ३०	२१ ४७	० ०६	२ २४	४ २७
२६	६ ११	७ ३९	९ ०५	१० ३९	१२ ३५	१४ ४९	१७ ०८	१९ २६	२१ ४३	० ०२	२ २०	४ २३
२७	६ ०७	७ ३५	९ ०१	१० ३५	१२ ३१	१४ ४५	१७ ०४	१९ २२	२१ ३९	२३ ५८	२ १६	४ १९
२८	६ ०३	७ ३१	८ ५७	१० ३१	१२ २७	१४ ४१	१७ ००	१९ १८	२१ ३५	२३ ५४	२ १२	४ १५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्योदयास्त एवं दिनमान गणित प्रकार

सूर्योदयास्त ज्ञात करने के लिए निम्न उपकरणों की आवश्यकता होती है—

१. रवि क्रांति—यह पृष्ठ ९५ पर दी गई है। रवि क्रांति सारिणी से अभीष्ट तारीख की सहायता से ज्ञात हो जाएगी।

२. चर—चर सारिणी पृष्ठ ९३-९४ पर दी गई है। सारिणी से जन्म स्थान के अक्षांश व रवि क्रांति की सहायता से अनुपात द्वारा मिनट-सेकेण्ड में चर ज्ञात होंगे। यदि रवि क्रांति व अभीष्ट नगर के अक्षांश दोनों उत्तर के हों तो ६ घंटे में से चर मिनट-सेकेण्ड घटाने पर स्थानीय (लोकल) सूर्योदय एवं ६ घं. में चर मि. सेकेण्ड जोड़ने पर स्थानीय (लोकल) सूर्यास्त ज्ञात होगा। यदि रवि क्रांति दक्षिण हो एवं अभीष्ट नगर के अक्षांश उत्तर हों तो ६ घंटे में चर मिनट सेकेण्ड को जोड़ने पर स्थानीय (लोकल) सूर्योदय एवं ६ घंटे में से चर मिनट सेकेण्ड घटाने पर स्थानीय (लोकल) सूर्यास्त ज्ञात होगा। नोट—चर सारिणी चरांतर सारिणी से भिन्न है।

३. अक्षांश व स्टैण्डर्ड अंतर—अक्षांश व स्टैण्डर्ड अन्तर पृष्ठ ९७-१०० पर दी गई अक्षांशादि सारिणी से अभीष्ट नगर के अक्षांश व स्टैण्डर्ड अंतर मिनट-सेकेण्ड में ज्ञात किए जा सकते हैं। यदि स्टैण्डर्ड अंतर धन हो तो स्थानीय (लोकल) सूर्योदयास्त में स्टैण्डर्ड अंतर घटाएं और यदि स्टैण्डर्ड अंतर ऋण हो तो प्राप्त स्थानीय (लोकल) सूर्योदयास्त में जोड़ें तो अभीष्ट स्थान के मध्याह्न स्टैण्डर्ड सूर्योदयास्त ज्ञात होंगे।

४. वेलान्तर—वेलांतर सारिणी पृष्ठ ९५ पर दी गई मास तारीखों परि वेलांतरम् सारिणी से अभीष्ट तारीख व माह की सहायता से ज्ञात किए जा सकते हैं। इनको मध्याह्न सूर्योदयास्त में चिन्हानुसार जोड़ने घटाने से स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में अभीष्ट तारीख के अभीष्ट स्थान के सूर्योदयास्त ज्ञात होंगे।

५. दिनमान—प्राप्त चर मिनट सेकेण्ड को ५ से गुणा करने पर पल होंगे यदि सूर्योदय निकालने के लिए ६ घंटे में चर के मिनट-सेकेण्ड जोड़े हों तो यहां पर इन पलों को ३० घटी में से घटा देंगे और यदि चर मि. से बने सूर्योदय निकालने के लिए ६ घंटे में से चर मिनट सेकेण्ड को घटाए हों तो प्राप्त पलों को ३० घटी में जोड़ने पर अभीष्ट नगर का दिन मान प्राप्त होगा। दिनमान को ६० घटी में से घटाने पर रात्रिमान प्राप्त होगा।

उदाहरण—१. नागपुर में १२ अक्टूबर का सूर्योदयास्त एवं दिनमान निकालना है। नागपुर अक्षांश २१।०९ स्टैण्डर्ड अंतर-१३।३६, १२ अक्टू. की रवि क्रांति ०७।१२ दक्षिण, वेलांतर -१३।२१, चर-सारिणी में ऊपर आड़ी पंक्ति में रवि क्रांति व खड़ी बांई ओर की पंक्ति में अक्षांश हैं।

	मि. से.	
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर	१०।४८	
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ८ का चर से	१२।२२	१२।२२
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर घटाया		- १०।४८
अंतर	=	१।३४

सेकेण्ड बनाये १×६०+३४=९४ सेकेण्ड

हमें रवि क्रांति में १२ कला का मान चाहिए

६० कला में ९४ सेकेण्ड चर बढ़ता है तो १२ कला में कितना बढ़ेगा।

९४×१२=११२८÷६०=१८ सेकेण्ड ४८ प्रति सेकेण्ड या १९ सेकेण्ड की वृद्धि होगी।

	मि.से.
अक्षांश २२ व रवि क्रांति ७ का चर से	११।२२
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर घटाया	१०।४८
अंतर	=०।३४

अत: अक्षांश बढ़ने पर ३४ सेकेण्ड की वृद्धि होती है।

हमें अक्षांश में ९ कला का मान चाहिए।

६० कला में ३४ सेकेण्ड चर बढ़ता है तो ९ कला में कितना चर बढ़ेगा?

३४×९=३०६÷६०=५ सेकेण्ड ६ प्रति सेकेण्ड या ५ सेकेण्ड की वृद्धि होगी।

	मि.से.
अक्षांक्ष की २१ व रवि क्रांति ७ का चर	१०।४८
रवि क्रांति १२ कला का मान (वृद्धि होने से धन)	+०।१९
अक्षांश ९ कला का मान (वृद्धि होने से धन)	+०।०५
अक्षांश २१।०९ व रवि क्रांति ७।१२ का सूक्ष्म शुद्ध चर	११।१२

यदि कोई इतनी लम्बी क्रिया की उलझन से बचना चाहे तो सीधे १०।४८ चर ग्रहण कर सकते हैं। ऊपर बताई गई विधि तो सूक्ष्म गणितार्थियों के लिए है।

रवि क्रांति दक्षिण होने से चर ११ मिनट १२ सेकेण्ड धन होंगे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

उदाहरण-२. मद्रास में ३० जून का सूर्योदयास्त व दिनमान ज्ञात करना है। मद्रास

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

सूर्योदय	घं.मि.से.
	६।००।००
चर	+०।११।१२
लोकल सूर्योदय	६।११।१२
लोकल सूर्योदय	६।११।१२
स्टैं. अंतर धन होगा	+०।१३।३६
मध्याह्न सूर्योदय	६।२४।४८
वेलांतर	—०।१३।२१
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्योदय प्राप्त हुआ।	६।११।२७

सूर्यास्त	घं.मि.से.
	६।००।००
चर	—०।११।१२
लोकल सूर्यास्त	५।४८।४८
लोकल सूर्यास्त	५।४८।४८
स्टैण्डर्ड अंतर धन होगा	+०।१३।३६
मध्याह्न सूर्यास्त	६।०२।२४
वेलांतर	—०।१३।२१
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्यास्त प्राप्त हुआ।	५।४९।०३

दिनमान — आए हुए चर ११ मिनट १२ सेकेण्ड को ५ से गुणा किया
११।१२ × ५=५५।६० या ५६ पल
सूर्योदय में चर जोड़ा गया था। अतः यहां ये पल मध्याह्न दिनमान ३० घटी में से घट जावेंगे।

मध्याह्न दिनमान	३०।००
चर पल	— ०।५६
दिनमान नागपुर	२९।०४

रात्रिमान—	
अहोरात्र	६०।००
दिनमान	— २९।०४
रात्रिमान	३०।५६

उदाहरण २— मद्रास में २० जून का सूर्योदयास्त व दिनमान ज्ञात करना है। मद्रास अक्षांश १३।०५ उत्तर, स्टैण्डर्ड अंतर—८।५२, रवि क्रांति २३।२६ उत्तर, वेलांतर + १।१४

	मि.से.
अक्षांश १३ व रवि क्रांति २३ का चर	२२।३०
(अक्षांश ५ कला का अनुपात से चर पूर्व की विधि से)	+००।०८
रवि क्रांति २६ कला का अनुपात से चर	+००।३४
अक्षांश १३।०५ एवं रवि क्रांति २३।२६ का सूक्ष्म शुद्ध चर	२३।१२

रवि क्रांति उत्तर होने से चर २३ मिनट १२ सेकेण्ड धन होंगे।

सूर्योदय	घं.मि.से.
	६।००।००
चर	—०।२३।१२
लोकल सूर्योदय	५।३६।४८
लोकल सूर्योदय	५।३६।४८
स्टैं. अंतर धन होगा	+०।०८।५२
मध्याह्न सूर्योदय	५।४५।४०
वेलांतर	+०।०१।१४
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्योदय प्राप्त हुआ	५।४६।५४

सूर्यास्त	घं.मि.से.
	६।००।००
चर	+०।२३।१२
लोकल सूर्यास्त	६।२३।१२
लोकल सूर्यास्त	६।२३।१२
स्टैण्डर्ड अंतर धन होगा	+०।०८।५२
मध्याह्न सूर्यास्त	६।३२।०४
वेलांतर	+०।०१।१४
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्यास्त प्राप्त हुआ।	६।३३।१८

दिनमान- चर मिनट सेकेण्ड २३।१२×५=११५।६० (११५ पल ६० विपल या १ घटी ५६ पल पूर्व में ६ घंटे में चरांतर घटाया इससे यहां ये घटी पल ३० घटी में जुड़ेंगे।)

मध्याह्न दिनमान	३०।००	रात्रिमान— अहोरात्र	६०।००
चर पल	+०१।५६	दिनमान	— ३१।५६
दिनमान मद्रास	३१।५६	रात्रिमान	२८।०४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इष्टकाल बनाने की विधि

आजकल समय जिन घड़ियों में देखा जाता है उनमें घण्टों की गिनती मध्याह्न १२ बजे के बाद तथा मध्यरात्रि के बाद १ से १२ तक होती है, दिन २४ घंटे का होता है। जन्म समय इसी के अनुसार घंटे-मिनटों में बताया जाता है। तारीख रात को १२ बजे के बाद बदल जाती है, जबकि वार सूर्योदय से आरम्भ होता है। अब यदि किसी का जन्म सायंकाल ५ बजकर ३५ मिन पर हुआ है तो इसका अभिप्राय यह होता है कि मध्याह्न के बाद ५ घंटे ३५ मि. बीत गए हैं। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्योदय का समय जानने की आवश्यकता होती है, क्योंकि हमारा दिन सूर्योदय से आरम्भ होता है। सूर्योदय का समय हर स्थान का अलग-अलग होता है। पृथ्वी अपनी धुरी पर लगभग २४ घण्टे में एक बार घूम जाती है (२३ घण्टे ५६ मि. १५ सै.) और ३६५ दिन ६ घण्टे ९ सै. में सूर्य का एक चक्कर पूरा करती है। आकाशीय क्रान्ति वृत्त की बारहों राशियां २४ घंटे में इसके सामने से निकलती हैं। बारह राशियों में से जो राशि पृथ्वी के उस भाग के क्षितिज पर होती है, वह उस समय की लग्न होती है। सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है, सूर्योदय के समय क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंशों पर उदय होती है और जैसे-जैसे सूर्य आकाश में चढ़ता जाता है क्षितिज पर आगे की राशियाँ उदय होती जाती हैं। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न कहलाती है। क्षितिज उस स्थान को कहते हैं जहां पृथ्वी और आकाश मिलते दिखाई देते हैं। सूर्य पूर्वी क्षितिज पर उदय होता है और पश्चिमी क्षितिज पर अस्त होता है। किसी समय की लग्न जानने के लिए उस स्थान का सूर्योदय जानना जरूरी होता है।

सूर्योदय से जन्म समय या प्रश्न समय अथवा इष्ट समय तक के काल को इष्टकाल कहते हैं। यह अवधि घण्टे-मिनटों में नहीं बल्कि घड़ी-पलों में होती है। इस प्रकार इष्टकाल निकालना बहुत सरल है। जन्म समय में से सूर्योदय घटाकर ढाई से गुना कर देने से इष्टकाल आ जाता है। ध्यान रखने की बात यह है कि सूर्योदय काल यदि I.S.T (भा.मा.स.) में है तो जन्म समय भी I.S.T में होना चाहिये। यदि एक समय में I.S.T में और दूसरा L.T. में है तो दोनों को समान करना पड़ेगा। इसके कुछ उदाहरण नीचे देखिए।

उदाहरण (१)—मान लो आप को २५ जून को प्रातः ११-३५ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल जानना है तो आर्यभट्ट पंचांग से २५ जून का सूर्योदय लिया। आर्यभट्ट पंचांग दिल्ली के अक्षांश पर बनाया गया है और इसमें दिया सूर्योदय I.S.T. (भा.मा.स.) में है। २५ जून का सूर्योदय ५-२६ है। ध्यान रहे कि सूर्योदय भी भारतीय स्टैण्डर्ड समय में दिया गया है और जन्म समय भी भा. स्टै.टा. में है। इसलिए इस गणित में दिल्ली का भा. स्टैं. टा. से स्थानीय अन्तर २१ मि. ४ सै. घटाने की आवश्यकता नहीं होती। कुछ ज्योतिषी अकारण इस गणित में स्थानीय अन्तर घटा-बढ़ा कर अर्थ का अनर्थ कर देते हैं। स्थानीय अन्तर का ऋण धन संस्कार दिनमान से इष्टकाल निकालते समय किया जाता है।

		घं.	मि.	
(१)	२५ जून को जन्म समय	११	३५	भा.स्टै. टा.
(२)	२५ जून का सूर्योदय घटाया	—५	२६	"
		६	०९	"
	६।९ का ढाई से गुना किया	६	०९	
		३	०४	३०
	इष्टकाल घटी फल विपल में	१५	२२	३०

उदाहरण (२)—दिल्ली जन्म स्थान

१० सितम्बर को सायं ८-४५ का इष्टकाल निकालना

सायंकाल ८-४५ में १२ जोड़कर २०-४५ लिखा जाता है।

		घं.	मि.	
(१)	१० सितम्बर को जन्म समय	२०	४५	भा.स्टै.टा.
	मध्याह्न के बाद के समय में १२ जोड़कर लिखें।			
(२)	१० सितम्बर का दिल्ली का सूर्योदय घटाया	—६	०५	"
	शेष १४-३७ को ढाई गुना किया	१४	४०	
		१४	४०	
		७	२०	३०
(३)	इष्टकाल घटी पल विपल में	३६	४०	३०

६० विपल का एक पल, ६० पल की एक घड़ी और ६० घड़ी का अहोरात्रि (पूरा दिन-रात) होता है।

उदाहरण (३)—१२ दिसम्बर को मध्यरात्रि के बाद १३ दिसम्बर में ५-२१ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल निकालना है। मध्यरात्रि के बाद के घण्टों में २४ जमा करके लिखा जाता है। जन्म समय से पहले का सूर्योदय १२ दिसम्बर का लिया जायेगा।

	घं.	मि.	भा.स्टै.टा.
जन्म समय मध्यरात्रि उपरान्त १३ दिसम्बर	५	२१	
२४ जमा करके लिखा	२९	२१	
सूर्योदय १२ दिसम्बर का घटाया	—७	०६	"
शेष २२ घण्टे १३ मिनट के घड़ी पल बनाये	२२	१५	शेष
ढाई गुना किया	२२	१५	
	११	०७	३०
इष्टकाल—घटी पल विपल में	५५	३७	३०

सूर्योदय से एक मिनट पहले भी जन्म हुआ हो तो भी जन्म पिछले दिन में ही माना जावेगा। जैसे उपरोक्त उदाहरण में यदि जन्म ७ बजकर ५ मिनट पर हुआ होता तो भी इसमें २४ जोड़कर ३१-५ में से १२ दिसम्बर का सूर्योदय घटाकर ही इष्टकाल निकाला जाता। इष्टकाल कभी ६० घड़ी से अधिक नहीं आता, ६० से कम ही आता है। इसी प्रकार सूर्योदय पर या सूर्योदय के एक मिनट बाद भी जन्म हो तो उसी दिन का जन्म माना जाता है और जो सूर्योदय हो चुका है, वही घटाकर इष्टकाल निकाला जाता है। जैसे १३ दिसम्बर को जन्म समय ७-७ हो तो इष्टकाल ढाई पल होगा। यदि समय का बहुत सूक्ष्म हिसाब रखा हो तो सूर्योदय से एक सैकिण्ड पहले तक पिछला दिन लिया जाता है और सूर्योदय के एक सैकिण्ड बाद वही दिन लिया जाता है। परन्तु ऐसे उदाहरणों में सूर्योदय भी सूक्ष्म गणित से सैकिण्डों तक निकालना पड़ता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

क्रान्तिपात चर सारिणी

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

क्रान्त्यंश चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	४	८	१३	१७	२१	२५	२९	३४	३८	४२	४७	५१	५५	०	४	९	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२	४७
२	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
	८	१७	२५	३४	४२	५०	५९	८	१६	२५	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३७	४५	५५	४	१४	२४	३४
३	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५
	१३	२५	३८	५०	३	१६	२८	४१	५४	७	२०	३३	४६	०	१३	२७	४०	५५	८	२२	३७	५१	६	२१
४	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	६	६	६	७
	१७	३४	५०	७	२४	४१	५८	१२	२९	४८	५	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३१	५०	९	२९	४८	८
५	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	८
	२१	४२	३	२४	४५	७	२८	५०	१०	३२	५४	१६	३८	०	२३	४५	७	३१	५४	१९	४२	६	३१	५६
६	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	११
	२५	५०	१६	४१	६	३२	५७	२३	४९	१५	४२	७	३४	०	४७	५४	२२	५०	१८	४६	१५	४४	१४	४४
७	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२
	२९	५९	२८	५८	२९	५७	२७	५७	२७	५८	२८	५९	३०	१	३२	४	३६	९	४२	१५	४८	२२	५७	३२
८	०	१	१	२	२	३	३	४	५	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४
	३४	७	४१	१५	४९	२३	५६	३१	६	४१	१६	५१	२६	२	३८	१४	५१	२८	६	४४	२२	१	४१	२१
९	०	१	१	२	३	३	४	५	५	६	७	७	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६
	३८	१६	५४	३३	११	४९	२७	६	४५	२४	४	४३	२३	३	४४	२५	६	४८	३०	१३	५६	४१	२५	११
१०	०	१	२	२	३	४	४	५	६	७	७	८	९	१०	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८
	४२	२५	७	५०	३२	१५	५८	४१	२४	८	५१	३६	२०	५	५०	३६	२३	८	५५	४३	३१	२०	१०	१
११	०	१	२	३	३	४	५	६	७	७	८	९	१०	११	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१८	१९
	४७	३४	२०	७	५४	४०	२८	१६	३	५१	४०	२९	१७	७	५६	४७	३८	२९	२७	१४	७	१	५६	५२
१२	०	१	२	३	४	५	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२०
	५१	४२	३३	२४	१६	९	५९	५०	४३	३६	२८	२१	१५	९	३	५९	५४	२०	४७	४५	४३	४२	४२	४३
१३	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२५	३०	३६
	५५	५१	४६	४२	३८	३४	३०	२०	२३	२०	१७	१५	१३	१२	११	११	११	१२	१४	१७	२०	२५	३०	३६
१४	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२३	२४	२५
	०	०	०	०	०	०	१	२	३	५	७	९	१२	१५	१९	२४	२९	३४	४२	२०	३८	८	८	३६
१५	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२१	२२	२३	२४	२६	२७
	४	९	१३	१७	२१	२७	३१	३८	४४	५०	५७	४	१०	१९	२७	३८	४८	५९	१०	२४	३५	५२	७	२१

क्रान्त्यंश चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
१६	१	२	३	४	५	६	८	९	१०	११	१२	१३	१५	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२६	२७	२९
	९	१८	२७	३६	४४	५४	४	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२४	३६	५२	७	२३	४०	५७	१७	३७	५८	२०
१७	१	२	३	४	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१६	१७	१९	२०	२१	२२	२४	२५	२६	२८	२९	३१
	१३	२७	४०	५४	८	२२	३६	५१	६	२०	३८	५४	११	२९	४८	७	२७	४८	१०	३३	५८	२३	५०	१८
१८	१	२	३	५	६	७	९	१०	११	१३	१४	१५	१७	१८	१८	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३
	१८	३६	५१	१२	३१	५०	९	२८	४८	८	२९	५०	२२	३४	५९	२३	४८	१४	४३	१०	४१	१०	४३	१६
१९	१	२	४	५	६	८	९	११	१२	१३	१५	१६	१८	१९	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३	३५
	२३	४५	८	३१	५४	१८	३७	६	३०	५५	२१	४७	१४	४२	११	४०	१०	४२	१४	४८	२३	५९	३७	१६
२०	१	२	४	५	७	८	१०	११	१३	१४	१६	१७	१९	२०	२२	२३	२५	२७	२८	३०	३२	३३	३५	३७
	२३	५५	२२	५०	१६	४६	१५	४४	१३	४३	१४	४५	२७	५०	२३	५७	३३	१०	४१	२७	८	४९	३३	१८
२१	१	३	४	६	७	९	१०	१२	१३	१५	१७	१८	२०	२१	२३	२५	२६	२८	३०	३२	३३	३५	३७	३९
	३२	४	३६	९	४२	१५	४८	२२	५७	३१	७	४३	२०	५९	३७	१७	५८	१४	२३	८	५४	४१	३१	२२
२२	१	३	४	६	८	९	११	१३	१३	१६	१७	१९	२१	२३	२४	२६	२८	३०	३१	३३	३५	३७	३९	४१
	३७	१४	५१	२९	६	४४	२२	१	४०	२०	५९	४२	२५	८	५२	३७	२३	११	५९	४९	४२	३५	३०	२७
२३	१	३	५	६	८	१०	११	१३	१५	१७	१८	२०	२२	२४	२६	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३
	४२	२४	६	४८	३२	१४	५७	४१	२५	१०	५६	४२	३०	१८	६	५६	५०	४३	३०	३३	३१	३०	४१	३४
२४	१	३	५	७	८	१०	१२	१४	१६	१८	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५
	४७	३४	२१	८	५६	४४	३२	२१	११	१	५२	४३	३६	३०	२४	२०	१८	१६	१६	१८	२२	४७	३४	५४
२५	१	३	५	७	९	११	१३	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३९	४१	४३	४५	४७
	५२	४४	३६	२८	२१	१४	८	५९	५७	५२	४८	४५	४३	४२	४३	४४	४७	५२	५७	५	१५	२६	४०	५६
२६	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४३	४५	४७	५०
	५७	५४	५२	४९	३७	४५	४४	४३	४३	४४	४६	४८	५२	५६	२	९	१८	२८	४०	५४	१३	२८	४८	१०
२७	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३३	३५	३७	४०	४२	४५	४७	४९	५२
	२	५	७	१०	१३	७	२१	२६	३१	३७	४४	५२	२	१२	२३	३६	५१	६	२५	४५	७	३२	५८	२७
२८	२	४	६	८	१०	१२	१४	१७	१९	२१	२३	२५	२८	३०	३२	३५	३७	३९	४२	४४	४७	४९	५२	५४
	८	१२	२३	१३	४०	४९	५८	८	१९	३१	४४	५७	१२	२८	४६	५	२५	४८	१२	३८	६	३८	११	४७
२९	२	४	६	८	११	१३	१५	१७	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३४	३६	३९	४१	४४	४६	४९	५१	५४	५७
	१३	२६	४०	५३	७	२२	३७	५२	९	२६	४४	४	२५	४८	१०	३५	२	२७	१	३३	८	४६	२७	९
३०	२	४	६	९	११	१३	१६	१८	२१	२३	२५	२८	३०	३३	३५	३८	४०	४३	४५	४८	५१	५३	५६	५९
	१९	३७	५६	१५	३५	५५	१६	३७	०	२२	४६	१२	३९	६	३६	७	४०	१५	५२	३१	१३	५७	४५	३५
३१	२	४	७	९	१२	१४	१६	१९	२१	२४	२६	२९	३१	३४	३७	३९	४२	४५	४७	५०	५३	५६	५९	६२
	२४	५९	१३	३७	२	२९	५५	२३	५०	२१	५०	२१	५४	२७	४	४१	२१	२	४६	२८	२०	१२	६	४
३२	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	३०	३३	३५	३८	४१	४४	४६	४९	५२	५५	५८	६१	६४
	३०	०	३०	१	३२	४	३६	१	४३	१७	५४	३२	१०	४७	३३	१६	३	५२	४२	३५	३०	३०	३१	३७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

क्रान्त्यंश चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
३३	२	५	७	१०	१३	१५	१८	२०	२३	२६	२८	३१	३४	३७	४०	४२	४५	४८	५१	५४	५७	६०	६३	६७
	३६	१२	४६	२५	२	३९	१६	५७	३७	१८	५९	४४	२९	१६	५	५६	४८	४४	४०	४१	४४	५१	५७	१३
३४	२	५	८	१०	१३	१६	१९	२१	२४	२७	३०	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५६	६०	६३	६६	६९
	४२	२४	५	४९	३२	१६	१	४५	३२	१९	६	५८	४९	४४	३९	३६	३६	३७	४३	५१	१	१५	३३	५४
३५	२	५	८	११	१४	१६	१९	२२	२५	२८	३१	३४	३७	४०	४३	४६	४९	५२	५५	५९	६२	६५	६९	७२
	४८	३६	२५	१४	१	५३	४४	३५	२४	२२	१७	१४	१३	१३	१५	१९	२७	३६	४४	४	२२	४४	१०	४०
३६	२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४८	५१	५४	५७	६१	६४	६८	७१	७५
	५४	४९	४४	३५	३५	३१	२८	२७	२६	२७	२९	३२	३७	४५	५०	६	२०	३७	५७	२०	४७	१७	५१	३०
३७	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३०	३३	३६	४०	४३	४६	४९	५३	५६	६०	६३	६७	७०	७४	७८
	१	२	३	५	६	१०	१४	१९	२५	३३	४१	५२	५	१९	३६	५५	१७	४१	७	४०	१५	५४	३९	२४
३८	३	६	९	१२	१५	१८	२२	२५	२८	३१	३४	३८	४१	४४	४८	५१	५५	५८	६२	६६	६९	७३	७७	८१
	८	१५	२३	३२	४१	४७	९	१३	२६	४१	५६	१४	३४	५४	२०	४७	१७	४९	२५	५	४८	३६	२८	२५
३९	३	६	९	१३	१६	१९	२२	२६	२९	३२	३६	३९	४२	४६	५०	५३	५७	६०	६४	६८	७२	७६	८०	८४
	१४	२९	४४	०	१५	३२	५०	८	२९	५०	१४	३९	५	३६	८	४२	२०	५८	४६	३४	२६	२३	२५	३२
४०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२७	३०	३४	३७	४१	४४	४८	५१	५५	५९	६३	६७	७१	७५	७९	८३	८७
	२१	४३	५	२७	४७	१४	३८	४	३३	२	३३	६	४१	१८	५८	४१	२८	१७	१०	६	१०	१६	२८	४५
४१	३	६	१०	१३	१७	२०	२४	२८	३१	३५	३८	४२	४६	४९	५३	५७	६१	६५	६९	७३	७७	८२	८६	९१
	२९	५७	२५	५६	२७	५६	३०	४	३९	१६	५५	३५	१९	५८	५३	४४	३९	३८	४०	४७	७८	१५	३७	५
४२	३	७	१०	१४	१८	२१	२५	२९	३२	३६	४०	४४	४७	५१	५५	५९	६३	६८	७२	७६	८०	८५	८९	९४
	३६	१२	४९	२६	०	४३	२३	५	४८	३१	१९	६	५९	५४	५१	५१	५५	४	१५	३१	५३	२०	५३	३२
४३	३	७	११	१४	१८	२२	२६	३०	३३	३७	४१	४५	४९	५३	५७	६२	६६	७०	७४	७९	८३	८८	९३	९८
	४४	२८	१२	५७	४३	२७	१८	७	५८	५१	५६	४४	४४	४७	५३	२	१६	३३	५५	२२	५४	३२	१६	७
४४	३	७	११	१५	१९	२३	२७	३१	३५	३९	४३	४७	५१	५५	५९	६४	६८	७३	७७	८२	८७	९१	९६	१०१
	५२	४४	३४	२९	२३	१८	१४	१०	१२	१०	१७	२३	३२	४०	५७	१८	४१	९	४१	१९	२	५२	४८	५१
४५	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४९	५३	५७	६२	६६	७१	७५	८०	८५	९०	९५	१००	१०५
	०	०	१	२	५	४	१०	१९	२७	३७	४७	५	२४	४५	१०	४०	१३	५१	३४	२३	१८	१९	२८	४५
४६	४	८	१२	१६	२०	२५	२९	३३	३७	४२	४६	५०	५५	५९	६४	६९	७३	७९	८३	८८	९३	९८	१०४	१०९
	९	१७	२७	३७	४८	०	१३	२८	४६	५	२७	५२	२१	५०	२६	६	५०	३९	३३	३४	४१	५६	१८	४९
४७	४	८	१२	१७	२१	२५	३०	३४	३९	४३	४८	५२	५७	६२	६६	७१	७६	८१	८६	९१	९७	१०२	१०८	११४
	१८	३५	५३	१२	३२	५१	१६	४०	७	३६	८	४२	१७	२	४८	३८	३३	३४	४१	५०	१४	४२	१९	४
४८	४	८	१३	१७	२२	२६	३१	३५	४०	४५	४९	५४	५९	६४	६९	७४	७९	८४	८९	९५	१००	१०६	११२	११८
	२७	५३	२१	४९	१८	३९	२१	५५	३०	१०	५२	३७	२६	१८	१५	१७	२४	३६	५६	२२	१६	३९	३०	३२
४९	४	९	१३	१८	२३	२७	३२	३७	४२	४६	५१	५६	६१	६६	७१	७७	८२	८७	९३	९८	१०४	११०	११६	१२३
	३६	१३	५०	२७	५	४७	२९	१३	०	४९	४१	३७	३६	४०	४९	३	२०	४८	९०	५८	४९	४७	५५	१४

क्रान्त्यंश चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
५०	४	९	१४	१९	२३	२८	३३	३८	४३	४८	५३	५८	६३	६९	७४	७९	८५	९१	९६	१०२	१०८	११५	१२१	१२८
	४६	३२	१९	७	५६	४७	३९	३४	३१	३१	३५	४२	५३	९	२९	५६	२८	४	५४	५०	५४	८	३३	११
५१	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	४०	४५	५०	५५	६०	६६	७१	७७	८२	८८	९४	१००	१०६	११३	११९	१२६	१३३
	५६	५३	५१	४९	४९	५०	५३	०	७	१८	३३	५२	१६	४४	१७	५७	४४	३७	३९	४७	११	४३	२७	२५
५२	५	१०	१५	२०	२५	३०	३६	४१	४६	५२	५७	६३	६८	७४	८०	८६	९२	९८	१०४	१११	११७	१२४	१३१	१३८
	७	१५	२३	३२	४३	५४	१०	२७	४७	७	३७	९	४५	२६	१४	८	६	१९	३६	४	४३	३४	३८	५८
५३	५	१०	१५	२१	२६	३२	३७	४२	४८	५४	५९	६५	७१	७७	८३	८९	९५	१०२	१०८	११५	१२२	१२९	१३७	१४४
	१८	३७	५७	१८	४०	४	३१	५६	३२	८	४८	३२	२२	१७	१९	२८	४५	१०	४६	३२	३०	४१	८	५२
५४	५	११	१६	२२	२७	३३	३८	४४	५०	५६	६२	६८	७४	८०	८६	९३	९९	१०६	११३	१२०	१२७	१३५	१४३	१५१
	३०	१	३३	४	४०	१६	५५	३७	५२	११	४	२	७	१७	३४	०	३२	१६	९	१५	३४	९	०	१०
५५	५	११	१७	२२	२८	३४	४०	४६	५२	५८	६४	७०	७६	८३	९०	९६	१०३	११०	११७	१२५	१३२	१४०	१४९	१५७
	४३	२६	१०	५६	४३	३१	२४	१८	१८	२०	२८	४१	५९	३६	०	४२	३३	३५	४९	१७	५९	५८	१६	५६
५६	५	११	१७	२३	२९	३५	४१	४८	५४	६०	६७	७३	८०	८६	९३	१००	१०७	११५	१२२	१३०	१३८	१४७	१५६	१६५
	५६	५२	५०	४८	४९	५१	५७	७	१९	३५	०	२८	४	४६	३८	३८	३९	११	४७	३८	४५	११	०	१३
५७	६	१२	१८	२४	३०	३७	४३	५०	५६	६३	६९	७६	८३	९०	९७	१०४	११७	१२०	१२८	१३६	१४४	१५३	१६३	१७३
	१०	२०	३१	४४	५६	१०	३६	१	२८	१	४०	२५	१८	१९	२६	४९	१०	५	५	२१	५६	५४	१६	७
५८	६	१२	१९	२५	३२	३८	४५	५१	५८	६५	७२	७९	८६	९४	१०१	१०९	११७	१२५	१३३	१४२	१५१	१६१	१७१	१८१
	२४	४९	१५	४२	१२	४४	१७	५९	४४	३४	३०	२६	४४	४	३४	१६	१०	१९	४५	३२	३६	८	९	४६
५९	६	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५४	६१	६८	७५	८२	९०	९४	१०५	११३	१२२	१३०	१३९	१४९	१५८	१६९	१७९	१९१
	४०	२०	१	४४	२९	१८	१०	६	६	१६	३०	५२	२३	४	५६	५६	२०	५६	५९	८	५०	१	४७	१५
६०	६	१३	२०	२७	३४	४१	४९	५६	६३	७१	७८	८६	९४	१०२	११०	१११	१२७	१३७	१४०	१५६	१६६	१७१	१८९	२०१
	५६	५२	५०	५०	४६	५७	७	२१	४१	६	४२	२५	१७	२०	३७	५	५४	०	२७	१९	४१	३९	१८	५०
६१	७	१४	२१	२८	३६	४३	५१	५८	६६	७४	८२	९०	९८	१०६	११५	१२४	१३३	१४३	१५३	१६४	१७५	१८७	१९९	२१३
	१३	२७	४२	५९	१९	४३	११	४६	१९	१२	५	१२	११	५५	३८	३६	५४	३३	३७	७	१९	१०	५४	४५
६२	७	१५	२२	३०	३७	४५	५३	६१	६९	७७	८५	९४	१०२	१११	१२१	१३०	१४०	१५०	१६१	१७२	१८४	१९७	२११	२२७
	३२	४	३८	१७	५०	३६	२४	१६	१५	२१	४६	७	५६	५१	३	३२	२४	४०	२६	४७	५२	४९	५३	२७
६३	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	६४	७२	८०	८९	९८	१०७	११७	१२६	१३७	१४७	१५८	१७०	१८२	१९२	२०९	२२५	२४३
	५१	४३	३७	३३	३२	३७	४७	२	२६	५९	४२	१९	४६	११	५०	०	२९	२९	४	२१	३२	५१	४०	३७
६४	८	१६	२४	३२	४१	४९	५८	६६	७५	८४	९३	१०३	११२	१२२	१३३	१४४	१५५	१६७	१७९	१९३	२०७	२२३	२४१	२६३
	१२	२५	४०	५८	२०	४६	११	५९	४८	४६	५५	२१	५७	५८	१८	२	१६	६	३८	४	३८	४३	५८	३७
६५	८	१७	२५	३४	४३	५२	६१	७०	७९	८८	९८	१०८	११८	१२९	१४०	१५१	१६३	१७६	१९०	२०५	२२१	२४०	२६२	२८९
	३५	११	४९	३०	१५	४	४	१०	२५	५२	३३	२४	४२	१७	१४	४७	५२	४०	२३	१४	३७	११	११	१९
६६	८	१८	२७	३६	४५	५४	६४	७३	८३	९३	१०३	११४	१२४	१३६	१४७	१६०	१७३	१८७	२०२	२१९	२३८	२६०	२८९	३५४
	५९	०	२	९	२०	३७	१	३६	२१	१९	३३	४	५६	१३	५७	३२	२८	२८	३१	१०	५५	३४	१०	५४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

रवि क्रान्ति सारिणी

तारीख	जनवरी दक्षिण अं. क.	फरवरी दक्षिण अं. क.	मार्च दक्षिण अं. क.	अप्रैल उत्तर अं. क.	मई उत्तर अं. क.	जून उत्तर अं. क.	जुलाई उत्तर अं. क.	अगस्त उत्तर अं. क.	सितम्बर उत्तर अं. क.	अक्टूबर दक्षिण अं. क.	नवम्बर दक्षिण अं. क.	दिसम्बर दक्षिण अं. क.
१	२३ ४	१७ १८	७ ५२	४ १४	१४ ५६	२१ ५९	२३ ९	१८ ९	८ २८	२ ५९	१४ १६	२१ ४३
२	२२ ५९	१७ १	७ २९	४ ३८	१५ १४	२२ ७	२३ ५	१७ ५४	८ ७	३ २२	१४ ३५	२१ ५२
३	२२ ५४	१६ ४४	७ ६	५ १	१५ ३२	२२ १५	२३ १	१७ ३९	७ ४५	३ ४६	१४ ५४	२२ १
४	२२ ४८	१६ २७	६ ४३	५ २५	१५ ४९	२२ २२	२२ ५६	१७ २३	७ २३	४ ९	१५ १३	२२ १०
५	२२ ४२	१६ ९	६ २०	५ ४९	१६ ७	२२ २९	२२ ५१	१७ ७	७ १	४ ३२	१५ ३२	२२ १८
६	२२ ३५	१५ ५१	५ ५७	६ १२	१६ २४	२२ ३६	२२ ४५	१६ ५१	६ ३९	४ ५५	१५ ५०	२२ २६
७	२२ २८	१५ ३२	५ ३५	६ ३५	१६ ४१	२२ ४२	२२ ३९	१६ ३५	६ १६	५ १८	१६ ८	२२ ३३
८	२२ २१	१५ १३	५ १२	६ ५८	१६ ५७	२२ ४८	२२ ३३	१६ १८	५ ५४	५ ४१	१६ २६	२२ ४०
९	२२ १३	१४ ५४	४ ४९	७ २१	१७ १३	२२ ५३	२२ २६	१६ १	५ ३१	६ ४	१६ ४४	२२ ४६
१०	२२ ५	१४ ३५	४ २६	७ ४३	१७ २९	२२ ५८	२२ १९	१५ ४३	५ ९	६ २७	१७ १	२२ ५२
११	२१ ५६	१४ १५	४ ३	८ ६	१७ ४५	२३ ३	२२ ११	१५ २६	४ ४६	६ ५०	१७ १८	२२ ५८
१२	२१ ४७	१३ ५६	३ ४०	८ २९	१८ १	२३ ७	२२ ३	१५ ८	४ २४	७ १२	१७ ३४	२३ ३
१३	२१ ३७	१३ ३६	३ १७	८ ५१	१८ १६	२३ ११	२१ ५५	१४ ५०	४ १	७ ३५	१७ ५०	२३ ८
१४	२१ २७	१३ १६	२ ५४	९ १४	१८ ३०	२३ १४	२१ ४६	१४ ३२	३ ३८	७ ५७	१८ ६	२३ १२
१५	२१ १६	१२ ५६	२ ३१	९ ३६	१८ ४४	२३ १७	२१ ३७	१४ १३	३ १५	८ २०	१८ २२	२३ १५
१६	२१ ५	१२ ३५	२ ७	९ ५७	१८ ५८	२३ २०	२१ २८	१३ ५४	२ ५२	८ ४२	१८ ३७	२३ १८
१७	२० ५४	१२ १४	१ ४४	१० १८	१९ १२	२३ २२	२१ १८	१३ ३५	२ २९	९ ४	१८ ५२	२३ २१
१८	२० ४३	११ ५३	१ २१	१० ३९	१९ २६	२३ २४	२१ ८	१३ १६	२ ६	९ २५	१९ ७	२३ २३
१९	२० ३०	११ ३२	० ५७	११ ०	१९ ३९	२३ २५	२० ५८	१२ ५७	१ ४२	९ ४७	१९ २१	२३ २४
२०	२० १८	११ ११	० ३४	११ २१	१९ ५२	२३ २६	२० ४७	१२ ३७	१ १९	१० ९	१९ ३५	२३ २५
२१	२० ५	१० ४९	० १०	११ ४१	२० ४	२३ २७	२० ३६	१२ १८	० ५६	१० ३०	१९ ४८	२३ २६
२२	१९ ५२	१० २८	० १४	१२ २	२० १७	२३ २७	२० २४	११ ५८	० ३२	१० ५२	२० १	२३ २७
२३	१९ ३८	१० ६	० ३८	१२ २२	२० २९	२३ २७	२० १२	११ ३८	० ९	११ १३	२० १४	२३ २७
२४	१९ २४	९ ४८	१ २	१२ ४२	२० ४०	२३ २६	२० ०	११ १८	द० १५	११ ३५	२० २७	२३ २६
२५	१९ ९	९ २२	१ २६	१३ २	२० ५१	२३ २५	१९ ४७	१० ५७	० ३९	११ ५६	२० ३९	२३ २५
२६	१८ ५४	९ ०	१ ५०	१३ २१	२१ २	२३ २३	१९ ३४	१० ३६	१ २	१२ १७	२० ५१	२३ २३
२७	१८ ३९	८ ३८	२ १४	१३ ४१	२१ १२	२३ २१	१९ २०	१० १५	१ २६	१२ ३८	२१ २	२३ २१
२८	१८ २३	८ १६	२ ३८	१४ ०	२१ २२	२३ १९	१९ ६	९ ५४	१ ४९	१२ ५८	२१ १३	२३ १९
२९	१८ ७	८ ४	३ २	१४ १९	२१ ३२	२३ १६	१८ ५२	९ ३३	२ १२	१३ १८	२१ २४	२३ १६
३०	१७ ५१	० ०	३ २६	१४ ३७	२१ ४१	२३ १३	१८ ३८	९ १२	२ ३६	१३ ३८	२१ ३४	२३ १३
३१	१७ ३५	० ०	३ ५०	० ०	२१ ५०	० ०	१८ २४	८ ५	० ०	१३ ५७	० ०	२३ ९

वेलान्तर कोष्ठक (मिनट में)

ता रीख	जनवरी मि. से.	फरवरी मि. से.	मार्च मि. से.	अप्रैल मि. से.	मई मि. से.	जून मि. से.	जुलाई मि. से.	अगस्त मि. से.	सितम्बर मि. से.	अक्टूबर मि. से.	नवम्बर मि. से.	दिसम्बर मि. से.
	+	+	+	+	—	—	+	+	+	—	—	—
१	३ ३४	१३ ३८	१२ ३५	४ ७	२ ५२	२ २५	३ ३३	६ १५	+ ९	१० ७	१६ २१	११ ३
२	३ ५२	१३ ४६	१२ २३	३ ४९	३ ०	२ १६	३ ४५	६ ११	— १०	१० २७	१६ २३	१० ४३
३	४ २०	१३ ५४	१२ ११	३ ३२	३ ७	२ ७	३ ५६	६ ७	० २९	१० ४६	१६ २४	१० १८
४	४ ४८	१४ ०	११ ५९	३ १४	३ १३	१ ५७	४ ८	६ २	० ४८	११ ५	१६ २४	९ ५३
५	५ १६	१४ ६	११ ४६	२ ५६	३ १९	१ ४७	४ १८	५ ५७	१ ८	११ २३	१६ २३	९ २८
६	५ ४२	१४ १०	११ ३२	२ ३९	३ २४	१ ३६	४ २८	५ ५१	१ २८	११ ४३	१६ २१	९ ३
७	६ ९	१४ १४	११ १८	२ २२	३ २९	१ २५	४ ३८	५ ४४	१ ४८	११ ५९	१६ १७	८ ३७
८	६ ३५	१४ १७	११ ४	२ ४	३ ३३	१ १४	४ ४८	५ ३७	२ ९	१२ १६	१६ १४	८ ११
९	७ ०	१४ २०	१० ४९	१ ४८	३ ३६	१ ३	४ ५८	५ २९	२ २९	१२ ३३	१६ ९	७ ४५
१०	७ २५	१४ २१	१० ३४	१ ३१	३ ३९	० ५२	५ ७	५ २१	२ ५०	१२ ४९	१६ ४	७ १८
११	७ ४९	१४ २२	१० १८	१ १५	३ ४२	० ४०	५ १५	५ १२	३ ११	१३ ५	१५ ५८	६ ५१
१२	८ १३	१४ २२	१० २	० ५९	३ ४४	० २८	५ २३	५ ३	३ ३२	१३ २१	१५ ५२	६ २३
१३	८ ३६	१४ २१	९ ४६	० ४३	३ ४५	० ११	५ ३०	४ ५३	३ ५३	१३ ३६	१५ ४३	५ ५५
१४	८ ५८	१४ २०	९ २९	० २७	३ ४६	- ० ३	५ ३७	४ ५२	४ १४	१३ ५०	१५ ३४	५ २७
१५	९ २०	१४ १७	९ १२	+ १२	३ ४६	+ ० ९	५ ४४	४ ३१	४ ३६	१४ ४	१५ २५	४ ५८
१६	९ ४१	१४ १४	८ ५५	— ३	३ ४६	० २२	५ ५०	४ २०	४ ५७	१४ १७	१५ १५	४ २९
१७	१० ०१	१४ १०	८ ३८	० १७	३ ४५	० ३४	५ ५६	४ ८	५ १८	१४ ३०	१५ ४	४ ०
१८	१० २१	१४ ६	८ २१	० ३१	३ ४३	० ४८	६ १	३ ५५	५ ४०	१४ ४२	१४ ५२	३ ३१
१९	१० ४०	१४ १	८ ३	० ४५	३ ४१	१ १	६ ६	३ ४२	६ १	१४ ५३	१४ ३	३ २
२०	१० ५८	१३ ५५	७ ४५	० ५७	३ ३८	१ १४	६ १०	३ २८	६ २२	१५ ४	१४ २४	२ ३२
२१	११ १५	१३ ४८	७ २८	१ ११	३ ३५	१ २७	६ १३	३ २४	६ ४३	१५ १४	१४ १०	२ २
२२	११ ३२	१३ ४१	७ १०	१ २३	३ ३१	१ ४०	६ १६	२ ५९	७ ४	१५ २४	१३ ५५	१ ३२
२३	११ ४९	१३ ३४	६ ५१	१ ३५	३ २७	१ ५३	६ १९	२ ४४	७ २५	१५ ३३	१३ ३९	१ २
२४	१२ ४	१३ २४	६ ३३	१ ४६	३ २२	२ ६	६ २१	२ ३०	७ ४६	१५ ४१	१३ २२	० ३२
२५	१२ १९	१३ १७	६ १५	१ ५७	३ १७	२ १९	६ २३	२ १३	८ ७	१५ ४९	१३ ४	— ०२
२६	१२ ३२	१३ ७	५ ४७	२ ८	३ ११	२ २२	६ २३	१ ५६	८ २७	१५ ५६	१२ ४६	+ २८
२७	१२ ४५	१२ ५७	५ ३८	२ १८	३ ५	२ ४४	६ २३	१ ३९	८ ४८	१६ २	१२ २७	० ५८
२८	१२ ५८	१२ ४६	५ २०	२ २७	२ ५८	२ ५७	६ २३	१ २२	९ ८	१६ ७	१२ ७	१ २८
२९	१३ ९		५ ३	२ ३६	२ ५०	३ ९	६ २२	१ ४	९ २८	१६ १२	११ ४६	१ ५८
३०	१३ २०		४ ४४	२ ४४	२ ४२	३ २१	६ २०	० ४६	९ ४७	१६ १६	११ २५	२ २७
३१	१३ २९		४ २५		२ ३४		६ १८	० २८		१६ १९		२ ५६
	+	+	+	—	—	+	+	+	—	—	—	+

वेलान्तर कोष्ठक (समय समीकरण)

भारतीय स्टैण्डर्ड समय से स्थानीय स्पष्ट समय निकालते समय वेलान्तर संस्कार किया जाता है। भा. स्टै. स. में अक्षांशादि सारिणी के अनुसार किसी स्थान विशेष का जो अन्तर दिया हो वह ऋण या धन करके स्थानीय मध्यम समय आ जाता है। इसमें तारीख के अनुसार वेलान्तर संस्कार करने से स्थानीय स्पष्ट समय आता है। इसी स्पष्ट समय से आगे गणित किया जाता है। जब दिनमान से इष्टकाल निकालते हैं तब वेलान्तर संस्कार करते हैं। वेलान्तर ऋण हो तो जोड़कर और वेलान्तर धन हो तो घटाकर स्पष्ट स्थानीय समय निकाला जाता है। सूर्योदय से इष्टकाल बनाते समय जब सूर्योदय तथा जन्म समय दोनों ही भा. स्टै. स. में होते हैं। यह वेलान्तर संस्कार नहीं किया जाता। इसी पंचांग के पृष्ठ ९०-९१ पर सूर्योदय गणित में वेलान्तर प्रयोग पर सामग्री दी गई है। स्पष्ट स्थानीय मध्याह्न समय निकालने में वेलान्तर का प्रयोग किया जाता है। मध्याह्न गणित में वेलान्तर ऋण हो तो ऋण किया जाता है और धन हो तो धन किया जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पंचाग परिवर्तन पद्धति

इस पंचांग से अन्यान्य नगरों का पंचांग (सूर्योदय, सूर्यास्त, तिथि, नक्षत्र, योग, करण और दिनमान) बनाने का उदाहरण—

जिस नगर का सूर्योदय जानना हो तो उस नगर के आगे की अक्षांशादि सारिणी से देशान्तर मिनट लो। यदि मिनट +पूर्व के हों तो इस पंचांग के सूर्योदय में ऋण करें और मिनट -पश्चिम के हों तो धन करें, ऋण चिह्न हो तो धन करें और धन चिन्ह हो तो ऋण करें। यह इष्ट नगर का मध्याह्न सूर्योदय होगा। इसके बाद का इष्ट दिन (तारीख) की रविक्रान्ति-सारिणी से रविक्रान्ति लो। रविक्रांति और इष्ट नगर के अक्षांश इन दो उपकरणों से चरान्तर सारिणी से चरान्तर मिनट लो। यदि धन हों तो ऊपर से आये हुए मध्याह्न सूर्योदय में जोड़ें, ऋण हों तो हीन करें। वह इष्ट दिन का इष्ट नगर का स्टै. टा. से स्पष्ट सूर्योदय होगा। निकले हुए चरान्तर मिनट को पांच से गुणा करें तो वह पल होंगे। ऊपर के उदाहरण में चरान्तर मिनट सूर्योदय में धन किये हों तो यह पल दिनमान में ऋण करें, ऋण किये हों तो धन करें, यह अपने इष्ट दिन का इष्ट नगर का घटी-पलात्मक दिनमान होगा। इस दिनमान के घण्टा-मिनट बनाकर आए हुए सूर्योदय में मिला देने से सूर्यास्त होगा।

इस पंचांग में तिथ्यादि के घटी-पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय समय से हैं। इष्ट दिन और इष्ट नगर का लाया हुआ स्पष्ट सूर्योदय दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से पहले हो तो वह जितने मिनट पहले है, उसके पल बनाकर (१ मि.= २॥ पल) वह इस पंचांग के तिथ्यादि में मिला दें तथा बाद के मिनट हों तो उसके जितने पल हों इस पंचांग के तिथ्यादि में से घटा दें तो अपने-अपने इष्ट दिन के इष्ट नगर में स्पष्ट सूर्योदय से तिथ्यादि पंचांग होगा।

उदाहरण—दिनांक १० नवम्बर को जयपुर नगरी का इस पंचांग से सूर्योदय, सूर्यास्त, दिनमान और पंचांग बनाना है। इस पंचांग में इस दिन दिल्ली का सूर्योदय स्टैं. टा. घं. ६ मि. ४१ है। जयपुर दिल्ली से ५।४० पश्चिम में है (अक्षांशादि सारिणी में देखें)। अतः यह ५।४० इस पंचांग के सूर्योदय घं. ६ मि. ४१ में जोड़ दिये तो घं. ६ मि. ४६।४० हुए। यह जयपुर का इस पंचांग के मध्याह्न से सूर्योदय हुआ। अब रविक्रान्ति सारणी से ता. १० नवम्बर की रविक्रांति १७।९ दक्षिण है। जयपुर का अक्षांश २६।५५ है तो आगे चरान्तर सारणी से २७ अक्षांश और १७ क्रांति अंश के कोष्ठक में २ मिनट है। यह दक्षिण क्रांति होने के कारण ऋण किये जावेंगे। ऊपर के मध्याह्न सूर्योदय ६।४६।४० में २ मिनट कम किये तो जयपुर का स्पष्ट सूर्योदय ६।४४।४० आया। आये हुए चरान्तर मिनट २ को ५ से गुणा किया तो १० पल प्राप्त हुए। चरान्तर ऋण होने के कारण इस पंचांग के दिनमान २६।५७ में १० पल जोड़ने से जयपुर का दिनमान २७।०७ हुआ। यदि चरान्तर मिनट धन होते तो पलों को ऋण करना पड़ता। जयपुर का सूर्यास्त निकालने के लिए दिनमान २७।०७ के घड़ी-पलों के घण्टा-मिनट १०।५१ हुए। इनको जयपुर के सूर्योदय ६।४६।४० में जोड़ा तो सूर्यास्त १७।३७।४० हुआ। जयपुर और दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय में ३।२२ मिनट अथवा ८ पलों का ऋण अन्तर है। तिथि, योग, नक्षत्र, करण, भद्रा, ग्रह चाल आदि में सर्वत्र ३।२२ मिनट या ८ पल कम करने से जयपुर का मान आ जाता है।

चरान्तर सारिणी

मान लो १५ फरवरी को जोधपुर का चरान्तर निकालना है। दैनिक रविक्रांति सारिणी से इस दिन की रविक्रांति १२।५६ दक्षिण है। जोधपुर का अक्षांश २६।१८ है। चरान्तर सारिणी में खड़ी बायें हाथ की लाइन क्रान्तायांश की है और आड़ी ऊपर की लाइन अक्षांश की है तो क्रान्तायांश १२।५६ लगभग १३ के बराबर है। १३ क्रांत्यांश के सामने २६ अक्षांश के कोष्ठक में ३ चरान्तर मिनट दिये हैं। यह क्रांति दक्षिण होने के कारण ऋण हुए चरान्तर मिनट हुए।

क्रान्त्यंशा	उत्तराक्षांशः चरान्तर मिनट चरान्तर सारिणी																				क्रांति दक्षिण हो तो धन							
	यह मिनट क्रांति दक्षिण हो तो ऋण और क्रांति उत्तर हो तो धन																				उत्तर हो तो ऋण							
	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
१	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
२	३	३	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२
३	५	५	४	४	४	४	३	३	३	२	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२
४	६	६	६	५	५	५	५	४	४	४	३	३	३	२	२	२	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	३
५	८	८	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	४	३	३	२	२	२	१	१	०	०	०	१	२	२	२	३	४
६	१०	९	८	८	८	७	७	६	६	६	५	४	४	४	३	३	२	२	१	१	०	०	१	१	२	२	३	३	५
७	११	१०	१०	९	९	८	८	७	७	७	६	५	५	४	४	३	२	२	१	१	०	०	१	२	३	३	४	४	६
८	१२	१२	१२	११	१०	१०	९	८	८	७	७	६	६	५	४	४	३	२	२	१	०	०	१	२	३	३	५	५	६
९	१४	१४	१३	१२	१२	११	११	१०	९	८	८	७	६	६	५	४	४	३	२	१	०	०	१	२	३	४	५	६	७
१०	१६	१६	१५	१४	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	६	५	४	३	२	२	०	१	२	२	४	४	६	६	८
११	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	२	०	१	२	३	४	५	६	७	८
१२	१९	१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	११	१०	९	८	७	६	५	३	३	२	०	१	२	३	४	५	७	८	९
१३	२१	२०	२०	१८	१७	१६	१६	१५	१३	१२	१२	११	१०	८	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	७	८	१०
१४	२२	२२	२१	२०	१८	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	९	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	८	९	११
१५	२४	२४	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	८	७	६	४	३	२	१	१	२	४	५	७	८	१०	१२
१६	२६	२५	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	१०	९	८	६	५	४	२	१	१	२	४	६	७	९	११	१३
१७	२८	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१२	११	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१२	१४
१८	३०	२९	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१३	१४
१९	३२	३०	२९	२८	२६	२५	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१२	११	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१४	१५
२०	३४	३२	३०	२९	२८	२६	२४	२३	२१	२०	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१५	१६
२१	३५	३४	३२	३१	२९	२७	२६	२४	२२	२१	१९	१७	१६	१४	१२	१०	८	६	५	३	१	१	३	५	८	१०	१२	१५	१७
२२	३७	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२२	२०	१८	१६	१४	१२	११	९	६	५	३	१	१	३	६	८	११	१३	१६	१८
२३	३९	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१३	१२	९	७	५	३	१	१	४	६	९	११	१४	१६	१९
२४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१४	१२	१०	८	६	४	१	१	४	६	९	११	१४	१७	२०
	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

मिनट या ८ पल कम करने से जयपुर का मान आ जाता है।
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

देशान्तर =दिल्ली से पूर्व में+पश्चिम में—अन्तर स्टैण्डर्ड अन्तर—स्थानीय टाईम और स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
अयोध्या	यू.पी.	२६।४८	८२।१४	—१।५	+२०।००	इटावा	यू.पी.	२६।४७	७९।१२	—१३।५२	+७।१२	किस्तबाड़	जम्मू	३३।१२	७५।४८	—२६।४८	—५।४४
अक्कलकोट	बम्बई	१७।३३	७६।१२	—२५।१२	—३।५२	इम्फाल	मणिपुर	२४।५४	९३।५४	+४५।३६	+६६।४०	किशनगढ़ जं.	राजस्थान	२७।१०	७५।२२	—२८।३२	—७।२८
अम्बाला	हरियाणा	३०।२२	७६।४६	—२२।५६	—१।५२	इडुंकी	केरल	९।५१	७७।१४	—२१।४	०।१०	कोच्चि	केरल	१०।१०	७६।१५	—२५।१०	—३।५६
आकोला	महाराष्ट्र	२०।४२	७७।२	—२१।५२	—१०।१६	इटानगर	आं. प्रदेश	२६।५४	९३।३७	+४४।२४	+६५।३२	कोलगंगा	बिहार	२५।१६	८७।१६	+१९।४	+४०।४
अजमेर	राजस्थान	२६।२७	७४।४०	—३१।२०	—९।२४	इगतपुरी	महाराष्ट्र	१९।४१	७३।३५	—३५।४०	—१४।३६	कोहिमा	नागालैंड	२५।४१	९४।१०	+४६।१०	+६७।४
अमृतसर	पंजाब	३१।३८	७४।५३	—३०।२८	—१८।२८	इटारसी	म.प्रदेश	२२।३७	७७।४६	—१८।५६	+२।४	केलांग	हिमाचल	३२।४७	७७।४	—२१।३६	—०।४०
अहमदाबाद	गुजरात	२३।२	७२।३७	—३९।३२	—३।२४	इलाहाबाद	यू.पी.	२५।२८	८१।५२	—२।३४	+१८।३२	कोटा	राजस्थान	२५।११	७५।५०	—२६।४०	—५।३६
अलीगढ़	यू.पी.	२७।५४	७८।५	—१७।४०	—१०।१०	उन्नाव	उ. प्र.	२६।२३	८०।३०	—८।१०	+१३।४	कोल्हापुर	महाराष्ट्र	१६।४१	७४।१३	—३३।४	—१२।५
अहमदनगर	महाराष्ट्र	१९।५	७४।४४	—३१।४	—४।३२	उतरौला	उ. प्र.	२७।१९	८२।२८	—०।४	+२०।५६	कुशलगढ़	राजस्थान	२३।४	७४।२७	—३२।१२	—११।४
अलीगढ़ टोंक	राजस्थान	२५।५८	७६।६	—२५।३६	—१७।३६	ऊधमपुर	जम्मू	३२।५५	७२।७	—२९।३२	—८।२८	कूचबिहार	राजस्थान	२६।२०	८९।२५	+२७।४०	+४८।४४
अलीबाग	बम्बई	१८।३८	७२।५०	—३८।४०	—२।२४	उज्जैन	म. प्रदेश	२३।११	७५।४४	—२७।४	—६।१०	कृष्णा	कर्नाटक	१६।२५	७७।१९	—२०।४४	+०।२०
अलवर	राजस्थान	२७।३४	७६।३८	—२३।२८	—१०।३६	उदय मण्डलम	तमिलनाडु	११।१७	७६।४४	—२३।४	—२।१०	खम्भम	आं. प्र.	१७।१५	८०।११	—९।१६	+११।४८
अखनूर	कश्मीर	३२।५४	७४।३५	—३१।४०	+४।३६	उदयपुर	राजस्थान	२४।३५	७३।४२	—३५।१२	—१४।४	खण्डवा	म.प्र.	२१।५०	७६।२०	—२४।४०	—३।३६
अनूपशहर	यू.पी.	२८।२१	७८।२३	—१६।२७	+९।४४	उस्मानाबाद	महाराष्ट्र	१८।४	७६।५	—२५।४०	—४।३६	खेडब्रह्मा	गुजरात	२४।३	७३।४	—३७।३६	—१६।४०
अल्मोड़ा	यू.पी.	२९।३७	७९।४०	—११।२०	+१८।१६	एचलपुर	महाराष्ट्र	२१।१८	७७।३३	—१९।४८	+१।१६	गयाजी	बिहार	२४।४८	८५।१	+१०।४	+३१।४
अमेठी	यू.पी.	२६।४	८१।४८	—२।४८	+४०।२४	एटा कासगंज	उ. प्र.	२७।३५	७८।४१	—१५।१६	+५।४८	ग्वालियर	म.प्र.	२६।१४	७८।१०	—१७।२०	+३।४४
असिनसोल	बंगाल	२३।४२	८७।२०	—२०।४०	—१६।४	कच्छ भुज	गुजरात	२३।१५	६९।४०	—५१।२०	—३०।१६	गंगापुर	राजस्थान	२६।२९	७६।४४	—२३।४	—२।१०
अनूपगढ़	राजस्थान	२९।१०	७३।१३	—३७।४	+२१।१६	कन्नौज	उ. प्र.	२७।१२	७९।५८	—१०।४	+१०।५६	गाजीपुर	उ. प्र.	२५।२६	८३।३५	+४।२०	+२५।२४
अकबरपुर	यू.पी.	२६।२६	८२।३३	+०।१२	—२४।१०	कविरत्तिद्वीप	लक्षद्वीप	१०।१७	७२।२१	—४०।३६	—१९।३२	गान्तोक	सिक्किम	२७।२०	८८।२५	+२४।२०	+४५।२४
अमरेली	गुजरात	२१।३६	७१।१४	—४५।४	+५६।३६	कलकत्ता	प. बंगाल	२२।३५	८८।२४	+२३।३६	+४४।४०	गंगानगर	राजस्थान	२९।५२	७३।५१	—३४।३६	—१३।३२
अगरतला	त्रिपुरा	२३।५०	९१।२३	+३५।३२	+१।३२	कपूरथला	पंजाब	३१।२२	७५।१२	—२८।३२	—७।२८	गोंडा	उ. प्र.	२७।१०	८१।५८	—२।१२	+१८।५२
अनन्तपुरम	आं.प्रदेश	१४।४१	७७।३७	—१९।३२	+६२।४	करनाल	हरियाणा	२९।४२	७७।२	—२१।५२	—०।४८	गोरखपुर	उ. प्र.	२६।४६	८३।२६	—३।३२	+२४।३६
आईजोल	मिजोरम	२३।४५	९२।४५	+४१।१०	—१४।४	कन्याकुमारी	तमिलनाडु	८।४	७७।३६	—१९।३६	+१।२८	गोआ	गोआ	२५।१५	७३।४७	—३४।५२	—१३।४८
आहवा	गुजरात	२०।४७	७३।४२	—३५।१२	+३।१२	कल्पाद	हिमाचल	३१।४१	७९।१०	—१३।२०	+७।४४	गुवाहाटी	असम	२६।११	९१।४५	+३७।१०	+५८।४
आगरा	यू.पी.	२७।११	७८।२	—१७।५२	—१८।१०	करीमनगर	आं. प्र.	१८।२८	७९।४८	—१३।३६	+७।२८	गुरदासपुर	पंजाब	३२।३	७५।२७	—२८।१२	—७।४८
आबू	राजस्थान	२४।३६	७२।४४	—३९।४	+२३।५२	कानपुर	उ. प्र.	२६।२७	८०।२१	—८।३६	+१२।२८	गुना	म. प्र.	२४।४०	७७।३०	—२०।१०	—१।४
आजमगढ़	यू.पी.	२६।४६	८३।१२	+२।४८	+२९।५२	काठमाण्डो	नेपाल	२७।४२	८५।१७	+११।४८	+३२।१२	घाटमशर	उ. प्र.	२६।४८	८०।११	—९।१६	+११।४८
आरा	बिहार	२५।३६	८४।४२	+८।४८	+२८।३६	कांगड़ा मन्दिर	हिमाचल	३२।१९	७६।१८	—२४।४८	—३।४४	चंडीगढ़	चण्डीगढ़	३०।४०	७६।५२	—२२।३२	—१।२८
औरंगाबाद	बिहार	२४।४४	८४।२३	+७।३२	—७।४०	काशी	उ. प्र.	२५।२०	८३।०	—२।०	+२३।४	चन्दौसी	उ. प्र.	२८।२७	७८।४७	—१४।५२	+६।१२
औरंगाबाद	महाराष्ट्र	१९।५२	७५।१९	—२८।४४	+११।२८	कांचिपुरम	तमिलनाडु	१२।५१	७९।५३	—१०।२८	+१०।३६	चन्द्रपुर	महाराष्ट्र	१९।५६	७९।१७	—१२।५२	+८।१२
ओंगोलु	आंध्र प्र.	१५।३१	८०।६	—९।३६	+११।२८	कार्गिल	जम्मू-का.	३०।३०	७६।१३	—२५।४	—४।४	चिलास	जम्मू	३५।३६	७४।७	—३३।३२	—१२।२८
इन्दौर	म.प्रदेश	२२।४३	७५।५२	—२६।२८	—५।२८	किसनगढ़	राजस्थान	२७।५२	७०।३४	—४७।४४	—२६।४०	चीलो	राजस्थान	२७।२३	७३।१६	—३६।५६	—१५।५२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
चिक्कमगलूर	कर्नाटक	१३।१९	७५।४७	—२६।५२	—५।४८	डोंग	राजस्थान	२७।२८	७७।२०	—२०।४०	+०।२४	नागकोविल	तमिलनाडु	८।७	७७।४७	—१८।५२	+२।१२
चिन्नकूर	उ. प्र.	२५।१२	८०।५४	—६।२४	+१४।४०	डेराबाबा	पंजाब	३२।१२	७५।१४	—२९।४४	—८।४०	नीमच	राजस्थान	२४।२८	७४।५१	—३०।३६	—९।३२
चिनौड़गढ	राजस्थान	२४।५४	७४।४२	—३१।१२	—१०।१८	ढाका	बंगलादेश	२३।४३	९०।२५	+३१।४०	+५२।४४	नैनीताल	उ. प्र.	२९।२५	७९।२७	—१२।१२	+८।५२
छपरा	बिहार	२५।४७	८४।४७	+९।१८	+३०।१२	तलागंगा	तलागंगा	३२।५६	७२।२८	—४०।१८	—१९।१४	नेपालगंज	नेपालगंज	२८।३	८१।३७	—३।३२	+१७।३२
छतरपुर	म.प्र.	२४।५५	७९।३६	—११।३६	+९।२८	तराई	बंगाल	२६।४०	८८।३०	+२४।१०	+४५।१४	नीलगिरी	उड़ीसा	२१।२७	८६।४७	+१७।१८	+३८।१२
छिबरा मऊ	उ. प्र.	२७।१०	७९।२९	—१२।१४	+९।१०	तेजु	अ. प्रदेश	२७।५४	९६।१४	+५४।५६	+७६।१०	पटना	बिहार	२५।३७	८५।१३	+१०।५२	+३१।५६
छबराटोंक	राजस्थान	२४।४०	७६।५१	—२२।३६	—१।३२	तंजाबूर	तमिल.	१०।५१	७९।२१	—१२।३६	+८।२८	पठानकोट	पंजाब	३२।१८	७५।४२	—२७।१२	—६।१८
जगन्नाथपुरी	उड़ीसा	१९।४६	८५।५०	+१३।२०	+३४।२४	तिरूवन्तपुरम	केरल	८।४४	७७।२०	—२०।४०	+०।२४	पटियाला	पंजाब	३०।२२	७६।२५	—२४।२०	—३।१६
जबलपुर	म. प्र.	२३।१०	७९।५८	—१०।१८	+१०।५६	तुर -मेघालय	शिलङ्ग	२५।३१	९०।१५	+३१।१०	+५२।१४	परलकोट	म. प्र.	१९।४५	८०।४६	—६।५६	+१४।१८
जयपुर	राजस्थान	२६।५५	७५।५०	—२६।४०	—५।४०	थानेश्वर	पंजाब	२९।५८	७६।५६	—२२।१६	—१।१२	पणजी	गोआ	१५।४१	७३।१०	—३७।२०	—१६।१६
जलपाईगुड़ी	बंगाल	२६।३२	८८।४४	+२४।५६	+४६।१०	दतिया	म. प्र.	२५।३९	७८।२७	—१६।१२	+४।५२	पालनपुर	गुजरात	२४।११	७२।२७	—४०।१२	—१९।१८
जम्मू	जम्मू का.	३२।४३	७४।५४	—३०।२४	—९।२०	दरभंगा	बिहार	२६।१०	८५।५५	+१३।४०	+३४।४४	पाण्डिचेरी	तमिलनाडु	११।५६	७९।४८	—१०।४८	+१०।१६
जसवन्तनगर	जसवंतत	२६।५१	७८।५५	—१४।२०	+६।४४	दार्जलिंग	उ. प्र.	२७।३	८८।१७	+२३।१८	+४४।१२	पानीपत	हरियाणा	२९।२७	७६।५९	—२२।१४	—१।१०
जनकपुर	म. प्र.	२३।४२	८१।५१	—२।३६	—१८।२८	हिसपुर	असम	२६।२०	९२।१०	+३८।४०	+५९।४४	प्रयागराज	उ. प्र.	२५।२५	८१।५३	—२।२८	+१८।३६
जामनगर	गुजरात	२२।२७	७०।५	—४९।४०	—२८।३६	दिण्डुक्कल	तमिलनाडु	१०।१३	७८।५	—१७।४०	+३।२४	पूना	महाराष्ट्र	१८।३१	७३।५२	—३४।३२	—१३।२८
जालौर	राजस्थान	२५।३५	७२।४४	—३९।१४	—१८।१०	दिल्ली	राजधानी	२८।३८	७७।१४	—२१।१४	—०।१०	पोर्टब्लेयर	अन्दमान	११।४४	९२।४१	४०।४४	+६१।४८
जूनागढ़	गुजरात	२१।३२	७०।२७	—४८।१२	—२७।१८	द्वारका	गुजरात	२२।१६	६८।५७	—५४।१२	—३३।१८	पुष्करजी	राजस्थान	२६।२८	७४।३३	—३१।४८	—१०।४४
जोधपुर	राजरात	२६।१९	७३।१४	—३७।४४	—१६।४०	देहरादून	उ. प्र.	३०।१९	७८।१४	—१७।४४	+३।२०	पेशाबर	प. पाकि.	३४।१९	७१।३६	—४३।३६	—२२।३२
जौनपुर	उ. प्र.	२५।४३	८२।४३	+०।५२	+२१।५६	देशनोक	राजस्थान	२७।५४	७३।१६	—३६।५६	—१५।५२	पोरबन्दर	गुजरात	२१।३८	६९।३६	—५१।३६	—३०।३२
जींद	हरियाणा	२९।१९	७६।२३	—२४।२८	—३।२४	देवगढ़	उड़ीसा	२१।३२	८४।४५	+९।१०	+३०।१४	फतेहपुर	उ. प्र.	२७।१६	७७।४०	—१९।२०	+१।४४
जैसलमेर	राजस्थान	२६।५४	७०।५७	—४६।१२	—२५।१८	धर्मशाला	हिमाचल	३२।१६	७६।२३	—२४।२८	—३।२४	फरीदकोट	पंजाब	३०।४०	७४।४५	—३१।१०	—९।५६
जालन्धर	पंजाब	३१।१९	७५।३५	—२७।४०	—६।३६	धर्मपुरी	तमिलनाडु	१२।१८	७८।११	—१७।१६	+३।४८	फर्रुखाबाद	उ. प्र.	२७।३	७९।३७	—११।३२	+९।३२
जाफराबाद	सौराष्ट्र	२०।५२	७१।२१	—४४।३६	—३२।३२	धारवाड़	कर्नाटक	१५।२८	७५।१२	—२९।५२	—८।४८	फतेहपुर	राजस्थान	२७।५२	७५।१२	—२९।५२	—८।४८
झांसी	उ. प्र.	२५।२६	७८।३४	—१५।४४	+५।२०	धार	म. प्र.	२२।३६	७५।१२	—२९।१२	—८।१८	फुलेरा	राजस्थान	२६।५२	७५।१६	—२८।५६	—७।५२
झालावाड़	राजस्थान	२४।३६	७६।१९	—२५।२४	—४।२०	धौलपुर	राजस्थान	२६।४२	७७।५३	—१८।२८	+२।३६	फीरोजपुर	पंजाब	३०।५७	७४।३६	—३१।३६	—१०।३२
झुंझुनू	राजस्थान	२८।७	७५।२५	—२८।२०	—७।१६	धौलागिर	नेपाल	२९।११	८३।१०	—२१।१०	—२३।१४	फैजाबाद	उ. प्र.	२६।४७	८२।१८	—१।२८	+१९।३६
टोंक	राजस्थान	२६।१२	७५।५०	—२६।४०	—५।३६	धांग्रंधा	सौराष्ट्र	२२।५९	७१।३०	—४४।१०	—२२।५६	फीरोजबाद	उ. प्र.	२७।९	७८।२४	—१६।२४	+४।४०
टेरू	जम्मू	३६।१४	७२।४२	—३९।१२	—१८।१८	नवलगढ़	राजस्थान	२७।५१	७५।१२	—२९।१२	—८।१८	फूलपुर	उ.प्र.	२५।३२	८२।१७	—१।३२	+१९।३२
टनकपुर	उ. प्र.	२९।९	८०।१०	—९।२०	+११।४४	नसीराबाद	राजस्थान	२६।१८	७४।४६	—३०।५६	—९।५२	फाजिलका	पंजाब	३०।२५	७४।१३	—३३।४८	—१२।४४
टाटानगर	बिहार	२४।४६	८६।१३	+१४।५२	+३५।५६	नड़ियाद	गुजरात	२२।४१	७२।५२	—३८।३२	—१७।२८	फतेहगढ़	उ. प्र.	२७।२३	७९।३५	—११।४०	+९।२४
टेहरी	गढ़वाल	३०।२३	७८।३०	—१६।१०	+५।१४	नाथद्वारा	राजस्थान	२४।५६	७३।४८	—३४।४८	—१३।४४	बक्सर	बिहार	२५।३४	८३।५९	+५।५६	+२७।१०
टूंडला जं.	उ. प्र.	२७।१३	७८।१३	—१७।१८	+३।५६	नाभा	पंजाब	३०।२२	७६।१०	—२५।२०	—४।१६	बद्रीनाथ	उ. प्र.	३०।४४	७९।३०	—१२।१०	+९।१४
डायमण्ड	पं. बंगाल	२२।११	८४।१२	+६।४८	+२७।५२	नागपुर	महाराष्ट्र	२१।९	७९।१६	—१३।३६	+७।२८	बरेगल	आं. प्र.	१८।४	७९।५३	—१०।२८	+१०।३६
डिब्रूगढ़	असम	२७।२९	९४।५६	+४९।४४	+७०।४८	नासिक	महाराष्ट्र	२१।०	७३।४७	—३४।५२	—१३।४८	बड़ौदा	महाराष्ट्र	२२।१८	७३।१२	—३७।१२	—१६।१८
डूंगरपुर	राजस्थान	२३।५०	७३।४७	—३५।१८	—१४।१४	नाथना	राजस्थान	२७।५२	७१।५४	—४२।२४	—२१।२०	बलिया	उ. प्र.	२४।४४	८४।०९	+६।३६	+२७।४०
डिब्राई	यू. पी.	२८।१२	७८।१५	—१७।१०	+४।१४	नारनौल	राजस्थान	२८।१२	७६।१७	—२५।३२	—४।२८	बलोतरा	राजस्थान	२५।४९	७२।१६	—४०।५६	—१९।५२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आर्यभट्ट पञ्चाङ्गम्

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
बम्बई	महाराष्ट्र	१८ ५५	७२ ५०	— ३८ ४०	— १७ ३६
बरेली	उ.प्र.	२८ १२	७९ १४	— १२ १४	+ ८ ४०
बद्रीनाथ	कर्नाटक	१५ १३४	७६ ५२	— २२ ३२	— १ १८
बर्द्धमान	पं. बंगाल	२२ १५	८७ ५४	+ २१ ३६	+ ४२ ४०
बहराइच	उ. प्र.	२७ १३४	८१ ३७	— ३ ३२	+ १७ ३२
बस्ती	उ.प्र.	२६ ४८	८२ ४६	+ १ १४	+ २२ ४
ब्यावर	राजस्थान	२६ ५७	७३ ५४	— ३४ १४	— १३ २०
वाराणसी	उ. प्र.	२५ २०	८३ १०	+ २ १०	+ २३ १४
बासवाड़ा	म. प्रदेश	२३ १३३	७८ २६	— १६ १६	+ ४ ४८
बाराबंकी	उ. प्र.	२६ ५६	८१ १०	— ५ २०	+ १५ ४४
बालू घाट	प. दिजाज	२५ १४	८८ ४७	+ २५ ४८	+ ४६ १२
बाँदा	उ. प्र.	२५ २८	८० २१	— ८ ३६	+ १२ २८
बांदीकुई	राजस्थान	२७ २६	७६ २४	— २४ २४	— ३ २०
बूंदी	राजस्थान	२५ २७	७५ ४०	— २७ २०	— ६ १६
ब्रह्मकुण्ड	अरु. प्रदेश	२७ ५६	९६ १०	+ ५४ ४०	+ ७५ ४४
बंगलौर	कर्नाटक	१२ ५८	७७ ३५	— १९ ४०	+ १ २४
बैतूल	म. प्र.	२१ ५१	७७ ५६	— १८ १६	+ २ ४८
बेलगांव	कर्नाटक	१५ ५५	७४ ३१	— ३१ ५६	— १० ५२
बुलन्दशहर	उ. प्र.	२८ २४	७७ ५२	— १८ १३	+ २ ३२
बिलासपुर	हिमाचल	३१ १९	७६ ५०	— २२ ४०	— २ ३६
बिलासपुर	म. प्र.	२२ ५	८२ १०	— १ २०	+ १९ ४४
बिजनौर	उ. प्र.	२९ २३	७८ १९	— १७ १६	+ ३ ४८
बिहार शरीफ	बिहार	२५ १९	८५ ३२	+ १२ १८	+ ३३ १२
बीकानेर	राजस्थान	२८ १९	७३ १९	— २६ ४४	— १५ ४०
बीजापुर	कर्नाटक	१६ ५०	७५ ४२	— २७ १२	— ६ १८
बादर	कर्नाटक	१८ १०	७७ ४७	— १८ ५२	+ २ १२
बीरमगढ़	गुजरात	२३ १०	७२ १२	— ४१ ५२	— २० ४८
बोगरा	बंगलादेश	२४ ५१	८९ २४	+ २७ २६	+ ४८ ४०
भरतपुर	राजस्थान	२७ १५	७७ ३०	— २० १०	+ १ १४
भंडारा	महाराष्ट्र	२१ १०	७९ ४०	— ११ २०	+ ९ ४४
भरुच	गुजरात	२१ ४१	७३ १०	— ३८ १०	— १६ ५६
भटिन्डा	पंजाब	३० १९	७४ ५७	— ३० १२	— ९ १८
भदोही	उ. प्र.	२५ २४	८२ ३४	+ ० १६	+ २१ २०
भोपाल	म. प्र.	२३ १६	७७ १३	— २० २८	+ ० ३६
भीलवाड़ा	राजस्थान	२४ २१	७४ ४०	— ३१ २०	— १० १६
भिवानी	हरियाणा	२८ ४८	७६ ४८	— २५ २८	— ४ २४
भावनगर	गुजरात	२१ ४४	४२ १०	— ४२ २०	— २० १६
भुवनेश्वर	उड़ीसा	२० ५४	८५ ५२	+ १३ २८	+ ३४ ३२
भूसावल	महाराष्ट्र	२१ १२	७५ ४७	— २६ ५२	— ५ ४८
भूटान	भूटान	२७ ३०	९० १०	+ ३० १०	+ ५१ ४
भुजकच्छ	गुजरात	२३ १५	६९ ४१	— ५१ १६	— ३० १२
मथुरा	उ. प्र.	२७ २८	७७ ४१	— १९ १६	+ १ ४८
मद्रास	तमिलनाडु	१३ ५	८० १७	— ८ ५२	+ १२ १२
मणीपुर	मणीपुर	२४ २०	९३ ५८	— ४५ ५२	— ६६ ५६
मण्डी	हि. प्र.	३१ ४३	७६ ५८	— २२ ४	— १ १४
मल्लपुरम	केरल	११ ४	७६ ४	— २५ ४४	— ४ ४०
मालेगांवना	मालेगांव	२० ३१	७४ ३०	— ३२ १०	— १० ५६
मुरादाबाद	उ. प्र.	२८ ५०	७८ ५०	— १४ ४०	+ ६ २४
मुंगेर	बिहार	२५ २३	८६ ३०	+ १६ १०	+ ३७ १४
मुजफ्फरपुर	बिहार	२६ ५७	८५ २७	+ ११ ४८	+ ३२ ५२
मुजफ्फराबाद	कश्मीर	३४ ३३	७३ २७	— ३६ १२	— १५ ४
मेघालय	शिलंग	२५ ५७	८२ १०	+ ३८ १०	+ ५९ १४
मैसूर	कर्नाटक	१२ २९	७६ ४०	— २६ २०	— २ १६
मेरठ	उ. प्र.	२९ १२	७७ ४५	— १९ १०	+ २ १४
मिर्जापुर	उ. प्र.	२५ १०	८२ ३७	+ ० २८	+ २१ ३२
मेडतासिटी	राजस्थान	२६ ३९	७४ १३	— ३३ ४८	— १२ १४
यानामा	आं. प्रदेश	१६ ४६	८२ १३	— १ ४	+ १९ ५६
यासिन	केरल	३६ २१	७३ १९	— ३६ ४८	— १२ १४
यवतमाल	महाराष्ट्र	२० २४	७८ ४	— १७ २८	+ ३ ३६
यादगीर	कर्नाटक	१६ ४७	७७ ४	— १७ २८	+ ३ ३६
रतलाम	म. प्र.	२३ १९	७५ १३	— २९ ४८	— ८ ४४
रत्नागिरी	महाराष्ट्र	१६ ५९	७३ १९	— ३६ ४४	— १५ ४०
राजकोट	गुजरात	२२ १८	७० ५०	— ४६ ४०	— २५ २६
राजचूर	(कर्ना.)	१६ १२	७७ २१	— २० ३६	+ ० २८
राजमपेट	(आ. प्र.)	१४ १२	७९ ३४	— ११ ४४	+ ९ २०
रामपुर	(यू.पी.)	२८ ४७	७९ १२	— १३ ५२	+ ७ १२
रामेश्वर	(तमिल.)	९ १७	७९ ३४	— ११ ३४	+ ९ २०
रायबरेली	(उ. प्र.)	२६ १४	८१ २३	— ५ ४८	+ १५ ५६
राजमंड्रि	(आ. प्र.)	१७ ५	८१ ४८	— २ ४८	+ १८ १६
रायपुर	(म. प्र.)	२१ १५	८१ ३८	— ३ २८	+ १७ ३६
राजगढ़	(म. प्र.)	२४ ०	७६ ४४	— २३ १४	— २ ०
राजगढ़	(राज.)	२७ ४०	७६ २४	— २४ २४	— ३ २०
राजनन्द गांव	म.प्र.	२१ १५	८१ ५	— ५ ४०	+ १५ १५
रोहतक	(हरियम)	२८ ५४	७६ ३८	— २३ २८	— २ २४
रोपड़	(पंजा.)	३० ५७	७६ ३०	— २४ १०	— २ ५६
लखनऊ	(उ. प्र.)	२६ ५१	८० ५९	— ६ १४	+ १५ १०
ललितपुर	(उ. प्र.)	२४ ४२	७८ २४	— १६ २४	+ ४ ४०
लुधियाना	पंजाब	३० ३५	७५ ५३	— २६ २८	— ५ २४
शाहजहांमपुर	उ. प्र.	२७ ५४	७९ ५७	— १० १२	+ १० ५२
शिलांग	(मेघा.)	२५ ३४	९१ ४५	+ ३७ ३६	+ ५८ ४०
शिवपुरी	(म. प्र.)	२५ ३०	७८ ४	— १३ ४४	+ ३ २०
राजापुर	(म. प्र.)	२३ २४	७६ २४	— २५ १४	— ४ १०
शेरकिला	(काश्मी.)	३६ ५७	७३ ५३	— ३४ २८	— १३ २४
श्रीनगर	(काश्म.)	३४ १६	७४ ५१	— ३० ३६	— ९ १३ २
शिमला	(हिमा.)	३१ १६	७७ १०	— २१ २०	— ० १६
संतालपु	(गु.)	२३ ४७	७० २८	— ४८ १८	— २७ १४
सातारा	(महा.)	१७ ४७	७३ ५४	— ३४ २४	— १३ २०
सागर	(म. प्र.)	२३ ५०	७८ ४५	— १५ १०	+ ६ १४
सरदारशहर	(राज.)	२८ २७	७४ ३०	— ३२ १०	— १० ५६
सवाईमाधोपुर	(राज.)	२५ ५९	७६ २४	— २४ २४	— ३ २०
सहारनपुर	(उ. प्र.)	२९ ५९	७७ २३	— २० २८	+ ० ३६
सोमनाथ	(गुज.)	२१ १	७० २६	— ४८ १६	— २७ २२
सोलापुर	(महा.)	१७ ४०	७५ ४८	— ३० ४८	— ५ ४४
सोलन	(हिमा.)	३० ५५	७७ १९	— २१ २४	— ० २०
सूरत	(गुज.)	२१ १२	७२ ५०	— ३८ ४०	— १७ ३६
सिकन्दराबाद	आ. प्र.	१७ २७	७८ ३३	— १५ ४८	+ ५ १६
सिरोही	(राज.)	२४ ५६	७२ ५०	— ३८ ४०	— १७ ३६
सीकर	(राज.)	२७ ५१	७५ २४	— २९ ४	— ८ १०
सीतापुर	(उ. प्र.)	२७ ३६	८० ४०	— ७ २०	+ १३ ४४
हरिद्वार	(उ. प्र.)	२९ ५८	७८ १३	— १७ १८	+ ३ ५६
हरदोई	(उ. प्र.)	२७ २३	८० १०	— ९ २०	+ ११ ४४
हथुवा	हथुवा	२६ १२	८४ ५	+ ६ २०	+ २७ ४४
होशंगाबाद	(म. प्र.)	२२ ४६	७७ ४५	— १९ १०	+ २ १४
हजारीबाद	२४ १०	८५ २३	+ ११ ३२	— ३२ २७	— ३२ ३६
हाजीपुर	(उ.प्र.)	२५ ३५	८३ ११	+ २ ४४	— २३ ४८
होशियारपुर	(पंजा.)	३१ ३२	७५ ५५	— २६ २०	— ५ १६
हौशंगाबाद	(म. प्र.)	२२ ४६	७७ ४३	— १९ १८	+ १ ५६
हैदराबाद	(आन्ध्र)	१७ २७	७८ ३०	— १६ १०	+ ५ १४
हिसार	हरियाणा	२९ १४	७५ ४४	— २७ १४	— ६ १०
हैद्राबाद	पाकिस्तान	२५ २३	६८ २२	— ५६ ३२	— ३५ २८
हिंगाटा	(उड़ी.)	२० २२	८५ १२	+ १० ४८	+ ३१ ५२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दुनियां के कुछ देशों के अक्षांश आदि

विदेशी राजधानी एवं प्रमुख शहर	राष्ट्र	अक्षांश	रेखांश	क्षेत्रीय स्टै. टा. से. स्था. समयान्तर मि. सै.	ग्रीन्विच G.M.T. से क्षे. स्टै. समयान्तर घं. मि.	भारतीय स्टै.टा. से क्षे. स्टै. टा. समयान्तर घं. मि.	दिल्ली से पूर्व व पश्चि. देशान्तर समय संस्कार घं. मि. सै.	साम्पा. संस्कार
बेलिंगटन	न्यूजीलैंड	४१।१९उ.	१७४।०६पू.	—२०।५६	+ १२।१०	+ ६।३०	+६।३०।४८	—१।३
कानबेरा	आस्ट्रेलिया	३५।१५उ.	१४९।८पू.	—३।२८	" १०।०	" ४।३०	+४।०७।३६	"०।०७
आस्ट्रेलिया	दक्षिण	३२।०उ.	१४६।१०पू.	—१४।५२	" १०।०	" ४।३०	+४।३६।१२	"०।४७
टोकियो	जापान	३५।३९उ.	१३९।०५पू.	+ १९।०	" ९।०	" ३।३०	+ ४।१०।४	"०।४४
सेऊल	द. कोरिया	३७।३०उ.	१२७।० पू.	—३२।०	" ९।०	" ३।३०	+३।१९।४	"०।३३
प्योंगयांग	उ. कोरिया	३९।०उ.	१२५।३०पू.	—३८।०	" ९।०	" ३।३०	+३।१३।४	"०।३२
फार्मोसा	फार्मोसा	२५।१८उ.	१२१।३२पू.	—५३।५२	" ९।०	" ३।३०	+२।५७।१२	"०।३०
फिजांदीप	फिजी	१८।०द.	१७९।०पू.	+ ६।२६	" १२।०	" ६।३०	+६।०७।४	"१।८
पेइचिंग	चीन	३९।५०उ.	११६।२०पू.	—१४।४०	" ८।०	" २।३०	+२।३६।२४	"०।२६
हांगकांग	हांगकांग	२२।१८उ.	११४।१०पू.	—२३।२०	" ८।०	" २।३०	+२।२७।४४	"०।२२
जकार्ता	इंडोनेशिया	७।५७द.	११०।२०पू.	—८।४०	" ७।३०	" २।०	+२।१२।२४	"०।२१
सिंगापुर	मलाया	१।१६उ.	१०३।५७पू.	—३४।५२	" ७।३०	" २।०	+१।५६।१२	"०।१७
बैंगकोक	स्याम	१३।४५उ.	१००।३०पू.	—१८।०	" ७।०	" १।३०	+१।३३।४	"०।१५
रंगून	बह्मदेश	१६।४८उ.	९६।४८पू.	—५।२८	" ६।३०	" १।०	+१।१५।३६	"०।१२
मांडले	" "	२२।०उ.	९६।५पू.	— ५।४०	" ६।३०	" १।०	+ १।१५।२४	"०।१२
ल्हासा	तिब्बत	२९।४०उ.	९१।८पू.	+३४।३२	" ५।३०	" ०।०	+०।५५।३६	"०।९
ढाका	बांग्लादेश	२३।४३उ.	९०।२५पू.	+१।४०	" ६।०	" ०।३०	+०।५२।४४	"०।४
काडी	सीलोन लंका	७।१९उ.	८०।३२पू.	—०।०	" ५।३०	— ०।०	+ ०।२१।१२	"०।२
राज. दिल्ली	भारत	२८।३८उ.	७७।१४पू.	— २१।४	" ५।३०	+ ०।०	+ ०।०।१०	"०।०
काबुल	अफगानिस्तान	३४।३१उ.	६९।१२पू.	+ ६।४८	" ४।३०	— १।००	—०।३२।४८	+ ०।५
कराँची	प.पाकिस्तान	२४।५१उ.	६७।०पू.	—३२।०	" ५।०	" ०।३०	—०।४०।५६	"०।६
तेहरान	ईरान	३५।४४उ.	५१।२७पू.	—४।१२	" ३।३०	" २।०	—१।४३।८	"०।१७
एडन	एडन	१२।५८उ.	४५।१ पू.	+ ०।४	" ३।०	" २।३०	—२।४।५२	"०।२०
बगदाद	ईराक	३३।१८उ.	४४।३०पू.	—२।०	" ३।०	" २।३०	—२।१०।५६	"०।२१
अदन	एडन	१३।२५उ.	४५।०पू.	—०।०	" ३।०	" २।३०	—२।४।५६	"०।२०
रियाध	सऊदी अरब	२४।५०उ.	४६।१८पू.	+५।१२	" ३।०	" २।३०	—२।३।४४	"०।१९
मॉस्को	रूस	५५।४५उ.	३७।३५पू.	—२९।४०	" ३।०	" २।३०	—२।३८।३६	"०।२६
नाइरोबी	पूर्वी अफ्रीका	१।२०द.	३६।४४पू.	—३३।४	" २।३०	" ३।०	—२।४२।१०	"०।२७
दमास्कस	सीरिया	३३।३०उ.	३६।१८पू.	+ २५।१२	" २।०	" ३।३०	—२।४३।४४	"०।२७
अमन	जॉर्डन	३१।५७उ.	३५।५७ पू.	+२३।४८	" २।०	" ३।३०	—२।४५।८	"०।२८
जेरुसलेम	इसराइल	३१।४८उ.	३५।१२पू.	+२०।४८	" २।०	" ३।३०	—२।४।८	"०।२८
काहिरा	मिस्र	३०।१उ.	३१।१३पू.	+४।५२	" २।०	" ३।३०	—३।४।४	"०।३१
अंकारा	तुर्किस्तान	३९।५२उ.	३२।५९पू.	+ ११।५६	" २।०	" ३।३०	— २।५७।१०	"०।३०
ट्रांसवालय	दक्षि. अफ्रीका	२५।०द.	२९।०पू.	+ ४।०	" २।०	" ३।३०	—३।१२।५६	"०।३१
बल्गारिया	यूरोप	४३।१८उ.	२६।१७पू.	+ १४।५२	" २।०	" ३।३०	—३।२३।४८	"०।३३
एथेन्स	ग्रीस	३७।५९उ.	२३।२०पू.	— २६।४०	" २।०	" ३।३०	—३।३५।३६	"०।३६

विदेशी राजधानी एवं प्रमुख शहर	राष्ट्र	अक्षांश	रेखांश	क्षेत्रीय स्टै. टा. से. स्था. समयान्तर मि. सै.	ग्रीन्विच G.M.T. से क्षे. स्टै. समयान्तर घं. मि.	भारतीय स्टै.टा. से क्षे. स्टै. टा. समयान्तर घं. मि.	दिल्ली से पूर्व व पश्चि. देशान्तर समय संस्कार घं. मि. सै.	साम्पा. संस्कार
बेलग्रेड	यूगोस्लाविया	४४।५०उ.	२०।३७पू.	+ २२।२८	+ १।०	— ४।३०	—३।४६।२८	+ ०।३८
बुड़ापेस्ट	हंगरी	४७।२९उ.	१९।५ पू.	+ १६।२०	" १।०	" ४।३०	—३।५२।३६	"०।३९
बर्लिन	पूर्वीजर्मनी	५२।३२उ.	१३।२४पू.	— ६।२४	" १।०	" ४।३०	"४।१५।२०	"०।४२
ट्रिपोली	उत्तरी अफ्रीका	३२।५४द.	१३।१५पू.	— ७।०	" १।०	" ४।३०	"४।१५।५६	"०।४३
रोम	इटली	४१।५४उ.	१२।२९पू.	— १०।४	" १।०	" ४।३०	"४।१९।१०	"०।४८
यान	पश्चिच.जर्मनी	५०।४३उ.	७।६पू.	— ३१।३६	+ १।०	" ४।३०	"४।४०।३२	"०।४८
जेनेवा	स्विट्जरलैंड	४६।१२उ.	६।९पू.	— ३५।२४	" १।०	" ४।३०	"४।४४।२०	"०।४९
ब्रू सेल्स ×	बेल्जियम	५०।५१उ.	४।२१पू.	— ४२।३६	+ १।०	— ४।३०	"४।५१।३२	"०।५०
पेरिस ×	फ्रान्स	४८।५०उ.	२।२०पू.	— ५०।४०	+ १।०	" ४।३०	"४।५९।३६	"०।५१
ग्रीनविच	इंग्लैंड	५१।२९उ.	रे. शून्य	— ०।०	+ ०।०	" ५।३०	" ५।४।५६	"०।५१
लंदन	"	५१।३२उ.	०।५प.	— ०।२०	— ०।०	" ५।३०	" ५।९।१६	"०।५३
मॉड्रिड ×	स्पेन	४०।२५उ.	३।४५प.	— ७५।०	+ १।०	" ४।३०	"५।१३।५६	"०।५४
जिब्राल्टर "	जिब्राल्टर	३६।७उ.	५।२२ प.	— ८१।२८	+ १।०	" ४।३०	"५।३०।२४	"०।५७
लिस्बॅन	पुर्तगाल	३८।४२उ.	९।१०प.	— ३६।४०	— ०।०	" ५।३०	"५।४५।३६	"१।३७
अर्जेण्टाइना	द. अमेरिका	२६।१२द.	६४।४५प.	+ ४१।०	" ५।०	"१०।३०	"९।२७।५६	"१।४०
न्यूयॉर्क	अमेरिका	४०।४३उ.	७४।०५.	+ ४।०	" ५।०	"१०।३०	"१०।४।५६	"१।४०
ओटावा	कैनेडा	४५।२६उ.	७५।४१प.	— २।४४	" ५।०	"१०।३०	"१०।११।४०	"१।४०
वाशिंगटन	अमेरिका	३८।४३उ.	७७।०५.	— ८।०	" ५।०	"१०।०	"१०।१६।५६	"१।४२
मेक्सिको	मेक्सिको	१९।२५उ.	९९।१७प.	— ३७।४	" ६।०	"११।३०	"११।४६।४	"१।५७

नोट—× यहां ग्रीनविच मध्यम समय (G.M.T.) भी व्यवहार में चालू है।

रेलवे टाईम से देशी टाईम बनाने की रीति

जिस नगर का रेलवेअन्तर मिनट धन होवे उसके मध्य अन्तर को रेलवे टाइम में जोड देना और जहां ऋण चिन्ह होवे वहां पर मध्यान्तर मिनट घटा देने से अभीष्ट शहर का मध्यम समय प्राप्त होगा। जिस मास और तारीख का स्पष्ट समय जानना हो तो उस मास और तारीख के सामने जो वेलान्तर मिनट होवे उनको मध्यम टाइम में विपरीत (धन चिन्ह हो तो ऋण और ऋण चिन्ह हो तो धन) युक्त करने से अभीष्ट शहर का घण्टा मिनिटात्मक स्पष्ट समय उस दिन का होगा। (+) यह धन चिन्ह है। और (—) यह ऋण चिन्ह है।

समय भेद- इस समय समस्त भू-मण्डल पर जो समय प्रयोग में आ रहा है वह ब्रिटेन की राजधानी लन्दन के निकट ग्रीनविच(वेधशाला) से प्रसारित किया जाता है सभी देशों ने अपने-अपने यहां व्यवहार में लाने के लिए किसी एक स्थान विशेष को आधार मानकर स्वदेशीय स्टैण्डर्ड टाईम चालू कर रखा है। इस समय समस्त भारत वर्ष में जो समय प्रसारित किया जाता है, वह बनारस से कुछ पश्चिम में मिर्जापुर, चिरमिरी, बिलासपुर, कोटपाड़, घोरा और जुम्ला आदि स्थानों पर से गुजरने वाली काल्पनिक देशान्तर रेखा को आधार मानकर किया जाता है, जो कि ग्रीनविच से पूर्व रेखांश ८२।३० के अन्तर पर है। एक देशान्तर रेखा बराबर ४ मिनट + के हिसाब से ८२।३० × ४ =५ घं ३० मिनट का अन्तर हो ग्रीनविच और भारतीय स्टैण्डर्ड समय का अन्तर सदैव धन रहता है।

वर्तमान समय में- ८२।३० पूर्व देशान्तर रेखा से प्रसारित होने वाला भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समस्त भारत वर्ष में एक समान रहता है। इससे वायुयान, जलयान, रेलवे आदि के व्यवहारों में बहुत सुविधा रहती है। लेकिन अनभिज्ञ ज्योतिषी समय भेद का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण किसी भी स्थान के किसी भी आधार पर बने पंचांग का सूर्योदय चाहे जिस मान का लेकर इष्ट बना लेते हैं, यह ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से अपराध है। ज्योतिषियों को चाहिए कि पहले समय भेद को भली भाँति समझकर तदन्तर जन्म पत्र आदि बनावें।

इस समय समस्त घड़ियां स्टैण्डर्ड टाईम से चल रही हैं। प्राय धूप घड़ी का प्रचलन ही समाप्त हो चुका है। धूप घड़ी से बने पंचांग व उनमें छपी लग्न सारिणी, दिनार्ध से या दिनमानादि के द्वारा इष्ट बनाने की पुरानी विधि भी सर्वथा अनुचित है, क्योंकि धूप घड़ी के अनुसार कोई भी बच्चे का जन्म टाईम नोट नहीं करता, फिर भी रेलवे टाईम को देशी(धूप घड़ी) टाईम में बदलने की विधि हम ऊपर लिख चुके हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चालन कोष्ठक

मिनट	० घं.	१ घं.	२ घं.	३ घं.	४ घं.	५ घं.	६ घं.	७ घं.	८ घं.	९ घं.	१० घं.	११ घं.	१२ घं.	१३ घं.	१४ घं.	१५ घं.	१६ घं.	१७ घं.	१८ घं.	१९ घं.	२० घं.	२१ घं.	२२ घं.	२३ घं.
०	०	४२	८३	१२५	१६७	२०८	२५०	२९२	३३३	३७५	४१७	४५८	५००	५४२	५८३	६२५	६६७	७०८	७५०	७९२	८३३	८७५	९१७	९५८
१	१	४३	८४	१२६	१६८	२०९	२५१	२९३	३३४	३७६	४१८	४५९	५०१	५४३	५८४	६२६	६६८	७०९	७५१	७९३	८३४	८७६	९१८	९५९
२	२	४४	८५	१२७	१६९	२१०	२५२	२९४	३३५	३७७	४१९	४६०	५०२	५४४	५८५	६२७	६६९	७१०	७५२	७९४	८३५	८७७	९१९	९६०
३	३	४५	८६	१२८	१७०	२११	२५३	२९५	३३६	३७८	४२०	४६१	५०३	५४५	५८६	६२८	६७०	७११	७५३	७९५	८३६	८७८	९२०	९६१
४	४	४६	८७	१२९	१७१	२१२	२५४	२९६	३३७	३७९	४२१	४६२	५०४	५४६	५८७	६२९	६७१	७१२	७५४	७९६	८३७	८७९	९२१	९६२
५	५	४७	८८	१३०	१७२	२१३	२५५	२९७	३३८	३८०	४२२	४६३	५०५	५४७	५८८	६३०	६७२	७१३	७५५	७९७	८३८	८८०	९२२	९६३
६	६	४८	८९	१३१	१७३	२१४	२५६	२९८	३३९	३८१	४२३	४६४	५०६	५४८	५८९	६३१	६७३	७१४	७५६	७९८	८३९	८८१	९२३	९६४
७	७	४९	९०	१३२	१७४	२१५	२५७	२९९	३४०	३८२	४२४	४६५	५०७	५४९	५९०	६३२	६७४	७१५	७५७	७९९	८४०	८८२	९२४	९६५
८	८	५०	९१	१३३	१७५	२१६	२५८	३००	३४१	३८३	४२५	४६६	५०८	५५०	५९१	६३३	६७५	७१६	७५८	८००	८४१	८८३	९२५	९६६
९	९	५१	९२	१३४	१७६	२१७	२५९	३०१	३४२	३८४	४२६	४६७	५०९	५५१	५९२	६३४	६७६	७१७	७५९	८०१	८४२	८८४	९२६	९६७
१०	१०	५२	९३	१३५	१७७	२१८	२६०	३०२	३४३	३८५	४२७	४६८	५१०	५५२	५९३	६३५	६७७	७१८	७६०	८०२	८४३	८८५	९२७	९६८
११	११	५३	९४	१३६	१७८	२१९	२६१	३०३	३४४	३८६	४२८	४६९	५११	५५३	५९४	६३६	६७८	७१९	७६१	८०३	८४४	८८६	९२८	९६९
१२	१२	५४	९५	१३७	१७९	२२०	२६२	३०४	३४५	३८७	४२९	४७०	५१२	५५४	५९५	६३७	६७९	७२०	७६२	८०४	८४५	८८७	९२९	९७०
१३	१३	५५	९६	१३८	१८०	२२१	२६३	३०५	३४६	३८८	४३०	४७१	५१३	५५५	५९६	६३८	६८०	७२१	७६३	८०५	८४६	८८८	९३०	९७१
१४	१४	५६	९७	१३९	१८१	२२२	२६४	३०६	३४७	३८९	४३१	४७२	५१४	५५६	५९७	६३९	६८१	७२२	७६४	८०६	८४७	८८९	९३१	९७२
१५	१५	५७	९८	१४०	१८२	२२३	२६५	३०७	३४८	३९०	४३२	४७३	५१५	५५७	५९८	६४०	६८२	७२३	७६५	८०७	८४८	८९०	९३२	९७३
१६	१६	५८	९९	१४१	१८३	२२४	२६६	३०८	३४९	३९१	४३३	४७४	५१६	५५८	५९९	६४१	६८३	७२४	७६६	८०८	८४९	८९१	९३३	९७४
१७	१७	५९	१००	१४२	१८४	२२५	२६७	३०९	३५०	३९२	४३४	४७५	५१७	५५९	६००	६४२	६८४	७२५	७६७	८०९	८५०	८९२	९३४	९७५
१८	१८	६०	१०१	१४३	१८५	२२६	२६८	३१०	३५१	३९३	४३५	४७६	५१८	५६०	६०१	६४३	६८५	७२६	७६८	८१०	८५१	८९३	९३५	९७६
१९	१९	६१	१०२	१४४	१८६	२२७	२६९	३११	३५२	३९४	४३६	४७७	५१९	५६१	६०२	६४४	६८६	७२७	७६९	८११	८५२	८९४	९३६	९७७
२०	२०	६२	१०३	१४५	१८७	२२८	२७०	३१२	३५३	३९५	४३७	४७८	५२०	५६२	६०३	६४५	६८७	७२८	७७०	८१२	८५३	८९५	९३७	९७८
२१	२१	६३	१०४	१४६	१८८	२२९	२७१	३१३	३५४	३९६	४३८	४७९	५२१	५६३	६०४	६४६	६८८	७२९	७७१	८१३	८५४	८९६	९३८	९७९
२२	२२	६४	१०५	१४७	१८९	२३०	२७२	३१४	३५५	३९७	४३९	४८०	५२२	५६४	६०५	६४७	६८९	७३०	७७२	८१४	८५५	८९७	९३९	९८०
२३	२३	६५	१०६	१४८	१९०	२३१	२७३	३१५	३५६	३९८	४४०	४८१	५२३	५६५	६०६	६४८	६९०	७३१	७७३	८१५	८५६	८९८	९४०	९८१
२४	२४	६६	१०७	१४९	१९१	२३२	२७४	३१६	३५७	३९९	४४१	४८२	५२४	५६६	६०७	६४९	६९१	७३२	७७४	८१६	८५७	८९९	९४१	९८२
२५	२५	६७	१०८	१५०	१९२	२३३	२७५	३१७	३५८	४००	४४२	४८३	५२५	५६७	६०८	६५०	६९२	७३३	७७५	८१७	८५८	९००	९४२	९८३
२६	२६	६८	१०९	१५१	१९३	२३४	२७६	३१८	३५९	४०१	४४३	४८४	५२६	५६८	६०९	६५१	६९३	७३४	७७६	८१८	८५९	९०१	९४३	९८४
२७	२७	६९	११०	१५२	१९४	२३५	२७७	३१९	३६०	४०२	४४४	४८५	५२७	५६९	६१०	६५२	६९४	७३५	७७७	८१९	८६०	९०२	९४४	९८५
२८	२८	७०	१११	१५३	१९५	२३६	२७८	३२०	३६१	४०३	४४५	४८६	५२८	५७०	६११	६५३	६९५	७३६	७७८	८२०	८६१	९०३	९४५	९८६
२९	२९	७१	११२	१५४	१९६	२३७	२७९	३२१	३६२	४०४	४४६	४८७	५२९	५७१	६१२	६५४	६९६	७३७	७७९	८२१	८६२	९०४	९४६	९८७
३०	३०	७२	११३	१५५	१९७	२३८	२८०	३२२	३६३	४०५	४४७	४८८	५३०	५७२	६१३	६५५	६९७	७३८	७८०	८२२	८६३	९०५	९४७	९८८
३१	३१	७३	११४	१५६	१९८	२३९	२८१	३२३	३६४	४०६	४४८	४८९	५३१	५७३	६१४	६५६	६९८	७३९	७८१	८२३	८६४	९०६	९४८	८८९
३२	३२	७४	११५	१५७	१९९	२४०	२८२	३२४	३६५	४०७	४४९	४९०	५३२	५७४	६१५	६५७	६९९	७४०	७८२	८२४	८६५	९०७	९४९	९९०
३३	३३	७५	११६	१५८	२००	२४१	२८३	३२५	३६६	४०८	४५०	४९१	५३३	५७५	६१६	६५८	७००	७४१	७८३	८२५	८६६	९०८	९५०	९९१
३४	३४	७६	११७	१५९	२०१	२४२	२८४	३२६	३६७	४०९	४५१	४९२	५३४	५७६	६१७	६५९	७०१	७४२	७८४	८२६	८६७	९०९	९५१	९९२
३५	३५	७७	११८	१६०	२०२	२४३	२८५	३२७	३६८	४१०	४५२	४९३	५३५	५७७	६१८	६६०	७०२	७४३	७८५	८२७	८६८	९१०	९५२	९९३
३६	३६	७८	११९	१६१	२०३	२४४	२८६	३२८	३६९	४११	४५३	४९४	५३६	५७८	६१९	६६१	७०३	७४४	७८६	८२८	८६९	९११	९५३	९९४
३७	३७	७९	१२०	१६२	२०४	२४५	२८७	३२९	३७०	४१२	४५४	४९५	५३७	५७९	६२०	६६२	७०४	७४५	७८७	८२९	८७०	९१२	९५४	९९५
३८	३८	८०	१२१	१६३	२०५	२४६	२८८	३३०	३७१	४१३	४५५	४९६	५३८	५८०	६२१	६६३	७०५	७४६	७८८	८३०	८७१	९१३	९५५	९९६
३९	३९	८१	१२२	१६४	२०६	२४७	२८९	३३१	३७२	४१४	४५६	४९७	५३९	५८१	६२२	६६४	७०६	७४७	७८९	८३१	८७२	९१४	९५६	९९७
४०	४०	८२	१२३	१६५	२०७	२४८	२९०	३३२	३७३	४१५	४५७	४९८	५४०	५८२	६२३	६६५	७०७	७४८	७९०	८३२	८७३	९१५	९५७	९९८
४१	४१	८३	१२४	१६६	२०८	२४९	२९१	३३३	३७४	४१६	४५८	४९९	५४१	५८३	६२४	६६६	७०८	७४९	७९१	८३३	८७४	९१६	९५८	९९९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यबिम्ब द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुताबिक) सूर्योदय A.M.और सूर्यास्त P.M.स्थानिक समय में

उत्तर अक्षांश	अक्षांश ८		९		१०		११		१२		१३		१४		१५		१६		१७		१८		१९		दक्षिण अक्षांश
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	
मा. ता	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	मा. ता.
जन. १	६ १४	५ ५४	६ १६	५ ५२	६ १७	५ ५०	६ १९	५ ४९	६ २१	५ ४७	६ २३	५ ४५	६ २४	५ ४३	६ २६	५ ४१	६ २८	५ ४०	६ ३०	५ ३८	६ ३१	५ ३६	६ ३३	५ ३४	जुला. ३
७	१६	५७	१८	५५	१९	५३	२१	५२	२३	५०	२५	४८	२६	४७	२८	४५	३०	४३	३१	४१	३३	४०	३५	३८	९
१३	१८	६ ०	२०	५८	२१	५७	२३	५५	२४	५३	२६	५१	२८	५०	२९	४८	३१	४७	३३	४५	३४	४३	३६	४२	१५
१९	१९	३	२१	६ १	२२	६ ०	२४	५८	२५	५७	२७	५५	२८	५४	३०	५२	३१	५०	३३	४९	३५	४७	३६	४६	२२
२५	२०	५	२२	३	२३	२	२४	६ १	२६	५९	२७	५८	२८	५७	३०	५५	३१	५४	३३	५२	३४	५१	३६	४९	२८
३१	२०	७	२२	६	२३	५	२४	३	२५	६ २	२७	६ ०	२८	५९	२९	५८	३१	५७	३२	५५	३३	५४	३५	५३	अग. ४
फर. ६	२०	९	२१	८	२२	७	२३	५	२४	४	२६	३	२७	६ २	२८	६ १	२९	६ ०	३०	५८	३१	५७	३३	५६	१०
१२	१९	१०	२०	९	२१	८	२२	७	२३	६	२४	५	२५	४	२६	३	२७	२	२८	६ १	२९	६ ०	३०	५९	१६
१८	१७	११	१८	१०	१९	९	२०	८	२१	८	२२	७	२२	६	२३	५	२४	४	२५	३	२६	२	२७	६ २	२२
२४	१५	११	१६	१०	१७	१०	१७	९	१८	९	१९	८	१९	७	२०	७	२१	६	२२	५	२२	५	२३	४	२९
मार्च २	१३	१२	१४	११	१४	११	१५	१०	१५	१०	१६	९	१६	९	१७	८	१७	८	१८	७	१८	७	१९	६	सितं. ४
८	१०	१२	११	११	११	११	११	११	१२	१०	१२	१०	१२	१०	१३	९	१३	९	१४	९	१४	८	१४	८	१०
१४	८	११	८	११	८	११	८	११	८	११	९	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	९	१६
२०	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	२२
२६	१	१०	१	१०	१	११	१	११	१	११	१	११	०	१२	०	१२	०	१२	०	१२	०	१२	५ ५१	१३	२८
अप्रै. २	५ ५८	१०	५ ५८	१०	५ ५७	११	५ ५७	११	५ ५६	११	५ ५६	११	५ ५५	१२	५ ५५	१३	५ ५५	१३	५ ५४	१३	५ ५४	१४	५३	१४	अक्टू. ६
८	५५	९	५५	९	५४	१०	५३	११	५२	१२	५२	१२	५१	१३	५१	१३	५०	१४	५०	१४	५०	१५	४९	१६	११
१४	५२	९	५१	९	५०	१०	५०	११	४९	१२	४९	१२	४८	१३	४७	१४	४६	१५	४५	१६	४५	१६	४४	१७	१७
२०	४९	९	४८	१०	४७	११	४७	१२	४६	१२	४५	१३	४४	१४	४३	१५	४२	१६	४१	१७	४०	१८	३९	१९	२३
२६	४७	९	४६	१०	४५	११	४४	१२	४३	१३	४२	१४	४१	१५	४०	१६	३९	१७	३७	१८	३६	१९	३५	२१	२९
मई १	४५	९	४४	१०	४३	१२	४२	१३	४१	१४	४०	१५	३८	१६	३७	१७	३६	१९	३५	२०	३३	२१	३२	२२	नवं. ३
७	४३	१०	४२	११	४१	१२	४०	१४	३८	१५	३७	१६	३६	१८	३४	१९	३३	२०	३२	२२	३०	२३	२९	२४	९
१३	४२	११	४१	१२	३९	१३	३८	१५	३७	१६	३६	१७	३४	१९	३२	२१	३१	२२	२९	२३	२८	२५	२६	२७	१५
१९	४१	१२	४०	१३	३८	१५	३७	१६	३५	१८	३४	१९	३२	२१	३१	२२	२९	२४	२८	२६	२६	२७	२४	२९	२०
२५	४१	१३	४०	१४	३८	१६	३६	१८	३५	१९	३३	२१	३१	२३	३०	२४	२८	२६	२६	२८	२५	२९	२३	३१	२६
३१	४१	१४	४०	१६	३८	१८	३६	१९	३४	२१	३३	२२	३१	२४	२९	२६	२७	२८	२६	३०	२४	३२	२२	३३	दिसं. २
जून ६	४१	१६	४०	१७	३८	१९	३६	२१	३४	२३	३३	२४	३१	२६	२९	२८	२७	३०	२५	३२	२४	३४	२२	३६	७
१२	४२	१७	४१	१९	३९	२१	३७	२३	३५	२४	३३	२६	३१	२८	३०	३०	२८	३२	२६	३४	२४	३६	२२	३८	१३
१८	४३	१९	४२	२०	४०	२२	३८	२४	३६	२६	३४	२८	३२	३०	३१	३२	२९	३३	२७	३५	२५	३७	२३	३९	१९
२४	४५	२०	४३	२२	४१	२४	३९	२५	३८	२७	३६	२९	३४	३१	३२	३३	३०	३५	२८	३७	२६	३९	२४	४१	२४
३०	४६	२१	४५	२३	४३	२५	४१	२६	३९	२८	३७	३०	३५	३२	३३	३४	३२	३६	३०	३८	२८	३९	२६	४१	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उत्तर अक्षांश	अक्षांश ८		९		१०		११		१२		१३		१४		१५		१६		१७		१८		१९		दक्षिण अक्षांश
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	
मा. ता.	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	क मि	मा. ता.
जुला. ६	५ ४८	६ २२	५ ४६	६ २३	५ ४४	६ २५	५ ४२	६ २७	५ ४१	६ २९	५ ३९	६ ३०	५ ३७	६ ३२	५ ३५	६ ३४	५ ३३	६ ३६	५ ३१	६ ३८	५ ३०	६ ४०	५ २८	६ ४२	जन. ४
१२	४९	२२	४८	२४	४६	२६	४४	२७	४२	२९	४१	३०	३९	३२	३७	३४	३५	३६	३३	३८	३२	३९	३०	४१	१०
१८	५०	२२	४९	२३	४७	२५	४५	२७	४४	२९	४२	३०	४०	३२	३९	३३	३७	३५	३५	३७	३४	३९	३२	४०	१५
२४	५१	२३	५०	२३	४८	२५	४७	२६	४५	२८	४४	२९	४२	३१	४०	३२	३९	३४	३७	३५	३६	३७	३४	३९	२१
३०	५२	२१	५१	२२	४९	२३	४८	२५	४६	२६	४५	२७	४४	२९	४२	३१	४१	३२	३९	३३	३८	३५	३६	३६	२७
अग. ५	५३	१९	५२	२०	५०	२२	४९	२३	४८	२४	४७	२५	४५	२७	४४	२८	४२	३०	४१	३१	४०	३२	३८	३४	फर. १
११	५३	१७	५२	१८	५१	२०	५०	२१	४८	२२	४७	२३	४६	२४	४५	२५	४४	२७	४२	२८	४१	२९	४०	३०	७
१७	५३	१५	५२	१६	५१	१७	५०	१८	४९	१९	४८	२०	४७	२१	४६	२२	४५	२३	४४	२४	४३	२५	४२	२६	११
२३	५३	१२	५२	१३	५१	१४	५०	१५	४९	१६	४९	१७	४८	१८	४७	१८	४६	१९	४५	२०	४४	२१	४३	२२	१८
२९	५२	१०	५२	१०	५१	११	५०	१२	४९	१२	४९	१३	४८	१४	४७	१४	४७	१५	४६	१६	४५	१७	४४	१७	२४
सित. ४	५२	६	५२	६	५१	७	५०	८	४९	८	४९	९	४८	१०	४८	१०	४७	११	४७	११	४६	१२	४६	१२	मार्च २
१०	५१	३	५१	३	५०	४	५०	४	४९	५	४९	५	४९	५	४८	६	४८	६	४७	६	४७	७	४७	७	८
१६	५०	०	५०	०	५०	०	५०	०	४९	०	४९	०	४९	१	४९	१	४८	१	४८	१	४८	२	४८	२	१४
२२	४९ ५	५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५६	४९	५ ५७	४९	५ ५७	२०
२८	४९	५३	४९	५३	४९	५३	४९	५२	४९	५२	४९	५२	४९	५२	४९	५२	४९	५२	५०	५२	५०	५२	५०	५१	२६
अक्टू. ३	४८	५०	४८	५०	४८	५०	४९	४९	४९	४९	५०	४८	५०	४८	५०	४८	५०	४८	५०	४८	५१	४७	५१	४७	३०
९	४८	४७	४८	४६	४८	४६	४९	४६	४९	४५	५०	४४	५०	४४	५१	४४	५१	४३	५२	४३	५२	४२	५२	४२	अप्रै. ५
१५	४७	४४	४८	४३	४९	४३	५०	४२	५१	४१	५१	४१	५२	४०	५२	३९	५३	३९	५३	३८	५४	३७	५५	३७	१२
२१	४७	४२	४८	४१	४९	४०	५०	४०	५०	३९	५१	३८	५२	३७	५३	३६	५४	३६	५४	३५	५५	३४	५६	३३	१८
२७	४८	४०	४९	३९	५०	३८	५१	३७	५१	३६	५२	३५	५३	३४	५४	३३	५५	३२	५६	३१	५७	३१	५८	३०	२४
नव्रं. २	४९	३९	५०	३७	५१	३६	५२	३५	५३	३४	५४	३३	५५	३२	५६	३१	५७	३०	५८	२९	६ ०	२८	६ १	२६	३०
८	५०	३८	५१	३६	५२	३५	५४	३४	५५	३३	५६	११	५७	३०	५८	२९	६ ०	२८	६ ०	२७	२	२५	४	२४	मई ६
१४	५१	३७	५३	३६	५४	३५	५६	३३	५७	३२	५९	३०	६ ०	२८	६ १	२८	२	२६	४	२५	५	२४	७	२२	१२
२०	५४	३८	५५	३६	५६	३५	५८	३३	५९	३२	६ १	३०	२	२९	४	२७	५	२६	७	२४	९	२३	१०	२१	१९
२६	५६	३९	५८	३७	५९	३६	६ १	३४	६ २	३२	४	३०	५	२९	७	२८	९	२६	१०	२४	१२	२३	१४	२१	२५
दिसं. २	५९	४०	६ १	३८	६ २	३७	४	३५	५	३४	७	३२	९	३०	१०	२८	१२	२७	१४	२५	१६	२३	१७	२१	३१
८	६ २	४२	४	४०	५	३९	७	३७	९	३५	११	३३	१२	३२	१४	३०	१६	२८	१७	२६	१९	२५	२१	२३	जून ७
१४	५	४५	७	४३	८	४१	१०	३९	१२	३८	१४	३६	१५	३४	१७	३२	१९	३०	२१	२९	२३	२७	२५	२५	१३
२०	८	४७	१०	४५	११	४४	१३	४२	१५	४०	१७	३८	१८	३७	२०	३५	२२	३३	२४	३१	२६	२९	२८	२७	१९
२६	११	५०	१३	४८	१४	४७	१६	४५	१८	४३	२०	४१	२१	४०	२३	३८	२५	३६	२७	३४	२९	३२	३१	३०	२६

इस सारणी से ८ अक्षांश से ३४ अक्षांश तक भारत के सभी नगरों के सूर्योदय-सूर्यास्त आ जाते हैं। जिस नगर का जो अक्षांश हो उसके अनुसार देखकर स्थानीय समय जाना जा सकता है। भा. स्टै. टा. का जो अन्तर उस स्थान से है उसको ८२।३० से कम रेखांश में जमा करने और ८२।३० से अधिक रेखांश में कम करने से भा. स्टै.टा. में सूर्योदयास्त का समय आ जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यबिम्ब द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुताबिक) सूर्योदय A.M. और सूर्यास्त P.M. स्थानिक समय में

उत्तर अक्षांश	अक्षांश २०		अक्षांश २१		अक्षांश २२		अक्षांश २३		अक्षांश २४		अक्षांश २५		अक्षांश २६		अक्षांश २७		अक्षांश २८		अक्षांश २९		अक्षांश ३०		अक्षांश ३१		अक्षांश ३२		अक्षांश ३३		अक्षांश ३४		दक्षिण अक्षांश
मा. ता.	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	मा. ता.
जन. १	६ ३५	५ ३२	६ ३७	५ ३०	६ ३९	५ २८	६ ४१	५ २६	६ ४३	५ २४	६ ४५	५ २२	६ ४७	५ २०	६ ४९	५ १८	६ ५२	५ १६	६ ५४	५ १४	६ ५६	५ ११	६ ५८	५ ९	७ १	५ ७	७ ३	५ ४	७ ६	५ २	जुला. ३
७	३७	३६	३९	३४	४१	३२	४३	३०	४५	२८	४७	२६	४९	२४	५१	२२	५३	२०	५५	१८	५७	१६	५९	१४	२	११	४	९	६	७	९
१३	३८	४०	४०	३८	४१	३६	४३	३४	४५	३३	४७	३१	४९	२९	५१	२७	५३	२५	५५	२३	५७	२१	५९	१९	१	११	४	१४	६	१२	१५
१९	३८	४४	४०	४२	४१	४१	४३	३९	४५	३७	४७	३५	४८	३३	५०	३२	५२	३०	५४	२८	५६	२६	५८	२४	०	२२	२	२०	४	१८	२२
२५	३७	४८	३९	४६	४०	४५	४२	४३	४४	४१	४५	४०	४७	३८	४९	३६	५०	३५	५२	३३	५४	३१	५६	२९	६ ५८	२७	०	२५	२	२३	२८
३१	३६	५१	३७	५०	३९	४९	४०	४७	४२	४६	४३	४४	४५	४३	४६	४१	४८	३९	५०	३८	५१	३६	५३	३५	५५	३३	६ ५६	३१	६ ५८	२९	अग.४
फर. ६	३४	५५	३५	५४	३६	५२	३८	५१	३९	५०	४०	४८	४२	४७	४३	४६	४४	४४	४६	४३	४७	४१	४९	४०	५०	३८	५२	३७	५३	३५	१०
१२	३१	५८	३२	५७	३३	५६	३४	५५	३६	५३	३७	५२	३८	५१	३९	५०	४०	४९	४२	४८	४३	४६	४४	४५	४५	४४	४७	४२	४८	४१	१६
१८	२८ ६	१	२९ ६	०	३०	५९	३०	५८	३१	५७	३२	५६	३३	५५	३४	५४	३५	५३	३६	५२	३८	५१	३९	५०	४०	४९	४१	४८	४२	४७	२२
२४	२४	३	२४	३	२५ ६	२	२६ ६	१	२७ ६	०	२८ ६	०	२८	५९	२९	५८	३०	५७	३१	५६	३२	५५	३२	५५	३३	५४	३४	५३	३५	५२	२९
मार्च २	१९	५	२०	५	२०	४	२१	४	२२	३	२२	३	२३ ६	२	२३ ६	२	२४ ६	१	२५ ६	०	२५ ६	०	२६	५९	२७	५८	२७	५८	२८	५७	सित. ४
८	१५	७	१५	७	१५	७	१६	६	१६	६	१७	६	१७	५	१७	५	१८	५	१८	४	१९	४	१९ ६	३	१९ ६	३	२० ६	२	२० ६	२	१०
१४	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	१०	९	११	८	११	८	११	८	११	८	११	८	१२	८	१२	७	१२	७	१२	७	१३	७	१६
२०	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	११	४	१२	२२
२६	५ ५९	१३	५ ५९	१३	५ ५९	१३	५ ५९	१३	५ ५८	१४	५ ५८	१४	५ ५८	१४	५ ५८	१४	५ ५८	१५	५ ५७	१५	५ ५७	१५	५ ५७	१५	५ ५७	१५	५ ५६	१६	५ ५६	१६	२८
अप्रै. २	५३	१५	५३	१५	५२	१५	५२	१६	५१	१६	५१	१७	५१	१७	५०	१८	५०	१८	४९	१९	४९	१९	४८	२०	४८	२०	४७	२१	४७	२१	अक्टू.६
८	४८	१६	४७	१७	४७	१७	४६	१८	४६	१९	४५		४४	२०	४४	२१	४३	२१	४२	२२	४२	२३	४१	२४	४०	२४	३९	२५	३९	२६	११
१४	४३	१८	४२	१९	४२	१९	४१	२०	४०	२१	३९	२२	३८	२३	३७	२४	३७	२५	३६	२५	३५	२६	३४	२७	३३	२८	३२	२९	३१	३०	१७
२०	३८	२०	३८	२१	३७	२२	३६	२३	३५	२४	३४	२५	३३	२६	३१	२७	३०	२८	२९	२९	२८	३०	२७	३१	२६	३३	२५	३४	२३	३५	२३
२६	३४	२२	३३	२३	३२	२४	३१	२५	३०	२६	२८	२८	२७	२९	२६	३०	२५	३१	२३	३३	२२	३४	२१	३५	१९	३७	१८	३८	१७	४०	२९
मई १	३१	२३	३०	२५	२९	२६	२७	२७	२६	२९	२५	३०	२३	३१	२२	३३	२०	३४	१९	३६	१७	३७	१६	३९	१४	४०	१३	४२	११	४३	नवं. ३
७	२८	२६	२६	२७	२५	२९	२३	३०	२२	३२	२०	३३	१९	३५	१७	३६	१६	३८	१४	३९	१२	४१	११	४३	९	४५	७	४६	५	४८	९
१३	२५	२८	२३	३०	२२	३१	२०	३३	१९	३४	१७	३६	१५	३८	१३	४०	१२	४१	१०	४३	८	४५	६	४७	४	४९	२	५१	०	५३	१५
१९	२३	३०	२१	३२	१९	३४	१८	३६	१६	३७	१४	३९	१२	४१	१०	४३	८	४५	६	४७	४	४९	२	५१	०	५३	४ ५८	५५	४ ५६	५७	२०
२५	२१	३३	१९	३५	१७	३६	१६	३८	१४	४०	१२	४२	१०	४४	८	४६	६	४८	४	५०	२	५२	४ ५०	५५	४ ५७	५७	५५	५९	५३ ७	२	२६
३१	२०	३५	१८	३७	१६	३९	१४	४१	१२	४३	१०	४५	८	४७	६	४९	४	५१	२	५४	०	५६	५७	५८	५५ ७	०	५३ ७	३	५०	५	दिसं. २
जून ६	२०	३८	१८	४०	१६	४२	१४	४४	१२	४६	१०	४८	७	५०	५	५२	३	५४	१	५७	४ ५९		५९		५६ ७	१	५४	४	५१	६	४९	९	७
१२	२०	४०	१८	४२	१६	४४	१४	४६	१२	४८	१०	५०	७	५२	५	५४	३	५७	१	५९	५८ ७	१	५६	४	५३	६	५१	९	४८	१२	१३
१८	२१	४१	१९	४३	१७	४५	१५	४७	१२	५०	१०	५२	८	५४	६	५६	३	५९	१ ७	१	५९	३	५६	६	५४	८	५१	११	४८	१४	१९
२४	२२	४३	२०	४५	१८	४७	१६	४९	१४	५१	१२	५३	९	५५	७	५८	५ ७	०	२	२	५	०	५	५७	७	५५	१०	५२	१२	५०	१५	२४
३०	२४	४३	२२	४५	२०	४७	१८	५०	१६	५२	१३	५४	११	५६	९	५८	७	०	४	३	२	५	५९	८	५७	१०	५४	१३	५२	१५	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आर्यभट्ट पञ्चाङ्गम्

उत्तर अक्षांश	अक्षांश २०		अक्षांश २१		अक्षांश २२		अक्षांश २३		अक्षांश २४		अक्षांश २५		अक्षांश २६		अक्षांश २७		अक्षांश २८		अक्षांश २९		अक्षांश ३०		अक्षांश ३१		अक्षांश ३२		अक्षांश ३३		अक्षांश ३४		दक्षिण अक्षांश
मा. ता.	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	मा. ता.
जुला.६	५ २६	६ ४४	५ २८	६ ४६	५ २२	६ ४८	५ २०	६ ५०	५ १८	६ ५२	५ १६	६ ५४	५ १३	६ ५६	५ ११	६ ५८	५ ९	७ ०	५ ७	७ ३	५ ४	७ ५	५ २	७ ७	५ ०	७ १०	४ ५७	७ १२	४ ५४	७ १५	जन. ४
१२	२८	४३	२६	४५	२४	४७	२२	४९	२०	५१	१८	५३	१६	५५	१४	५७	१२	६ ५९	१०	१	७	४	५	६	३	८	५ ०	११	५८	१३	१०
१८	३०	४२	२८	४४	२६	४६	२५	४८	२३	४९	२१	५१	१९	५३	१७	५५	१५	५७	१३	६ ५९	१०	२	८	४	६	६	४	८	५ १	११	१५
२४	३२	४०	३१	४२	२९	४४	२७	४६	२५	४७	२४	४९	२२	५१	२०	५३	१८	५५	१६	५७	१४	६ ५९	१२	१	१०	३	८	५	५	७	२१
३०	३१	३८	३३	४०	३१	४१	३०	४३	२८	४४	२६	४६	२५	४८	२३	४९	२१	५१	१९	५३	१८	५५	१६	६ ५७	१४	६ ५९	१३	१	१०	३	२७
अग. ५	३७	३५	३५	३६	३४	३८	३२	३९	३१	४१	२९	४२	२८	४४	२६	४५	२५	४७	२३	४९	२१	५०	१९	५२	१८	५४	१६	६ ५६	१४	६ ५७	फर. १
११	३९	३२	३७	३३	३६	३४	३५	३५	३३	३७	३२	३८	३१	३९	२९	४१	२८	४२	२६	४४	२५	४५	२३	४७	२२	४८	२०	५०	१८	५२	७
१७	४०	२८	३९	२९	३८	३०	३७	३१	३६	३२	३५	३३	३३	३४	३२	३६	३१	३७	३०	३८	२८	३९	२७	४१	२६	४२	२४	४४	२३	४५	१३
२३	४२	२३	४१	२४	४०	२५	३९	२६	३८	२७	३७	२८	३६	२९	३५	३०	३४	३१	३३	३२	३२	३३	३१	३४	२९	३५	२८	३७	२७	२८	१८
२९	४४	१८	४२	१९	४२	२०	४१	२०	४०	२१	४०	२२	३९	२३	३८	२४	३७	२५	३६	२५	३५	२६	३४	२७	३३	२८	३२	२९	३१	३०	२४
मित. ४	४५	१३	४४	१३	४४	१४	४३	१५	४२	१५	४२	१६	४१	१७	४०	१७	४०	१८	३९	१९	३८	१९	३८	२०	३७	२१	३६	२१	३५	२२	मार्च २
१०	४६	८	४६	८	४५	८	४५	९	४५	९	४४	१०	४४	१०	४३	११	४२	११	४२	१२	४१	१२	४१	१३	४०	१३	४०	१४	८	
१६	४८	२	४७	२	४७	३	४७	३	४७	३	४६	३	४६	४	४६	४	४५	४	४५	४	४५	५	४५	५	४४	५	४४	६	१४	
२२	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	२०
२८	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५२	४९	५२	४९	५२	४९	५२	४९	५२	२६
अक्टू ३	५१	४७	५२	४६	५२	४६	५२	४६	५२	४५	५३	४५	५३	४५	५३	४४	५४	४४	५४	४४	५४	४३	५५	४३	५५	४३	५५	४२	५६	४२	३०
९	५३	४२	५३	४१	५४	४१	५४	४०	५५	४०	५५	३९	५६	३८	५६	३८	५७	३७	५७	३७	५८	३६	५८	३६	५९	३५	६ ०	३५	६ ०	३४	अप्रै.५
१५	५५	३७	५५	३६	५६	३५	५७	३५	५७	३४	५८	३३	५९	३३	६ ०	३२	६ ०	३१	६ १	३०	६ २	३०	६ २	२९	६ ३	२८	४	२७	५	२६	१२
२१	५७	३२	५८	३१	५८	३१	५९	३०	६ ०	२९	६ १	२८	६ २	२७	३	२६	४	२५	५	२४	६	२३	७	२२	८	२१	९	२०	१०	१९	१८
२७	५९	२९	६ ०	२७	६ १	२६	६ २	२५	३	२४	४	२३	५	२२	७	२१	८	२०	९	१९	१०	१८	११	१६	१२	१५	१४	१४	१५	१३	२४
नव. २	६ २	२५	३	२४	४	२३	५	२२	७	२०	८	१९	९	१८	१०	१७	११	१५	१३	१४	१४	१२	१६	११	१७	१०	१९	८	२०	७	३०
८	२	२३	६	२१	८	२०	९	१८	१०	१७	१२	१६	१३	१४	१५	१३	१६	११	१८	१०	१९	८	२१	७	२२	५	२४	३	२६	२	मई ६
१४	८	२१	१०	१९	११	१८	१३	१६	१४	१५	१६	१३	१७	११	१९	१०	२१	८	२२	६	२४	५	२६	३	२८	१	२९	४ ५९	३१	४ ५७	१२
२०	१२	२०	१३	१८	१५	१६	१७	१५	१८	१३	२०	११	२२	९	२४	८	२५	६	२७	४	२९	२	३१	०	३३	४ ५८	३५	५६	३७	५४	१९
२६	१५	१९	१७	१७	१९	१६	२१	१४	२२	१२	२४	१०	२६	८	२८	६	३०	४	३२	२	३४	०	३६	४ ५८	३८	५६	४०	५४	४३	५२	२५
दिस.२	१७	२०	१९	१८	२३	१७	२५	१६	२७	१२	२९	१०	३१	५८	३३	६	३५	४	३७	२	३९	०	४१	५८	४३	५५	४६	५३	४८	५१	३१
८	२०	२१	२५	१९	२७	१७	२९	१५	३१	१३	३३	११	३५	९	३७	७	३९	५	४१	३	४३	०	४६	५८	४८	५६	५०	५३	५३	५१	जून ७
१४	२७	२३	२८	२१	३०	१९	३२	१७	३५	१५	३७	१३	३९	११	४१	८	४३	६	४५	४	४८	२	५०	५९	५२	५७	५५	५५	५०	५२	१३
२०	३०	२५	३२	२३	३४	२१	३६	१९	३८	१७	४०	१५	४२	१३	४४	११	४७	०	४९	६	५१	४	५३	५ २	५६	५९	५८	५७	०	५४	१९
२६	३३	२८	३५	२६	३७	२४	३९	२२	४१	२०	४३	१८	४५	१६	४७	१४	४९	१५	५२	१०	५४	७	५६	५	५९	५ २	७	१५	०	७	४	५७	२६

दक्षिण अक्षांश के सूर्योदय निकालने के लिए इस कोष्ठक में दिये हुये (दाहिनी तरफ को) महीने और तारीख जो कि दक्षिण अक्षांश के नीचे दिये हुए हैं। यह संस्कार जनवरी से जून तक (+) जोड़ हैं और जुलाई से दिसम्बर तक (—) बाकी है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्य बिम्ब किरण वक्री भवन संस्कार युक्त सूर्योदय सारिणी से अभीष्ट स्थान से सूर्योदयास्त ज्ञात करना

किसी भी स्थान की लग्न निकालने के लिए निम्न बातों की जानकारी आवश्यक होती है:—(१) उस स्थान का सूर्योदय का समय, (२) इष्टकाल या जन्म समय (घड़ी पलों में), (३) जन्म समय या इष्ट समय का सूर्य स्पष्ट, (४) जन्म स्थान के अक्षांश की लग्न सारिणी।

(१) **सूर्योदय**—इस पंचांग में दिए दिल्ली के सूर्योदय की सहायता से भारत के किसी भी स्थान का सूर्योदय निकालने की विधि इस लेख में उदाहरण देकर समझा दी गई है। इस पंचांग में पृष्ठ १०२-१०५ पर ८ अक्षांश से ३४ अक्षांश तक के १२ महीने के सूर्योदय व सूर्यास्त ६-६ दिन के अन्तर पर दिए गए हैं। इसमें भारत के सभी नगर आ जाते हैं। यह सूर्योदय व सूर्यास्त स्थानीय समय बताते हैं, स्टैण्डर्ड समय जानने के लिये इसमें स्थान विशेष का स्टैण्डर्ड अन्तर जोड़-घटा लेना चाहिए, इसको कुछ उदाहरण देकर स्पष्ट करते हैं।

उदाहरण (१)—पृष्ठ ११२ पर दी गई सूर्योदय सारिणी से चण्डीगढ़ का १२ अक्टूबर का सूर्योदय निकालो : चण्डीगढ़ का उत्तर अक्षांश ३०.४० है।

उपरोक्त सारिणी में ३० अक्षांश तथा ३१ अक्षांश दोनों में ही

९ अक्टूबर का सूर्योदय	५-५८
१५ अक्टूबर का सूर्योदय	६-०२ दिया गया है।

९ से १५ तक ६ दिन में ४ मिनट का (६-०२-५-५८) अन्तर है तो ३ दिन (१२-९) में २ मिनट का अन्तर होगा, अतएव १२ अक्टूबर का सूर्योदय हुआ (५.५८+०.०२)

	६	००	००
स्थानीय समय के अनुसार सूर्योदय	६	००	००
भा.स्टै. समय के लिए चण्डीगढ़ का स्टैण्डर्ड अन्तर ०-२२-३२ जोड़ा	०	२२	३२
किरण वक्री भवन संस्कार	०	२	००
चण्डीगढ़ का सूर्योदय भा.स्टै. समय अनुसार	६	२४	३२

उदाहरण (२)—जयपुर का १५ मार्च का सूर्योदय पृष्ठ ११० पर दी गई सूर्योदय सारिणी के अनुसार निकालिये। जयपुर का उत्तर अक्षांश २६.५५ है जो लगभग २७ ही है। पृष्ठ ११० पर २७ अक्षांश के कोष्ठक में १४ मार्च का सूर्योदय ६-११ दिया है और २० मार्च का ६-०४ है। १४ मार्च से २० मार्च =६ दिन में सूर्योदय में अन्तर होता है ६-११—६-०४=७ मिनट का।

अतएव—१५ मार्च का सूर्योदय स्थानीय समयानुसार आया	६	१०	००
जयपुर का स्टैण्डर्ड अन्तर धन किया	०	२६	४०
किरण वक्री भवन संस्कार	०	२	००
भा.स्टै.टा. में जयपुर का सूर्योदय	६	३८	४०

जैसा कि उपरोक्त सारिणी के नीचे विवरण में बताया गया है। ३ से ५ मिनट का वक्री भवन संस्कार करना होता है। यह दृश्य वक्री भवन संस्कार क्या है, इसके बारे में थोड़ी जानकारी दे दी जाए। पूर्वी क्षितिज पर सूर्य के पूरे गोले को निकलने में कुछ समय लगता है। पहले सूर्य के गोले का ऊपरी भाग दिखाई देता है फिर धीरे-धीरे पूरा सूर्य क्षितिज के ऊपर आता है। प्रकाश किरणों के कुछ नियमों के अनुसार बिम्ब के दृश्यमान होने और वास्तविक उदय होने में कुछ मिनटों का अन्तर रहता है। यह ३ से ५ मिनट का होता है। आप यदि सदा ४ मिनट धन करें तो अधिक से अधिक १ मिनट का अन्तर इस गणित में आ सकता है।

(२) **इष्टकाल**—सूर्योदय ज्ञात होने पर इष्टकाल निकालने की विधि तो आपको बताई जा चुकी है।

(३) **सूर्य स्पष्ट**—पंचांग में दैनिक ग्रहस्पष्ट दिये रहते हैं, उसमें इष्ट दिन का सूर्य स्पष्ट अर्थात् सूर्य किस राशि के कितने अंश पर है, सरलता से जाना जा सकता है।

(४) **लग्न सारिणी**—अब आपको जन्म स्थान के अक्षांश की लग्न सारिणी की आवश्यकता होगी। आर्यभट्ट पंचांग के पृष्ठ ११३ पर इन्द्रप्रस्थ नगर की २८.३८ अक्षांश की सारणी दी गई है, इसकी सहायता से दिल्ली के आसपास के नगरों की लग्न ज्ञात की जा सकती है। २८ व २९ अक्षांशों के लिए इसी सारिणी को प्रयोग में लाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त हमने अन्य अक्षांशों की सारिणियां भी प्रकाशित की हैं।

इष्टकाल से लग्न निकालने की विधि यह है कि जिस दिन का लग्न जानना हो उस दिन का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करो। जैसे २५ जून का ११-५५ मध्याह्न का दिल्ली में लग्न ज्ञात करना है तो २५ जून का सूर्य स्पष्ट प्रातः ५.३० का २-९-४२ है। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्य के राशि-अंशों की आवश्यकता होती है। सूर्य मिथुन राशि के ९ अंश ४२ कला पर है। जन्म समय ११-५५ तक ९ अंश ५७ कला तक पहुंच चुका है। अतएव सूर्य को हम मिथुन के १० अंश मानकर चलेंगे। पंचांग में पृष्ठ ११३ पर इन्द्रप्रस्थ नगर की लग्न सारिणी में मिथुन राशि के १० अंश वाला कोष्ठक देखा। उसमें मिथुन २ के सामने तथा १० अंश के नीचे १३.१५ अथवा १३.१५ अंक प्राप्त होंगे। लग्न सारिणी में खड़े कोष्ठक १२ राशियों के हैं तथा आड़े कोष्ठक ० से २९ तक अंशों के हैं।

	घं.	मि.	सै.
२५ जून को ११-५५ का इष्टकाल निकाला			
दिल्ली में जन्म समय भा. स्टैं. टा.	११	५५	००
२५ जून का सूर्योदय समय भा. स्टैं. टा.	५	२८	००
ढाई से गुणा करके घड़ी पल बनाए	६	२७	००
	६	२७	००
	३	१३	३०
घड़ी पलों में इष्टकाल १६ घड़ी ८ पल	१६	७	३०

पृष्ठ ११३ पर ऊपर जो सारिणी है वह दशम भाव सारिणी है और नीचे लग्न सारिणी है। इसमें मिथुन के १० अंश के कोष्ठक में हमें १३.२७ अंक प्राप्त हुए, इनको इष्टकाल में जमा कर दिया— १३.२७ + १६.०८= २९.३५

उपरोक्त २९.२३ अंकों को हमने उसी लग्न सारिणी में देखा तो कन्या लग्न के सामने ३ अंशों के कोष्ठक में २९.२६ तथा ४ अंश के कोष्ठक में २९.३७ अंक मिले। इसका अर्थ यह हुआ कि २५ जून को ११.५५ मध्याह्न के समय कन्या लग्न है तथा उसके ३ अंश बीत चुके हैं। चौथे अंश की कुछ कलायें भी बीत चुकी हैं, अब यदि आपको केवल लग्न की राशि ज्ञात करनी है तो वह ज्ञात हो चुकी हैं, वैसे भी दैनिक लग्न सारिणी पृष्ठ ६३-८९ से भी आपको ज्ञात हो सकता है कि ११.३७ से १३.५५ तक कन्या लग्न है। लग्न सारिणी से अंश भी ज्ञात हो गए हैं, ४ अंश बीत गए हैं। कला का ज्ञान करने के लिए गणित किया। २९.३७ में से २९.२६ घटाया=११ अंकों में ६० कला तो इष्ट समय २९.३५ तक (२९.३५—२९.२६) = ९ अंकों में =६०×९=५४०÷११=४९.०५ लग्न आई ५.३.४९.०५ कन्या के ३ अंश ४९ कला ०५ विकला। यह स्थूल लग्न स्पष्ट हुआ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सुगम दशम भाव स्पष्ट सारणी सर्वत्रोपयोगी

राशि	मेष ०	वृषभ १	मिथुन २	कर्क ३	सिंह ४	कन्या ५	तुला ६	वृश्चिक ७	धनु ८	मकर ९	कुम्भ १०	मीन ११
०	८ २३ ५३ २६	९ १६ ४३ ३९	१० १५ ४६ ४८	११ २१ १४ ०	० २७ ९ २५	१ २९ ३८ ३	३ १ ४५ ७	४ ४ १० ७	५ १० ३९ १४	६ १४ ३८ १	७ ११ ४६ ५९	८ ३ २४ ३९
१	८ २४ ३७ ५६	९ १७ २३ २१	१० १६ ५२ ४२	११ २२ २७ ४५	० २८ १८ ३९	२ ० ४१ ५	३ १ ४८ ५	४ ५ १९ ५	५ ११ ५३ १	६ १५ ३९ २	७ १२ ५ ३२	८ ४ ५ १२
२	८ २५ १८ २६	९ १८ २९ ६	१० १७ ५७ ५८	११ २३ ४१ ३६	० २९ २७ ५२	२ १ ४३ १०	३ २ ५० ८	४ ६ २९ ३	५ १३ ६ ५	६ १६ ४८ ५	७ १३ २२ ३२	८ ४ ४९ ५
३	८ २५ ५९ ३८	९ १९ १९ २८	१० १९ ३ २	११ २४ ५५ २३	१ ० ३७ ६	२ २ ४५ १२	३ ३ ५२ १३	४ ७ ३८ २	५ १४ २० ३	६ १७ ४१ २	७ १४ ९ ३३	८ ५ २८ ३
४	८ २६ ४० ४३	९ २० १० ४२	१० २० ९ २७	११ २६ ९ ५६	१ १ ४६ १९	२ ३ ४७ १	३ ४ ५४ १५	४ ८ ४३ ०	५ १५ ३४ १५	६ १८ ४२ १	७ १४ ५६ ३०	८ ६ ९ ०
५	८ २७ २१ ४२	९ २१ १ २४	१० २१ १५ ३	११ २७ २३ २४	१ २ ५५ ३३	२ ४ ५० ०	३ ५ ५६ १९	४ ९ ५३ १	५ १६ ४८ २२	६ १९ ४३ ०	७ १५ ४३ २२	८ ६ ५० ८
६	८ २८ २ ४७	९ २१ २ ६	१० २२ २० ३६	११ २८ ३६ ४१	१ ४ ४ ४८	२ ५ ५२ ५	३ ६ ५९ २२	४ ११ ३ ५	५ १८ २ ११	६ २० ४४ ३	७ १६ ३० ७	८ ७ ३२ ७
७	८ २८ ४३ ५२	९ २२ ४२ ५४	१० २३ २९ १३	११ २९ ५० २६	१ ५ १४ २	२ ६ ५४ ८	३ ८ १ २	४ १२ २० १३	५ १९ १५ ३	६ २१ ४५ १	७ १७ २१ ५	८ ८ १२ ६
८	८ २९ २४ २७	९ २३ ३३ ४४	१० २४ ३१ ५१	० १ ४ ५३	१ ६ २३ १६	२ ७ ५९ ३	३ ९ २ ५	४ १३ ३५ २५	५ २० २९ २९	६ २२ ४६ ५०	७ १८ १४ ९	८ ८ ५३ १
९	९ ० ५ ५२	९ २४ २४ ३०	१० २५ २७ २४	० २ १८ १९	१ ७ ३२ ३०	२ ८ ५९ ७	३ १० ५ १४	४ १४ ४९ ३५	५ २१ ४३ १०	६ २३ ४७ २२	७ १९ ३८ १२	८ १० १५ ३
१०	९ ० ४० ११	९ २५ १८ १८	११ २६ ४१ २०	० ३ ३२ ७	१ ८ ४२ ५४	२ १० १ १३	३ ११ ८ ३८	४ १६ ४ ४५	५ २२ ५७ १५	६ २४ ४८ ११	७ २० २४ ८	८ १० ५६ ४२
११	९ १ २९ ५१	९ २६ ६ २	११ २७ ५१ २३	० ४ ४७ ५१	१ ९ ५६ ३२	२ ११ ३ २१	३ १२ १५ ५५	४ १७ १६ ८	५ २४ ११ २५	६ २५ ४९ ८	७ २० २४ ८	८ ११ २७ ४७
१२	९ २ १५ २६	९ २७ ८ ५४	१२ २९ ५ १२	० ६ २ २२	१ ११ २० ५	२ १२ ५ ३५	३ १३ २३ १७	४ १८ ३० ३	५ २५ १४ ४८	६ २६ ५० १५	७ २१ ५ ३	८ ११ २७ ४७
१३	९ ३ २ ३	९ २८ ९ ५८	११ ० ९ ८	० ७ १७ ४१	१ १२ ३५ ८	२ १३ ७ ५२	३ १४ २१ १२	४ १९ ४४ १०	५ २६ १९ ३७	६ २७ ५२ ३०	७ २१ ५६ १५	८ १२ १३ ३२
१४	९ ३ ४६ ३८	९ २९ १० ५४	११ १ ३२ ५३	० ८ ३१ १५	१ १३ ४४ १३	२ १४ १० ०	३ १५ ४२ ३	४ २० ५८ १	५ २७ २७ ३७	७ २८ ४० ३२	७ २२ ३८ २७	८ १२ ५९ २६
१५	९ ४ ३६ ४९	१० ० ११ ५८	११ २ ४६ ३७	० ९ ४५ ४२	१ १४ ३५ १३	२ १५ १२ १	३ १६ ५० ०	४ २२ १२ २	५ २८ ३० ३७	७ २९ १ ४०	७ २३ २९ ३७	८ १३ ४० १२
१६	९ ५ २३ १०	१० १ १२ ५८	११ ४ ० ३८	० ११ ० १३	१ १५ ४८ १९	२ १६ १४ ०	३ १८ १ १	४ २३ २५ ५	५ २९ ३६ ४२	७ ० १ ४५	७ २४ १६ ४८	८ १४ २० ४२
१७	९ ६ १० ४६	१० २ १३ ५४	११ ५ १४ २४	० १२ ९ २५	१ १६ १० २०	२ १७ १६ ७	३ १९ १ ८	४ २४ ३८ ३	५ ० ४२ ३	७ १ ४३ ७	७ २५ १२ १	८ १५ ३५ १
१८	९ ६ ५७ ४६	१० ३ १४ ५४	११ ६ २८ १०	० १३ १८ ३९	१ १७ १२ १५	२ १८ १८ १४	३ २० १९ १५	४ २५ ५५ ५७	६ १ ४७ ४	७ १ ४३ ७	७ २५ ५६ २	८ १६ २४ ३
१९	९ ७ ४४ ४८	१० ४ १५ ५४	११ ७ ४१ ५५	० १४ २७ ५२	१ १८ १४ ४	२ १९ २१ २२	३ २१ २८ २२	४ २७ ७ १२	६ २ ५३ ५	७ २ ३३ ३	७ २६ ३४ ३	८ १७ ५ ८
२०	९ ८ ३७ ४०	१० ५ १६ ५४	११ ८ ५५ ५५	० १५ ३७ ६	१ १९ १६ ८	२ २० २३ ३०	३ २२ ३८ ८	५ २८ १९ २५	६ ३ ५८ ३	७ ३ २४ ४	७ २७ १५ ५	८ १७ ४६ ६
२१	९ ९ २८ ५१	१० ६ १७ ५४	११ १० ९ ४०	० १६ ४६ १९	१ २० १८ ९	२ २१ २५ ३२	३ २३ ४८ ९	५ २९ ३४ १८	६ ४ ४ १५	७ ४ १५ ९	७ २७ ५६ ८	८ १८ २८ ०
२२	९ १० ५ १	१० ७ १८ ५४	११ ११ २३ २९	० १७ ५५ ३५	१ २१ २७ १०	२ २२ २७ १	३ २४ ५८ ३५	५ ० ४८ २१	६ ५ १५ २०	७ ५ ५७ २१	७ २८ ३७ १०	८ १९ ९ १
२३	९ ११ ७ १४	१० ८ १९ ५४	११ १२ ३७ १७	० १९ ४ ४८	१ २२ ३० १५	२ २३ ३० ५	३ २६ ९ ४२	५ २ २ ७	६ ६ २१ ३०	७ ६ ४६ २७	७ २९ १८ १२	८ १९ ५७ ५३
२४	९ ११ ४२ ५०	१० ९ २० ५४	११ १३ ५१ ५	० २० १४ १२	१ २३ ३२ ५५	२ २४ ३२ ८	३ २७ १७ ५६	५ ३ १६ ४	६ ८ २१ ३०	७ ७ ३८ ३५	८ २९ ५९ ५	८ २० ३१ ५९
२५	९ १२ २१ ४३	१० १० २१ ५४	११ १५ ४ ५७	० २१ २३ १६	१ २४ ३४ ७	२ २५ ३५ ९	३ २८ २४ २	५ ५ ४३ ३	६ ९ २६ ५	७ ८ २९ ४०	८ ० ४० ३०	८ २१ १२ १
२६	९ १३ २४ ४८	१० ११ २४ ३४	११ १६ १८ ४२	० २२ ३२ २९	१ २५ ३६ २	२ २६ ३७ १०	३ २९ ३३ ८	५ ५ ४३ ३	६ १० ३२ ८	७ ८ २९ ४०	८ १ २१ १२	८ २१ ५३ ५
२७	९ १४ २४ ५०	१० १२ २३ ३०	११ १७ ३२ २७	० २३ ४१ ४३	१ २६ ३८ ५	२ २७ ४० २५	४ ० ४२ ५	५ ६ ५३ १	६ ११ ३४ ३	७ ९ २० ४५	८ २ ३० १६	८ २२ ४५ ३
२८	९ १५ ६ १	१० १३ ३५ ४०	११ १८ ४६ २१	० २४ ५० ५६	१ २७ ४० ८	२ २८ ४२ ५०	४ १ ५२ ३	५ ८ ११ १५	६ १२ ३६ ४५	७ १० १० ५७	८ २ ३ ४	८ २२ १५ ४
२९	९ १५ ५६ ४८	१० १४ ४१ १७	११ २० ० १३	० २६ ० १२	१ २८ ५३ १	२ २९ ४३ ५९	४ ३ १ ७	५ ९ २५ ०	६ १३ ३७ ०	७ ११ ७ ५०	८ २ ३ ४	८ २२ १५ ४

दशमलग्न निकालने के लिए दशमभाव राशि फलांकों में ६ राशि योग से ४ भाव स्पष्ट होगा। चार भाव स्पष्ट में लग्न भाव घटाकर तीस गणित अंशादि बनाकर ६ का भाग देने से लब्ध फल लग्न में जोड़ने से लग्नभाव संधि और संधि में पूर्वागत लब्ध फल जोड़ने से दो भाव स्पष्ट होगा, आगे लब्ध फल जोड़ने पर चार भाव पर्यन्त ससंधि भाव बनेंगे। पूर्वागत लब्ध को एक में से घटाकर शेष के चार भावादि जोड़ने से ससंधि चार से सात भाव तक बनेंगे तथा लग्न स्पष्ट राशि के तुल्य सम सत्र में जो फल होवे वही दशम भाव स्पष्ट है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश १९° अयनांश २४ (अक्षांश १८-३० से १९-३० तक स्थित)

(बम्बई, पूना, खण्डाला, इगत पुरी, अहमद नगर, औरंगाबाद, जगन्नाथपुरी आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
मेष	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	७	१६	२५	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३६	४४	५३	२	११	२०	२९	३८	४७	५५	४	१३	२२
१	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२
वृष	३१	४०	४९	५७	६	१५	२४	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	५९	१०	२०
२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१७
मिथुन	३०	४१	५१	१	११	२२	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	२	१३	२४	३५	४६	५८	९	२०	३१	४२	५४	५	१६	२७	३८	५०
३	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
कर्क	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२३
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५	५	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४१	५२	३	१३	२४	३५	४५
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५६	७	१७	२८	३९	४९	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४७	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३३	४४	५५	५
६	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४
७	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५
वृश्चिक	४६	५६	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	६	१८	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५८	१०
८	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
धनु	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३८	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१	५२	२	१२	२२	३३	४३	५३	३	१४	२४
९	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४५	५४	३	११	२०	२९	३८	४७	५६	५	१४	२२	३१	४०	४९	५८	७	१६	२४	३३	४२	५१	०
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
कुम्भ	९	१८	२७	३५	४४	५३	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	४
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३
मीन	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २१° अयनांश २४ (अक्षांश २०-३० से २१-३० तक स्थित)

(अजन्ता, अमरावती, छिन्दवाड़ा, कटक, नासिक, खण्डवा, जूनागढ़, धूलिया, नागपुर, पोरबन्दर, भुवनेश्वर, सूरत, सोमनाथ आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७
मेष	६	१४	२२	३०	३७	४५	५३	२	१०	१९	२८	३७	४५	५४	३	१२	२०	२९	३८	४६	५५	४	१३	२१	३०	३९	४८	५६	५	१४
१	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
वृष	२३	३१	४०	४९	५७	६	१५	२५	३५	४६	५६	६	१६	२६	३७	४०	५७	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	५०	०	१०
२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७
मिथुन	२०	३१	४१	५१	१	१२	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४१	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०
३	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३
कर्क	५२	३	१४	२५	३६	४८	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१७	२८	४०	५१	२	१३	२४	३६	४७	५८	९	२१	३२	४३	५४	५	१६
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	२८	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	७	१८	२९	४०	५०	२	१२	२३	३४	४५	५६	७	१७	२८	३९	५०	१	१२	२२	३३	४४
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५५	६	१७	२७	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४२	५३	४	१५	२६	३७	४७	५८	९
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	२	१३	२४	३५	४७	५८	९	२०	३१	४३
७	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
वृश्चिक	५४	५	१६	२७	३८	५०	१	१२	२३	३५	४६	५७	८	१९	३१	४२	५३	४	१६	२७	३८	४९	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९
८	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	३१	४२	५३	४	१५	२७	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९	४९	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२२	३२	४२	५२	३	१३	२३	३३
९	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	४३	५४	४	१४	२४	३५	४५	५४	२	११	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१३	२२	३१	४०	४८	५७	६
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९
कुम्भ	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१५	२२	३०	३८	४६	५३	१	९	१७	२५	३२	४०	४८	५६	३	११	१९	२७	३४	४२	५०	५८	५
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
मीन	१३	२१	२९	३७	४४	५२	०	८	१५	२३	३१	३९	४७	५४	२	१०	१७	२५	३३	४१	४९	५६	४	१२	२०	२७	३५	४३	५१	५८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २३° अयनांश २४ (अक्षांश २२-३० से २३-३० तक स्थित)

(उज्जैन, धार, इन्दौर, रतलाम, बांसवाड़ा, भोपाल, होशंगाबाद, इटारसी, कलकत्ता, जबलपुर, राँची, नाडियाद, जामनगर, बड़ोदरा, अहमदाबाद आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७
मेष	२	१०	१८	२५	३३	४०	४८	५७	५	१४	२२	३१	४०	४८	५७	५	१४	२२	३१	४०	४८	५७	६	१४	२३	३१	४०	४९	५७	६
१	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२
वृष	१४	२३	३२	४०	४९	५७	६	१६	२६	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	५०	०
२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७
मिथुन	१०	२०	३०	४०	५०	१	११	२२	३४	४५	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	२०	३१
३	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	५९	११
४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	३९	५१
७	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
वृश्चिक	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०
८	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४२	५२	२	१२	२२	३२	४३
९	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
मकर	५३	३	१३	२३	३४	४४	५४	२	११	२०	२८	३७	४५	५४	३	११	२०	२८	३७	४६	५४	३	११	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२	१९	२७	३५	४२	५०	५७	५	१३	२०	२८	३५	४३	५१	५८	६	१३	२१	२९	३६	४४	५१	५९	७
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१४	२२	२९	३७	४५	५२	०	७	१५	२३	३०	३८	४५	५३	१	८	१६	२३	३१	३९	४६	५४	१	९	१७	२४	३२	३९	४७	५५

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २५° अयनांश २४ (अक्षांश २४-५० से २५-५० तक स्थित)

(आबूरोड, उदयपुर, मेवाड़, बूंदी, कोटा, जालौर, सिरोही, चित्तोड़गढ़, नाथद्वारा, नीमच, प्रतापगढ़, भवानीमंडी, छोटीसादड़ी, छतरपुर, गया, मणिपुर, इलाहाबाद, ओरछा, काशी, गाजीपुर, अम्बाजी, झांसी, पटना, शिलांग, चित्रकूट आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५८	६	१३	२१	२८	३६	४३	५१	०	८	१७	२५	३४	४२	५१	५९	८	१६	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२४	३२	४१	४९	५८
१	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृष	६	१५	२३	३२	४०	४८	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२१
३	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	३३	४४	५५	७	१८	३०	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५
४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१६	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	५	१७	२८	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	८	१९	३१	४२
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५३	४	१५	२६	३८	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४३	५४	६	१७
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	२८	३९	५०	१	१३	२४	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९
७	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
वृश्चि.	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	२	१२	२२	३२	४२	५२
९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	२	१२	२२	३३	४३	५३	३	१२	२०	२८	३७	४५	५४	२	११	१९	२८	३६	४५	५३	१	१०	१८	२७	३५	४४	५२	१	९	१८
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	२६	३५	४३	५२	०	८	१७	२४	२	३९	४७	५४	२	९	१६	२४	३१	३९	४६	५४	१	८	१६	२३	३१	३८	४६	५३	१	८
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१५	२३	३०	३७	४५	५३	०	७	१५	२२	३०	३७	४५	५२	५९	७	१४	२२	२९	३७	४४	५१	५९	६	१४	२१	२९	३६	४४	५१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २६° अयनांश २४ (अक्षांश २५-३० से २६-३० तक स्थित)

(अजमेर, जोधपुर, ग्वालियर, कानपुर, पटना, कूच बिहार, पूर्निया, दरभंगा, शिलांग आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५४	१	८	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२८	३६	४४	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५	३३	४२	५०
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृष	५८	७	१५	२३	३२	४०	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१
२	११	१२	१२	१२	१३	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५१	१	११	२१	३०	४२	५२	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१४
३	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
कर्क	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	१२	२४	३४	४३	५८	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४१
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४
कन्या	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	७	१८
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	४
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२५	३६	४७
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
धनु	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१८	२८	३८	४९	५९	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	१९	२७	३६	४४	५२	१	९	१८	२६	३४	४३	५१	०	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१५	२३
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९
कुम्भ	३१	४०	४८	५	१३	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	२०	२७	३४	४१	४९	५६	३	११	१८	२५	३२	४०	४७	५४	१	९	१६
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१६	२३	३०	३८	४५	५२	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८	२५	३२	३९	४७

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २७° अयनांश २४ (अक्षांश २६-३० से २७-३० तक स्थित)

(फैजाबाद, एटा, कासगंज, हाथरस, कन्नौज, आगरा, फर्रुखाबाद, मथुरा, धौलपुर, भरतपुर, जयपुर, इटावा, उन्नाव, अयोध्या, गोरखपुर, देवरिया, लखनऊ, सिलीगुड़ी, जैसलमेर, डिब्रूगढ़, हरदोई आदि के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५४	२	९	१६	२३	३१	३८	४६	५५	३	११	२०	२८	३६	४५	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५	३३	४१	५०
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृष	५८	६	१५	२३	३१	४०	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७
मिथुन	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	१	१३	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	३०	४१	५२	४	१५	२७	३८	४९	१	१२
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	२४	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९	४१
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४
कन्या	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
तुला	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चि.	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०
८	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
धनु	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२०	२९	३७	४५	५४	२	१०	१९	२७	३५	४४	५२	०	९	१७	२५	३४	४२	५०	५९	७	१५	२४
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९
कुम्भ	३२	४०	४९	५७	५	१४	२२	२९	३६	४४	५१	५८	६	१३	२०	२७	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	२	९
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१६	२४	३१	३८	४५	५३	०	७	१४	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१३	२०	२७	३४	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३३	४०	४७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २८° अयनांश २४ (अक्षांश २७-३० से २८-३० तक स्थित)

(हाथरस, अलीगढ़, अमरोहा, काठगोदाम, अलवर, किशनगढ़, भटनेर, नवलगढ़, खुर्जा, बरेली, बुलन्दशहर, बीकानेर, बदायूं, चन्दौसी, नारनौल, सोकर, पटौदी, झुंझनू, महेन्द्रगढ़, रिवाड़ी आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५२	५९	६	१३	२१	२८	३५	४३	५२	०	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१४	२२	३१	३९	४७	५५	४	१२	२०	२९	३७	४५
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
वृष	५३	२	१०	१८	२६	३५	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४
२	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७
मिथुन	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२	२	
कर्क	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३९	५०	२	१४	२५	३७	४९	०	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५५
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
सिंह	७	१९	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२८	४०
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५१	३	१४	२६	३७	४८	११	२३	३४	४६	५७	८	२०	२१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
तुला	३४	४६	५७	९	२०	३१	४३	५५	६	१८	३०	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	५०	१	१३	२५	३६	४८	०	११
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	
वृश्चिक	२३	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६
८	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१		
धनु	७	१९	३०	४२	५३	४	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	७
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५		
मकर	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८	५६	४	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१९	२७
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९			
कुम्भ	३५	४३	५२	०	८	१६	२५	३२	३९	४६	५४	०	८	१५	२२	२९	३६	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	१०
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२		
मीन	१७	२४	३१	३८	४५	५३	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	२	९	१६	२३	३०	३८	४५

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २९° अयनांश २४ (अक्षांश २८-३० से २९-३० तक स्थित)

(हापुड़, मुरादाबाद, अमरोहा, जोन्द, नैनीताल, मेरठ, पानीपत, हिसार, अनूपगढ़, बिजनौर, भिवानी, रामपुर, रोहतक, मुजफ्फरनगर आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	
मेष	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४१	५९	५७	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२५	३३	४१
१	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	५०	५८	६	१४	२२	३१	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
२	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	
मिथुन	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२			
कर्क	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	८	२०	३२	४४	५५	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५३
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८		
सिंह	४	१६	२८	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४		
कन्या	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	४०	४०			
तुला	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१७	२९	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५
७	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६			
वृश्चि.	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	१
८	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	
धनु	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
९	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५			
मकर	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	२९	३७	४५	५४	२	१०	१८	२६	३५	४३	५१	५९	७	१६	२४	३२	४०	४८	५७	५	१३	२१	२९
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९			
कुम्भ	३८	४६	५४	२	१०	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२		
मीन	१७	२४	३१	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	५०	५७	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३०° अयनांश २४ (अक्षांश २९-३० से ३०-३० तक स्थित)

(सहारनपुर, हरिद्वार, पटियाला, फाजिल्का, भटिण्डा, शाहाबाद, मुल्तान, अल्मोड़ा, करनाल, कुरुक्षेत्र, अम्बाला, देहरादून, नाभा, फरीदकोट आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
मेष	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७
१	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	४५	५३	१	१०	१८	२६	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३
२	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७
३	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	५०
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३९
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४
कन्या	५०	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४०	५२	४	१५	२७
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
तुला	३८	४०	२	१३	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९
७	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६
वृश्चि.	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४	५	१६	२८	३९	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७
८	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१
धनु	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६
९	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३४	४२	५०	५८	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२५	३३
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९
कुम्भ	४१	४९	५७	६	१४	२२	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	११
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१८	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४१

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३१° अयनांश २४ (अक्षांश ३०-३० से ३१-३० तक स्थित)

(फगवाड़ा, अमृतसर, चण्डीगढ़, कपूरथला, होश्यारपुर, फिरोजपुर, लुधियाना, शिमला, कालका, सोलन, कुराली, खन्ना आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
मेष	४६	५३	५९	६	१३	२०	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२
१	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
वृष	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	६	१६
२	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१
३	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२४	३६	४८	०	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५८	१०	२२	३४	४६
४	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	५८	९	२१	३३	४५	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४
कन्या	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०
तुला	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१५	२७	३९	५१	२	१४	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	५०	१	१३	२५	३७	४९	१	१३	२५
७	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६
वृश्चि.	३७	४९	१	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३
८	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
धनु	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१२	२२
९	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५७	५	१३	२१	२९	३७
१०	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९
कुम्भ	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४०	४७	५४	१	८	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१८	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३५	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४३	५०	५७	४	११	१८	२५	३२	३९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

आर्यभट पञ्चाङ्गम्

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३२° अयनांश २४ (अक्षांश ३१-३० से ३२-३० तक स्थित)

(कांगड़ा, नग्वा, डलहौजी, धर्मशाला, पठानकोट, जालन्धर, भण्डा, गुरदासपुर आदि नगरों के लिए)

रा.सं.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
मेष	४१	५०	५७	३	१०	१७	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७
१	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
२	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३१	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६
३	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२
४	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	५	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४१	५३	५	१७	२८	४०	५२	४	१६	२७	३९	५१	३	१५	२७	३९	५०	२	१४	२५	३७
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४
कन्या	४९	१	१३	२४	३६	४८	०	१२	२४	३५	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०
तुला	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४१	५३	४	१६	२८
७	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६
वृश्चिक	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१८	२८	३९	५१	२	१४	२६	३८	५०	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९
८	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१
धनु	२१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५०	०	१०	२०	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८
९	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	२८	४८	५७	७	१७	२७	३७	४७	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१२	२०	२८	३६	४४	५३	०	८	१६	२४	३२	४०	
१०	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
कुम्भ	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४३	५०	५६	३	१०	१७	२३	३०	३७	४४	५१	५८	४	११	१८	२५	३२	३८	४५	५२	५९	५	१२
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१९	२८	३३	३९	४६	५३	०	७	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५४	१	८	१५	२१	२८	३५	४२	४९	५५	२	९	१६	२३	२९	३६

इन्द्रप्रस्थ नगरे लग्न सारणी अक्षांशा २८।३८ वर्षादौ केतकी अयनांश २४

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
०	५१	५८	५	१३	२०	२७	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१९	२७	३५	४३
वृष	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
१	५२	०	८	१६	२५	३३	४१	५९	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१
मिथुन	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७		
२	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५
कर्क	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२			
३	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४
सिंह	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८			
४	६	१७	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४			
५	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	४०	४०					
६	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५३	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१५	२६	३८	५०	१	१३
वृश्चि.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५		
७	३५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	१	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	३०	१	१३	२५	३६	४७	५९
धनु	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१				
८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४०	५९	९	
मकर	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२७	३४	४४	५३	०	८	१७	२५	३३	४१	५०	५८	६	१४	२२	३०	३९	४७	५५	४	१२	२०	२८
कुम्भ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९			
१०	३७	४५	५३	१	१०	१८	२६	३३	४०	४७	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५२	१९	६	१३	२०	२७	३४	४२	४९	५६	३	१०
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२			
११	१७	२४	३१	३९	४६	५३	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५७	४	११	१८	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१६	२३	३०	३७	४४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अवकहड़ा चक्र : भुक्त नक्षत्र चरण राश्यादि और स्वामी, हंस संज्ञा व युंजा भाग सहितम्

चन्द्र राशि	(१) मेष			(२) वृषभ			(३) मिथुन			(४) कर्क			(५) सिंह			(६) कन्या		
	वर्ण	हंसक	वश्य	वर्ण	हंसक	वश्य	वर्ण	हंसक	वश्य	वर्ण	हंसक	वश्य	वर्ण	हंसक	वश्य	वर्ण	हंसक	वश्य
	क्षत्रिय	अग्नि	चतुष्पाद	वैश्य	भूमि	चतुष्पाद	शूद्र	वायु	मानव	ब्राह्मण	वारि	जलचर	क्षत्रिय	अग्नि	वनचर	वैश्य	भूमि	मानव

नक्षत्र	अश्विनी-१				भरणी-२				कृतिका-३				रोहिणी-४				मृगशीर्ष-५			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	चू	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	आ	इ	ऊ	अे	ओ	वा	वी	वु	वे	वो	का	की
वर्ग	सिंह	"	"	मृग	"	"	"	"	गरुड़	"	"	"	"	मृग	"	"	"	"	मांजर	"
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	अश्व	देव	पूर्व	आद्य	गज	मनुष्य	पूर्व	मध्य	मेष	राक्षस	पूर्व	अंत्य	सर्प	मनुष्य	पूर्व	अंत्य	सर्प	देव	पूर्व	मध्य
पूर्ण राशि	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०

नक्षत्र	आर्द्रा-६				पुनर्वसु-७				पुष्य-८				आश्लेषा-९				मघा-१०			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	कु	ध	ङ	छ	के	को	हा	ही	हू	हे	हो	डा	डी	डु	डे	डो	मा	मी	मू	मे
वर्ग	"	"	"	सिंह	मांजर	"	मेष	"	"	"	"	श्वान	"	"	"	"	उंदर	"	"	"
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	श्वान	मनुष्य	मध्य	आद्य	मांजर	देव	मध्य	आद्य	मेष	देव	मध्य	मध्य	मांजर	राक्षस	मध्य	अंत्य	उंदर	राक्षस	मध्य	अंत्य
पूर्ण राशि	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
अंश	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३
कला	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०

नक्षत्र	पू.फा.-११				उ.फा.-१२				हस्त-१३				चित्रा-१४	
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२
अक्षर	मो	टा	टी	टू	टे	टो	पा	पी	पू	ष	ण	ठ	पे	पो
वर्ग	उंदर	श्वान	"	"	"	"	उंदर	"	"	मेष	श्वान	"	उंदर	"
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण
	उंदर	मनुष्य	मध्य	मध्य	गौ	मनुष्य	मध्य	आद्य	महिषी	देव	मध्य	आद्य	व्याघ्र	राक्षस
पूर्ण राशि	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६
अंश	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०

सायन सूर्य	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु
	उत्तर	उत्तर	वसंत	उत्तर	उत्तर	ग्रीष्म	उत्तर	उत्तर	ग्रीष्म	दक्षिण	उत्तर	वर्षा	दक्षिण	उत्तर	वर्षा	दक्षिण	उत्तर	शरद

योग	विष्कुंभ	प्रीति	आयुष्मान	सौभाग्य	शोभन	अतिगंड	सुकर्मा	धृति	शूल	गंड	वृद्धि	ध्रुव	व्याघात	हर्षण

चन्द्र राशि	(७) तुला			(८) वृश्चिक			(९) धनु			(१०) मकर			(११) कुंभ			(१२) मीन		
	वर्ण	हंसक	वश्य	वर्ण	हंसक	वश्य	वर्ण	हंसक	वश्य	वर्ण	हंसक	वश्य	वर्ण	हंसक	वश्य	वर्ण	हंसक	वश्य
	शूद्र	वायु	मानव	ब्राह्मण	वारि	कीट	क्षत्रिय	अग्नि	मानव/चत	वैश्य	भूमि	चत/जल	शूद्र	वायु	मानव	ब्राह्मण	वारि	जलचर

नक्षत्र	चित्रा-१४		स्वाति-१५				विशाखा-१६				अनुराधा-१७				ज्येष्ठा-१८			
चरण	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	रा	री	रु	रे	रा	ता	ती	तू	ते	तो	ना	नी	नू	ने	नो	य	यी	यु
वर्ग	मृग	"	"	"	"	सर्प	"	"	"	"	"	"	"	"	"	मृग	"	"
अवकहड़ा चक्र	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	मध्य	मध्य	महिषी	देव	मध्य	अंत्य	व्याघ्र	राक्षस	मध्य	अंत्य	मृग	देव	मध्य	मध्य	मृग	राक्षस	अंत्य	आद्य
पूर्ण राशि	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	७	८
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

नक्षत्र	मूल-१९				पू.षा.-२०				उ.षा.-२१				श्रवण-२२				धनिष्ठा-२३			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	ये	यो	भा	भी	भु	धा	फा	ढा	भे	भो	जा	जी	खी	खू	खे	खो	गा	गी	गू	गे
वर्ग	"	"	उंदर	"	"	सर्प	उंदर	श्वान	उंदर	"	सिंह	"	मांजर	"	"	"	"	"	"	"
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	श्वान	राक्षस	अंत्य	आद्य	वानर	मनुष्य	अंत्य	मध्य	नकुल	मनुष्य	अंत्य	अंत्य	वानर	देव	अंत्य	अंत्य	सिंह	राक्षस	अंत्य	मध्य
पूर्ण राशि	८	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६
कला	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०

नक्षत्र	शत.-२४				पू.भा.-२५				उ.भा.-२६				रेवती-२७			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा	दी	दू	ज्ञा	झा	था	दे	दो	चा	ची
वर्ग	"	मेष	"	"	"	"	सर्प	"	"	मेष	सिंह	सर्प	"	"	सिंह	"
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	अश्व	राक्षस	अंत्य	आद्य	सिंह	मनुष्य	अंत्य	आद्य	गौ	मनुष्य	अंत्य	मध्य	गज	देव	पूर्व	अंत्य
पूर्ण राशि	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	०
अंश	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

सायन सूर्य	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु
	उत्तर	उत्तर	वर्षा	दक्षिण	उत्तर	शरद

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय

प्रथमा-परीक्षा, १९७३

अनुक्रमाङ्कः १५३१

कीर्तिकान्त शर्मा नामा/नाम्नी

श्री प्रेमदत्त शर्मा नाम्नः पुत्रः/पुत्री

२-३-१९६० ईशवीयतिथौ समुत्पन्नः/समुत्पन्ना, श्रीलक्ष्मण दास यजुर्वेदभा

म० वि० खुर्जा विद्यालय-/स्वतन्त्र-छात्रः/छात्रा,

१९७३ वर्षे अधोलिखितविषयेषु (तदानीन्तन-वाराणसेय-संस्कृत-विश्वविद्यालयस्य) प्रथमा-परीक्षायाम् द्वितीय श्रेण्याम् उत्तीर्णः/उत्तीर्णा इति प्रमाणीकरोति।

१—संस्कृतम्
२—हिन्दी
३—सामाजिकशास्त्रम्
४—गणितं फलितज्यौतिषञ्च
५ शुक्लयजुर्वेदः
६ —
७ —

अतिरिक्तविषयः ×
विशेषयोग्यताविषयः शुक्ल यजुर्वेदः

ल०मा० शिवाश्रे
इलसचिवः

वाराणसी
दिनाङ्कः ९-६-१९७४

Digitized by Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Rajgarh Delhi Collection
eGangotri Funding by Sarayu Trust Foundation, Delhi

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अष्टक वर्ग ज्ञानार्थ चक्र

१. रविरेखा ४८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

२. चन्द्ररेखा ४१

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	१	२	१	१	३	३	३
६	३	३	३	४	४	५	६
६	५	४	७	५	६	१०	
८	७	६	५	८	७	११	११
१०	१०	९	७	१०	९		
११	११	१०	८	११	१०		
		११	१०	१२	११		
			११				

३. भौमरेखा ३९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	३	६	६	१	१
५	६	२	५	१०	८	४	३
६	११	४	६	११	११	७	६
१०		७	११	१२	१२	८	१०
११		८				९	११
		१०				१०	
		११				११	

४. बुधरेखा ५४

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
५	२	१	१	६	१	१	१
६	४	२	३	८	२	२	२
९	६	४	५	११	३	४	४
११	८	७	६	१२	४	७	६
१२	१०	८	९		५	८	८
	११	९	१०		८	९	१०
		१०	११		९	१०	११
		११	१२		११	११	

५. गुरुरेखा ५६

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	२	१	१	१	३	१	१
२	५	२	२	२	५	५	२
३	७	४	४	३	६	६	४
४	९	७	५	४	९	१२	५
७	११	८	६	७	१०		६
८		१०	९	८	११		७
९		११	१०	१०			९
१०			११	११			१०
११							११

६. शुक्र रेखा ५२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
८	१	३	३	५	१	३	१
११	२	५	५	८	२	४	२
१२	३	६	६	९	३	५	३
	४	९	९	१०	४	८	४
	५	११	११	११	५	९	५
	८	१२			८	१०	८
	९				९	११	९
	१०				११		११
	११				१२		

७. शनिरेखा ३९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	३	६	५	६	३	१
२	६	५	८	६	११	५	३
४	११	६	९	११	१२	६	४
७		१०	१०	१२		११	६
८		११	११				१०
१०		१२	१२				११
११							

८. लग्न रेखा ४९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	१	१	१	९	३
४	६	३	२	२	२	३	६
६	१०	५	४	४	३	४	१०
१०	१२	१०	६	५	४	६	११
११		११	८	६	५	१०	
१२			१०	७	८	११	
			११	९	९		
				१०	११		
				११			

षट्वर्ग फलादेश

षट्वर्ग सारिणी प्रवेश रीति

'लग्न' या 'सूर्यादि स्पष्ट ग्रह' की जो वर्तमान राशि के समाने और उसके अंशादि के आसान जो कोष्ठक है उसके नीचे लिखे हुए होरादि षट्वर्गों के सामने की राशि अपने-अपने वर्ग को लग्न व ग्रहों की राशि होती है अर्थात् उन अंकों के समान संख्या वाली राशियों में लग्न व ग्रह को ग्रहादि वर्ग में लिखना चाहिए।

उदाहरण—जैसे स्पष्ट लग्न १।१५।१५।५७ है यहां लग्न की वर्तमान वृष राशि है। इसलिए वृष राशि के सामने और १५।१५।५७ से आसन्न-न्यून अंशादि १५।०।० है। इस के नीचे ४।६।११।१२।७।१२ ग्रहादि वर्गों की वर्तमान राशि है। इसलिए होरा में कर्क, द्रेष्काण में कन्या, सप्तमांश में कुंभ, नवांश में वृष, द्वादशांश में मीन लग्न हुआ। स्पष्ट सूर्य ०।१।८३।१२ की वर्तमान मेष राशि के सामने और ३।२०।० आसन्न-न्यून कोष्टक के नीचे ५।१।१।१।२।१ वर्गों की राशियां हैं। अतः सूर्य होरा में सिंह राशि में रहेगा। द्रेष्काण में मेष का सूर्य, सप्तमांश में मेष का सूर्य एवं नवांश में मेष का सूर्य, द्वादशांश में वृष का सूर्य और त्रिंशांश में मेष का सूर्य रहेगा।

होरा फल

होरा कुण्डली बना कर देख लेना चाहिए कि होरा लग्न सूर्य राशि हो और सूर्य उसी में स्थित हो तो जातक रजोगुणी, उच्चपदाभिलाषी, गुरु और शुक्र होरा लग्न में सूर्य के साथ हों तो सम्पत्तिवान्, सुखी, मान्य, उच्चपदारूढ़, शासक, नेता, शीलवान, राजमान्य तथा होरेश लग्न में पाप ग्रह से युक्त हो तो नीच प्रकृति वाला, दुश्शील, सम्पत्ति रहित, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाला और नीच कमरत जातक होता है यदि चन्द्रमा की राशि होरा लग्न में हो और चन्द्रमा उस में स्थित हो तो जातक शान्त स्वभाव वाला, मातृभक्त, लज्जालु, व्यवसायी, वृषि कर्म में रुचि रखने वाला, अल्पलाभ में सन्तोष करने वाला तथा शुभ ग्रह गुरु शुक्र आदि भी होरा लग्न में चन्द्रमा के साथ हों जातक भक्ति, श्रद्धा, सदाचारयुक्त आचरण करने वाला शीलवान, धनिक, सन्तानवान, सुखी और चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो विपरीत आचरण वाला, निर्धन, दुखी तथा नीच कार्यों से प्रेम करने वाला होता है।

सप्तमांश चक्र का फल विचार

सप्तमांश लग्न से केवल सन्तान का विचार करना चाहिए। सप्तमांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होते हैं और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह हो तो जातक के कन्याएं अधिक उत्पन्न होती हैं। सप्तमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रह हो पाप ग्रह की राशि में हो तो सन्तान नीच कर्म करने वाली होती है और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्वराशि का शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में स्थित हो तो सन्तान शुभाचरण करने वाली सुन्दर, सुशील और गुणी होती है। सप्तमांश लग्न का स्वामी सप्तमांश लग्न से ७ या ८वें स्थान में पाप ग्रह से युक्त या दृष्ट हो तो जातक सन्तानहीन होती है।

नवमांश कुण्डली के फल का विचार

नवमांश लग्न से स्त्री भाव का विचार किया जाता है। इसी से स्त्री का आचरण, स्वभाव, चेष्टा प्रभृति को देखना चाहिए। नवमांश लग्न का स्वामी मंगल हो तो स्त्री क्रूर स्वभाव की कुलटा, लड़ाकू, सूर्य हो तो पतिव्रता, उग्रस्वभाव की, चन्द्रमा हो तो शीतल स्वभाव, गौरवर्ण और मिलनसार प्रकृति की, बुध हो तो चतुर, चित्रकार, सुन्दर आकृति, शिल्प विद्या में निपुण, गुरु हो तो पतिव्रता, ज्ञानवती, शुभाचरण वाली, पतिव्रता, सौम्य स्वभाव, व्रत, तीर्थ करने वाली, शुक्र हो तो चतुर, शृंगार प्रिय, विलासी, कामक्रीड़ा प्रवीण, गौर वर्ण, व्यभिचारिणी, शनि हो तो क्रूर स्वभाव वाली, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाली, श्याम वर्ण, नीच संगति में रत, पति से विरोध करने वाली होती है। नवमांश लग्न का स्वामी राहु, केतु के साथ हो तो दुराचरिणी, कुल्टा, दुष्टा, नवमांश लग्न का स्वामी शुभ ग्रह हो और स्वराशिस्थ केन्द्र त्रिकोण में हो तो बालक को स्त्री का पूर्ण सुख मिलता है तथा नवमांश लग्न का स्वामी भाग्येश के साथ २।११वें भाव में उच्च का होकर स्थित हो तो स्त्रियों से अनेक प्रकार का लाभ तथा ससुराल के धन का स्वामी होता है। नवमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट ८।१२वें भाव में स्थित हो तो जातक को स्त्री का सुख नहीं होता है। यह जितने पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो उतनी ही स्त्रियों को नाश करने वाला होता है।

द्वादशांश कुण्डली के फल का विचार

द्वादशांश लग्न से माता-पिता के सुख-दुख का विचार किया जाता है। यदि द्वादशांश लग्न का स्वामी शुभ-ग्रह हो तो जातक के माता-पिता का शुभाचरण और पाप ग्रह हो तो पापाचार युक्त आचरण होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह अपनी राशि, मित्र की राशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१०वें स्थान में स्थित हो तो जातक को पिता का पूर्ण सुख और नीच राशि, शत्रु राशि या पाप ग्रह की राशि में स्थित हो या ६।८।१२वें भाव में बैठा हो तो पिता का अल्प सुख होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह सौम्य हो और स्वराशि, मित्र राशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१० भावों में स्थित हो तो जातक को माता का सुख होता है। यदि यही स्त्री ग्रह पाप युक्त या पाप दृष्ट होकर ६।८।१२वें भाव में हो तो माता का सुख नहीं होता।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

षट् वर्ग सारिणी चक्र

मार्ग	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
	३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
रा. चक्र	०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
	हो.	५	५	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४		५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्वे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९		७	७	७	७	७	७	७	११	७	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३
	स.	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७		७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	२०	१०	११	११	११	११	१	१	१	१	१	१	१	१
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९		७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	३
मे.	द्वा.	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	तु.	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७		१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७	
	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५		४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्वे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०		८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	११	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	स	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२		२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६		४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
षु.	द्वा.	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	वृ.	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	०	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८		२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४		५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्वे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११		९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	स.	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९		९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३		१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
मि.	द्वा.	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	ध.	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	८
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७		१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७	
	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५		४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्वे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२		१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६
	स.	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४		४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२		१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
क.	द्वा.	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	म.	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	९
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८		२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४		५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्वे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१		११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७
	स.	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११		११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९		७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
सिं.	द्वा.	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	कुं.	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	त्रि.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७		१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७	
	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५		४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्वे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२		१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८
	स.	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६		६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६		४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
कं.	द्वा.	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	मी.	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११
	त्रि.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८		२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ जन्म समय आदि विचार

ज्योतिष शास्त्र वेदों का मुख्य अंग है और षटशास्त्रों में सर्वोत्तम शास्त्र माना गया है। प्राचीन काल से लेकर आज के आधुनिक जैट व कम्प्यूटर युग तक इसकी महत्ता सदा मानी जाती रही है। इसका कारण यही है कि यह प्रत्यक्ष फल बतलाता है। चन्द्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण का समय, सूर्योदय, चन्द्रोदय का प्रत्येक स्थान, अक्षांश का समय, ऋतु परिवर्तन आदि अनेक विषय हैं जिनका गणित द्वारा निर्णय इस शास्त्र द्वारा ठीक-ठीक किया जाता है। ऐसा और कोई शास्त्र नहीं है जो भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालों की बातों को ठीक-ठीक बतला सके। इसलिये हमारी संस्कृति में इस शास्त्र को सब से ऊँचा स्थान दिया गया है। वेदों के समय से ही यह परम्परा रही कि चाहे सभी वेदों और अन्य शास्त्रों को पढ़ लेने पर जब तक ज्योतिष शास्त्र में पारंगत नहीं होता था उसकी विद्या और ज्ञान अधूरा समझा जाता था। ज्योतिष शास्त्र के द्वारा सही भविष्य ज्ञात करने के लिये आवश्यक होता है कि जन्म का ठीक समय ज्ञात हो। आजकल छोटे-छोटे गांवों तक और साधारण से साधारण व्यक्ति के पास घड़ी उपलब्ध है और जन्म का ठीक समय जानना उतना कठिन नहीं रह गया है जितना अब से कुछ समय पहले हुआ करता था। फिर भी बहुत सी ऐसी परिस्थितियां होती हैं जब जन्म का ठीक समय नोट नहीं हो पाता था ज्योतिषी के पास पुरानी पत्री बनने को आती है। और बनवाने वाला लगभग समय बतलाता है। इस कारण ज्योतिष शास्त्र में बहुत सी ऐसी बातें बताई गई हैं जिनकी सहायता से ठीक लग्न का निर्णय करने में सहायता मिलती है। दिन-रात के चौबीस घंटों में बारह लग्न क्षितिज पर निकल जाते हैं और एक लग्न लगभग दो घंटे होता है। कोई लग्न दो घंटे से कुछ कम कोई दो घंटे से कुछ ज्यादा होता है। वर्षभर की दैनिक लग्न सारिणी दिल्ली नगर के पंचांग में दे दी गई है और इस की सहायता से अन्य नगरों में प्रत्येक लग्न का आरम्भ व समाप्ति काल निकालना भी बता दिया गया है। मान लो कोई व्यक्ति आपको बताता है कि बालक का जन्म रात में दिन निकलने से २-३ घंटे पहले हुआ था तो इसी अवस्था में आपको २ या ३ लग्नों में से एक लग्न का निर्णय करना पड़ेगा। तब जिस लग्न की बातें सबसे अधिक मिलें वही सही लग्न समझना चाहिए। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि घड़ी में ठीक समय देख कर ही जन्म समय नोट किया है। परन्तु घड़ी कुछ धीमी-तेज गति से चलने के कारण थोड़ा-बहुत गलत समय भी बता सकती है और संयोग से जन्म समय के आस-पास ही लग्न का समाप्ति काल भी हो तो उस समय भी सही लग्न का निर्णय करने में निम्न जानकारी बहुत सहायक होती है। मान लो १२ नवम्बर रात के २-१५ का जन्म है और उस तारीख को सिंह लग्न २-२० पर समाप्त हो रही हो तो सिंह और कन्या दोनों लग्नों की विशेषताओं पर विचार करके ही आपको निर्णय करना पड़ेगा।

पितृ परोक्ष ज्ञान— सबसे पहले आप पता कीजिये कि बालक के जन्म समय पिता घर था या नहीं। घर से यहां तात्पर्य जन्म स्थान से है। जन्म यदि किसी अस्पताल, नर्सिंग होम में हुआ हो तो उस स्थान से है। लग्न पर चन्द्रमा की पूर्ण या अपूर्ण (एक पाद, दो पाद आदि) दृष्टि है तो पिता घर पर ही होना चाहिये। सूर्य आठवां, नौवां, ग्यारहवां या बारहवां है (लग्न से) तो पिता घर पर नहीं होता। लग्न से ८वां, ९वां, ११वें, १२वें भाव में जिस में सूर्य पड़ा हो वह राशि यदि चर राशि है तो पिता दूसरे देश में होना चाहिये। सूर्य इन भावों में स्थिर राशि का हो तो देश में ही होना चाहिये। सूर्य ८, ९, ११, १२ वें में से किसी भी भाव में हो और सूर्य की राशि द्विस्वभाव राशि हो तो पिता घर की ओर मार्ग में होता है। इन सभी योगों में लग्न पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो पिता घर में ही होता है बाहर नहीं। शनि लग्न में हो या मंगल सातवें स्थान में हो, या बुध-शुक्र चन्द्रमा से दूसरे या बारहवें स्थान में हो अर्थात् बुध-शुक्र में से कोई एक-दूसरे में हो, दूसरा बारहवें स्थान में हो, तो भी पिता का घर पर न होना ही ज्ञात होता है। बुध-शुक्र के इस योग में अंशों से भी विचार होता है। चाहे तीनों एक ही राशि में हों या दो राशियों में परन्तु एक के अंश चन्द्रमा से कम दूसरे के अधिक हों तो भी चन्द्रमा दोनों के मध्य ही समझा जाता है। जैसे चन्द्रमा के किसी राशि में १५ अंश, बुध के ८ अंश और शुक्र के २५ अंश हों तो यह कर्तरी योग बन जाता है।

चिह्न ज्ञान— बहुधा बालक के शरीर पर आये चिह्न तिल, भोंरी, लहसुन, मस्सा आदि से भी लग्न का निर्णय करने में सहायता मिलती है। जन्म कुण्डली में लग्न से १, ५, ६, या ९वें स्थान में सूर्य हो तो भुजा में कोई चिह्न होता है। यदि लग्न में सूर्य और शनि दोनों हों, दूसरे भाव में मंगल और केन्द्र (१, ४, ७, १०) में चन्द्रमा हो तो बालक की छः उंगलियां होती हैं। जो ग्रह बलवान होता है उसी के अनुसार चिह्न भी आते हैं। सूर्य सिर पर, मस्तक पर, चन्द्रमा मुख, मंगल गले में, बुध छाती में, गुरु नाभि व पेट पर, शुक्र पीठ व जांघ पर, शनि, राहु, केतु, पेट, होंठ, दातों पर चिह्न पैदा करते हैं। सप्तम भाव में गुरु या लग्न में राहु व गुरु दोनों हों और अष्टम में पाप ग्रह शनि, मंगल, राहु आदि हों, या लग्न में शुक्र तथा अष्टम में पाप ग्रह हों तो, बाँई भुजा पर तिल, मसा, लहसन आदि का चिह्न होता है। लग्न ३।६ या ११वें स्थानों में मंगल हो या बारहवें भाव में मंगल-शुक्र दोनों हों तो बांई बगल में तिल आदि चिह्न होता है। लग्न में शुक्र और सातवें राहु हो तो माथे पर या बाँये कान पर चिह्न होता है। लग्न में मंगल हो, ५।६ स्थानों में शनि हो और ११।१२ में शुक्र हो तो गुदा या लिंग (योनि) के समीप तिल आदि चिह्न होता है। ५ या ६ठें स्थान में शनि हो, ८वां बुध या लग्न में गुरु और ४था शनि हो तो पेट पर चिह्न होता है। दूसरा शुक्र, तीसरा मंगल या आठवां सूर्य कमर पर चिह्न लाता है। चौथा शुक्र या राहु, लग्न में मंगल या शनि बाँये पैर पर १२वां गुरु, दूसरा चन्द्रमा, ३, ६, ११वां बुध गुदा के समीप गोल चिह्न या व्रण आदि उत्पन्न करता है। छठे भाव का स्वामी ग्रह पाप ग्रहों के साथ लग्न या सातवें घर में हो तो शरीर में फोड़े-फुंसी होते हैं। लग्न में मंगल, सप्तम में गुरु या शुक्र हो तो सिर में चोट या फोड़ा-फुंसी का चिह्न हो सकता है। लग्न में मंगल, शुक्र, चन्द्रमा साथ हो तो दूसरे या छठे वर्ष में सिर में चिह्न होने की आशंका होती है। मंगल चन्द्र से व्रण और शुक्र चन्द्र से तिल होते हैं।

अन्तरिक्ष जन्म ज्ञान— बालक का जन्म भूमि पर हुआ है या ऊंचे स्थान पर हुआ है? मकान की पहली मंजिल भूमि और दूसरी तथा ऊपर की मंजिलों को अंतरिक्ष कहा जाता है। जन्म लग्न मिथुन, कन्या, धनु या मीन हों तो अन्तरिक्ष या ऊँचे स्थान पर जन्म समझना।

बालक का रोदन ज्ञान— जन्म समय मेष, मिथुन, सिंह, धनु लग्न हों तो बालक ने पैदा होते ही जल्दी रोना आरम्भ कर दिया ऐसा जानना। कन्या, तुला, कुम्भ लग्न हो तो बालक धीरे मन्द स्वर में रोया, अन्य लग्नों में बालक देर से रोया हो ऐसा जानना चाहिये। आप जानते हैं कि जन्म कुंडली में दो कुंडली बनती हैं, एक लग्न कुंडली दूसरी राशि कुंडली। इन में जो ज्यादा बलवान हो उसी का फल कहना चाहिये। लग्न बलवान हो तो लग्न के अनुसार और राशि बलवान हो तो राशि के अनुसार फल कहना चाहिये। लग्नेश लग्न को देखता हो लग्नेश स्वग्रही उच्च मित्र क्षेत्री हो, लग्न को शुभ ग्रह देखता हो तो लग्न बलवान होती है इसी प्रकार राशि भी बलवान होती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उपसूतिका ज्ञान—प्रसव के समय मुख्य डाक्टर या डाक्टरनी के अतिरिक्त कितनी नर्स या अन्य स्त्रियाँ उस समय उपस्थित थीं इसका ज्ञान करने के लिए यह देखना चाहिए कि लग्न में या लग्नेश के साथ और इनके यानी लग्न के व लग्नेश के दूसरे व १२वें स्थान में जितने ग्रह हों उतनी ही उप-सूतिकायें जाननी चाहिए। अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य जितने ग्रह हों उतनी संख्या जानना चाहिए। लग्न से सप्तम स्थान तक अदृश्य और सप्तम से लग्न तक दृश्य होता है। अतएव सप्तम से लग्न तक जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिकायें प्रसूतिका माता के पास और लग्न से सप्तम तक जितने ग्रह हों उतनी घर के बाहर होती हैं। अस्पताल में जिस कमरे में प्रसव हो उसे मुख्य घर समझना चाहिए। उस कमरे में प्रसव समय पर उपस्थित नर्सें आदि प्रथम कोटि में और जो बाहर आ जा रही हों वह दूसरी कोटि में समझनी चाहिए। गावों में जहां प्रसव घर हों वहां आस-पड़ोस की स्त्रियों की गिनती भी साथ ही की जाती है। उपसूतिकाओं के वर्ण, जाति, आयु का विचार ग्रहों के अनुसार ही करना। उच्च तथा वक्री ग्रहों की संख्या को ३ से गुणा कर के तथा स्वराशि स्वनवांश स्वद्रेष्काण के ग्रहों को दुगना करके और नीच तथा अस्त ग्रहों की संख्या को आधा करके संख्या ज्ञात करनी होती है।

सिर पाद प्रसव ज्ञान—बच्चे का जन्म सिर से हुआ है या पैर से इसको जानने के लिये देखो कि यदि ३।५।६।७।८।११ राशियों में या इन राशियों के नवांश में जन्म हुआ है तो सिर से प्रसव जानना। यह शीर्षोदय राशियां हैं। इनके अतिरिक्त अन्य १।२।४।९।१०।१२ पृष्ठोदय राशियां हैं। इनमें या इनके नवांश में जन्म हो तो पैरों से प्रसव जानना। मीन राशि में या मीन के नवांश में जन्म हाथों से होता है। यानी पहले हाथ बाहर आते हैं। पैर पहले बाहर आयें तो पैरों से प्रसव और सिर पहले आये तो सिर से प्रसव कहा जाता है।

सूतिका गृह द्वार ज्ञान—सूतिका गृह या अस्पताल, नर्सिंग होम आदि के उस कमरे का जिसमें प्रसव हुआ हो द्वार किस दिशा की ओर है इसके ज्ञान के लिए देखो कि केन्द्र में स्थित ग्रह की दिशा कौन सी है। यदि केन्द्र में कई ग्रह हों तो सबसे बलवान ग्रह की दिशा के अनुसार और कोई ग्रह केन्द्र में नहीं हो तो लग्न की राशि की दिशा बताना चाहिए।

पुरुष शरीर में सूर्यादि ग्रहों का अधिकार—सिर व मुख प्रदेश में सूर्य का, छाती गले में चन्द्रमा का, पीठ, पेट में मंगल का, हाथ व पैरों में बुध का, कमर व जांघ में गुरु (वृहस्पति) का, जननेन्द्रिय व वृष्णों में शुक्र का, घुटने (जानु), पेट (ऊरु) में शनि का अधिकार होता है। जन्म समय, प्रश्न समय गोचर में जब-जब यह ग्रह अनिष्ट कारक होते हैं। तब-तब अपने अधिकार प्रदेश के अंगों को ही कष्ट पहुंचाते हैं।

मेषादि राशियों का अंग विभाग—मेष राशि का स्थान सिर में, वृष का मुख, मिथुन दोनों भुजायें, कर्क हृदय प्रदेश, सिंह उदर, कन्या कमर, तुला वस्ति (मूत्राशय), वृश्चिक जननेन्द्रियां, धनु दोनों जंघायें, मकर दोनों घुटने, कुम्भ दोनों पिंडलियां और मीन राशि से दोनों पैरों (पादों) का विचार किया जाता है। इसी प्रकार प्रथम भाव लग्न से सिर, दूसरे भाव से सुख, तीसरे से भूजा, चौथे से हृदय, पाँचवें से पेट, छठे से कमर, सातवें वें वस्ति, आठवें से गुह्येन्द्रियों, नवम से ऊरु, दशम से जानु, ग्यारहवें से जंघा और बारहवें भाव से पैरों का विचार करते हैं। उपरोक्त बारह राशियों अथवा बारह भावों में शुभ अशुभ ग्रहों की स्थिति दृष्टि आदि से तत्सम्बन्धी अंगों के स्वस्थ या पीड़ित रहने का विचार किया जाता है।

लग्नों के अनुसार प्रत्येक लग्न के अलग-अलग लक्षण इस प्रकार होते हैं।

अथ प्रसूति लग्न विचार

मेष—सूतिका गृह—(वह स्थान जहाँ बच्चा पैदा होता है, अस्पताल, नर्सिंग होम, घर आदि)। इमारत पुरानी, मुख्य द्वार पूर्व दिशा की ओर, चारपाई, बैड, पलंग जिस पर प्रसविनी माता को लिटाया गया उसका सिर पूर्व दिशा की ओर, माता ने लाल रंग के वस्त्र पहने हुए थे, प्रसव से पहले मीठा भोजन किया था। प्रसव में कष्ट अधिक हुआ, जन्म भूमि पर हुआ (यदि इमारत में कई मंजिलें हों तो सबसे नीचे की मंजिल भूमि की सतह पर समझें) प्रसव के बाद बालक अधिक रोया। उपसूतिका १ या ३, बालक के मुख का रंग श्यामता पर, नेत्र भूरे, प्रकृति वात श्लेष्म, कद छोटा, शरीर मजबूत, वाणी चंचल, कष्ट वर्ष ४।११।१६।४४।५८, उपाय गौदान, तुलादान, मृत्युंजय जप आदि, आयु १०० वर्ष।

नोट—कष्ट वर्षों में शरीर कष्ट की आशंका होती है उपाय करने से कष्ट टल जाता है। चन्द्रमा पर बृहस्पति या शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आयु पूर्ण होती है। वैद्यक शास्त्र के अनुसार प्रकृति तीन प्रकार की होती है वात, पित्त, कफ। श्लेष्म कफ को ही कहते हैं।

वृष—माता का सिर दक्षिण में, सूतिक घर नया, द्वार दक्षिण में, माता ने सफेद वस्त्र पहने हुए हों और प्रसव से पहले सूखा साग आदि खाया हो, अधोमुख होकर पैरों से प्रसव, बालक ऊँचे स्वर से रोया, उपसूतिका ३ या ४, दीपक (या बत्ती लाइट) उत्तर में, बालक का रंग गोरा, स्वरूप सुन्दर, प्रकृति रक्त, पित्तकष्ट वर्ष १।२।८।३३।४४।६१, कष्ट निवारण के लिए उपाय अन्नदान, ब्राह्मण भोजन, मृत्युंजय जप आदि। उपरान्त आयु ९० वर्ष आजकल बच्चा पेट में उल्टा या टेढ़ा हो जाता है तो आपरेशन से प्रसव करते हैं। वह इसी श्रेणी में समझना चाहिए।

मिथुन—माता का सिर पश्चिम में, मकान नया, द्वार पश्चिम में, माता के कपड़े पीले रंग के, प्रसव से पहले नमकीन भोजन किया हो, माता के दाहिने अंग में कोई चिह्न, जन्म अन्तरिक्ष (छत पर) या ऊपर की मंजिलों में, सिर से प्रसव, रोना उच्च लम्बे स्वर में, उपसूतिका ३ या ५, स्तनों में दूध कम, देर से उतरे, बालक के नेत्र रोग युक्त, प्रकृति बलगमी, स्वभाव चंचल, अग्निमंद (हाजमा मन्दा), बुद्धि विलक्षण, प्रसव से पहले माता को कुछ ज्वर आदि हुआ हो। कष्ट वर्ष ४।१०।१४।३८।५८, उपाय शिवार्चन, मृत्युंजय जप होम आदि। उपरान्त आयु ८६ वर्ष।

कर्क—प्रसव के समय माता का सिर उत्तर में, मकान नया, मकान का या उस कमरे का जिस में प्रसव हुआ हो द्वार उत्तर में, माता ने पुराने सफेद या लाल रंग के वस्त्र पहने हुये हों, पिता क्लेश में परेशानी में हो, प्रसव कष्ट अधिक, माता ने मधुर, शीतल (मीठा ठंडा) भोजन किया हो, भूमि पर जन्म, पैर से प्रसव, रोदन शब्द दीर्घ, बालक जोर से रोया, उपसूतिका ४ या ५, बालक के वामांग में चिह्न, बालक का सिर मोटा, आखें चंचल, प्रकृति, वात, कफ, रंग गोरा, कद लम्बा, शरीर कोमल, कष्ट वर्ष ५।२५।४०।४८।६२ उपाय छायापात्र, तुलादान, मृतसंजीवनी मंत्र का जप। उपरान्त आयु १०० वर्ष।

सिंह—माता का सिर पूर्व में, मकान नया, द्वार पूर्व को, माता के वस्त्र लाल या चित्र-विचित्र भोजन के साथ शाक-भाजी व खट्टी चींज खाई हो, भूमि पर जन्म, रोदन स्वर दीर्घ, उपसूतिका ३ या ५, बालक की पीठ पर चिह्न, केश घने, नाक लम्बी, कद छोटा, शरीर कोमल, रंग गोरा, हठीला,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चंचल, क्रूर स्वभाव, प्रकृति कफ, पित्त। कष्ट कारक वर्ष ५।१३।२८।३६।४८, उपाय सूर्य पूजन, आदित्य हृदय का पाठ, अपूपान्न दान (मीठे माल पूये आदि) उपरान्त आयु ८३ वर्ष।

कन्या—माता का सिर उत्तर, प्रसव स्थान घर के दक्षिण भाग में, पिता घर से बाहर गया हो, छत पर ऊँची जगह पर जन्म, बालक कम रोया, उपसूतिका ४ या ५, भुजा में साधारण भूषण, बालक का रंग गोरा, गले व जांघ में जिन्ह, कष्टकारक वर्ष ४।१६।२३।३६।५५, उपाय मुदगान्न दान, गोदान, मृत्युंजय जप, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

तुला—माता का सिर पश्चिम में, मकान कुछ नया, प्रसूतिका गृह पश्चिम भाग में, माता के बाल साधारण सफेद, प्रसव कष्ट ज्यादा, पिता क्लेश-परेशानी में, माता ने प्रसव से पहले कुछ काम कर ठंडा पानी पिया हो, घर में कुछ लड़ाई-झगड़ा हुआ हो, भूमि पर जन्म, रोने की आवाज धीमी, उपसूतिका ३ या ५, वहां एक कन्या भी हो, दीपक हाथ में उठाया हो या लाइट बल्ब ऊंचा लटका हो, बालक का रंग जरदी पर, बदन में फोड़े-फुंसी, शरीर दुबला, कष्ट वर्ष ८।१५।३१।३५।६२।६४,, उपाय गोदान, तन्दुल दान, नवग्रह पूजन, होम से शान्ति तदुपरान्त आयु ८५ वर्ष।

वृश्चिक—माता का सिर दक्षिण या उत्तर में, मकान पुराना, द्वार उत्तर में, माता के बाल लाल या जला हुआ, प्रसव कष्ट अधिक, साधारण भोजन, माता कुछ क्रोध में, भूमि पर जन्म, रोने की आवाज आधी दबी हुई, उपसूतिका ४ या ५, पिता क्लेश परेशानी में, बालक के केश लम्बे काले, पीठ पर चिन्ह, गले में पीड़ा, रंग गौर श्याम बीच का, प्रकृति रक्त-पित्त, कष्ट वर्ष ११।२८।३८।५२।६२ उपाय तुलादान, मृत्युंजय जप, ब्राह्मण भोजन, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

धनु—माता का सिर पूर्व दिशा की ओर, प्रसूति स्थान घर के दक्षिण भाग में, द्वार पूर्व में, मकान नया, माता के वस्त्र लाल या वसन्ती, माता ने पका हुआ भोजन करके जल पिया हो, जन्म ऊँचे स्थान पर या छत पर, रोने का स्वर काफी ऊँचा, उपसूतिका १ या ५, बालक का रंग गोरा, आकृति सुन्दर, नेत्र विशाल, सिर ऊँचा, हृदय पर चिन्ह, कष्ट वर्ष २।१०।१८।३१।३८।४२, उपाय कष्ट वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युंजय जप, ब्राह्मण भोजन, तदुपरान्त आयु ८१ वर्ष।

मकर—माता का सिर दक्षिण में, मकान पुराना, दरवाजा उत्तर या दक्षिण की ओर, प्रसूति स्थान पश्चिम भाग में, वस्त्र मैले फटे पुराने, माता ने शाक-सब्जी के साथ भोजन कर के ठंडा पानी पिया हो, भूमि पर जन्म, कुछ देर बाद बालक धीरे स्वर से रोया, उपसूतिका १ या ५, बालक के केश घने, नाक मोटी, मस्तक ऊँचा, रंग श्याम, कष्ट वर्ष ५।१३।२७।३६।५७।६२।८७, उपाय रुद्राभिषेक, स्वर्ण दान, तैल, उड़द दान, छायापात्र दान, उपरान्त आयु ९५ वर्ष।

कुम्भ—माता का सिर पश्चिम में, मकान का अधिकांश भाग पुराना, प्रसूतिका घर दक्षिण-पश्चिम में, द्वार पूर्वोत्तर में, माता के वस्त्र कुछ काले मैले, पुराने, कम्बल ओढ़ा हो, मामूली कसैला चटपटा भोजन किया हो, पिता घर पर नहीं हो, भूमि पर जन्म, जन्म के काफी देर बाद बालक थोड़ा सा रोया, उपसूतिका ३ या ४, बालक के होठ मोटे; मस्तक लम्बा, प्रकृति गर्म, कद नाटा, नेत्र में रोग, कष्ट वर्ष २।२८।३३।४८।६४, उपाय तुला दान, महिषि दान, सुत्युंजय जप उपरान्त आयु ९० वर्ष।

मीन—माता का सिर उत्तर में, मकान का कुछ हिस्सा पुराना, प्रसूति गृह उत्तर में, द्वार दक्षिण को, माता के वस्त्र मैले वसन्ती रंग के, पिता घर पर, जन्म ऊँचे स्थान पर, बालक जन्म के बाद देर से रोया, माता ने प्रसव से पहले ठण्डा जल पिया हो, उपसूतिका पहले, पीछे ३ या ५, पलंग का पाया टूटा हुआ, बालक का रंग गोरा, नाक चपटी, आँख भूरी, सिर ऊँचा, बाल कपिल, प्रकृति बल्गमी, कष्ट वर्ष १।८।१३।३६।४८, उपरान्त आयु ८३ वर्ष, उपाय मोदकान्न दान, गोदान, ग्रह शान्ति, मृत्युंजय जप।

प्रत्येक लग्न के—विषय में जो सूचनायें दी गई हैं वे प्रायः सामान्य रूप से ठीक मिलती हैं। परन्तु ग्रहों के अन्य योगों से उन में अन्तर भी आ सकता है। ग्रह योगों का जो प्रभाव पड़ता है उनके विषय में संक्षेप में इससे पहले विचार किया है उस पर भी ध्यान देना चाहिए। कभी-कभी ऐसा होता है कि जन्म समय के बारे में निश्चित रूप से ठीक सूचना नहीं मिलती और जो समय बताया होता है उस के आस-पास ही लग्न का आरम्भ या समाप्ति काल होता है तब उपरोक्त लक्षणों के आधार पर ही ठीक लग्न का निर्णय करना होता है। जिस लग्न के लक्षण, चिन्ह आदि अधिक मिलें वही लग्न ठीक समझनी चाहिए। इसको और स्पष्ट करने के लिए २-१ उदाहरण देकर समझाना ठीक होगा। मान लो किसी ने बताया कि १२ नवम्बर को रात के बारह बजे के आस-पास का जन्म है। लग्न सारणी में देखने पर ज्ञात हुआ कि १२ नवम्बर को १२ बजकर ३ मिनट तक कर्क लग्न है और उसके बाद सिंह लग्न है। अब आप कर्क और सिंह दोनों लग्नों के लक्षणों, चिन्हों का मिलान कीजिये और जिस लग्न की बातें ज्यादा मिलें वही लग्न निर्धारित कर दीजिए।

बालारिष्ट—जन्म लग्न में चन्द्रमा छठे, आठवें या बारहवें घर में हो और उस पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक के जीवन को संकट होता है। यदि इस प्रकार के चन्द्रमा को शुभ ग्रह देख रहे हों तो संकट टल जाता है। ६।८।१२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उन पर क्रूर ग्रहों या वक्री ग्रहों की दृष्टि हो, लग्न में कोई शुभ ग्रह न हो, लग्न को या लग्नेश को कोई शुभ ग्रह नहीं देखता हो तो बालक को अल्पायु योग होता है। जिस कुण्डली में पंचम स्थान में सूर्य, मंगल व शनि तीनों हों उस बालक को, उसकी माता को, उसके भाई को, तीनों को ही कष्ट प्रदान करते हैं। तीनों ग्रहों का इस प्रकार का योग भी बालक तथा माता दोनों को अपार कष्ट प्रदान करता है। लग्न में शनि, आठवां चन्द्रमा, तीसरा वृहस्पति—इस प्रकार से ग्रहों का योग हो तो वह भी बालक को महान कष्ट कारक होता है। अल्पायु योग माना जाता है। बारहवें स्थान में कोई भी ग्रह हो तो कष्ट ही देता है। परन्तु सूर्य, चन्द्र, शुक्र व राहु हों तो विशेष रूप से अरिष्टदायक होते हैं। लग्न के १२वें तथा दूसरे भाग में क्रूर ग्रह होने से अशुभ कर्तरी योग बनता है। अर्थात् लग्न दुष्ट ग्रहों के बीच में आ जाने से कष्ट दायक हो जाती है। लग्न में दूसरे भाव में, छठे, आठवें, बारहवें भाव में क्रूर ग्रहों का होना अरिष्ट बताता है।

अरिष्ट भंग योग—बुध, बृहस्पति, शुक्र इन शुभ ग्रहों से कोई भी एक, दो या तीनों १।४।७।१० केन्द्र स्थानों में हों या लग्न में गुरु स्वग्रही उच्च क्षेत्री बलवान होकर पड़ा हो या लग्नेश बलवान् होकर केन्द्र में हो, या शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो और लग्न पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो अथवा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और लग्न शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो। इन पांचों योगों में से कोई भी एक या अधिक योग हो तो वह उपरोक्त सभी अरिष्ट योगों, अल्पायु योगों को भंग कर देता है। समाप्त कर देता है।

माता-पिता को अरष्टि योग—सूर्य से पिता का तथा चन्द्रमा से माता का विचार किया जाता है। सूर्य के साथ पाप ग्रह बैठे हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ गया हो या सूर्य पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो, अथवा सूर्य से ४।६।८वें स्थानों में क्रूर ग्रह हों और शुभ ग्रह न हों तो पिता को

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कष्टदायक होते हैं। इसी प्रकार चन्द्रमा के साथ यह अरिष्ट योग माता को कष्टकारक होते हैं, जैसे—चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह चन्द्रमा से २।१२वें भाव में पाप ग्रह चन्द्रमा पर पाप ग्रहों की दृष्टि चन्द्रमा से ४।६।८वें स्थानों में क्रूर ग्रहों की स्थिति शुभ ग्रहों की अनुपस्थिति माता को कष्ट देने वाली होती है।

प्रसव दोष—चैत्र मास में कुतिया प्रसव करे, वैशाख में ऊंटनी, ज्येष्ठ में बिल्ली, आषाढ़ में गधी, श्रावण में घोड़ी, भाद्रपद में गाय, कार्तिक में स्त्री, मार्गशीर्ष में हथिनी, पौष में बकरी, माघ में भैंस प्रसूत हो तो प्रसूतिका को तथा उसके स्वामी को कष्टकारक होती है। सभी प्रकार के अरिष्ट योगों की शान्ति के लिये दान, जप, हवन, शान्ति पाठ, पुण्याहवाचन आदि अनुष्ठान करा देना चाहिए।

त्रिखल दोष—तीन पुत्रों के बाद कन्या अथवा तीन कन्याओं के बाद पुत्र हो तो त्रिखल दोष होता है। यह माता-पिता को कष्ट कारक, धन हानि कारक होता है। इसके लिए त्रिखल शान्ति अनुष्ठान करा देना चाहिए।

दन्तोत्पत्ति फल—बालक दांतों सहित जन्म ले तो माता-पिता को महा अरिष्ट दोष होता है। प्रथम दांत नीचे की पंक्ति में आना चाहिए, यदि ऊपर की पंक्ति में प्रथम दांत उत्पन्न हो तो मातुल पक्ष को भयदायक होता है। दांत ६ महीने से पहले आना ठीक नहीं होते। प्रथम मास में शरीर कष्ट द्वितीय में छोटे भाई को, तीसरे में बहन को, चौथे में बड़े भाई को, पांचवें में बड़े बन्धु जनों को कष्टकारक होते हैं। छठे में बहुत भाग्यशाली, ७वें में पिता को भाग्य वर्धक, ८वें में शरीर पुष्टिकारक, ९वें में धनवान, १०वें में सुखी, ११वें में महा सुखी, १२वें महाधनी बनाते हैं।

एक नक्षत्र जात फल—पिता-पुत्र, माता-पुत्र,. माता-कन्या, पिता-कन्या या दो भाई एक ही नक्षत्र में जन्में तो दोनों को ही महान् कष्ट दायक माने गये हैं। नक्षत्रों में, चरण में या राशि में भेद हो तो कुछ कम कष्टदायक होते हैं। अरिष्ट निवारण के लिए स्वर्ण दान, शान्ति पाठ, जप, हवन आदि कर्म अवश्य करा देना चाहिए।

गण्डमूल नक्षत्र चरण फल सारिणी

गण्डमूल नक्षत्र	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण
अश्विनी	पिता को कष्ट	सुख ऐश्वर्यवान	मंत्रित्व प्राप्ति	राज्य सम्मान
आश्लेषा	शांति से शुभ	धन हानि	मातृ हानि	पितृ हानि
मघा	माता को कष्ट	पिता को कष्ट	सुखी	धन-विद्या प्राप्ति
ज्येष्ठा	भाई को कष्ट	कनि. भाई को कष्ट	मातृ हानि	स्वयं को हानि.
मूल	पिता को हानि	माता को हानि	धन नाश	शांति से शुभ
रेवती	राज्य सम्मान	मंत्रित्व प्राप्ति	धन सुख	व्याधियाँ

उपरोक्त नक्षत्र गण्डमूल नक्षत्र होते हैं। इन में जन्मा बालक माता-पिता, अपने कुल या अपने शरीर को कष्टकारक होता है। इस के विपरीत यदि संकट समाप्त हो जाय तो अपार धन, वैभव, ऐश्वर्य, वाहनादि का स्वामी भी होता है। शास्त्रानुसार तो उचित यही समझा जाता है कि २७ दिन तक पिता को ऐसे बालक का मुख नहीं देखना चाहिए। मूल शान्ति कराने के बाद ही दान, हवन, पूजा आदि

करा कर २७ दिन बाद ही मुख देखे। परन्तु यह तभी उचित है जब बालक पिता को कष्टदायक हो या अभुक्त मूल में उत्पन्न हो। २७ दिन बाद वही नक्षत्र जब फिर आये तब पुरोहित द्वारा मूल शान्ति करा यथा सम्भव दानादि करके ही प्रसूति स्नान शुद्धि कराई जानी चाहिए। जन्म मास जन्म लग्न के अनुसार मूल का निवास कहां है तक उसका क्या फल होता है यह नीचे के चक्र में दिया है।

मूल निवास चक्र

चन्द्रमासानुसारेण	वैशा., ज्ये., मार्ग., फा.	चैत्र, श्राव., का., पौ.	आषा., आ.,माघ, भा.
जन्म लग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूल निवास स्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

प्रत्येक नक्षत्र लगभग ६० घटी का मान कर मूल नक्षत्र को एक वृक्ष की उपमा दी गई है और उसकी घटियों के अनुसार उसके मूल आदि विभाग किये गये हैं। बालक का जन्म जिस विभाग में हो उसी के अनुसार फल बताये गये हैं। जैसे प्रथम ७ घटी मूल (जड़), अगली ८ घटी स्तम्भ (तना), उसकी अगली १० त्वचा (छाल) आदि। मूल नक्षत्र में जन्म हो तो निम्न चक्र से फल देखें:

मूलजनन वृक्ष विभाग

मूले	स्तम्भे	त्वचायां	शाखायां	पत्रे	पुष्पे	फले	शिखायां	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घट्यः
मूल नाशः	वंश नाशः	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मंत्री पदम्	मंत्री पदम्	विपुल लाभः	अल्प जीवी	फलम्

इसी प्रकार नक्षत्र को पुरुष मान कर उस की घटियों को पुरुष के अंगों में स्थापित करके तदनुसार फल प्रतिपादन किया जाता है। यथा प्रथम ५ घटी में जन्म हो तो मूर्ध्निफल-राजा राजसी ठाट-बाट उपरान्त ७ घटी मुख संज्ञा-फल पिता को कष्ट आदि-आदि बालक के जन्म पर निम्न चक्र से फल देखें। मूल नक्षत्र में जन्मे बालक के लिये।

अथ मूल पुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुखे	स्कंधे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जानुनि	पादे	स्थानं
५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६	घट्यः
राजा	पि.मृ.	बली	बली	दानी	मंत्री	ज्ञानी	कामी	मतिमान्	मतिमान्	फलम्

मूल नक्षत्र में बालिका के जन्म पर निम्न चक्र से फल देखना चाहिये।

अथ कन्याजन्मनि मूल चक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जानुनि	पादे	स्थानं
४	६	५	५	५	८	९	४	४	१०	घट्यः
पशु नाश	धन नाश	धन लाभ	कुटिला	धन लाभ	दयातः	कामिनी	मातृ नाश	भ्रातृ नाश	वैधव्यं	फलम्

आश्लेषा नक्षत्र में जन्म बालक-बालिका का फल पुरुष अंगों के अनुसार निम्न चक्र से देखना चाहिए:

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ आश्लेषा चक्रम्

शिरसि	मुखे	नेत्रे	ग्रीवायां	स्कंधे	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुदे	पादे	स्थान
५	७	२	४	४	८	१०	६	७	७	घट्यः
पुत्रादि	पितृ नाश	मातृ नाश	स्त्री लाभ	गुरु भक्त	बली	आत्म हानि	भ्रमः	तपस्वी	धन हानि	फलम्

आश्लेषा नक्षत्र में जन्मे बालक-बालिका का फल वृक्ष के अंगों की घटियों के अनुसार निम्न चक्र से देखना चाहिए:

अथ आश्लेषा पुरुष वृक्ष चक्रम्

फले	पुष्पे	दले	शाखायां	त्वचायां	लतायां	स्कन्धे
१०	५	९	७	१३	१२	४
धनम्	धनम्	राजभयम्	हानिः	मातृ हानिः	पितृ हानिः	अल्पायुः

अभुक्त मूल विचार

ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्त की ४ घटी, अन्य किसी मत से १ घटी और मूल नक्षत्र के आदि की ४ घटी, अन्य मत से आधी घटी अभुक्त मूल होता है। इन घटियों में बालक जन्मे तो पिता ८ वर्ष पर्यन्त बालक का मुख न देखे, असमर्थ हो तो ६ मास त्याग करे। शांति हवन, अभिषेक आदि से युक्त अभुक्त मूल शांति, रुद्रार्चन, महामृत्युञ्जयादि विधान कर शुभ मुहूर्त में बालक के मुख का अवलोकन करें। कहते हैं संत तुलसीदास जी का जन्म इसी प्रकार के अभुक्त मूल में हुआ था।

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी में जन्मे बालक पर भी अरिष्ट दोष होता है उसका निर्णय निम्न तालिका के अनुसार करना चाहिए:

अथ कृष्ण चतुर्दशी विभाग फलम्

१	२	३	४	५	६	विभागः
शुभम्	पितृ नाश	मातृ नाश	मातुल नाश	कुल हानिः	धन हानिः	फलम्

त्रयोदशी की घटियों को ६० में से घटा कर चतुर्दशी की घटियां युक्त कर ६ का भाग दें, जो प्रथम भाग में होगा, उसके द्विगुणित दूसरा ऐसे ही क्रम से जानें। जिस भाग में जन्म हुआ हो उसके अनुसार फल को कहें, अरिष्ट हो तो शान्ति विधान करें।

सिनीवाली कुहू जनन फल

सिनीवाली—अमावस्या की अन्तिम पांच घटियों में जन्म हो तो सिनीवाली जनन समझा जाता है। जन्म के बाद अमावस्या की ५ या उससे कम घटियां रह गई हों। अर्थात् चन्द्रमा की केवल कुछ कलायें ही दृश्य मान हों तब सिनीवाली जनन होता है। इसका निर्णय सूक्ष्म गणित द्वारा चन्द्रमा की गति अनुसार करना चाहिए। यह अंतिम घटियां ४ और ५ के बीच होती हैं। इनमें जन्म होने से घर में बालक-बालिका या पशु, गाय, भैंस, घोड़ी आदि प्रसूत हो तो धन हानि, अपयश आदि का भय होता है।

कुहू जनन फल—अमावस्या की अन्तिम घटी के भी अन्तिम ५-१० पलों में जब चन्द्रमा की कलायें समाप्त या बिल्कुल नष्ट हो जायं तब अन्तिम घटी के भी अन्तिम पलों में जन्म हो तो कुहू जनन होता है। उस समय बालक या पशु जन्म हो तो अति अरिष्ट कारक होता है। इसका शास्त्रोक्त विधि से शान्ति अवश्य करना चाहिए।

अन्य अरिष्ट दोष

व्यतीपात योग में जन्म हो तो अंग हानि, वैधृति योग में जन्म हो तो पिता से वियोग, परिध योग में जन्म हो तो स्वयं को मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। मृत्यु योग, दग्ध योग, भद्रा, संक्रांति के दिन, सूर्य चन्द्रग्रहण समय में शूल योग, व्याघात योग, अतिगण्ड योग, वज्र योग, तिथि क्षय, क्रान्ति साम्य (महापात योग), विश्वधस्र पक्ष में क्षय मास में जन्मे बालकों को कुयोग में जन्मा समझा जाता है। इनकी आयु तथा आरोग्य के लिए शास्त्रोक्त विधि-विधान से ग्रह शान्ति करा देना चाहिए। जिस प्रकार २७ नक्षत्र होते हैं उसी प्रकार २७ योग होते हैं। व्यतिपात, वैधृति, परिघ, व्याघात, अतिगण्ड, शूल, वज्र इन २७ में से कुछ अशुभ योग हैं। तिथि के अधि भाग को करण कहते हैं। विष्टि करण को भद्रा कहते हैं। तिथि, नक्षत्र, वार आदि के संयोगों से कुछ योग बनते हैं। जिनकी सूचना पंचांगों में दी होती है। मृत्यु योग, दग्ध योग आदि ऐसे ही कुयोग हैं इनकी शान्ति कराना आवश्यक होता है।

स्त्री दासी गौ आदि पशु यमल जन्म फलम्

त्रिविधा यमलोत्पत्तिर्जायते योषितामिह। सुतौ च सुत कन्ये वा कन्या एव तथा पुनः॥
एक लिंगो विनाशाय द्वि लिंगो मध्यमौ स्मृतौ। पित्रोर्विघ्नकरौ ज्ञेयो तत्र शान्तिर्विधीयते॥

तीन प्रकार से जुड़वां सन्तानों की उत्पत्ति होती है। दोनों लड़के हों या दोनों लड़की हों या एक लड़का एक लड़की हो। इस में एक लड़का एक लड़की का होना तो मध्यम, साधारण है। परन्तु एक ही तरह के लिंग वाली सन्तान हों तो उनका फल माता-पिता के लिए अच्छा नहीं बताया गया है। उसकी शान्ति कराना श्रेयस्कर होता है।

जन्म स्थान विचार

बच्चे का जन्म किस प्रकार के स्थान में हुआ है इस के नियम ज्योतिष फलित में बताये गये हैं। जिनमें से मुख्य नियमों की जानकारी दी जा रही है। कर्क, मकर, मीन यह तीन जलचर राशियां हैं। लग्न या चन्द्रमा इन राशियों में है अथवा लग्न पर पूर्ण चन्द्रमा की दृष्टि हो अथवा चन्द्रमा जलचर राशि के प्रथम, चतुर्थ या दशम स्थान में हो तो जन्म जल के ऊपर या जल के पास होता है, जल से तात्पर्य नदी, तालाब, झील, समुद्र, झरना, कुआ, नहर आदि समझना। नौका, जहाज, पुल के ऊपर भी जल का सामीप्य होता है। चन्द्रमा कर्क राशि का हो, बुध लग्न में हो, गुरु चौथा अथवा लग्न में जलचर राशि हो, चन्द्रमा सप्तम हो तो भी जन्म जल पर या समीप में ही हुआ समझना चाहिए। लग्न या चन्द्र में शनि १२वां हो, लग्न या चन्द्र को पाप ग्रह देखते हों तो जन्म कारागार में या एकान्त में जंगल वियावान में समझिये। शनि कर्क या वृश्चिक लग्न में हो और चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि हो तो खाई खन्दक में जन्म होता है। पुरुष राशि की लग्न हो, लग्न में शनि हो, मंगल की दृष्टि हो तो शमशान या शमशान के पास जन्म। पुरुष लग्न में शनि को शुक्र व चन्द्रमा देखते हों तो राजमहल या देवालय मन्दिर में जन्म, लग्नगत गुरु पर बुध की दृष्टि हो तो चित्रकारी किये हुए, मूर्तियां बने हुए सुन्दर घर में जन्म होता है। इस प्रकार ग्रहों के बलावल पर विचार करके फल कथन करना चाहिए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बाल कष्टावली चक्रम् (पूजा विधि)

प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़कर बलि को ७ बार शिर पर फिरा कर उचित स्थान पर नाम से रख आवें।

किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है	असित लक्षण	पूजन द्रव्य	मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य	बलि विधान व समय	धूप	स्नान पूजा मार्जन मन्त्र
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, स्वेद मन्दस्वर, कम्पन, अरुचि, अंगशोथ।	श्वेत चंदन, तिलक, श्वेतपुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक, ५ आटे के सतिये, कपूर, लोहबान।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेत भात, ५ पूर्ण पोली (सुहाली) १ पहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना।	राई, खस, कमल के फूल, बिल्ली और	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वरुणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च कुमारकम्॥
द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना	ज्वर, हाथ-पैर जकड़ना, संकोच, दांत चबाना, नेत्र खुले, नेत्र रोग भय, कृषता।	१० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिये १०।	एक सेर चावलों का आटा	भात, एक सेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय प. दिशा में चौरास्ते पर रखना।	मनुष्य के बाल निम्बपत्र, गोघृत।	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चै हांहां हीं हीं हुंहुं दुष्टाग्रहा गच्छन्त्वत: स्थानाद्रुद्राज्ञया स्वाहा।
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हड़फूटन, खांसी, शिर झुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा	रक्तचंदन, रक्तपुष्प, श्वेत ध्वजा, दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १०।	एक सेर चावलों का आटा	एक सेर लाल भात, आध सेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	लहसुन, गोशृंग सांप की कांचली	सुनन्दना विधानोक्त
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	गात्र भंग, शिर झुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमीलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता।	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प।	तिल चुर्ण एक सेर	भात, १ सेर आटे के पूड़े, आधा सेर पूर्णपोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	नीम के पत्ते पुरुष और बिल्ली के बाल	सुनन्दना विधानोक्त
पंचम दिन मास वर्ष में विडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी तेज।	श्वेतचंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेतध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये।	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत भात, ७ पूड़ियां, सायंकाल प. दिशा में वृक्ष के नीचे रखना	गोघृत।	ॐ भगवती हीं हीं हुं हुं मुंच रक्षां कुरु कुरु बलिं गृहण-२ अस्त्र ठ: ठ: चामुण्डे चण्डिके ठ: ठ: स्वाहा
षष्ठ दिन मास वर्ष में षट्कारिका	ज्वर, हड़फूटन, हंसना, कभी-२ रोना, मोह मूर्च्छा।	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेत ध्वजा ५।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर रखना	कूठ, गुगल,	योगिनी विधानोक्त
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीर कम्पन।	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५।	चावलों का आटा एक सेर	भात, ७ पूड़ियां सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखना	राई, हाथी दांत, घृत।	विडालिका विधानोक्त
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप	रक्तचंदन, ५ रंग की झंडी ५, दीपक ५।	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग, छाग मांस, संध्या में चौरास्ते पर रखना।	राई, हाथी दांत, घृत।	विडालिका विधानोक्त
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, आफरा, घृणा।	चन्दन, पुष्प, ५ दीपक, सफेद रंग की झण्डी ५।	एक सेर गेहूं का आटा।	भात, मत्स्य मांस, पापड़ी, सुहाली, उत्तर में प्रात: चौरास्ते पर रखना।	गोशृंग, लहसुन	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हनहन हुं फट् स्वाहा
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हड़फूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास	रक्त पुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये।	एक सेर गेहूं का आटा	गुड़ के घी भुने चावल, गोघृत, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	सांप की कांचली निम्ब	ॐ नमो भगवते वैश्वेदेवाय हन हुं फट् स्वाहा।
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर हड़फूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता।	श्वेत पुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद, झण्डी, २५ आटे के सतिये।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७, सांय व प्रात: दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	पत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई	ॐनमो भगवते रावणाय, चन्द्रहास वज्र हस्ताय ज्वल, २ दुष्ट ग्रहादीन् ॐह्रीं फट् स्वाहा
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांत चबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्र पीड़ा, संताप।	१३ दीपक, १३ झण्डी, १३ तकिये आटे के।	चावलों का आटा एक सेर	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियाँ ७, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	गोघृत।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय २ मर्दय २ तापय २ हूं २ हन २ दुष्टाना ह्रां हूं फट स्वाहा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट लक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन	जपनीय वेदोक्त मंत्र	जप सं.	होम द्रव्य	वलि द्रव्य	करे धारणम्	गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु
अश्विनी (दस्रौ)	वातज्वर, गात्रपीड़ा, निद्रा भय, बुद्धिभ्रम	९	१, २, ३, ४ ५, १०, ११, २०	ॐ अश्विनातेजसाचक्षुः प्राणंनसरस्वतीवीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः॥	५ सहस्र	खण्ड यव घृत	गुडौदन तिल	अपामार्ग मूलम्	श्वेत चन्दन, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत-दीप, क्षीर, मोदक, गुड़, नैवेद्य।	सुवर्ण घृत कुम्भ
भरणी (यमः)	छर्द रोग, तीव्र ज्वर अनेक रोग, आलस्य	११	०, ८, ४०, ११	ॐ यमायत्वाङ्गिरस्यत्वै पितृमते स्वाहा स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे॥ ॐ यमाय नमः॥	१० सहस्र	घृत मधु तिलाक्षत	कृषरान्न (खिचड़ी)	अगस्त मूलम्	अगर गंध, करवीर पुष्प, घृत दीप, घृत, गुग्गुल, धूप, गुडोदन नैवेद्य।	गो, महिषी घृत शर्करा, छायापात्र
कृत्तिका (अग्निः)	नेत्र पीड़ा, अनिद्रा, अतिदाह, उरुशूल	९	९, ११, १६, २८	ॐ अग्निमूर्धादिव: ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा रेता सिजिन्वति॥ ॐ अग्नये नमः॥	१० सहस्र	तिलयव घृत	पायस घृत मोदक	कापसि मूलम्	श्वेतचन्दन गंध, जुहीपुष्प, घृतदीप, घृत, गुग्गुल, धूप, तिलमाषान्न, वडाधीका, नैवेद्य।	स्वर्ण, गोदान
रोहिणी (ब्रह्मा)	शिर पीड़ा, ज्वर, कुक्षिशूल, प्रलाप	७	७, ९, १८, ३०	ॐब्रह्मजज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनआवः सुबुध्न्या उपमाअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविवः॥ ॐ ब्रह्मणेनमः॥	५ सहस्र	तिलाज्य घृत यव	मध्याज्यक्षी साज्यन्नक्षी	अपामार्ग मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, घृत, पायस, नैवेद्य।	सप्तधान्य, कृष्ण गौ दान, ५ कन्या भोजन
मृगशीर्ष (चन्द्रः)	त्रिदोष, महाकष्ट, अर्द्धगात्र पीड़ा	३	९, ५, ७, १०	ॐ इमन्देवा असपत्न सुवध्वं महतेक्षे त्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममुष्यपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यैविश एषवोऽमीराजासोमोस्माक ब्राह्मणाना राजा॥ ॐ चन्द्रमसे नमः॥	१० सहस्र	दधि पायस	दधिशर्करा शाल्यन्न	जयन्ती मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, पायस, अपूपमध्वोदन नैवेद्य।	दधि, तन्दुल सवत्सा गोदान
आर्द्रा (शिव)	त्रिदोष, ज्वर, सर्वांग पीड़ा, अनिद्रा	मृ.तु.	०, १८, ०, ०	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नमः बाहुभ्यामुतते नमः॥ ॐ रुद्राय नमः॥	१० सहस्र	घृत मधु	दध्योदन मध्वाज्य	सचंदना अक्षतमूलम्	श्वेत चन्दन गंध, सौरभ पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, पायसौदन नैवेद्य।	श्याम वृषभ दान श्याम वस्त्र
पुनर्वसु (अदिति)	ज्वर, शिर पीड़ा, कटि पीड़ा	७	७, १४, २, २१	ॐअदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदिति माता स पिता स पुत्रः विश्वे देवा अदितिः पञ्चजनाअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ ॐअदितायः नमः॥	१० सहस्र	घृत तन्दुल	साज्य पीत तन्दुल	अर्क मूलम्	हरिद्राकुंकुम गंध, सेवन्तिका पुष्प, अष्ट गंध धूप, घृत दीप, घृतात्कपीतवर्णान्न नैवेद्य।	वस्त्र, स्वर्ण, कमल ५ कन्या भोजन
पुष्य (गुरु)	ज्वर, शूल, महाकष्ट	७	७, ७, १०, २१	ॐबृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतु मज्जनेषु। यदीदयच्छवत्र सऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐबृहस्पतये नमः॥	१० सहस्र	घृत पायस	समण्डक मोदक	तुषार मूलम्	कुंकुम गंध, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत, पायस, शर्करा, नैवेद्य।	सूवर्ण गौ, पीत वस्त्र
आश्लेषा (सर्पः)	सर्वांग पीड़ा, पाद पीड़ा, मृत्युसम कष्ट	मृ.तु.	०, ०, ४१, ०	ॐनमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्योनमः॥ ॐसर्पेभ्यो नमः॥	१० सहस्र	शर्करा घृत	हवि दध्योदन	पटोल मूलम्	कुंकुम, अगर गंध, अगस्त पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत मिष्ठान्न, नैवेद्य।	सवत्सा श्याम गौ, छायापात्र
मघा (पितरः)	शिर पीड़ा, अर्द्धमात्र पीड़ा	२०	१५, ७, १७, २०	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। प्रपितामहेभ्यस्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्नपित्रोमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्तपितरः पितरः शुन्धध्वम्॥ ॐ पितरभ्ये नमः॥	१० सहस्र	तिल घृत तन्दुल	सतिलाज्य दुग्धान	भंगराज मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, चम्पक पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत, क्षीर, नैवेद्य।	वस्त्र, तिल, उड़द
पू.फा. (भगः)	गात्र व्यथा, ज्वर, शिर पीड़ा	मृ.तु.	०, १५, ०, ३०	ॐभगप्रणेतर्भगसत्यराधोभगेमाधियमुदवाददन्नः भगये प्रणोजनयगोभिरश्वैर्भगप्रनृभिनृवैनः स्याम॥ ॐभगाय नमः॥	१० सहस्र	कङ्गनी तिलघृत	घृतौदन पायस	कटकारी मूलम	श्वेत चन्दन गंध, मालती पुष्प, घृत विल्व, धूप, घृत दीप, अपुपोदन मोदक, नैवेद्य।	पित्तल, यव उड़द स्वर्ण गौ दान
उ.फा. (अर्यमा)	कुक्षिशूल, ज्वर, शिर पीड़ा, अतिकष्ट	७	७, १४, ७, ६०	ॐदेवावध्वर्यूआगतरथेनसूर्यत्वचा मध्वाय समंजाये तं प्रत्नकथा यं वेनश्चित्रं देवानाम्॥ ॐ अर्यम्णे नमः॥	१० सहस्र	तिल घृत	घृत शर्करा शाल्यन्न	पटोल मूलम्	कर्पूर, केसर, गंध, अर्क पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत पायस, नैवेद्य।	सुवस्त्र, सुवर्ण, रजत, अन्न, गौदान
हस्त (सविता)	उरुशूल, आफरा, सर्वांग पीड़ा, प्रस्वेद	१५	१५, १७, १५, ०	ॐ विश्राडबृहत्पिबतु सोम्य मध्यायुर्दधयज्ञपता व विहुतमम् वातजूतो योअभिरक्षतित्मनाप्रजाः पुपोषपुरुधा विराजति॥ ॐसवित्रे नमः॥	५ सहस्र	दधि घृत	मिष्ठान्न पायस	जाति मूलम्	रक्त चन्दन, केसर गन्ध, कमल पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृतदीप, घृत, पायस, नैवेद्य।	स्वर्ण, पर्यस्विनी गौ दान
चित्रा (विश्व.)	विचित्र रोग अतिकष्ट	११	११, ९, ९, १६	ॐ त्वष्टातुरीयोअद्भुतइन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदा-छन्दइन्द्रियमुक्षागौत्रवयोदधः॥ ॐ विश्वकर्मणे नमः॥	१० सहस्र	तिलाज्य घृत तन्दुल	विचित्रान्न घृत	मखव मूलम्	केसर गंध, विचित्रवर्ण पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृतदीप, विचित्रान्न मोदक, नैवेद्य।	तिल, गुड़, विचित्र वृषभ, छायापात्र

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट लक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन	जपनीय वेदोक्त मंत्र	जप सं	होम द्रव्य	वलि द्रव्य	करे धारणम्	गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु
स्वाती (वायुः)	नाना कष्ट, ज्वर पीड़ा	मृ.तु.	६०,१७,३०,०	ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणी रथा सस्ते त्रिरागहि नियुत्वाम सोम पीतये॥ ॐ वायये नमः॥	१० सहस्र	तिल,यव घृत	घृत पायस	जाति मूलम्	चन्दन गन्ध (दमनक पुष्प) अगर, गुग्गुल धूप, घृतदीपक, घृतपायस नैवेद्य।	स्वर्ण, रक्तवेणु पकवान्न
विशाखाः (इन्द्राग्नि)	सर्वांङ्गपीड़ा, कुक्षिशूल	१५	१५,०,४,१३	ॐ इन्द्राग्नी आगंत सुतं गीर्मिर्नमो वरेण्यंमू। अस्यं पातं धियेषिता॥ ॐ इन्द्राग्निभ्यां नमः॥	१० सहस्र	आज्य पायस	सहवि चित्रान्न	गुञ्जा मूलम्	चन्दन, केसरगन्ध, कमल पुष्प, देवदारु, घृतधूप, घृत दीप, धृपायस नैवेद्य।	रक्तपीतवस्त्र कृष्ण-वृषभछायापात्रदान
अनुराधा (मित्रः)	शिरपीड़ा, तीव्र ज्वर		६०,१२,३६,३०	ॐ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृत सपर्यत दूर दृशे देव जाताय केतवे दिवसपुत्राय सूर्यायशꣳसत्॥ ॐ मित्रायनमः॥	१० सहस्र	यव-घृत	मध्वाज्य गुड उड़द	सुपुष्प मूलम्	केसरगन्ध, कमल पुष्प, चन्दन धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य	स्वर्ण गौ, छायापात्रदान
ज्येष्ठा (इन्द्रः)	पित्तरोग, कम्पन, व्याकुलता	मृ.तु.	१९,९,६,४	ॐ ज्ञातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवे हवे सुहवꣳशूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रं पुरुहुतमिन्द्रꣳस्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः॥ ॐ इन्द्राय नमः॥	५ सहस्र	तिल, घृत तण्डुल	दध्योदन सुपुष्प	अपामार्ग मूलम	श्वेतचन्दनगंध, चम्पकादि पुष्प, कपूर धूप, घृतदीप, चित्रान्न नैवेद्य।	स्वर्ण तिल, नील वस्त्रदान
मूल (राक्षसः)	मुख तथा उदर रोग, सन्निपात	७	०,९,१५,६	ॐ मातेव पुत्र पृथ्वी पुरीष्यमणि स्वेयोनाव भारुषा। तां विश्वेदेवऋतुभिः संवदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु॥ ॐ निर्ऋतये नमः॥	५ सहस्र	कन्दमूल घृत	सहवि उड़द	मन्दार मूलम्	कृष्ण अगरुगन्ध, नीलोत्पलपुष्प, घृतदीप कृष्णगरु धूप, माषामिश्रान्न नैवेद्य।	गौ, छायापात्र, वस्त्र, कुमारी पूजा
पू.षा. (जलम्)	शिरपीड़ा, कंपन, महाकष्ट	मृ.तु.	०,१५,२४,१०	ॐ अपाधमप किल्विषमपकृत्यामपोरपः। अपाम्मार्ग-त्वमस्मदंनदुःस्वप्न्यꣳसुव॥ ॐ अदभ्यो नमः॥	५ सहस्र	तिल, घृत तण्डुल	घृतपायस मिष्ठान्नहवि	कर्पास मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, कमल पुष्प, घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपापायसान्न नैवेद्य।	स्वर्ण वस्त्र, तिल, तण्डुल, जलकुम्भ गौदान
उ.षा. (विश्वे-देवा)	कटिपीड़ा, उरुशूल, प्रलाप	३०	३०,२४,२९,१६	ॐविश्वेदेवाः शृणुतेमꣳहव मे ये अन्तरिक्षे य उपध्यविष्ठम्। अग्निजिह्वा उतवायजत्रा आसद्यास्मिन्वर्हिषि मादयध्वम्॥ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्योनमः॥	१० सहस्र	तिलाज्य यव	सहवि पायस	कर्पास मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल धूप, घृत दीपक, घृतपायसान्न नैवेद्य।	आमान्न, स्वर्णदान
श्रवण (विष्णुः)	सर्वांगपीड़ा, त्रिदोषभय, अतिसार	११	६०,२४,६,९	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नेप्त्रेस्थो विष्णोः स्थूरत्सि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा॥ ॐ विष्णेव नमः॥	१० सहस्र	तिलाज्य यव	तिलाज्य सहविपायस	अपामार्ग मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, मालती पुष्प, कर्पूर, गुग्गुलधूप, घृतदीप, षड्रश शाल्यन्न नैवेद्य।	स्वर्ण गौ, छायापात्रदान
धनिष्ठा (वसवः)	ज्वर-कम्पन, रक्तातिसार, मूत्रकृच्छ	१५	१५,२,२७,२१	ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कामक्षुधः॥ ॐ वसुभ्यो नमः॥	१० सहस्र	तिलाज्य पायस	पायस मोदक पूप-तिलपिष्ठ	भृङ्गराज मूलम्	श्वेतचंदन गन्ध, कमलपुष्प, गुग्गुल धूप, घृत दीपक, घृतपायस नैवेद्य।	छत्रोपानत् अश्व, स्वर्ण, गौ
शतभिषा (वरुणः)	वात-ज्वर, सन्निपात, कष्ट	११	०,४५,३,३६	ॐवरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनिस्थो वरुणस्य ऋत सदन्यसी वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदन मासीद॥ ॐवरुणाय नमः॥	१० सहस्र	आज्य दध्योदन	घृत चित्रान्न	कमल मूलम्	केसर अगर गंध, कमलपुष्प, कर्पूर-चंदन धूप, घृतदीपक, घृतपोलिका नैवेद्य।	स्वर्ण, तिलान्न, घट, अश्व, छायापात्र
पू.भा. अजैकपाद)	वमन, व्याकुलता, शरीरपीड़ा, त्रिदोष	मृ.तु.	०,१२,५१,१७	ॐउतनोऽहिर्बुध्न्य शृणोत्वजं एकपात्पृथिवी समुद्रः। विश्वेदेवाऽऋता-वृधोहुवानास्तुता मंत्राः कविशस्ता अवन्तु॥ ॐ अजैकपदे नमः॥	१० सहस्र	क्षीराज्य शर्करा	दध्योदन पायस	भृङ्गराज मूलम्	केसर चन्दन गंध, श्वेताऽर्क पुष्प, शतौषधि, मिश्रित धूप, घृतदीपक, दधिपायस नैवेद्य।	स्वर्णरजत, अन्न, श्वेतवस्त्र, छायापात्रदान
उ.भा. अहिर्बुध्न्य)	कामला, अतिसार, शूल, वात-ज्वर	७	१०,२०,७,१५	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मामालि ꣳ सी निन नवर्तयाम्यायुऽषेन्नाद्या प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय॥ ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः॥	१० सहस्र	तिलाज्य यव	तिल घृत भुदग् माष	अश्वत्थ मूलम्	चन्दन-कर्पूरगंध, कमलपुष्प, बिल्वगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	स्वर्णरजत, तिल कृष्ण वस्त्रदान
रेवती (पू.षा.)	वात, पित्तमय-ज्वर, उरुशूल, चित्तभ्रम		१८,१०,९,२०	ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इह स्मसि॥ ॐ पूष्णे नमः॥	५ सहस्र	तिलाज्य तण्डुल	सहवि दध्यन्न	अश्वत्थ मूलम्	रक्तचंदनगंध, मंदार पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	रक्तवस्त्र, पैत्तलपात्रं वृषभ, छायापात्र

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

बाल कष्टावली-चक्र में प्रयुक्त कठिन शब्दों के अर्थ

बालक को जब अरिष्ट होता है तो उसके निवारण के लिए जो पूजा की जाती है, वह बाल कष्टावली चक्रम् (पूजा-विधि) में दी हुई है। बालक को कष्ट हो तो ज्ञात करो कि उसकी आयु का कौन-सा दिन, मास या वर्ष है। बारह दिन, मास, वर्ष तक कौन-सी पूतना का कब-कब प्रभाव रहता है, उनका नाम दिया गया है। रोग, पीड़ा के लक्षणों में ज्वर (बुखार को), स्वेद (पसीना आने को), मन्द स्वर (मन्दी, धीमी आवाज), कण्ठ स्वर को कम्पन से कपकपी (शरीर में रोंये खड़े हो जाना), अरुचि (भोजन में दूध पीने की इच्छा न होना, उसको अरुचि हो जावे तो कहते हैं)। अंगशोथ (शरीर में सूजन, संकोच शरीर का सिकुड़ना), कृशता (शरीर का कमजोर होना), खून की कमी (हड्डियां दिखाई देना), सूखा शरीर, हडफूटन (हड्डियों में दर्द से अकड़न को), नेत्रमीलन (आंखे मसलना, मीड़ना), बच्चा हाथ से आँखे मसलता है (आंख में खुजली होती है)। श्यामता (शरीर का रंग काला पड़ जाना), रुदन (रोना), नेत्र पीड़ा (आंखों के रोग को समझना चाहिए)। गात्र भंग (शरीर में दर्द होना, शरीर का ढीला पड़ जाना), अनिन्द्रा (नींद न आना, हड्डफूटन), हंसली (गले की हड्डी उतर जाना), मोह मूर्च्छा (नींद जैसी विहोशी), वमन (उल्टी होना), मुखशोध, (मुंह की सूजन), सन्ताप (मानसिक कष्ट), शोक (वियोग कष्ट), श्वांश जल्दी-जल्दी चलना, (शूल दर्द पीड़ा), आफरा (पेट फूल जाना), घृणा, घिन हो जाना (हर चीज से अरुचि), रोमाञ्च (रोंगटे खड़े हो जाना) और बहुरोदन (बच्चा ज्यादा रोता है) उसको कहते हैं। बीमारी के लक्षणों से भी पूतना की पहचान की जाती है।

पूतना की मूर्ति बनाने के लिए जो चीजें लिखी हैं, उनसे एक स्त्री मूर्ति बना ली जाती है और उसमें जिसकी पूजा करनी हो उसके मन्त्रों से उसी योगिनी आदि की स्थापना कर ली जाती है। नदी के किनारों की मिट्टी या किसी तालाब, जलाशय, कुये, बावड़ी के दोनों किनारों की मिट्टी, पिसे तिल, चावल काले उड़द का आटा जैसा जहां लिखा है, उसमें पानी मिलाकर या तेल मिलाकर पूतना की मूर्ति बनाई जाती है।

पूजा के पदार्थों में श्वेत चन्दन (सफेद चन्दन) को घिसकर तिलक बनाते हैं। श्वेत पुष्प (सफेद फूलों को), पंचरंगी झंडियों में कोई से भी पांचरंग के कागज या कपड़े लेकर झंडी बनाई जाती है और मूर्ति के चारों तरफ दीपक, सतिये के साथ लगाते हैं। सतिये आटे से स्वास्तिक की शकल बनाते हैं, उस पर आटे के दीपक बनाकर रुई की बत्ती व घी, तेल डालकर जलाकर रखते हैं। कपूर, लोबान जैसा बताया हो जलाते हैं। जहाँ रक्त चन्दन लिखा है वहां लाल चन्दन लो, रक्त पुष्प (लाल रंग के फूल), श्वेत ध्वजा (सफेद झंडा-झंडी), जहां कोई रंग नहीं लिखा हो वहां सफेद रंग की होती है। सतिये चावल या गेहूं के आटे के बनाने चाहिये।

बलि विधान में भात चावल का होता है। पूर्ण पोली(गेहूं के आटे में गुड़ मिलाकर बड़े पूये बनाते हैं उसको कहते हैं), मत्स्य (मछली का मांस होता है) लाल भात (चावल के भात में लाल चन्दन का चूरा मिलाने से बनता है।) मीठी पूड़ियों को सुहाली कहते हैं। छागमांस (बकरे-बकरी के मांस को), पापड़ी (छोटे पापड़ जैसी तेल में तली आटे की पापड़ियां होती हैं)। जिस समय, जिस दिशा में, जिस स्थान पर रखने को बताया गया है—समस्त बलि पदार्थ बिना टोका-टाकी के रख आना चाहिए, वापिसी में पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिये। पूजा समय धूप दी जाती है, वह जिस विधान में जिन वस्तुओं से बनाने को लिखा है उन्हीं से बनाना चाहिये।

राई, खस की जड़, कमल के फूल सुखाकर या बीज का कमल गट्टे, बिल्ली के बाल (किसी पालतु बिल्ली के मिल सकते हों), मनुष्य के बाल, निम्बपत्र (नींबू के पेड़ के पत्ते) पीसकर गोघृत (गाय के घी) में मिलाकर धूप बना लो। गोशृंग (गाय का सींग), कूट (एक दवा होती है), अत्तर दवा बेचने वालों के यहां मिल जाती है, गुग्गल को गूगल भी कहते हैं। स्नान, पूजा मार्जन मन्त्र प्रत्येक पूतना का दिया हुआ है। इसी मंत्र से मूर्ति का आवाहन (स्नान पूजा व मार्जन) अर्थात् मंत्र पढ़कर चारों ओर जल छिड़कना चाहिए। बलि पदार्थ को हाथ में लेकर २१ बार मंत्र पढ़कर बालक के शरीर के ऊपर सिर से पैर तक सात बार फिराते हैं, उसे ओसारा कहते हैं। फिर उसे जैसा बताया है यथा स्थान रख देना चाहिए। बालक के माता-पिता, सम्बन्धी कोई भी इस काम को कर सकता है।

नक्षत्र कष्टावली विवेचन

नक्षत्र कष्टावली में कठिन संस्कृत शब्दों के सरल अर्थ और विशेष विवरण दिया जा रहा है। बालक का जन्म जिस नक्षत्र के जिस चरण में हो, उसके सामने यदि कष्ट दिन लिखे हों तो निवारणार्थ पूजा विधान कराना चाहिए। मान लो यदि अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म हुआ हो तो इसमें २० दिन तक के बालक को कष्ट हो सकता है। किस प्रकार का कष्ट हो सकता है, उसके लक्षण दिये हैं—वात, ज्वर, गात्र पीड़ा, निद्राभय, बुद्धिभ्रम, वात, ज्वर में बुखार के साथ शरीर में दर्द भी होता है। गात्र पीड़ा से तात्पर्य शरीर में पीड़ा, दर्द, शूल आदि से है। निद्राभय (सोते में डर जाना), बुद्धिभ्रम (बच्चा अपनी स्वाभाविक बुद्धि खो देता है), आँखे फाड़-फाड़ कर देखना, इस प्रकार के लक्षण प्रगट होते हैं। लक्षणों में प्रयुक्त अन्य शब्द जैसे—तीव्र ज्वर, तेज बुखार, अति दाह, तीव्र जलन, उरुशूल (पेट दर्द), कुक्षि शूल (पेट के नीचे भाग में दर्द), प्रलाप भी एक प्रकार का बुद्धि भ्रंश है। त्रिदोष (सन्निपात), अर्धगात्र पीड़ा (शरीर के एक ओर के आधे भाग में पीड़ा), छोटे बच्चे में इन लक्षणों व कारणों का जानना अनुभव से ही होता है। सर्वांग पीड़ा (सारे अंग में पीड़ा), कटि पीड़ा (कमर में दर्द), पाद पीड़ा (पैरों में दर्द), आफरा (पेट फूलना), प्रस्वेद (बहुत पसीना आना), अतिसार (दस्त लगना), पेचिस रक्त अतिसार (खूनी पेचिश), मूत्र कृच्छ (पेशाब का रोग) होता है। रोग का निदान व औषधि तो डाक्टर वैद्य से ही कराना चाहिए परन्तु उसका निवारण पूजा विधि से करा देना चाहिए।

गन्धादि पदार्थों में—श्वेत चन्दन (सफेद चन्दन), कमल पुष्प (कमल के फूल), गुग्गल (गूगल की धूप), क्षीर (खीर), मोदक (लड्डू), गुड़ नैवेद्य (मिष्ठान्न), अगर गन्ध (अगर एक खुशबूदार जड़ी होती है), करवीर पुष्प (करवीर का फूल), गुड़ोचन (दही में गुड़ मिलाकर बनाया जाता है)। जुही पुष्प (जुही का फूल), तिल माषान्न (तिल व उड़द को मिलाकर बनाया गया बड़ा), दशाङ्ग धूप में दस सुगन्ध पदार्थ पड़ते हैं। अगर, तगर, कपूर, केसर, गोरोचन, कस्तूरी, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, बाल छड़, घी। पायस (दूध, चावल की खीर), अपूप (आटे के मीठे पुये), मध्वोदन (शहद, दही मिलाकर बनता है), नैवेद्य (भोग प्रसाद को कहते है।) सौरभ पुष्प (खुशबूदार फूल), पायसोदान (दूध, दही, मधु या गुड़ मिलाकर बनता है, हरिद्रा (हल्दी), कुंकुम, (रोली), सेवन्तिका पुष्प (सेवन्तिका का फूल), अष्टगन्ध धूप (अष्टगन्ध की धूप), धृताक्त पीतवर्ण नैवेद्य (पीले रंग का घी में तला भोग, बेसन का बना घी में सिका, तला लड्डू या अन्य पदार्थ), घृत पायस शर्करा (घी, शक्कर, दूध का नैवैद्य), घृत बिल्व धूप (बेलपत्र के फल से बनी धूप), घृत (घी), मिष्ठान्न (मिठाई), घृत मिष्ठान्न (घी की मिठाई), घी से तात्पर्य—गाय, भैंस का घी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

होता है। अपूपोदन मोदक (अपूप-मीठे पूये, ओदन-दही में गुड़ मिला रस, मोदक-लड्डू तीनों मिलाकर अपूपोदन मोदक), अर्क पुष्प (अकौआ का फूल, सफेद फूल थोड़ा, बैंगनी या नीला रंग का होता है, इसमें बाँडे होते हैं, जिसमें से रुई के रेशे के समान पदार्थ हवा में उड़ता रहता है। शिवजी का प्रिय फूल आक का होता है)। विचित्र वर्ण पुष्प (रंग बिरंगे कई रंग के या अलग-अलग रंग के फूल), विचित्रान्न मोदक (अनेक प्रकार के चित्र विचित्र अन्न से बने हुए लड्डू जैसे—कूटू, सिंघाड़ा आदि के आटे के या मूंग के लड्डू), अगरु (अगर), दमनक पुष्प (दमनक का फूल), फूलों की जातियों नामों की जानकारी माली या नरसरी से प्राप्त की जा सकती है। यह सफेद रंग का, बसन्ती रंग का पुष्प होता है। देवदारु (खुशबूदार लकड़ी देवदार का बुरादा बढ़ई या फर्नीचर वालों से मिल सकती है), चम्पकादि पुष्प (चम्पक वगैरा के फूल), चित्रान्न नेवैद्य (कई प्रकार के अन्नों के आटे आदि से बना भोग प्रसाद नेवैद्य), कृष्ण, अगर गन्ध (काली अगर की खुशबू या घिसकर बना तिलक), नीलोत्पल पुष्प (नीली पंखड़ी वाले फूल), माष मिश्रान्न नेवैद्य (देवताओं के प्रसाद भोग लगाने को बनाये पदार्थ को नेवैद्य कहते हैं) उड़द के साथ और भी पिसा हुआ अन्न मिलाकर बनाया गया नेवैद्य। षड्रस शाल्यान्न नैवैद्य, षडरस (षटरस, छः प्रकार के रस स्वाद वाला शाल्य यानी चावलों से बना षटरस व्यञ्जन का खट्टा, मीठा, चिरपिरा, कसैला, नमकीन, कडुवा सब प्रकार के स्वादों ये युक्त षटरस होता है), श्वेतार्क (सफेद आक), शतोषधि (मिश्रित धूप १०० वनस्पतियों को मिलाकर बनी धूप)। मदार पुष्प भी आक, अकौआ के फूल को कहते हैं।

दान पदार्थ—घृत कुम्भ (घी भरा घड़ा), गोमहिषी घृत (गाय भैंस का घी), शर्करा (शक्कर), छायापात्र (तेलयुक्त बर्तन जिसमें अपने मुख की छाया देखी जा सके), सप्तधान्य (सात प्रकार के अन्न), तन्दुल (चावल), सवत्सा गोदान (बछड़े सहित गौ का दान), श्याम वृषभ दान (काले बैल का दान), माष (उड़द), यव (जौ), सुवस्त्र (उत्तम वस्त्र), पयस्विनी गौदान (दूध देने वाली गाय का दान), विचित्र वृषभ (चितकबरे, रंग का बैल), रक्तधेनु (लाल गाय), पक्वान्न, जलकुम्भ (जल से भरा घड़ा), छत्रोपानत् (छत्तरी), पैत्तल पात्र (पीतल का बर्तन) होता है।

बलिद्रव्य (बलिदान के लिये पदार्थ), गुड़ोदन (गुड़ का ओदन दही में गुड़ या शक्कर और पानी मिलाकर बनता है), शाल्यन्न क्षीर (चावल की खीर), पीत तन्दुल (पीले चावल), तिल पिष्ठ (तिल की पिट्ठी), मुद्ग (मूंग), माष (उड़द), विचित्रन्न (अनेक प्रकार के अन्न)।

होमद्रव्य (हवन करने के लिये पदार्थ), खण्ड यव (टूटे जौ), मधु (शहद), कंगनी (एक अन्न है जो चिड़यों को चुगाया जाता है), कन्दमूल (ऐसे फल जो जड़ों से पैदा होते हैं। जैसे—जिमीकन्द, शकरकन्द, गाजर, मूली आदि)। पायस (खीर), तन्दुल (चावल), यव (जौ)।

करेधारणम् (हवन करते साथ हाथ में पहनने के लिए पदार्थ), अपामार्ग मूलम् (ओगा का तना), (अलझीझाड़ का तना), अगस्त एक वृक्ष होता है, कापसि कपास को कहते हैं। अश्वत्थ (पीपल की जड़), अर्क मूलम् (आक का तना), जयन्ती, तुषार, पटील, भृंगराज, कण्टकारि यह सब जड़ी बूटियों के नाम हैं। गुञ्जा—सफेद या लाल गोगची लक्ष्मणा को कहते हैं। सुपुष्प—किसी सुन्दर पुष्प, वृक्ष की जड़, भृंगराज प्रसिद्ध जड़ी है जिसको तेलों में डाला जाता है। कण्टकारी कटेरी होती है। इनकी जानकारी वैद्यों से मिल सकती है।

वेदोक्त मंत्रों का उच्चारण ठीक होना चाहिए, विशेष कर ऋ का उच्चारण किसी ज्ञाता से सीख लेना चाहिये।

अन्य शुभाशुभ योग

(१) मंगल-शनि दोनों त्रिकोण (१, ५, ९) में हों और चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो जन्मा बालक माता से बिछड़ जाता है। चन्द्रमा पर गुरु की दृष्टि हो तो बालक सुखी व दीर्घायु होता है और माता से पुनर्मिलन भी हो जाता है। लोक लाज के भय से कुछ मातायें बच्चों को त्याग देती हैं। कुछ का दुष्टों द्वारा अपहरण हो जाता है। यदि स्वराशि या उच्च गुरु की चन्द्रमा पर दृष्टि हो तो बालक-माता का मिलन हो जाता है।

(२) दशम भाव में बुध-गुरु हो, केन्द्र (१, ४, ७, १०) में सूर्य तृतीय मंगल, ग्यारहवें भाव में पाप ग्रह हो तो बालक की छः ऊँगली होती हैं।

(३) १२वें स्थान में चन्द्रमा व मंगल हो तो बांया नेत्र और सूर्य राहु हो तो दांया नेत्र पीड़ित होता है।

(४) पंचम स्थान में शनि-राहु व मंगल हो तो बाईं कोख में लहसुन, मसा, तिल होता है। कोख, कुक्षि, पेडू को भी कहते हैं और बाहुमूल कांख को भी।

(५) तीसरे स्थान में शुक्र हो, मेष या सिंह का गुरु हो, १०वें स्थान में सूर्य, मंगल हो तो बालक गूंगा होता है।

(६) कृष्ण पक्ष में दिन का या शुक्ल पक्ष में रात का जन्म हो तो छठा या आठवां चन्द्रमा शुभ समझना चाहिये, कष्ट व अरिष्ट का निवारण करता है।

(७) ८वां चन्द्रमा, ७वां मंगल, ९वां राहु लग्न में शनि, तीसरा गुरु, पांचवां सूर्य, छठा शुक्र, चौथा बुध हो तो बालक की आयु बहुत कम होती है।

(८) लग्न में बुध-शुक्र न हो, केन्द्र में गुरु न हो, दशम में मंगल न हो तो उसका भाग्य अच्छा नहीं होता। दशम मंगल हो, केन्द्र त्रिकोण में बृहस्पति, बुध, शुक्र हो तो बालक भाग्यवान, दीर्घायु, गुणवान, धनवान, बुद्धिमान होता है।

(९) लग्न में शनि, छठा, चन्द्रमा, सप्तम मगंल पिता की आयु को कम करते हैं।

(१०) ६, १२वें स्थान में पाप ग्रह हों या चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो माता को कष्ट दायक होते हैं।

(११) १०वें स्थान में पाप ग्रह हो या सूर्य के साथ पाप ग्रह हो या शत्रु राशि का मंगल दशम भाव में हो तो पिता को कष्ट कारक होता है।

(१२) लग्न में गुरु, दूसरे में शनि, सूर्य, भौम तथा बुध हों बालक के विवाह समय पिता को मारक होता है।

(१३) सातवां राहु, छठा-आठवां चन्द्रमा हो और चन्द्रमा पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक अल्पायु होता है।

(१४) शनि-सूर्य का परिवर्तन योग हो (अर्थात् सूर्य शनि की राशि में, शनि सूर्य की राशि में) अथवा लग्न में मंगल व अष्टम गुरु हो तो बालक की आयु १२ वर्ष की हो।

(१५) छठे स्थान में बुध हो, लग्नेश व अष्टमेष, पाप ग्रहों से युक्त हो या परिवर्तन योग या दृष्टि योग द्वारा एक दूसरे को देखते हों तो बालक की आयु ४ वर्ष।

(१६) मंगल की राशियों में गुरु हो और चन्द्रमा ६ या ८वें भाव में हो तो बालक की आयु ८ वर्ष की होती है।

(१७) दशम स्थान में राहु हो अष्टमेश होकर क्षीण चन्द्रमा राहु के साथ हो तो बालक व उसके माता-पिता तीनों को अरिष्ट करता है। चन्द्रमा राहु के साथ न हो तो बालक की आयु १६ वर्ष होती है।

(१८) तीसरे स्थान में सूर्य बड़े भाई को और शनि या मंगल छोटे भाई को कष्ट दायक होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बालक के जन्म समय अरिष्ट योग व कुछ अन्य प्रमुख योग

बालक के जन्म से १२ वर्ष की आयु तक जो अनिष्ट ग्रह योग हैं, उन्हें अरिष्ट योग कहते हैं। नीचे कुछ प्रमुख अरिष्ट योगों का वर्णन किया गया है। अरिष्ट योगों का विचार करते समय 'अरिष्ट नाशक' योगों पर भी विचार करना अत्यन्त आवश्यक है, अन्यथा फलादेश ठीक नहीं बैठता।

यदि पाप ग्रह युक्त क्षीण चन्द्रमा लग्न ५, ७, ८, ९ अथवा ११वें भाव में स्थित हो और वह किसी शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो तो बालक की आयु को अरिष्टकर एवं भु-मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

छठे, आठवें एवं १२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उनको बलवान् वक्री पापी ग्रह देखते हों तो एक मास तक आयु को अरिष्टकारी होगा।

यदि चन्द्रमा जन्म लग्न से छठे या आठवें भाव में स्थित हो और वह पापी ग्रह से दृष्ट हो तो जातक की शीघ्र मृत्यु हो जाती है, यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आठ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है।

यदि जन्म के समय चन्द्रमा दो पाप ग्रहों के मध्य में हो, अन्य सब ग्रह ४, ७ एवं अष्टम भाव में स्थित हों, तो जातक की शीघ्र मृत्यु होती है। यदि चन्द्रमा शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो माता की मृत्यु नहीं होती है। चन्द्र क्रूर ग्रह से दृष्ट होने पर माता को भी अरिष्टकर होगा।

यदि मंगल अथवा शनि लग्न में हो, सूर्य सप्तम भाव में हो अथवा चन्द्रमा मंगल या शनि से युक्त हो तो बालक की आयु को अरिष्ट योग होता है।

यदि शनि, मंगल तथा सूर्य तीनों ग्रह छठे, सातवें या बारहवें भाव में हों तो १ मास या १ वर्ष में अरिष्टकारक होते हैं।

द्वादश भाव में क्षीण चन्द्रमा हो तथा लग्न एवं अष्टम भाव में पाप ग्रह हों तो बालक को अरिष्ट योग होता है।

यदि जन्म राशि पाप ग्रह से युक्त अष्टम भाव में हो तो एक मास में ही अरिष्ट होता है।

जिस नक्षत्र में धूम्रकेतु, उल्कापात, ग्रहणादि का उदय हो तो उस नक्षत्र में उत्पन्न जातक को दो मास तक अरिष्ट रहता है।

लग्न में चन्द्रमा और ७वें भाव में २-३ पाप ग्रह स्थित हों तो शीघ्र ही अरिष्ट योग होता है।

यदि लग्न का स्वामी पाप ग्रह से युक्त होकर ७वें अथवा ८वें भाव में स्थित हों तो १ मास तक अरिष्ट होगा।

लग्न में राहु और छठे अथवा आठवें भाव में चन्द्रमा स्थित हो तो अरिष्ट योग होगा। जन्म लग्न जिस राशि के नवांश में हो उसका स्वामी छठे या आठवें स्थान में जो राशि पड़े, उतने दिन पर्यन्त विशेष अरिष्ट योग रहेगा।

माता-पिता को अरिष्ट योग

माता के लिए चन्द्रमा तथा चतुर्थ स्थान से और पिता के लिए सूर्य तथा दशम स्थान से विचार करना चाहिए, यदि चन्द्रमा एवं चतुर्थ भाव शनि, मंगल एवं सूर्यादि क्रूर ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बालक माता को अत्यन्त कष्टकारी होता है। यदि चन्द्रमा से ४, ६ या आठवें स्थान पर पापी ग्रह हो तो भी माता को अरिष्टकारी होता है। इसी भाँति यदि बालक की कुण्डली में सूर्य अथवा दशम भाव में पापी ग्रह हो या देखते हों अथवा सूर्य पाप ग्रहों के मध्य स्थित हों तो पिता को कष्ट जानें। सूर्य से ४, ६, ८वें क्रूर होने पर भी पिता को कष्टकारी है।

अरिष्ट भंग योग

यदि जन्म लग्नेश बलवान् शुभ ग्रह हो तथा वह शुभ मित्र ग्रहों से वीक्षित हो अथवा लग्न में स्थित होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट योग नष्ट हो जाता है।

यदि शुभ राशिस्थ गुरु जन्म लग्न में स्थित हो तो अनेक प्रकार के अरिष्ट दूर होते हैं।

यदि सभी ग्रह शीर्षोदय राशियों में हो तो अरिष्ट भंग होता है।

यदि क्षीण चन्द्रमा भी अपनी उच्च राशि (वृष) में हो और वह शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट भंग हो जाता है।

यदि शुक्ल पक्ष में रात्रि के समय तथा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और चन्द्रमा आठवें भाव में स्थित होने पर भी शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो भी अरिष्ट का नाश हो जाता है।

कुछ अन्य प्रमुख योग पुष्कल योग

यदि लग्नेश तथा चतुर्थेश बलवान् होकर केन्द्र अथवा चतुर्थ भाव में हो तो 'पुच्छल' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक मधुर भाषी, सुप्रसिद्ध तथा धनवान होता है। उसे सब प्रकार के सुख प्राप्त हो जाते हैं।

वीणा योग

यदि सात राशियों में सात ग्रहों की स्थिति हो तो 'वीणा' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक संगीतज्ञ, गायन विद्या में प्रीति रखने वाला, सब कार्यों में कुशल, धनी तथा अनेक लोगों का पालन-पोषण करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति राजनीति क्षेत्र में भी सफल रहता है।

विदेश में भाग्योदय योग

चर राशि का लग्न और लग्नेश हो और चन्द्र से दृष्ट हो तो विदेश में भाग्य उदय होगा।

विवाह के बाद भाग्योदय

सप्तमेश ग्रह अथवा शुक्र ग्रह सातवें भाव में अथवा उपचय स्थान (३, ६, १०, ११) में गया हो तो विवाह के पश्चात्-भाग्योदय होगा।

काल सर्प योग

यदि कुण्डली में सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य हों तो 'काल सर्प' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक प्रायः उलझनों में घिरा रहता है। जीवन पर्यन्त संघर्षमय जीवन रहता है। कुछ धन होते हुए भी सुखानुभव नहीं होता।

काहल योग

यदि नवम भाव तथा चतुर्थ भाव के स्वामी एक-दूसरे से केन्द्र भाव में स्थित हों और लग्नाधिपति बली हो, 'काहल योग' बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक राजनीति और शासन प्रशस्त कार्यों में सफलता प्राप्त करता है।

गढ़ा धन प्राप्ति योग

लाभेश लग्न में, लग्नेश धन स्थान में एवं धनेश लाभ स्थान में गए हों तो गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है।

लग्नेश शुभ ग्रह होकर द्वितीय भाव में स्थित हो अथवा धन स्थान का स्वामी आठवें भाव में स्थित हो तो भी गढ़ा हुआ धन मिलता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति आलसी और भाग्यवादी होता है।

वाहन सुख योग

१. नवमेश, लाभेश और दशमेश— ये तीनों ग्रह चतुर्थ भाव में गये हों अथवा

२. चन्द्रमा से शुक्र तीसरे किंवा ग्यारहवें भाव में गया हो तो वाहन युक्त जातक होगा।

३. गुरु द्वारा दृष्ट चतुर्थ भावेश लाभ में गया हो तो बहुत वाहनों वाला जातक होगा।

४. अपनी उच्चराशि में गया हुआ व्ययेश धनेश से युत होकर नवम भाव को देखता हो।

कुण्डली में अरिष्ट योग

(१) अगर जन्म कुण्डली में नवें-पाँचवें तथा केन्द्र स्थानों में पाप ग्रह हों और छठे, आठवें, बारहवें शुभ ग्रह हों तो सूर्य उदय होते ही उसी दिन बच्चे की मृत्यु हो जावे।

(२) यदि चन्द्रमा अष्टम भाव में हो, राहु चतुर्थ भाव में हो और पाप ग्रह केन्द्र में हो तो बालक एक वर्ष तक जीवे।

(३) यदि लग्न, द्वितीय, द्वादश एवं अष्टम भाव में क्रूर ग्रह हों तो बारहवें या आठवें दिन विष्ठा का मार्ग रुक कर जातक की मृत्यु हो।

(४) यदि चन्द्रमा बारहवें भाव में हो और पाप ग्रह लग्न सप्तम और अष्टम भाव में हो और केन्द्र में शुभ ग्रह न हो तो बालक शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो।

(५) यदि जन्म लग्न से मंगल, सूर्य, शनि छठे या आठवें भाव में हो तो बालक वर्ष भर न जीवे।

(६) यदि छठे या आठवें चन्द्रमा पाप ग्रहों से दृष्ट हो और शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो बालक एक वर्ष के अन्दर मृत्यु को प्राप्त हो।

(७) यदि क्षीण चन्द्रमा लग्न में और पाप ग्रह केन्द्र अथवा अष्टम स्थान में हो तो बालक की मृत्यु हो।

(८) यदि सप्तम स्थान में शनि, राहु, मंगल से युक्त चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो बालक की सातवें दिन अथवा सातवें मास मृत्यु हो।

(९) यदि लग्न में सूर्य, पंचम भाव में चन्द्रमा हो और अष्टम भाव में शनि हो तो बालक नहीं जीवे।

(१०) यदि लग्न में शत्रु-राशिस्थ शनि पाप ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बालक की एक वर्ष के अन्दर मृत्यु हो।

(११) जिसके समस्त शुभ ग्रह छठे-आठवें स्थान में हो और पाप ग्रहों से दृष्ट हों तो वह बालक महीने के अन्दर मृत्यु को प्राप्त होता है।

(१२) जिसके शनि के घर में सूर्य और सूर्य के घर में शनि हो तो दैव भी रक्षा करें तो भी बारहवें वर्ष में मृत्यु होती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अन्य अरिष्ट योग-(१) तृतीया, दशमी, षष्ठी और शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी यह तिथियां यदि मंगल या शनिवार की हों, साथ ही मूल नक्षत्र का योग हो तो ऐसे योग में उत्पन्न बालक सम्पूर्ण कुल का नाश करता है।

(२) यदि तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का और तीन पुत्रियों के पश्चात् बालक का जन्म हो तो त्रिखल दोष होता है।

(३) यदि चन्द्रमा पाप ग्रहों से युक्त पाप ग्रहों के बीच में हो अथवा चन्द्रमा से सातवें पाप ग्रह हो तो बालक की माता का नाश होवे।

(४) यदि सूर्य पाप ग्रह से युक्त हो और लग्न भी पाप ग्रह से युक्त हो अथवा पाप ग्रहों के बीच में हो तो बालक के पिता का नाश होवे।

(५) यदि छठे स्थान में पाप ग्रह बारहवें चन्द्रमा और चौथे घर में मंगल हो तो उसकी माता न जीवे।

(६) यदि लग्न भाव में शनि छठे भाव में चन्द्रमा और सातवें भाव में मंगल हो तो जातक का पिता न जीवे।

(७) चतुर्थ भाव में पाप ग्रह माता को, दशम भाव में पिता को और सप्तम भाव में पिता और माता दोनों का नाश करता है।

(८) उच्च या नीच किसी के सातवें सूर्य हो तो बालक शीघ्र ही माता का नाश करे।

(९) जिसके दशम भाव में मंगल शत्रु राशिस्थ हो, उसका पिता शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो।

अरिष्ट भंग योग-(१) ऊपर दिए गए अरिष्ट योग होने पर भी यदि लग्नपति अत्यन्त बली हो, शुभ ग्रहों से युक्त व केन्द्र में स्थित हो तथा पाप ग्रह की दृष्टि से रहित हो तो जातक दीर्घायु होता है।

(२) गुरु, शुक्र और बुध में से कोई एक भी बली होकर केन्द्र में हो और उस पर पाप ग्रह की दृष्टि न हो तो अरिष्ट का नाश करता है।

(३) यदि चन्द्रमा अपनी उच्चराशि, स्वराशि अथवा मित्र राशि में हो और शुभ दृष्ट हो तो अरिष्टों का नाश करता है।

(४) यदि राहु तीसरे, छठे या ग्यारहवें बैठा हो और उसे शुभ ग्रह देखते हों, अथवा वृष, कर्क, मेष राशि का राहु लग्न में हो तो अरिष्टों का नाश करता है।

(५) यदि सभी ग्रह मित्रक्षेत्री हों तो अरिष्ट दूर होते हैं।

आयुर्दाय विचार बोधक चक्र

दीर्घ	मध्य	अल्प
चर चर	चर स्थिर	चर द्विस्वभाव
स्थिर द्विस्वभाव	द्विस्वभाव द्विस्वभाव	स्थिर स्थिर

उपरोक्त चक्र से आयु का विचार तीन प्रकार से करें। १. लग्नेश अष्टमेश से, २. शनि चन्द्रमा से, ३. लग्न वा होरा लग्न से—जैसे लग्न चर में है और अष्टमेश भी चर में हो तो दीर्घ, लग्न स्थिर में हो और चन्द्रमा द्विस्वभाव में हो तो दीर्घ, लग्न द्विस्वभाव में हो और होरा लग्न स्थिर में हो तो दीर्घ आयु।

यदि तीनों प्रकार से आयु भिन्न-भिन्न आये और चन्द्रमा लग्न और सप्तम में न हो तो लग्न वा होरा लग्न से जो आयु आये उसे ग्रहण करें, यदि लग्न से या सप्तम में चन्द्रमा हो तो शनि और चन्द्रमा से जो आयु आये उसे ग्रहण करें।

होरा लग्न—इष्ट घड़ी को १२ अंशों से गुणा कर जो फल अंशादि आयेगा उसको राश्यादि करके स्पष्ट सूर्य में जोड़ने से होरा लग्न होगा।

उपरोक्त तीनों प्रकार से दीर्घायु आये तो १२० वर्ष तथा तीनों प्रकार से मध्यमायु ८० वर्ष है, दो प्रकार से ७२ और एक प्रकार से ६४ वर्ष होती है एवं तीनों प्रकार से अल्पायु ३२ वर्ष, दो प्रकार से २६ और एक प्रकार से अल्पायु २० वर्ष होती है।

उपरोक्त तीनों प्रकार से आयु निर्णय करने पर जिस-जिस प्रकारों से आयु का निर्णय हो अर्थात् लग्नेश अष्टमेश से हानि चन्द्रमा, लग्न व होरा से यदि इन तीनों प्रकार से एक ही प्रकार की आयु आये तो तीनों का अर्थात् लग्नेश का अष्टमेश शनि चन्द्रमा का लग्न वा होरा लग्न से स्पष्ट की राशि को छोड़ कर मेष अंश कलादि फल को युक्त कर ६ से भाग दें जो अंश कला विकला आये ऊपर लिखी सारणी में अंश फल सारणी में अंशों के नीचे का फल, कला फल सारणी में कला का फल, विकला फल सारणी में विकला का फल लेकर तीनों को युक्त करो तो यह युक्तफल वर्ष आदि आएंगे। इन को ऊपर कहीं आयु में घटाने से स्पष्ट आयु आ जायेगी। दो प्रकार की आयु आने पर उनके अंशादि के योग में ४ का भाग देना और एक प्रकार से २ का भाग देना। **उदाहरण**—जैसे लग्न सिंह और लग्न का स्वामी चर राशि में पड़ा है और अष्टमेश गुरु भी चर राशि में है दीर्घायु। (२) शनि चन्द्रमा स्थिर में हो तो अल्पायु लग्न और होरा लग्न स्थिर में हो तो अल्पायु होती है यह दो प्रकार से अल्पायु है।

अतः शनि चन्द्रमा होरा लग्न की राशि को छोड़कर शेष अंशादि को युक्त करके ४ का भाग देने से जो अंश कला विकला आए उनका फल नीचे लिखी सारणी से लेकर उसको २६ वर्ष में से घटावें तो स्पष्ट आयु आ जायेगी।

अष्टमक्षं तृतीयं च लग्नादायुरुदाहृतम्। द्वितीयं सप्तम स्थानं मारकस्थानमुच्यते। क्वचिद् लग्नेश व्ययेश-अष्टमेश दशास्वपि मारकसम्भवः। परस्पर षष्टाष्टमेशयो दशन्ति रञ्च न शोभनम्। मारके मारकातरम शोभनम् व्यय द्वितीयेश वद्ग्रहाः फलप्रदाः लग्नेशदशाऽतिष्टे सम्बन्ध रहिता न मारककारिणी पापदशात्वदनिष्टवेति।

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु विचार सारणी

अंश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	१	१	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११	०	०	०	१	२	२	४	४	६	७	७	७	८	६	१	१
दिन	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु साधन कला ज्ञान सारणी

कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६
दिन	६	१२	१८	२५	२	८	१४	२१	२७	४	१०	१६	२३	२९	६	१२	१८	२६	१	८	१४	२०	२७	३	१०	१६	२	२९	५	१२
घड़ी	२०	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
कला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
मास	५	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२		
दिन	१९	२४	६	११	१४	२०	२३	३	८	१३	२२	२८	५	११	१८	२४	०	७	१३	२०	२६	१	३	१५	२२	१८	४	११	१७	२४
घड़ी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु साधन विकला फल सारणी

विकला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	
घड़ी	६	१२	१९	२५	३२	३८	४४	५१	५७	४	१०	१६	२३	२९	३६	४२	४८	५५	१	८	१४	२१	२७	३३	४०	४६	५२	५९	५	१२
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
विकला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
दिन	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	
घड़ी	१८	२४	३१	३७	४४	५०	५६	३	९	१६	२२	२८	३३	४१	४८	५४	०	७	१३	२०	२६	३२	३९	४५	५२	५९	४	११	१७	२०
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

द्वादश लग्न अथवा राशियों के प्रभाव

मेष लग्न—मेष लग्न में पैदा हुए व्यक्ति का गेहुआ रंग, लम्बा कद, दुबला किन्तु बलिष्ट शरीर, गोल नेत्र, मुख पर चिह्न, कठोर किन्तु घुंघराले केश, क्रोधी एवं उपद्रवी स्वभाव, अत्यन्त साहसी, उद्यमी, उग्र-प्रकृति वाला होता है। यह जातक स्वतंत्र विचार वाला, प्रगतिशील, महत्वाकांक्षी, सदैव नेतृत्व की चाह करने वाला, प्रभावशाली, स्वच्छन्द विचरण करने की लालसा करने वाला होता है। मेष लग्न वाले व्यक्ति नई योजनाओं की सृष्टि करते हैं तथा अद्भुत विचारों के अन्वेषक होते हैं। बड़े होकर योग्य प्रशासक, इंजीनियर (मेकेनिकल), सर्जन, सेनापति, सफल व्यापारी बन सकते हैं। इनके लिए गुरु शुभ होता है। शनि, बुध, शुक्र अशुभ होते हैं। इनके लिए प्रायः शनि अथवा बुध ही मारकेश बनते हैं। जातक को मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों की सम्भावना होती है तथा ज्वर, अग्नि अथवा शस्त्र भय रहता है। इनका भाग्योदय १६, २२, २८, ३२, ३६वें वर्ष में होता है।

वृष लग्न—जातक का ठिगना कद, पुष्ट एवं स्थूल शरीर होता है। यह लोग कामी, चतुर, ईर्ष्यालु, शान्त स्वभाव वाले, इच्छानुसार काम करने वाले तथा सभी कार्यों को गुप्त रखने वाले, सांसारिक द्रव्य एवं धन सम्पत्ति एकत्रित करने वाले तथा अधिकार सुख की कामना करने वाले होते हैं। इनकी स्मरण शक्ति प्रबल होती है। यह लोग बैंकिंग, कास्मेटिक्स, भवननिर्माण, जवाहरात, विज्ञापन एवं प्रचार इत्यादि व्यवसायों में सफल होते हैं। इनको कण्ठ सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना होती है। इनके लिए सूर्य, बुध शुभ तथा शुक्र, बृहस्पति एवं चन्द्र अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २५, २८, ३६ एवं ४२वें वर्ष में होता है।

मिथुन लग्न—जातक का कद लम्बा किन्तु दुबला, सुन्दर नेत्र, छोटी नाक होती है। यह व्यक्ति प्रसन्नचित, चपल, तीक्ष्ण बुद्धि, मधुर एवं स्पष्टवक्ता, शीघ्र गतिवान, दूरदर्शी, मेधावी, यात्रा एवं परिवर्तन प्रेमी, खेलों का शौकीन, साहित्य-कला सौन्दर्य में रुचि रखने वाला होता है। मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों में बुद्धि तथा भाव तत्व दोनों ही प्रबल रूप में होते हैं। बड़े होकर पत्र-व्यवहार, सम्पादन, लेखन, प्रचार-प्रसार, अध्यापन, एकाउन्ट्स, संगीत, यात्रा, क्रय-विक्रय सम्बन्धी व्यवसाय में सफल होते हैं। इनको फेफड़े तथा स्नायु-सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना रहती है। इनकी भाग्योन्नति २२, ३२, ३५, ३६, ४२वें वर्ष में होती है। इनके शुक्र शुभ, चन्द्रमा अशुभ, मंगल, सूर्य अरिष्टकारक होते हैं।

कर्क लग्न—जातक का मध्यम कद, गौर वर्ण, सुन्दर मुख, सुगठित शरीर होता है। इस लग्न के व्यक्ति बुद्धिमान, गतिशील, अस्थिर स्वभाव वाले, उदार, विशाल हृदय, कल्पनाशील, परिश्रमी, भावुक मन वाले, विलासी, सम्पत्तिवान, समयानुसार काम करने वाले होते हैं। बड़े होकर यह राज्याधिकारी, डाक्टर, नेता, मंत्री, प्राध्यापक, नाविक तथा जलोत्पन्न वस्तुओं के व्यवसायी बनते हैं। इनको उदर, हृदय, मूत्राशय-सम्बन्धी रोग होने की संभावना रहती है। इनके लिए मंगल शुभ, शुक्र एवं बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २५, २८ एवं ३२वें वर्ष में होता है।

सिंह लग्न—जातक की चौड़ी छाती, बली भुजाएं एवं दृढ़ हड्डी तथा पुष्ट, शरीर, प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग नेतृत्व की चाह करने वाले प्रशासनिक अधिकारों का पूर्ण सदुपयोग करने में सफल होते हैं। इनका रहन-सहन आडम्बरपूर्ण तथा रईस मिजाज होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति अभिनेता, प्रशासक, सैनिक, वकील, व्यापारी, वन-सम्बन्धी व्यवसाय करते हैं। इनको ज्वर एवं मस्तिष्क पीड़ा आदि रोग हो सकते हैं। इनके लिए सूर्य एवं मंगल शुभ, बुध एवं शुक्र अशुभ, राहु केतु मारक स्थान में स्थित होने से मृत्युकारक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २६, २८, ३२वें वर्ष में होता है।

कन्या लग्न—जातक का छोटा कद, कोमल शरीर तथा छोटे बाजू होते हैं। इनका स्त्री स्वभाव होता है तथा यह लज्जाशील, मधुरभाषी, विचारशील, धैर्यवान, बुद्धिवाले, गणितज्ञ, तार्किक एवं साहित्य प्रेमी होते हैं। कन्या लग्न वाले व्यक्तियों की स्मरणशक्ति तीव्र होती है तथा यह सभी कार्य गुप्त रखते हैं। इनमें आत्म विश्वास की कमी रहती है। बड़े होकर यह व्यक्ति गणितज्ञ, पुस्तक विक्रेता, सचिव, दलाल, साहित्यिक, अध्यापक, ज्योतिषी अथवा धनोपार्जनिक बन सकते हैं। व्यापार की अपेक्षा इनको नौकरी में अधिक लाभ हो सकता है। इनको पेट की बीमारियां लग सकती हैं। इनके लिए बुध, शुक्र शुभ, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २५, ३२, ३३, ३५, ३६वें वर्ष में होता है।

तुला लग्न—जातक दुबला किन्तु लम्बा, सुन्दर प्रशान्तचित्त तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है। न्याय एवं शान्तिप्रिय, मध्यस्थता का कार्य करने में निपुण, सत्यवक्ता, धार्मिक, सुधारवादी, दार्शनिक, साधु स्वभाव, लोकप्रिय, बच्चों का विशेष स्नेही, स्त्री-कला-नृत्य संगीत प्रेमी, प्रतिष्ठित होता है। इस लग्न के व्यक्ति न्यायाधीश, वकील, परामर्शदाता, साहित्य प्रेमी, कवि, नीतिज्ञ तथा व्यापारी बनते हैं। इनको गुर्दा, मूत्रस्थली एवं कमर सम्बन्धी रोगों की सम्भावना रहती है। इनके लिए शनि योगकारक, बुध, शुक्र शुभ, सूर्य, मंगल, बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २४, २५, ३२, ३३, ३५ वर्ष में होता है।

वृश्चिक लग्न—जातक सुन्दर, परिश्रमी, आत्मविश्वासी, साहसी, शंकालु, स्वेच्छाचारी, आतंककारी, नीतिज्ञ, गूढ़ विद्याओं का ज्ञात होता है। ऐसे व्यक्ति मितव्ययी एवं संग्रह करने में चतुर होते हैं। यदि लग्न पाप दुष्ट हो तो जातक झगड़ालु, असंयमी, कुतिचारी, निर्दयी, अपराधी तथा गुप्त रूप से दुष्कर्म करने वाला होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति पुलिस अधिकारी, राजनीतिज्ञ, ठग, इंजीनियर, खनिज विशेषज्ञ, दन्त विशेषज्ञ बनते हैं। इनको छाती, कण्ठ अथवा गर्मी या वायु सम्बन्धी एवं बवासीर आदि गुप्त रोग होने की सम्भावना रहती है। इनके लिए सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति शुभ, बुध, शुक्र अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २२, २४, २८, ३२वें वर्ष में होता है।

धनु लग्न—बड़े कान, लम्बी गर्दन, बली तथा स्थूल शरीर धनु लग्न की विशेषता है। यह व्यक्ति स्वाभिमानी, निस्वार्थी, साधु स्वभाव, न्यायप्रिय, मेधावी, धनवान, उदार, गम्भीर, विवेकशील, तार्किक, कुलभूषण, संवेदनशील, विश्वासपात्र, उत्तेजित अवस्था में अत्यन्त क्रुद्ध एवं स्पष्टवक्ता, निष्कपट, त्यागी, आदर्शवादी, अवसर का लाभ उठाने वाले होते हैं। इन्हें केवल प्रेम और शान्ति से वशीभूत किया जा सकता है। यदि लग्न पाप पीड़ित हो तो जातक दंभी, आडम्बरपूर्ण एवं कठोर स्वभाव का होता है। इस लग्न के व्यक्ति बड़े होकर प्रोफेसर, अध्यापक, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, परामर्शदाता, उपदेशक, वकील, बैंकर तथा सफल व्यवसायी बनते हैं। इनको फेफड़े तथा वायु सम्बन्धी रोग होने की संभावना रहती है। इनके लिए सूर्य, बुध, बृहस्पति शुभ तथा चन्द्रमा शनि अशुभ फलदायक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, ३२वें वर्ष में होता है।

मकर लग्न—जातक का लम्बा कद, सुन्दर नेत्र, सेवाभावी, धैर्यवान, गम्भीर, मननशील, महत्वाकांक्षी, उद्योगी, संयमी, परिश्रमी एवं कार्यशील, उदासीन, दार्शनिक, नास्तिक, गृहस्थ जीवन से असंतुष्ट, आत्मप्रशंसा में विश्वास न करने वाला होता है। यह व्यक्ति बड़े होकर अधिकारी, कृषि अथवा भूमि से उत्पन्न वस्तुओं सम्बन्धी व्यवसाय अथवा कार्यालयों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको जोड़ों का दर्द तथा अन्य वायु जनित रोग होने की संभावना रहती है। इनका भाग्योदय २५, ३३, ३५, ३६, ४२वें वर्ष में होता है।

कुम्भ लग्न—जातक का मध्यम कद, मांसल देह, आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग तीव्र बुद्धि, दयालु, मिलनसार, प्रभावशाली, अनेक मित्रों से युक्त, स्वच्छ हृदय तथा विशाल दृष्टिकोण वाले, क्रान्तिकारी, विचारक, रोचकवक्ता एवं साहित्य में रुचि रखने वाले होते हैं। अगर शनि शत्रु राशिस्थ अथवा नीच हो तो जातक दम्भी, कामी, लांछन प्राप्त करने वाला, उद्दण्ड एवं निर्लज्ज होता है। बड़े होकर यह लोग प्राध्यापक, सुधारक, इंजीनियर, मुद्रण, रेडियो, बिजली, यात्रा, वायुयान एवं तकनीकी कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको सिर अथवा पेट दर्द, वायुरोग, उदर पीड़ा एवं कोष्ठ बद्धता इत्यादि रोग हो सकते हैं। इनके लिए शुक्र शुभ तथा गुरु एवं चन्द्र अशुभ फलदायक है। इनका भाग्योदय २५, २८, ३६, ४२वें वर्ष में होता है।

मीन लग्न—जातक का छोटा कद, स्थूल शरीर, शान्त एवं विनम्र स्वभाव होता है। यह लोग धर्मपरायण, रूढ़िवादी, आस्तिक, परोपकारी, लज्जाशील, महत्वाकांक्षी, सुनिश्चित एवं सुसंस्कृत बहुकुटुम्बी, सद्गृहस्थी होते हैं। बड़े होकर यह लोग समाज सुधारक, आध्यात्मवादी, चलचित्र व्यवसाय, पुरातत्व वस्तुओं के व्यापारी, काव्य एवं हास्य व्यंग्य लेखक, कलाकार, औषधी विषयक, जल परिवहन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। इन्हें छूतछात की बीमारियां होने का डर रहता है। इनके लिए मंगल शुभ, सूर्य, शुक्र, शनि, बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १२, १६, २८, ३३वें वर्ष में होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नूतन वेध सिद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	३	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	६०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०
गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटी	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०
पल	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

प्राचीनमान वर्ष प्रवेश सारिणी

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००
वर्ष	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०३	०४	०५
घड़ी	०१	१६	३१	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१
पल	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००
वर्ष	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०७	०१
घड़ी	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१२	२८	४४	५९	१५	३०	४६	०१	१७
पल	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३९	०९	४०	१२	४३	१५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष फल साधन

जिस सम्वत् का वर्ष फल बनाना हो, उस सम्वत् से जन्म का सम्वत् घटाने से जो शेष हो वह गत वर्ष जानो। ऊपर दी गई सारिणी में गतवर्षांक के नीचे के वारादि अंकों में जन्म के वार और इष्ट के घटी पल जोड़ने से वर्ष प्रवेश का वार और इष्ट घटी पल हो जाते हैं। इस इष्ट के अनुसार लग्न सारिणी से लग्न बना लेना वह वर्ष लग्न होगा। तदन्तर वर्ष प्रवेश के इष्ट घटी पल के समय पर जो ग्रहों की इष्ट वर्ष के पंचांग में स्थिति होगी उसके अनुसार वर्ष कुण्डली में ग्रहों को स्थापित करें।

मुन्था—गत वर्षों में जन्म लग्न का अंक जोड़ो तदन्तर १२ से भाग देने पर जो शेष बचे उस राशि में मुन्था रखें।

त्रिपताका चक्र—वर्ष प्रवेश के वर्षों को ९ से भाग दें जो शेष बचे जन्म राशि से उतने घर में चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए प्रवेश के वर्षों को ४ से भाग देवें जो शेष बचे वर्ष कुण्डली में (जन्म कुण्डली में जिस राशि में ग्रह स्थित हो उससे) उतने घर छोड़कर बाकी ग्रह लगावें। राहु केतु उल्टे गिनें। वर्ष लग्न को त्रिपताका के मध्य में रखकर क्रमशः अंक लिखें। माना वर्ष लग्न कर्क है। त्रिपताका चक्र निम्नवत है।

दशा—गत वर्षों में जन्म नक्षत्र संख्या जोड़ कर उसमें २ घटायें तदन्तर ९ का भाग देने से जो शेष बचे सो इस तरह दशा जानो—१ बचे तो सूर्य, २ बचे तो चन्द्रमा, ३ बचे तो मंगल, ४ बचे तो राहु, ५ बचे तो बृहस्पति, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, ९ से शुक्र की दशा होगी। दशा दिन नीचे दिए गए हैं:—

त्रिपताका चक्र

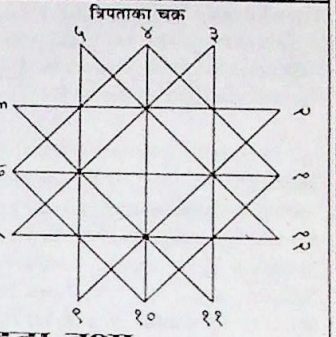

मुद्दा दशा

सूर्य	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	३०	दिन

त्रिराशिपति—वर्ष लग्न की जो राशि हो उस राशि के सामने नीचे दिए गए चक्र में देखो। दिन में वर्ष प्रवेश हो तो दिनपति के सामने राशि के नीचे जो ग्रह लिखा है, रात्रि में हो तो रात्रिपति के सामने राशि के नीचे जो ग्रह लिखा है, वह त्रिराशिपति होगा:—

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
दिनपति	सू.	शु.	श.	शु.	बु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.
रात्रिपति	बु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु	श.	मं.	बृ.	चं.

दृष्टि ज्ञान—वर्ष एवं कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में स्थित हो वह उस भाव से पांचवें, नवें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि तथा तीसरे, ग्यारहवें, भाव को गुप्तमित्र दृष्टि से देखता है। ग्रह अपने स्थान से पहले और सातवें भाव को प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से तथा चतुर्थ-दशम भाव को गुप्त शत्रु दृष्टि से देखते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर्ष कुण्डली में शुभाशुभ योग

शुभ योगः-

वर्ष लग्न वर्ष लग्न का स्वामी तीसरे, छठे, दसवें घर में बलयुक्त हो तो सुख और मन में प्रसन्नता होती है, धन प्राप्ति, शत्रु नाश तथा अरिष्टनाश होता है।

जिस वर्ष में लग्न और दशम भाव का स्वामी एक ही हो तो उस वर्ष में सब अरिष्ट दूर होकर धन की प्राप्ति हो तथा अधिकारियों एवं मित्रों से यश और सुख मिले।

यदि गुरु, बुध, शुक्र, इनमें से कोई एक ग्रह भी केन्द्र में स्थित हो, नीच का न हो और शत्रु के साथ न हो, सौम्य ग्रह से युक्त हो तो सम्पूर्ण अरिष्ट दूर होते हैं।

जो ग्रह जन्म कुण्डली में नीच का हो परन्तु वर्ष कुण्डली में वही ग्रह अष्टम वा मित्रभाव में हो तो अनेक सुख धन देने वाला होता है, मित्र का आगमन करने वाला तथा वर्ष में सम्पूर्ण अरिष्ट दूर करता है।

यदि मुंथापति १, ३, ४, ७, १०, ११ स्थान में स्थित हो तो जातक को यश-मान मिलता है।

यदि वर्षपति केन्द्र व त्रिकोण में स्थित हो और सौम्य ग्रह से युक्त हो तो सम्पूर्ण वर्ष में शुभ हो तथा शत्रु नाश, धनधान्य तथा यश का लाभ हो।

यदि जन्म लग्नेश वर्ष कुण्डली में केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित हो तो सब अरिष्ट योग का नाश और धर्म-कर्म की प्राप्ति करता है।

यदि जन्म लग्न और वर्ष लग्न एक ही हो जाए तो उस वर्ष में कर्म का उदय हो और जातक का बाहुबल बढ़े तथा यश-सम्मान मिले।

यदि छठे, आठवें भाव का स्वामी बारहवें भाव में स्थित हो अथवा शनि एवं क्रूर ग्रहों से युक्त हो तो उस वर्ष का अरिष्ट दूर होता है। तथा अपने वर्ग का अरिष्ट होता है।

यदि मुंथा से सूर्य व मंगल पंचम स्थान में पड़े हों तो उस वर्ष में क्षेम, आरोग्य और सब अरिष्ट नाश होते हैं।

यदि वर्ष लग्नेश सप्तम भाव में हों और सप्तमेश लग्न में हो तो उस वर्ष अर्थ की सिद्धि होकर अरिष्ट दूर होता है।

यदि सूर्य नवम अथवा दशम भाव में शुभ ग्रहों से युक्त हो तो धन का लाभ तथा अरिष्ट दूर होता है।

सन्तान योगः-

गुरु जन्म कुण्डली में जिस राशि में हो, वर्ष में वह राशि यदि पंचम भाव में हो अथवा उस भाव में वर्षपति या बुध वा मंगल हो तो पुत्र की प्राप्ति हो।

यदि चन्द्र मुंथा सहित पंचम भाव में हो और पंचमेश भी पंचम भाव में हो अथवा पंचमेश बलवान हो तो उस वर्ष पुत्र हो।

नेत्र रोगः-

शुक्र लग्न में अथवा बारहवें सूर्य, मंगल सहित हो तो वर्ष में नेत्र रोग होता है।

यदि पाप ग्रह द्वितीय, द्वादश लग्न व सप्तम भाव में हो और इन शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो अंध रोग होगा।

नौकरी से निलम्बित होने का योगः-

वर्ष कुण्डली में दशम स्थान का स्वामी नीच होकर अष्टम स्थान में पड़े या कर्म स्थान में पाप ग्रह स्थित हो तो जातक नौकरी से अपदस्थ होता है और सुख का नाश होता है। वर्ष कुण्डली में अष्टम भाव का मालिक दशम स्थान में स्थित हो और दशमेश अष्टम भाव में क्रूर ग्रह युक्त अथवा वीक्षित हो तो भी नौकरी छूटने का डर रहता है तथा धन का नाश होता है।

अशुभ योगः-

यदि मुंथापति वर्ष लग्नेश के साथ अष्टम भाव में स्थित हो तो मृत्यु तुल्य कष्ट देता है, जननेन्द्रिय पीड़ा, रुधिर प्रकोप, कंठावरोध उत्पन्न करता है।

यदि राहु सप्तम भाव में मंगल, चन्द्रमा और सप्तमेश सहित स्थित हो तो वर्ष में स्त्री को मृत्यु-तुल्य कष्ट देते हैं।

चतुर्थ भाव का स्वामी यदि छठे, आठवें, बारहवें भाव में पाप ग्रह युक्त हो, लग्न और चतुर्थ भाव क्रूर ग्रह युक्त अथवा वीक्षित हो तो उस वर्ष में माता का क्षय, अनेक रोग होते हैं।

मुंथापति यदि अष्टम भाव में हो और मुंथा छठे घर में हो तो स्त्री के अगं में पीड़ा, उदर में गुल्मादि रोग तथा अरिष्ट हो।

यदि सप्तमेश, शनि के साथ बारहवें भाव में स्थित हो तो उस वर्ष में कसत्र पीड़ा करे, लोकापवाद, स्वजनों में वैर, सन्तान पीड़ा, मन में व्यग्रता हो।

यदि अष्टमेश, छठे भाव में स्थित हो और चन्द्रमा क्रूर ग्रह युक्त हो अथवा क्रूर ग्रह उसे देखते हों और उस पर बृहस्पति की दृष्टि न हो तो मनुष्य यमलोक को गमन करता है।

यदि अष्टमेश केन्द्र में हो, लग्नेश बारहवें या छठे भाव में हो, चन्द्रमा पाप युक्त अष्टम में हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट होता है।

यदि सूर्य सप्तम भाव में हो और शनि उसके साथ हो, वा रन्ध्रेश शनि युक्त हो तो उस वर्ष में सम्पूर्ण धन का नाश हो।

यदि चन्द्रमा केतु युक्त होकर अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो तथा स्त्री का वियोग हो।

यदि गुरु, चन्द्रमा सहित अष्टम भाव में स्थित हो और शनि सहित मुंथा हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो।

वर्ष कुण्डली में यदि शनि मेष अथवा वृश्चिक में हो और मंगल सप्तम स्थान में पाप ग्रह से युक्त हो तो कलत्र नाश और धन हानि हो।

यदि सप्तम स्थान में पाप ग्रह हो, अष्टम में शुक्र और चन्द्र हो तो वर्ष में रोग से पीड़ा हो।

छठे, आठवें लग्नेश हो और मंगल, चन्द्रमा अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष विष अथवा दुर्घटना से पीड़ा हो।

यदि लग्न में पाप ग्रह के साथ अष्टमेश स्थित हो और लग्नेश चन्द्र सहित अष्टम भाव में स्थित हो तो उस वर्ष रोग शोकादि से शरीर क्षय हो।

यदि अष्टम भाव में गुरु पापयुक्त हो, चन्द्रमा बारहवें शनि युक्त हो तो उस वर्ष राज्याधिकारियों से दंड अथवा पीड़ा हो।

यदि मुंथा अष्टम हो, अष्टमेश रवि मंगल से युक्त हो तो मनुष्य का कफ पित्त रोगों से शरीर नष्ट हो।

चतुर्थ भाव में शनि, दशम भाव में मंगल हो, द्वितीयेश नीच राशि का होकर अस्त हो गया हो तो माता-पिता का अवश्य क्षय हो।

दूसरे, बारहवें, पहले, सातवें भाव में पाप ग्रह हो और शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि न हो तो जातक अवश्य अन्धा हो जाता है।

अष्टमेश लग्न में हो और लग्नेश अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष में अरिष्ट हो, धन, स्त्री, कुटुम्ब में कष्ट हो।

वर्ष लग्नपति तथा अष्टमेश चतुर्थ अथवा अष्टम भाव में हो, उसी स्थान में मुंथा हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो। लग्न, सप्तम, अष्टम में यदि पाप ग्रह हो तो उस वर्ष में चोर, अग्नि, शस्त्र से भय हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रह-शील-चक्र

ग्रह चिन्ह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
पर्याय	हेलि	ग्लौ, शीत रश्मि	आर, वक्र भू-सुत	ज्ञ, इंदु-पुत्र विद्,बोधन	जीव,अंगि सुरगुरुइज्य	भृगु, भृगुसुत सितदे, गुरु	कोण, मद सूर्य-पुत्र	तम, अगु, असुर	शिखी
शुभ, पाप	उग्र	शुभ, क्षीण चन्द्र पाप	क्रूर	शुभ, पाप युक्त पाप	शुभ	शुभ	अति पाप	पाप	पाप
देवता	अग्नि	वरुण	स्कन्द	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्मा	वायु	आकाश
काल-पुरुष अंग	आत्मा	मन	सत्व, शौर्य	वाणी	ज्ञान-सुख	काम-सुख	दुःख	मृति	स्थिति
पुरुषादि लिंग	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	वैश्य, शूद्र	ब्राह्मण	ब्राह्मण	अंत्यज	शुद्र	संकर
आकार	चतुरस्र	वर्तुल	चतुष्कोण	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ
स्वभाव	स्थिर	चंचल	उग्र	मिश्र	मृदु	लघु	अतितीक्ष्ण	.....	.....
स्थान	पर्वत	जलचर	पर्वत, वनचर	विद्वानों से युक्तग्रा.चर	विद्वानों से युक्तग्रा.चर	जलचर	पर्वत, वनचर	पर्वत, वनचर	पर्वत, वनचर
काल	अयन	क्षण मुहूर्त्त	दिन	ऋतु	मास	पक्ष	वर्ष	.....	.....
दिशा, कोण	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	अग्नि	पश्चिम	नैऋत्य	सर्वदिशा
ग्रह-शांति में दिशा	मध्य	अग्नि	दक्षिण	ईशान	उत्तर	पूर्व	पश्चिम	नैऋत्य	वायव्य
राजादि पदवी	राजा	राजरानी	सेनापति	युवराज	मंत्री	गुप्त मंत्री	प्रेष्य दूत	सेवक	परिचारक
वय-वर्ष अवस्था	प्रौढ़ (५०)	युवा	तरुण	कुमार	युवा(३०)	किशोर	वृद्ध(१००)	अतिवृद्ध	अतिवृद्ध
रंग	पाटल	गौर	रक्तगौर	दूर्वाश्याम	गौर-पीत	श्वेत-श्याम	नील	कृष्ण	धूम्र
ह्रस्वदीर्घ	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ
विद्या	वैद्यक	ज्योतिष	शास्त्र	शिल्प	व्याकरण	संगीत	यावनी वि.	गारुड़ी	गुप्त-तंत्र
भाग्योदय-वर्ष	२२	२४	२८	३२	१६	२५	३६	४२	४८

ग्रह चिन्ह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
नशा व गोचर फल काल	प्रथम भाग	अन्त्य	प्रथम भाग	सर्वदा	मध्य	मध्य	अन्त्य	.....	.....
कारक	पिता	माता	बन्धु, पितृव्य	मामा, बुद्धि वाणी	पुत्र, बुद्धि ज्ञान, धर्म	स्त्री	दूत, भृत्य दारिद्रय	दादा, शत्रु	नाना
कारक भाव	१,९,१०	४	३, ६	४, १०	२,५,९,१०	७	६,८,१०	.....	.....
हर्ष-स्थान	९	३	६	१	११	५	१२	.....	.....
तत्व	अग्नि	जल	अग्नि	पृथ्वी	आका.तेज	जल	वायु	जल-वायु	तेज
गुण	सत्व	सत्व	तामस	राजस	सत्व	राजस	तामस	अति तामस	किंचित तामस
धात्वादि	मूल	जीव	धातु	मिश्रण	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु
रस	तिक्त	क्षार	कटु	मिश्र	मधुर	अम्ल, खट्टा	कशायकसे	तीखा	नीरस फीका
धातु	सुवर्ण	रौप्य	लोहा	यशद	बंग	ताम्र	नाग	पञ्चधातु	अष्टधातु
वस्त्र	मोटा	नवीन	अग्नि-दग्ध	आर्द्र	मध्यम	दृढ़	मलिन	चित्र-विचित्र	जीर्ण-शीर्ण
काल-बल	मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रातः	प्रातः	अपराह्न	संध्या	संध्या	संध्या
पाद	चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगअपद	अपद	अपद
भूमि	पशुभूमि	जलभूमि	दग्ध	श्मशान	सुरालय	जलभूमि	उत्कट	ऊषर	ऊषर
स्थान	वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर
शरीर-धातु	अस्थि	रुधिर	मज्जमांस	चर्म त्वचा	मेद	वीर्य-ओज	स्नायु	.....	रस
पित्तादि प्रकृति	पित्त	श्लेष्मा	पित्त	समधातु	समधातु	कफ	वात	वात	वात
रोग	नेत्र रोग	नेत्र-पीड़ा	रक्त	त्रिदोष	ज्वर	वीर्य-रोग	वातव्याधि	अस्थि-रोग	अस्थि-रोग
ऋतु	ग्रीष्म	वर्षा	ग्रीष्म	शरद	हेमन्त	वसन्त	शिशिर	शिशिर	शिशिर
दृष्टि	ऊर्ध्व	सम	ऊर्ध्व	तिर्यक्	सम	तिर्यक्	अधो.	अधो.	अधो.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अंग्रेजी जन्म दिनांक के अनुसार महत्वपूर्ण वर्ष

जनवरी १, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के लिए १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ४, १३, २२, ३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६वें वर्ष भी महत्वपूर्ण होते हैं। इनका १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका २, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से स्नेह होता है। **जनवरी ३, १२, २९, ३०** को जन्मे लोगों के ३, ८, १२, १७, २१, २६, ३०, ३५, ३९, ४४, ४८, ५३, ५७, ६२, ६६वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जनवरी ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होगा। **जनवरी ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ तथा १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ५, १४, २३ तिथि को जन्मे व्यक्तियों से आकर्षण होता है। **जनवरी ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ विशिष्ट होते हैं तथा ६, १५, २४ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी ७, १६, २५** में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्व के होते हैं। २, ७, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से इनका लगाव होता है। **जनवरी ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीखों में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, ८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१, ९०वें वर्ष उत्कर्ष के होते हैं तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २७, ३० तारीख में जन्मे लोगों से आकर्षण होता है।

फरवरी १, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं और १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१ तारीखों में जन्मे व्यक्तियों से इनका लगाव होता है। **फरवरी २, ११, २०, २९** में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति आकर्षण अनुभव करते हैं। **फरवरी ३, १२, २१** को जन्मे व्यक्तियों के ३, १२, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५वें वर्ष उत्कृष्ट होते हैं। ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति इनका लगाव होता है। **फरवरी ४, १३, २२** को जन्मे लोगों के मुख्य वर्ष १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ और ७६ हैं। १, ४, ८, १०, १३, १७, १९, २२, २६, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों से गहरा आकर्षण होगा। **फरवरी ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण हैं। दिनांक ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों से गहरा लगाव होगा। **फरवरी ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६८, ८७वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ६, १५, २४, तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **फरवरी ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२,५६, ६१, ६५ तथा ७० वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। इनके लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ में उत्पन्न लोग विशेष आकर्षण का कारण होते हैं। **फरवरी ८, १७, २६** इनके लिए ४, ८, १३,१७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से इनका गहरा लगाव होता है। **फरवरी ९, १८, २७** ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ इनके जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं तथा ९, १८ तारीख को जन्मे लोगों का ८, ९, १७, १८, २६, २७ तारीख वालों की ओर तथा २७ को जन्मे लोगों का ३, ९, १२, १८, २१, २७ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

मार्च १, १०, १९, २८ में जन्मे लोगों के जीवन के १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१, ३७, ३९, ४०, ४८, ४९, ५०, ५७, ५८, ६४, ६६, ६७, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च २, ११, २०, २९** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ तथा ७, १६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१, ७० हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ३, १२, २१, ३०** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५ होते हैं तथा तारीख ३, ६, ९, १२, १५, २१, २४, २७, ३० में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ४, १०, १३, १९, २३, २८, ३१, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ हैं और १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में पैदा हुए लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ होते हैं और ३, १२, २१, ३० तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६० तथा ७८ होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **मार्च ८, १७, २६** में जन्मे लोगों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६७, ७१, ७६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ४, ८, १२, १३, १७, २१, २२, २६, ३०, ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मार्च ९, १८, २७** में जन्मे लोगों के जीवन के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तथा १, १०, १९, २८ मार्च में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

अप्रैल १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ३७, ४५, ४६, ५४, ६४, ७२, ७३ होते हैं तथा १, ४, ८, ९, १०, १३, १७, १८, १९, २२, २६, २७, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण लखते हैं। **अप्रैल २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ९, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ५२, ५४, ६१, ६३, ७०, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **अप्रैल ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९ होते हैं तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ४, १३, २२** में जन्मे लोगों को जीवन के ४, ८, १३, १९, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६९ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं तथा ४, ८, १३, २२, २६ तथा ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **अप्रैल ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ हैं। इनका ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ७, १६, २५** जन्मदिन वाले लोगों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ८, १७, २६** जन्म तिथि वाले लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ८, १३, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७६ होते हैं। ये ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **अप्रैल ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ होते हैं। १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है।

मई १, १०, १९, २८ तारीख वालों के लिए १, २, १०, ११, १५, १९, २१, २४, २८, २९, ३३, ३७, ३८, ४२, ४६, ४७, ५१, ५५, ५६, ६०, ६४, ६५, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। इनका १, २, ६ मूलांक वाली तारीखों को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **मई २, ११, २०, २९** जन्म तिथि वाले लोगों के भाग्यशाली वर्ष २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९ होते हैं। तारीख १, २, ६, ७, १०, ११, १५, १६, १९, २०, २४, २५, २८, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६, ६९ वर्ष उत्कर्ष वाले होते हैं। ये ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **मई ४, १३, २२, ३१** जन्म दिन वालों के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ६, १३, १५, २२, २४, ३१, ४०, ४२, ४९, ५१, ५८, ६०, ६७, ६९ होते हैं। किसी भी माह की ४, ६, १३, १५, २२, २४, ३१ ता. को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए भाग्यशाली वर्ष ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ६९, ७७ होते हैं। तारीख ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति खास लगाव होता है। **मई ६, १५, २४** इनके भाग्यशाली वर्ष २, ६, १५, २०, २४, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५६, ६०, ६५, ६९, ७८ होते हैं। २, ३, ६ मूलांक वाली तारीखों को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मई ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों को जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५६, ६१, ६९वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। किसी माह की १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **मई ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ४, ८, १३ १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं और ४, ८, १३, १७, २२, २६ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **मई ९, १८, २७** को जन्मे व्यक्तियों के विशेष महत्वपूर्ण वर्ष ६, ९, १५, १८, २४, २, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०,६ ३, ६९, ७२ होते हैं और ६, ९, १५, १८, २४, २७ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है।

जून १, १०, १९, २८ जन्मतिथि के लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष १, ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१, ३२, ३७, ४०, ४१, ४६, ५०, ५५, ५८, ५९, ६४, ६८, ७३ होते हैं तथा १, ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। जून २, ११, २०, २९ को जन्मे व्यक्तियों के २, ४, ५, ११, १३, १४, २०, २२, २३, २९, ३१, ३२, ३८, ४०, ४१, ४७, ४९, ५०, ५६, ५८, ५९, ६६, ६७, ६८ वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। **जून ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३०, ३२, ३९, ४१, ४८, ५०, ५७, ५९, ६६, ६८, ७५ होते हैं। ये ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण रखते हैं। **जून ४, १३, २२** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१, ३२, ४०, ४९, ५०, ५९, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ६९ तथा ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ता. ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **जून ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ७८ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **जून ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २' २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ जन्मतिथि वाले लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ६२, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०,२५, २९ जन्मतिथि वाले लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८ विशेष महत्व के होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं।

जुलाई १, १०, १९, २८ जन्म तिथि वालों को १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१,.३४, ३७, ३८, ४०, ४३, ४७, ४९, ५२, ५५, ५६, ५८, ६१, ६४ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० अच्छे होते हैं। दि. १, २, ७, १०, ११, १६, १९, २०, २५, २८, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जुलाई ३, १२, २१, ३०** जन्मतिथि वालों को ३, १२, १६, २०, २१, २५, ३०, ३४, ३९, ४३, ४८, ५२, ५७, ६१ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ३, ७ ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे व्यक्तियों को ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों को ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्व के होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जुलाई ६, १५, २४** के लोगों के जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९, ७० वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **जुलाई ७, १६, २५** वाले जन्म दिन के लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० तथा ७९वें वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **जुलाई ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं. **जुलाई ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए १, ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ४५, ४६, ५४, ५५, ६३, ६४, ७२वें वर्ष अति महत्वपूर्ण होते हैं तथा ८, ९, २७ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष अकर्षण होता है।

अगस्त १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३, ७६ महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं। ये दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **अगस्त २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनके दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **अगस्त ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए १, ३, १०, १२, १९, २१, २८, ३०,३७, ३९, ४६, ४८, ५५, ५७, ६४, ६६ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। **अगस्त ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३८, ४०, ४९, ५५, ५८, ६४, ७३ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष रूप से आकर्षित होते हैं। **अगस्त ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ६, १५, २४** वाले लोगों को १, ६, १०, १५, १९, २४, २८, ३३, ३७, ४२, ४६, ५१, ५५, ६०, ६४, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **अगस्त ७, १६, २३** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०, ७४ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ४, १३, २२,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ता. में जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण का अनुभव करते हैं।

सितम्बर १, ९, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १, १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. १, २, ४, ७, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **सितं. २, ११, २०, २९** जन्मदिन वालों को २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. २, ७, ११, १६, २०, २५ और २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **सितं. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के ३, १२, २१, ३०, ४८, ५७, ६६, ७५ वर्ष महत्व के होते हैं। ३, ५, ६ मूलांक वाली तिथियों में जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण का अनुभव करते हैं। सितं. ४, १३, २२ को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६ को जन्मे लोगों से आकर्षण रखते हैं। **सितं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, १४, २३ को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण का अनुभव करते हैं। **सितं. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ५, ६, २३, २४, २५ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **सितं. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **सितं. ८, १७, २६** तिथि को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **सितं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९ के क्रम में जन्मे लोगों से इनका विशेष लगाव होता है।

अक्टू. १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के १, ६, ८, १०, १५, १७, १९, २४, २६, २८, ३३, ३५, ३७, ४२, ४४, ५१, ५३, ५५, ६०, ६२, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ४, ६, ८, १०, १३, १५, १७, १९, २२, २४,२६, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षित होते हैं। **अक्टू. २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ६०, ६६, ६९ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ६७, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ता. ५, ६, ८, १४, १५, १७, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ६, १५, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। अक्टू. ७, १६, २५ को जन्मे लोगों के जीवन के उत्कर्ष वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। अक्टू. ८, १७, २६ को जन्मे लोगों के उत्कर्ष के ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष होते हैं। दिनांक ८, १७, २६ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ होते हैं। दि. ६, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

नवम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ विशेष महत्व के होते हैं। दिनांक १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **नवम्बर २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ७, ११, १६, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए ३, ९, १२, १८, २१, २७, ३०, ३६, ४८, ५४, ५७, ६३, ६६, ७२, ७५ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, १२, १८, २१, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ४, १३, २२** को जन्मे लोगों के जीवन के वर्ष ४, ८, १३, १७, १८, २२, २६, २७, ३१, ३५, ३६, ४०, ४४, ४५, ४९, ५३, ५४, ५८, ६२, ६३, ६७ और ७१ महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, ९, १३, १७, १८, २२, २६, २७ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत ही लगाव होता है। **नवं. ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५८, ६३, ६८, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। **नवम्बर ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तिगों के जीवन के ६, ९, १५, १८, २४, २७, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०, ६३, ६९ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ६, ९, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **नवम्बर ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के जीवन के २, ७, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ४७, ५२, ५४, ५६, ६१, ६३, ६५, ७०, ७२ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। इन लोगों का दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ७६ वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षित होते हैं। **नवं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ९, १८, २७ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

दिसम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ७, १०, १६, १९, २४, २८, ३४, ३७, ४३, ४६, ५२, ५५, ६१, ६४, ७० होते हैं तथा १, ३, १०, १२, १९ २१, २८, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ३, ७, ११, १२, १६, २१, २५, २९, ३०, ३४, ३८, ३९, ४३, ४७, ४८, ५२, ५७, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ३, ७, ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के जीवन के ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७,६६, ७५ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। दि. ४, १३, २२, ३१ को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१,३५, ४०, ४४,४९, ५२, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ३, ४, ८, १०, १२, १३, १७, १९, २१, २२, २६, २८, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ३, ६, १२, १४, २१, २३ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। **दिसम्बर ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं। **दिसम्बर ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर २, ७, ११, १६, २०, २५, २९** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१, ८० वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१** को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **दिसम्बर ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विंशोत्तरी दशा गणित

ज्योतिषियों को फल कथन करने के लिए दशा गणित करने की आवश्यकता होती है। दशा तथा गोचर की सहायता से ही भविष्य कथन किया जाता है, इसके लिए जन्म समय पर किस ग्रह की कौन सी दशा चल रही है और उसकी कितनी अवधि समाप्त हो गई है तथा कितनी भोग्य रहती है। इसका यदि ठीक गणित नहीं किया गया तो भविष्य कथन भी अशुद्ध रहेगा, इसलिए यह आवश्यक है कि दशा का भोग्य ठीक निकाला जाए। परन्तु देखा गया है कि एक ही व्यक्ति की एक ही समय स्थान की एक से अधिक ज्योतिषियों द्वारा बनाई गई जन्मपत्री में दशा का भोग्य काल बहुधा एक जैसा नहीं मिलता। अधिकांश ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य काल भयात भभोग के द्वारा निकालते हैं। भयात भभोग अर्थात् नक्षत्र का मान और जन्म समय तक नक्षत्र का कितना अंश व्यतीत हो गया है, इसको भयात भभोग कहते हैं। पंचांगों में नक्षत्र का मान घड़ी पलों में दिया रहता है और पंचांग जिस स्थान विशेष के अक्षांश पर बना होता है, नक्षत्र का घड़ी पलों का मान भी उसी स्थान के लिए होता है। अब ज्योतिषी को चाहिए कि जन्मपत्री बनाते समय वह तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि सभी मानों को स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करें, परन्तु अधिकांश ज्योतिषी ऐसा नहीं करते। इस कारण गणित में अन्तर रहता है। भयात भभोग से चन्द्रस्पष्ट की विधि हम यहां पर दे रहे हैं।

आजकल स्तरीय पंचांग चित्रा पक्षीय केतकी दृक् गणित पद्धति से बनाये जाते हैं। इनका गणित शुद्ध व सही माना जाता है, परन्तु अभी भी कुछ पंचांग पुरानी पद्धति से ही चिपके हुए हैं। पुरानी पद्धति से गणित करने पर काफी अन्तर आता है। २०-२५ वर्ष पहले के तो प्रायः सभी पंचांग पुरानी पद्धति पर ही बने हुए मिलते हैं। आजकल कुछ पंचांगों में तिथि नक्षत्र आदि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है। यह घंटे-मिनटों का समय भारतीय स्टैण्डर्ड समय में होने से भारत के सभी स्थानों के लिए एक सा होता है और भयात भभोग यदि घड़ी पलों के स्थान पर इन घंटे-मिनटों के आधार पर बनाया जाए तो दशा गणित भारत के सभी स्थानों के लिए एक जैसा तथा सही आयेगा। जहां नक्षत्रादि का मान घड़ी पलों में दिया हो वहां उसे स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करना चाहिए। पंचांग परिवर्तन पद्धति इस पंचांग में पृष्ठ ९८ पर दी हुई है। आर्यभट्ट पंचांग में तिथ्यादि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय वेधशाला ग्रीनविच से प्रतिदिन शून्यकाल के ग्रहस्पष्ट प्रसारित किये जाते हैं। यही ५-३० प्रातःकाल के समय के ग्रहस्पष्ट भारत के लिए होते हैं। ग्रीनविच से भारत के समय का अन्तर साढ़े पांच घंटे का है। भारत के प्रायः सभी स्तरीय पंचांगों में यही ग्रहस्पष्ट दिये जाते हैं। आजकल कम्प्यूटरों से जन्मपत्री गणित भी इन्हीं पर आधारित होता है। प्रायः सभी प्रौढ़ ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य भयात भभोग के स्थान पर चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से निकालते हैं और कम्प्यूटर भी इसी पद्धति पर गणित करता है। इस प्रकार निकाली गई दशायें ठीक होती हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर चन्द्रस्पष्ट से विंशोत्तरी दशा का भोग्य निकालने में सहायता करने वाली एक विस्तृत सारिणी आर्यभट्ट पंचांग में सम्मिलित की गई है। इसकी सहायता से गणित शीघ्रता से व सरलता से हो जाता है, इसको उदाहरण देकर समझाते हैं।

चन्द्र स्पष्ट

जन्मपत्री बनाते समय सभी ग्रहों के जन्म समय का स्पष्ट किया जाता है, दशा गणित के लिए चन्द्रमा का स्पष्ट करना आवश्यक होता है। पंचांग में प्रतिदिन का प्रातः ५-३० का चन्द्रस्पष्ट दिया रहता है। प्रातः ५-३० से जन्म समय तक कितने घंटे-मिनट बीत चुके हैं, यह जानने के लिए जन्म समय में से ५-३० घटाना होता है। दोपहर बारह बजे के बाद के घंटों में १२ जोड़कर और रात के बारह बजे के बाद के घंटों में २४ जोड़कर लिखते हैं। फिर उसमें से ५-३० घटाने से ५-३० प्रातः से जन्म समय तक की अवधि घंटे-मिनटों में प्राप्त हो जाती है। मान लो जन्म समय किसी भी महीने की १५ तारीख को ९-४५ रात्रि का है तो २१-४५ में से ५-३० घटाने पर १६ घंटा १५ मिनट अर्थात् ९७५ मि. भुक्त अवधि हुई। अब चन्द्रमा की एक दिन अर्थात् २४ घंटे या १४४० मिनट की गति ज्ञात की। १६ तारीख को ५-३० प्रातः के चन्द्रस्पष्ट में से १५ तारीख का चन्द्रस्पष्ट घटाने से चन्द्रमा की एक दिन की गति ज्ञात की जा सकती है।

	राशि	अंश	कला
१६ तारीख का चन्द्रस्पष्ट ५-३० प्रातः	६	२१	५४
१५ तारीख का चन्द्रस्पष्ट ५-३० प्रातः	६	१०	०२
२४ घंटे की गति	०	११	५२
११ अंश ५२ कला अर्थात् ७१२ कला			
१४४० मिनट में चन्द्रमा की गति—	७१२ कला		
तो ९७५ मिनट में चन्द्रमा की गति	७१२×९७५		
	१४४०		
=६९४२००÷१४४०=४८२ कला =८ अंश २ कला			
१५ तारीख ५-३० प्रातः का चन्द्रस्पष्ट	६	१०	०२
प्रातः ५-३० से रात्रि ९-४५ तक की गति	०	८	०२
१५ तारीख ९-४५ जन्म समय पर चन्द्रस्पष्ट	६	१८	०४
चन्द्रस्पष्ट की एक और सरल विधि निम्न प्रकार से भी है—			
२४ घंटे की गति	०	११	५२
१२ घंटे की गति (२ से भाग किया)	०	५	५६
४ घंटे की गीत (३ से भाग किया)	०	१	५९
०-१५ घंटे की गति (१६ से भाग किया)	०	०	०७
१६-१५ घंटे की गति	०	८	०२
	+६	१०	०२
	६	१८	०४

चन्द्रमा की २४ घंटे की गति जन्म समय पर चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि में लेना चाहिए। यदि प्रातः ५-३० और जन्म समय के मध्य चन्द्रमा ने राशि बदल दी हो तो चन्द्रमा की गति उसी राशि की लेनी चाहिए। चन्द्रमा की गति प्रत्येक राशि में भिन्न होती है। चन्द्रमा एक राशि में सवा दो दिन रहता है, जिस दिन आगे-पीछे की तारीखों में चन्द्रमा जन्म की राशि में हो उनका ही अन्तर लेकर दैनिक गति ज्ञात करनी चाहिए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

क्रमांक १

चन्द्र स्पष्ट

सर्वक्ष	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५७	५७	५७	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४
	०	६	९	१३	१६	२०	२३	२७	३०	३४	३८	४१	४५	४८	५	५६	५९	३	७	१०
गति	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
	५	४	३	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६
सर्वक्ष	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	१८	१८	२१	२५	२९	३२	३७	४०	४४	४८	५१	५५	५९	३	६	११	१४	१७	२१	२५
गति	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६
सर्वक्ष	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६
	२९	३३	३६	४०	४४	४८	१२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४०
गति	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६
सर्वक्ष	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८
	४८	५२	५६	०	४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४१	४५	५०	५४	५८	२	६
गति	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
	५	४	३	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६
सर्वक्ष	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	११	१५	१९	२३	२८	३२	३६	४०	४५	४९	५४	५८	०	७	११	१६	२०	२४	२९	३३
गति	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६
सर्वक्ष	५९	५९	५९	५९	५९	५९	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६१
	३८	४२	४७	५१	५५	०	४	९	१३	१८	२२	२७	३१	३६	४१	४६	५०	५५	५९	४
गति	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३
	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६
सर्वक्ष	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६२	६१	६१	६१	६१	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	६२
	८	१३	१७	२२	२७	३२	३७	४२	४६	५१	५६	१	६	१०	१५	२०	२५	३०	३५	३९
गति	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	५	४	३	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६
सर्वक्ष	६२	६२	६२	६२	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६३	६४	६४	६४
	४४	४९	५४	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	०	५	१	१५	२०
गति	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६
सर्वक्ष	६४	६४	६४	६४	६४	६४	६४	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६५	६६
	२६	३१	३६	४१	४६	५२	५७	३	८	१३	१८	२४	२९	३४	४०	४५	५२	५६	१	७
गति	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६
सर्वक्ष	६६	६६	६६	६६	६६	६६	६६	६६	६६	६७	६७	६७	६७	६७	६७	६७	६७	६८	+	
	१२	१८	२३	२९	३४	४०	४६	५२	५९	५	११	१८	२३	३०	३७	४३	५०	५७	३	+
गति	१२	१२	१२	१२	१२	१२	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	+
	५	४	३	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	+

चन्द्र स्पष्ट सारणी विधि-(१) भयात भभोग निकालना-६०।० में गत नक्षत्र के घटी-पल घटा देवें तथा वर्तमान नक्षत्र के घटी पल जोड़ देवें यह भभोग होगा, तथा ६।० में से घटाये अंकों के घटी पलों में इष्ट घटिका जोड़े तो भयात होगा। (२) भभोग के घटी पल अंकों को चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ में देखें, उसमें भभोग घटीपल अंक तुल्य या समकक्ष अङ्क के नीचे जो गति दी है, उससे भयात घटी पलों में गुणा करें, ६० के भाग से अंशात्मक ३ अंक लेवें, इनको गत नक्षत्र सारणी (चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम २) के अंकों में जोड़ देवें तो स्पष्ट चन्द्रमा होगा। (३) गति स्पष्ट विधि-चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ से प्राप्त जो गति है उसकी केवल कला को ६० से गुणा कर गुणनफल में गति के विकलांक जोड़ देवें यह चन्द्र स्पष्ट गति मध्यम मानेन स्पष्ट रहेगी।

क्रमांक २ **चन्द्र स्पष्ट साधक सारणी**

अश्विन	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
०	०	१	१	२	२	३	३	४
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
मघा	**पू.फा.**	**उ.फा.**	**हस्त**	**चित्रा**	**स्वाति**	**विशाखा**	**अनुराधा**	**ज्येष्ठा**
४	४	५	५	६	६	७	७	८
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०
मूल	**पू.षा.**	**उ.षा.**	**श्रवण**	**धनिष्ठा**	**शतभिषा**	**पू.भा.**	**उ.भा.**	**रेवती**
८	८	९	९	१०	१०	११	११	०
१३	२६	१०	२३	६	२०	३	१६	०
२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०
०	०	०	०	०	०	०	०	०

उदाहरण-यथा भभोग ६५।५० के नीचे दी गई चन्द्र गति १२।०९ को और भभात् १९।०३ को गुणा किया (१२।०९)×(१९।०३)=२३१°।२७'।२७" या ३°।५१'।२७" इनको गत नक्षत्र विशाखा का मान सारिणी से लेकर युक्त किया।

गुणनफल = ३।५१।२७
गत नक्षत्र विशाखा का मान = ७।०३।२०।००
चन्द्र स्पष्ट प्राप्त हुआ = ७।०७।११।२७

चन्द्र गति १२।०९ में केवल अंश १२ को ६० से गुणा कर कला जोड़ दिया।

१२×६०=७२०+९=७२९ कला चंद्र गति हुई। गणितागत एवं इस विधि द्वारा चन्द्र स्पष्ट में विशेष अंश कलादि अंतरांश नहीं होने से जन्मपत्रादि हेतु यह सामग्री उपयुक्त तथा शीघ्र ही काम करने में सक्षम है। अब चंद्र स्पष्टता हेतु श्रम विशेष की आवश्यकता नहीं रही।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आपका चन्द्र स्पष्ट ६-१८-४ है, इससे विंशोत्तरी दशा का ज्ञान किस प्रकार होगा, यह समझाते हैं। चन्द्रमा तुला राशि में है इसलिए सारिणी के तीसरे कोष्ठक में जिसके ऊपर मिथुन, तुला व कुम्भ लिखा है वह देखना होगा। चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि से सम्बन्धित कोष्ठक को देखना चाहिए। प्रथम कोष्ठक में अंश कला दिए गए हैं। इसमें १८ अंश के सामने तुला राशि वाले तीसरे कोष्ठक में राहु की महादशा के २ वर्ष ८ मास १२ दिन भोग्य रहते हैं। हमारे उदाहरण का चन्द्रमा स्पष्ट ६-१८-०४ है। अब ४ कला के लिए हमें पूरक सारिणी में राहु दशा के अन्तर्गत ४ कला के सामने देखने पर ज्ञात हुआ कि ४ कला पर ३२ दिन का अन्तर आता है। जैसे-२ चन्द्रमा के अंश कला बढ़ते जाते हैं, दशा का भुक्त काल बढ़ता जाता है और भोग्य काल कम होता जाता है, अतएव २-८-१२ में से ०-१-२ घटा दिया। तो ६-१८-०४ स्पष्ट चन्द्र पर राहु की भोग्य दशा २-७-१० अर्थात् २ वर्ष ७ मास १० दिन निकली।

चन्द्रमा के राशि अंशों से विंशोत्तरी दशा का भोग्य बोधक सारिणी

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
०	०	केतु	७	—	—	सूर्य	४	६	—	मंगल	३	६	—	गुरु	४	—	—
०	१०		६	१०	२९		४	५	३		३	४	२९		३	९	१८
०	२०		६	९	२७		४	४	६		३	३	२७		३	७	६
०	३०		६	८	२६		४	३	९		३	२	२६		३	४	२४
०	४०		६	७	२४		४	२	१२		३	१	२४		३	२	१२
०	५०		६	६	२३		४	१	१५		३	—	२३		३	—	—
१	०		६	५	२१		४	—	१८		२	११	२१		२	९	१८
१	१०		६	५	२०		३	११	२१		२	१०	२०		२	७	६
१	२०		६	३	१८		३	१०	२४		२	९	१८		२	४	२४
१	३०		६	२	१७		३	९	२७		२	८	१७		२	२	१२
१	४०		६	१	१५		३	९	—		२	७	१५		२	—	—
१	५०		६	—	१४		३	८	३		२	६	१४		१	९	१८
२	०		५	११	१२		३	७	६		२	५	१२		१	७	६
२	१०		५	१०	११		३	६	९		२	४	११		१	४	२४
२	२०		५	९	९		३	५	१२		२	३	९		१	२	१२
२	३०		५	८	८		३	४	१५		२	२	८		१	—	—
२	४०		५	७	६		३	३	१८		२	१	६		—	९	१८
२	५०		५	६	५		३	२	२१		२	—	५		—	७	६
३	०		५	५	३		३	१	२४		१	११	३		—	४	२४
३	१०		५	४	२		३	—	२७		१	१०	२		—	२	१२
३	२०		५	३	—		३	—	—		१	९	०	शनि	१९	०	०
३	३०		५	१	२९		२	११	३		१	७	२९		१८	९	४

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
३	४०	केतु	५	—	२७	सूर्य	२	१०	६	मंगल	१	६	२७	शनि	१८	६	९
३	५०		४	११	२६		२	९	९		१	५	२६		१८	३	१३
४	०		४	१०	२४		२	८	१२		१	४	२४		१८	०	१८
४	१०		४	९	२३		२	७	१५		१	३	२३		१७	९	२२
४	२०		४	८	२१		२	६	१८		१	२	२१		१७	६	२७
४	३०		४	७	२०		२	५	२१		१	१	२०		१७	४	१
४	४०		४	६	१८		२	४	२४		१	—	१८		१७	१	६
४	५०		४	५	१७		२	३	२७		—	१०	१७		१६	१०	१०
५	०		४	४	१५		२	३	—		—	१०	१५		१६	७	१५
५	१०		४	३	१४		२	२	३		—	९	१४		१६	४	१९
५	२०		४	२	१२		२	१	६		—	८	१२		१६	१	२४
५	३०		४	१	११		२	—	९		—	७	११		१५	१०	२८
५	४०		४	—	९		१	११	१२		—	६	९		१५	८	३
५	५०		३	११	८		१	१०	१५		—	५	८		१५	५	७
६	०		३	१०	६		१	९	१८		—	४	६		१५	२	१२
६	१०		३	९	५		१	८	२१		—	३	५		१४	११	१६
६	२०		३	८	३		१	७	२४		—	२	३		१४	८	२१
६	३०		३	७	२		१	६	२७		—	१	१		१४	५	२५
६	४०		३	६	—		१	६	—	राहु	१८	—	—		१४	३	—
६	५०		३	४	२९		१	५	३		१७	९	९		१४	—	४
७	०		३	३	२७		१	४	६		१७	६	१८		१३	९	९
७	१०		३	२	२६		१	३	९		१७	३	२७		१३	६	१३
७	२०		३	१	२४		१	२	१२		१७	१	६		१३	३	१८
७	३०		३	—	२३		१	१	१५		१६	१०	१५		१३	—	२२
७	४०		२	११	२१		१	०	१८		१६	७	२४		१२	९	२७
७	५०		२	१०	२०		—	११	२१		१६	५	३		१२	६	१
८	०		२	९	८		—	१०	२४		१६	२	१२		१२	४	६
८	१०		२	८	१७		—	९	२७		१५	११	२१		१२	१	१०
८	२०		२	७	१५		—	९	—		१५	९	—		११	१०	१५
८	३०		२	६	१४		—	८	३		१५	६	९		११	७	१९
८	४०		२	५	१२		—	७	६		१५	३	१८		११	४	२४
८	५०		२	४	११		—	६	९		१५	—	२७		११	१	२८
९	०		२	३	९		—	५	१२		१४	१०	६		१०	११	३
९	१०		२	२	८		—	४	१५		१४	७	१५		१०	८	७

CC-0 In Public Domain. Kinkant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन				चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
९	२०	केतु	२	१	६	सूर्य	—	३	१८	राहु	१४	४	२४	शनि	१०	५	१२	१५	१०		१७	३	—	चन्द्र	६	१	१५	राहु	६	६	९	शनि	२	१	१९
९	३०		२	—	५		—	२	२१		१४	२	३		१०	२	१६	१५	२०	शुक्र	१७	—	—		६	—	—		६	३	१८		१	१०	२४
९	४०		१	११	३		—	१	२४		१३	११	१२		९	११	२१	१५	३०		१६	९	—		५	१०	१५		६	१	२७		१	७	२८
९	५०		१	१०	२		—	—	२७		१३	८	२१		९	८	२५	१५	४०		१६	६	—		५	९	—		५	१०	६		१	५	३
१०	०		१	९	—	चन्द्र	१०	—	—		१३	६	—		९	६	—	१५	५०		१६	३	—		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१०	१०		१	७	२९		९	१०	१५		१३	३	९		९	३	४	१६	०		१६	—	—		५	६	—		५	४	२४		—	११	१२
१०	२०		१	६	२७		९	९	—		१३	—	१८		९	—	९	१६	१०		१५	९	—		५	४	१५		५	२	३		—	८	१६
१०	३०		१	५	२६		९	७	१५		१२	९	२७		८	९	१३	१६	२०		१५	६	—		५	३	—		४	११	१२		—	५	२१
१०	४०		१	४	२४		९	६	—		१२	७	६		८	६	१८	१६	३०		१५	३	—		५	१	१५		४	८	२१		—	२	२६
१०	५०		१	३	२३		९	४	१५		१२	४	१५		८	३	२२	१६	४०		१५	—	—		५	—	—		४	६	—	बुध	१७	—	—
११	०		१	२	२१		९	३	—		१२	१	२४		८	०	२७	१६	५०		१४	९	—		४	१०	१५		४	३	९		१६	९	१३
११	१०		१	१	२०		९	१	१५		११	११	३		७	१०	१	१७	०		१४	६	—		४	९	—		४	—	१८		१६	६	२७
११	२०		१	—	१८		९	—	—		११	८	१२		७	७	६	१७	१०		१४	३	—		४	७	१५		३	९	२७		१६	४	१०
११	३०		—	११	१७		८	१०	१५		११	५	२१		७	४	१०	१७	२०		१४	—	—		४	६	—		३	७	६		१६	१	२४
११	४०		—	१०	१५		८	९	—		११	३	—		७	१	१५	१७	३०		१३	९	—		४	५	१५		३	४	१५		१५	११	७
११	५०		—	९	१४		८	७	१५		११	—	९		६	१०	१९	१७	४०		१३	६	—		४	३	—		३	१	२४		१५	८	२१
१२	०		—	८	१२		८	६	—		१०	९	१८		६	७	२४	१७	५०		१३	३	—		४	१	१५		२	११	३		१५	६	४
१२	१०		—	७	११		८	४	१५		१०	६	२७		६	४	२८	१८	०		१३	—	—		४	—	—		२	८	१२		१५	३	१८
१२	२०		—	६	९		८	३	—		१०	४	६		६	२	३	१८	१०		१२	९	—		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१२	३०		—	५	८		८	१	१५		२०	१	१५		५	११	७	१८	२०		१२	६	—		३	९	—		२	३	—		१४	१०	१५
१२	४०		—	४	६		८	—	—		९	१०	२४		५	८	१२	१८	३०		१२	३	—		३	७	१५		२	—	९		१४	७	२८
१२	५०		—	३	५		७	१०	१५		९	८	३		५	५	१६	१८	४०		१२	—	—		३	६	—		१	९	१८		१४	५	१२
१३	०		—	२	३		७	९	—		९	५	१२		५	२	२१	१८	५०		११	९	—		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१३	१०		—	१	१		७	७	१५		९	२	२१		४	११	२५	१९	०		११	६	—		३	३	—		१	४	६		१४	—	९
१३	२०	शुक्र	२०	—	—		७	६	—		९	—	—		४	९	—	१९	१०		११	३	—		३	१	१५		१	१	१५		१३	१०	२२
१३	३०		१९	९	—		७	४	१५		८	१०	९		४	६	४	१९	२०		११	—	—		३	—	—		—	१०	२४		१३	७	६
१३	४०		१९	६	—		७	३	—		८	६	१८		४	३	९	१९	३०		१०	९	—		२	१०	१५		—	८	३		१३	४	१९
१३	५०		१९	३	—		७	१	१५		८	३	२७		४	—	१३	१९	४०		१०	६	—		२	९	—		—	५	१२		१३	२	३
१४	०		१९	—	—		७	—	—		८	१	६		३	९	१८	१९	५०		१०	३	—		२	७	१५		—	२	२१		१२	११	१६
१४	१०		१८	९	—		६	१०	१५		७	१०	१५		३	६	२२	२०	०		१०	—	—		२	६	—	गुरु	१६	—	—		१२	९	—
१४	२०		१८	६	—		६	९	—		७	७	२४		३	३	२७	२०	१०		९	९	—		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
१४	३०		१८	३	—		६	७	१५		७	५	३		३	१	१	२०	२०		९	६	—		२	३	—		१५	७	६		१२	३	२७
१४	४०		१८	—	—		६	६	—		७	२	१२		२	१०	६	२०	३०		९	३	—		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
१४	५०		१७	९	—		६	४	१५		६	११	२१		२	७	१०	२०	४०		९	—	—		२	—	—		१५	२	१२		११	१०	२४
१५	०		१७	६	—		६	३	—		६	९	—		२	४	१५	२०	५०		८	९	—		१	१०	१५		१५	—	—		११	८	७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
२१	०	शुक्र	८	६	—	चन्द्र	१	९	—	गुरु	१४	९	१८	बुध	११	५	२१
२१	१०		८	३	—		१	७	१५		१४	७	६		११	३	४
२१	२०		८	—	—		१	६	—		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	—		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	१
२१	४०		७	६	—		१	३	—		१४	—	—		१०	७	१५
२१	५०		७	३	—		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	—	—		१	—	—		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	—		—	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	—		—	९	—		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	—		—	७	१५		१३	—	—		९	६	२२
२२	४०		६	—	—		—	६	—		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	—		—	४	१५		१२	७	६		९	१	१९
२३	०		५	६	—		—	३	—		१२	४	२४		८	११	३
२३	१०		५	३	—		—	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	—	—	मंगल	७	—	—		१२	—	—		८	६	—
२३	३०		४	९	—		६	१०	२९		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	—		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	—		६	८	२६		११	४	२४		७	१०	१०
२४	०		४	—	—		६	७	२४		११	२	१२		७	७	२४
२४	१०		३	९	—		६	६	२३		११	—	—		७	५	७
२४	२०		३	६	—		६	५	२१		१०	९	१८		७	२	२१
२४	३०		३	३	—		६	४	२०		१०	७	६		७	०	४
२४	४०		३	—	—		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	—		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	—		६	१	१५		१०	—	—		६	४	१५
२५	१०		२	३	—		६	—	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	—	—		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	—		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	—		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	—		५	८	८		९	—	—		५	३	२२
२६	०		१	—	—		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		—	९	—		५	६	५		८	७	६		४	११	१९
२६	२०		—	६	—		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०		—	३	—		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	सूर्य	६	—	—		५	३	—		८	—	—		४	३	—

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
२६	५०	सूर्य	५	११	३	मंगल	५	१	२९	गुरु	७	९	१८	बुध	४	—	१३
२७	०		५	१०	६		५	—	२७		७	७	६		३	९	२७
२७	१०		५	९	९		४	११	२६		७	४	२४		३	७	१०
२७	२०		५	८	१२		४	१०	२४		७	२	१२		३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	—	—		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	९	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	९	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	—		४	४	१५		६	—	—		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	६		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	—	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२५
२९	०		४	११	१२		४	—	९		५	२	१२		१	३	९
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	—	—		१	—	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		—	१०	६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		—	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		—	५	३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		—	२	१७
३०	०		४	६	—		३	६	—		४	—	—		—	—	—

चन्द्र स्पष्ट से विंशोत्तरी दशा भोग्य बोधक पूरक सारिणी

कला	केतु ७ वर्ष मास	दिन	शुक्र २० वर्ष मास	दिन	सूर्य ६ वर्ष मास	दिन	चन्द्रमा १० वर्ष मास	दिन	मंगल ७ वर्ष मास	दिन	राहु १८ वर्ष मास	दिन	गुरु १६ वर्ष मास	दिन	शनि १९ वर्ष मास	दिन	बुध १७ वर्ष मास	दिन
१	०	३	०	९	०	३	०	५	०	३	०	८	०	७	०	९	०	८
२	०	६	०	१८	०	५	०	९	०	६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५
३	०	९	०	२७	०	८	०	१४	०	९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३
४	०	१२	१	६	०	११	०	१८	०	१३	१	२	०	२९	१	४	१	१
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	६	१	१३	१	८
६	०	१९	१	२४	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६
७	०	२२	२	३	०	१९	१	२	०	२२	१	२७	१	२०	२	०	१	२४
८	०	२५	२	१२	२	२२	१	६	०	२५	२	५	१	२८	२	८	२	१
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	१०	०	२८	२	१३	२	५	२	१७	२	९
१०	१	१	३	०	०	२५	१	१५	१	१	२	२१	२	१२	२	२६	२	१७

विंशोत्तरी दशा पद्धति

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

शेष (मंगल) महादशा ७ वर्ष

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विंशोत्तरी दशा पद्धति

ज्योतिष शास्त्र में भविष्य कथन के लिये अनेक प्रकार की दशाओं का वर्णन है। महर्षि पाराशर ने ही लगभग ४२ प्रकार की दशाओं का वर्णन किया है। इनमें केवल तीन प्रकार की दशायें ही आजकल प्रयोग में लाई जाती हैं। विंशोत्तरी दशा, अष्टोत्तरी दशा और योगिनी दशा। योगिनी दशा पद्धति में सभी ग्रहों की दशा की एक आवृत्ति ३६ वर्षों में होती है, अष्टोत्तरी में यह अवधि १०८ वर्ष है और विंशोत्तरी दशा पद्धति में १२० वर्ष। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत महाराष्ट्र आदि में, योगिनी दशा उत्तर भारत में विशेष रूप से प्रचलित है, विंशोत्तरी दशा पद्धति सर्वत्र सर्वाधिक प्रचलित है। मनुष्य की आयु १२० वर्ष मानकर यह दशा पद्धति बनाई गई है, यह तर्क भी दिया जाता है। परन्तु सूर्यादि नव ग्रहों की दशा अवधि की वर्ष संख्या तथा उनका क्रम वैज्ञानिक आधार पर किया गया है। इसका विस्तार में विवेचन हमारी पुस्तक ज्योतिष शिक्षा मध्यमा फलित में किया गया है।

ग्रहों की महादशा की अवधि पूर्ण वर्षों में होती है। यथा सूर्य ६, चन्द्रमा १०, मंगल ७, राहु १८, गुरु १६, शनि १९, बुध १७, केतु ७ और शुक्र २० वर्ष। किसी ग्रह की महादशा में पूर्ण अवधि तक उस ग्रह का प्रभाव तो रहता ही है। उस महादशा अवधि में सभी ग्रहों की अन्तर दशायें भी उसी क्रम से चलती हैं। यथा शुक्र की महादशा में प्रथम तीन वर्ष चार मास शुक्र की ही अन्तर दशा रहती है। अब यह ४० मास की अवधि में भी शुक्र का प्रभाव तो सर्वोपरि होता ही है अन्य सभी ग्रहों की प्रत्यन्तर दशायें भी चलती रहती हैं। इन्हीं प्रत्यन्तर दशाओं का ज्ञान कराने के लिए हम अपने पाठकों के लाभार्थ यह सारिणियां दे रहे हैं। इनका गणित कहीं-कहीं पलों तक भी दिया जाता है। परन्तु घड़ियों तक ही सीमित रखा है। शास्त्रों में प्रत्यन्तर दशा के भी सूक्ष्म दशा तथा प्राण दशा में भाग-विभाग किये गये हैं परन्तु व्यवहार में प्रत्यन्तर दशा तक का ही अधिक प्रचलन है। आजकल कम्प्यूटर से बनी जन्मपत्रियों में तो इसे दिनों तारीखों तक ही सीमित रखा गया है। घण्टों मिनटों सैकिण्डों अर्थात् घटी-पलों तक का गणित विशेष परिस्थितियों में ही किया जाता है। जन्म समय पर दशा का भुक्त भोग्य अर्थात् किस ग्रह की कितनी दशा भोग्य है, किस ग्रह की कौन सी अन्तर दशा का कौन सा प्रत्यन्तर कितना भोग्य है। यह गणित चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से करना चाहिए। यह सारिणी इस पंचांग के पृष्ठ १३८ पर दी हुई है।

विंशोत्तरी महादशा चक्र

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०

सूर्य महादशा ६ वर्ष

सूर्य की अन्तर दशा — सूर्य-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मास	३	६	४	१०	९	११	१०	४	०
दिन	१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	१	०
दिन	५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८
घ.	२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०

सूर्य-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा — सूर्य-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	०	०	०	०	१	०	०
दिन	१५	१०	२३	२४	२८	२५	१०	०	६
घ.	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	७	१८	१६	१	१७	७	२१	६	१०
घ.	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	१८	३०

सूर्य-राहु प्रत्यन्तर दशा — सूर्य-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	१	१	१	१	०	१	०	०	०
दिन	१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८
घ.	३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दिन	८	१५	१०	१६	१८	२४	१६	२३	
घ.	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२

सूर्य-शनि प्रत्यन्तर दशा — सूर्य-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	१	१	०	१	०	०	०	१	१
दिन	२०	१८	१९	२७	१७	२८	१९	२१	१५
घ.	९	२७	५३	०	६	३०	५७	१८	३६

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	१३	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१०	१८
घ.	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७

सूर्य-केतु प्रत्यन्तर दशा — सूर्य-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१७
घ.	२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	२	०	१	०	१	१	१	१	०
दिन	०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रमा महादशा १० वर्ष

चन्द्र अन्तर दशा — चन्द्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	१	१	१	१	०	१	०
दिन	२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५
घ.	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

चन्द्र-भौम प्रत्यन्तर दशा — चन्द्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	०	१	०	०	१	०	०
दिन	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	१७
घ.	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	२	२	२	२	१	३	०	१	१
दिन	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	१५	१
घ.	०	३०	३०	३०	०	०	०	०	०

चन्द्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा — चन्द्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	२	२	२	०	२	०	१	१	२
दिन	४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	३	२	१	३	१	१	२	२	२
दिन	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६	
घ.	१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	०	०

चन्द्र-बुध प्रत्यन्तर दशा — चन्द्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	२	०	२	०	१	०	०	२	२
दिन	१२	२९	२५	२५	१२	२९	१६	८	२०
घ.	४५	४५	०	०	३०	४५	३०	०	४५

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	१	०	०	०	१	०	१	०
दिन	१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	२९
घ.	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५

चन्द्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा — चन्द्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	३	१	१	१	३	२	३	२	१
दिन	१०	०	२५	५	०	२०	५	२५	५
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	१	
दिन	९	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०
घ.	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०

भौम (मंगल) महादशा ७ वर्ष

भौम अन्तर दशा — भौम-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	१९	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०
घ.									

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घ.	३४	४	३६	१६	५०	३४	३०	२१	१५

भौम-राहु प्रत्यन्तर दशा — भौम-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	१	१	१	०	२	०	१	०	
दिन	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घ.	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	१	१	१	०	२	०	०	०	१
दिन	१४	२३	२७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

भौम-शनि प्रत्यन्तर दशा — भौम-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दिन	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घ.	१०	३१	१५	३०	५७	१५	१७	५१	१२

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घ.	३४	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१

भौम-केतु प्रत्यन्तर दशा — भौम-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	०	०	०	०	०	१	१	१
दिन	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
घ.	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	४९

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	२	०	१	०	२	१	२	१	०
दिन	१०	२१	१०	२४	३	२६	६	२९	२४
घ.	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

भौम-सूर्य प्रत्यन्तर दशा — भौम-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घ.	१८	३०	२९	५४	४८	५७	५१	२१	०

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	२	०	१	०	१	०	
दिन	१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०
घ.	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

राहु महादशा १८ वर्ष

राहु अन्तर दशा — राहु-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	४	४	५	४	१	५	१	२	१
दिन	२५	१	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६
घ.	४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२

राहु-गुरु प्रत्यन्तर दशा — राहु-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	३	४	४	१	४	१	२	१	४
दिन	२५	१६	२	२०	२४	१३	२१	२०	९
घ.	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	५	४	१	५	१	२	१	५	४
दिन	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६
घ.	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८

राहु-बुध प्रत्यन्तर दशा — राहु-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	५	१	२	१	४	४	४
दिन	१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५
घ.	३	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	२	०	१	०	१	२	१	४
दिन	२२	३	१८	१	२९	२६	२०	२९	२३
घ.	३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राहु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	६	१	३	२	५	४	५	५	२
दिन	०	२४	०	३	१२	२४	२१	३	३
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१६	२७	१८	१८	१३	२१	१५	१८	२४
घ.	१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०

राहु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	१	२	२	२	२	१	३	०
दिन	१५	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२७
घ.	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०

राहु-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	१	१	०	२	०	१
दिन	२२	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१
घ.	३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०

गुरु (वृहस्पति) महादशा १६ वर्ष

गुरु अन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
वर्ष	२	२	२	०	२	०	१	०	२
मास	१	६	३	११	८	९	४	११	४
दिन	१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४

गुरु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	३	४	३	१	४	१	२	१	३
दिन	१२	१	१८	१४	८	८	४	१४	२५
घटी	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२

गुरु-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	४	४	१	५	१	२	१	४	४
दिन	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	१
घटी	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	३६

गुरु-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	३	१	४	१	२	१	४	३	४
दिन	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	१८	९
घटी	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२

गुरु-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दिन	१९	२६	१६	२८	१०	२०	१४	२३	१७
घटी	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	३६

गुरु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	५	१	२	१	४	४	५	४	१
दिन	१०	१८	२०	२६	२४	८	२	१६	२६
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१४	२४	१६	१३	८	१५	१०	१६	१८
घटी	२४	०	४८	१२	२४	३६	४८	४८	०

गुरु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	०	२	२	२	२	०	२	०
दिन	१०	२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरु-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दिन	१९	२०	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८
घ.	६	२४	४८	१२	३६	३६	०	४८	०

गुरु-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	४	३	४	४	१	४	१	२	१
दिन	९	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०
घ.	३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४

शनि महादशा १९ वर्ष

शनि अन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

शनि-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	५	५	२	६	१	३	२	५	४
दिन	२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४
घ.	२८	२५	११	३०	९	१५	११	२७	२४

शनि-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	५	१	२	१	४	४	५
दिन	१७	२६	११	२८	२०	२६	२५	९	३
घ.	१६	३२	३०	२७	४५	३२	२१	१२	२५

शनि-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	२	०	१	०	१	१	२	१
दिन	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	३	२६
घ.	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२	१०	३१

शनि-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	६	१	३	२	५	५	६	५	२
दिन	१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

शनि-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१७	२८	१९	२१	१५	२४	१८	१९	२७
घटी	६	३०	५७	१८	३६	९	२७	५७	०

शनि-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	१	२	२	३	२	१	३	०
दिन	१७	३	२५	१६	०	२०	३	५	२८
घटी	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

शनि-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	२	१	०	२	०	१
दिन	२३	२९	२३	३	२६	२३	६	१९	३
घटी	१७	५१	१२	१०	३१	१७	३०	५७	१५

शनि-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	५	४	५	४	१	५	१	२	१
दिन	३	१६	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९
घटी	५४	४८	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१

शनि-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	४	४	४	१	५	१	२	१	४
दिन	१	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६
घटी	३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८

बुध महादशा १७ वर्ष

बुध अन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

बुध-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	४	१	२	१	४	३	४
दिन	२	२०	२४	१३	१२	२०	१०	२५	१७
घटी	४९	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६

बुध-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दिन	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२०
घटी	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१	३४

बुध-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	५	१	२	१	५	४	५	४	१
दिन	२०	२१	२५	२९	३	१६	११	२३	२९
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

बुध-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१
घटी	१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	०

बुध-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	०	२	२	२	२	०	२	०
दिन	१२	२९	१६	८	२०	१२	२९	२५	२५
घटी	३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०	३०

बुध-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दिन	२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	१७	२९
घटी	५०	३३	३६	३१	३४	५०	३०	५१	४५

बुध-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	४	४	४	४	१	५	१	२	१
दिन	१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२३
घटी	४२	२४	२१	३	३३	०	५४	३०	३३

बुध-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	३	४	३	१	४	१	२	१	४
दिन	१८	९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२
घटी	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

बुध-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	५	४	१	५	१	२	१	४	४
दिन	३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९
घटी	२५	१६	३२	३०	२७	४५	३२	२१	१२

केतु महादशा ७ वर्ष

केतु अन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
वर्ष	०	१	०	०	०	१	०	१	०
मास	४	२	४	७	४	०	११	१	११
दिन	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७

केतु-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
घटी	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	४९

केतु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	२	०	१	०	२	१	२	१	०
दिन	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

केतु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घटी	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०

केतु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	१	०	१	०	०	१	०
दिन	१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०
घटी	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

केतु-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घटी	३५	३	३६	१६	४९	३५	३०	२१	१५

केतु-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दिन	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घ.	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३

केतु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दिन	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

केतु-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दिन	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घ.	१०	३१	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२

केतु-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घ.	३४	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१

शुक्र महादशा २० वर्ष

शुक्र अन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	६	२	३	२	६	५	६	५	२
दिन	२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिन	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	१	३	२	३	२	१	३	१
दिन	२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	२	१	२	१	०	२	०	१
दिन	२४	३	२६	६	२९	२४	१०	२१	५
घ.	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

शुक्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	५	४	५	५	२	६	१	३	२
दिन	१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	४	५	४	१	५	१	२	१	४
दिन	८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	६	५	२	६	१	३	२	५	५
दिन	०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२
घ.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

शुक्र-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	५	१	२	१	५	४	५
दिन	२४	२९	२०	२१	२५	२९	३	१६	११
घ.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

शुक्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	२	०	१	०	२	१	२	१
दिन	२४	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९
घ.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

तथा दीप्तादि अवस्था के भेद से भी फल में विशेषता होती है,

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रह दशा फल

ग्रह दो प्रकार के हैं एक शुभ और दूसरा अशुभ। अत: प्रथम शुभ और अशुभ ग्रहों का सामान्यत: किस तरह का फल मिलता है यह ध्यान में लाना चाहिए।

शुभ ग्रह दशा फल— आरोग्य, धनवृद्धि, शत्रु पराजय, इष्ट कार्य की सिद्धि, ऐश्वर्य आदि सुख।

अशुभ ग्रह दशा फल— लोकोपवाद, विश्वासघात, द्रव्य हानि, रोग, आप्तवर्ग के सदस्यों की मृत्यु, वियोग और कार्य में हानि आदि।

ग्रह दशा का फल निश्चित करने से पूर्व प्रथम उस ग्रह की स्थिति का विचार नीचे लिखे अनुसार करना चाहिए।

१. ग्रह किस भाव वा राशि में है, उच्च अथवा नीच और शुभ अथवा अशुभ भाव में है।
२. ग्रह शुभ वा अशुभ ग्रह से युक्त वा दृष्ट है अथवा नहीं।
३. महादशा के ग्रह से अन्तर्दशा का ग्रह किस स्थान में है और दोनों परस्पर शुभ योग करते हैं अथवा अशुभ फलदायी हैं।
४. महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हैं या मित्र और गोचर ग्रह, शत्रु फलदायी हैं अथवा अशुभ फलदायी हैं।

महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अधिक अशुभ, मित्र हों तो शुभ, सम हों तो साधारण फल मिलता है। इसी प्रकार जन्म दशा का स्वामी और गोचर ग्रह दोनों अनुकूल हों तो शुभ फल, प्रतिकूल हों तो अशुभ फल और एक अनुकूल दूसरा प्रतिकूल हो तो मध्यम फल मिलता है।

इस तरह प्रत्येक विषय अर्थात् भाग्योदय काल, विद्या, उद्योग व्यापार, नौकरी, धन लाभ आदि का विचार करने से योग्य फल मिल सकता है।

ग्रहों की दशा अन्तर्दशा आदि का फल कहते समय यदि गोचर में शुभ ग्रहों की दृष्टि महादशा, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशा के स्वामियों पर हों तो कुछ अशुभ फलों का नष्ट होना सम्भव है। इसके विपरीत यदि अशुभ ग्रह से इन दशाओं के स्वामी युक्त वा दृष्ट हों अशुभ फल अधिक बढ़ेगा।

इस तरह किसी भी ग्रह का शुभ या अशुभ फल कुंडली के ग्रहों पर से ध्यान में आ सकता है।

१, ४, ७, १० यह केन्द्र स्थान हैं, ५, ९ यह त्रिकोण, ३, ६, ११ यह त्रिषड़ाय स्थान कहलाते हैं और २, ८, १२ आपोक्लिम स्थान कहलाते हैं।

कई आचार्यों के मत से— ४, ७, १० केन्द्र, १, ५, ९ त्रिकोण और शेष स्थान ऊपरवत कहे हैं।

दशा फल कहने से पहले ग्रहों के शुभाशुभत्व में विशेषता देखनी चाहिए। ग्रहों में शुभाशुभत्व दो प्रकार से देखना चाहिए। एक तो स्वाभाविक, दूसरा तात्कालिक।

स्वाभाविक शुभाशुभ— सू.मं. शनि नैसर्गिक क्रूर तथा गुरु शुभ नैसर्गिक पूर्ण बली चन्द्रमा शुभ, क्षीण बली पापी होता है तथा राहु केतु सहचर्य से फलप्रद हैं।

और तात्कालिक शुभाशुभ इस प्रकार कहा है, त्रिकोण का स्वामी हो तो शुभ फलदायक होता है और यदि त्रिषड़ाय का स्वामी हो तो पाप फलदायक होता है।

इससे सिद्ध हुआ कि स्वभाविक पाप ग्रह भी त्रिकोणपति हो तो शुभ होता है तथा स्वभाविक शुभ ग्रह यदि त्रिकोणपति हो तो अत्यन्त शुभदायक होता है। इसी प्रकार स्वभाविक शुभ भी यदि त्रिषड़ायपति हो तो पाप फलदायक होता है। तथा स्वभाविक पाप ग्रह त्रिषड़ायपति हो तो अत्यन्त पाप फलदायक होता है।

इसी प्रकार यदि शुभ ग्रह (गुरु, शुक्र, बुध पूर्ण चन्द्र) केन्द्र के अधिपति हों तो प्राणियों को शुभाशुभ फल नहीं देते तथा पाप ग्रह (क्षीणचन्द्र, पापयुत बुध, रवि, शनि, मंगल) यदि केन्द्र के स्वामी हों तो अपने स्वभावानुसार पाप फल नहीं देते। अत: केन्द्र के स्वामी होने से शुभ ग्रह में पापत्व और पापग्रह में शुभत्व आ जाता है। इस से यह स्पष्ट है कि केन्द्राधिप न शुभ फल देता है और न अशुभ फल देता है।

लग्न से द्वादशेष तथा द्वितीयेष दूसरे ग्रहों के साहचर्य से तथा अपने स्थानान्तर (अन्य स्थानों) के अनुसार ही शुभ अथवा अशुभ दशा फल को देते हैं। इससे सिद्ध है कि व्ययेश और धनेष स्वभावानुसार शुभाशुभ फल नहीं देते। जिस प्रकार शुभ या अशुभ स्थान में रहते हैं, तथा जिस प्रकार के शुभ या अशुभ भावेश के साथ रहते हैं, अथवा जिस दूसरे स्थान के स्वामी हों वह राशि जैसी शुभ या अशुभ भाव में हो तदनुसार ही शुभ या अशुभ फल देते हैं। भावार्थ यह है कि द्वितीयेश आदि के साथ जो ग्रह रहता है वह तदनुसार ही फल देता है। यदि बहुत ग्रह साथ में हों तो उनमें जो बली हो तदनुरूप ही फल देता है।

तथा दीप्तादि अवस्था के भेद से भी फल में विशेषता होती है, यथा-दीप्त, स्वस्थ हर्षित और शान्त अवस्था वाले ग्रहों की दशा शुभ और अन्य अवस्था वालों की दशा अशुभ है।

शुभ ग्रहों का केन्द्राधिपत्य दोष जो कहा गया है वह गुरु और शुक्र का बलवान होता है। तथा शुभ ग्रहों के मारकत्व (सप्तमेशत्व) होने पर भी गुरु शुक्र में ही विशेषकर मारकत्व दोष होता है। इन दोनों में न्यून दोष बुध में और बुध से न्यून चन्द्रमा में होता है। अष्टमेष यदि त्रिकोणपति हो तो शुभ फलदायक और यदि त्रिषड़ायपति हो तो अत्यन्त अशुभ फलदायक होगा।

इसी प्रकार यदि पाप ग्रह केन्द्र पति हो तो उसका स्वभाविक पापत्व मात्र नष्ट होता है। अत: केन्द्रपति होकर यदि त्रिकोणपति भी हो जावे तो उसमें शुभत्व आ जाता है। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि स्वभाविक पाप ग्रह यदि केन्द्रपति होकर त्रिषड़ायपति हो तो पापकारक हो जाता है।

प्रबल होने पर भी राहु और केतु जिस भाव में और जिस-जिस भावेश के साथ रहते हैं उसी के अनुसार शुभ या अशुभ फल देते हैं। जैसे कहा है—

यद्यद्भावगतौ वाऽपि यद्यद्भावेश संयुतौ। ततत्फलानि प्रबलौ प्रदर्शितातमौ ग्रहौ॥

योग— केन्द्रेश और त्रिकोणेश में परस्पर सम्बन्ध हो किसी अन्य भाव के स्वामी से यह वास न हो तो विशेषकर शुभ लाभदायक होते हैं।

ग्रहों की दीप्तादि अवस्था

ग्रह अपनी उच्चराशि में हो तो दीप्त अपनी राशि में स्वस्थ, मित्र राशि में हर्षित, शुभ राशि में शान्त, नीच राशि में दीन, शत्रु राशि में पीड़ित, उदय राशि में शक्त, अस्तंगत राशि में लुप्त अवस्था होती है।

ग्रहावस्था फल— दीप्त अवस्था सुस्वरूप, कांतिमान्, बुद्धिमान तीनों में जाने वाला और शत्रु का नाश करने वाला। **स्वस्थ अवस्था**— विजयी, राजपूजित, कीर्तिमान, सदा प्रसन्न, मलकीयत कराने वाला व ज्योतिषी। **हर्षित अवस्था**— धर्मात्मा, सदाचारी। **शान्त अवस्था**— तेजस्वी, शान्त, बंधनमुक्त। **दीन अवस्था**— बुद्धिहीन, पर स्त्री आसक्त। **पीड़ित अवस्था**— चिंता युक्त, मानसिक दु:ख, रोगी। **शक्त अवस्था**— निरोगी, सुन्दर, मधुर भाषी, प्रशंसनीय। **लुप्त अवस्था**— अधर्मी, रोगी, शत्रु पीड़ित।

नोट— जन्म समय के ग्रहों की अवस्था के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को आजन्म सुख या दु:ख मिलता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवार व्रत विधि

यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रह की स्थिति हो अथवा अशुभ ग्रह की दशा अन्तर्दशा चल रही हो तो निम्नलिखित विधि अनुसार अनिष्ट ग्रह की शान्ति हेतु व्रत रखने से कल्याण होगा।

रविवार के व्रत की विधि— समस्त कामनाओं की सिद्धि नेत्र रोग और कुष्ठादि चर्म व्याधियों के नाश एवं आयु व सौभाग्य की वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से प्रारम्भ करके एक वर्ष पर्यन्त अथवा कम से कम बारह व्रत करें। व्रत के दिन केवल गेहूं की रोटी अथवा गुड़ से बना दलिया घी शक्कर के साथ भक्षण करें। भोजन से पूर्व स्नानान्तर शुद्ध वस्त्र धारण करके **"ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः"** बीज मन्त्र का पाठ पांच माला करें। फिर रविवार कथा पढ़ें। तत्पश्चात् सूर्य को गन्धाक्षत, लाल फूल, दूर्वायुक्त जल से निम्न मंत्र पढ़ते हुए अर्घ्य दें। **नमः सहस्त्रकिरण सर्वव्याधि विनाशन। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं संज्ञया सहितो रवे॥** फिर प्रदक्षिणा करके लाल चन्दन का तिलक लगाएं। अन्तिम रविवार को हवन के पश्चात् ब्राह्मण दम्पत्ति को भोजन कराकर यथाशक्ति लाल वस्त्र फल पुष्पादि एवं दक्षिणा से प्रसन्न करें।

सोमवार के व्रत की विधि— यह व्रत श्रावण, चैत्र, बैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष, चौदह वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि आर्द्रा नक्षत्र सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष महात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री पुरुष को चाहिए कि प्रातःकाल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानान्तर **"ॐ नमः शिवाय"** आदि शिव मन्त्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफेद चन्दन, पंचामृत, अक्षत, सुपारी, फल, गंगाजल, बिल्व पत्रादि से शिव-पार्वती का पूजन करें और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमकरहित होना चाहिये। व्रत का उद्यापन भी उपरोक्त महीनों में करना श्रेयस्कर होता है। उद्यापन में दशमांश जप का हवन करके सफेद पदार्थ, दूध, दही, क्षीर, चांदी सफेद फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति, धन पुत्रादि सुखों की प्राप्ति होती है। सर्व प्रकार के कष्टों की निवृत्ति होती है।

मंगलवार के व्रत की विधि— सर्वप्रकार के सुखों, रक्त विकार, शत्रुदमन, स्वास्थ्य रक्षा, पुत्र प्राप्ति के लिए मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ सप्ताह तक अथवा यथा शक्ति जीवन पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूं और गुड़ सहित भोजन करें। भोजन नमक रहित एक समय ही करना चाहिए। इस व्रत से मंगल ग्रह के अरिष्ट दोष भी शान्त हो जाते हैं। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फलों, ताम्र वर्तन व नारियल द्वारा पूजा व दान करना चाहिए तथा श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भौम ग्रह की शान्ति के लिए **'ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः'** की ५ मालाएं करनी चाहिए और गुड़, पीले लड्डुओं व लाल वस्त्र दान करना चाहिए।

बुधवार के व्रत की विधि— बुधवार का व्रत बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि हेतु किया जाता है। यह व्रत विशाखा नक्षत्र कालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार का करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहिनकर श्री विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ तथा ग्रह शान्ति के लिए बीजमंत्र **'ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः'** का पाठ करना चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित भोजन, घी, मूंग अथवा मूंग की दाल से बने मिष्ठान्न का दान करें तथा स्वयं भी इन्हीं वस्तुओं का भक्षण करें। अन्तिम बुधवार मधुसर्पी, दधि और घृत के साथ हवन करें और हरे वस्त्र, दो फल और मूंग का दान करें। गाय को हरा घास डालें।

बृहस्पतिवार के व्रत की विधि— यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा वैवाहिक सुखों, विद्या, पुत्र संतान एवं धन प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार को अनुराधा नक्षत्र हो उस दिन से प्रारम्भ करें। यह व्रत १३ मास अथवा सात मास तक रख सकते हैं। व्रत के दिन स्नानोपरान्त पीले वस्त्र, पीला यज्ञोपवीत धारण करके बृहस्पति की पूजा स्वयं अथवा श्रेष्ठ ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। पादुका, उपानह, छाता, कमण्डलु रखें, पीले रंग के पुष्प, चने की दाल, पीले कपड़े, पीला चन्दन, हल्दी व पीले चावल, लड्डू आदि का भोग लगाना चाहिए। दान करके ही स्वयं एक समय भोजन करें। नमक का प्रयोग न करें। इस दिन केले के वृक्ष का पूजन शुभ होता है। गुरु शान्ति के लिए **'ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः'** मंत्र की ५ माला का जाप करें। उद्यापन में दशमांश भाग का २८ समिधा व मधु सर्पी, घृत, दधि के साथ हवन करना चाहिए।

शुक्रवार के व्रत की विधि— यह व्रत धन, विवाह, संतानादि भौतिक सुखों को देने वाला है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप, दीप, श्वेत चन्दन, चावल, श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पूजा करके बच्चों में श्वेत मिठाई, क्षीर, फलादि बांट दें। ग्रह शान्ति के लिए **'ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः'** की तीन माला का पाठ करें। स्वयं भी एक समय क्षीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक न प्रयोग करें। उद्यापनोपरान्त हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण बालकों को क्षीर चावलादि से युक्त भोजन कराने तथा श्वेत वस्त्र, खाण्ड, चावल, चाँदी, फलादि सफेद पदार्थों का दान करें।

शनिवार के व्रत की विधि— यह व्रत शनि ग्रह की अरिष्ट शान्ति तथा जीर्ण रोग, शत्रुभय, आर्थिक संकट, मानसिक संताप का निवारण करता है, धन धान्य और व्यापार में वृद्धि करता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावण मास लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान कराकर धूप गंध, नीले पुष्प, फल और नैवेद्य आदि से पूजन करें और **'ॐ शं शनैश्चराय नमः'** मंत्र की तीन माला का जाप करें, व्रत के दिन नीले वस्त्र धारण करें। एक वर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, नीले पुष्प, लौंग, तेल, गंगाजल, दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दें। तत्पश्चात् शिवोपासना करें। १९ शनिवार करने के बाद उद्यापन के समय शनि स्त्रोत का पाठ जूते, जुराब, नीले रंग का वस्त्र, काले माश, चाकू और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण को दें और स्वयं भी उड़दादि तथा तैल निर्मित पदार्थों का सेवन करें।

राहु की शान्ति के लिए भी शनिवार का व्रत उपरोक्त विधि अनुसार करें। और दान में नारियल, भूरा कम्बल या वस्त्र दें तथा पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए। राहु के बीज मंत्र का पाठ करना श्रेयकर होता है।

केतु ग्रह की शान्ति हेतु— केतु के बीज मंत्र **'ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः'** की पांच माला का जाप तथा पूजा मंगलवार के व्रत जैसे करनी चाहिए।

सप्तधान्य (सतनजा)— १ काले माश (उड़द), २. मूंग, गेहूं, चने, जौ, चावल, कंगनी।

अष्टगंध— अगर, तगर, कस्तूरी, कुंकुम, कपूर, चन्दन, लौंग और गोरोचन।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ सूर्यादिग्रहाणां भावानुसार गोचर फलम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	स्थानांतर	भयं	श्रीः	मानभंग	दैत्य	विजयः	मार्ग:गमन	पीड़ाः	सुकृ नाश	सिद्धिः	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्रः	धनलाभ	सन्तोष	सुखं	रोगः	ज्ञानवृ.	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोगः	धर्मलाभ	सोख्यं	धनलाभ	धनहानि
भौमः	शत्रुभय	धनहानि	धनलाभ	शत्रुभीः	पुत्रकष्ट	धनलाभ	स्त्रीकष्ट	शत्रुभय	शत्रुपीड़ा	शोक	धनलाभ	धनहानि
बुधः	सुख	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुखं	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धनहानि
गुरुः	भयं	धनलाभ	क्लेश	धनलाभ	सुखं	शोकः	राजमान्य	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्रः	शत्रुनाश	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभः	शत्रुभय	शोकः	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुखः	धनलाभ	धनलाभ
शनिः	भयं	धनहानि	ऐश्वर्य	शत्रु भीः	पुत्र कष्टं	धनलाभ	दोषः	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मन	धनलाभ	धनलाभ
राहुः	हानिः	धनहानि	धनलाभ	वैरं	शोकः	श्रीः	कलहः	मृत्यु	दुःखं	वैरं	सुखं	शोकः
केतुः	रोगः	वैर	सुखं	भयं	सुखं	धनलाभ	कलहः	रोगः	पाप	शोकः	कीर्तिः	शत्रुभय

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहाः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्यः	चिन्ता	नृपभीः	धनलाभ	हानिः	कष्टम्	शत्रुना.	पीड़ा	कष्टम्	धर्म नाश	सुखं	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्रः	पीड़ा	धनलाभ	हर्षः	शत्रुनाश	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दुःखम्	भाग्योदय	विजयः	धनलाभ	व्ययः
भौमः	प्रणाः	धननाश	जयः	व्यसनं	दुर्मति	शत्रुना.	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्य लाभ	धनलाभ	विरोध
बुधः	सौख्यम्	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मान लाभ	सुखलाभं	रोगः
गुरुः	सुखम्	धनलाभ	जयः	वाह.लाभ	पुत्रः प्राप्ति	कष्टम्	सुखम्	रोगः	धर्म लाभ	राज्य लाभ	धन लाभ	शोकः
शुक्रः	मानप्रा.	धनप्राप्ति	कीर्तिला	सुख लाभ	धनलाभ	शत्रु भीः	स्त्रीसुख	कष्टम्	धर्मोदय	मान लाभ	क्षेम लाभ	व्यय
शनिः	बातार्ति	पीड़ा	धनलाभ	दुःखम्	पुत्रपीड़ा	जयः	स्त्रीकष्ट	रोगः	भाग्य हानि	धनहानि	धन लाभ	चिन्ता
राहुः	शिरोर्ति	राजभीः	सुखम्	दुःखम्	बुद्धिनाश	शत्रुना.	रोगभीः	कष्टम्	धर्म हानि	विजयः	सुलाभं	व्याधि
केतुः	चिन्ता	क्लेशः	आरोग्य	राजभीः	दुर्बुद्धिः	सुखम्	क्लेशः	पीड़ा	भाग्य नाश	धन लाभ	लाभः	शोकः
मुंथा	सुखम्	यशोऽर्थः	पुष्टिः	दुःखम्	सुखाप्तिः	कष्टम्	व्यसनं	दुखम्	भाग्योदय	राज्य प्राप्ति	लाभः	कष्टम्

अथ पुरुषजन्म कुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहाः	तनुः १	धनं २	भ्रातः ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	स्त्री ७	मृत्युः ८	धर्मः ९	कर्मः १०	लाभः ११	व्ययः १२
सूर्यः	शूरः	धनी	सुखी	दुखी	अपुत्रः	बली	स्त्रीजित्	अल्पायुः	सुखी	शूरः	धनी	पतितः
चन्द्रः	जड़ः	कुटुम्बी	क्रूरः	सुशीलः	पुत्रवान्	अल्पायुः	ईर्ष्यालुः	रोगी	सुभगः	धीरः	ख्यातः	हीनांग
भौमः	ऋणीः	कुटिलः	विक्रमी	पीड़ितः	अपुत्रः	शत्रुजित्	स्त्रीपीड़ा	रोगी	पापात्मा	सुखी	धनाढ्या	पतितः
बुधः	विद्वान्	धनी	दुर्जनः	सुखी	मंत्री	दुःशील	धर्मज्ञः	गुणी	पुत्रवान्	विक्रमी	धनी	जड़ः
गुरुः	चिरायुः	धनी	कृपणः	सुखी	प्रतापी	कामी	प्रसिद्धः	अल्पायुः	पुत्रवान्	सुकृतिः	धनी	दरिद्रः
शुक्रः	सुखी	धनी	पापी	सुखी	धीमान्	रोगी	क्रोधी	नीचः	प्रतापी	सुमतिः	धनाढ्यः	खलः
शनिः	रोगी	वक्ता	विक्रमी	दुःखी	दरिद्रः	सुखी	दुःखी	नेत्ररोगी	सुखी	पराक्रमी	धनी	दुःखी
राहुः	रोगी	विरोधी	विक्रमी	दुःखी	दुर्भगः	बली	अशुजिः	गतायुः	दैन्यं	मानी	ख्यातः	पतितः
केतुः	अल्पायुः	धर्म हानि	शूरः	दुःखी	अपुत्रः	बली	दारहा	क्लेशी	पापी	अधर्मी	धनी	दुर्जनः

अथ स्त्रीजन्म कुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहाः	तनुः १	धनं २	भ्राता ३	सुखं ४	पुत्रः ५	शत्रुः ६	पति ७	मृत्युः ८	धर्मः ९	कर्म १०	लाभः ११	व्ययः १२
सूर्यः	सक्रोधा	निर्धना	सुपुत्रा	सपीड़ा	अपुत्रा	धनाढ्या	दुःखार्त्ता	विधवा	धर्मिष्ठा	सती	सधना	सक्रोधा
चन्द्रः	अल्पायुः	सधना	सुखिनी	दुर्भगा	सुपुत्रा	रोगिणी	पति प्रीति	दुःखार्त्ता	सुखिनी	धन्या	गुणिनी	हीनांगी
भौमः	दुःखार्त्ता	वन्ध्या	अभ्रातृ	दुःखिनी	अपुत्रा	नीरोगा	विधवा	कुलटा	दुःखिनी	कुपुत्रा	सुधर्मा	दुष्टा
बुधः	सुभगा	धनाढ्या	सुखिनी	सुगृहा	सुबुद्धिः	सक्रोधा	सती	कृतघ्ना	सुधर्मा	सुधर्मा	सुलाभा	कृशांगी
गुरुः	सती	सधना	भ्रातृम.	सुखिनी	साध्वी	सापदा	सुकीर्ति	रोगिणी	पुत्राढ्या	सुभगा	सुरूपा	सद्व्यया
शुक्रः	सुखिनी	सहर्षा	धनाढ्या	सुकीर्त्ति	सुसुता	दरिद्रा	पतिप्रि.	प्रमत्ता	सुपुण्या	सुकर्मा	सुपुत्रा	सद्व्यया
शनिः	वन्ध्या	निर्धना	दक्षा	हृद्रोगा	अपुत्रा	सुगुणा	विधवा	दुःखार्त्ता	वन्ध्या	पापा	सुलाभा	मूड़ा
राहुः	अपुत्रा	दरिद्रा	धनाढ्या	रोगार्त्ता	अपुत्रा	धनाढ्या	दुःखार्त्ता	क्लेशिनी	वन्ध्या	कुकर्मा	सुभगा	खला
केतुः	दुःखार्त्ता	शोकार्त्ता	रोगाढ्या	भ्रातृहीना	विपुत्रा	धनाढ्या	विधवा	सदुःखा	शोकार्ता	पापा	सुभगा	सरोगा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फलित में परमोपयोगी ग्रह-दृष्ट्यादि विवरण-चक्र

ग्रह और उनके चिह्न	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
ग्रहों की एक-पाद दृष्टि	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	०	३-१०	३-१०
दो-पाद दृष्टि	५-९	५-९	५-९	५-९	०	५-९	५-९	५-९	५-९
तीन-पाद दृष्टि	४-८	४-८	०	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८
सम्पूर्ण दृष्टि	७	७	४-७-८	७	५-७-९	७	३-७-१०	७	७
नक्षत्र-दृष्टि	५-१५	१५	७-८-१०-१५	९-१२-१५	१०-१५-१९	९-१२-१५	३-५-१५-१९	९-१५	९-१५
मित्र-ग्रह	च.म.गु.	र.बु.	र.च.गु.	र.शु.रा.	र.च.म.	बु.श.रा.	बु.शु.रा.	बु.शु.श.	बु.
सम-ग्रह	बु.	मं.गु.शु.श.	शु.श.	मं.गु.श.	श.रा.	मं.गु.	मं.	गु.	×
शत्रु-ग्रह	शु.श.रा.	रा.	बु.रा.	च.	बु.शु.	र.च.	र.च.मं.	र.च.मं.	×
बलवत्तम भाव	दशम	चतुर्थ	दशम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	सप्तम	×	×
कारक भाव	१-९-१०	४	३-६	४-१०	२-५-९-१०-११	७	६-८-१०-१२	×	×
उच्चराशि एवं परमोच्चांश	मेष १०°	वृषभ ३°	मकर २८°	कन्या १५°	कर्क ५°	मीन २७°	तुला २०°	मिथु.१५°	धनु१५°
नीचराशि एवं परम नीचांश	तुला १०°	वृश्चिक ३°	कर्क २८°	मीन १५°	मकर ५°	कन्या २७°	मेष २०°	धनु १५°	मिथुन १५°
मूल त्रिकोण राशि, अंश	सिंह २०°	ष४°से ३०°	मेष १८	कं.१६°से२०°	धनु१३°	तुला१०°	कुम्भ २०°	कर्क	मकर
स्वगृह- (राशि)	सिंह	कर्क	मेष वृश्चिक	मि., कन्या	धनु, मीन	वृष, तुला	म. कुम्भ	कन्या	मीन
हर्ष-स्थान	९	३	६	१	११	५	१२	×	×
शत्रु-राशियां	२-६-७-१०-११	६	३-६-६-७	४	२-३-	४-५	१-४-५-८	१-४-५-८	×
स्वगृह से सप्तम (अस्त) राशि	११	१०	२-७	९-१२	३-६	१-८	४-५	१२	६
विंशो. दशा-नक्षत्र व वर्ष	कृ., उ.षा., उ.फा. ६	रो., ह., ब्र. १०	मृ., चि., ध. ७	आश्लेषा, ज्ये. रे. १७	पुन. वि., पू. भा. १६	म.पू.फा., पू.षा. २०	पुष्य, अनु., उ.भा. १९	आर्द्रा, स्वा., शत. १८	अश्विनी, भ. मू. ७
ग्रहों के भाग्योदयकारी वर्ष	२२	२४	२८	२	१६	२५	३६	४२	४२
दिशा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्यु	नैऋत्यु
कुण्डली-भाव-दिशा	१	५-६	१०	४	२-३	११-१२	७	८-९	८-९
राशि चक्र-परिभ्रमण वर्ष	१	०-०-७४	१-९	०-२	११-९	०-६	२९-५	१८-६	१८-६
मध्यम राशि-भ्रमण-काल	१ मास	२१ दिन	१ ॥ मास	२५ दिन	१३ मास	२८ दिन	३० मास	१८ मास	१८ मास
नक्षत्र-चार-दिन	१३	१	२०	१०	१७३	१२	४००	२४०	२४०
नक्षत्र-पाद (नवांश) चार-दिन	३'/,	'/,	५	२'/,	४३	३	१००	६०	६०
मध्यम दिनगति,कला,विकला	५९'-८"	७९०'-३५"	३१'-२७"	५९'-८"	४'-५९"	५९'-८"	२'-०"	३'-११"	३'-११"
शीघ्र गति, कला, विकला	६०'-४"	८२३'-४८"	३९'-१"	१०४'-४६"	१२'-२२"	७३'-४३"	५'-२७"	×	×
परमशीघ्र गति (अतिचारी)	६१'	८५७'	४६'-११"	११३'-३२"-	१४'-४"	७५'-४२"	७'-४५"	×	×
अतिचार-दिन (स्थूल)	×	×	१५	१०	४५	१०	१८०	×	×
सन् ८३ का मध्यम शर (विक्षेप) नव्य मत	×	५°-८'-४३".४३	१°५०'-५९".४	७°-०'-१५".९	१°-१८'-१४".४	३°-२३'-४०".१	२°-२९'-२१".३	×	×
गोचर से निंद्य	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२
गोचर से पूज्य	१-२-५-७-९	२-५-९	१-२-५-७-९	१-३-५-७-९	१-३-६-१०	५-६-७-१०	१-२-५-७-९	१-२-५-७-९	१-२-५-७-९
गोचर से शुद्ध	३-६-१०-११	१-३-६-७-१०-११	३-६-१०-११-	२-६-१०-११	२-५-७-९-११	१-२-३-९-११	३-६-१०-११	३-६-१०-११	३-६-९०-११
अनुक्रम से वेध स्थान	९-१२-४-५ शनि वर्जित	५-९-१२-२-४-८ बुध वर्जित	१२-९-१०-५	५-१-८-१२ चन्द्र वर्जित	१२-४-३-१०-८	८-७-१-११-३	१२-९-१०-५ सूर्य वर्जित	१२-९-१०-५	१२-९-१०-५

टिप्पणी—चन्द्रमा शुक्लपक्ष में २,५,९वें स्थानों में भी शुभ होता है, यदि क्रमशः ६,८,४ स्थान में बुध के सिवा अन्य ग्रह न हों। ग्रह जिस दिशा का स्वामी है, यात्रा-कालिक कुण्डली में उसी दिशा में पड़े तो ललाट-योग होता है। जो युद्ध-यात्रा में वर्ज्य है। यात्रा की दिशा का स्वामी-ग्रह तात्कालिक कुण्डली के केन्द्र में हो तो यात्रा विहित है। (मुहूर्त्त-मार्तण्ड)।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१. मूंग
२. हरितवस्त्र
३. सुवर्ण
४. कांस्य
५. मृगमद
६. आज्य
७. पंचरत्न
८. दासी
९. हस्तिदंत

बुध

ईशान्यांबाणाकारमंडल अं. ४ मगधदेश आत्रेयसगोत्र
पीतवर्ण कन्यामिथुन को स्वामी जप ४०००

१. चित्रांबर
२. श्वेताश्व
३. धनु
४. हीरा
५. रौप्य
६. सुवर्ण
७. तंदुल
८. सुगंध
९. धृत

शुक्र

पूर्वे पचकोणमंडल वृषतुलाक स्वामी भोजकूट देश
भार्गवसगोत्र श्वेतवर्ण जप १६०००

१. वशपात्र
२. तंदुल
३. कर्पूर
४. मौक्तिक
५. श्वेतवस्त्र
६. वृषभ
७. रौप्य
८. घृतकुंभ
९. शंख

चंद्र

आग्नेयां चतुरस्त्रमंडल अं. ४ यमुनातीर देश
आत्रेयसगोत्र श्वेतवर्ण कर्कको स्वामी जप १६०००

१. अश्व
२. शर्करा
३. हलद
४. पीतधान्य
५. पीतवस्त्र
६. पुष्पराग
७. लवण
८. कांचन

गुरु

उ. दाधचतुरस्त्रमंडल अगुल ६ सिंधुदशाद्भव
आंगिरसगोत्र पी. व. धनु मीन का स्वामी जप ११०००

१. माणिक
२. गेहूं
३. धेनु
४. कुसुंभ
५. गुड़
६. ताम्र
७. रक्तवस्त्र
८. रक्तपुष्प
९. सुवर्ण

रवि

मध्यवतुलमंडल अ. १२ कलिंगदशाद्भव काश्यपस
गोत्र रक्तवर्ण सिंह को स्वामी जप ७०००

१. प्रस्त्रल
२. गेहूं
३. मसूर
४. ताम्रवस्त्र
५. गुड़
६. सुवर्ण
७. ताम्र
८. कण्हेर
९. वृषभ

मंगल

द. त्रिकोणमंडल अं. ३ अवंतीदेशाद्भव भारद्वाजसगोत्र
रक्तवर्ण वृश्चिकमेषे को स्वा. जप १००००

१. वैडूर्य
२. तिल
३. कंबल
४. कस्तूरी
५. शस्त्र
६. कृष्णवस्त्र
७. तैल
८. कृष्णपुष्प
९. छाग
१०. लाहपात्र

केतु

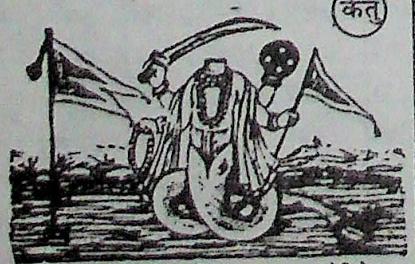

वाय. ध्वजाकारमंडल केतु अंगलु ६ अवंतिदेश
जैमिनिसगोत्र धूम्रवर्ण जप १७०००

१. माष
२. तिल
३. तैल
४. कुलित्थ
५. महिषी
६. लोहू
७. कृष्णागौ
८. इंद्रनील
९. श्यामवस्त्र

शनि

प. धनुर कारमंडल अं. २ सौराष्ट्र देश काश्यपस गोत्र
मकरकुंभको स्वा. कृ, व. जप २३०००

१. गोमेदरत्न
२. अश्व
३. नीलवस्त्र
४. कंबल
५. तिल
६. तैल
७. लोह
८. अंधक

राहु

नैर्ऋत्या शूर्पाकारमंडल अं. १२ काश्मीरदेश
पठानसगोत्र कृष्णवर्ण जप १८०००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहाः गोचराद्येर्दशाक्रमाद्यैर्ग्रहकृतानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्थाः

												जप सं.	जपनीय मंत्राः	समय	समिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केसर	मूंगा	रक्त गौ	रक्तचंदन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	सु. उ.	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूर	श्वेत बैल	श्वेतचंदन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	संध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरी	रक्त बैल	रक्तचंदन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कपूर	शस्त्र	फल	९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घ. ५	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचणे	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवै नमः	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगन्ध	दधि	श्वेत घोड़ा	श्वेतचंदन	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तेल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्ण गौ	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	संध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तेल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड्ग	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रौ	दूर्वा
केतु	लसनो	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	केबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः	रात्रौ	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कपूर	मिसरी	श्वेतचंदन	हाथीदांत	मुंथेशवत्	मुन्थेश मन्त्र	मुन्थेशकाले	

अथ ग्रहाणां विंशोत्तरी महादशायामन्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम्

सूर्य दशा वर्ष ६				चन्द्र दशा वर्ष १०				भौम दशा वर्ष ७				राहु दशा वर्ष १८				गुरु दशा वर्ष १६				शनि दशा वर्ष १९				बुध दशा वर्ष १७				केतु दशा वर्ष ७				शुक्र दशा वर्ष २०			
कृ. उ.फा. उ.षा. तन्मध्येऽन्तरम्				रो. ह. श्रवण तन्मध्येऽन्तरम्				मृ. चि. ध. तन्मध्येऽन्तरम्				आर्द्रा स्वा. श. तन्मध्येऽन्तरम्				पुन. वि. पू.भा. तन्मध्येऽन्तरम्				पु. अनु. उ.भा. तन्मध्येऽन्तरम्				अश्ले. ज्ये. रे. तन्मध्येऽन्तरम्				म. मू. अश्वि. तन्मध्येऽन्तरम्				पू.फा. पू.षा. भ. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र	०	३	१८	चं	०	१०	०	मं	०	४	२७	रा	२	८	१२	बृ	२	१	१८	श	३	०	३	बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु	३	४	०
चं	०	६	०	मं	०	७	०	रा	१	०	१८	बृ	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	९	के	०	११	२७	शु	१	२	०	र	१	०	७
मं	०	४	६	रा	१	६	०	बृ	०	११	६	श	२	१०	६	बु	२	३	६	के	१	१	९	शु	२	५०	०	र	०	४	६	चं	१	८	०
रा	०	१०	२४	बृ	१	४	०	श	१	१	९	बु	२	६	१८	के	०	११	६	शु	३	२	०	र	०	१०	६	चं	०	७	०	मं	१	२	०
बृ	०	९	१८	श	१	७	०	बु	०	११	२७	के	१	०	१८	शु	२	८	०	र	०	११	१२	चं	१	५	०	मं	०	४	२७	रा	३	०	०
श	०	११	१२	बु	१	५	०	के	०	४	२७	शु	३	०	०	र	०	९	१८	चं	१	७	०	मं	०	११	२७	रा	१	०	१८	बृ	२	८	०
बु	०	१०	६	के	०	७	०	शु	१	२	०	र	०	१०	२४	चं	१	४	०	मं	१	१	९	रा	२	६	१८	बृ	०	११	६	श	३	२	०
के	०	४	६	शु	१	८	०	र	०	४	६	चं	१	६	०	मं	०	११	६	रा	२	१०	६	बृ	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
शु	०	०	०	र	०	६	०	चं	०	७	०	मं	१	०	१८	रा	२	४	२४	बृ	२	६	१२	श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	१	२	०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जन्म राशि से ग्रहों के गोचर-फल

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहू	केतु
प्रथम	स्थान नाश: पन्था:	अन्नलाभ: पुष्टि:	भयं, पीड़ा च	बन्धनं	अरिष्टादि भयं	शत्रु नाश: सुखम्	पीड़ा भयं सर्वनाश:	कष्टम् हानि:	हानि रोगभयं
द्वितीय	हानि: भयं	धनलाभ: सुखं	धन नाश:	धन लाभ:	धनादि लाभ:	अर्थ लाभ: सुखं	धन हानि: शोक:	व्यञ्च नै:स्वं	वित्तनाश: वैरी भयं
तृतीय	सुखं श्रीप्राप्ति:	द्रव्याप्ति: सुखं	श्रीप्राप्ति: सुखम्	शत्रुतो भयम्	रोगाप्ति: भयम्	अर्थ लाभ: सुखं	अर्थ लाभ: सुखं	धन प्राप्ति नैरूज्यं	वृद्धि: सुखलाभ:
चतुर्थ	माननाश: रोगभयं	रोगदानार्थ सिद्धि:	कष्टम्	वित्तलाभ: सुखं	धन हानि व्ययम्	धनागम:	शत्रुवृद्धि: पीड़ा भयं	शोकश्च वैरं	पीड़ा च भीति:
पंचम्	हानि दैन्यं	कार्यनाश:	धन नाश: रुग्भयं	रूक् शोकश्च	लाभ: सुखंच	पुत्र लाभ:	धनुपुत्रयोर्नाश:	हानि: शोकश्च	शोक, अर्थनाश:
षष्ठ	रिपुनाश: सुखं	वित्तलाभ:	सुखम् अर्थलाभ:	अलाभ: स्थिति	रोग: शोकाश्च	शत्रु वृद्धि, पीडाच	सुखं वित्तलाभ:	लक्ष्मीप्राप्ति: सुखं	धन लाभ: सुखं
सप्तम्	गमनं धनहानि:	द्रव्य प्राप्ति: सुखम्	धन नाश:	विग्रह पीड़ा भयं	सम्मान सुखं च	शोक: अतिभयं	दोष पीड़ाभयं	कलह: हानि:	दुर्गति: पीड़ा च
अष्टम्	रोगाप्ति: भयम्	मृत्यु क्लेशभयम्	पापवृद्धि भयम्	धनान्नादि लाभ:	मत्युभयं पीड़ा च	विपत्ति: धनक्षय:	शत्रु वृद्धि रोग:	मृत्यु भयं	हानि, पीड़ाभयं
नवम्	पापवृद्धि: कान्तिक्षय	राजभयम्	रोगभयम्	धननाश: रूग्भयम्	सुख सम्मानम्	सुखं लाभ:	पापं धननाश:	पाप कर्मरति:	पापदैन्यञ्च
दशम्	सौख्यं कर्मसिद्धि:	शुभम् सुखम्	शोक:	सुख सुखभोग:	दैन्यम्	धर्म लाभ:	वैमत्यम्	वैरी सुखं	शोकश्च भयं
एकादश	वित्ताप्ति: सुखं	विविधार्थ लाभ:	लाभ: सुखप्राप्ति:	शुभ अर्थागम:	सौख्य प्राप्ति:	दुखं धनागम:	सुख वित्तलाभ:	वित्तलाभ: सुखं	अर्थलाभ: सुयशो
द्वादश	द्रव्यनाश: पीड़ा	रोग: धन नाश:	रोग: शोकश्च	शोक: धन नाश:	देहे पीड़ा भयं	धनागम:	क्लेशम् अनर्थश्च	पीड़ा च हानि:	वैरश्च पीड़ा

घात चक्र

(प्रवास, राज्याधिकारी से मिलने, यात्रा आदि में घात चक्र वर्ज्य करें लेकिन विवाहादि मंगल कार्यों में नहीं)

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	राशि	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घात मास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	घात मास	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
तिथि	१।६।११	५।१०।१५	२।७।१२	२।७।१२	३।८।१३	५।१०।१५	तिथि	४।९।१४	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	३।८।१३	५।१०।१५
वार	रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	वार	बृहस्पति	शुक्र	शुक्र	मंगल	बृहस्पति	शुक्र
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	नक्षत्र	शतभिषा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
योग	विष्कुम्भ	शुक्ल	परिघ	व्याघात	धृति	शूल	योग	शूल	व्यतिपात	वरीयान	वैधृति	गण्ड	वैधृति
करण	बव	शकुनि	चतुष्पद	नाग	बव	कौलव	करण	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पद
लग्न	मेष	मिथुन	कन्या	मकर	वृष	सिंह	लग्न	मीन	मिथुन	सिंह	वृश्चिक	मेष	कर्क
प्रहर	१	४	३	१	१	१	प्रहर	४	१	१	४	३	४
चन्द्र (पु.)	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	चन्द्र (पु.)	धनु	वृषभ	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
चन्द्र (स्त्री)	मेष	धनु	धनु	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	चन्द्र (स्त्री)	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुम्भ

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मुहूर्तादि कार्येषु शुभाशुभ समय विचार

सूर्यादि वारों में कृत्य

रविवार में कृत्य— राजाभिषेकोत्सववयान-सेवा-गोवह्निमन्त्रौषधिशस्त्रकर्म।
सुवर्णताम्रौर्णिकचर्मकाष्ठसंग्रामपण्यादिखौ विदध्यात्॥

राज्याभिषेक, उत्सव (गाना बजाना), नई सवारी (वायुयान आदि) पर चढ़ना, यात्रा, नौकरी, गाय, बैल आदि पशु क्रय-विक्रय, अग्नि सम्बन्धी कर्म (हवन यज्ञादि), मन्त्रोपदेश, औषधि निर्माण और सेवन, अस्त्र-शस्त्र व्यवहार (युद्धादि), सोना, तांबा, ऊन-काष्ठ सम्बन्धी कार्य, युद्ध और व्यापार सम्बन्धी सब कार्य रविवार में करने चाहिए।

सोमवार में कृत्य— शंखाब्जमुक्तारजतेक्षुभोज्य स्त्रीवृक्ष कुप्यम्बु विभूषणानि।
गीतक्रतुक्षीर विकारशृङ्गी पुष्याक्षरारम्भणमिन्दुवारे॥

शंख आदि जलोत्पन्न वस्तु, मुक्ता, चांदी, ऊखरस से उत्पन्न गुड़, चीनी आदि भोज्य पदार्थ, स्त्री-प्रसंग, वृक्ष (बीज) रोपणादि, कृषि कर्म, जल सम्बन्धी कार्य (नहर निकालना, तालाब, कुआं बनाना आदि) वस्त्राभूषण धारण, गीत-नृत्य, यज्ञादि कर्म, दूध, दही, घृत, बर्फ सम्बन्धी, पशु सम्बन्धी, पुष्प तथा अक्षरारम्भ (विद्याध्ययन) सम्बन्धी सभी कार्य सोमवार में करने चाहिए।

मंगलवार में कृत्य— भेदानृतस्तेयविषाग्निशस्त्रवधानि-धाताहवशाठ्यदम्भात्।
सेनार्निवेशाकरधातुहेम प्रबालकार्यादि कुजे हि कुर्यात्॥

चुगलखोरी, चोरी, विष सम्बन्धी, अग्नि सम्बन्धी, शस्त्रघात, बन्धन, संग्राम (लड़ाई शुरू), शठता, दम्भ-पाखण्ड, सेना सम्बन्धी, खान धातु सोना तथा मूंगा आदि सम्बन्धी सभी कार्य मंगलवार में करने चाहिए।

बुधवार में कृत्य— नैपुण्य-पण्याध्ययनं कलाश्च-शिल्पादि सेवालिपिलेखनानि।
धातुक्रिया काञ्चनयुक्तिसन्धि-व्यायामवादाश्च बुधेविधेयाः॥

ट्रेनिंग, व्यापार, अध्ययन, कला कौशल, शिल्प, खेलकूद, चित्रकारी, धातु सम्बन्धी सोना, कांसा, पीतल आदि, सन्धि समझौता, व्यायाम, वाद-विवाद, नौकरी प्रवेशादि कार्य बुधवार में करने चाहिए।

गुरुवार में कृत्य— धर्मक्रिया पौष्टिककर्म यज्ञ-माङ्गल्यहेमाम्बरवेश्मयात्राः।
रथाश्वभैषज्यविभूषणाद्यं कार्यं विदध्यात् सुरमन्त्रिणोऽह्नि॥

धर्मानुष्ठानादि कर्म, पौष्टिक (स्वास्थ्य), यज्ञ, विद्याध्ययन, मंगलोत्सव, सोना सम्बन्धी गृहकर्म, वस्त्राभूषण, यात्रा, रथ, घोड़ा, गाड़ी, कार, मोटर, वायुयान आदि सवारी सम्बन्धी कार्य, औषधि-आभूषण का निर्माण व प्रयोग सभी शुभ काम गुरुवार में करने चाहिए।

शुक्रवार में कृत्य— स्त्रीगीतशय्यामणिरत्नगन्धं वस्त्रोत्सवालंकरणादि कर्म।
भूषण्यगोकोश-कृषिक्रियाश्च सिद्ध्यन्तिशुक्रस्यदिने समस्तम्॥

स्त्री सम्बन्धी, शय्या, मणि, रत्न, सुगन्ध,वस्त्र, उत्सव, आभूषण, भूमि, व्यापार, गोसम्बन्धी, कृषि कर्म, जमीन, जायदाद तथा भण्डार (संग्रह) से सम्बन्धित सभी कार्य शुक्रवार में करने चाहिए।

शनिवार में कृत्य— लोहाश्मसीसत्रपुरस्त्रदास्य पापानृतस्तेयविषासवाद्यम्।
गृह प्रवेशो द्विपबन्ध-दीक्षा-स्थिरं च कर्माकंसुतेहि कुर्यात्॥

लोहा, पत्थर, सीसा, रांगा सम्बन्धी कर्म, अस्त्र-शस्त्र, नौकरी या नौकर रखना, पाप कर्म, चोरी, मिथ्यालाप, विषाक्त कर्म, आसव निर्माण व प्रयोग, गृह प्रवेश, हाथी को बांधना, अन्य पशु को सिखाना, दीक्षा (मन्त्र ग्रहण) आदि स्थिर कर्म शनिवार में करने चाहिए।

समस्त शुभ कार्यों में त्याज्य

१. जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म मास, श्राद्ध दिवस (माता-पिता का मृत्यु दिन), चित्त भंग, रोग या कोई उत्पादित। २. क्षय तिथि, वृद्धि तिथि, क्षय मास, अधिक मास, क्षय वर्ष, दग्धा तिथि, अमावस्या। ३. विष्कुम्भ योग की प्रथम पांच घटिकायें, परिधि योग का पूर्वार्द्ध, शूल योग की प्रम ७ घटिकायें, गण्ड और अतिगण्ड की ६ घटिकायें एवं व्याघात योग की प्रथम आठ घटिकाएं, हर्षण और वज्र योग की नौ घटिकाएं, व्यतिपात और वैधृति योग समस्त शुभ कार्यों में त्याज्य हैं। मतान्तर से विषकुम्भ की तीन, शूल की पांच, गण्ड और अतिगण्ड की सात, व्याघात व वज्र की ९ घटिकाएं शुभ कार्यों में त्याज्य हैं। ४. महापात का समय में भी कार्य न करें। ५. तिथि, नक्षत्र और लग्न इन तीनों प्रकार का गण्डान्त समय। ६. भद्रा (विष्टीकरण)। ७. तिथि नक्षत्र तथा दिन के परस्पर बने कई दुष्ट योग जैसे सप्तमी+अश्विनी+मंगल, पंचमी+हस्त+रवि, छठ+मृगशिर+सोम, अष्टमी+अनुराधा+बुध, नौमी+पुष्य+गुरु, दशमी+रेवती+शुक्र, एकादशी+रोहिणी+शनि आदि योगों को शुभ कार्य में त्याज्य करना चाहिए। ८. पाप ग्रह युक्त, पाप भुक्त और पाप ग्रह विद्ध नक्षत्र एवं नक्षत्रों की विष संज्ञक घटिकायें। ९. पाप ग्रह युक्त चन्द्र, पाप युक्त लग्न का नवांश। १०. जन्म राशि, जन्म लग्न से अष्टम लग्न। दुष्ट स्थान ४, ८, १२ का चन्द्र, क्षीण चन्द्र वर्जित है। १२. लग्नेश ६, ८, १२ न हो, जन्मेश और लग्नेश अस्त नहीं हो, पाप ग्रहों का कर्तरी योग भी वर्जित है। १३. मासान्त दिन, सभी नक्षत्रों के आदि की २ घटिका, तिथि के अन्त की एक घटी और लग्न के अन्त की आधी घड़ी शुभ कार्यों में वर्जित करें। १४. जिस नक्षत्र में ग्रहण या पापी ग्रहों का युद्ध हुआ हो वह नक्षत्र शुभ कार्यों में ६ महीने तक नहीं लेना चाहिए (ग्रहों के एक राशि अंश कलादि सम होने पर ग्रह युद्ध कहा है)। १५. ग्रहण के पहले ३ दिन और बाद के ६ दिन वर्जित, ग्रहण नक्षत्र वर्जित, ग्रहण खग्रास हो तो वह नक्षत्र ६ मास, आधे में ३ मास, चौथाई ग्रहण में १ मास, उदयोदय और अस्तास्त में ३ दिन पहले और ३ दिन पीछे कोई शुभ कार्य न करें। १६. गुरु-शुक्र का अस्त, बाल्य, वृद्धत्व, गुर्वादित्य समय भी शुभ कार्यों में त्याज्य कहे हैं। बाल्य और वृद्धत्व के ३ दिन वर्जनीय हैं। १७. कृष्ण पक्ष १४ का चन्द्र वार्द्धिक्य, अमावस का अस्त, शुक्ल एकम् के बाल्य चन्द्र के समय में भी शुभ काम न करें।

सामान्य रूप से दिन शुद्धि

१. दोनों पक्षों की २, ३, ४, ७, १०, १२, १५, कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तथा शुक्ला की १३ तिथि शुभ हैं। परन्तु तिथि-क्षय-वृद्धि त्याज्य हैं। २. शुभवार-सोम, बुध, गुरु और शुक्र शुभ हैं। ३. बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर और वणिज करण शुभ हैं। ४. अश्विनी,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती नक्षत्र शुभ हैं। ५. योगों का वर्णन किया है उनका शुभ कार्यों में त्याज्य करना चाहिए। ६. तारा-जन्म नक्षत्र से इष्टकालीन नक्षत्र तक की संख्या को ९ से भाग दें। शेष १, २, ४, ६, ८ या ० रहे तारा शुद्ध जानो यदि ३, ५, ७ शेष रहे तो तारा अशुभ जानो। शुक्ल पक्ष में चन्द्र बल व कृष्ण पक्ष में तारा बल विशेष महत्व रखता है। ७. चन्द्र बल-क्षीण-वार्द्धक्य, अस्त, बाल्य, पाप ग्रह युक्त विशेष रूप से शुभ कार्यों में वर्जित करें। राशि अनुसार जन्म राशि १, २, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११वीं राशि का चन्द्र शुभ होता है। ४, ८, १२ राशि का चन्द्रमा हर प्रकार से नेष्ट माना गया है। मुहूर्त प्रकाश में लिखा है—यदि लग्न शुभ ग्रहों और संपूर्ण गुणों से युक्त हो परन्तु १२, ८, ६ भाव में चन्द्र हो तो अशुभ ही जानो। लग्न में गुरु-शुक्र तथा चन्द्र अपनी उच्च राशि ४ या नीच राशि ८ अथवा मित्र राशि या शत्रु के घर में हो और सम्पूर्ण गुणों सहित लग्न हो परन्तु पाप ग्रह युक्त चन्द्रमा हो तो दोष कारक ही होता है। इसलिए चन्द्र को सभी प्रकार से देखना चाहिए। ८. पाप ग्रह १२, ८, १ इन जगह में तथा ६ में शुभ ग्रह और पाप ग्रह केन्द्र १, ४, ७, १० त्रिकोण ९, ५ में अशुभ होते हैं और सौम्य ग्रह केन्द्र व त्रिकोण में और पाप ग्रह ३, ६, ११ भावों में और सम्पूर्ण ग्रह ११ भाव में श्रेष्ठ होते हैं। यदि केन्द्र या त्रिकोण में स्थित पाप ग्रहों पर बुध, बृहस्पति या शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो। यदि केन्द्र या त्रिकोण में स्थित बुध शुक्र या गुरु की दृष्टि पाप ग्रहों पर हो तो पाप ग्रहों का फल शुभ हो जाता है। **विशेष**—चर लग्न, चर नवाँश तथा राशि स्थित चन्द्रमा ये तीनों चर शुभ कार्यों में वर्जित करें। शास्त्रों में लिखा है कि तिथि का १ गुण, नक्षत्र का ४, वार का ८, करण का १६, योग का ३२, तारा का ६०, चन्द्रमा का १०० और लग्न का १ करोड़ गुण होता है। अतः गुण व दोष इन दोनों के तारतम्य से विद्वानों को विचार कर मुहूर्त्त करना चाहिए। क्योंकि गुण सैकड़ों दोषों का विनाश करता है तो कहीं पर एक दोष ही असंख्य गुणों को नष्ट करता है। इसलिए शुभ-अशुभ का न्यूनाधिक देखकर ही मुहूर्त्त विचारने चाहिए।

हमारे नित्य दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण लिखा-पढ़ी, राजकीय या व्यापारिक कन्ट्रैक्ट, भेंट-मुलाकात, आवेदन या नवीन टेण्डर, नवीन मुलाकात द्वारा कार्य सिद्धि, नवीन विषय पर लेखन कार्य प्रारम्भ आदि अनेकानेक महत्वपूर्ण कार्य हमारे दैनिक जीवन में आते हैं जिसके लिए हम शुभ मुहूर्त्त चाहते हैं। पर यथा शीघ्र सर्वाङ्ग शुद्ध मुहूर्त्त की प्रतीक्षा में अधिक दिन तक नहीं रुक सकते अतः हम अपने प्रिय पाठकों के लिए वार-तिथि-नक्षत्र-योग अनुसार सुयोग व कुयोग मुहूर्त्तों की सारिणी दे रहे हैं। इस सारिणी की सहायता से सरलतापूर्वक शीघ्र ही शुभा-शुभ काल ज्ञात करके अपना कार्य आरम्भ कर सकते हैं।

योग	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
सिद्धि योग तिथि	—	—	३-८-१३	२-७-१२	५-१०-१५	१-६-११	४-९-१४
दग्धा तिथि	१२	११	५	३	६	८	९
हुताशन तिथि	१२	६	७	८	९	१०	११
विषाख्या तिथि	४	६	७	२	८	९	७
अधम तिथि	७, १२	११	१०	१, ९	८	७	६
वर्जित तिथि नक्षत्र	५ हस्त	६ मृग	७ अश्विनी	८ अनु.	९ पुष्य	१० रेवती	११ रोहि.
मृत्यु योग तिथि	१-६-११	२-७-१२	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	२-७-१२	५-१०-१५
क्रकच तिथि	१२	११	१०	९	८	७	६
उत्पात नक्षत्र	विशाखा	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.
मृत्यु योग नक्षत्र	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	आश्लेषा	हस्त
काण योग	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
दग्धा योग	भरणी	चित्रा	उ.षा.	धनिष्ठा	उ.फा.	ज्येष्ठा	रेवती
यम घंट योग	मघा	विशाखा	आर्द्रा	मूल	कृत्तिका	रोहिणी	हस्त
मुसल योग	अभिजित्	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा
काल दण्ड	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू.भा.
वज्र	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ़	शतभिषा	अश्विनी	मृग.
राक्षस योग	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.
ध्वांक्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू.भा.	भरणी
धूम्र	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भा.
गद	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति	मूल
आनन्द	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा
श्रीवत्स	पुष्य	उ.फा.	विशाखा	पूर्वाषाढ़	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी
सौम्य	मृगशिरा	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी
छत्र	पू.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु
शुभ	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.	विशाखा
अमृत	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा
मित्र	उ.फा.	विशाखा	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य
सिद्ध योग	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति
अमृत सिद्धि	हस्त	श्रवण	अश्विनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी
सर्वार्थ सिद्धि	हस्त, मूल	श्र.रो.मृ.	अश्विनी	रोहिणी	रेव.,अनु.,	रेव. अनु.,	श्रवण
	३ उ.,	पुष्य,	उ.भा.,	अनु., हस्त	अश्वि.,पुन.	अश्वि.,	रोहिणी
दुष्ट तिथि	पु., अश्वि	अनुराधा	कृत्ति., अश्ले.	कृत्ति., मृग.	पुष्य	पुन., श्रव.	स्वाति
	१, ३, ७	२-११	३-९-१२	७-९-११	—	—	११-१३

सर्वार्थ सिद्धि के साथ दुष्ट तिथि पड़ जाये तो ये योग दूषित हो जाता है। ऐसे ही अमृत सिद्धि में लिखा है। यदि यमदंष्ट्रा राक्षस आदि कुयोग में साथ ही कोई सुयोग सर्वार्थ आदि भी पड़े तो बुरे के बजाय शुभ फल देगा। अतः कार्यारम्भ शुभ रहता है। वैसे तत्कालीन लग्न शुद्धि कुयोगों का नाश कर सुयोग को अपना शुभ फल प्रदान करने की शक्ति रखती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विविध मुहूर्त्त विचार

भारतीय संस्कृति में संस्कारों को अत्यधिक महत्व दिया गया है। जन्म से मनुष्य शूद्र होता है भले ही वह किसी भी जाति में जन्म ले, जब तक वह संस्कारित नहीं किया जाता शूद्र ही बना रहता है। पूर्व में चालीस संस्कारों का प्रचलन था, किन्तु आज समयाभाव के कारण इनकी संख्या में कमी आई है। गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक सोलह संस्कार माने गये हैं। इनमें से भी कुछ मुख्य संस्कारों की ही मान्यता आज प्रचलित है।

गर्भाधान— सभी संस्कारों में गर्भाधान संस्कार का विशेष महत्व है क्योंकि भावी सन्तान के संस्कारों की आधारशिला इसी संस्कार पर निर्भर करती है। यह सर्वविदित तथ्य है कि सन्तानोत्पत्ति माता-पिता के पारस्परिक संयोग से होती है। अतः इन दोनों के चेतन-अचेतन मन तथा देह की पवित्रता आवश्यक मानी गई है। जैसे सुसमय में बीजवपन से सस्य में पुष्टता होती है उसी प्रकार सुसमय में गर्भाधान से सन्तान गुणी एवं दीर्घजीवी उत्पन्न होती है।

रजोदर्शन होने के चार दिन पश्चात्, समरात्रि काल में पुत्रोत्पत्ति एवं विषम रात्रि में कन्या सन्तति उत्पन्न होती है। गण्डान्त, रवि, चन्द्रग्रहण, ७वीं तारा, मूल, अश्विनी, भरणी, मघा, रेवती नक्षत्रों, व्यतिपात, वैधृति योग, अमावस्या माता-पिता की मृत्यु तिथि, क्षयतिथि, बुधवार-शनिवार, को छोड़कर अन्य तिथि-वार नक्षत्र-योग में तथा केन्द्र स्थान (१-४-७-१०) और त्रिकोण (५-९) में शुभ ग्रह हों तथा ३-६-११वें स्थान में पाप ग्रह हों तब प्रसन्नचित्त होकर रात्रिकाल में गर्भाधान-कृत्य करें। विवाह और गर्भाधान में स्त्री के चन्द्रबल को प्रधानता दें।

पुंसवन— गर्भाधान के पश्चात् पुंसवन संस्कार किया जाता है ताकि गर्भस्थ शिशु का शारीरिक और मानसिक विकास हो सके। इस संस्कार में मलमास, गुरु शुक्रास्त प्रभृति निषिद्ध योग बाधक नहीं होते, जो दिन-नक्षत्र शुभ हो उसी दिन कर लेना चाहिये। यह संस्कार गर्भ के दूसरे व तीसरे मास में किया जाता है। शास्त्रकारों का मत है कि पुंसवन संस्कार के लिए पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मृगशिरा, मूल, श्रवण आदि नक्षत्र शुभ रहते हैं।

पारस्कर गृह्यसूत्र के अनुसार यह संस्कार तब करना चाहिये जब चन्द्रमा पुरुष नक्षत्र से युक्त हो।

सीमन्तोन्नयन— यह तीसरा संस्कार है तथा गर्भ के छठे या आठवें मास में किया जाता है। सीमन्तोन्नयन का शब्दार्थ होता है "शिर की मांग" लेकिन इसका भावार्थ है सौभाग्य सम्पन्न होना। इस संस्कार से गर्भवती के मन में आने वाली सन्तान के प्रति प्रेम तथा कर्त्तव्य की निष्ठा का समावेश होता है। पारस्कर गृह्य सूत्र में कहा है कि—**"प्रथम गर्भेमासे षष्ठेऽष्टमेवा"** तथा **"पुंसवनवत्"** कहकर यह स्पष्ट कर दिया है पुंसवन संस्कार में कहे गये मुहूर्त्त में इसे करें।

आश्वलायन गृह्य सूत्र के अनुसार जब चन्द्रमा शुक्ल पक्ष में पुमान् नक्षत्र से युक्त हो तब करना चाहिये साथ ही इन्होंने गर्भ के चौथे मास में इसे करने का निर्देश किया है, लेकिन अधिक मत छठे और आठवें मास में करने को मिलते हैं।

मेधा-जनन संस्कार— शिशु के जन्म लेने के उपरान्त यह संस्कार किया जाता है ताकि आगे चलकर वह यशस्वी और बुद्धिमान हो। जब बच्चा जन्म ले चुके तो नालछेदन से पूर्व दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में स्वर्ण भस्म शहद और गौघृत लगा कर नीचे लिखे मन्त्रों को बोलकर बच्चे को शहद चटा दें। चार मंत्र हैं प्रत्येक को एक बार बोल कर चटाना चाहिये। **मन्त्र—ॐ भूस्त्वीयदधामि, ॐ भुवस्त्वीयदधामि, ॐ स्वस्त्वीय दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वस्त्वीय दधामि।**

स्तन पान मुहूर्त्त— रिक्ता, तिथि, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति योग को त्याग कर शुभ तिथि-वार में पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, श्रवण, रेवती नक्षत्र में स्तन पान करना शुभ है।

प्रसूता स्नान का मुहूर्त्त— उत्तरा तीनों, रोहिणी, मृगशिरा, स्वाती, रेवती, हस्त, अनुराधा, पूर्वाफाल्गुनी, धनिष्ठा, अश्विनी इन नक्षत्रों में रवि, मंगल एवं बृहस्पति वारों में रिक्ता तिथि एवं अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथियों में प्रसूति स्नान प्रशस्त है।

जातकर्म— मेधा-जनन संस्कार से पूर्व यह संस्कार किया जाता है। नाल काटने पर सूतक लग जाता है और सूतक में जातकर्म करने का निषेध है। इस समय तिथ्यादि शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं होती, यदि किसी कारणवश पिता जन्म समय उपस्थित न हो तो जन्म के ११वें या १२वें दिन शुभ मुहूर्त्त में जातकर्म करना प्रशस्त है।

नामकरण संस्कार— जातकर्म संस्कार के पश्चात् नामकरण संस्कार किया जाता है लेकिन आज के युग में समयाभाव के कारण नामकरण के साथ ही जातकर्म करने का प्रचलन है। नामकरण संस्कार मूलतः दश दिन पश्चात् हो जाना चाहिये लेकिन इसके बारे में आचार्यों के भिन्न-भिन्न मत हैं। पाराशर स्मृति के अनुसार—

जाते विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन भूमिपः। वैश्य पंच दशाहेन शूद्रो मासेन शुद्धयति॥

अर्थात् ब्राह्मण के लिए सूतक दस दिन, क्षत्रिय के लिए बारह दिन, वैश्य के लिए पंद्रह दिन तथा शूद्र के लिए एक मास तक रहता है। कुलाचार के अनुसार सूतक के अन्त होने के दूसरे दिन नामकरण करें। चिर-क्षिप्र-ध्रुव और मृदु नक्षत्रों में रवि, सोम, बुध, बृहस्पति, शुक्रवारों में, रिक्तामा को छोड़कर अन्य तिथियों में लग्न शुद्धि और चन्द्र-तारा का बल देखकर नामकरण करना प्रशस्त है।

निष्क्रमण संस्कार— घर से बाहर निकालने को निष्क्रमण कहते हैं। यह संस्कार तब किया जाता है जब बच्चे को घर से बाहर ले जाना होता है। जब माता अपने पिता के यहां जाये या माता-पिता को कहीं अन्यत्र जाना हो तो बच्चे को भी ले जाना अनिवार्य रहता है। इसलिए नामकरण संस्कार के पश्चात् निष्क्रमण किया जाता है। जन्म से चतुर्थ मास में यात्रा में विहित तिथियों में निष्क्रमण करना प्रशस्त है। यदि अत्यधिक शीघ्रता करनी पड़ जाये तो जन्म से बारहवें दिन यह संस्कार करें।

भूम्युपवेशन संस्कार— भूम्युपवेशन का अर्थ है भूमि पर बिठाना। प्रथम बार जब बच्चे को भूमि पर बिठना होता है। तब यह संस्कार किया जाता है। इसे जन्म से पांचवें महीने में करना चाहिये। भगवान् वराह और पृथ्वी का पूजन करके रिक्ता अमावस्या तिथि को छोड़कर अन्य तिथियों में शुभ ग्रह के बार में लड़के को कटिसूत्र धारण कराकर, ध्रुव, मृदु, लघु संज्ञक नक्षत्र में तथा मंगल बच्चे के लिए विशेष शुभ हो तब यह संस्कार करना उचित है।

इस समय बालक को आजीविकाज्ञानार्थ विद्या, कृषि, युद्ध व सेवा-सम्बन्धी पदार्थ उसके सामने रखें बालक जिस को पहले ग्रहण करे उसी के अनुसार उसकी जीविका जानें। बच्चे को भूमि पर बिठा तथा हाथ में पकड़े रह कर बालक का पिता, चाचा, दादा और नीचे लिखे मन्त्र से प्रार्थना करें—

रक्षैनं वसुधेदेवि सदा सर्वगतं शुभे।
आयु प्रमाणं लिखितं निक्षिपस्व हरिप्रिये॥

अन्न प्राशन— देह की पुष्टि-शक्ति और स्वास्थ्य के लिए यह संस्कार किया जाता है। तैत्तरीय उपनिषद् में "प्राणो वै अन्नम" अर्थात् अन्न ही प्राण है कहा गया है। बालक के जन्म से छठे, आठवें, दशवें आदि सम मासों में यदि कन्या हो तो पांचवें, सातवें आदि विषम मास में, रिक्ता-नन्दा और क्षयतिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, शनि, मङ्गल को छोड़कर अन्य वारों में, पुन., पु., हस्त, रो., चि., मृ., अनु., अश्वि., स्वा., तीनों उत्तरा., ध., म. और रेवती नक्षत्रों में, वृष, मिथुन, कन्या, मीन लग्न में अन्न प्राशन प्रशस्त है।

कर्ण वेध— जहां कर्ण वेध श्रवण शक्ति की वृद्धि में सहायक होता है वहीं आन्त्र उतरने (हानियां) जैसी भयानक व्याधि से बचाता है। यह संस्कार जन्म से बारहवें या सोलहवें दिन,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हरिशयन, (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) पौष, चैत्र और जन्म मास को छोड़ कर ६, ८, १०वें मास में, ३, ५वें विषम वर्षों में, जन्म नक्षत्र और रिक्ता तिथि को त्याग कर अन्य तिथियों में, अश्वि., पुन., पु., ह., श्र., अनु., ध., रे., स्वा., मृ., चित्रा आदि नक्षत्रों में, चं., बु., गु., शु. वारों में, मे., वृश्चि., म., कु. लग्नों एवं नवांश को छोड़कर अन्य लग्नों में, चन्द्र तारा की शुद्धि देखकर कर्ण बेध करना शुभ है। लड़के का प्रथम दाहिना और लड़की का बायां करना प्रशस्त है।

मुण्डन संस्कार—जीवन के आरम्भ काल में जो बाल जन्म के साथ उत्पन्न होते है वे पशुता के सूचक माने गये हैं। इन्हें कटाने से जहां वह पशुता समाप्त होती है वहीं मानवी गुणों की प्रखरता के साथ बुद्धि और ज्ञान की भी वृद्धि होती है। जन्म से तीसरे, पांचवें आदि विषम वर्षों में चैत्र को छोड़कर उत्तरायण समय में २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ इन तिथियों में, सो., बु., गु., शु. आदि वारों में जन्म नक्षत्र को छोड़ कर मृ., चि., रे., ज्ये., श्र., ध., शत., स्वा., पु., ह., अश्वि., पुष्य इन नक्षत्रों में लग्न शुद्धि देखकर अपराह्न से पूर्व मुण्डन संस्कार प्रशस्त हैं।

अन्यमत से प्रथम, द्वितीय वर्ष भी विहित हैं तथा ब्राह्मण के लिए रविवार, क्षत्रिय के लिए मंगलवार, वैश्य तथा शूद्र के लिए शनिवार भी प्रशस्त हैं तथा वाभ्यायन (दक्षिणायन) में मार्गशीर्ष भी श्रेष्ठ हैं।

उपनयन संस्कार—मानवजीवन में इस संस्कार का अत्यन्त महत्व है क्योंकि इसके पश्चात् मानव की भौतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। गर्भाधान से आठवें वर्ष ब्राह्मण का, ग्यारहवें वर्ष वैश्य का उपनयन संस्कार हो जाना चाहिये। इसके पश्चात् उपरोक्त काल के दूने काल में निन्द्य माना गया है अर्थात् ब्राह्मण के सोलहवें, क्षत्रिय का बाईसवें और वैश्य का चौबीसवें। इसलिए विहित वर्ष में हरिशयन से पूर्व उत्तरायण के सूर्य में शुक्ल पक्ष में २, ३, ५, १०, ११, १२ तिथियों में, क्षिप्र, ध्रुव, चर, मृदु संज्ञक, श्ले., मृ., आ., तीनों पूर्वा नक्षत्रों में सो., बु., गु., शु., वारों में वृ., मि., सिं., क., तुला, धनु और मीन लग्न में, चन्द्र, तारा, रवि, गुरु की शुद्धि देखकर उपनयन संस्कार करना श्रेष्ठ है।

विशेष—ज्येष्ठ शुक्ल २, आषाढ़ शुक्ल दशमी, पौष शुक्ल ११, और माघ शुक्ल १२ उपनयन संस्कार में निषिद्ध मानी गई हैं।

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त—जन्म से पाँचवें वर्ष में गणपति, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी की पूजा करके कुम्भ के सूर्य को छोड़ कर उत्तरायण में २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ इन तिथियों में, मृ., आ., पुन., पु., श्ले., ह., चि., स्वा., ध., शत., अश्वि., मृ., तीनों पूर्वा और उत्तरा, रो, रे, इन नक्षत्रों में रवि, गु., शु. वारों में, लग्न, चन्द्र, तारा बल विचार कर अक्षरारम्भ श्रेष्ठ माना गया है। वारों में सो., बु., मध्यम माने गये हैं।

विद्यारम्भ मुहूर्त्त—शिशिर, बसन्त एवं ग्रीष्म ऋतु में कुम्भ (कुम्भ के सूर्य को छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार, २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ इन तिथियों में मृ., आ., पुन., ह., चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्वि., मूल, तीनों पूर्वा, पु. और श्लेषा इन नक्षत्रों में केन्द्र स्थान एवं त्रिकोण स्थान में शुभग्रह हों ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, आठवां स्थान खाली हो तो विद्यारम्भ शुभ है।

जल पूजन के मुहूर्त्त—अधिक मास, चैत्र, पौष, गुरु, शुक्रास्त काल, मास पूर्ति होने पर ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, बु., सो., गुरुवार में श्र., पुन., पु., मृ., ह., मू., अनु. इन नक्षत्रों में प्रसूता का जल पूजन करना शुभ है।

नित्यक्षौर का मुहूर्त्त—शनि, रवि और मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, मघा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा, कृत्तिका इन नक्षत्रों में ४, ९, १४, ६ ८ अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथियों, रात्रिकाल, सन्ध्या, भद्रा, गण्डान्त काल और भोजन तथा स्नान के पश्चात् क्षौर करना वर्जित है।

दाह कर्म में, सूतकान्त में, जेल से छूटने पर, यज्ञ में, दीक्षा लेने में, राजा और ब्राह्मण की आज्ञा से क्षौर कर्म में मुहूर्त्त देखने की आवश्यकता नहीं है।

विवाह मुहूर्त्त विचार

विवाहे दस दोष

मुहूर्त्त ग्रन्थों में विवाह के अनेक दोष बतलाये गये हैं लेकिन इनमें प्रमुखता मात्र दश दोषों की है। इनकी शुद्धि होने पर अन्य दोष प्रभावहीन हो जाते हैं। वे दश दोष हैं—(१) लत्ता (२) पात (३) युति (४) वेध (५) यामित्र (६) वाण (७) एकार्गल (८) उपग्रह (९) कान्तिसाम्य (१०) दग्धातिथि। पंचांग में जो विवाह मुहूर्त्त दिये गये हैं वे इनका विचार करके दिये गये हैं। जहां कोई दोष नहीं है वहां सीधी रेखा और जहां दोष है वहां (ऽ) टेढ़ी रेखा बनाई गई है। इन दस दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

१. लत्ता—सूर्य, मंगल, वृहस्पति और शनैश्चर जिस नक्षत्र में हों क्रम से उससे अगले १२, ३, ६ और ८वें नक्षत्र को लत्ता से दूषित करते हैं। यह अग्र लत्ता दोष माना गया है। चन्द्र, बुध, शुक्र और राहु जिस नक्षत्र में हो क्रम से उससे पीछे के २२, ७, ५ और ९वें नक्षत्र को लत्तित करते हैं। यह पृष्ठ लत्ता दोष माना गया है। जैसे मंगल भरणी में हो और विवाह नक्षत्र रोहिणी हो तो यह मंगल का लत्ता दोषयुक्त साहा कहा जाएगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का लत्ता दोष का ज्ञान करें।

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	वृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	वि.नक्षत्र
सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	दिशा
धननाश	भय	मृत्यु	भय	बन्धुनाश	कार्यनाश	कुलनाश	मृत्यु	फल

२. पात—साध्य, हर्षण, शूल, गण्ड, वैधृति और व्यतीपात इन योगों का अन्त जिन नक्षत्रों में होता है वे पात दोषयुक्त माने जाते हैं।

पात दोष चक्र

रो.	मृ.	म	उ.फा.	ह	स्वा	अनु.	मूल	उ.षा.	उ.भा.	रे	नक्षत्र
आर्द्रा	मृग.	अश्वि.	कृत्ति.	भर.	कृत्ति.	अनु	रोहि.	भर.	भर.	अश्वि.	सूचीविद्धित नक्षत्र
पुन.	आर्द्रा	मृग.	आर्द्रा	मृग.	श्रव.	आर्द्रा	ज्ये	पुन.	शत.	ज्ये	
शत.	ज्ये.	ज्ये.	विशा.	शत.	धनि	उ.षा.	धनि	शत.	विशा.	धनि	
पू.फा.	धनि	पुष्य	पू.फा	पू.भा	पु.	पू.भा	आ	वि	उ.फा	म	
चित्रा	मघा	हस्त	उ.भा	स्वा.	हस्त	पू.षा	भर.	अनु	पू.फा	पू.फा	
मूल	हस्त	रेव.	पू.भा	भर.	रेव.	पू.फा	उ.भा	उ.षा	भर.	स्वा	

३. युति—जब विवाह के नक्षत्र में कोई ग्रह हो तो उसे ग्रह की युति युक्त दोष माना जाता है। ग्रहों की विवाह नक्षत्रों में युति धन नाशक, मृत्युदायक और भयप्रद कही गई है, विशेषतया शुक्र की युति वर्जित है। चन्द्र यदि स्वक्षेत्री, मित्र गृही व उच्च का हो तो युति दोष (चन्द्र का) नहीं माना जाता उल्टे इसे शुभ कहा गया है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

४. वेध—पंचशलाका चक्र में यदि विवाह के नक्षत्र के सम्मुख नक्षत्र में कोई ग्रह पड़े तो वेध दोष माना जाता है। शुभ ग्रह के वेध से स्वल्प और पाप ग्रह के वेध से अधिक दोष माना जाता है। नीचे वेध दोष चक्र दिया है इसमें ऊपर लिखे नक्षत्र में विवाह हो और नीचे लिखे नक्षत्र में ग्रह हो तो वेध होता है यह विवाह काल में वर्जित है।

वेध दोष चक्र

रो	मृ	म	उ.फा	ह	स्वा	अनु	मू.	उ.षा	उ.भा	रे	वि.नक्षत्र
अश्वि	उ.षा	श्र	रे	उ.भा	श	भ	पुन	मृ	ह	उ.षा.	वेध नक्षत्र

५. यामित्र—विवाह लग्न या चन्द्र से सप्तम में कोई ग्रह हो तो यामित्र दोष होता है। यदि लग्न और सप्तमस्थ ग्रह का अन्तर ठीक ६ राशि (अंश कलादि तक) तक हो तो पूर्ण यामित्र दोष अन्यथा अल्पदोष कहा गया है।

यामित्र दोष चक्र

रो	मृ	म	उ.फा	ह	स्वा	अनु	भ	उ.षा	उ.भा	रे	वि.नक्षत्र
अनु	ज्ये	ध	पू.भा	उ.भा	अ	कृ	मृ	पुन	उ.फा	ह	ग्रह नक्षत्र

६. बाण— किसी राशि में सूर्य के (स्पष्ट सूर्य के) भुक्तांश ८, १७ और २६ हों तो रोगबाण, २, ११, २० और २९ हों तो अग्निबाण, ४, १३, २२ हों तो राजबाण, ६, १५, २४ हों तो चोरबाण तथा १, १०, १९ और २८ हों तो मृत्यु बाण दोष माना जाता है। विवाह में मृत्यु बाण, यात्रा में चोरबाण, सेवा कर्म में (नौकरी करने में) राजबाण, गृहारम्भ में अग्निबाण और उपनयन में रोगबाण त्याज्य कहे गये हैं।

७. एकार्गल—विवाह के दिन विष्कुम्भ, वज्र, परिघ, अतिगण्ड, शूल, व्याघात, वैधृति और व्यतिपात इनमें से कोई योग हो तथा सूर्य नक्षत्र से (इसमें अभिजित के सहित गणना करें) चन्द्र विषम नक्षत्र में हो तो एकार्गल दोष होता है।

८. उपग्रह—विवाह के दिन सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४ और २५वें नक्षत्र में हो तो उपग्रह दोष होता है। कुरू और वाह्यक क्षेत्र में विशेष दोषावह है।

९. क्रान्तिसाम्य—जब मेष और सिंह, वृषभ और मकर, मिथुन और धनु कर्क और वृश्चिक, कन्या और मीन तथा तुला और कुम्भ इन दोनों राशियों में से एक पर सूर्य तथा दूसरी पर चन्द्र हो तो क्रान्तिसाम्य दोष होता है। यह स्थूल क्रान्तिसाम्य है। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित माना गया है।

१०. दग्धा तिथि—जब सूर्य धनु-मीन, वृष, कुम्भ, मेष-कर्क, मिथुन-कन्या, सिंह-वृश्चिक, तुला-मकर इन दोनों राशियों में से किसी राशि में सूर्य हो तो क्रम से २, ४, ६, ८, १०, १२ तिथियां दग्धा मानी गई हैं।

दग्धा तिथि चक्र

मेष कर्क	वृषभ कुम्भ	मिथुन कन्या	सिंह वृश्चिक	तुला मकर	धनु मीन	सूर्यराशि
६	४	८	१०	१२	२	तिथि

लत्तादि दोष परिहार—लत्ता उज्जैन क्षेत्र में सौराष्ट्र में, पात कुरुक्षेत्र, भटिण्डा, फिरोजपुर जिले में, एकार्गल जम्मू-कश्मीर में, वेध सब जगहों में, उपग्रह कुरुक्षेत्र, आगरा व अवध, बंगाल, जगन्नाथपुरी (कलिंग में) त्याज्य हैं। लग्न यदि सूर्य और चन्द्र के बल से बली हो तो एकार्गल, उपग्रह, लत्ता तथा पात दोष का परिहार हो जाता है।

विवाह समय के विहित मास, तिथि, नक्षत्र और लग्नादि

विवाह के लिए वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मेष, वृषभ और मिथुन के सूर्य (मिथुन का सूर्य हरिशयनी एकादशी से त्याज्य माना गया है) रिक्ता और अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथि, रोहिणी, मृगशिर, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूल, उ.षा., उत्तराभाद्रपद और रेवती (कुछ आचार्यों के मत से अश्विनी, चित्रा, श्रवण और धनिष्ठा भी विवाह नक्षत्र विहित माने गये हैं)। विवाह लग्न में मिथुन, कन्या, तुला, धनु और मीन का नवांश प्रशस्त कहा गया है।

वाग्दान विचार (वरवरण मुहूर्त्त)—रिक्ता अमावस्या तिथि को छोड़कर अन्य तिथियों में, शुभवार में तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी और कृत्तिका इन नक्षत्रों में लग्न और चन्द्रबल देखकर लड़की का भाई या पुरोहित पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशरादि का तिलक करें, पूजन करे तथा वर के मुख में मीठा या पान देकर गोद में वस्त्र, नारियल और द्रव्यादि दें।

विवाह के पूर्व कन्या का नाम बदलना—आजकल कन्या का नाम विवाह से पूर्व बदलने का नियम चल पड़ा है। इसके पीछे कारण है कि कन्या का जन्म नाम मालूम न होना, वैसे भी प्रायः लोग जन्म नाम को बदल कर दूसरा नाम रख लेते हैं। यदि विवाह से पूर्व कन्या का नाम बदलना हो तो ध्यान रखें कि बोलता नाम बदला जा सकता है जन्म नाम नहीं।

विवाह विचार में विशेष—दो सगी बहनों का दो सगे भाइयों के साथ विवाह न करें। दो सगी बहनों या भाइयों का तथा सगे बहन-भाई का विवाह ६ मास के भीतर न करें। आवश्यकता में लड़की के विवाह के बाद लड़के का विवाह हो सकता है। जुड़वां भाई-बहन का विवाह करने में भी कोई हानि नहीं। विवाह के पश्चात् ६ मास तक मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि संस्कार न करें। यदि संवत् बदल जाये तो ६ मास के भीतर किया जा सकता है। सगाई के पश्चात् वर या कन्या की तीन पीढ़ी में मृत्यु होने पर १ मास तक विवाह न करें। अत्यावश्यकता में सूतक समाप्त होने पर शान्ति करा कर विवाह करें। सबसे बड़े लड़के और सबसे बड़ी लड़की का विवाह ज्येष्ठ मास में न करें। जन्म नक्षत्र और जन्म तिथि में भी विवाह शुभ नहीं होता। अत्यावश्यक हो कि ज्येष्ठ लड़के और लड़की का विवाह ज्येष्ठ में करना पड़े तो सूर्य के कृत्तिका नक्षत्र में रहते कदापि न करें। अन्य नक्षत्रों में शान्ति कराकर किया जा सकता है।

त्रिबल शुद्धि

श्रेष्ठ गुरु—जब गुरु जन्म राशि से २।५।७।९।११वें हो।
पूज्य गुरु—जब गुरु जन्म राशि से १।३।६।१०वें हो।
नेष्ट गुरु—जब गुरु जन्म राशि से ४।८।१२ वें हो।
परिहार—जब गुरु स्वराशिस्थ (धनु-मीन) या उच्च में हो तो नेष्ट भी श्रेष्ठ माना गया है।
श्रेष्ठ रवि—यदि सूर्य जन्म राशि से ३।६।१०।११वें हो।
पूज्य रवि—यदि सूर्य जन्म राशि से २।५।९।१।७वें हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

नेष्ट रवि—यदि सूर्य जन्म राशि से ४।८।१२वें हो।

श्रेष्ठ चन्द्र—जन्म राशि से १।२।३।५।६।७।९।१०।११।१२वां चन्द्र श्रेष्ठ है। विवाह में १२ भी लिया जा सकता है।

नेष्ट चन्द्र—जन्म राशि से ४।८वां चन्द्र नेष्ट है।

गोधूलिका लग्न—हेमन्त ऋतु में सायंकाल जब सूर्य का बिम्ब लाल होकर पश्चिम में अस्त होने वाला होता है तब, ग्रीष्म में जब सूर्य आधा अस्त हो जाता है तब, वर्षा ऋतु में जब सूर्य सम्पूर्ण अस्त हो जाता है तब गोधूलि कही जाती है। वारों में जब गुरुवार को सूर्यास्त होने पर और शनिवार को सूर्य अस्त होने से पूर्व गोधूलि लग्न होती है। विवाह काल में यदि गोधूलि लग्न हो तथा लग्न, षष्ठ और अष्टम में चन्द्र हो तो कन्या के लिए अशुभ, लग्न, सप्तम, अष्टम इन स्थानों में मंगल हो तो वर के लिए अशुभ रहता है। लग्न से दूसरे, तीसरे और ग्यारहवें चन्द्र हो तो शुभ होता है।

वधू प्रवेश मुहूर्त्त—विवाह के पीछे १६ दिनों के भीतर सम दिन में अर्थात् २, ४, ६, ८, १०वें आदि दिनों में या ५, ७, ९वें विषम दिनों में वधू प्रवेश शुभ होता है, इसके बाद १, ३, ५, ७, ९, ११वें मास में, १, ३, ५वें वर्ष में वधू प्रवेश शुभ होता है। ५ वर्ष के पश्चात् कभी भी शुभ दिन देखकर वधू प्रवेश कराया जा सकता है।

द्विरागमन मुहूर्त्त—विवाह से विषम वर्षों में द्विरागमन शुभ है। कुम्भ, वृश्चिक और मेष में सूर्य हो, चन्द्र, गुरु और सूर्य बली हों तथा शुभ दिनों में, कन्या, तुला, वृष, मिथुन और मीन लग्न में तथा लघु, चर, ध्रुवसंज्ञक और मूल नक्षत्र में द्विरागमन शुभ है। शुक्र के सन्मुख और दक्षिण रहने पर नवविवाहिता, गर्भवती तथा बच्चे वाली स्त्री का पति घर जाना अशुभ है। रेवती में मृगशिर नक्षत्र तक चन्द्रमा के रहने से दक्षिण और सन्मुख शुक्र का दोष नहीं होता क्योंकि तब शुक्र अन्ध होता है।

नूतन वधू द्वारा पाकारम्भ—कृत्तिका, मृगशिर, पुष्य, ज्येष्ठा, विशाखा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती, नक्षत्रों में शुभ तिथि में, रवि, मंगल छोड़कर अन्य वारों में, स्थिर लग्न में तथा लग्न से ४, ८, १२वें कोई ग्रह न हो तो नवोढ़ा से पाकारम्भ कराना श्रेष्ठ रहता है।

धार्मिक कृत्य मुहूर्त्त—व्रत-अनुष्ठान, पुराण कथा, भागवत श्रवण, देव पूजन, रामायण कथा श्रवण इत्यादि कृत्तिका, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा तथा रेवती नक्षत्रों में, १, ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में मंगलवार, शनिवार को छोड़कर अन्य वारों में करना शुभ है। जिस विशिष्ट व्रत-अनुष्ठान के लिए विशिष्ट तिथि नक्षत्रादि निश्चित है, वह उसी समय करना चाहिए।

विवाहे मेलापक विचार

विवाह सामाजिक आवश्यकता है, यह संस्कार वासना पूर्ति के लिए नहीं वरन् गृहस्थ धर्म के निर्वाह के लिए किया जाता है। इस विषय में विद्वानों का मत है—

दाम्पत्य जीवनोद्देश्यो महान सेवामयस्था।
समाज देश विश्वेभ्यो दिव्यात्मानं समर्पयेत्॥

विवाह में लत्ता आदि दस दोष मुख्य माने गये हैं, इनमें अल्प दोष हो तो विवाह हो सकता है ऐसी शास्त्राज्ञा है, लेकिन जहां वर पक्ष और कन्या पक्ष दोनों में परस्पर सन्तोष हो जाये तो विहित नक्षत्रों में विवाह हो सकता है—

मनसश्चक्षुषोर्यस्मिन वरे यस्यां च योषिति।
सन्तोषो जायते तत्र नाव्यत् किञ्चिद् विचिन्तयेत्॥

वर और कन्या की कुण्डली हो तो दोनों के ग्रह मेलापक और नक्षत्र मेलापक शुद्धि देखनी चाहिये।

नक्षत्र मेलापक

इसमें वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकुट और नाड़ी ये आठ कूट होते हैं।

१. **वर्ण**—वर कन्या के वर्ण राशि चक्र से ज्ञात करने चाहियें। यदि दोनों के समान वर्ण हों या वर का कन्या से श्रेष्ठ वर्ण हो शुभ अन्यथा अशुभ समझना चाहिये। वर्ण का एक गुण होता है।

२. **वश्य**—राशि चक्र से वर-कन्या के वश्य ज्ञात कर देखना चाहिये कि दोनों का एक वश्य है तब दो गुण, एक का द्विपद (मानव) और दूसरे का चतुष्पदया कीट है तो शून्य गुण बाकी में एक गुण जानें।

३. **तारा**—वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक तथा कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक गिन कर दोनों संख्याओं को पृथक्-पृथक् लिख कर ९ का भाग दें १, २, ४, ६ अथवा शून्य शेष रहने पर शुभ अन्यथा अशुभ जानें। दोनों से तारा शुभ हो तो श्रेष्ठ, एक से शुभ हो तो मध्यम और दोनों से अशुभ हो तो निन्द्य समझना चाहिये। हमने यहां पर बिना तारा जाने सीधे वर-कन्या के जन्म नक्षत्र से तारा गुण की सारिणी दी है। अतः वर-कन्या के तारा निकालने की इसमें आवश्यकता नहीं है।

४. **योनि**—राशि चक्र से दोनों की योनि ज्ञात करें। दोनों की एक योनि हो या योनि में मैत्री हो व सम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

५. **ग्रह मैत्री**—राशि चक्र से राशि स्वामी जानें। राशि स्वामी एक हों, दोनों में मैत्री हो या एक-दूसरे के लिये सम हों तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

६. **गण**—राशि चक्र (अवकहड़ा) से गण ज्ञात करें। दोनों का एक गण हो या एक का देव दूसरे का मनुष्य हो तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

७. **भकुट**—वर की राशि से कन्या की राशि २, १२, ६, ८, ५, ९ हो तो अशुभ अन्यथा शुभ जानें।

८. **नाड़ी**—अवकहड़ा चक्र से दोनों की नाड़ी ज्ञात करें, यदि दोनों की एक ही नाड़ी हो तो अशुभ यदि भिन्न-२ नाड़ी हो तो शुभ समझना चाहिये।

इन आठों कूटों के शुभ होने पर ३६ गुण मिलते हैं। शास्त्राज्ञा है कि मेलापक में गुण १८ से अधिक हों तो विवाह शुभ रहते हैं। यदि ग्रह मेलापक ठीक हो तो इससे कम गुण भी ग्राह्य हैं।

ग्रह मेलापक

लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम, द्वादश में पापी ग्रह (मंगल, शनि, राहु, सूर्य आदि) हों तो जातक का दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं रहता ऐसी ज्योतिष शास्त्र की मान्यता है। इनमें मंगल विशेषतया अधिक हानिकारक होता है इसलिए इस प्रकार की ग्रह स्थिति वालों को मंगली कहा जाता है। दक्षिण भारत में द्वितीय भाव से भी इन ग्रहों की स्थिति वाले जातक को मंगली कहा जाता है। चूंकि सप्तम स्थान से द्वितीय भाव आठवें पड़ता है और आठवां भाव मृत्यु का है अतः सहचर या सहचरी की आयु का विचार इसी भाव से किया जाता है। यहां हम इस दोष का परिहार दे रहे हैं ताकि ग्रह मेलापक में सुभीता रहे।

यदि वर और कन्या दोनों की कुण्डली में उक्त स्थानों में मंगल आदि पाप ग्रह पड़े हों तो विवाह शुभ, लड़के व लड़की की कुण्डली में उक्त स्थानों में पाप ग्रह की संख्या देखें यदि लड़के की कुण्डली में लड़की की कुण्डली से पाप ग्रह संख्या बराबर हो या अधिक हो तो विवाह शुभ अन्यथा अशुभ प्रद जानें। सप्तमेश स्वगृशिस्थ हो, उच्च का हो अथवा अधिमित्र के गृह में हो तो मंगली दोष का परिहार हो जाता है।

वर और कन्या के नक्षत्र एवं ग्रह मेलापक देख कर नक्षत्र मेलापक चक्र से वर और कन्या के नक्षत्र के सामने के कोष्ठक में गुणयोग देखें। यदि योग २७ से अधिक हो तो मिलान अत्युत्तम समझें, यदि २७ से कम २० तक गुण मिलें तो उत्तम और १८ तक गुण मिलें तो मध्यम जानें। यदि १८ से कम गुण मिलें तो निंद्य है। यदि ग्रह मेलापक उत्तम हो, तो १२ से १८ तक भी गुण मिलें तो विवाह करना शास्त्र सम्मत है।

मंगलीदोष

सभी प्रकार के ज्ञान एवं भारतीय शास्त्रों की उत्पत्ति भारतीय दर्शन से मानी गई है। भारतीय दर्शन जीवन और जगत् के रहस्यों का अनुसंधान और सन्तोष जनक सिद्धान्तों के आधार पर उनकी व्याख्या करता आया है। ज्ञान, दर्शन का स्वरूप और उस की सीमा है। मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासु प्राणी है और अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण किंवा अदम्य जिज्ञासा की प्रेरणा से, वह सदैव दार्शनिक समस्याओं का समाधान

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

खोजने में लगा रहता है। भारतीय दर्शन आत्मा को अजर-अमर मानता है और कर्मानुसार (कर्मों के अनादि प्रवाह-प्रारब्ध के कारण) देह परिवर्तन को इसका स्वाभाविक गुण मानता है। प्राणी मात्र की देह में रहने वाला यह अविनाशी आत्मतत्व, स्वतंत्र, रूपहीन, नित्य एवं चैतन्य है। यह कर्म बन्धन के ही कारण विनाशशील और परतन्त्र दीख पड़ता है। संसार के इस निगूढ़ तत्व को समझने के लिए ज्योतिष एक दिव्य चक्षु है। इसीलिए इसे वेदांग में गिना जाता है। वेद के अंगों में यह छठा अंग है। ज्योतिष के तेजस् को देख कर ही इसे चाक्षुष प्रत्यक्ष कहा जाता है। ज्योतिष के तीन स्कन्ध हैं जिन में फलित भी एक है। फलित स्कन्ध से ही सामान्य व्यक्ति अधिक प्रभावित होता है। फलित के कारण ही वह ज्योतिषी को सम्मान की दृष्टि से देखता है। वह नहीं जानता कि उस की जन्म पत्रिका में कहां गणितीय त्रुटि है क्योंकि यह विषय उस की पकड़ से बाहर है। वह तो फलित के प्रति आसक्ति रखता है और उसी से प्रभावित होता है। लोक श्रद्धा ही इस विषय को जीवित रखे हुए है। आज की सबसे बड़ी बिडम्बना यह है कि ज्योतिषी को जीविका के लिए संघर्ष भी करना है और लोग श्रद्धा को अनुकण्ठ बनाये रखने के लिए अनुशीलन भी।

ज्योतिषशास्त्र और ज्योतिषी स्वतन्त्र भारत में इतनी दयनीय अवस्था में आ पहुंचे कि सभी कुछ उन्हें स्वयं करना है और समाज में इस विद्या के प्रति आस्था को सजीव बनाये रखना है। सामन्त तो रहे नहीं, श्रेष्ठी भी नहीं रहे, धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र में यह विज्ञान प्रचार और प्रोपेगंडा में ही सिमट कर रह गया। सभी लोग जानते हैं कि ज्योतिषी होना तो दूर रहा नक्षत्रों की श्रेणी में भी जो नहीं आते वे अपने आप को विश्व विख्यात भविष्यवक्ता कहते नहीं अघाते। ऐसे लोगों द्वारा भविष्यवाणी करने से जो स्थिति बनती है वह ज्योतिष पर आक्षेप लगाती है। ऐसे व्यक्ति अपनी अज्ञानता को छिपाने के लिए अनेक नाटक रचते हैं। उनकी नाट्य कला से उनको भले ही लाभ हो लेकिन इससे ज्योतिष शास्त्र की अपकीर्ति होती है, वह अविश्वसनीय बनता है और लोगों को उसे अन्धविश्वास (सुपरस्टीशन) कहने का अवसर मिलता है।

ऐसे ही मंगली दोष के विषय में अनेक भ्रान्तियां समाज में प्रचलित हैं। प्राचीन काल से ही भारत में कुण्डली मिलान की प्रथा है। विवाह से पूर्व वर तथा कन्या से ग्रहों का मेलापक पर निर्णय लिया जाता है कि आगामी जीवन दोनों का सुखमय रहेगा या दुखमय। विवाह मेलापक के लिए यूं तो अनेकानेक बातों को ध्यान में रखा जाता है लेकिन जितना महत्व मंगली दोष को दिया जाता है इतना अन्य किसी दोष को नहीं।

मंगली दोष का निर्णय करने के लिए वर-कन्या के प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भावों को लिया जाता है, दक्षिण भारत में द्वितीय भाव को और मिला लेते हैं। इन भावों में कोई भी क्रूर किंवा पापी ग्रह (मंगल, शनि, सूर्य, राहू, केतु) स्थित हो तो मंगली दोष मान लिया जाता है। चूंकि मंगल वैवाहिक सुख को बिगाड़ने में अपना विशिष्ट स्थान रखता है इसलिए इसी ग्रह के नाम पर इस दोष को मंगली दोष कहा जाता है। प्रायः सर्वत्र ही यह मत प्रचलित है। यहां हम मंगली दोष कब-कितना हो सकता है इस पर विचार करते हैं। ग्रहों की ९ अवस्थाएं मानी जाती हैं, उच्च राशि, मूल, त्रिकोण, स्वराशि, अधिमित्र राशि, मित्र राशि, सम राशि, शत्रु राशि, अधिशत्रु राशि और नीच राशि। अब शंका उठती है कि इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह क्या समान फल कर सकता है। इसका उत्तर है नहीं। दूसरी बात क्या सभी ज्योतिर्विद इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह को समझकर मंगली दोष का निर्णय करते हैं इसका उत्तर भी नहीं है, क्योंकि उपरोक्त तथ्य को समझकर मंगली दोष का निर्णय किया जाता तो मंगली दोष को इतना भयंकर नहीं समझा जाता जितना कि आज माना जा रहा है। मंगली दोष का भयावह रूप दर्शाने के लिए किसने कब यह श्लोक रच डाला ज्ञात नहीं है-

लग्नेव्यये च पाताले, जामित्रे चाऽष्टमे कुजे।
कन्याभर्तुर्विनाशाय, भर्तुः कन्या विनाशकः॥

अर्थात् कुण्डली में १, ४, ७, ८, १२वें स्थान में मंगल हो तो क्या कन्या भर्ता का और भर्ता कन्या का नाश करते हैं। अगर हम इसकी शब्दावली पर ध्यान दें तो यह श्लोक किसी ऋषि प्रणीत प्रतीत नहीं होता। विवाह से पूर्व कन्या संज्ञा ठीक है लेकिन भर्ता शब्द यहां अनुचित है क्योंकि विवाह से पूर्व लड़के की संज्ञा वर है भर्ता तो विवाह पश्चात् बनेगी। दूसरे जब भर्ता हो गया तो भार्या आना चाहिए कन्या कहां से आया। अतः यह स्वतः प्रमाणित है कि यह श्लोक क्षेपक है आप्त वाक्य नहीं। कितने खेद का विषय है कि ऐसे अनार्ष श्लोकों को मान्यता देकर ज्योतिर्विद जहां अच्छे से अच्छे सम्बन्धों को अनादृत कर देते हैं वहीं ज्योतिष शास्त्र की प्रतिष्ठा को भी आघात पहुँचाते हैं। ज्योतिष जगत् में फैली इन विसंगतियों के कारण जन-साधारण की आस्था इस शास्त्र के प्रति लुप्त होती है और कभी-कभी माता-पिता अपने बच्चों की नकली कुण्डलियां बनवाकर विवाह सम्बन्ध कर देते हैं।

प्रथम भाव तन है, चतुर्थ सुख-स्थान, सप्तम भाव कामोपयोग को जतलाने वाला है। अष्टम भाव जीवन साथी कुटुम्ब को बतलाता है और द्वादश भाव शय्या सुख का निर्देशक स्थान है। यहां स्थित होकर मंगल उस भाव को दूषित करता ही है साथ ही दृष्टि दोष से दूसरे स्थानों को भी बिगाड़ता है, जैसे लग्न में स्थित मंगल की चतुर्थ, सप्तम और अष्टम स्थान पर ही दृष्टि रखता है, द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना इस सुख से न्यूनता लाता है। इसलिए मंगलीक दोष का विचार बड़ी सूक्ष्मता से करना चाहिए। यदि हम सुदर्शन पद्धति का आश्रय लें तो अधिक सत्यता के निकट पहुंच सकते हैं। जैसे लग्न से मंगली दोष मानते हैं वैसे ही चन्द्र से भी देखें तथा शुक्र से भी। शुक्र चूंकि भोग कारक ग्रह है और इससे बना मंगली दोष अधिक बाधाकारक देखा गया है। कुछ लोगों की मान्यता है कि वर और कन्या दोनों मंगली हों तो वैवाहिक सुख नहीं बिगड़ता लेकिन मैंने कई ऐसे जोड़े देखे हैं जिनका दाम्पत्य सुख नगण्य सा ही है। कुछ लोग मानते हैं कि मंगल-शनि आदि ग्रह यदि कारक हों तो बुरा फल नहीं करते ऐसा भी अकाट्य सत्य नहीं है। वृष लग्न की कुण्डली में शनि सर्वाधिक कारक ग्रह है लेकिन दूसरे, आठवें और दसवें स्थान का शनि विवाह विच्छेद कराने में सक्षम होता है। अब तक हमने मंगली योग पर विचार किया अब उसके परिहार पर विचार करते हैं। अर्थात् मंगली दोष किन स्थितियों में अपना फल नहीं दे पाता।

१. सप्तमेश स्वराशिस्थ हो, उच्च का हो, मित्र राशिस्थ होकर स्वस्थान को देखता हो। २. सप्तमेश पर वृहस्पति या शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो तो मंगली दोष समाप्त हो जाता है। ३. सप्तम भाव को बली शुक्र या वृहस्पति देखते हों तो मंगली दोष का प्रभाव नगण्य सा ही रहता है। ४. नीचस्थ या त्रिकस्थ होकर भी सप्तमेश सप्तम भाव को देखें तो मंगली दोष क्षीण हो जाता है।

बेड़ा जातक में एक श्लोक आता है:-

त्यक्तार्के विधवारेऽत्र पापेक्ष्यार्को चिरा प्रिया।
सौम्यैर्धन्या प्रियाऽस्तस्थैः क्रूरैः रण्डा च मिश्रितैः॥

अर्थात् स्त्री की कुण्डली में लग्न से सप्तम सूर्य हो तो पति द्वारा वह स्त्री त्याग दी जाती है या दाम्पत्य सुख से वंचित कर दी जाती है। मंगल हो तो विधवा होती है। शनि हो तो देर से विवाह हो तथा लम्बे समय बाद पति की प्रिया बने। शुभ ग्रह हो तो उत्तम भाग्य वाली, पापग्रह हो तो विधवा, पाप और शुभ दोनों हो तो मिश्रित फल मिलता है। कुण्डली के मात्र सप्तम स्थान में पापग्रह देखकर विधवा कह देना युक्ति-युक्त नहीं है। कुण्डली का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन करने के पश्चात् ही कोई निर्णय लेना चाहिए क्योंकि इस निर्णय पर ही दो प्राणियों के वैवाहिक सुख बनाना और बिगाड़ना निर्भर करता है। अनुभव में आया है कि सप्तम और अष्टम स्थान का पापग्रह जितना पीड़ा कारक है इतना अन्य स्थान का नहीं। मैं स्वयं मंगली हूँ मेरी पत्नी मंगली नहीं है इतने पर भी पिछले ४२ वर्षों से हम सानन्द साथ रह रहे हैं। इससे मेरा यह आशय बिलकुल नहीं है कि कुण्डली में मंगली दोष को अनदेखा कर दिया जाये बल्कि इतना ही है कि जहां मंगली दोष देखें वहां उसके परिहार और अन्य शुभ योगों को भी अनदेखा नहीं करना चाहिए। मंगल से अमंगल की कल्पना से समाज में जो भयावह-प्रभाव उत्पन्न हो गया है। उसी भय को समाप्त करने के लिए लघु लेख की रचना की गई है। आशा है जन-साधारण इससे लाभान्वित होंगे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर्ण के गुण

	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

वश्य के गुण

	च.	मा.	ज.	व.	की.
चतुष्पद	२	१	१	०	१
मानव	१	२	१	०	१
जलचर	१	१	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

जन्म कुण्डली मिलान में ३६ गुण हैं। १८ गुण से ऊपर मिलने पर शुभ, २७ गुण से ऊपर अत्यंत शुभ मानते हैं। अन्य बातें भी विचार करते हैं।

तारागुण चक्र (३)

	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

तारा देखने की रीति—कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक व वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर ९ का भाग देने से जो शेष बचे, वह तारा जानिए।

नैसर्गिक ग्रह-मैत्री चक्र

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	चं.मं.बृ.	बुध	शु.श.
चन्द्र	सू.बु.	मं.बृ.शु.श.	०
मंगल	सू.चं.बृ.	शु.श.	बुध
बुध	सू.शु.	मं.बृ.श.	चन्द्र
बृहस्पति	सू.चं.मं.	शनि	बु.शु.
शुक्र	बु.श.	मं.बृ.	सू.चं.
शनि	बु.शु.	बृह.	सू.चं.मं.

योनिगुण चक्र (४)

	अ.	ग.	मे.	स.	श्वा.	मा.	मू.	गौ	म.	व्या.	मृ.	वा.	न.	सि.
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	३	२	२	०
मेष	३	३	४	२	२	३	२	३	३	१	३	३	२	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	३	३	३	१	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	३	२	२	२	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	२	१	२	२	४	३	०	२	२	३	१
महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	२
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
मृग	३	३	३	२	०	३	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	२	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	१	१	१	२	२	२	२	४

भकूटगुण चक्र (७)

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

ग्रह मैत्री के गुण चक्र

	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	॥	॥
मंगल	५	४	५	॥	५	३	॥
बुध	४	१		५	॥	५	४
गुरु	५	४	५	॥	५	॥	३
शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

गण मैत्री के गुण ६

	दे.	म.	रा.
देवता	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

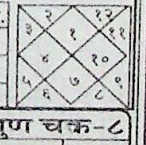

नाड़ीगुण चक्र-८

	आदि	मध्य	अन्त्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

कुंडली में मंगलादि का विचार १, ४, ७, ८ व १२वें स्थान में मंगल होने से मंगली, वर की कुण्डली में हो तो स्त्री की ओर स्त्री की में हो तो पति को अनिष्ट, यदि दोनों की कुण्डली में हो तो दोष नहीं। इसी प्रकार इन स्थानों में शनि, राहु, केतु व सूर्य का भी विचार करते हैं। यह सब पाप ग्रह मंगल के परिहार हैं। चन्द्र कुंडली से भी इन स्थानों में मंगल आदि का विचार किया जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर-वधू गुण मेलापक सारणी

ऊर्ध्वाधरस्थाभ्यपि भानि पुंसां पार्श्व द्वयस्थानि तथा वधू नाम्। संपात कोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वे शुभं तत्समृतितोऽधिकं यत्॥

कन्या ↓	वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धन			मकर			कुम्भ			मीन		
	नक्षत्र चरण	अ. ४	भ. ४	कृ. १	कृ. ३	रो. ४	मृ. २	मृ. २	आ. ४	पुन. ३	पुन. १	पु. ४	श्ले. ४	म. ४	पू.फा ४	उ.फा १	उ.फा ३	ह. ४	चि. २	चि. २	स्वा. ४	वि. ३	वि. १	अनु. ४	ज्ये. ४	मू. ४	पू.षा ४	उ.षा १	उ.षा. ३	श्र. ४	ध. २	श. ४	पू.भा ३	पू.भा १	उ.भा. ४	रे. ४
मेष	अ. ४	२८ ३	३३ ०	२८ ॥	१८ ॥ ४	२१ ॥ -४	२२ ॥ -४	२६	१७ ३	१९ ३	२३ ॥ ३	३१ ॥	२८	२१ +५	२५ +५	१५ ॥ ३.५	११ ३.६	९ २.३.६	१३ ६	२२ ॥	२६ ॥ -२	२२ ॥ ३	१८ ॥ -६	२५ ॥ -६	१४ ३.६	१३ ॥ ३.५	२५ +५	२३ ॥ +५	२५	२६	२०	२०	१५ ३	१६ ३	१४ ॥ ३.४	२४ ॥ +४	२६ ॥ +४
	भ. ४	३४	२८ ३	२९ ०९	१९ ०.४.९	२१ ॥ -४	१४ ॥ ३४	१८ ३	२६	२७	२१ ॥	२३ ॥ ३	२५ ॥ ९	२० १५-	१८ २.५	२६ +५	२१ ॥ ६	२० ६	४ १.३.६	१३ ॥ १.३	२९ ॥	२१ ॥ १	१७ ॥ -१६	१७ ॥ ३.६	१९ ॥ -१६	२० -१.५	१८ ३.५	२६ +५	२७ ॥	२६	१० १३२	१० १.३.२	२० -१	२४ -२	२२ ॥ २४+	१७ ॥ +३.४	२६ ॥ +४
	कृ. १	२७ ॥	२९ १	२८ ३	१८ ३.४	१० १३.४	१६ ॥ ४	२०	२० १	२१	२५ ॥	२६ ॥	२३ ॥ ३	१६ ॥ ३.५	२० १.५	२० १.५	१५ ॥ १.६	१५ ॥ ६	१८ ६	२७ ॥	१५ ॥ ३	१९ ॥ ३	१५ ॥ ३.६	१९ ॥ -६	२५ ॥ -६	२४ ॥ +५	१८ १.२.५	१२ ३.१.५	१३ ॥ १३	११ ॥ २.३	२५	२५	२७	१९ १	१७ ॥ १.४	१९ ॥ १.४	११ ॥ ३.४
वृष	कृ. ३	१८ ॥ -४	२० ९.४	१९ ३.४	२८ ३	२० ०.९.३	२६ ॥	१७ ॥ +४	१७ ॥ १.४	१८ ॥ +४	२२	२३	२० ३	१८ ॥ ३	२२ १	२२ १	२१ ९.५	२१ +५	२३ ॥ +५	२२ ॥ -६	१० ॥ ३.६	१४ ॥ ३.६	२० ॥ ३	२४ ॥	३० ॥	२० ६	१३ ॥ १.२.६	७ ॥ १.३.६	१२ १.३.५	१० ३.५.२	२५ ॥ +५	२१ ॥	३१ ॥	२३ ॥ १	२० १	२२ १	१४ ३
	रो. ४	२३ ॥ -४	२३ ४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२५ ॥ ०४	२३ ॥ +४	२२ ॥ +४	२६	२७	२२ ३१	१० ॥ ३१	२४ ॥	२७	२६ +५	२६ +५	२० १५-	१९ १६	१५ ॥ ३.६	९ ॥ ३१६	१५ ॥ ३१	२९ ॥	२३ ॥ १	१४ १६	१९ ॥ ६	११ ॥ ३६२	१६ ३५२	१७ ३५	२० १५-	२४ ॥ -१	२४ ॥ -१	३० ॥	२७	२७	१९ ३
	मृ. २	२३ ॥ -४	१४ ॥ ३४	१८ ॥ -४	२० ॥	३५	२८ ३	१९ ३४	२४ ०४	२२ ॥ +४	२६	१९ १	२१	१९ ॥	१५ ॥ ३	२४ ॥	२३ ॥ +५	२६ +५	१३ ३५	१२ ३६	२५ -६	१८ ॥ -६	२४ ॥	२१ ॥ ३	२४ ॥	१५ ६	१० ३६	१७ २६	२१ ॥ +२५	२५ +५	१३ ३५	१९ ३	२७	२९ ॥ १	२६	१८ ३	२७
मिथुन	मृ. २	२७	१८ ०३	२२	१९ ॥ +४	२७ +४	२० ३४	२८ ३	३३ ०	३१ ॥	१९ -४	१२ ३४	१४ ४	२३ ॥	१९ ॥ ३	२८ ॥	३१ ॥	३४	२१ ३	१४ ३५	२७ +५	२० ॥ +५	१४ ६	११ ३६	१४ ६	२३	१८ ३	२५ +२	२० -२६	२३ ॥ -६	११ ॥ ३६	१३ ३५	२१ +५	२३ ॥ +५	२५ ॥	१७ ॥ ३	२६ ॥
	आ. ४	१९ ३	२७	२१ १	१८ ॥ १४+	२४ ॥ +४	२६ +४	३४	२८ ३	२५ ०३	१२ ॥ ०३४	२० -४	१३ १४	२३ ॥ ९	२९ ॥	२१ ॥ ३	२४ ॥ ३	२४ ॥ ३	२७ १	२० -१५	२७ +५	२० ॥ १५+	१३ ॥ १६	१७ २६	५ ॥ १३६२	१६ १३	२८	२८	२३ -६	२३ -६	१७ ॥ -१६	१९ +१५	१२ १३५	१७ ३५	१९ ३	२६ ॥	२६ ॥
	पुन. ३	२० ३	२७	२३	२० ॥ +४	२२ ॥ +४	२३ ॥ +४	३१ ॥	२४ ३	२८ ३	१५ ॥ ३४-	२२ ॥ ०४	१७ -४	२२ ॥ +२	२६ ॥ +२	२१ ॥ ३	२४ ॥ ३	२५ ॥ ३	२७ ॥	२० ॥ +५	२८ +५	२२ +५	१५ ॥ ६	२१ ॥ ६	७ ॥ ३६	१४ ३	२७	२७	२२ -६	२३ -६	१७ ॥ -६	१८ ॥ +५	१४ ३५	१६ ३५	१८ ३	२८	२७ ॥
कर्क	पुन. १	२२ ॥ ३	२९ ॥	२५ ॥	२२	२४	२५	१८ ४	१० ॥ ३४	१४ ॥ ३४	२८ ३	३५ ०	२९ ॥	१६ ॥ २४	२० ॥ २४	१५ ॥ ३४	१८ ३	१९ ३	२१	२० ॥	२८	२२	२० ॥ +५	२६ +५	११ ॥ ३५	८ ३६	२१ -६	२१ -६	२६	२७	२१	१२ ॥ ६	८ ३६	१० ३६	१६ ३५	२६ +५	२५ ॥ +५
	पु. ४	३० ॥	२१ ॥ ३	२६ ॥	२३	२५	१८ ३	११ ३४	१८ ४	२१ ॥ ४	३५	२८ ३	३० ०१	१९ ॥ +४	१५ ॥ ३४	२३ ॥ +४	२६	२७	१२ ३	११ ॥ ३	२६ ॥	२१	१९ -५	१८ ३५	२१ -५	१७	११ २३६	२१ ६	२६	२५ -२	१३ ३	४ ॥ ३६	१४ ॥ ६	१८ ६	२४ +५	१८ ३५	२७ +५
	अश्ले. ४	२६	२४ ॥ १	२२ ॥ ३	१९ ३	११ ३१	१९	१२ ४	१२ १४	१५ ४	२८ ॥	२९	२८ ३	१५ ३४२	१५ ॥ १४२	१८ ॥ १४	२१ १	२१	२६	२५ ॥	१२ ॥ ३	९७ ॥ ३	१५ ॥ ३५	२० -५	२६ -५	२२ ॥ ६	१६ १६	८ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७ ॥ ६	१९ ॥ ६	११ ॥ १६	१७ ॥ १५-	१९ ॥ १५	१३ ३५
सिंह	म. ४	२० +५	२० १५	१६ ॥ ३५	१७ ॥ ३	९ ॥ ३१	१७ ॥	२१ ॥	२२ ॥ १	२० ॥ -२	१६ ॥ २४+	१९ ॥ +४	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२७ ॥ १	१६ ॥ १४	१६ ॥ +४	२१ ४	२४ ॥	११ ॥ ३	१६ ॥ ३	२२ ॥ ३	२५ ॥	३३	२५ +५	१९ १५	८ ॥ १३५	३ ॥ ३१६	४ ॥ ३६	१८ ॥ ६	२४ ॥	२५ ॥	१८ ॥ १	१८ ॥ १६-	१९ ॥ १६-	१३ ३६
	पू.फा.४	२६ +५	१८ ३५	२० १५-	२१ ९	२३ ॥	१५ ॥ ३	१९ ॥ ३	२८ ॥	२६ ॥ -२	२२ ॥ २४+	१७ ॥ +३४	१६ ॥ १२४	३० -१	२८ ३	३५ ०	२४ ०४	२२ +४	७ ॥ १३४	१० ॥ १३	२५ ॥	१८ ॥ १	२४ ॥ -१	२३ ॥ ३	२५ ॥ -१	१९ १५+	१७ ३५	२४ +५	१७ ॥ ६	१८ ॥ ६	४ ॥ १३६	१० १३	१९ ॥ १	२४ ॥	२४ ॥ -६	१७ ॥ ३६	२५ ॥ -६
	उ.फा.१	१६ ॥ ३५	२६ +५	२० १५-	२१ ९	२६	२४ ॥	२८ ॥	२० ॥ ३	२१ ॥ ३	१७ ॥ ३४	२५ ॥ +४	१९ ॥ १४-	२७ ॥ -१	३५	२८ ३	१७ ३४	१६ ०३४	१३ ॥ १४२	१६ ॥ १२	२५ ॥	१६ ॥ १२	२२ ॥ -१२	३१ ॥	१७ ॥ १३	९ ॥ १३५	२५ +५	२५ +५	२० ६	२० ६	११ ॥ १६	१७ ॥ १	११ ॥ १३	१५ ॥ ३	१६ ॥ ३६	२५ ॥ -६
कन्या	उ.फा.३	१३ ३६	२२ ॥ ६	१६ ॥ १६	२१ १५+	२६ +५	२४ ॥ +५	३१ ॥	२३ ॥ ३	२४ ॥ ३	२० ३	२८	२२ १	१७ ॥ १४	२५ +४	१८ ३४	२८ ३	२७ ०३	२४ ॥ १२+	१६ ॥ १२४-	२५ ॥ +४	१६ ॥ १२४	१८ १२	२७	१३ १३	१४ १३	२९ ॥	२९ ॥	२४ ॥ +५	२४ ॥ +५	१६ १५+	१६ -६	१० ॥ ३१६	१४ ॥ ३६	१७ ॥ ३	२८ ॥	२७ ॥
	ह.४	१० २३६	२० ६	१७ ॥ ६	२२ +५	२५ +५	२६ +५	३३	२२ ॥ ३	२४ ॥ ३	२० ३	२८	२३	१८ ॥ +४	२२ ॥ +४	१६ ३४	२६ ३	२८ ०	२० ०४	२६ ॥ +४	१८ ॥ +४	२०	२६	१३ ३	१५ ३	२७	२८ ॥	२३ ॥ +५	२४ ॥ +५	१८ ॥ +५	१९ ६	८ ॥ ३६२	१३ ३६	१६ ३	२६ ॥	२७ ॥
	चि. २	१३ ६	५ १३६	१९ ६	२३ ॥ +५	२० १५	१२ ३५	१९ ३	२६ ९	२५ ॥	२१	१२ ३	२७	२२ ॥ +४	८ ॥ १३४	१४ ॥ १२४	२४ ॥ १२	२७	२८ ३	२० ३४	१९ ०४	२६ ॥ +४	२८	११ ३	२५	२७	१४ १३	२२ १	१७ १५	१८ ॥ +५	१५ ॥ ३५	१६ ३६	२४ -६	१६ १६	१९ ॥ १	१० ॥ १३२	१९ ॥

वर्णवश्य आदि के संयोग से निर्मित यह गुण-दोष सारणी जिसमें ऊपर की पंक्ति में वर के नक्षत्र, खड़ी लाइन में कन्या के नक्षत्र लिखे हैं और सम्पात कोष्ठकों के ऊपरी भाग में गुण संख्या तता नीचे महादोषों के चिन्ह दिए हैं। चिन्हों का अभिप्राय है। एक नाड़ी दोष की जगह (३), गण महा दोष (मनुष्य राक्षस) के स्थान में (१), भकूट महादोष (षडाष्टक) में (६), नव पंचम में (५) द्विर्द्वादश में (४) वैर योनी में (२) लिखें हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Naiafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भाग-२

वर-वधू गुण मेलापक सारणी

ऊर्ध्वाधिरस्थाम्यपि भानि पुंसां पार्श्व द्वयस्थानि तथा वधू नाम्। संपात कोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वं शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत्॥

वर ↓	वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धन			मकर			कुम्भ			मीन		
	नक्षत्र	अ.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आ.	पुन.	पुन.	पु.	श्ले.	म.	पू.फा	उ.फा	उ.फा	ह.	चि.	चि.	स्वा.	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा	उ.षा	उ.षा.	श्र.	ध.	ध.	श.	पू.भा	पूभा	उ.भा.	रे.
	चरण	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४	४	१	३	१	४	२	२	४	३	१	४	४	४	४	१	३	४	२	२	४	३	१	४	४
तुला	चि.२	२२॥	१४॥ १३	२८॥	२३॥ +६	२० ६६	१२ ३६	१३ ३५	२१ १५	१९॥ +५	२०॥	११॥	२६॥	२५॥	११॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२८	२० +४	२१ ३४	२८ ३	२७ ०	३४॥	२३॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१४ १३	२२ १	२५ ०१	२६॥	२३॥ ३	१८ ३५	२६ +५	१८॥ १५	१६	१३६२	६
	स्वा.४	२७॥ +२	२२॥	१७॥ ३	१२॥ ३६	१५॥ ३६	२६ -६	२७ +५	२६ +५	२८ +५	२९	२७॥	१४॥ ३	१३॥ ३	२५॥	२५॥	२५॥ +४	२७॥ +४	२१ +४	२८	२८	२० ०३	९ ०३४	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	१९ ३	२२ ३	२३ ३	२६॥	२१ +५	२० ५२+	२५ +५	१९ ६	१९॥ ६	१२॥ ३६
	वि.३	२२॥	२२॥ १	२०॥ ३	१५॥ ३६	१८॥ १३६	१८॥ -६	१९॥ +५	२० १५	२१ +५	२२	२१	१८॥ ३	१७॥ ३	१९॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ +४	२७॥ +४	३४॥	१९ ३	२८ ३	१७ ३४	१६ ०४	२०॥ ४	२७	२२ १	१४ १३	१७ १३	१७ ३	३०	२४॥ +५	२६ +५	२० १५	१४ १६	१३ १६२	४॥ ३६
वृश्चिक	वि.१	१६॥ +६	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१४॥ १३	२२॥	१२ ६	१२॥ १६	१३॥ ६	१९ -५	१८ -५	१५॥ -५	२१॥ ३	२३॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२७	२२॥ ४	७ ३४	१६ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ +४	१६॥ ४१	८॥ १३४	१२ १३	१२ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१९ १५	१८ १५	९॥ ३२५
	अनु.४	२४॥ -६	१५॥ ३६	१९॥ -६	२४॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ -६	२०॥ ६	२६ -५	१८ ३५	२१ -५	२४॥	२०॥	२९॥	२५	२६	११ ३	६॥ ३४	२१॥ ४	१६ ४	२८	२८ ०	३१ ३	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ +४	२५ ३	२६ ३	१२	११	२१	२४॥	२४ +५	१८ ३५	२७ +५
	ज्ये.४	१२ ३६	१८॥ १६	२४॥ -६	२९॥	२२॥ १	२२॥	१२ ६	२ ३१६२	५ ६३	१०॥ ५३	२० +५	२६ -५	३१	२३॥ १	१६॥ १३	१२ १३	१२ ३	२४ ०	१९॥ ४	१४॥	१९॥ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१८ ३	१० १३	९॥ १३५	२१ १५	२१ +५
धनु	मू.४	१२ ३५	२० १५	२४॥ +५	१९॥ ६	१३ १६	१३ ६	२१	१५ १३	१२ ३	८ ३६	१७ ६	२३॥ ६	२५ +५	१९ १५	१५॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२७	२६	२१	२६	२२॥ +४	१५॥ +२४	१५ ३४२	२८ ३	२८ ०१	२६॥ १	१५ १४	१५ ४	२० ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	२३	२८॥	३०	२३ ३	३१
	पू.षा.४	२६ +५	१८ ३५	१८ -१२५	१२॥ १६२	१८ ६	१० ३६	१८ ३	२७	२७	२३ ६	१३ २३६	१७ १६	१९ -१५	१७ ३५	२५ +५	२८॥	२७	१३ १३	१३ १३	२७	२१ १	१७॥ १४-	१५॥ ३४	१७॥ १४-	२८ ०४	२८ ३	३४ ०	२२॥ ४	२३ ४	६ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	३०	२३ ३	३१
	उ.षा.१	२४॥ +५	२६ +५	१२ १३५	६॥ १३६	१०॥ २३६	१७ २६	२५ +२	२७	२८	२३ ६	२३ ६	९ १६३	८॥ १५३	२४ +५	२५ +५	२८॥	२८॥	२१ १	२१ १	१३ ३	१३ १३	९॥ १३४	२३॥ +४	१७॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६॥ ३४	१४॥ ३४०	१५ १४	२३॥ १	२३॥ १	२९॥	३१	३१	२३ ३
मकर	उ.षा.२	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	२० २६+	२२ -६	२२ -६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४॥ +५	२४॥ ११	१७ १५	२४ -१	२२ ३	१६ १३	२७ ३१	२१ १	१६ १४	२३॥ ४	१७॥ ३४	२८ ३	२६ ३०	२६॥ +१	१७ १४+	१७ १४+	२३ +४	३०	३०॥	२२॥ ३
	श्र.४	२७	२६	१३॥ ३२	११ ३५२	१६ ३५	२५ +५	२२॥ -६	२१ -६	२२ -६	२८	२६ +२	१५ ३	६॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३॥ +५	२४॥ +५	१९॥ ५	२६॥	२२ ३	१७ ३	१४ ३	२७	२२	१७ ४	२३ ४	१४॥ ३४	२५ ३	२८ ३	२८ ०४	१८॥ +४	१८ +४	२१ +४	२८॥	२९॥	२२॥ ३
	ध.२	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	९॥ ३६	१६॥ ३६	१५ -६	२१	१३ ३	२७	१९॥ ६	५॥ १३६	१२॥ १६	१५॥ १५	१७॥ +५	१५॥ ३५	२२॥ ३	२४॥	२१	२६॥ ३	१२ ३	२६	२१ ४	७ ३४१	१६ ४९	२६॥ १	२७	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ४०	१९ १४	२६॥ १	१५॥ १३	२२॥ +२
कुम्भ	ध.२	२०	११ १३२	२६	३०॥	२७ १	१९ ३	१२ ३५	१९ १५	१७॥ +५	१२॥ ६	४॥ ३६	१८॥ ६	२६॥	११॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ +६	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	२६॥	२१	१९ ३	२२॥ १४	२४॥ १३	२४॥ १	१८ १४	१८॥ +४	२४॥ +४	३३ ३	२८ ०	१९ १	८॥ १४	१७ १३४	१६ ४२
	श.४	१५ ३	३१ १	२८	३२॥	२५॥ १	२७	२० +५	१२ १३५	१३ ३५	६॥ ६	१४॥ ६	२०॥ ६	२६॥	२० १	१२॥ १३	११॥ १३६	८॥ २३६	२५ ६	२६ +५	१९ +५	२६ +५	२१	१९ ३	२२॥ ३	२४॥ १	२४॥ १	१८ १४	१८॥ +४	२४॥ +४	३३ ३	२८ ०	१९ ०	८॥ ०	१७ १४	१६ ४
	पू.भा.३	१८ ३	२५ +२	२० -१	२४॥ -१	३१॥	३१॥	२४ +५	१७ ३५	१८ ३५	१२ ३६	२० ६	१२॥ १६	१९॥ १	२५॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ १५	२६ +५	२० +१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५॥ १३	२९॥	३०॥	२४ +४	२३॥ +४	२० -१४	२८॥ -१	१९ १३	२८ ३	१७॥ ३४	२२॥ ०४	२० ४२
मीन	पू.भा.१	१४॥ ३४	२१॥ +२४	१६॥ -१४	१९ १	२६	२६	२५॥	१८ ३	१८ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१७॥ -१६	२३॥ +६	१४॥ +३६	१६॥ ३	१६॥ ३	१८॥ +१	१९॥ १६	१९ ६	१९ १६	१९ १५-	२५ +५	९॥ १३५	१५ २३	२९॥	३०	२९॥	२८॥	२५॥ १	१७ १४	७॥ १३४	१६॥ ३४	२८॥ ३	३३ ०	३० +२
	उ.भा.४	२४॥ +४	१६॥ ३४	१८॥ -१४	२१ १	२६	१८ ३	१७॥ ३	२५॥	२८	२७ ५	१९ ३५	२१ १५	१८॥ -१६	१६॥ ३६	२५॥ +६	२७॥	२६॥	९॥ १३२	२॥ १३६२	१९॥ ६	१२ १६२	१८ १५२	१९ ३५	२१ -१५	२४ ०१	२२ ३	३०	२९॥	२९॥	१४॥ १३	६ १३४	१६ १४	२१॥ ४	३३ ३	२८ ०	३५ ०
	रे.४	२५ +४	२४॥ +४	११॥ ३४	१४ ३	१७ ३	२६	२५॥	२४॥	२६॥	२५॥ ५	२७ ५	१४ ३५	१३ ३६	२३॥ +६	२३॥ +६	२५॥	२६॥	१९॥	१२॥ ६	११॥ ३६	४॥ ३६	१० ३५	२७ +५	२२ +५	२६॥	२१	२१ ३	२०॥ ३	२१॥ ३	२२॥ -२	१४ ४२	१६ ४	१८ ४२	२९॥ +२		२८ ३

और जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां (-) चिन्ह है, जहाँ (स्वामी मैत्री आदि के) दोष का पूरा निर्वाह है वहां (+), ऐसा चिन्ह बता दिया है और जिस जगह वर के नक्षत्र से पूर्व वधू का नक्षत्र है (इस का भी महादोष है) वहां ० शून्य का चिन्ह हैं और जहां कोई भी महादोष नहीं मिलता वहां केवल गुण ही लिखें है। जैसे कृतिका के प्रथम चरण वर का नक्षत्र और अश्विनी वधू नक्षत्र के सामने सम्पात कोष्ठक में २८॥ गुण ही लिखे हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ताराबल-बोधिनी तालिका

जन्म नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
जन्मर्क्ष कर्मर्क्ष आधान	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले
	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा
विपत्कर	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धन.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी
	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.
	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.फा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.
प्रत्यरि	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघ	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी
	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त
	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण
वैधन (वध)	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा
	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अस्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति
	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.
संपत्कर	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.
	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा
	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल
क्षेम्य	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.
	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.
	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.
साधक	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.
	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.
मैत्र	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.
	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.
	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.
अतिमैत्र	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य.
	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.
	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दिन का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

यात्रा मुहूर्त

यात्रा मुहूर्त में चन्द्रमा, योगिनी, कालराहु तथा दिशाशूल का विचार किया जाता है। चन्द्रमा सामने या सीधे हाथ की दिशा में शुभ होता है और राहु, योगिनी तथा दिशाशूल पीठ पीछे या बांये हाथ की तरफ लेना चाहिये।

दिशाशूल ले जावै बांये राहु योगिनी पूठ।
सन्मुख लेवै चन्द्रमा लावै लक्ष्मी लूट॥

चन्द्रमा मेष, सिंह व धनु का पूर्व में, वृष, कन्या, मकर का दक्षिण में, मिथुन, तुला, कुम्भ का पश्चिम में तथा कर्क, वृश्चिक, मीन का उत्तर दिशा में वास करता है। यात्रा में चन्द्रमा सन्मुख हो तो धन लाभ, सीधे हाथ की तरफ हो तो सुख सम्पदा प्राप्त होती है। बांये हाथ की ओर हो तो धन हानि तथा पीठ पीछे हो तो मृत्यु भय होता है। जैसे यदि आपने पूर्व दिशा की ओर जाना है तो उस दिन चन्द्रमा पूर्व में या दक्षिण में होना चाहिये। अर्थात् मेष, सिंह या धनु का अथवा वृष, कन्या या मकर राशि का होना चाहिए। **सम्मुखे अर्थ लाभाय दक्षिणे सुख सम्पदा। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः॥**

दिशाशूल— सोमवार और शनिवार को दिशाशूल पूर्व दिशा में होता है। गुरुवार को दक्षिण में, रविवार व शुक्रवार को पश्चिम दिशा में तथा बुध और मंगल को उत्तर दिशा में होता है। यदि आपको पूर्व दिशा में यात्रा करनी है तो दिशाशूल उत्तर या पश्चिम में होना चाहिये अतएव पूर्व दिशा की यात्रा सोमवार, शुक्रवार तथा गुरुवार को ही की जानी चाहिये।

दिशाशूल चक्रम्

उत्तर
बुध, मंगल
पश्चिम — रवि शुक्रवार
पूर्व — सोम शनिवार
दक्षिण
गुरुवार

दिशा	चन्द्रमा का वास	दिशाशूल	समय शूल
पूर्व दिशा	मेष, सिंह, धनु	सोम, शनि	प्रातःकाल
दक्षिण दिशा	वृष, कन्या, मकर	गुरु	मध्याह्न
पश्चिम दिशा	मिथुन, तुला, कुम्भ	रवि, शुक्र	सन्ध्या काल
उत्तर दिशा	कर्क, वृश्चिक, मीन	बुध, मंगल	अर्धरात्रि

योगिनी वास— प्रतिपदा तथा नवमी तिथियों को योगिनी का वास पूर्व दिशा में होता है। तृतीया व एकादशी को अग्नि कोण (पूर्व दक्षिण मध्य) में, पंचमी व त्रयोदशी को दक्षिण में, चतुर्थी व द्वादशी को दक्षिण पश्चिम के मध्य नैऋत्य कोण में, षष्ठी व चतुर्दशी को पश्चिम दिशा में, सप्तमी व पूर्णिमा को पश्चिम उत्तर मध्य वायव्य कोण में, द्वितीया व दशमी को उत्तर दिशा में तथा अष्टमी व अमावस्या को उत्तर व पूर्व के मध्य ईशान कोण में होता है। योगिनी यात्रा समय पर सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होनी चाहिये। इस प्रकार पूर्व दिशा की यात्रा १।९।३।११ व ५।१३ तिथियों को नहीं करनी चाहिये।

कालराहु वास— शनिवार को पूर्व में, शुक्र को अग्नि कोण में, गुरुवार को दक्षिण में, बुधवार को नैऋत्य कोण में, मंगलवार को पश्चिम में, सोमवार को वायव्य कोण में तथा रविवार को उत्तर दिशा में होता है। यात्रा वाले दिन कालराहु का वास सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होना चाहिये। अतएव पूर्व दिशा की यात्रा शनिवार, शुक्रवार या गुरुवार को नहीं की जा सकती।

योगिनी वास

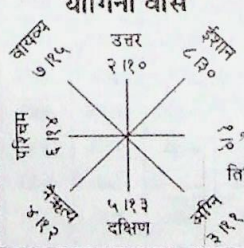

कालराहु चक्रम्

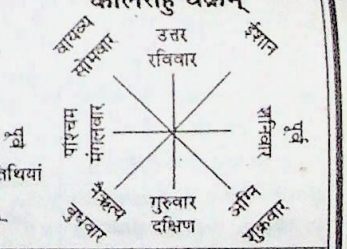

दिशा	योगिनी वास	कालराहु वास
पूर्व दिशा	१।९ तिथ्य	शनिवार
अग्नि कोण	३।११	शुक्रवार
दक्षिण दिशा	५।१३	गुरुवार
नैऋत्य कोण	४।१२	बुधवार
पश्चिम दिशा	६।१४	मंगलवार
वायव्य कोण	७।१५	सोमवार
उत्तर दिशा	२।१०	रविवार
ईशान कोण	८।३०	—

समय शूल— पूर्व दिशा की यात्रा के लिये प्रातः काल में समय शूल होता है, अर्थात् पूर्व दिशा की यात्रा प्रातःकाल नहीं करनी चाहिये। इसी प्रकार दक्षिण के लिए समयशूल मध्याह्न में, पश्चिम के लिये संध्याकाल में और उत्तर के लिये समय शूल मध्य रात्रि के समय होता है। समय शूल के काल में यात्रा नहीं करनी चाहिये। महत्वपूर्ण यात्रा के लिये तो आवश्यक है कि मुहूर्त्त में चन्द्रमा, योगिनी, दिशाशूल, कालराहु, समय शूल सभी बातों का ध्यान रखा जाय। परन्तु यदि आपने आवश्यक कार्यवश यात्रा करनी है और उपर्युक्त मुहूर्त्त तक प्रतीक्षा नहीं कर सकते तो निर्धारित पदार्थ खाकर यात्रा कर सकते हैं। यदि मुहूर्त के दिन के कुछ समय पश्चात् यात्रा करना चाहते हैं तो मुहूर्त्त समय प्रस्थान कराके इच्छित समय पर यात्रा की जा सकती है। आवश्यक कार्यों में भी जहां तक हो सके अनुकूल चन्द्रमा का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिये। राज्य कार्य सेवा कार्य में मुहूर्त्त नहीं देखा जाता, केवल शूल पदार्थ खाकर ही यात्रा कर सकते हैं। पूर्ण चन्द्र सम्मुख हो तो अन्य दोष नष्ट हो जाते हैं।

पन्था राहु चक्र

धर्म के नक्षत्र	अश्वि.	पुष्य	श्लेष.	वि.	ज्ये.	धनि.	शत.
अर्थ के नक्षत्र	भरणी	पुन.	मघा	स्वा.	ज्ये.	श्रवण	पू.भा.
काम के नक्षत्र	कृत्तिका	आर्द्रा	पू.फा.	चित्रा	मूल	अभि.	उ.भा.
मोक्ष के नक्षत्र	रोहिणी	मृग.	उ.फा.	हस्त	पू.षा.	उ.षा.	रेवती

पन्था विचार— यात्रा से समय सूर्य धर्म नक्षत्र में हो और चन्द्रमा अर्थ या मोक्ष के नक्षत्र में हो तो यात्रा शुभ होगी। सूर्य अर्थ में और चन्द्र धर्म या मोक्ष में तो भी शुभ जाने। सूर्य काम में और चन्द्रमा धर्म, अर्थ या मोक्ष में होने पर भी शुभ होगा। सूर्य मोक्ष में चन्द्रमा धर्म शुभ जानें। इनसे अन्यथा सूर्य- चन्द्र की स्थिति होती अशुभ जानो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यात्रा में त्याज्य तिथियां

षष्ठी, द्वादशी, अष्टमी, पड़वा (शुक्ल पक्ष की), पूर्णमासी, अमावस्या, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी ये तिथियां यात्रा में निषिद्ध हैं।

जन्म लग्न तथा राशि से अष्टम यात्रा लग्न में अशुभ है। कुम्भ लग्न और कुम्भ का निवास मीन लग्न यात्रा में वर्जित हैं। केन्द्र १-४-७-१० और त्रिकोण ५-९ स्थान में ग्रह शुभ होते हैं। चन्द्रमा लग्न से ६-८-१२वां अशुभ होता है। दशम में शनि और सप्तम में शुक्र ६-१-९-१२ इन स्थानों में लग्नेश अशुभ होता है। यात्रा में नक्षत्रों की त्याज्य घड़ी-तीनों पूर्वाओं की प्रथम १६ घड़ी, कृत्तिका की प्रथम २१ घड़ी, मघा की ११ घड़ी, भरणी की ७ घड़ी और स्वाति, विशाखा, ज्येष्ठा, अश्लेषा इन नक्षत्रों की १४ घड़ी निषिद्ध हैं। यात्रा में भद्रा सर्वथा वर्जित है। पहला, सातवां, पांचवां और तीसरा तारा यात्रा में वर्जित है।

अगर जरूर जाना हो और दिशाशूल दोष हो तो वारों के मुताबिक पदार्थ खाकर जाने से दोष-निवृत्ति हो जाती है। नीचे चक्र में देखें।

चक्रम्

वार	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
खाने के पदार्थ	घृतयुक्त पान	चंदन	गुड़	तिल	दही	घृत	तिल

भद्रायां मुखपुच्छ घटीज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	४	मासां तिथीनाम्
१	अ.	उ.	ने.	ई.	द.	वा.	पृ.	मासां तिथीनाम्
५	२	७	४	८	३	६	१	एषुयामेष्वादी
५	५	५	५	५	५	५	५	विष्टेर्मुखघ५कृशु
८	१	६	३	७	२	५	४	चषुयामेष्वन्त्यम्
३	३	३	३	३	३	३	३	घटीत्रर्यपुच्छंशुभम्

द्विपुष्कर-त्रिपुष्कर योग ज्ञानार्थ चक्र

(क्रूर) वार	रविवार, मंगलवार, शनिवार
(भद्रा) तिथि	२-७-१२
विषम चरण वाले नक्षत्र	कृति. पुन. उ.फा. विशा. उ.षा. पू.भा.
द्विपाद नक्षत्र योग बनता है।	मृग. चि. धनि. से द्विपुष्कर

त्रिपुष्कर-द्विपुष्कर योग फलम्-वार तिथि विषम चरण वाले नक्षत्रों के योग से त्रिपुष्कर योग होता है। यह योग मृत्यु, विनाश और वृद्धि में त्रिगुण फल देता है।

इसी प्रकार द्विपुष्कर योग के विषय में जानना चाहिए। इन योगों में किसी के यहां मृत्यु हो तो शास्त्रोक्त शान्ति करा लेनी चाहिए।

यात्रा के नक्षत्र

अ. अनु. ज्ये, मू. ह. म. पुन. पु. रे. रो. इन नक्षत्रों में २, ३, ५, ७, ११, १३ तिथियों में शुभ वारों में अच्छा शकुन विचार कर अनुकूल और सामने व दाहिने होने पर यात्रा करें। योगिनी बाएं या पीठ पीछे हो तो यात्रा सफल होती है।

यात्रा में शकुन

हाथी, घोड़ा, ब्राह्मण, शराब, मांस, मछली, जल से भरा एक कलश, दही, नेवला, पुत्रवती स्त्री, शृंगार किए स्त्री, कन्या, ममोला, सरसों—ये शकुन हों तो कार्य सिद्ध होगा।

अशुभ शकुन परिहार

यात्रा में पहला अपशकुन हो तो ११ श्वास लेकर, दूसरा अपशकुन हो तो १६ श्वास लेकर और अगर तीसरा अपशकुन हो तो कभी न जाये। अनेक आचार्यों का मत है कि एक कोस जाने पर शुभ-अशुभ शकुनों का फल नहीं होगा।

यात्रा में अपशकुन

बिडाल, युद्ध, विधवा स्त्री, बन्ध्या स्त्री, चमड़ा, सन्यासी, लकड़ियां, छींक, बुरे शब्द, हड्डियां अगर इनमें से कोई यात्रा के समय सामने आवे तो कार्य नष्ट होता है, नई आपत्ति आती है।

यात्रा आदि में शुक्र-विचार

गांव से गांव जाने में, दुर्भिक्ष व विवाह में सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता। शुक्रान्त—रे., अ., भ. व कृ. के प्रथम चरण तक शुक्र अन्धे रहते हैं। उसमें सम्मुख शुक्र दोष नहीं। शुक्र एवं गुरु, उदय व अस्त के ३ दिन पहले व ३ दिन बाद क्रमशः बाल व वृद्ध रहते हैं। इसमें शुभ कार्य न करें।

गोरखपतरा यात्रा मुहूर्त

पौष	माघ	फाल्गु.	चैत्र	वैशा.	ज्येष्ठ	आषा.	श्राव.	भाद्र.	आश्वि.	कार्ति.	अग्र.	मासों की तिथियों का फल
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	बहुत सुख और अर्थपूर्ण हो, क्लेश न हो
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	भय, जीवहानि, पछतावा हो A सहित घर आवे
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	कामना सिद्धि व अर्थपूर्ण हो B कुशल घर आवे
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश व जीव हानि, कुशल से घर न आवे
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तु-लाभ, व्याधि व संकट कटे, मित्र मिलें
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	घर की चिंता, मित्र संकट, कदाचित घर आवे
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	भाग्योदय, मित्र व साधनों की प्राप्ति, रत्न A
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	बहुत बुरा हो, लेन-देन करना नहीं, जीवनाश हो
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	कामना व आशापूर्ण हो, सौभाग्य का उदय हो
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सौभाग्य प्राप्त हो, बहुत दिन लगें किन्तु स-B
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	क्लेश हो, जीव हानि नहीं, सौभाग्य पावे नहीं
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	सिद्धि प्राप्त, मित्र मिलें, विघ्न मिटे, धन लाभ

प्रहर १	प्रहर २	प्रहर ३	प्रहर ४	पूर्व दिशा	दक्षिण दिशा	पश्चि. दिशा	उत्तर दिशा
अर्थ	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भीति	द्र-लाभ
भय	क्लेश	सुख	सुख	शून्य	नेष्ट	दारिद्र	समता
लाभ	सुख	सुख	हानि	क्लेश	दुख	इष्टला	धन प्रा.
क्लेश	लाभ	क्लेश	विना	लाभ	सुख	मंगल	श्री.प्रा.
संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	द्रव्य	धन	सुख
संकट	क्लेश	भय	अर्थ	भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थ
विना	लाभ	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	द्रव्यला.	सुख
शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	कष्ट	सुख	क्लेश	सुख
लाभ	भाग्य	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	का.सि.	कष्ट
लाभ	संपूर्ण	मरण	कुशल	क्लेश	कष्ट	अर्थ	श्री.प्रा.
मरण	अर्थ	कुशल	मरण	मृत्यु	लाभ	द्र.लाभ	शून्य
मरण	सुख	सुख	सुख	शून्य	सुख	मृत्यु	अतिक.

योगिनी फल

पृष्ठे सुख की दायिनी।
सन्मुख हरती प्रान॥
दाहिनी दुःख की दायिनी।
कौशिक योगिनी जान।

नोट-युद्ध, यात्रा में बायें और सन्मुख योगिनी त्याज्य है।

टिप्पणी-आग्नेया पूर्वद्विज्ञेया दक्षिणादिक च नैऋता वायवी पश्चिमादिक स्यादशानी च तथोत्तरा। अग्नेय को पूर्व में, नेऋत्य को दक्षिण, वायव्य को पश्चिम और ईशान को उत्तर दिशा में जानकर चन्द्र निवास व दिशाशूल जानना चाहिये।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ गृहारंभ-द्वारशाखा-गृह प्रवेश कूपादि मुहूर्त्ताः

भूमि सुप्तशानम्

संक्रांतिमिति दिन पांचवें ५ पक्षम ७ नवमें ९ जोय। दश १० इक्कीस २१ चौबीसवें घट दिन पृथ्वी सोय॥

आवश्यके त्याज्य घटिका

पंचमेबाण ५ घट् याश्चसप्तमेरुद्र ११ संज्ञका। नवमे ऋषव७श्चैवदशमे चषट् ६ नाडिका: एक विंशेयम् १ ८श्चैव चतुर्विंशेदश १० नाडिकाघटिका वर्ज्यनीयाश्च भूमीकर्मणिसर्वदा।

काकिणी विचार

अवर्ग (१) कवर्ग (२) चवर्ग (३) टवर्ग (४) तवर्ग (५) पवर्ग (६) यवर्ग (७) शवर्ग (८) इन आठ प्रकार के वर्गों में से मनुष्य का नाम जिस वर्ग की संख्या में हो उस संख्या को २ से गुणाकर ग्राम के वर्ग की संख्या को मिलाकर ८ का भाग दें तो मनुष्य की काकिणी होगी। इसी तरह ग्राम का नाम जिस वर्ग संख्या में हो उसको द्विगुण कर अपने नाम की वर्ग संख्या को युक्त कर ८ का भाग दें तो ग्राम की काकिणी होगी। इसमें से जिसकी काकिणी अधिक हो वह दूसरे का ऋणी होता है, अर्थात् मनुष्य की काकिणी से ग्राम की काकिणी सदा अधिक होनी चाहिए। ग्राम के निवास को जान कर गृहारम्भ के मुहूर्त का विचार करें।

गृहारम्भ मासे नक्षत्रादि विचार

वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं। भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २।३।५।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में, चं.बु.गु.श. वारों में, रो. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. उत्तरा ३ ध.श.रे. नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।९।११।१२ लग्नों में अग्निवाय और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभ और ३।६।११ स्थानों से पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त्त शुभ होता है।

गृहारम्भ मुहूर्त्त के दिन सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र से अभिजित नक्षत्र सहित दिन का नक्षत्र जितनी संख्या पर आवे नीचे लिखे चक्र के अनुसार उतनी संख्या पर जो अंक हो, उसका फल जान लें।

सूर्यभात वृषवास्तु चक्र

अग्रपादे	पृष्ठपाद		पृष्ठे	द.कु.	पुच्छे	वामकुक्षौ	मुखे
३	४	४	३	४	३	४	२
दाह	नाक	स्थिर	श्री	नाभ	नाश	नेष्ट	पीड़ा

द्वारशाखा स्थापन मुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुष्य हस्त स्वा.श्रव. उत्तरा ३ इन नक्षत्रों में शुभ तिथि शुभ वारों में द्वारशाखा देहली (दलीज) स्थापन करना शुभ है।

सूर्य भात् देहली चक्र

शिरिसि	कोण	शाखाया	देहल्यां	मध्य	स्थानानि
४	८	८	३	४	नक्षत्राणि
लक्ष्मी	उद्वेग	देहसौख्य	मृत्यु	सौख्य	फलम्

जलाशय देवालय प्रतिष्ठा

अश्वि. पुन. पु. पुष्य चित्रा स्वाति अनुराधा अधि. श्रवण धनिष्ठा शत. रेवती एषुभेषु २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ एषु तिथिषु भौमवार बिना उत्तरायणे गुरु. चन्द्र. शुक्र दृश्यः शुभे लग्ने वा स्थिर लग्ने प्रतिष्ठा कार्या। तत्स्वामी नक्षत्रे तिथि मुहूर्त-लग्ने वा स्थिर लग्ने। कुम्भे ब्रह्मा। कन्यायां विष्णु। मिथुने रुद्र:। सिंहे सूर्यः मिथुन कन्या धनु मीनेषु दैव्यः। मेष कर्क तुला मकरेषु योगिनी। वृष सिंह वृश्चिक कुम्भेषु सर्व देवानां प्रतिष्ठा कार्या।

कूप चक्र

नक्षत्र चारो तिथि संयुक्ता वेदाहतं तद् गणकेनकार्यम्। एकावशिष्टं च जलहिनागे द्वाभ्यां च शेषं सलिलं च स्वर्गे। त्रिशून्य शेषे भुवसंस्थितं च भूसंस्थितं सुष्ठु वदन्ति विज्ञाः।

ईशान्ये पुष्टिः	पूर्वे ऐश्वर्य्यम्	आग्नेये पुत्रनाशः
उत्तर सुखम्	मध्येऽर्थनाशः	दक्षिणे स्त्रीनाश
वायव्ये शत्रुभयम्	पश्चिमे धनलाभः	नैऋत्ये स्वामीनाश

गृह की जिस दिशा में कूप लगाया जावे उस का फल ऊपर लिखे चक्र से जान लें। जैसे घर की उत्तर दिशा में सुख इत्यादि।

सूर्यभात्कूप जल विचारः

३	३	३	३	३	३	३	३
स्वादु	खंडित स्वाद	क्षय स्वादु	क्षार	शिक्षा	मिष्ठ	क्षार	
जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल

राहु मुख ज्ञानम्

देवालय प्रारम्भ में मीनादि से तीन-तीन राशिपर्यन्त सूर्य की स्थितिवश में ईशाणादि विपरीत विदिशा के क्रम से राहु का मुख होता है। इसी तरह गेहविधि में सिंहादि तीन-तीन राशि की स्थिति वश ऊपर कहे हुए क्रम से राहु का मुख कहा है मुख की विदिशा से जो पृष्ठ की विदिशा हो उस में खात करना शुभ है।

खात चक्रम्

ईशान्ये	वायव्ये	नैऋत्ये	आग्नेये	राहोर्मुखम्
१२।१।२	३।४।५	६।७।८	९।१०।११	देवालये
५।६।७	८।९।१०	११।१२।१	२।३।४	गेहविधौ
१०।११।१२	१।२।३	४।५।६	७।८।९	जलाशये
आग्नेय	ईशाने	वायव्ये	नैऋत्ये	कोणाः
खातः शुभ	खातः शुभ	खातः शुभ	खातः शुभ	खातः शुभ

नूतन गृह प्रवेश

वै. ज्ये. माघ फाल्गुन महीनों में रा. रे., ति. अनु. उत्तरा ३ नक्षत्रों में २।३।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।१५ तिथियों में चं. बु., बृ. शु. श. वारों में अपने जन्म ग न वा जन्म राशि से आठवां लग्न न हो। उपचय लग्न में वा स्वजन्मलग्नात् एते उपचया ३।६।१०।११ स्थिर लग्न में से ४।८ स्थान शुद्ध होने पर पर्व-रहित दिन में लग्न से १२५७९१० स्थानों में शुभ और ३६११ में पाप ग्रह हों तो नूतनगृह में प्रवेश शुभ होतत है। पुरातन गृहप्रवेश में श्रा., का., मार्ग., मासेषु रु. अश्वि., पुष्य, मृग., श्र., ध., एषुभेषु चापि शुभः। आवश्यके गुरु शुक्रास्त न विचारणीयम्।

सूर्य भात्प्रवेश समय कुम्भ चक्र

मुख	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	गर्भ	गुदे	कंठे
१	४	४	४	४	४	३	३
अग्निदाह	उद्वेग	लाभ	कीर्तिः	कलह	नाश	स्थिर	स्थिर

दुकान खोलने का मुहूर्त

वाणिज्य कर्म— अनु., तीनों उत्तरा, पुष्य, रेवती, रोहि., मृगशिरा, हस्त, चित्रा, अश्वि. नक्षत्रों में रिक्ता तिथि छोड़कर शुभवार में वाणिज्य कर्म शुभ है।

बहीखाता पत्रारम्भ मुहूर्त्त— अश्विनी, रोहिणी, चित्रा, अनुराधा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, श्रव, रेवती शुभ है। ४, ९, १४, ३० रहित तिथि रवि, सोम, बुध, गुरु, शनिवार शुभ मुहूर्त्त चर एवं द्विस्वभाव लग्न में ८, १२ घर पाप रहित तथा केन्द्र कोण में शुभ ग्रह हों।

मशीनरी चालू करना— आश्लेषा, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, पुष्य, ज्येष्ठा, पुनर्वसु, रेवती नक्षत्र शुभ है।

मुकद्दमा दायर करना— ४, ९, १४ तिथि, मंगलवार, शनिवार, कृत्तिका, आर्द्रा, धनि., आश्ले., मघा, ज्येष्ठा, मूल, विशा., तीनों पूर्वा हों, भद्रा हो तो उत्तम है।

ऋण लेने का मुहूर्त्त— अश्विनी, स्वाति, पुनर्वसु, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा में चर लग्न में ऋण लेना शुभ है। मंगल के दिन, वृद्धि योग में, सूर्य संक्रांति के दिन, धनिष्ठा आदि पंचकों में, हस्त, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योगों में ऋण नहीं लेना। रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्ति नहीं मिलती। मंगलवार को ऋण वापस करना अच्छा है।

हट्ट चक्र

नक्षत्र	२	२	४	४	३	४	४	४
फल	सौख्य	विक्रयनाश	धननाश	मुख	श्रेष्ठ	क्षोभ	हानि	शुभ

नौकरी का मुहूर्त

अ. मृ. पुष्य, ह. चि. अनु. रेवती एषु मेषुरिक्ता रहित तिथिषु सु.बु.वृ शु. वारेषुशुभ लग्ने १०, ११ स्थान में सूर्य भौम वा स्वामी सेवक की राशिश और योनि से मित्रता हो।

हल प्रवाहनम्— अ.रो.मृ.पुन.पु. उत्तरा ३, ह.चि.स्वा. अनु.मू.श्र.ध.श.रे. एषुभेषु २।३।५।७।१०।१२।१३ तिथिषु चन्द्र बुध बृह. शुक्रवारेषु २।३।१।८।९।१२ लग्नेषु व्यतिपात पूर्व रहित काले शुभस्यात्।

सूर्य भात हल चक्रम्

३	३	३	५	३	५	३	३	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ बीज बीजने का मुहूर्त्त

अ. रो. मृ. पुन. पुष्य म. उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मूल. धनि. रेवती एषुमेषु चन्द्र बुध बृह शुक्र वारेषु २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ एषु तिथिषु शुभेलग्ने शुभस्यात्।

राहु भात बीज वापन चक्रम्

८	३	१	३	१	३	१	३	४	नक्षत्र
अशु	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	फलम्

अथ खेती काटने का मुहूर्त्त

भ.कृ.मृ.आर्द्रा. पुष्य.श्ले. मघा, पूर्वा ३, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्येष्ठा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा एषुमेषु शुभवासरे, शुभ लग्ने शुभं स्यात्।

अथ खेतों से अन्न निकालने का मुहूर्त्त

रोहिणी, मघा, पू.फा., उ.फा. अनु., ज्येष्ठा, मूल, श्रवण एषुमेषु चन्द्र बुध, बृह, शुक्र, वारेषु २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १३, १५ तिथिषु शुभलग्ने कण मर्दन स्यात्।

अथ अन्न घर लाने का मुहूर्त्त

अश्वि, रोहिणी, मृग., पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनि., रेवती एषुमेषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषु २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथिषु शुभे लग्ने शुभस्यात्।

अथ नवान्न भक्षणम्

अश्वि., रोहिणी, मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनि., शत., रेवती एषुमेषु शुभवारेषु १, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, तिथिषु शुभलग्ने शुभस्यात्।

अथ अन्न बेचने का मुहूर्त्त

कृत्तिका, रोहिणी, तीनों उत्तरा, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल एषुमेषु २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३ तिथिषु, शुभवासरे शुभस्यलग्ने शुभस्यात्।

अथ अन्न खरीदने का मुहूर्त्त

रोहिणी, ध., शत., तीनों उत्तरा एषुमेषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषु २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३ तिथिषु शुभे लग्ने शुभंस्यात्।

अथ बीज संग्रह मुहूर्त्त

हस्तं, चित्रा, स्वाति, पुन., रोहिणी, मृग., श्रवण, धनि. एषुमेषु २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५ एषु तिथिषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषुशुभे लग्नेशु शुभंस्यात्।

अथ लता औषधि लगाने का मुहूर्त्त

अश्वि., रोहिणी, मृग., आर्द्रा, पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, विशाखा एषुमेषु चं.बु.बृ.शु. वारेषु शुभ तिथौ शुभलग्ने शुभंस्यात्।

अथ अर्जी देने का मुहूर्त्त

भरणी, मूल, आर्द्रा, अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा एषुमेषु शनि, मंगल वारौ ४, ९, १४ तिथौ क्रूर चन्द्रे सति शुभंस्यात्।

अथ होलाष्टकम्

शुक्लाऽष्टमी समारभ्य फाल्गुनस्य दिनाष्टकम्
विपाशैरावती तीरे शतुद्राश्च त्रिपुष्करे।
विवाहादि शुभे नेष्टं होलिका प्राग दिनाष्टकम्॥

अथ होम अग्नि वासः

शुक्लादि तिथि वर्तमान वार दोनों को जोड़ कर एक और मिलाओ ४ का भाग दो यदि ३ या चार बचे तो अग्नि का वास पृथ्वी पर जानना होम में सुख होता है। यदि १ या दो बचे तो अग्नि का वास वर्ग वा पाताल में होता है होम में प्राण और धन का नाश करता है।

अथ ग्रहों के मुख में आहुति

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिने प्रथम इसे सूर्य मुख में, इसी तरह सब ग्रहों के मुख में आहुति जाननी।

सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चन्द्र	मंगल	बृह.	राहु	केतु	ग्रह
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	फल

अथ ग्रहायां होमयेसमिधः। अर्क-पलाशः खदिरस्त्वपामार्गो ऽर्धपिप्पलः॥ औदुम्बरः शमी दूर्वाकुशाच्चसमिधः क्रमादिति॥ सन्तानप्रदमंत्रौ। देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगतपते। देही मे तनयं कृष्णत्वामहं शरणंगतः। कौशल्याशुशुभेतेन पुत्रेणामिततेजसा। यथावरे हणदेवाननामदितर्वजपाणिना॥ सपादलक्ष जपः तिल पायसधृतंदशांशहवनं। तद् शांततर्पणम्। दद्दशांश ब्राह्मण भोजनम्।

यात्रायां द्वादशराशिगत चन्द्रफलम् आद्यचन्द्रःश्रियं कुर्याद्द्वितीये धनधान्यदः। तृतीये राजसन्मानं चतुर्थेकलहा गमः॥१॥ पंचमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे सम्पत्तिरुत्तमा॥ सप्तमे सुखकृच्चन्द्रो ह्यष्टम मरणं भवेत् (कष्टं वा)। ९वें भाग्यवृद्धिश्च दशमे सुखसबः। एकादशे सर्वलाभोद्वादशं चाशुभावहः॥ आवश्यके द्वादशगतेऽपि यात्रा कार्यानिष्टचन्द्रदानतु। दधि तण्डुलश्वेतधृतरजतमुक्तादयः॥

कदा द्वादशस्वस्थश्चन्द्रमाशुभवः॥ आधाने-सम्प्रदाने च विवाहे राजविग्रह॥ पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः। अभिषेके निवेके च गृहे पुंसवनादिषु। यात्रा युद्धे विवाहे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः।

अथ सर्वेषां श्राद्धानां कालविभावगः पूर्वाह्णैविकं श्राद्धमपराह्णे तु पार्षणम्। एकोदिष्टं तु मध्यान्हे प्रातवृद्धिनिमित्तके शुक्लपक्षस्य पूर्वाह्णे श्राद्धंकुर्याद्विचक्षणः॥ कृष्णपक्षेऽपराह्णे च रौहणं न तुलच्छयेत्॥ क्षयाहे विशेषः। न ज्ञायते मृताहश्चेत्यमीते प्रोषिते सति। मासश्चैत्प्रतिविज्ञात-स्तछशस्यान्यतेऽहनि। श्राद्धविघ्न निर्णयः। श्राद्धविघ्नं समुत्पन्ने ह्यविज्ञाते मुतेऽहनि। एकादश्यां तु कर्तव्य कृष्णपक्षे विशेषतः॥ इति॥

गयाश्राद्धकालः॥ मीने मेषेस्थिते सूर्य कन्यायां कार्म के घटे दुर्लभं त्रिषु लोकेषु गयायां पिण्डपातनम्। मकरे वर्तमाने च ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः दुर्लभत्रि। गयायासर्वकालेषुपिण्डं दद्याद्विचक्षणः। अधिमासे जन्मदिने अस्ते चगुरुशुक्रयो॥ न त्यक्तव्यं गया श्राद्ध सिंहस्थे च वृहस्पतौ।

ऋण देना या धन व्यापार में लगाना—स्वाती, पुनर्वसु, चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी, इन नक्षत्रों में, चर, लग्न में और १, ५, ८ स्थानों में कोई ग्रह न हो तो तब द्रव्य को ऋण में देना रोजगार में लगाना शुभ है। मतान्तर से १, १२, ६ तिथि छोड़कर अन्य तिथियों में, तीनों उत्तरा और रोहिणी अन्य नक्षत्रों में शनिवार छोड़कर अन्य वार में कर्ज देना चाहिए।

बंटवारे का मुहूर्त्त—अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती नक्षत्रों में २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में शुभ लग्न में बंटवारा करना शुभ रहता है।

वसीयतनामा एवं उत्तराधिकार देने का मुहूर्त्त—चैत्र मास छोड़कर उत्तरायण में अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़ा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण एवं रेवती नक्षत्रों में रिक्ता तिथि (४, ९, १४) छोड़कर अन्य तिथियों में मंगलवार छोड़कर अन्य वारों में गुरु, शुक्र, चन्द्र के उदय रहते शुभ लग्न में वसीयतनामा अथवा राज्याभिषेक करना शुभ होता है।

मंत्री अथवा उच्चाधिकारी से मिलने का मुहूर्त्त—तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, मृगशिर, पुष्य, अनुराधा, रोहिणी, रेवती, अश्विनी, चित्रा, हस्त ये नक्षत्र रविवार सहित शुभ दिनों में तथा गोचरोक्त सूर्य बली हो तो मुलाकात करना शुभ है।

मन्त्री पद की शपथ लेना—उत्तरायण में, गुरु, शुक्र, चन्द्र ग्रहों के उदित रहते और मंगल, सूर्य तात्कालिक लग्न का स्वामी, तात्कालिक दशा का स्वामी, जन्म लग्नेश इन ग्रहों के बली रहते शुभ है। चैत्र मास, मलमास और ४, ९, १४ तिथि मंगलवार तथा रात्रि में अशुभ है इसलिए वर्जित है। ज्येष्ठा, श्रवण, हस्त, अश्विनी, पुष्य, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा में और ३, ५, ६, ७, ८, ११ राशि की लग्न में या जातक की जन्म लग्न, जन्म राशि से ३, ६, ११वें शुभ राशि के लग्न में रहने और शपथकालिक लग्न से ३, ६, ११वें स्थान में पाप ग्रह हों या केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हों तब शपथ ग्रहण करना शुभ है।

देव-प्रतिष्ठा का मुहूर्त्त—विभिन्न देवताओं की (चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में) प्रतिष्ठा तथा जलाशय, नाग आदि की प्रतिष्ठा, अश्वि., रो., मृग., पुन., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रवण, धनि., शत., रेवती नक्षत्रों में मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३ तिथियों में गुरु शुक्रोदय पंचांग शुद्धि, चन्द्र तारा शुद्धि देख कर करना चाहिए।

प्रेत क्रिया मुहूर्त्त—अश्विनी, पुष्य, हस्त, आश्लेषा, मूल, ज्येष्ठा, श्रवण, आर्द्रा और स्वामी नक्षत्र में पेत क्रिया करना उचित है, यदि मरणकाल में किसी कारणवश न की गई हों। धनिष्ठा नक्षत्र का उत्तरार्ध, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद रेवती इन साढ़े चार नक्षत्रों में प्रेत का दाह वर्जित है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विभिन्न प्रकार के उपयोगी मुहूर्त्ताः

नाम मुहूर्त्त	तिथि	वार	नक्षत्र-मास-लग्नादि शुद्धिकरण
सीमन्तोन्नयन मुहूर्त्त	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३	रवि गुरु मंगल	मृग., पुष्य, मूल, श्र., पुन, हस्त मतान्तर से तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती। मासेश्वर केबली रहते गर्भाधान से ८ या ६ मास में, केन्द्र व त्रिकोण के शुभ ग्रहों के रहते ३, ६, ११ स्थान में क्रूर ग्रह और पुरुष ग्रह लग्न या नवांश में शुभ होता है।
पुंसवन मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३	मंगल गुरु शु.रवि	श्रव., रोहि., पुष्य उत्तम। मृग., पुन., हस्त, रेवती, मूल और तीनों उत्तरा मध्य है। गर्भाधान से तीसरे मास में पुरुष संज्ञक लग्न में, लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० इन स्थानों में शुभ ग्रह हो। चन्द्रमा १।६।८।१२वें न हो, पाप ग्रह ३।६।११वें शुभ होंगे।
सूतिका स्नान	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३	मू.म. गुरु	रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिर, हस्त,स्वाति, अश्विनी अनुराधा। पंचम में कोई ग्रह न हो, केन्द्र ४, ७।१०।७ में शुभ ग्रह हो।
नामकरण	१, २, ३, ५, ७, १०, १३	चन्द्र बुध गु.शु.	अश्विन, रोहिणी, मृग., पुन., पुष्य, तीनों उत्तरा,हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, अभि., श्रवण, धनि, शत, रेवती। लग्न से १।५।७।९।१०।१० स्थानों में शुभ ग्रह हो। ३।६।११ में पाप ग्रह शुभ, ८।१२ में सभी ग्रह अशुभ।
स्तनपान	शुभ	शु.बु. चं.गु.	अश्विन, रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।
कर्ण वेध	१, २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १३, १५	चंद्र बुध गु.शु.	अश्वि., पुन., पुष्य, मृग., हस्त, चित्रा, अनु., श्रव., धनि और रेवती लग्न २।३।४।६।७।९।१२ यदि गुरु तो विशेष उत्तम, शुभ ग्रह १।३।४।५।७।९।१०।११ में उत्तम। पाप ग्रह ३।६।११ में शुभ, ८वें कोई ग्रह न हो।
मुण्डन	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३	चंद्र बुध गु.शु	अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, ज्ये., श्रवण, धनि., शत, रेवती। लग्न २।३।४।६।७।९।१२ शुभ ग्रह १।२।४।५।७।८।१०वें हो। पाप ग्रह ३।६।११ में शुभ ८वें कोई ग्रह न हो, जन्म से विषम वर्ष शुभ।
विद्यारम्भ	५, ६, २, ३, ११, १२, १०	र.गु. शु.	अश्विनी, मृग., आर्द्रा, पुन., पुष्य, अश्ले, तीनों पूर्वा, हस्त, चित्रा, स्वाति, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा।
यज्ञोपवीत	शु.प. २, ३, ५, १०, ११, १२ कृ. पक्ष की १, २, ३, ५	मू.चं. बुध गुरु शुक्र	अश्विनी, रोहिणी, आर्द्रा, पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रवण, धनि., शत., रेवती, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा नक्षत्र शुभ। लग्नेश ६।८ में अशुभ, शुभ ग्रह १।४।७।५।९।१०वें स्थान में शुभ, पाप ग्रह ३।६।११वें में शुभ पुरुष १।४।८वें में सभी पाप ग्रह अशुभ होंगे।
जल पूजा कूआं पूजा	शुभ	चं.बु. गुरु	मृग., पुन., पुष्य, हस्त, अनु., मूल, श्रवण नक्षत्र श्रेष्ठ। रिक्ता तिथि, गुरु, शुक्रास्त, बाल वृद्ध, चैत्र, पौष व मलमास, श्राद्ध पक्ष, मासान्त आदि वर्ज्य करें।
सगाई/बाग्दान	शुभ	शुभ	तीनों पूर्वा, तीनों उ., कृ., रो., मृग., मघा, ह., स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., रेव.
द्विरागमन (गौना) (मुकलावा)	शुभ	चन्द्र बुध गुरु शुक्र	तीनों उत्तरा, अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत., रेवती। विवाह के बाद विषम वर्षों में, मेष वृश्चिक और कुम्भ के सूर्य में। २।३।६।७।१२ लग्न में शुभ. लग्न से १।२।३।५।७।१०।११वें शुभग्रहा और ३।६।११वें भाव में पाप ग्रह शुभ होते हैं।
पुनर्विवाह	शुभ	सू.मं गु.शु.	अश्वि., हस्त, चित्रा, स्वा., विशाखा, अनु., धनि.। लग्न २।५।८।११, लग्न से १।२।३।५।७।१०।११ में शुभ ग्रह हो और ३।६।११ में पाप ग्रह होते हैं।
गन्धर्व विवाह	शुभ	सू.मं. शनि	अश्वि., कृत्तिका, आर्द्रा, पुन., अश्ले., ज्ये., धनि., शत. नक्षत्र शुभ गुरु शुक्रास्त एवं मासादि दोषादि नास्ति।
बीज बोने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५	चं.बु. गु.शु.	अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति अनु., मूल, धनि., रेवती सम्मुख चन्द्रमा शुभ होता है।
फसल काटने का मुहूर्त्त	२,३,५,६,७,८,१०, ११, १२, १३, १५	सू.चं. बु.गु.शु	भर., कृति., मृग., आर्द्रा, पुष्य, अश्ले., मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्ये., मूल, पूर्वाषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद। लग्न २।५।८।११ शुभ होता है।
कुआं व ट्यूबेल	शुभ	बु.गु. शु.चं	रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।

नाम मुहूर्त्त	तिथि	वार	नक्षत्र-मास-लग्नादि शुद्धिकरण
दुकान	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३	सू.चं. बु.गु. शु.श.	अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनु., रेवती। कुम्भ लग्न को छोड़, चन्द्र शुक्र लग्न में रहते, १२, ८, पाप ग्रहों के न रहते, २, १०, ११वें शुभ ग्रहों के रहते दुकान खोलना श्रेष्ठ है।
बड़े-बड़े व्यापार करना	२, ३, ५, ७, ११, १३	बु.गु. शु.	पुष्य, हस्त चित्रा और तीनों उत्तरा। कुम्भ लग्न को छोड़, चन्द्र शुक्र लग्न में रहते ८, १२वें पाप ग्रह न हो। २, १०, ११वें शुभ ग्रह हो।
ऋण का लेन देन करना			रवि, मंगलवार, संक्रांति दिन, वृद्धि योग, द्विपुष्कर व त्रिपुष्कर योग और हस्त नक्षत्र के दिन कभी ऋण न लें। अगर ले लिया जाये तो उस ऋण से मुक्ति न मिले और बुधवार के दिन कभी द्रव्य न दिया जाये।
बही खाता	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५	सू.चं. बु.गु.श.	मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, रेवती। चर तथा द्विस्वभाव लग्न श्रेष्ठ है।
क्रय खरीदना	शुभ	शुभ	शुक्ल पक्ष की ११ से कृष्ण पक्ष की ५ तक की तिथियों में अश्विनी, चित्रा, स्वाति, श्रवण, शतभिषा, रेवती नक्षत्र शुभ होते हैं।
विक्रय बेचना	शुभ	शुभ	भरणी, कृत्तिका, अश्लेषा, तीनों पूर्वा, विशाखा नक्षत्र। शुक्ल पक्ष को ११ से कृष्ण पक्ष की ५ तक कुम्भ लग्न को छोड़कर बेचना शुभ होता है।
नौकरी करने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३	सू.बु. गु.शु.	अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, रेवती नक्षत्र शुभ होते हैं।
कार्य सीखना	२, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १३, १५	चं.बु. गु.शु.	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, स्वाति, अनुराधा, अभिजित, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।
दत्तक (पुत्र गोद लेना)	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५	सू.म. गु.शु.	अश्विनी, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा नक्षत्र; स्थिर लग्न २।५।८।११ शुभ हैं।
गृह निर्माण	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५	चन्द्र बुध गु.शु. शनि	रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनु., धनि., शत., रेवती नक्षत्र शुभ हैं। वैशाख, श्रावण, पौष, माघ, फाल्गुन श्रेष्ठ हैं। लग्न २।३।५।६।८।९।११।१२ शुभ। शुभ ग्रह लग्न से १।४।७।१०।५।९ इन स्थानों में एवं पाप ग्रह ३।६।११ शुभ होते हैं। ८।१२ में कोई ग्रह नहीं लेना चाहिए।
नूतन गृह प्रवेश	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३	चन्द्र बुध गु.शु. शनि	रोहि., मृग., चित्रा, अनु., रेवती, तीनों उत्तरा नक्षत्र शुभ हैं। लग्न २।५।८।११ उत्तम हैं ३।६।९।१२ मध्यम हैं। लग्न से १।२।३।५।७।९।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह शुभ होते हैं। ३।६।११ स्थानों में पाप ग्रह शुभ होते हैं। ८।४ में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए। माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ मास में प्रवेश उत्तम होता है।
जीर्ण गृह प्रवेश	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३	चन्द्र बुध गु.शु.	रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, चित्रा, स्वाति, अनु. धनि., शत., रेवती नक्षत्र शुभ हैं। वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन मास श्रेष्ठ होते हैं। लग्न शुद्धि अवश्यक करें।
मन्त्र सिद्धि मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५	सू.चं. बु.गु.शु	अश्विन, मृगशिर, उ.फा., हस्त, विशाखा, श्रवण नक्षत्र शुभ हैं।
मुकद्दमा दायर करना	३, ५, ८, १०, १३, १५	र.बु. गुरु शुक्र	भरणी, आर्द्रा, श्लेषा, मघा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, मूल नक्षत्र शुभ होते हैं। लग्न ३।६।७।८।११ शुभ होते हैं। सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्रमा १।४।७।१० स्थान में पाप ग्रह ३।६।११ स्थान में शुभ होते हैं परन्तु ८वें कोई ग्रह न हो।
वाहन लेना	शुभ	चं.बु. गु.शु.	अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनु., श्रवण, धनि., शत, रेवती नक्षत्र शुभ हैं। लग्न शुद्धि आवश्यक है। सूर्य नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गणना करें। १ से ९ तक नेष्ट, १० से १५ श्रेष्ठ, १६ से २४ नेष्ट, २५ से २७ श्रेष्ठ होते हैं। लग्न से ८।१२ कोई ग्रह हो।
सर्वारम्भ मुहूर्त्त	शुभ	शुभ	लग्न से १२।८ स्थान शुद्ध हो अर्थात् कोई ग्रह न हो तथा जन्म लग्न व जन्मराशि से ३।६।१०।११ स्थान में हो तो सभी प्रकार कार्य प्रारम्भ करना शुभ होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त

सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त पूर्ण फलदायक और अचूक माने गए हैं। सात ग्रहों के सात होरा हैं जो दिन-रात के २४ घण्टों में घूमकर मनुष्य को कार्य-सिद्धि के लिए अशुभ समय में भी सुसमय सुअवसर प्रदान करते हैं। बुध का होरा राज-सेवा के लिए उत्तम है, प्रवास के लिए शुक्र का होरा, (ज्ञानार्जन के लिए बुध का होरा) सर्वकार्य सिद्धि के लिए चन्द्रमा का होरा, द्रव्य-संग्रह के लिए शनि का, विवाह के लिए गुरु का तथा युद्ध, कलह और विवाद के लिए मंगल का होरा उत्तम होता है। प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो वार होता है, उस वार के (सूर्योदय के समय) १ घण्टा तक उसी वार का होरा रहता है। उसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार के छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरा बीतने पर अगले वार के सूर्योदय-समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा श्रेष्ठ लिख आए हैं, किसी भी दिन उस होरा के १ घण्टे-मुहूर्त्त में वह कार्य करेंगे तो सफलता आपके हाथ रहेगी। प्रत्येक वार २४ घण्टों का होरा चक्र नीचे भी दिया जा रहा है। उदाहरण के लिए मान लीजिए, आज गुरुवार है और आज ही आपको कहीं प्रवास करना (जाना) है। ऊपर प्रवास के लिए शुक्र का होरा श्रेष्ठ लिख आए हैं, अतः मालूम करना है कि आज गुरुवार के दिन शुक्र का होरा किस-किस समय रहेगा। चक्र में गुरुवार के सामने खाने में देखा तो चौथे, ग्यारहवें घण्टे में शुक्र का होरा मिला।

वार	हो. १	हो. २	हो. ३	हो. ४	हो. ५	हो. ६	हो. ७	हो. ८	हो. ९	हो. १०	हो. ११	हो. १२	हो. १३	हो. १४	हो. १५	हो. १६	हो. १७	हो. १८	हो. १९	हो. २०	हो. २१	हो. २२	हो. २३	हो. २४
र.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.
चं	चं	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.
मं.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.
बु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.
गु.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.
शु.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.
श.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.

बिना सारिणी के किसी वार को अभीष्ट होरा निकालने का नियमः— किसी भी वार का प्रथम होरा वारेश (उसी वार) से प्रारम्भ होता है। उस वार से विपरीत क्रम से वारों को एक-एक के अन्तर से गिनें। जैसे, बुधवार को प्रथम होरा बुध का, तत्पश्चात् विपरीत क्रम से मंगल को छोड़कर सोम (चन्द्र) का होरा होगा एवं रवि को छोड़कर शनि का होरा होगा। इसी क्रम से आगे शेष २१ होरा उस दिन व्यतीत होंगे।

नामाक्षरों से वर्ग बोधक चक्र (स्ववर्ग से पंचम वर्ग वैरी होता है।)

अ ई उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेढ़ा

कर-शोभा

कराग्रे वसते लक्ष्मीः कर मध्ये सरस्वती। कर पृष्ठे तु गोविन्दः प्रभाते कर दर्शनम्॥

हाथों के अगले भाग में लक्ष्मी, मध्य में सरस्वती और पृष्ठ पर गोविन्द का निवास है अतः प्रातः काल में इन का दर्शन करना चाहिए। इस का भावार्थ है कार्य करके ही जीव पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) पा सकता है।

शिववास ज्ञान

वर्तमान तिथि को दो से गुणा कर पांच जोड़ें। फिर सात का भाग देवें। शेष १ रहे तो कैलाश में श्रेष्ठ। २ से गौरी पार्श्व में श्रेष्ठ। ३ से वृषारूढ़ श्रेष्ठ। ४ से सभा में सामान्य। ५ से ज्ञान वेला में श्रेष्ठ। ६ से क्रीड़ा में नेष्ट, ० से श्मशान में मृत्यु।

किस होरा में कौन सा कार्य करें?

रवि की होरा— राज्याभिषेक, प्रशासनिक कार्य, नवीन पद-ग्रहण, राज-दर्शन, राज्यसेवा, औषधि का निर्माण, स्वर्ण-ताम्रादि कार्य, यज्ञ-यागादि, मन्त्रोपदेश, गाय-बैल एवं वाहन का क्रय उत्सव।

चन्द्र (सोम) की होरा— कृषि सम्बन्धी कार्य, नवीन वस्त्र अथवा मोती रत्न, आभूषण धारण, नवीन योजना, परिकल्पना, कला सीखना, बाग-बगीचा लगाना, वृक्षारोपण, चांदी की वस्तुओं का निर्माण।

मंगल की होरा— वाद-विवाद, मुकद्दमा, जासूसी कार्य, छल करना, असद् कार्य, ऋण देना, युद्ध-नीति, साहस कृत्य, खनन कार्य, स्वर्ण-ताम्रादि कार्य, शल्य-क्रिया (आपरेशन), व्यायाम।

बुध की होरा— साहित्यारम्भ, पठन-पाठन, शिक्षा-दीक्षा, लेखन, प्रकाशन, अध्ययन, शिल्पकला, मैत्री, क्रीड़ा, धान्य-संग्रह, चातुर्य, बही-खाता, हिसाब-किताब, लोक-सम्पर्क, पत्र व्यवहार।

गुरु की होरा— धार्मिक कार्य, विवाह, ग्रह-शान्ति, यज्ञ-हवन, दान-पुण्य, मांगलिक कार्य, देवार्चन, देव-प्रतिष्ठा, न्यायिक कार्य, नवीन वस्त्राभूषण धारण, विद्याभ्यास, वाहन क्रय-विक्रय, तीर्थाटन।

शुक्र की होरा— नृत्य-संगीत, स्त्री-प्रसंग, प्रेम-व्यवहार, प्रियजन-समागम, उत्सव, वस्त्र व अलंकार धारण, लक्ष्मी-पूजन, व्यापारिक कार्य, कृषि-कार्य, ऐश्वर्यवर्द्धक कार्य, फिल्म-निर्माण।

शनि की होरा— गृह-प्रवेश, नौकर-चाकर रखना, सेवा विषयक कार्य, मशीनरी कल-पुर्जों के कार्य, असत्य भाषण, छल-कपट, अर्क-निष्कासन, विसर्जन, धन-संग्रह, पद-ग्रहण।

सर्व कार्येषु सप्तशलाका चक्रम्

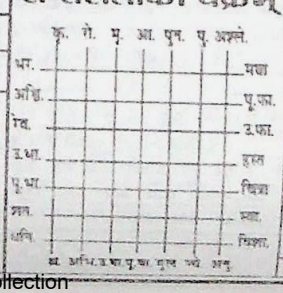

विवाहे पंचशलाका चक्रम

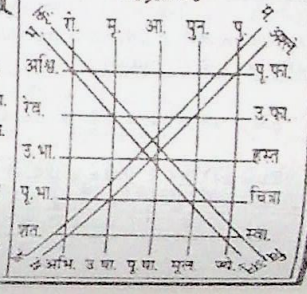

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गृह-भूमि विचार (गृहवास्तु)

शुभाशुभ भूमि विचार—जिस भूमि पर मकान बनाना है, उस भूमि में सूर्यास्त समय एक हाथ चौकोर और एक हाथ गहरा गड्ढा खोद कर जल भर दें। प्रातः यदि जल रहे तो शुभ, नहीं रहे तो मध्यम, गड्ढा फट जाय तो अशुभ भूमि समझें।

नींव खोदने में पत्थर आदि मिलने का फल—नींव खोदने में पहले पत्थर, ईट, धन, ताँबा आदि मिलने से सुख लाभ। कपाल, हड्डी, कोयला, केशादि मिलने से कष्ट होता है।

मण्डलेश का निर्णय—गृह-स्वामी के हाथ से लम्बाई-चौड़ाई नाप कर दोनों के योग को दूना करके ८ से भाग देने पर शेष १ में इन्द्र, २ में विष्णु, ३ में यम, ४ में वायु, ५ में कुबेर, ६ में शिव, ७ में ब्रह्मा, ८ शेष में गणेश मण्डलेश होते हैं।

दूसरा प्रकार—लम्बाई-चौड़ाई के योग में ९ से भाग देने पर शेष १ में दाता, २ में भूपति, ३ में नपुंसक, ४ में चोर, ५ में विलक्षण, ६ में भोगी, ७ में धनाढ्य, ८ में दरिद्र एवं ९ में कुबेर मण्डलेश होता है।

चन्द्र-सूर्य-वेध-विचार—चन्द्रवेधी ग्रह होना चाहिए और सूर्यवेधी जलाशय होना चाहिए। हदया वाटिका सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों शुभ मानी जाती हैं। पूर्व-पश्चिम लम्बा मकान सूर्यवेधी होता है और उत्तर-दक्षिण लम्बा मकान चन्द्रवेधी होता है। मकान चन्द्रवेधी शुभ होता है। चन्द्रवेधी मकान में धन और कुल की वृद्धि होती है। सूर्यवेधी मकान धन, कुल का नाशक होता है। बाग-बगीचा सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों प्रशस्त माना गया है। देवालय मन्दिर के लिए सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी का विचार नहीं होता।

शिलान्यास—पहले दक्षिण-पूर्व के कोण में नींव के अन्दर पूजा करके शिला की स्थापना करनी चाहिए, बाकी ४ शिलाओं को स्तम्भ-शिला के चारों तरफ स्थापित करना चाहिए।

राशि-द्वार का निर्णय—ब्राह्मण वर्ण, (कर्क, वृश्चिक, मीन राशि वालों) को पूर्व दिशा का, क्षत्रिय वर्ण (मेष, सिंह, धनु राशि वालों) को उत्तर दिशा का, वैश्य वर्ण (वृष, कन्या, मकर, राशि वालों) को दक्षिण दिशा का और शूद्र वर्ण (मिथुन, तुला, कुम्भ राशि वालों) को उत्तर दिशा का द्वारा शुभ होता है।

गृह-द्वार का निर्णय—मकान के जिस भाग में द्वार करना हो, उस भाग के ९ भाग करके पाँच भाग दक्षिण और तीन भाग उत्तर में छोड़कर शेष भाग में द्वार बनाना चाहिए। वाम, दक्षिण का अर्थ मकान से निकलते समय का लेना चाहिए।

देव-मन्दिर के पास मकान बनाने का निषेध—ब्रह्मा के मंदिर के बगल में तथा विष्णु, सूर्य, शिव-मंदिर के सामने, जैन मंदिर के पीछे, देवी-मन्दिर के किसी भी भाग में गृह बनाना शुभ नहीं होता है।

दरवाजों (किंवाड़ों) का फल—कपाट (दरवाजा) स्वयं खुलता है तो उन्माद, स्वयं बन्द हो तो कुल नाश, प्रमाण से अधिक हो तो राज-भय, प्रमाण से कम चोर-भय, कष्ट हो। द्वार के ऊपर द्वार नहीं रखना। किवाड़ पतले अशुभ, विशेष मोटे होने से क्षुधाभय, टेढ़े होने से गृह-स्वामी को कष्ट, अन्दर की तरफ टेढ़े से स्वामी को मृत्युकारक, बाहर की तरफ टेढ़े होने से विदेश-वास, दूसरी दिशा में चोर-भय करता है।

लड़का होगा या लड़की

गर्भिणी के नाम के अक्षरों को तिगुना करें। उसमें घोड़ा के अक्षर, देश के अक्षर, वर्तमान तिथि जोड़ें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ८ का भाग दें। यदि विषम अंक बचे तो लड़का, यदि सम अंक बचे तो लड़की होगी। ऐसा जानना चाहिए।

जन्म-कुण्डली जीवित की है या मृत की

जन्म-लग्न के अंक, प्रश्न-लग्न के अंक और जन्म-लग्न से आठवें भाव के अंक, इन तीनों का जोड़ करें। जो संख्या आवे उसमें जन्म-लग्नेश को गुणा करें। गुणनफल में अष्टमेश का भाग दें यदि सम बचे तो मृत की और विषम अंक बचे तो जीवित की जानना चाहिए।

लड़कियों की कुण्डलियों में आवश्यक विचार

योग नं. (१) अश्ले. नक्षत्र तिथि २, शनिवार। नं. (२) तिथि ७, शतभिषा नक्षत्र, मंगलवार। (३) तिथि १३, कृतिका नक्षत्र, रविवार—इन योगों में पैदा हुई कन्या विषकन्या कहलाती है।

ग्रह-गति से वैधव्य (विषकन्या) योग

१. जिस कन्या की जन्म-कुण्डली में ९ में मंगल, १ में शनि, ५ में सूर्य हों।

स्त्री के बांझ होने का योग

१—जिस स्त्री के जन्म लग्न से आठवें सूर्य-चन्द्रमा अपनी राशि के हों।

२—जिस स्त्री की कुण्डली में १, ८, १०, ११ राशियों में चन्द्रमा शुक्र के साथ हो और पाप ग्रहों से देखा गया हो।

३—जिस स्त्री के सातवें सूर्य व राहु हों और शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो बालक पैदा होकर मर जाते हैं।

४—जिस स्त्री के जन्म लग्न से आठवें चन्द्रमा और बुध अपनी राशि के हों तो स्त्री के ही एक प्रसव होता है।

अथ पक्षी शकुन-विचार

प्रश्न कर्त्ता अपने मन में विचार करके इस चिड़िया पर जो 'श्री' लिखी हैं उनमें से किसी एक पर उंगली धरें। उसका फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चोंच दुःख पंखे मरण, कंठे मिलन समाज।
उदर सुभोजन पूंछ धन, मस्तक पावै राज॥
शुभ लक्षण पांवन धरै, घर में मङ्गलचार।
प्रश्नोत्तर के समय यह बुधजन करें विचार॥

पुरुष की मृत्यु पहले होगी या स्त्री की

पुरुष और स्त्री के नाम के अक्षर गिनकर दुगुने करें और दोनों के नाम में जो मात्रा हों उसको चौगुनी करें। फिर अक्षरों को दुगुनी-की हुई संख्या तथा मात्राओं की चौगुनी की हुई संख्या, दोनों का जोड़ करें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ३ का भाग दें। यदि शेष ०, १ रहे तो पुरुष की, यदि शेष २ रहे तो स्त्री की मृत्यु पहले होगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हस्त रेखायें बोलती हैं

भारत में "तमसो मा ज्योतिर्गमय" की उद्घोषणा करने वाले ऋषि प्रकाश के सत्य और उसकी व्यापकता से परिचित रहे थे। इसलिये उन्होंने अभिवाज्य काल को पहचान कर उसको अपने जीवन से अच्छिन्न रखने के लिए क्रिया के भेद किये। यह विषय व्याकरण का रहा पर ज्योतिष की मीमांसा करते समय वे प्रकाश के प्रभाव और परिणामों का सूक्ष्म निरीक्षण करते रहे। परिणामत: जिस प्रकार वे व्यक्ति के बाह्य रूपाकार का आंकलन कर सके उसी तरह उसके आन्तरिक अतएव गुणात्मक स्वरूप का भी मूल्यांकन करने में समर्थ हो सके।

महर्षियों की यह साधना और निरीक्षण पद्धति केवल व्यक्ति तक ही सीमित नहीं रही, पर्यावरण, ऋतु, भूगर्भ और धारित्री की प्रकृति का अध्ययन भी उसकी सीमा में आया। पराशर, गर्ग, भृगु, वराह जैसे स्वनामधन्य मनीषियों ने इस विषय को व्यापक और मानवोपयोगी बनाने में लोकोत्तर योगदान दिया। धरती मानव के आवास के लिए उपयुक्त है, धरती की गंध, रूप, रंग से उसके सम्पर्क में आने पर हमारी देह एवं विचारधारा में जैव रासायनिक परिवर्तन किस तरह के होंगे, उनका हमारे पर अनुकूल प्रभाव होगा या प्रतिकूल आदि विषय ज्योतिष शास्त्र से ही सम्बन्ध हैं।

ज्योतिष की एक शाखा है सामुद्रिक। सामुद्रिक शब्द व्यक्ति के रूप आकार में प्रसृत चिह्नों एवं संयोजनों को समझने का बोधक किस प्रकार बना-यह शब्द शास्त्र के विवेचन की बात है। हम मात्र इतना जानते हैं कि सामुद्रिक के नाम से जाना गया शास्त्र ज्योतिष की एक शाखा है। यह शास्त्र व्यक्ति की रूपरेखा को आधार बनाकर उसकी स्थिति एवं भविष्यत् का उपदेश करता है। इसमें मनुष्य के व्यक्तित्व, मुखमण्डल, नासिका, ललाट आदि के संघटन को देखकर भविष्य ज्ञान किया जाता है।

हमारे काव्य शास्त्र में पुरुषों एवं स्त्रियों की सुन्दरता के लिये जो उपमायें दी गई हैं। वे सामुद्रिक शास्त्र की मान्यताओं की ही पुष्टि करती हैं। कमलपत्र के समान आयत विशाल आँखें, लाल कमल के सदृश्य सुकोमल अरुण हाथ और पदतल व्यक्ति के सुन्दर स्वास्थ्य के ही सूचक नहीं हैं (क्योंकि लाल रंग सन्तुलित रक्त प्रवाह का ही सूचक है) बल्कि उनकी कोमलता व्यक्ति के सम्पन्न स्तर की सूचक रहती है। बिहारी की रत्नारी आंखें मुखमण्डल को सुन्दर ही नहीं बनाती बल्कि उसके कामी होने की सूचना भी देती हैं। क्योंकि ज्योतिष के अनुसार आंखो में उभार कुण्डली में मंगल की सुदृढ़ स्थिति एवं नेत्र स्थान से सीधे सम्बन्ध के कारण होता है तथा इनमें रंग और चमक चन्द्रमा और शुक्र के कारण होती है। जहाँ इन ग्रहों का संयोजन किंवा युति हुई वहीं व्यक्ति आकृति से मोहक एवं व्यवहार में कामी हो गया। सामुद्रिक शास्त्र के ये बाहरी चिन्ह व्यक्ति की ग्रह स्थिति के जन्म कालिक समीकरण को स्पष्ट करते हैं और उस स्थिति को जान लेने के पश्चात् भविष्यत् को जान लेना कोई अगम्य बात नहीं रहती। अन्तर मात्र इतना है कि सामुद्रिक शास्त्र ग्रहों की चर्चा नहीं करता वह संयोजन और संघटनों का ही फलित बतलाता है।

भारत में आकृति विज्ञान किंवा सामुद्रिक शास्त्र का प्रचार प्राचीन समय से रहा है। बाल्मीकि ने श्रीराम को अजान बाहु और अरविन्द दलायताक्ष अर्थात घुटनों तक लम्बे हाथ और कमल पत्र जैसी विशाल आंखों वाला कहा है और सामुद्रिक शास्त्र के इस कथन की पुष्टि की है। जिस व्यक्ति के हाथ घुटनों तक लम्बे हों वह सम्राट होता है। पैरों के तलवों की रेखायें, ललाट पर पड़ने वाली वलियों तथा नासिका आदि को देखकर व्यक्ति के स्तर एवं भावी जीवन को पढ़ने की परम्परा अति प्राचीन है। हाथों की रेखायें भी भविष्यत् ज्ञान का माध्यम रही हैं।

हाथ का रूप और आकार हमारे जन्म लग्न की भांति भविष्यत् कथन का आधार बनता है। अर्थात् व्यक्ति के हाथ का सामान्य आकार और रूप उसकी प्रकृति और चरित्र की सूचना देता है तो रेखायें और उन पर बने चिन्ह दशा-अन्तर्दशा में घटने वाली घटनाओं को दर्शाते हैं। पर्वत यह निश्चित करते हैं कि व्यक्ति में कौन से गुण या अवगुण विद्यमान हैं तथा वह कौन सी आजीविका अपनायेगा। इसके साथ ही व्यक्ति के वर्ग विशेष में रहने की सूचना भी इन्हीं के माध्यम से मिलती है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि पर्वतों के सूक्ष्म निरीक्षण-परीक्षण करने के पशचत् एक कुशल रेखाविद् यह निश्चित कर लेता है कि सम्बद्ध व्यक्ति का हाथ किस वर्ग का है। प्रत्येक हाथ का वर्ग किंवा श्रेणी उसके मूल्य को दर्शाती है। यह सब कुछ ऐसा ही है जैसे एक मूर्तिकार विभिन्न मुखाकृतियों के प्रतिरूप मूर्तियां बनाता है और उनको श्रेणीबद्ध कर उनका मूल्य निश्चित करता है।

हस्त सामुद्रिक में अंगुलियों का आकार प्रकार और इन पर अंकित चिन्ह भी विशेष महत्व रखते हैं जैसे अंगुलियां वर्गाकार और छोटी हों व्यक्ति के संकीर्ण विचार युक्त होने की सूचना देती हैं। लम्बी वर्गाकार अंगुलियां व्यक्ति की मानसिक सबलता और तार्किक होने का संकेत देती हैं। अंगूठा व्यक्ति के हाथ में महत्वपूर्ण अंग है क्योंकि इस की सहायता के बिना अंगुलियां कुछ भी नहीं कर सकतीं। व्यक्ति का समग्र व्यक्तित्व अंगूठे में छिपा है। अंगूठे का मस्तिष्क से गहरा सम्बन्ध है, इस तथ्य की पुष्टि वैज्ञानिक भी करते हैं।

मस्तिष्क मानव देह का केन्द्रिय अंग है जो सारी देह के क्रिया कलापों का संचालन करता है। मस्तिष्क को गतिशील रखने में अनेक ज्ञानतन्तु अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं। मस्तिष्क और हृदय में हो रहे रासायनिक अमलों का प्रतिरूप मानव की हथेली पर अंकित रेखायें हैं। हम जब किसी के मन और मस्तिष्क के भावों को पढ़ना चाहें तो हमें उसके करतल की रेखाओं को देखना-समझना होगा। अगली पंक्तियों में रेखा के आकार-प्रकार एवं इस पर बने चिन्हों के अनुसार व्यक्ति के जीवन में कैसी घटनायें होंगी इस पर प्रकाश डाला जा रहा है। आशा है पाठक वृन्द लाभान्वित होंगे।

आई०ए०एस० अधिकारी—यदि बुध की उंगली अर्थात् कनिष्ठिका लम्बी हो और उसका सिरा अनामिका के प्रथम पौर के आधे हिस्से को भी पार कर चुका हो और सूर्य रेखा उच्चकोटि की हो तो जातक आई०ए०एस० अधिकारी अथवा उच्च पदाधिकारी बनता है।

न्यायाधीश होने का योग—यदि गुरु पर्वत अधिक विकसित हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो, तर्जनी अंगुली अनामिका से बड़ी हो, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के प्रथम पौर के मध्य भाग तक पहुँच गया हो तो जातक न्यायाधीश होता है।

व्यवसायी होने का योग—यदि बुध पर्वत उभरा हुआ हो और निर्दोष हो, मस्तिष्क रेखा सीधी हो और बुध पर्वत तक जाती हो तो जातक सफल व्यापारी होता है।

पुलिस अधिकारी—मंगल पर्वत उभरा हुआ हो तथा उस पर उज्जवल तारे का चिन्ह हो और शरीर हृष्ट-पुष्ट हो तथा भाग्य रेखा निर्दोष हो तो जातक सफल पुलिस अधिकारी बनता है।

इंजीनियर होने का योग—यदि शनि पर्वत विकसित हो और निर्दोष भाग्य रेखा शनि पर्वत पर आती हो, बुध पर्वत पर तीन चार खड़ी रेखा हों और सभी उंगलियां लम्बाई लिए हुए हों तो जातक इंजीनियर होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

डॉक्टर होने का योग—यदि बुध पर्वत और मंगल पर्वत पूर्ण रूप से विकसित हों, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के ऊपरी पौर के मध्य तक जाता हो, बुध पर्वत पर तीन खड़ी रेखाएं हों तो जातक डॉक्टर होता है। अगर मंगल की बजाय बृहस्पति पर्वत विकसित हो तो जातक सफल वैद्य होता है।

शिक्षक होने का योग—बृहस्पति पर्वत उभरा हुआ हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो तथा इसके साथ ही सूर्य रेखा, भाग्य रेखा, निर्दोष हो तथा तर्जनी उंगली अनामिका से बड़ी हो तो व्यक्ति शिक्षक होता है।

अभिनेता-अभिनेत्री योग—अनामिका उंगली विशेष लम्बी हो और ऊपर से नोकदार हो, सूर्य रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो, सभी उंगलियां कोमल और ढलवी हों, भाग्य रेखा पूरी लम्बाई लिए हुए हो तो जातक सफल अभिनेता या अभिनेत्री होती है।

साहित्यकार—हथेली में चन्द्र पर्वत और गुरु पर्वत उभरे हुए हों, अनामिका तर्जनी से लम्बी हो, सूर्य रेखा तथा बुध पर्वत निर्दोष हों तो जातक सफल साहित्यकार बनता है। अगर चन्द्र पर्वत से धनुषाकार रेखा बुध पर्वत की ओर आती हो तो जातक श्रेष्ठ कवि बनता है।

विवाह में अड़चन—(१) यदि विवाह रेखा कई स्थानों पर कटती हो, (२) चन्द्र पर्वत पर आड़ी तिरछी रेखाएं बनी हों।

अनमेल विवाह का योग—(१) यदि विवाह रेखा सूर्य रेखा को काटती हो तो अनमेल विवाह होता है, (२) यदि शुक्र पर्वत अधिक विकसित हो तब भी।

सुखहीन विवाह का योग—(१) यदि भाग्य रेखा पर क्रास हो, (२) विवाह रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो, (३) शुक्र पर्वत कम उभरा हुआ हो।

तलाक होने के योग—(१)विवाह रेखा के अन्त में रेखाओं का गुच्छा हो, (२) यदि मंगल क्षेत्र से चलकर कोई रेखा विवाह रेखा को काटे तो पति-पत्नी पृथक् रहते हैं, (३) यदि विवाह रेखा से निकल कर एक शाखा मस्तिष्क रेखा से मिलती हो, (४) शुक्र पर्वत से प्रभाव रेखा जीवन रेखा को काटती हुई विवाह रेखा से मिलती है अथवा विवाह रेखा को काटती है तो तलाक होता है, (५) अविवाहित रहने का योग:-विवाह रेखा ऊपर अर्थात् कनिष्ठका उंगली की ओर झुकी हो तो विवाह नहीं होता।

हस्त रेखा और रोग

- यदि चन्द्र पर्वत अत्यधिक उठा हुआ हो तो जातक को नजला जुकाम रहता है।
- यदि चन्द्र पर्वत जरूरत से ज्यादा उभरा हुआ हो और उस पर एक से अधिक क्रास अथवा बिन्दु हो तो जलोदर रोग होता है।
- यदि मस्तिष्क रेखा कई जगह से टूटी हुई हो तो जातक की स्मरण शक्ति कम होती है।
- यदि मस्तिष्क रेखा जरूरत से ज्यादा चौड़ी हो तथा उस पर काला धब्बा हो तो जातक को मस्तिष्क रोग होता है।
- यदि जीवन रेखा अंत में कई शाखाओं में बंट जाती हो तो वायु रोग होता है।
- यदि दोनों हाथों में मंगल रेखा पर शाखाएं निकली हों अथवा जीवन रेखा के प्रारम्भ में तारे का चिन्ह हो तो जातक को कैंसर रोग होने का भय होता है।
- यदि मंगल पर्वत पर तीन या तीन से अधिक बारीक-बारीक रेखाएं दिखाई दें तो जातक को गुप्तांगों के रोग रहते हैं।
- अगर स्वास्थ्य रेखा दूषित हो और हृदय रेखा जंजीरदार हो तो जातक को हृदय रोग होने का भय है।

अन्य अशुभ योग-

बाल्यावस्था में माता-पिता की मृत्यु—भाग्य रेखा के शुरू में त्रिकोण या द्वीप हो तो माता-पिता में से किसी एक की मृत्यु होती है।

हत्यारा होने का योग—मंगल का पर्वत उठा हो, उस पर तारे का चिन्ह हो। शनि के नीचे-मस्तक रेखा पर नीले रंग की रेखा हो।

विदेश में मृत्यु—जीवन रेखा अंत में दो शाखाओं में बंट जाए और उसमें से एक शाखा चन्द्र स्थान पर जाए तो विदेश में मृत्यु होती है।

मुकद्दमेबाजी में जायदाद और धन नाश होना—दोनों हाथों में मंगल पर्वत का काला धब्बा, तिल या अन्य चिन्ह हो तो मुकद्दमेबाजी में जायदाद बर्बाद होती है।

शराबी होने का योग—चन्द्र पर्वत अधिक उठा हो तो प्राणी मद्य सेवी होता है।

अकाल मृत्यु का योग—(१) जीवन रेखा कटी हुई हो, हृदय रेखा शनि पर्वत को स्पर्श करती हो तो जातक की अकाल मृत्यु होने का भय होता है, (२) जीवन रेखा दोनों हाथों में छोटी हो अथवा टूटी हुई हो, मस्तिष्क रेखा तथा हृदय रेखा बुध पर्वत के नीचे आपस में मिली हो तो अकाल मृत्यु होती है।

हथेली पर तिल:-

- यदि लाल रंग का तिल मस्तिष्क रेखा के ऊपर हो तो जातक के लिए सिर पर चोट लगने का खतरा रहता है।
- शनि पर्वत पर काला तिल जातक के प्रणय सम्बन्धों में निराशा लाता है। पति-पत्नी के आपसी झगड़े के कारण उनमें से एक को आत्महत्या करनी पड़ती है।
- चन्द्र पर्वत पर काला तिल पानी में डूबने से मृत्यु का होना। जातक को प्रेमी अथवा प्रेमिका धोखा देती है।
- हृदय रेखा पर गहरे काले रंग का तिल हो तो जातक को हृदय रोग होने की सम्भावना रहती है।
- जिस व्यक्ति के बुध पर्वत पर काला तिल हो, वह व्यक्ति ठग, कपटी तथा धूर्त होता है। ऐसे व्यक्ति से व्यापार में भागीदारी नहीं करनी चाहिए।
- बृहस्पति के पर्वत पर काला तिल हो तो विवाह में बाधा आती है।
- शुक्र पर्वत पर काला तिल जातक को अत्यधिक भोगी बनाता है जिससे वीर्य दूषित हो जाता है।
- जीवन रेखा पर काला तिल हो तो दिमाग पर चोट लगने का डर रहता है तथा शत्रु द्वारा आघात लगने का भी खतरा रहता है।
- भाग्य रेखा पर काला तिल भाग्योदय में बिलम्ब तथा संघर्ष का सूचक है।
- यदि सूर्य रेखा पर काला तिल हो तो जातक को असफलता का सामना करना पड़ता है तथा धन हानि होती है।
- यदि अंगूठे के मूल में काला तिल हो तो जातक के प्रथम सन्तान की मृत्यु हो अथवा गर्भ-क्षय हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मुखाकृति से भविष्य ज्ञान

वर्गाकार मुखाकृति—वर्गाकार मुखाकृति वाले व्यक्ति पृथ्वी तत्व प्रधान व्यक्ति होते हैं। ऐसे व्यक्तियों की मुखाकृति की तस्वीर लेकर अगर चारों ओर लाइन लगा कर चतुष्कोण खींचा जाए तो इनका चेहरा चतुष्कोण में पूरा फिट आ जाएगा। यह जातक स्वस्थ सुडौल एवं शक्तिसम्पन्न होते हैं। इनमें उद्योगशीलता, व्यावहारिकता तथा संचय करने की प्रवृत्ति एवं गुण पाए जाते हैं। यह लोग भौतिक साधनों से सम्पन्न सुखी समृद्ध होते हैं। यह लोग सिद्धान्तों पर चलने वाले होते हैं और दूसरे के प्रभाव में आकर आसानी से अपने सिद्धान्त नहीं बदलते। अगर इनके चेहरे में, पृथ्वी तत्व की अत्यधिक मात्रा हो तो यह व्यक्ति हठी, अदूरदर्शी, आलसी, विलासी होते हैं तथा अपनी अकर्मण्यता के कारण बाद में दुखी होते हैं।

वर्गाकार मुखाकृति वाली स्त्रियों का शरीर स्थूल होता है। इनकी चाल धीमी तथा मतवाली होती है। ऐसी स्त्रियां कर्मठ, व्यवहारकुशल तथा मनमौजी होती हैं। अगर इनकी मुखाकृति में पृथ्वी तत्व अत्यधिक मात्रा में हो तो यह स्वभाव तथा चरित्र की दृष्टि से दुर्बल होती हैं।

वृत्ताकार मुखाकृति—वृत्ताकार मुखाकृति वाले जल तत्व प्रधान होते हैं। यदि इनके चेहरे का चित्र लेकर एक गोले में फिट किया जाए तो उनमें यह लगभग फिट हो जाता है। ऐसे जातक के गाल भरे हुए मांसल एवं स्निग्ध होते हैं। इनका शरीर स्थूल तथा उदर लम्बा होता है। यह लोग भावुक, कल्पनाशील, प्रसन्नचित्त, सहृदय, स्वप्नदर्शी मिलनसार एवं संवेदनशील होते हैं। यह लोग आराम पसंद जीवन बिताना पसन्द करते हैं तथा संघर्ष से दूर भागते हैं। जिनके चेहरे पर जल तत्व का अत्यधिक प्रभाव हो वह निराशावादी और अकर्मण्य होते हैं।

गोल चेहरे वाली औरतें शृंगारप्रिय हावभाव वाली, बुद्धिमती तथा पतिव्रता, उदार हृदय, स्नेही तथा चंचल होती हैं। अगर जल तत्व का अत्यधिक प्रभाव हो तो यह दुर्बल, निराश एवं रोगग्रस्त होती हैं।

सूच्याकार मुखाकृति—सूच्याकार मुखाकृति वाले व्यक्ति अग्नि तत्व प्रधान होते हैं। अगर इनके चेहरे की तस्वीर चतुष्कोण में फिट की जाए तो ललाट वाला ऊपर का भाग चौड़ा होगा और नीचे का ठोड़ी वाला भाग संकरा होगा अथवा यूं कहा जा सकता है कि इनके चेहरे की आकृति बाल्टी की आकृति जैसी होगी। कोनों में गोलाई नहीं होगी। ऊपर का भाग विस्तृत होने के कारण यह लोग बुद्धिमान, चिंतक, दूरदर्शी, साहसी, स्वस्थ एवं समृद्ध, स्पष्ट वक्ता, अभिमानी, नेतृत्वप्रिय एवं हठी होते हैं। यह लोग शक्ति में विश्वास करते हैं और अगर कहीं वाद-विवाद में उलझ जाएं तो पीछे नहीं हटते। यह लोग रचनात्मक एवं ध्वंसात्मक दोनों प्रकार के कार्य करते हैं। अगर चेहरे पर अग्नि तत्व का अधिक प्रभाव हो तो जातक अत्यन्त क्रोधी, हिंसात्मक एवं पाश्विक वृत्ति वाला होगा।

सूच्याकार मुखाकृति वाली स्त्रियां स्वाधीनताप्रिय, असहिष्णु एवं वाचाल होती हैं। गृहस्थ जीवन में यह औरतें सफल नहीं होतीं क्योंकि जरा-सी बात पर इनको क्रोध आ जाता है। हां, नौकरी, राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में यह स्त्रियां उन्नति कर सकती हैं।

अंडाकार मुखाकृति—अंडाकार मुखाकृति वायु तत्व प्रधान मुखाकृति होती है। इनका ललाट विशाल एवं उन्नत तथा हनु और कपोल एक विशेष प्रकार मुड़ी उतार होते हैं। जातक सामान्य कद के, पुष्ट शरीर एवं उभरे स्निग्ध गालों वाले, आकर्षक और लुभावने होते हैं। यह व्यक्ति आशावादी, स्वच्छन्द, साहसी होते हैं तथा हर बात तर्क से करते हैं। यह हमेशा ज्ञान की जिज्ञासा, आनन्द की खोज, शान्ति की चाह रखते हुए प्रगति की राह पर चलते हैं। अगर चेहरे का नीचे का भाग पुष्ट हो तो यह व्यक्ति प्रेम और सौन्दर्य की इच्छा, काम पिपासा तथा व्यर्थ आचरण की कामना रखते हैं।

यदि इन व्यक्तियों का चेहरा उल्टे अण्डे की तरह हो अर्थात् इनका ललाट का भाग संकुचित हो और नीचे का भाग विस्तृत हो तो ऐसे व्यक्तियों की बुद्धि इतनी विकसित नहीं होती। यह लोग हास्य एवं व्यंग्यप्रिय, मनमौजी, उथले स्वभाव के होते हैं। चेहरे के नीचे के भाग में वायु तत्व की प्रधानता जातक को असत्यवादी, अस्वस्थ एवं चिड़चिड़ा बनाती है।

अंडाकार मुखाकृति वाली स्त्रियां सामान्य होती हैं परन्तु थोड़े प्रयत्न से अच्छा जीवन साथी सिद्ध हो सकती हैं।

उल्टे घड़े समान मुखाकृति—ऐसे जातक को देखकर ऐसा लगता है जैसे शरीर पर गर्दन सहित उल्टा घड़ा रखा हो। इनमें आकाश तत्व की प्रधानता होती है। इनके चेहरे पर अद्भुत कांति तथा आंखों में विशेष तेज होता है। यह लोग उदार हृदय, महत्वाकांक्षी, स्वाभिमानी एवं आदर्शयुक्त, एकान्तप्रिय, सौम्य, तेजस्वी, आध्यात्मवादी, आत्मबली एवं असाधारण प्रवृति के व्यक्ति होते हैं। यह अपने क्षेत्र में उच्च पद पर होते हैं तथा लोगों का तथा समाज का जिसमें भला हो, ऐसा कार्य करते हैं।

अध्ययन के लिए चेहरे को तीन भागों में बांटा जाता है:—

(१) ललाट क्षेत्र (२) नासिका क्षेत्र तथा (३) मुख क्षेत्र।

ललाट क्षेत्र का विकास व्यक्ति की मानसिक, बौद्धिक एवं सात्विक शक्ति का सूचक है। नासिका क्षेत्र मनुष्य की भौतिक, व्यावहारिक एवं राजसी प्रवृत्तियों का सूचक है। मुख क्षेत्र जातक की जैविक, वासनात्मक एवं तामसिक इच्छाओं का सूचक है।

जिस जातक का ललाट एवं नासिका क्षेत्र उन्नत, विकसित तथा विस्तृत होता है वह बुद्धिमान, ज्ञानवान, विचारशील, व्यवहारिक, चतुर तथा साहसी होता है तथा जीवन में सफल होता है। यश, धन, सुख तीनों को प्राप्त करके जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है।

जिस जातक के ललाट एवं मुख क्षेत्र विकसित, उन्नत एवं विस्तृत हों वह गम्भीर, धीमा, चतुर, चालाक, धूर्त, कामी, दम्भी, विचारवान, समय और स्थिति को पहचानने वाला होता है। यह व्यक्ति अधिक स्वार्थी होता है और जरूरत पड़ने पर असत्य एवं अन्याय का भी सहारा लेता है।

जिस जातक के नासिका क्षेत्र एवं मुख क्षेत्र विस्तृत, उन्नत, विकसित हों, विशेषकर मुख क्षेत्र नासिका क्षेत्र से अधिक विकसित एवं उन्नत हो ऐसा व्यक्ति कामी, वासनायुक्त, असभ्य, मन्दबुद्धि, हिंसक होगा। यदि नासिका क्षेत्र, मुख क्षेत्र से अधिक विकसित हो तो जातक उत्तेजित, आक्रामक, द्रुतगामी, स्पष्टवक्ता, मनमौजी, संरक्षक एवं न्यायप्रिय होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

स्त्रियों के तिलादि एवं हस्त रेखा का विचार

भारतीय सामुद्रिक शास्त्र के विद्वानों ने स्त्री शरीर पर पाये जाने वाले तिलों के सम्बन्ध में अनेक तथ्यों का विश्लेषण किया है। इनमें कुछ मुख्य बातों का उल्लेख करते हैं—

यदि किसी स्त्री के भौंहों के मध्य भाग में तिल चिह्न हो तो उसे राज्य प्राप्ति का लक्षण समझना चाहिए। यदि स्त्री के बायें कपोल पर लाल रंग का तिल हो तो वह मिष्ठान्न भोजन प्राप्त करने वाली होती है।

यदि किसी स्त्री के हृदय स्थान पर तिल हो तो उसे सौभाग्य सूचक समझना चाहिये। यदि दायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो ऐसी स्त्री तीन कन्या तथा दो पुत्रों को जन्म देती है। यदि बायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो स्त्री पहले बच्चे को जन्म देने के बाद विधवा हो जाती है।

यदि किसी स्त्री की नाभि के निचले भाग में तिल का चिह्न हो तो उसे शुभ समझना चाहिये। यदि गुप्त स्थान में तिल हो तो वह दारिद्रय कारक होता है। हाथ, कान, कपोल, कंठ अथवा बाईं ओर के किसी अंग में तिल हो तो ऐसी स्त्री अपने प्रथम गर्भ से पुत्र को जन्म देती है।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का तिल हो तो, सदैव समधुर श्रेष्ठ भोजन प्राप्त करती है।

जिस स्त्री के ललाट पर काले रंग का चमकीला तिल हो तो वह पांच पुत्रों की माता तथा सौभाग्यवती होती है। ऐसी स्त्री स्वभाव से धार्मिक तथा दयालु प्रकृति की होती है।

मस्सा विचार

जिस स्त्री के कण्ठ, होंठ, दायें हाथ अथवा बायें कान पर मस्सा हो तो उसके पुत्र उच्च पद प्राप्त करते हैं।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का मस्सा हो, तो वह सदैव विभिन्न प्रकार के भोजन प्राप्त करती है। जिस स्त्री की दोनों भौहों के मध्य भाग में मस्सा हो तो वह स्वयं सर्विस के ऊंचे पद को प्राप्त करती है।

नख विचार

बन्धूक पुष्प के समान लाल रंग के तथा ऊंचे उठे हुए नखों वाली स्त्री, ऐश्वर्य शालिनी होती है। टेढ़े, खुरदरे विवर्ण, श्वेत तथा चमकतेदार नाखून होने से स्त्री दरिद्रा होती है। जिन स्त्रियों के नखों पर श्वेत रंग के बिन्दु होते हैं, वे प्रायः व्यभिचारिणी होती हैं। चिकने सुन्दर रंग के अरुणाभायुक्त, वैडूर्य अथवा मोती के समान चमकदार तथा श्वेत बिन्दु युक्त चिह्न सुख देने वाले होते हैं।

चपटी, मोटी, रूखी तथा जिनके पृष्टभाग पर रोम हों, ऐसी अंगुलियां अशुभ होती हैं। अत्यन्त छोटी, पतली, गहरे लाल रंग की तथा विरल अंगुलियां रोग देने वाली होती हैं। यदि अंगुलियों में तीन से अधिक पर्व हों तो उस स्त्री को दुःख प्राप्त होता है।

यदि अंगुलियां गोलाई लिए हुए हों, उनके पर्व बराबर हों वे आगे से पतली कोमल त्वचा युक्त तथा गांठ रहित हों तो ऐसी स्त्री सुख भोगने वाली होती है।

यदि अंगुलियां बहुत छोटी हों तथा दोनों हाथों से अंजुलि बनाने पर उनके बीच में छेद रहें तो ऐसी स्त्री अपने पति के घर को खाली कर देती है। अर्थात् वह धन का संचय करने वाली नहीं होती, खर्चीली होती है।

स्त्रियों के हाथ में गोल, सीधा तथा गोल नाखून वाला कोमल अंगूठा शुभ होता है। जिस स्त्री के अंगूठे अथवा अंगुलियों में यव का चिह्न हो तथा उस यव (जौ) चिह्न के ऊपर तथा नीचे की रेखा बराबर हो तो ऐसी स्त्री धन-धान्य से अत्यधिक सम्पन्न तथा सुख भोगने वाली होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा चौड़ा फैला हुआ हो तो वह विधवा होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा लंबा हो तो वह भाग्य हीन होती है।

स्त्रियों की हस्त रेखा विचार

यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध क्षेत्र पर छोटी-छोटी कई खड़ी रेखायें हों तो वह बहुत बातूनी होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध का पर्वत सूर्य की ओर झुका हुआ हो तो उसे वैधव्य का कष्ट भोगना पड़ता है। उसका पति दुराचारी तथा व्यसनी होता है।

यदि किसी स्त्री के दायें हाथ में भाग्य रेखा के दाईं और अथवा बायें हाथ में भाग्य रेखा के बाईं ओर चतुष्कोण में नक्षत्र चिह्न हो तथा हृदय रेखा टूटी हुई हो तो उसका किसी पुरुष अथवा अपने पति से अत्यधिक प्रेम होता है।

यदि किसी स्त्री के हाथ की तर्जनी उंगली के द्वितीय पर्व पर नक्षत्र चिह्न हो तथा उसके दोनों ओर एक-एक खड़ी रेखा भी हो तो ऐसी स्त्री पतिव्रता होती है।

यदि किसी स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा का उदय चन्द्र पर्वत से हुआ हो वह स्पष्ट रूप से आगे बढ़ती हुई शनि के पर्वत पर चली गई हो तो ऐसी स्त्री विवाह के बाद अपने पति के अधीन रहती है। यदि स्त्री के दायें हाथ में भी ऐसी ही रेखा हो तो उसको उन्नति तथा भाग्योदय में सहायता प्राप्त होती है।

यदि स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा चन्द्र पर्वत से उत्पन्न होकर गुरु पर्वत पर गई हो तो वह धनी पुरुष की पत्नी होती है तथा उसे सुख, यश एवं विदेश गमन आदि से लाभ प्राप्त होते रहते हैं।

यदि विवाह रेखा में से एक शाखा हृदय-रेखा की ओर लटकी हुई हो परन्तु हृदय रेखा से मिली न हो तो ऐसी स्त्री का पति शराबी होता है और उसके नशे में अपनी पत्नी को दुःख देता है। स्त्री के हाथ और पाँव की उंगलियां यदि टेढ़ी-बांकी हों तो वैधव्य अथवा हीनता का लक्षण समझना चाहिए। हृदय-रेखा श्रृंखलाकार होकर बीच में शनि क्षेत्र की ओर छुकी हुई हो तो ऐसी रेखा वाली स्त्रियों को पुरुषों की परवाह नहीं रहती।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रश्न विचार

जिस भाव सम्बन्धी विषय का विचार करना हो उस भाव का स्वामी कार्येश कहलाता है, और लग्न का स्वामी लग्नेश कहलाता है। अगर प्रश्न लग्न में निम्नलिखित योग हों तो कार्यसिद्धि होती है—

१. लग्न का स्वामी कार्यभाव में हो और कार्येश लग्न में हो।
२. लग्न का स्वामी लग्न में हो और कार्यभाव का स्वामी कार्यभाव में हो।
३. यदि लग्न का स्वामी और कार्यभाव का स्वामी दोनों ही लग्न में हों।
४. लग्नेश और कार्येश दोनों कार्यभाव में हों।

इन चारों योगों में से कोई एक योग हो तथा लग्नेश और कार्येश इन दोनों पर चन्द्रमा की दृष्टि हो और चन्द्रमा को भी लग्नेश कार्येश देखे तो कार्य सिद्धि जाननी चाहिए। यदि चन्द्रमा मित्रक्षेत्री हो तो और भी अधिक शुभ जानना चाहिए।

यदि लग्नेश कार्येश के ऊपर चन्द्रमा की दृष्टि न हो तथा अन्य शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो प्रश्न सम्बन्धी कार्य से भिन्न कोई नवीन शुभ प्रयोजन उत्पन्न हो।

लग्नेश लग्न को और कार्येश कार्य भाव को देखता है तो कार्यसिद्धि होगी। यह कार्यसिद्धि तब होगी जब चन्द्रमा कार्यभाव पर आएगा।

धन लाभ कब होगा

१. लग्न का स्वामी लेने वाला होता है और ग्यारहवें स्थान का स्वामी देने वाला होता है। जब लग्नेश और एकादशेश का योग होता है और चन्द्रमा लाभ भाव को देखता है तो लाभ होता है।
२. यदि लग्नेश छठे, आठवें, बारहवें घर में हो तो धन का नाश होता है।

गर्भ सम्बन्धी प्रश्न

१. यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को न देखता हो और पाप ग्रह पंचम भाव में स्थित हो या पंचम भाव को देखता हो तो गर्भपात हो जाएगा।
२. यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को देखता हो तो प्रसव होता है।
३. यदि प्रश्नकाल में जिस किसी चार स्थानों में दो-दो ग्रह हों तो एक साथ दो सन्तानों का प्रसव होता है।
४. प्रश्न लग्न से शुक्र जितने संख्यक स्थान में स्थित हो उतने महीने पर्यन्त गर्भ की स्थिति कहना और शुक्र यदि दसवें, ग्यारहवें, बारहवें भाव में हो तो पंचम भाव से लेकर शुक्र के स्थान तक गिनकर मास संख्या जानी जाती है।

यदि गर्भिणी स्त्री पिता के घर में हो तो पिता से धारित नाम और पति के घर में हो तो ससुराल का नाम ग्रहण करके जो अक्षर संख्या हो उसमें पति की नामाक्षर संख्या मिलाने फिर शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से लेकर प्रश्न पूछने के दिन तक जो तिथि हो यहां तक गिनकर जोड़ दें, योगांक में तीन का भाग दें, एक शेष बचे तो पुत्र, दो बचें तो कन्या, शून्य बचे तो गर्भ नहीं है या गर्भ गिर जाएगा अथवा उत्पन्न होने पर भी उस गर्भ की सन्तति का नाश होगा, ऐसा कहना चाहिए।

सन्तान सम्बन्धी प्रश्न

- पंचम भाव में बुध या शुक्र हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति सम्भव है।
- ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति होगी।
- लग्नेश की पंचम भाव में स्थिति और पंचमेश तथा बृहस्पति का बलवान् होना भी सन्तति कारक योग बनाता है।
- शुभ ग्रह दृष्ट लग्नेश और पंचमेश का केन्द्रस्थ होना सन्तान योग बनाता है।
- यदि पाँचवें भाव में सूर्य, मंगल और राहु तीनों ही हों तो सन्तान देर से होगी।
- यदि पाँचवें भाव में केतु हो तो सन्तान की प्राप्ति में देर होगी।
- यदि प्रश्न कुण्डली में चौथे भाव में पाप ग्रह और पाँचवे भाव में बृहस्पति हो तो सन्तानाभाव का योग है।
- यदि तीसरे और आठवें भाव में शनि हो तो सन्तान नहीं होगी।
- यदि दूसरे, पांचवें या दशम भाव में मंगल हो तो पुत्रहीन योग बनता है।
- यदि पांचवें भाव में शनि और राहु के साथ सूर्य हो तो सन्तान उत्पन्न होते ही नष्ट हो जाती है।

भूमि, मकान सम्बन्धी प्रश्न

- यदि चतुर्थ भाव में शनि द्वारा दृष्ट राहु स्थित हो तो बटवारे में भूमि मकान आदि की प्राप्ति होती है।
- यदि चतुर्थेश द्वितीय अथवा ग्यारहवें भाव में हो तो भूमि आदि का प्रचुर लाभ होता है।
- यदि चतुर्थ भाव शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक को घर, भूमि की प्राप्ति होती है।
- यदि बृहस्पति और शुक्र से दृष्ट चतुर्थेश त्रिकोण अथवा केन्द्र में हो तो जातक अपने परिश्रम से भूमि, मकान, खेत आदि प्राप्त करता है।
- यदि चतुर्थेश और दशमेश में राशि परिवर्तन योग हो तो जातक को घर, भूमि, खेती, बगीचा आदि की प्राप्ति शीघ्र होती है।

मुकद्दमें में जीत हार

१. यदि प्रश्न समय पाप ग्रह लग्न में बैठा है तो वादी जीते और यदि वही पाप ग्रह नीच राशि में, सूर्य के सानिध्य से अस्त या शत्रुग्रह के राशि में हो तो वादी नहीं जीतेगा अर्थात् उसकी हार होगी।
२. यदि सप्तम भाव में बली पापग्रह हो तो शत्रु की विजय हो।
३. यदि लग्न और सप्तम भाव में बराबर पापग्रह हों और वह बराबर बली हों तो मुकद्दमा अथवा लड़ाई देर तक चले और अन्त में दोनों घरों में जो ग्रह अधिक बली होगा उस भाव वाला जीतेगा—प्रश्न लग्न वाला पापग्रह अधिक बली होगा तो वादी की जीत होगी। अगर सप्तम भाव स्थित पाप ग्रह अधिक बली होगा तो प्रतिवादी की जीत होगी।

विवाह में, शत्रु को मारने में, युद्ध में, संकट (आवश्यक विवाद यात्रादि) में भी पापग्रह लग्न में हों तो विजय होती है और प्रश्न लग्न पर पापग्रह की दृष्टि हो तो पराजय होती है।

प्रवासी सम्बन्धी प्रश्न

अगर कोई प्रश्न करे कि अमुक पुरुष विदेश गया है, घर नहीं पहुँचा, बंधा हुआ है या मर गया है?

१. यदि प्रश्न लग्न में पापग्रह हो तो वह मारा नहीं गया है और बन्धन में भी नहीं है अर्थात कुशल से है, ऐसा कहना।
२. प्रश्न लग्न से सप्तम या अष्टम भाव में यदि पापग्रह, अथवा लग्न और सप्तम इन दोनों में पापग्रह हों तो मरण व बन्धन कहना।

यदि प्रश्नकाल में चर राशि अर्थात् मेष, कर्क, तुला और मकर इनमें से कोई राशि लग्न में हो तथा चर राशि का नवांश भी लग्न में हो और लग्न से चौथे भाव में चन्द्रमा हो तो विदेशी अपने घर पहुँच गया ऐसा कहना।

प्रवासी का आगमन

१. प्रश्नकाल में केन्द्र से द्वितीय स्थानों (दूसरे, पाँचवें, आठवें, ग्यारहवें) में ग्रह प्राप्त हो तो विदेश गए व्यक्ति का आगमन कहना। अगर दूसरे, पाँचवें, आठवें और ग्यारहवें भाव में ग्रह न हों तो गोचर में जब इन भावों में ग्रह आने की सम्भावना हो तो प्रवासी तब लौट कर आएगा ऐसा कहना।
२. सातवें केन्द्र को छोड़कर अन्य केन्द्र भाव (१, ४, १०) से द्वितीय भाव (२, ५, ११) में चन्द्रमा हो तो विशेष रूप से आगमन कहना।

रोगी के जीवन मरण का विचार

१. यदि प्रश्न लग्न से सप्तम, द्वादश और दूसरे भाव में पापग्रह हों और लग्न, छठे, आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो शीघ्र मृत्यु करने वाला योग होता है अथवा चन्द्रमा के दोंनो तरफ यदि पापग्रह हों तो भी शीघ्र मृत्यु कारक योग होता है।
२. लग्न में सूर्य और सातवें भाव में चन्द्रमा हो तो भी मृत्यु योग होता है।

अगर जीवन-मरण प्रश्न का न होकर अन्य विषय सम्बन्धी हो तो मृत्यु योग नहीं कहना, खाली कठिनाईयां आएंगी ऐसा कहना।

बन्धन एवं दण्ड विषयक प्रश्न विचार

१. दूसरे-बारहवें अथवा पांचवें-नवें भाव में पाप ग्रह हो तो जातक को कारावास दण्ड भोगना पड़ेगा।
२. चौथे भाव में मंगल और दसवें भाव में शनि हो तो लम्बे कारावास या मृत्युदण्ड का सूचक है।
३. यदि नवम भाव में शुक्र, शनि और सूर्य तीनों एक साथ बैठें हों तो किसी घृणित अपराध में दण्ड भुगतना होगा।
४. यदि लग्नेश और षष्ठेश राहु, केतु से युक्त या दृष्ट होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में बैठे हों तो कठोर कारावास का दण्ड मिलेगा।

अमुक वस्तु खरीदने में लाभ रहेगा

प्रश्नलग्न का स्वामी खरीदने वाला और ग्यारहवें भाव का स्वामी बेचने वाला होता है। यदि लग्न का स्वामी लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो उस वस्तु को खरीदने से प्रश्नकर्त्ता को लाभ होता है। लग्न का स्वामी उदित, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री, वर्गोत्तम आदि में

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

स्थित होकर लग्न को जितनी दृष्टि से देखता हो, उतना ही लाभ होगा। अर्थात् एक चरण दृष्टि से देखता हो तो सवाया लाभ, दो चरण दृष्टि से देखता हो तो ड्योढ़ा लाभ, ऐसा जानना।

आमुक वस्तु बेचने में लाभ रहेगा

प्रश्नकाल में प्रश्न लग्न से एकादश भाव बलवान हो तो खरीदी हुई वस्तु बेचने में लाभ होगा, अर्थात् एकादश भाव का स्वामी एकादश भाव में हो या एकादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो लाभ होगा, ऐसा कहना।

अमुक वस्तु सस्ती रहेगी या महंगी

१. ऐसे प्रश्न में जिस ग्रह से लग्न बलयुक्त होता है वह ग्रह जितने मास तक उस प्रश्न लग्न से अशुभदायक नहीं होता तब तक वह वस्तु सस्ती रहती है।

२. यदि लग्न में पापग्रह हो अथवा लग्न पर एवं लग्नेश पापग्रहों से युक्त एवं दृष्ट हो तो वस्तु महंगी होती है। परन्तु कब तक महंगी रहेगी? इतने दिन में वह प्रश्न लग्न गोचर में शुभत्व को प्राप्त हो तब तक महंगी उसके बाद सस्ती होगी जब लग्न शुभयुक्त और शुभदृष्ट होगा।

३. क्रय-विक्रय के प्रश्न लग्न बलवान् हों तो वस्तु सस्ती और लग्न निर्बल हो तो वस्तु महंगी होती है। लग्न शुभ ग्रह और स्वामी से देखा जाता हो तथा केन्द्र (१, ४, ७, १०) में शुभ ग्रह स्थित हो तो लग्न बलवान होती है। इसके विपरीत अर्थात् पाप ग्रह से दृष्ट, केन्द्र में पाप ग्रह हों तो निर्बल कहलाता है।

अमुक स्थान में गढ़ा धन है या नहीं

१. प्रश्न कुण्डली में चौथे भाव का स्वामी चौथे भाव को देखता हो तो धन है ऐसा कहना। यदि चतुर्थ स्थान पर पापग्रह की भी दृष्टि हो तो धन है परन्तु प्राप्ति नहीं होगी।

२. चौथे भाव में कोई भी ग्रह हो तो धन उत्तम पात्र में है ऐसा जानना। यदि चौथा यानि चतुर्थ भाव पर चतुर्थेश की दृष्टि न हो तो भी यदि चन्द्रमा चतुर्थ स्थान में हो तो धन है, ऐसा कहना।

नष्ट वस्तु प्रश्न

प्रश्न, तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न तीनों एकत्र कर उनको पांच से भाग देने से शेष १ रहे तो वस्तु पृथ्वी में है। २ बचे तो जल में है मिलेगी नहीं। ३ बचे तो आकाश में है मिलेगी नहीं। ४ बचे तो राजा ले गया। ५ बचे तो वायुगत हुई शोक जानो।

मन्दी तेजी जानने का सुलभ प्रकार

तिथि, वार, नक्षत्र, योग, सूर्य संक्रांति, राशि और धान्य इनके ध्रुवांकों की संख्या को जोड़कर ७ से गुणा कर ३ का भाग देने से एक शेष बचे तो भाव उस पदार्थ का समान रहेगा। २ शेष रहे तो सस्ता और ३ अर्थात् ० शेष रहे तो महंगा रहेगा।

नक्षत्र	ध्रुवा	योग	ध्रुवा	वस्तु	ध्रुवा	वार	ध्रुवा
अश्विनी	१७	विष्कुम्भ	१३	धान्य	७७	रविवार	२१
भरणी	५	प्रीति	१२	कनक	१००	सोमवार	१५
कृत्तिका	३२	आयुष्मान	४७	ज्वार	१३३	मंगलवार	१२
रोहिणी	५४	सौभाग्य	५९	मूंग	४१	बुधवार	१२
मृगशिर	४	शोभन	३६	चणा	३५	गुरुवार	१३
आर्द्रा	१३	अतिगंड	४७	झोना	७५	शुक्रवार	१४
पुनर्वसु	२८	सुकर्मा	१८	तोरी	७७	शनिवार	००
पुष्य	३६	धृति	४४	तेल	३९	**राशि**	**ध्रुवा**
अश्लेषा	३६	शूल	१३	घृत	९९	मेष	३
मघा	१५	गंड	२५	खाण्ड	९९	वृष	२२
पूर्वाफाल्गुनी	३	वृद्धि	१७	गुड़	४७	मिथुन	२२
उत्तराफाल्गुनी	३१	ध्रुव	२२	शक्कर	१०१	कर्क	२५
हस्त	१८	व्याघात	२५	कपास	१२९	सिंह	१९
चित्रा	२५	हर्षण	२५	रुई	४४	कन्या	१७
स्वाति	१४	वज्र	१४	कांस्य	३७	तुला	२०
विशाखा	२४	सिद्धि	२२	वस्त्र	१०९	वृश्चिक	१३
अनुराधा	२९	व्यतीपात	१३	स्वर्ण	९६	धन	१६
ज्येष्ठा	३७	वरीयान	३९	हल्दी	७३	मकर	१९
मूल	१८	परिधि	१५	चंदन	१८७	कुम्भ	२३
पूर्वाषाढ़	७३	शिव	१३	चांदी	८१	मीन	१४
उत्तराषाढ़	३०	सिद्धि	१९	मिर्च	६८	**तिथि**	**ध्रुवा**
श्रवण	२५	साध्य	१२	पित्तल	९९	१	१
धनिष्ठा	२३	शुभ	२५	जौ	५०७	२	२
शतभिषा	२४	शुक्ल	२२			३	३
पूर्वाभाद्रपद	९	ब्रह्मा	१३			४	४
उत्तराभाद्रपद	४१	ऐन्द्र	२७			५	५
रेवती	२८	वैधृति	२६	कस्तू.	१३४	६	६
						७	७
						८	८
						९	९
						१०	१०
						११	११
						१२	१२
						१३	१३
						१४	१४
						१५	१५

मेष—सोना, दालें, कंबल, गेहूं, जौ, मसूर।
वृष—वस्त्र, पुष्प, सरसों, गेहूं, यव, चावल, महिष, बेल
मिथुन—रुई, कपास, कमलकंद, बाजरा, जुवार, मुनक्का
कर्क—केला, धान, जायफल, तमालपत्र, दालचीनी, चाय, चीनी
सिंह—शाली, षटरस, मृगछाल, गुड़, खांड
कन्या—ज्वार, बाजरा, कुलथी, मूंग, गेहूं, अलसी
तुला—उड़द, गेहूं, नारियल, सरसों, मटर, हरड़
वृश्चिक—गुड़, खांड, नागरपान, लोहा, शक्कर
धनु—रस, घोड़ा, लवण, चित्र, वस्त्र, शस्त्र, कंदफल
मकर—कनीर, सकुट, मजीठ, जर्मीकन्द
कुंभ—रस, पोस्त, रत्न, रंगदार वस्तुएं
मीन—सीप, मोती, समुद्र झाग, हीरा, पंसारियों की दवाएं

षट् सप्तमगो हानि वृद्धशुक्रः करोति शेषेषु उपचयसंस्थाः क्रूराः शुभदाः शेषेषु हानिकराः इति। जिस वस्तु की तेजी या मंदा देखना हो उस वस्तु को चत्र में राशि कौन सी ऐसा प्रथम देखना। फिर उस राशि में कनसा ग्रह कहां है ऐसा देखना। जिस वस्तु की राशि से बृहस्पति ४।१०।२।११।७।९।५ इतनी राशि पर हो तो वस्तु को मंदा करता है और १।३।६।८।१२ इतनी पर गुरु हो तो तेजी करता है। ऐसा हो २।११।१०।५।८ पर बुध हो तो मंदा करता है और १।३।४।६।७।९।१२ इन स्थानों पर होवे तो तेजी करता है। शुक्र ६।७ पर सर्वदा तेजी करता है और १।२।३।४।५।८।९।१०।११।१२ पर शुक्र सर्वदा मंदा करता है। मंगल, शनि, केतु, सूर्य, क्षीण चन्द्रग्रह ३।६।१०।११ मंदा करते हैं और १।२।४।५।७।८।९ पर तेजी करता है। पूर्ण चन्द्रमा का फल गुरु सदृश देखना। ऐसा मंदा तेजी का फल जानना चाहिए।

नक्षत्रों के पदार्थ—चांदी आदि धातुओं के कारक मंगल, सूर्य हैं। पुनर्वसु, पुष्य, उ.फा., चित्रा, ज्ये., श्रवण, धनि., पू.भा. उ.भा. नक्षत्र हैं। रुई—पुनर्वसु, मूला, रोहि., उ.भा., तेल पदार्थ—आर्द्रा, पुष्य, स्वाति, कृत्तिका, शत., मघा। धान्य—(मक्की, गुवार), उ.भा. पू.भा. श्ले, रोहिणी, कृत्तिका, स्वा., भर। गुड़—मघा, ज्ये., उ.भा.। गुवार—पुष्य, पू.भा.। मटर—श्ले., उ.फा.। सिल्क—पुन., म.। बिनौला—मूल। खिल—उ.भा.। ऊपर के नक्षत्रों में शुभ ग्रह के गमन से नक्षत्र पदार्थों में मंदा का असर रहेगा और अशुभ ग्रहों के गमन से तेजी का असर पड़े॥।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली

श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली को सिद्ध यंत्र ३२(बत्तीसा) के आधार पर तैयार किया गया है। निम्नांकित किसी भी इच्छित प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए इसे प्रयोग में लाया जा सकता है। इस प्रश्नावली में मुख्य-मुख्य बत्तीस प्रश्न दिये गये हैं। कोई भी पाठक साधारण (धन अथवा ऋण) गणित द्वारा अपने प्रश्न का उत्तर पा सकता है। व्यर्थ में किसी सत्यता को परख करने में प्रश्नावली का उत्तर सही नहीं आयेगा। तीन प्रश्न (एक बार में) से अधिक प्रश्नों के उत्तर भी संदेह पूर्ण होंगे, अतः उपर्युक्त बातों का ध्यान रखना आवश्यक ही नहीं परमावश्यक है।

प्रश्नावली में उत्तर जानने की विधि यह है कि दिये बत्तीसा यंत्र के किसी भी कोष्टक में प्रच्छक (प्रश्न पूछने वाला) अपने दाहिने (दक्षिण) हाथ की मध्यमा अंगुली रखने से पूर्व "ॐ नमो भैरवाय" मन्त्र को तीन बार जप लें। आगे प्रश्न क्रम संख्या और जिस अंक पर अंगुली रखी है दोनों का योग कर लें तथा इस योग में से ९ घटा दें, शेष जो संख्या बचे उसे संख्या वाले प्रश्न के सामने देवता का नाम देख लें। जिस देवता का नाम लिखा है उसके नीचे यन्त्र कोष्टक संख्या के आगे उत्तर देख लें-

मान लो कोई प्रश्न पूछना चाहता है कि मेरा विवाह होगा या नहीं तो यह प्रश्न संख्या हुई १२ (बारह) और प्रश्न कर्ता ने यंत्र में १५ के अंक पर अंगुली रखी। अतः यन्त्र के कोष्टक की संख्या है १५ (पन्द्रह) दोनों का योग आया २७ (सत्ताईस)। इसमें से ९ (एक) घटाया तो शेष रहे २६ (छब्बीस) २६वीं संख्या का देवता है केतु, अतः केतु के नीचे १५वीं संख्या का उत्तर आया अर्थात् विवाह उपाय से होगा।

जब प्रश्न संख्या और यंत्र संख्या कोष्टक संख्या का योग एक घटाने से भी ३२ से अधिक आये तो इसमें से ३२ घटा कर तब उपर्युक्त विधि से उत्तर देखना चाहिये जैसे प्रच्छक का प्रश्न है मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी। प्रश्न संख्या है २९ यन्त्र के कोष्टक (जिसमें अंगुली रखी है) की संख्या है १५ इनका योग किया तो आया ४४ इसमें १ ऋण किया शेष रहा ४३ वह बत्तीस की संख्या से अधिक है अतः इसमें से ३२ की संख्या घटाई शेष रहे ११ अब पूर्व विधि से ११ की संख्या का देवता देखा तो ज्ञात हुआ "इन्द्र" और देवता इन्द्र के नीचे १५वीं संख्या का उत्तर मिला "पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी।" इसी प्रकार सभी प्रश्नों के उत्तर जान कर लें।

३२ बत्तीसा यंत्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	१	८	१
४	५	१०	१३

प्र. सं.	प्रश्न	अधिपति देवता
१.	मुझे सन्तान सुख मिलेगा या नहीं?	श्री भैरव
२.	मेरी मुकद्दमे में हार होगी अथवा जीत?	शिव
३.	मेरा भाग्योदय कब होगा?	कृष्ण
४.	मुझे नौकरी मिलेगी या नहीं?	राम
५.	मुझे उन्नति के अवसर मिलेंगे या नहीं?	सीता
६.	खेती से मुझे लाभ मिलेगा या हानि?	राधा
७.	मैं अपना मकान बना सकूँगा या नहीं?	लक्ष्मी
८.	क्या मुझे परीक्षा में सफलता मिलेगी?	विष्णु
९.	मेरे लिए विद्या प्राप्ति के योग हैं अथवा नहीं?	नारायण
१०.	मैं इस जीवन में सफलता पा सकूंगा या नहीं?	दामोदर
११.	क्या मुझे भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव है?	इन्द्र
१२.	मेरा विवाह होगा अथवा नहीं?	गणेश
१३.	अमुक रोगी रोग मुक्त होगा या नहीं?	अग्नि
१४.	मेरे स्वप्न का फल कैसा?	वायु
१५.	क्या मेरा स्थानान्तरण हो जायेगा?	वरुण
१६.	मुझे व्यापार में लाभ मिलेगा अथवा हानि?	यम
१७.	क्या मेरी चिन्ता दूर हो जायेगी?	कुबेर
१८.	मित्र के साथ मित्रता कैसी रहेगी?	सूर्य
१९.	मुझे कर्ज मिलेगा या नहीं?	चन्द्र
२०.	मेरी खोई हुई वस्तु मिलेगी अथवा नहीं?	मंगल
२१.	प्रवासी (परदेश गया हुआ) कब लौटेगा?	बुध
२२.	क्या मुझे यात्रा से लाभ मिलेगा?	बृहस्पति
२३.	मेरे भाईयों से कैसे निभेगी?	शुक्र
२४.	क्या मैं कुंआ बनवा सकूंगा?	शनि
२५.	मेरे लिए यह वर्ष कैसा है?	राहु
२६.	मेरा आज का दिन कैसा बीतेगा?	केतु
२७.	अमुक स्त्री को पुत्रोत्पन्न होगा या पुत्री?	मित्र
२८.	क्या मेरी इच्छा पूर्ण होगी?	पृथ्वी
२९.	मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी?	काल
३०.	क्या मेरा सम्बन्धी धोखा देगा?	शेष
३१.	प्रेमिका/प्रेमी का प्रेम शुद्ध है या नहीं?	यक्ष
३२.	मैं तीर्थ यात्रा करूंगा अथवा नहीं?	तक्षक

१. श्री भैरव

१. सन्तान सुख मिलेगा।
२. तीर्थ यात्रा में विघ्न पड़ेगा।
३. प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
४. सम्बन्धी धोखा दे सकता है। होशियार।
५. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
६. इच्छा पूरी होने में अभी देर है।
७. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
८. यह दिन शुभ नहीं है।
९. वर्तमान वर्ष मध्यम रहेगा।
१०. कुआं बनना अभी सम्भव नहीं है।
११. भाईयों से प्रेम बना रहेगा।
१२. यात्रा में हानि होने की आशंका अधिक है।
१३. प्रवासी शीघ्र लौटेगा।
१४. खोई वस्तु शीघ्र मिल जायेगी।
१५. कर्ज मिलने में कठिनाई झेलनी पड़ेगी।

२. शिव

१. मुकद्दमे में जीत होगी
२. सन्तान सुख गृह देवता की पूजा से मिलेगा।
३. तीर्थ यात्रा की इच्छा पूर्ण हो जायेगी।
४. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम नहीं करता/करती।
५. संबन्धी धोखा देगा, सावधान।
६. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
७. अभी इच्छा पूरी नहीं होगी।
८. कन्या सन्तान उत्पन्न होगी।
९. आज का दिन शुभ रहेगा।
१०. यह साल उत्तम नहीं है।
११. कुआं बनवाने की इच्छा पूर्ण होगी।
१२. भाईयों में अनबन रहेगी।
१३ यात्रा लाभकारी रहेगी।
१४. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का इच्छुक नहीं है।
१५. नष्ट वस्तु (खोई) नहीं मिलेगी।

३. कृष्ण

१. आपका भाग्योदय शीघ्र होगा।
२. आप मुकद्दमे मे जीतें इसमें संदेह है।
३. सन्तान सुख मिलेगा किन्तु उपाय से।
४. तीर्थ यात्रा की इच्छा पूरी नहीं होगी।
५. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
६. संबंधी धोखा नहीं देगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

७. पत्नी उत्तम स्वभाव की मिलेगी।
८. निकट भविष्य में इच्छा पूर्ण नहीं होगी।
९. कन्या सन्तान जन्म लेगी।
१०. आज का दिन मानसिक परेशानी वाला रहेगा।
११. वर्ष अत्याधिक लाभप्रद रहेगा।
१२. कुआं नहीं बनवा सकोगे।
१३. भाईयों से तकरार होने का भय है।
१४. यात्रा से लाभ मिलना कठिन है।
१५. चिन्ता न करें, प्रवासी कुछ दिनों में लौट आयेगा।

४. राहु

१. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
२. भाग्योदय होने में अभी देरी है।
३. आप मुकद्दमा हार जायेंगे।
४. सन्तान प्राप्ति की इच्छा पूरी हो जायेगी।
५. तीर्थ यात्रा होने में संदेह है।
६. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम करता/करती है।
७. संबंधी धोखा दे सकता है सावधान रहें।
८. पत्नी के स्वभाव से मेल खा जायेगा।
९. इच्छा अवश्य पूरी होगी।
१०. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
११. यह दिन शुभ ही बीतेगा।
१२. यह वर्ष कष्टमय बीतेगा।
१३. कुआं बनवाने की इच्छा पूरी हो जायेगी।
१४. भाईयों से अनबन रहेगी।
१५. यात्रा करना लाभप्रद रहेगा।

५. सीता

१. उन्नति मिलने का समय आ गया है।
२. नौकरी मिलेगी किन्तु अत्याधिक प्रयत्न से।
३. भाग्योदय होने में अभी देरी है।
४. चिन्ता न करें मुकद्दमा जीत जाओगे।
५. सन्तान सुख के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ करायें।
६. तीर्थ यात्रा पर अवश्य जाओगे।
७. प्रेमी/प्रेमिका का दिखावटी प्रेम है।
८. संबंधी गुप्त चाल चलेगा सावधानी से रहें।
९. पत्नी उत्तम स्वभाव वाली मिलेगी।
१०. इच्छा पूरी हो इसमें संदेह है।
११. कन्या सन्तान जन्म लेगी।
१२. आज का दिन विशेष शुभ नहीं है।
१३. यह वर्ष आप के लिए चुनौतियों से भरा होगा।
१४. कुंआ बनवाने की इच्छा पूरी होने में देरी होगी।
१५. भाईयों से मेल मिलाप रहेगा।

६. राधा

१. खेती से लाभ मिलेगा।
२. उन्नति में अभी देरी है धैर्य रखें।
३. नौकरी नहीं मिलेगी।
४. भाग्योदय शीघ्र होगा।
५. मुकद्दमा जीत लो ऐसी सम्भावना कम ही है।
६. सन्तान सुख अभी देर में मिलेगा।
७. तीर्थ यात्रा पर जाना सम्भव नहीं हो सकेगा।
८. प्रेमी/प्रेमिका मात्र दिखावा करता/करती है।
९. संबंधी धोखा नहीं देगा।
१०. पत्नी का स्वभाव अच्छा नहीं होगा।
११. इच्छा पूरी होने में सन्देह है।
१२. पुत्र सन्तान जन्म लेगी।
१३. यह दिन उत्तम प्रकार से व्यतीत होगा।
१४. यह वर्ष श्रेष्ठतम रहेगा।
१५. कुंआ बन जायेगा।

७. लक्ष्मी

१. मकान की इच्छा पूरी हो जायेगी।
२. खेती से लाभ कम मिलेगा।
३. प्रमोशन हो जाये ऐसा सम्भव नहीं दिखता।
४. नौकरी अथक प्रयत्न करने पर मिलेगी।
५. निकट भविष्य में ही भाग्योदय होने वाला है।
६. मुकद्दमे में जीतना कठिन है।
७. सन्तान सुख मिल जायेगा।
८. तीर्थ यात्रा पर जाने में विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।
९. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध नहीं है।
१०. संबंधी धोखा देने से नहीं चूकेगा।
११. पत्नी चिड़चिड़े स्वभाव की मिलेगी।
१२. इच्छा पूरी हो जायेगी।
१३. कन्या रत्न उत्पन्न होने की सम्भावना प्रबल है।
१४. आज का दिन अच्छा नहीं है।
१५. यह वर्ष मध्यम फलप्रद रहेगा।

८. विष्णु

१. परीक्षा में सफलता मिलेगी।
२. मकान निकट भविष्य में नहीं बना पाओगे।
३. खेती मत करो लाभ की आशा कम है।
४. प्रमोशन शीघ्र ही मिलने वाला है।
५. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
६. भाग्योदय होगा किन्तु थोड़ा समय धैर्य रखें।
७. मुकद्दमे में जीत जाओगे।
८. संतान सुख के लिए संतान गोपाल का अनुष्ठान करें।
९. तीर्थ यात्रा सकुशल होगी।
१०. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम छल है।
११. संबंधी धोखा दे ऐसा नहीं दिख रहा।
१२. पत्नी का स्वभाव अच्छा होगा।
१३. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१४. पुत्र सन्तानन जन्म ले ऐसे योग हैं।
१५. यह दिन शुभ रहेगा।

९. नारायण

१. विद्या प्राप्त कर लोगे, विश्वास करो।
२. परीक्षा में पास हो जाओ इसमें संदेह है।
३. मकान नहीं बन सकेगा।
४. खेती करने से लाभ मिलेगा।
५. प्रमोशन अभी मिलना सम्भव नहीं है।
६. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
७. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
८. मुकद्दमा जीतने में संदेह है।
९. सन्तान सुख अभी देरी से मिलेगा धैर्य रखें।
१०. तीर्थ यात्रा पर जाने का अवसर नहीं मिलेगा।
११. प्रेम का चक्कर हानिकारक है। सावधान रहें।
१२. संबंधी धोखा अवश्य देगा सावधान।
१३. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं मिलेगी।
१४. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१५. कन्या सन्तान का जन्म होगा।

१०. दामोदर

१. जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।
२. अल्प विद्या प्राप्ति के योग हैं।
३. परीक्षा में असफलता हाथ लगेगी।
४. मकान बनाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
५. खेती से अल्प लाभ की आशा रखें।
६. प्रमोशन के योग बन रहे हैं।
७. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
८. भाग्योदय निकट भविष्य में हो जायेगा।
९. मुकद्दमे में जीत निश्चित है।
१०. सन्तान सुख थोड़ा देरी से मिलेगा।
११. तीर्थ यात्रा पर जाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
१२. प्रेमी/प्रेमिका मन से प्रेम करता/करती है।
१३. संबंधी धोखा नहीं देगा।
१४. पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी।
१५. इच्छा पूर्ण हो जावेगी।

११. इन्द्र

१. भूमिगत धन की प्राप्ति हो जायेगी।
२. जीवन में सफलता प्राप्त कर लो ऐसे योग हैं।
३. विद्या पूर्णतया प्राप्त कर लो इसमें संदेह है।
४. परीक्षा उत्तीर्ण कर लोगे।
५. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
६. खेती से लाभ नहीं होगा।
७. प्रमोशन हो इसमें संदेह है।
८. नौकरी अभी नहीं मिलेगी।
९. भाग्योदय शीघ्र हो जायेगा।
१०. मुकद्दमे में जीत जाने का अवसर क्षीण है।
११. सन्तान सुख मिलेगा। लेकिन उपाय से।
१२. तीर्थ यात्रा पर जाना सम्भव नहीं हो सकेगा।
१३. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम झूठा है, बच कर रहें।
१४. संबंधी धोखा देने की योजना बना रहा है।
१५. पत्नी अति नम्र और स्नेहशील होगी।

१२. गणेश

१. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
२. भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव नहीं है।
३. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
४. विद्या प्राप्त कर लोगे।
५. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के चांस नहीं हैं।
६. मकान अभी देर से बनेगा।
७. खेती से लाभ मिलेगा।
८. उन्नति (प्रमोशन) अभी नहीं होगी, देर है।
९. नौकरी मिल जावेगी।
१०. भाग्य का सितारा चमकने वाला है।
११. ऐसे आसार हैं कि मुकद्दमा हार जाओगे।
१२. सन्तान सुख मिल जायेगा।
१३. तीर्थ यात्रा को नहीं जा सकोगे।
१४. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम नहीं है।
१५. संबंधी गुप्त रूप से सहायता करेगा।

१३. अग्नि

१. बीमार अच्छा हो जायेगा।
२. विवाह होने के आसार नहीं हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

३. गड़ा धन मिलेगा, गृह देवता की पूजा करें।
४. जीवन में सफलता मिलेगी।
५. विद्या प्राप्त कर लोगे।
६. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
७. मकान शीघ्र ही बन जायेगा।
८. खेती से लाभ मिलेगा।
९. फिलहाल तरक्की मिलना कठिन है।
१०. नौकरी मिलने के आसार नहीं हैं।
११. भाग्योदय शीघ्र होगा।
१२. मुकद्दमा जीतना कठिन है।
१३. सन्तान सुख मिल जायेगा।
१४. तीर्थयात्रा करने की इच्छा पूर्ण होगी।
१५. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम है।

१४. वायु

१. स्वप्न का फल उत्तम फलप्रद है।
२. रोगी के रोगमुक्त होने में अभी देरी है।
३. विवाह संबंध के लिए उपाय करना।
४. भूमिगत धन मिलने की सम्भावना है।
५. जीवन में सफलता मिलने में संदेह है।
६. विद्या प्राप्त हो जायेगी शिवार्चन करें।
७. परीक्षा में उत्तीर्ण होना कठिन है।
८. मकान बनाने में कठिनाइयां आयेंगी।
९. खेती से लाभ होने की आशा है।
१०. प्रमोशन होने में अभी समय लगेगा।
११. नौकरी निकट भविष्य में नहीं मिलेगी।
१२. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
१३. मुकद्दमे में जीत निश्चित मिलेगी।
१४. सन्तान सुख पाने के लिए सन्तान गोपाल का अनुष्ठान करें।
१५. तीर्थयात्रा नहीं हो सकेगी।

१५. वरुण

१. तबादला शीघ्र ही हो जायेगा।
२. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
३. बीमार के ठीक होने के आसार नहीं हैं।
४. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
५. गड़ा धन मिल जायेगा लेकिन उपाय से।
६. जीवन में अधिक सफलता मिले आशा कम है।
७. विद्या प्राप्ति में विघ्न आयेंगे।
८. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए शिवार्चन करें।
९. मकान बन जायेगा।
१०. खेती से विशेष लाभ की आशा रखना निर्मूल है।
११. उन्नति शीघ्र मिल जायेगी।
१२. नौकरी निकट भविष्य में मिल जायेगी।
१३. भाग्योदय अभी नहीं हो रहा देर लगेगी।
१४. मुकद्दमा जीतना कठिन है।
१५. संतान सुख भाग्य में नहीं है।

१६. यम

१. व्यापार में लाभ मिलेगा, परन्तु सावधानी आवश्यक है।
२. तबादले के योग बन रहे हैं।
३. स्वप्न का फल अच्छा है।
४. बीमार अच्छा हो जायेगा।
५. विवाह के लिए कुमार मन्त्र का सवा लाख जप करें।
६. गड़ा धन मिल जायेगा।
७. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
८. उच्चशिक्षा प्राप्ति के लिए गणपति मन्त्र जपें।
९. परीक्षा में पास हो जाओगे।
१०. मकान बनाने में देर लगेगी।
११. खेती से लाभ हो इसमें संदेह है।
१२. प्रमोशन कठिनाई से मिलेगा।
१३. नौकरी मिलने में संदेह है।
१४. भाग्योदय शीघ्र होने वाला है।
१५. मुकद्दमे में जीत निश्चित है।

१७. कुबेर

१. चिन्ता अभी देर से मिटेगी।
२. व्यापार में लाभ मिलेगा।
३. स्थानांतरण अभी नहीं होगा।
४. स्वप्न शुभ फलप्रद है।
५. बीमार के अच्छा होने की संभावना कम है।
६. विवाह होने की संभावना नहीं है।
७. गड़े धन प्राप्ति के लिए आसुरी सिद्धि करें।
८. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
९. विद्या से लाभ नहीं मिलेगा।
१०. उत्तीर्ण होने के लिए हनुमत् उपासना करें।
११. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
१२. खेती से लाभ नहीं मिलेगा।
१३. तरक्की मिल जाये ऐसा योग नहीं है।
१४. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
१५. भाग्योदय होने के लिए स्वर्णाकर्षण भैरव मन्त्र का जप करें।

१८. सूर्य

१. मित्र धोखा दे सकता है सावधान रहें।
२. चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।
३. व्यापार से लाभ नहीं रहेगा।
४. तबादला हो जायेगा।
५. स्वप्न का फल उत्तम नहीं है।
६. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
७. विवाह शीघ्र हो जायेगा।
८. गड़ा धन भाग्य में नहीं है।
९. जीवन में सफलता प्राप्त करने की सम्भावना नहीं है।
१०. विद्या प्राप्ति नहीं हो सकेगी।
११. परीक्षा में पास होने में संदेह है, मन लगाकर पढ़ो।
१२. मकान शीघ्र बन जायेगा।
१३. खेती से लाभ मिलेगा।
१४. प्रमोशन के योग प्रयत्न साध्य हैं।
१५. नौकरी देर से मिलेगी।

१९. चन्द्र

१. कर्ज मिलने में विघ्न-बाधाएं आयेंगी।
२. मित्र कपट करेगा सावधानी अपेक्षित है।
३. चिन्ता मिट जाएगी, ईश्वराधना करें।
४. व्यापार से लाभ रहेगा।
५. तबादला होकर रुक जायेगा।
६. स्वप्न का फल विशेष अच्छा नहीं है।
७. रोगी स्वास्थ्य लाभ कर लेगा।
८. विवाह के लिए विस्वासु मन्त्र का अनुष्ठान करें।
९. गड़ा धन पितृ पूजन करने से मिलेगा।
१०. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
११. विद्या प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ेगा।
१२. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
१३. मकान बन जाये इसमें सन्देह है।
१४. खेती से अधिक लाभ नहीं मिलेगा।
१५. उन्नति होने के योग क्षीण हैं।

२०. मंगल

१. खोई वस्तु मिल जायेगी प्रयत्न करें।
२. कर्जा मिल जायेगा।
३. मित्र के साथ निभ जाये ऐसा नही लगता।
४. चिन्ता शीघ्र दूर हो जायेगी।
५. व्यापार में हानि होने के योग हैं।
६. ट्रांसफर नहीं हो सकेगा।
७. स्वप्न का फल उत्तम है।
८. बीमार के अच्छे होने की सम्भावना नहीं है।
९. विवाह अभी देर से होगा।
१०. गड़ा धन मिलने में सन्देह है।
११. जीवन में सफलता कष्ट से मिलेगी।
१२. विद्या प्राप्त कर लोगे।
१३. पास होना कठिन है।
१४. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
१५. खेती से लाभ रहेगा।

२१. बुध

१. प्रवासी लौट कर आ रहा है।
२. खोई वस्तु मिल जायेगी।
३. कर्जा इस समय नहीं मिलेगा।
४. मित्र के साथ मित्रता बनी रहेगी।
५. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
६. व्यापार से लाभ मिलेगा।
७. तबादला हो जायेगा।
८. स्वप्न का फल मध्यम है।
९. बीमार अच्छा हो जायेगा।
१०. विवाह हो जायेगा।
११. गड़ा धन मिल जायेगा।
१२. जीवन में सफलता प्राप्त करना असम्भव है।
१३. विद्या प्राप्ति का योग नहीं है।
१४. उत्तीर्ण होने के लिए परिश्रम एवं हनुमत मन्त्र जपें।
१५. मकान नहीं बन सकेगा।

२२. बृहस्पति

१. यात्रा लाभदायक रहेगी।
२. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
३. खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
४. कर्जा बिलम्ब से मिलेगा।
५. मित्र के साथ नहीं निभ सकेगी।
६. चिन्ता दूर हो जायेगी।
७. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
८. तबादला हो जायेगा आश्वस्त रहें।
९. स्वप्न का फल अशुभ है।
१०. बीमार अच्छा नहीं होगा।
११. गड़ा धन मिलना सम्भव नहीं हैं।
१२. विवाह होना सम्भव नहीं है।
१३. जीवन में श्रेष्ठ सफलता प्राप्त कर लोगे।
१४. विद्या प्राप्ति के योग नहीं हैं।
१५. परीक्षा में पास हो जाओगे चिन्ता न करो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

९. मकान बन जायेगा।

१४. विद्या प्राप्ति के योग नहीं है।
१५. परीक्षा में पास हो जाओगे चिन्ता न करो।

२३. शुक्र

१. भाईयों से अनबन रहेगी।
२. यात्रा से लाभ कम मिलेगा।
३. परदेशी (बाहर गया हुआ) शीघ्र लौट जायेगा।
४. खोई हुई वस्तु बहुत जल्दी मिल जायेगी।
५. कर्जा नहीं मिलेगा।
६. मित्र के साथ अच्छा मेल-मिलाप रहेगा।
७. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
८. व्यापार से लाभ मिलेगा।
९. तबादला के योग बन रहे हैं।
१०. स्वप्न का फल शुभ है।
११. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
१२. विवाह के लिए उपाय करें।
१३. भूमिगत धन शीघ्र मिलेगा।
१४. जीवन में सफलता पाना कठिन है।
१५. विद्या प्राप्ति के लिए गायत्री उपासना करें।

२४. शनि

१. कुंआ बनवाने की इच्छा पूरी होगी।
२. भाईयों से बन जाएगी।
३. यात्रा लाभकारी रहेगी।
४. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का विचार नहीं कर रहा।
५. खोई वस्तु यत्न करने पर मिल सकती है।
६. कर्ज मिल जाएगा।
७. मित्र से अनबन होने की सम्भावना है।
८. चिन्ता मिट जाएगी, श्री बटुक भैरवार्चन करें।
९. व्यापार में लाभ मिलने की आशा क्षीण है।
१०. तबादला प्रयत्न करने पर हो सकता है।
११. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
१२. बीमार का स्वास्थ लाभ लेना असम्भव ही है।
१३. विवाह हो जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
१४. गड़ा धन नहीं मिलेगा।
१५. जीवन में अच्छी सफलता मिलेगी।

२५. राहु

१. यह वर्ष मध्यम रहेगा।
२. कुआ बन जाएगा।
३. भाईयों से नहीं बनेगी।
४. यात्रा से लाभ मिलेगा।
५. परदेशी शीघ्र ही लौट आएगा।
६. नष्ट वस्तु मिल जाएगी।
७. कर्ज मिल जाएगा।
८. मित्र धोखा देगा सावधान।
९. चिन्ता मिट जाएगी।
१०. व्यापार में लाभ होगा।
११. तबादला हो जाएगा।
१२. स्वप्न का फल शुभ है।
१३. बीमार के अच्छा होने में संदेह है।
१४. विवाह हो जाएगा लेकिन उपाय से।
१५. गड़ा धन इष्ट देव के पूजन से मिलेगा।

२६. केतु

१. यह दिन शुभ नहीं है।
२. यह वर्ष अच्छा रहेगा।
३. कुंआ नहीं बन सकेगा।
४. भाईयों के साथ प्रेम रहेगा।
५. यात्रा से कोई लाभ नहीं मिलेगा।
६. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा बीमार है।
७. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
८. कर्ज देरी से मिलेगा।
९. मित्र कपटी है अतः उसका त्याग करें।
१०. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
११. व्यापार से लाभ की सम्भावना नहीं है।
१२. तबादला नहीं होगा।
१३. स्वप्न का फल शुभ नहीं है।
१४. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
१५. विवाह उपाय से होना सम्भव है।

२७. मित्र

१. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
२. यह दिन शुभ है।
३. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
४. कुंआ बन जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
५. भाईयों से बिगाड़ रहेगा।
६. यात्रा से लाभ मध्यम रहेगा।
७. प्रवासी आने के लिए चल चुका है।
८. खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
९. कर्ज कठिनाई से मिलेगा।
१०. मित्र के साथ अच्छी पट जायेगी।
११. चिन्ता मिट जाएगी।
१२. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१३. तबादला हो जाएगा।
१४. स्वप्न का फल उत्तम है।
१५. रोगी के स्वस्थ होने में संदेह है।

२८. पृथ्वी

१. इच्छा पूरी होने में देरी है।
२. कन्या रत्न की प्राप्ति होगी।
३. यह दिन मध्यम रहेगा।
४. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
५. कुंआ बनने में बाधाएं हैं।
६. भाइयों से मिलाप रहेगा।
७. यात्रा में लाभ मिलेगा।
८. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
९. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
१०. कर्ज नहीं मिलेगा।
११. मित्र के साथ बनने की संभावना नहीं है।
१२. चिन्ता बढ़ सकती है।
१३. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
१४. तबादले की सम्भावना क्षीण है।
१५. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।

२९. काल

१. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
२. इच्छा पूरी होगी।
३. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
४. यह दिन शुभ है।
५. यह वर्ष अधम रहेगा।
६. कुंआ बन जाएगा।
७. भाईयों से अनबन रहेगी।
८. यात्रा में लाभ प्राप्त करना असम्भव है।
९. परदेशी निकट भविष्य में नहीं लौट रहा है।
१०. खोई वस्तु शीघ्र नहीं मिलेगी।
११. कर्ज देर से मिलेगा।
१२. मित्र के साथ नहीं बनेगी।
१३. चिन्ता शीघ्र दूर होगी।
१४. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१५. तबादला हो जाएगा।

३०. शेष

१. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
२. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
३. इच्छा पूरी होने में देरी है।
४. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
५. यह दिन मध्यम रहेगा।
६. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
७. कुआं बनने में आकस्मिक बाधा आएगी।
८. भाईयों से बनना मुश्किल है।
९. यात्रा से लाभ नहीं मिलेगा।
१०. परदेशी शीघ्र लौट कर आने वाला है।
११. खोई वस्तु मिलना कठिन है।
१२. कर्ज अभी नहीं मिलेगा।
१३. मित्र के साथ मेल-जोल रहेगा।
१४. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
१५. व्यापार से लाभ मिलेगा।

३१. यक्ष

१. प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
२. सम्बन्धी से धोखे की आशा नहीं है।
३. पत्नी का स्वभाव सरल होगा।
४. इच्छा देरी से पूरी होगी।
५. पुत्रोत्पत्ति होगी।
६. दिन शुभ रहेगा।
७. यह वर्ष मध्यम शुभप्रद है।
८. कुआं निर्माण की इच्छा पूरी होगी।
९. भाइयों से साधारण मेल रहेगा।
१०. यात्रा से लाभ मिलेगा।
११. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा।
१२. खोई वस्तु मिल जायेगी।
१३. कर्ज मिल जायेगा।
१४. मित्र के साथ नहीं निभेगी।
१५. चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।

३२. तक्षक

१. तीर्थ यात्रा अभी नहीं हो सकेगी।
२. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
३. सम्बन्धी धोखा दे सकता है।
४. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं होगी।
५. इच्छा पूरी होने में देरी है।
६. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
७. दिन शुभ रहेगा।
८. यह वर्ष अरिष्टप्रद होगा।
९. कुंआ देर से बनेगा।
१०. भाईयों से मेल कम रहेगा।
११. यात्रा से लाभ नहीं होगा।
१२. प्रवासी नहीं लौटेगा।
१३. खोई वस्तु मिलना सम्भव नहीं है।
१४. कर्ज मिलने में सन्देह है।
१५. मित्र का साथ कम रहेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

स्वप्न विचार

जीव की तीन अवस्थायें कही गई हैं-जागृत, सुषुप्ति और स्वप्न। पूर्ण बोध युक्त रहकर क्रियाशील होने को जागृत, सोने अर्थात् निद्रावस्था को सुषुप्ति तथा सोने और जागने (सुषुप्ति एवं जागृत) के बीच की अवस्था स्वप्न कहलाती है। स्वप्न के मुख्यत: सात भेद हैं। बहुत लम्बे तथा बहुत छोटे स्वप्न प्राय: निष्फल होते हैं। स्वप्न का फल कब मिलेगा। इसके बारे में शास्त्रकारों का मत है कि रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष पश्चात्, दूसरे प्रहर में देखे गये का छ: मास में, तीसरे प्रहर में देखे गये का तीन मास में, चौथे प्रहर में देखे गये का एक मास में, अरुणोदय अर्थात् सूर्योदय से कुछ काल पूर्व में देखे गये स्वप्न का फल एक सप्ताह में मिल जाता है।

स्वप्न	फल
आकाश में उड़ना	लम्बी यात्रा, पदोन्नति हो
आकाश से गिरना	कष्ट मिले, अवनति हो
अनाज भरना	धन लाभ हो
आग देखना	धन प्राप्ति हो
आग उठाना	कष्ट मिले
अनाज बेचना	हानि हो
अंगूठी पहनना	सुन्दर स्त्री मिले
आम खाना	लाभ मिले
आंधी देखना	यात्रा में कष्ट, चिन्ता
अनार खाना	अधिक धन लाभ हो
ऊंट देखना	लाभ, उन्नति हो
ऊंट से गिरना	अवनति हो
हंसना	कठिनाई आवे
रोना	अच्छा समाचार मिले
शत्रु के साथ खाना	समझौता हो
अपने को मृत देखना	चिन्तामुक्ति, हर्ष मिले
अपने को बूढ़ा देखना	सम्मान मिले
बाल कटाना	व्यापार में हानि
हाथ, पैर धोना	चिन्ता मुक्ति
मां का आलिंगन करना	सौभाग्य प्राप्ति
गर्भवती का आलिंगन	कष्ट, हानि
सफेद मांस देखना	लाभ मिले
काला मांस देखना	सन्तान को कष्ट
अपना कटा पैर देखना	यात्रा में विघ्न हो
स्वयं को जलते देखना	बदनामी हो
सफेद वस्त्र पहनना	लाभ मिले
काले वस्त्र पहनना	हानि चिन्ता
पीले वस्त्र पहनना	दमा रोग हो
लाल वस्त्र पहनना	शुभ, प्रशंसा मिले
वस्त्र फटे देखना	चिन्ता से मुक्ति मिले
बर्फ गिरती देखना	शत्रु वृद्धि हो

स्वप्न	फल
सूखा वृक्ष देखना	लाभ मिले
दूध देखना	शत्रु नष्ट हो
शराब फैंकना	मन को शान्ति मिले
शराब पीना	कष्ट मिले
कई प्रकार की शराब मिलाते देखना	झगड़े, फसाद में फंसे, अपवाद फैले
जल पीना	सौभाग्य सूचक
अपने को नंगा देखना	सम्पत्ति की हानि
अपने को गंदगी के ढेर पर बैठे देखाना	कठिनाइयों का सामना करना पड़े
सांपों को पांवों से रौंदना	शत्रु का नाश हो
मिठाई खाना	विपत्ती आये
तलवार लिए व्यक्ति देखना	किसी से झगड़ा हो
बिच्छू काटे	बीमारी हो
अण्डे खाना	व्यर्थ का झगड़ा हो
कुत्ता भौंकता दिखे	शत्रुओं का नाश हो
चूहा दिखाई दे	शुभ है, लाभ हो
वर्रे (भिड, ततैया) दिखें	शत्रु परास्त हों
मरा बैल देखना	सूखा पड़े
सुरमा लगाना	रोग हो
सूर्य देखना	उच्चाधिकारी से मिलना
बादल देखना	उन्नति हो
धूक देखना	परेशानी हो
थूकना	खर्चा बढ़े
भैंस देखना	मुसीबत आये
हंस देखना	प्रतिष्ठा बढ़े
भेड़िया देखना	राजभय हो
अपने बाल सफेद देखना	आयु बढ़े
मल (टट्टी) खाना	धन मिले
मल लगाना	व्यय बढ़े
कोई फल दे	पुत्र हो, लाभ हो

स्वप्न	फल
फूल देखना	प्रेमी से मिलन हो
पकवान खाना	प्रसन्नता हो
पान खाना	स्त्री संग हो
पिंजड़ा देखना	कारागार मिले
तीतर देखना	अच्छा समाचार मिले
हरा वन देखना	अच्छा समाचार मिले
सूखा वन देखना	चिन्ता हो
तालाब भरा देखना	दूसरे से धन मिले
मुर्दा देखना	स्वास्थ्य लाभ हो
स्त्री से सहवास करना	धन प्राप्ति हो
चन्द्रमा देखना	प्रतिष्ठा मिले
ग्रहण देखना	आफत आये
तेल पीना	रोग हो
खाना बनाना	बच्चे बीमार हों
तिल खाना	बदनामी हो
घोड़े पर चढ़ना	व्यापार में लाभ
घोड़े से गिरना	व्यापार में हानि
बांहे कटी देखना	भाई की मृत्यु हो
सुअर देखना	आयु कम हो
बुलबुल देखना	विद्वानों से मिलन हो
चित्र देखना	राज्य से लाभ
जुआ खेलना	आर्थिक तंगी
कुएं में गिरना	परेशानी हो
कुत्ता काटे	शत्रुभय हो
सफेद सांप काटे	लाभ हो
काला सांप काटे	हानि हो
लाल सांप काटे	शौर्यपूर्ण कार्य करे
पीला सांप काटे	रोग हो
बरात देखना	रोगी हो
रीछ देखना	अच्छा समाचार मिले
विष खाना	चिन्ता, शोक हो
सोना पाना	हानि हो
सांप पकड़ना	शत्रु का नाश हो
सांप मारना	कष्ट से राहत मिले
चीता देखना	असफलता मिले
विद्यालय से भागना	सफलता मिले
ढोलक बजाना (स्त्री)	शीघ्र विवाह हो
ढोलक बजाना (पुरुष)	कठिनाई आये
हस्ताक्षर करना	धन हानि हो
स्याही देखना	इच्छाएं पूरी हों
बिल्ली देखना	हानि, भय

स्वप्न	फल
चूहा काटे	दुर्घटना से बचाव
रथ पर सवारी करना	उच्च पद मिले
जिह्वा (जीभ) कटी देखना	मन्त्री पद मिले
वमन (उलटी) पीना	राज्य पद मिले
जीभ पर लिखना	विद्या प्राप्ति हो
नगर व ग्राम को घेरना	मुखिया पद मिले
गले में मोती का हार पहनना	राज्य पद मिले
कानों में कुण्डल पहनना	राज्य पद मिले
मुकुट धारण करना	राज्य पद मिले
लिङ्ग कटा देखना	स्त्री की प्राप्ति हो
वीर्य पान करना	धन मिले
मूत्र पान करना	धन मिले
रक्त पान करना	धन मिले
शरीर से रक्त निकलना	धन मिले
अपना सिर काटना	धन मिले
गुदा से जल पीना	धन मिले
घर जलता देखना	धन मिले
इन्द्र धनुष देखना	धन मिले
शिव मंदिर देखना	धन मिले
धुंआ पीना	लक्ष्मी मिले
अग्नि खाना	लक्ष्मी मिले
मोती, मूंगा, कीड़ी देखना	धन प्राप्ति हो
चावल खाना	धन प्राप्ति हो
मूंग खाना	धन प्राप्ति हो
सूखे मेवे देखना	धन प्राप्ति हो
इलायची, लौंग इत्यादि खाते देखना	धन मिले
गन्ना चूसना	लक्ष्मी बढ़े
कुंकुम लगाना	कष्ट निवृत्ति हो
देवी, देवता देखना	कष्ट निवृत्ति हो
सुगन्धित पदार्थ देह पर लगाना	सम्मान मिले
झाग वाला दूध पीना	सम्मान मिले
फल खाना व देखना	सम्मान मिले
बादलों, तारों को छूना	सम्मान मिले
मक्खी, मच्छर काटें	स्त्री लाभ मिले
हाथ में वीणा लेना	स्त्री लाभ मिले
अगम्य स्त्रियों से कामुक क्रीड़ा करना	स्त्री लाभ मिले
गेहूँ, जौ, सरसों देखना	विद्या लाभ हो
भगवान विष्णु देखना	विद्या लाभ हो

स्वप्न	फल
सरस्वती देखना	विद्या लाभ हो
जूते फटे देखना	सन्तति नाश हो
सूअर पर बैठी स्त्री पकड़ें	मृत्यु हो
सिंह, मगरमच्छ पकड़ें	कारागार मिले
गधे पर सवार होना	मृत्यु हो
लाल वस्त्र वाली स्त्री से रमन करना	मृत्यु हो
अपना विवाह देखना	मृत्यु हो
कौवे, गीध, नोचते देखना	मृत्यु हो
कौवे, गीध सिर पर बैठे	मृत्यु हो
पिशाच, प्रेतों के साथ मदिरा पीना	मृत्यु हो
सूर्य अस्त होते देखना	मृत्यु हो
कान में सर्प घुसना	भयंकर पीड़ा हो
अपना मांस खाना	अङ्ग-भङ्ग हो
स्त्री का स्तन पान करना	मृत्यु हो
शमशान में मदिरा पीना	मृत्यु हो
पर्वत की गुफा में जाना	आपत्तियां आएं
दांतों का गिरना	धन हानि हो
नाक-कान कटना	धन हानि हो
जलमुर्गी, उल्लू देखना	धन हानि हो
हिरण, बकरा देखना	धन हानि हो
जूते चोरी चले जाना	स्त्री वियोग हो
दोनों हाथ कटे देखना	माता-पिता की मृत्यु
छिपकली देखना	दुर्भाग्य सूचक
दर्पण में मुख देखना	सन्तान प्राप्त हो
सोने, चांदी की टट्टी करना	दश माह में मृत्यु हो
अचानक मोटा होना	आठ माह में मृत्यु हो
अचानक पतला होना	आठ माह में मृत्यु हो
अपने को कीचड़ में फंसे	शीघ्र मृत्यु हो
कैंचुए देखना	गुप्त शत्रु हों
हाथों में दस्ताने पहनना	सम्मान मिले
बकरी देखना	धन लाभ हो
ओले गिरते देखना	दु:ख, कष्ट मिले
टोपी फटना	मानहानि हो
टोपी सिर से गिरना	मानहानि हो
स्वर्ग में जाना	यश-गौरव मिले
नर्क में जाना	दु:ख क्लेश हो
सीढ़ी पर चढ़ना	उन्नति हो
शहतूत का पेड़ देखना	धन-सम्पत्ति बढ़े

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

छिपकली (कोढ़किरली) पतन फल

अङ्ग	फल	अङ्ग	फल
सिर	राज्यलाभ	नीचे का होंठ	धन नाश
नाक की नोक	व्याधि	हृदय	धन लाभ
बायीं बांह	राज भय	उदर	भूषण लाभ
दाहिनी बांह	राजा समान सुख	कन्धा	विजय
ललाट	बन्धु मिलन	स्तन	दुर्भाग्य सूचक
गुल्फ	कारावास	नाभी	बहुत धन मिले
जानु	शुभ लाभ	नाखुन	धान्य लाभ
नेत्र	धनागम	दाहिने अंगुष्ठ	धन लाभ
भौंह	राज्याधिकार प्राप्ति	बायें अंगुष्ठ	हानि, दुःख
वाम मणिबंध	बदनामी	बायां पैर	नाश
दक्षिण मणिबंध	धन लाभ	दायां पैर	यात्रा
कपोल	स्त्री सुख	जंघा	शुभ लाभ
कण्ठ	शत्रु नाश	पादमध्य	स्त्री नाश
बायें कान	बहुलाभ	पादान्ते	मृत्यु
दायें कान	आयु वृद्धि	केशान्ते	मरण तुल्य कष्ट
मुख	मिष्ठान्न भोजन	पीठ पीछे	बुद्धि नाश
ऊपर का होंठ	ऐश्वर्य प्राप्ति	कटि प्रदेश	वाहन लाभ

अङ्ग स्फुरण विचार

सिर	यात्रा हो	बायीं भौंह	आदर, सम्मान
बायां माथा	प्रसन्नता	बायां कान	परेशानी
दायां माथा	कष्ट, यात्रा	दायां कान	पदोन्नति
दायीं आंख	खुशी होगी	गर्दन	लाभ, स्त्री सुख
बायीं आंख	स्त्री वियोग	जीभ	झगड़ा
भौंह के मध्य	प्रेम मिलन	नाक	खुशी हो
बायीं पलक	दुःख कष्ट	पेट	खुशखबरी मिले
दायीं पलक	सुख आनन्द	पीठ	बुरा समाचार मिले
दाहिनी कपोल	लाभ	अण्डकोष	भोगानन्द मिले
बायां कपोल	हानि, व्यय	दायीं बगल	ऐश्वर्य बढ़े
दायीं भौंह	पुत्र सुख	बायीं बगल	पद घटे

योगासनों का अभ्यास

१. साधना करते समय शरीर को चुस्त रखना चाहिए। किसी समय भी ढीलापन व आलस्य नहीं आने देना चाहिए। २. हर एक साधना के पश्चात् शव आसन करना चाहिए। ३. अपने आप को हर समय स्वस्थ और बलवान् मनन् करना चहिए। ४. साधना करते, खाते-पीते तथा चलते समय हर हालत में रीढ़ की हड्डी को सीधा रखना। ५. प्रत्येक आसन का अपना विशेष गुण व प्रभाव होता है। अतः यह आवश्यक है कि साधक अपनी प्रकृति व्यवसाय, आयु व ऋतु के अनुसार आसनों को करें। ६. रोगी साधक को चाहिए कि पूर्ण आरोग्यता प्राप्त होने तक ब्रह्मचर्य का पालन अवश्य करें। चक्रासन से मोटापा कम होता है व अनेक बीमारियों का ईलाज भी होता है जैसे:—१. यह कमर दर्द व गुर्दे के रोगों के लिए लाभकारी है। २. हर्नियां व नलों के रोगों से छुटकारा दिलाता है। ३. चक्रासन से पेट के वायु- विकार दूर होते हैं। ४. चक्रासन से पाचन शक्ति बढ़ती है।

वर्षा ज्ञान

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
१५	५०	४२	३९	३४	२९	३०	२८	२४	२१	१६	१५	१२

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर रहते नीचे लिखे दिनों में जहां कहीं थोड़ी सी वर्षा हो तो इतने दिनों तक वहां वर्षा न होवे जैसे रोहिणी में सूर्य प्रवेश के प्रथम दिन में थोड़ी सी वर्षा हो तो उस दिन से ७२ दिन तक वर्षा की खैंच रहती है। सूर्य रोहिणी पर रहे उन दिनों से गर्मी ज्यादा पड़े तो आगे वर्षा श्रेष्ठ, राजाओं में विग्रह, थोड़ी वर्षा से संवत् नष्ट, यदि अधिक वर्षा हो जावे और नदियों में वर्षा का जल भी चल पड़े तो अशुभ फल नष्ट होकर वर्षा अच्छी होती है। उन दिनों में बिजली वर्षा की कमी। अधिक दिन की बिजली में शुभ, बादल की दिशा में वर्षा की कमी, निर्मल दिशा में वर्षा अधिक होती है।

वर्षा ज्ञान ज्ञान सारणी से वर्षा जानने की रीति दिसम्बर, जनवरी, फरवरी, मार्च इन चारों मासों की तारीखों में जिन जिन तारीखों में जहाँ वर्षा होती है। उसके हिसाब से वर्षा होती है। उसके हिसाब से ही वर्षा ऋतु में जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर इन चार मासों में वहां वर्षा प्रायः हुआ करती है। प्राचीन ज्योतिष के दृष्टि विज्ञान के सिद्धान्त से आधुनिक समय के अनुसार भारत में १२ दिसम्बर के बाद ही शीतकाल में वर्षा साधारण रूप से होने का नियम है। जैसे मान लो कि शीतकाल में लुधियाना से १९ दिसम्बर को वर्षा हुई है तो वर्षा ऋतु में वहां-वहां जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार मान लिया कि शीतकाल में १५ जनवरी को देहली में वर्षा हुई है तो ऊपर की वर्षा ज्ञान सारणी यह पता देगी कि वर्षा ऋतु में वहां २९ जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार जैसे कि २२ फरवरी को शीतकाल में वर्षा हुई तो वहां ५ सितम्बर को वर्षा होगी। वर्षा ज्ञान के लिए शीतकाल में होने वाली वर्षा की तारीख वार टाईम सहित नोट करके देखने से वर्षा ऋतु की वर्षा का ज्ञान ठीक हो सकता है। विशेष सुगमता लिए मेघगर्भ तथा ग्रहों के रस नाड़ी चक्रादि का विचार करना चाहिए।

चक्रासन की विधि

भूमि पर सीधे लेट जाइये। और 3 बार 1: 4: 2 के अनुपात से पूरक कुम्भक व रेचक करना चाहिए। फिर दोनों हथेलियों को दोनों कन्धों के पास भूमि पर टेक लीजिए। पैरों को सिकोड़ कर श्वास की गति समान रखते हुए हाथों और पावों के बल कमर को धीरे-धीरे इस प्रकार उठायें कि वह गोलाकार हो जावे। जितनी देर हाथ व पैर सुख पूर्वक शरीर का भार सहन कर सकें इस आसन को करना चाहिए। पुनः धीरे-धीरे पूर्वावस्था में आ जाना चाहिए। यह आसन एक मिन्ट से शुरू करके तीन मिन्ट तक किया जा सकता है। जो इस तरह नहीं कर सकते उन्हें स्टूल का सहारा लेना चाहिए। योग के हर आसन जहां तक सम्भव हो अनुभवी योगाचार्य की देखरेख में ही करने चाहिए।

वर्षा ज्ञान सारणी

दिसम्बर	जून	जनवरी	जुलाई	फरवरी	अगस्त	मार्च	सितम्बर	अप्रैल	अक्टूबर
१	१४	१	१५	१	१५	१	१५	१	१५
२	१५	२	१६	२	१६	२	१६	२	१६
३	१६	३	१७	३	१७	३	१७	३	१७
४	१७	४	१८	४	१८	४	१८	४	१८
५	१८	५	१९	५	१९	५	१९	५	१९
६	१९	६	२०	६	२०	६	२०	६	२०
७	२०	७	२१	७	२१	७	२१	७	२१
८	२१	८	२२	८	२२	८	२२	८	२२
९	२२	९	२३	९	२३	९	२३	९	२३
१०	२३	१०	२४	१०	२४	१०	२४	१०	२४
११	२४	११	२५	११	२५	११	२५	११	२५
१२	२५	१२	२६	१२	२६	१२	२६	१२	२६
१३	२६	१३	२७	१३	२७	१३	२७	१३	२७
१४	२७	१४	२८	१४	२८	१४	२८	१४	२८
१५	२८	१५	२९	१५	२९	१५	२९	१५	२९
१६	२९	१६	३०	१६	३०	१६	३०	१६	३०
१७	३०	१७	३१	१७	३१	१७	O१	१७	३१
१८	J१	१८	A१	१८	S१	१८	२	१८	N१
१९	२	१९	२	१९	२	१९	३	१९	२
२०	३	२०	३	२०	३	२०	४	२०	३
२१	४	२१	४	२१	४	२१	५	२१	४
२२	५	२२	५	२२	५	२२	६	२२	५
२३	६	२३	६	२३	६	२३	७	२३	६
२४	७	२४	७	२४	७	२४	८	२४	७
२५	८	२५	८	२५	८	२५	९	२५	८
२६	९	२६	९	२६	९	२६	१०	२६	९
२७	१०	२७	१०	२७	१०	२७	११	२७	१०
२८	११	२८	११	२८	११	२८	१२	२८	११
२९	१२	२९	१२		१२	२९	१३	२९	१२
३०	१३	३०	१३		१३	३०	१४	३०	१३
३१	१४	३१	१४		१४	३१	१५		१४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है—(१) जननाशौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भस्रावादि अशौच व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्राव' कहते हैं। पांचवे और छठे मास में 'गर्भपात' और इस के उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नान मात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पांचवें और छठे महीने में गर्भपात हो तो क्रम से ५ और ६ दिन का गर्भिणी को अशौच रहता है, पितादि सपिण्ड को ३ दिन का 'सूतक' होता है। गर्भस्राव और गर्भपात में चारों वर्णों को एकसा ही होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हो तो २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से १ मास तक धर्म कार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल-छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

जननाशौच दान भोजन निर्णय

जननाशौच में पहले तथा छठे-दसवें दिन दान, पति ग्रह का दोष नहीं है। केवल अन्न भोजन का ही निषेध है।

मृतौत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-२ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाय तो माता को १० दिन का सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये हो पितादि सपिण्डों को पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं रहता।

मृताशौच व्यवस्था

नामकरण अर्थात १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दांत आने से पहले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थात् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक अर्थात् चूड़ाकरण संस्कार न होने पर बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है, और ३ वर्ष तक मुण्डन-संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या अशौच व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ७ पुरुषों तक ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाये व प्रसूता हो तो माता पिता और सहोदर भाइयों को ३ दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है। विवाहित कन्या को १० दिन के भीतर माता पिता की मृत्यु की खबर मिले तो ३ दिन का पातक, १० दिन के बाद सुने तो १ दिन का।

मातामह मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १॥ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना की ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १॥ दिन का पातक होता है।

सास ससुर तथा जामातृ मरण पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जायें तो जामातृ पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १॥ दिन का पातक लगता है। जमाई के मरने मे १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय विचार

भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो ३ दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १॥ दिन का पातक होता है, और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का पातक होता है।

अशौच-सम्पात पर निर्णय

१० दिन के अशौच में यदि ५ दिन के भीतर दूसरा १० दिन का अशौच हो जावे तो पहले के अशौच की समाप्ति पर दूसरे अशौच की भी समाप्ति हो जाती है। ५ दिन के बाद ९ दिन के भीतर हो तो पिछले के साथ शुद्धि हो जाती है। यदि १० वें दिन की रात्रि में दूसरा अशौच हो जाय तो दो दिन अशौच और बढ़ जाता है। जननाशौच में मृताशौच अथवा मृतशौच में जननाशौच हो जावे तो मृताशौच के साथ शुद्धि होती है।

प्रथमाब्दे निषिद्ध कार्याणि

प्रथमाब्दे निषिद्धानि महातीर्थस्य गमनपुपवासव्रतानि च अब्दमध्यये न कुर्वीत महागुरुनिपातने। प्रभोर्वा पितरौ यस्य दहस्तस्याशुचिर्भवेत्। नदेयंनापिवैपित्र्यं पूर्णो न वत्सरः। प्रथमाब्दे गयाश्राद्धनिषेध उक्तः—तीर्थ श्राद्धं गयाश्राद्ध श्राद्धमञ्च पैत्रिकम्। अब्दमध्ये न कुर्वीतमहा गुरु विपत्तिषु। गयाश्राद्धं मृतानां तु पूर्णे त्वब्दे प्रशास्यते शुक्रस्यास्तमने चैव देवेज्यस्य तथैव च। प्रेतकार्यं न दुष्येत प्रथम वत्सरं बिना॥ गयायां सर्वकालेषुपिंडंदद्याद्विचक्षण अधिमासे जन्मदिने, अस्ते च गुरुशुक्रयोः। गोदावर्योगयायां च श्री शैले ग्रहणाद्वये। सुरासुरगुरूणां च मौढ्यदोषो न विद्यते॥

गंगायामस्थिनिक्षेपने विचार

अस्तगते गुरौ शके तथैव चाधिमास के। गंगायास्थिनिक्षेप न कुर्यादिति गौतमः॥ दशाहाभ्यन्तरे न दोषः॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हथेलियों में अंकित विवाह रेखा द्वारा दाम्पत्य सुख का विचार

दाम्पत्य जीवन में दो विपरीत आत्मा, अपरिचित अन्जान सा जीवन साथी के रूप में जिन्दगी भर तक निभाने वाली आत्माओं का सुखद-संगम का ही विवाह, जीवन साथी, जीवन प्रेमी, प्रेमी-प्रेमिका आदि पवित्र सूत्र बंधन का नाम जीवन साथी है। दाम्पत्य जीवनरूपी वृक्ष एक ऐसा प्रेम है, जो कभी मुरझाता नहीं? यही तो सफल दाम्पत्य जीवन दर्शन की कुंजी है। प्रेम अंत:करण की एक ऐसी उपज है जो शुष्क से शुष्क, कठोर से कठोर और कितने ही दिशाभ्रांत जीवन को सरल, सरस और प्रकाशवान बना देती है। प्रेम से मधुर संसार में और कुछ नहीं है। जब ऐसे अंजान दो प्राणी मिलते हैं तो आनन्द की त्रिवेणी प्रवाहित होने लगती है। चुंबक के दोनों ध्रुव दो विपरीत दिशाओं में अनन्तकाल से जुड़े हैं, पर उन दोनों का एक ही प्रयत्न है। पुन: मिलने का प्रयत्न अनादि काल से दोनों ध्रुवों की धाराएं एक दूसरें को आकर्षित करने में लगी हैं। जीवन की प्रत्येक सूक्ष्मताएं अलग-अलग होकर भी अपने प्रेमी के प्रति उद्यतन समर्पित होकर इस सिद्धांत की पुष्टि करती है कि विरह में भी प्रेम निखरता है, कभी कम नहीं होता। दाम्पत्य जीवन प्रकृति के समान है जैसे प्रकृति का अवलोकन जिस ओर से किया जाए उसकी शोभा, सुषमा देखते ही बनती है। ऊपर आकाश की ओर देखा जाए तो दिन में सूर्य और रात्रि में चन्द्र, तारों से झिलमिलाता गगन कितना सुन्दर और शोभायमान लगता है। उसी तरह दाम्पत्य जीवन अनुकूलता की स्थिति में वर्षा के बादल और वसन्त के खिलते सुमन के समान है। जबकि असफल दाम्पत्य जीवन काले बादल की तरह तथा कई अपशकुनों से अज्ञात भय से जीवन मरुस्थल के रूप में परिवर्तित हो जाता है। वैसी स्थिति में तो विवाहित होने के बाद पश्चाताप की अग्नि में जलकर दुखी होने की अपेक्षा अविवाहित रहकर ही वृद्ध होना अधिक अच्छा है। आज के परिवेश में अनेक वैवाहिक दाम्पतियों के संबंध मानसिक त्रास के कारण भंग होते देखे जा रहे हैं। और विवाह विच्छेद के मुकदमों की संख्या के साफ तेजी से ऊपर उठ रहे हैं। ऐसी दुखद वैवाहिक घटनाओं को रोकने के लिए विवाह से पूर्व माता-पिता जरा सोचें और किसी योग्य हस्तरेखा विशारद से वर-वधू को हस्त परीक्षण भली-भांति अवश्य करा लेना चाहिए। सिर्फ ज्योतिष से विवाह मिलापक में मंगला-मंगली, नाड़ी दोष का विचार कर लेने में ही इति कर्तव्यता न मानकर वर कन्या दोनों की जन्म-पत्रिका की ग्रह स्थिति का सम्यकरूपेण विचार के साथ-साथ हथेलियों में अंकित विवाह रेखा, मानस रेखा, गुरुपर्वत, शुक्र पर्वत और हृदय रेखा का सम्पूर्ण विचार करके ही अपनी सुनिश्चित राय देनी चाहिए, ताकि भावी जीवन दर्शन में किसी प्रकार की कटुता, मतभेद, आदर-अनादर, नकारात्मक स्थितियां कभी भी इस पवित्र बंधन को कुलसित न कर सकें।

हस्त-सामुद्रिक विद्या के अनुसार बुध पर्वत के ऊपर, कनिष्ट अंगुली के नीचे और हृदय रेखा के ऊपर यह छोटी सी रेखा द्वारा दाम्पत्य सुख आदि का विचार किया जाता है। दाम्पत्य सुख के शुभाशुभ स्थिति का अनुमान लगाने के लिए हृदय रेखा, गुरु पर्वत, मानस रेखा और शुक्र पर्वत का भली-भांति विचार अवश्य करना चाहिए। यह रेखा पर्वत की अनुकूल स्थिति में वैवाहिक जीवन सुखी संपन्न, विचारों में मधुरता, सास-ससुर, माता-पिता के प्रिय एवं अन्य परिवारों के प्रेम संबंध प्राय: साम्यवादि होते हैं। जीवन साथी का जीवन समरसता निरकाल तक बना रहता है। जबकि उपरोक्त रेखा, पर्वत अविकसित, दोषपूर्ण दिख पड़े तो दाम्पत्य जीवन में वैचारिक मतभेद, लड़ाई-झगड़े, जीवन साथी कुछ ना कुछ रोगों से ग्रस्त, शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक विकास में भी बाधा कारक, जीवन साथी के पारिवारिक संबंध में भी अनादर, मतभेद जैसी दुष्प्रवृत्तियों का दाम्पत्य जीवन में सृजन होता है। जिससे प्रभावित होकर असमय जीवन साथी की कम उम्र में ही मृत्यु हो जाती है। ऐसे स्थिति में ऐसे वर-वधू श्री महामृत्युंजय कवच लॉकेट, श्रीयंत्र युक्त नवरत्न लॉकेट, पीला सांलेमानि माला में धारण कर स्वयं श्रीराम रक्षा स्त्रोत एवं बजरंग वाण स्त्रोत नियमित करना चाहिए। इससे पूर्व स्नान आदि से निवृत होकर प्रात: काल तांबे के बर्तन से भगवान सूर्य का जलदान करें, तो शांति प्राप्त होगी। जिस वर-कन्या की विवाह रेखा छोटी हो साथ ही मानस रेखा मंगल पर्वत पर स्पर्श कर रही हो तो ऐसे दाम्पत्य जीवन साथी से सदैव अनादर पाती है। वैवाहिक सुख के लिए जीवन भर तड़पते रहते हैं। जैसे पानी बिन मछली की स्थिति होती है। ऐसे दम्पति के विवाह से पूर्व ही वर-वधू के पक्ष में कई अड़चनें शुरू हो जाती हैं। जैसे कि वर पक्ष के लोग उचित-अनुचित मांगे कन्या पक्ष वालों के सामने अचानक परोस देते हैं। यदि किसी कारणवश उन्हें यदि पूरा नहीं कर पाते तो रुष्ठ होकर बैठ जाते हैं। हर घड़ी असाधारण सम्मान चाहते हैं। उनकी इच्छा आवाभगत में राई रत्ती भी कमी हो जाती है तो आग बबूला होते और अपमानजनक व्यवहार कर बैठते हैं। ऐसे दृश्य प्राय: उपरोक्त रेखा धारक कन्याओं के घर-घर में देखने को मिलते रहते हैं। जिनमें लोग ससुराल वालों के ऊपर शनि-राहु की तरह छा जाते हैं। और किसी तरह विवाह हो भी गया तो कन्या को जीवन भर परेशान किया जाता है। जीवन साथी भी उसे सदैव कटुतापूर्ण वाणी-छेदन करते रहते हैं। जीवन से निराश होकर ऐसी कन्या प्राय: अग्नि में समर्पित होकर जीवन को पलायन कर बैठती हैं। ऐसे अशुभ चिन्ह धारक कन्या को माता-पिता श्री पंचमुखी हनुमान कवच लॉकेट, नवरत्न लॉकेट, संगसितारा माला के साथ किसी मंगलवार को धारण करावे, साथ ही कोई योग्य विद्वान से ३१ हजार श्री महामृत्युंजय जप अवश्य करवा दें, साथ ही कन्या प्रत्येक दिन तीन माला पंचकक्षरीय शिवमंत्र का जप करें। सूर्य रेखा अविकसित हो तथा विवाह रेखा इस रेखा को स्पर्श कर रही हो तो स्त्री-पुरुष से और पुरुष स्त्री से सदैव अनादर पाते हैं। इनका वैवाहिक जीवन दोषपूर्ण एवं ऐसे दम्पति प्राय: नैतिक चरित्र के होते हैं। इनके जीवन में सुख-शांति सदैव खलती रहती है। जीवन में सब कुछ रहते हुए भी कुछ नहीं

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रहता। ऐसे दम्पति प्राण प्रतिष्ठा युक्त नवरत्न लॉकेट, सुनहली माला, श्रीमहामृत्युंजय कवच लॉकेट एवं महासुदर्शन गुरु कवच लॉकेट आजीवन धारणीय है। दाम्पत्य जीवन संयोजन में माता-पिता की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। कोई-कोई माता-पिता वर-वधू के चुनाव में पैसा, उपहार, रंगआभा, शोभा, सुन्दरता को ही प्राथमिकता विशेष देते हैं। ऐसे माता-पिता तो वर-वधू का ऊपरी आवरण तो देख लेते हैं, परन्तु अंत:करण की दुर्भावना स्वभाव, पापभिरुता आदि दुर्गुण आदि अन्दर की दुष्वृत्तियां तो नहीं देख पाते। जब विवाह होकर वर-वधू घर आते हैं, धीरे-धीरे शीघ्र ही दुष्वृत्तियां प्रस्फुटित होने लगती हैं। सारा घर रण-भूमि में परिवर्तित हो जाता है। माता-पिता मूकदर्शक बन करके रह जाते हैं। धीरे-धीरे तनाव मन:स्थिति को मरुस्थल में परिवर्तित कर शीघ्र ही असमय मृत्यु की गोद में सुला देता है। अत: विवाह चुनाव में ऊपरी आवरण की अपेक्षा अंत:करण का इतिहास जानकर ही अपनी सहमति प्रदान करें, तो वैवाहिक जीवन के साथ-साथ पारिवारिक जीवन का समन्वय भी अनुकूल बना रहेगा। ऐसे जातक ज्यादा फँसते हैं जिन्हें एक मात्र कुल दीपक होता है। विवाह रेखा जितनी गहरी, स्पष्ट, गुलाबी आभायुक्त, लंबी होगी उतना ही वैवाहिक जीवन सुखी सम्पन्न होगा। वर-वधू का जीवन भी दीर्घायु होता है। इसके विपरीत यह रेखा हो तो विवाह संपादन में अनर्गल बाधाएं उत्पन्न होती रहती हैं। जिससे विवाह काफी विलंब से होता है। वैसी स्थिति में गुरु कवच लॉकेट, श्रीयंत्र युक्त नवरत्न लॉकेट, सुनहली माला आजीवन धारणीय है। गुरु पर्वत अविकसित हो, मानस रेखा मंगल पर्वत का स्पर्श कर रही हो तो विवाह संपादन के बाद जीवन साथी की शीघ्र मृत्यु हो जाती है। बुध पर्वत विशेष विकसित हो तथा गुरु पर्वत कम विकसित हो तो विवाह में बाधाएं उत्पन्न होती हैं। सम्पूर्ण बातों की जानकारी के लिए दोनों हथेलियों पर काजल लगाकर छापा मारकर हमारे यहां भेजें। जांच परीक्षण २५० रुपये मनिआर्डर द्वारा साथ-साथ भेजें। और कोई शंका-समाधान हो तो उनका उल्लेख करें। उम्र, शिक्षा आदि का भी उल्लेख करें। सम्पूर्ण जांच उपरांत रजिस्ट्री पत्र द्वारा जानकारी भेज दी जाएगी।

आचार्य पंडित दुनदुन शास्त्री

ज्योतिष के आईने में कुछ कठिन रोगों का प्रतिकार संबंधी सलाह

क्या जराजीर्णता से बचे रहना असैर अपेक्षाकृत अधिक लंबी आयुष्य प्राप्त करना संभव है? अब इस प्रश्न का उत्तर हां में मिल रहा है। पुरातन ऋषि-महर्षियों के ऐसे उदाहरण मौजूद हैं। पर देखना यह है कि क्या अब भी ऐसा हो सकता है। स्वास्थ्य विज्ञान का कथन है कि यदि मस्तिष्क को अनावश्यक रूप से उत्तेजित या शिथिल न होने दिया जाए तो निरोग दीर्घ जीवन संभव है। शरीर शास्त्री का कथन है कि अनावश्यक आहार का भार पाचन तंत्र पर न लादा जाए तो बुढ़ापा आने पर भी जराजीर्णता का कष्ट न भुगतना पड़ेगा। और मनुष्य चिरकाल तक क्षमता संपन्न जीवन जी सकेगा। मनुष्य आहार में असंयम बरतकर और मस्तिष्क को उद्वगीन रखकर स्वयं ही जराजीर्णता को आमंत्रित करता है। और जीवन शक्ति के भण्डार को अनावश्यक रूप से खर्च करके सरल संभव आयुष्य का आधा-अधूरा ही उपयोग कर पाता है।

जन्म-पत्रिका में दूसरा (धनेष), छठा (शत्रु एवं रोग भाव), आठवां (मृत्यु भाव) एवं द्वादश (व्यय भाव) में विराजमान ग्रह यदि शत्रु के घर में हो अथवा पाप ग्रहों से आक्रांत हो या इस पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो अपनी दशा, अन्तर्दशा में अवश्य ही रोग पीड़ा प्रस्फुटित होते हैं। जैसे ग्रह के स्वभाव होते हैं वैसी ही बिमारी वह ग्रह उत्पन्न करते हैं। जैसे राहु-केतु-पाचन, बवासीर, भगन्दर, दाद-दीनाय, खुजली। शनि- चोर-चपेट, भयंकर घाव, वात-पित्त, गठिया, साटिका, कमर दर्द, कैंसर। शुक्र-प्रमेय, धातु दुर्बलता, विभिन्न स्त्री-पुरुषों के गुप्त रोग, मधुमेह। बुध-पीलिया, लीवर, लीवरकेल, रक्त न बनना, प्लास्टिक अनिमिया, अजीर्ण, अतिसार। गुरु-चर्बी जनित रोग। मंगल-पाचन तंत्र, चर्म रोग, रक्तचाप। चन्द्रमा-मानसिक रोग तथा सूर्य-हृदय रोग, रक्तचाप, कठिन चर्म रोग, पागलपन जैसे रोग उत्पन्न करते हैं।

(१) विभिन्न मानसिक रोग चन्द्रमा उत्पन्न करता है, यदि जन्म-पत्रिका में चन्द्रमा छठा, आठवां अथवा व्यय भाव में विराजमान शत्रु भाव में अथवा नीच राशि वृश्चिक में, कुंभ में, तुला में, मिथुन कन्या राशि में हो तो पागलपन, उन्माद जैसी बिमारियां उत्पन्न होती हैं। यदि इस प्रकार की बिमारी हो तो श्रीमहामृत्युंजय कवच लॉकेट, नवग्रह माला धारण कराते हुए शंखपुष्पी २०० ग्राम, ब्राह्मी २०० ग्राम, अश्वगंधा १०० ग्राम, हिंगवाष्टक चूर्ण ३०० ग्राम मिलाकर सुबह खाली पेट एक चम्मच ६ ग्राम तथा रात्री विश्राम के समय ६ ग्राम नियमित २ वर्ष तक सेवन करें। यदि जन्म पत्रिका में चन्द्रमा शनि के भाव में राहु या केतु के साथ हो तो मिर्गी, कारका, हिस्ट्रीया जैसे रोग उत्पन्न होते हैं। वैसी स्थिति में नवरत्न लॉकेट, स्फटिक माला तथा महामृत्युंजय कवच लॉकेट धारण कराते हुए ३ साल तक ब्राह्मी ३०० ग्राम, अश्वगंधा १०० ग्राम, शंखपुष्पी १०० ग्राम मिलाकर सुबह-शाम ३-३ ग्राम सेवन करें। साथ ही भोजन के बाद रात्री में ४ ग्राम लवण भास्कर चूर्ण गरम पानी से नियमित सेवन करें, आरोग्य प्राप्त होगा। यह परीक्षित प्रमाणित तथ्य है।

(२) सायटिका, गठिया, कमर दर्द आदि बिमारी राहु-केतु और शनि के सुप्रभाव के कारण होती हैं। यह तीनों ग्रह में से या युति के साथ धन भाव, षष्ठभाव, आठवां अथवा व्यय भाव में शत्रुग्राही अथवा नीच राशि में विराजमान हो तो अपनी दशा, अन्तर्दशा प्रत्यन्तर में वात-पित्त, कुपित्त जैसी बिमारियां उत्पन्न होती हैं। यह रोग असाध्य और कष्टसाध्य भी होता है। इस बिमारी का जनक पाचनतंत्र है। पाचन तंत्र की दुर्बलता से गैस, कब्ज बनना नियति बन जाती है। उपरोक्त रोगों में कोई रोग धीरे-धीरे किसी भी उम्र में प्रस्फुटित होने लगती है। गठिया गांठ-गांठ में जड़ती जाती है। जबकि कटि शूल, सायटिका एक पैर में अथवा दोनों पैरों में तीव्र वेदना के साथ शुरू होता है। जो नितम्भों से शुरू होकर पैर की एड़ियों तक पहुंच जाता है। जो बिच्छू की वेदना की तरह अथवा भाला चुभने जैसा भयंकर दर्द उत्पन्न करता है। यह बिमारी पहले कमर से शुरू होकर जांघ के प्रधान स्नायु में प्रवेश कर जाता है। जिससे रोगी चल-फिर नहीं सकता। आराम से पड़े रहने पर भी दर्द ज्यों का त्यों बना रहता है। रोग पुराना हो जाने पर पैर भी सूखने लगता है। और पीड़ित व्यक्ति सदैव के लिए अपंग बन बैठता है। इस रोग से मुक्ति के लिए जातक किसी योग्य विद्वान से महामृत्युंजय ५१ हजार जप करवा दे, अथवा स्वयं प्रत्येक दिन ४० दिन तक रुद्राक्ष माला से ओम हौं जुं स: मंत्र का जप ५ माला नियमित करें, साथ ही श्री महामृत्युंजय कवच लौकेट, आरोग्य वर्द्धनी श्री दुर्गा कवच लॉकेट, श्रीयंत्र युक्त नवरत्न लॉकेट मटर साईज रुद्राक्ष माला के साथ किसी सोमवार को धारणीय है। उपचार में प्रत्येक दिन रात्रि में

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

भोजन के बाद २५० ग्राम गरम दूध में रेड़ी का तेल १० बूंद से शुरू कर ३० बूंद तक ४५ दिन लगातार सेवन करें। साथ ही महायोग राज गुगुल दो-दो गोली सुबह-शाम रसनादि कवाथ तीन ढक्कन दवा बराबर मात्रा में पानी मिलाकर नियमित छः माह तक सेवन करें। यदि कब्ज ज्यादा रहता है तो पंचाष्कार चूर्ण ५ ग्राम रात्रि विश्राम के समय गरम पानी से लें, अवश्य लाभ मिलेगा।

(३) **बवासीर-** भगंदर, कब्जियत आदि रोग पीड़ा राहु-केतु के कारण ज्यादा होता है। यदि राहु या केतु धन भाव में, अष्टम, व्यय भाव में शत्रु राशि के साथ विराजमान हो, तो जातक को सदैव कब्ज बना रहता है। जिससे मल सूख जाता है। पीड़ित बार-बार मल त्याग का प्रयत्न करता है, जिससे मल बस्ती छिल जाता है, जिससे जख्म बनने लगता है। यह कभी खूनी, कभी बादी रूप में प्रस्फुटित होने लगता है। जो बाद में भगंदर का रूप धारण कर कैंसर के रूप में परिवर्तित हो जाता है। यह रोग असाध्य है न सुसाध्य। परन्तु कष्ट साध्य जरूर है। इस रोग से मुक्ति के लिए श्री दुर्गा कवच लॉकेट एवं महामृत्युंजय कवच लॉकेट, नवग्रह माला, माया मर्यम आजीवन धारणीय है। उपचार के रूप में १० बूंद से ३० बूंद तक एण्डी तेल ५०० ग्राम गरम दूध में डालकर ४५ दिन तक नियमित सेवन करें। साथ ही योगराज गुगुल २ गोली, आरोग्यवर्द्धनी २ गोली, कुमारीआशव अथवा द्राक्षासव के साथ नियमित चार माह तक सेवन करें, लाभ प्राप्त होगा। संभव हो तो किसी योग्य विद्वान से दुर्गा सम्पूर्ण पाठ अवश्य करवा दें, तो विशेष लाभ होगा।

(४) **मधुमेह-** प्रमेह आदि रोग पीड़ा शुक्र के अशुभ प्रभाव से होता है। जन्म-पत्रिका में शुक्र धन भाव में, षष्ठ भाव में, अष्टम भाव में शत्रुग्राही अथवा नीच राशि में विराजमान हो, अथवा पापग्रह का दृष्टिपात हो, अथवा पाप ग्रह से युति कर रहा हो, तो अपनी दशा, अंतर्दशा प्रत्यन्तर में मधुमेह रोग अवश्य उत्पन्न करता है। इस रोग से पीड़ित व्यक्ति को जल्दी-जल्दी प्यास लगती है। पेशाब भी कई बार जल्दी-जल्दी जाना पड़ता है। पेट में कब्ज भी सदैव बनी रहती है। शरीर दिनों-दिन दुर्बल होता जाता है। पैर में दर्द, कमजोरी, झंझनाहट होने लगती है। स्वभाव में भी चिड़चिड़ापन, अनिद्रा आदि रोग भी प्रस्फुटित होने लगता है। ज्यादा मात्रा में शुगर बढ़े रहने पर किडनी अथवा हृदय फेल होने की आशंका बनी रहती है। कभी-कभी इंसान अपनी आंखों की रोशनी खो बैठता है। वैसी स्थिति में इस रोग से मुक्ति के लिए श्री दुर्गा-सम्पूर्ण पाठ २७ सम्पूर्ण लगातार ३ ब्राह्मण विद्वान द्वारा नव दिन में सम्पादित करावें। साथ ही श्री महामृत्युंजय कवच लॉकेट, श्री त्रिपुर सुन्दरी गायत्री कवच यंत्र लॉकेट, हीरा युक्त नवरत्न लॉकेट एक साथ शुक्रवार को धारण कर स्वयं सुबह-शाम जोर जोर से ३ किलोमीटर निमित्त परिचालन करें तथा नेपाली चिरैता कूटकर चूर्ण बनाकर एक चम्मच १०० ग्राम जल में खौलाकर सुबह-शाम सेवन करें, साथ ही अश्वगंधा चूर्ण में कुशमाकर रस ५ ग्राम, स्वर्ण बागेश्वर रस ५ ग्राम बुककर ९० पुड़ियां बनावें तथा सुबह-शाम एक-एक पुड़िया नियमित सेवन करें। यदि कब्ज हो तो आरोग्यवर्द्धनी की २-२ गोली सुबह-शाम गरम पानी के साथ नियमित सेचन करें, अथवा चिकित्सक के परामर्श से दवा लेते रहें।

(५) अपंगों में गणना सामान्यतया उनकी की जाती है, जो जन्मजात विकलांग होते हैं, या किसी दुर्घटना के शिकार हो गये हों। एक दूसरे प्रकार के अपंग हैं, जो मानसिक क्षेत्र का अपना संतुलन अचानक खो बैठते हैं। जिसकी संख्या आज के भागदौड़ के युग में बेतहाश वृद्धि हो रही है। जो परिस्थितियों को समझ नहीं पाते और उनके अनुरूप हल सोच नहीं पाते। मस्तिष्क और शरीर का मध्यवर्ती संतुलन बिगड़ जाने से उनके इच्छित कार्य अवयवों से बन नहीं पड़ते। इन्हें पूरी तरह से पागल तो नहीं कहा जा सकता, पर वे अर्द्धविक्षिप्त स्थिति के होते हैं। इन्हें सनकी कहा जा सकता है। वे इस प्रकार नहीं सोच पाते जो कर सकते हैं। जो कर सकते हैं वे उनसे सोचते नहीं बनता। ऐसे लोग हाथ-पैर से सही सलामत हों तो भी वे अपंगों में ही गिने जाते हैं। इस विकृति का मुख्य कारण असमय अप्राकृतिक मैथुन, प्रेम में निराश, असफलता, तिरस्कार आदि कारणों से ऐसे लोग अचानक तो नहीं धीरे-धीरे अर्द्धविक्षिप्त की स्थिति में पहुंचकर धरती के भार बन जाते हैं। इस स्तर के लोगों की संख्या बड़ी तेजी से बढ़ रही है। विश्व के विकसित राष्ट्रों के मेडिकल साइंस के अथक प्रयास करने के बावजूद भी इस रोग के प्रतिकार हेतु कोई खास निष्कर्ष पर नहीं पहुंच सका है। इस प्रकार की बिमारियां भी भयंकर मानसिक रोग का ही अंग हैं। काफी आग्रह पर अपने विज्ञ पाठकों को मैं इस रोग के प्रतिकार हेतु संक्षेप में कुछ शब्द लिखने का प्रयास कर रहा हूं। इस प्रकार की बिमारी जन्म-पत्रिका में कालसर्प योग, चन्द्र-राहु, सूर्य-राहु, चन्द्रमा अष्टम भाव में वृश्चिक राशिगत, शनि-चंद्रमा, बुध-चन्द्रमा जन्म-पत्रिका में एक साथ किसी भी लग्न के कुंडली में अष्टम, व्यय भाव अथवा धन-भाव में विराजमान हो तो अपनी दशा-अन्तर्दशा प्रत्यान्तर दशा में अवश्य ही पीड़ित करता है। जो व्यक्ति का अंततः मृत्यु का कारण बन जाता है। इससे मुक्ति के लिए कालीफास ६ X चार-चार गोली तीन बार, बायोकॉमिक २५ नम्बर चार-चार गोली तीन बार गरम पानी से तथा ब्राह्मी २०० ग्राम, शंखपुष्पी १०० ग्राम, अश्वगंधा ५० ग्राम एक साथ मिलाकर एक-एक चम्मच सुबह-शाम गौ दूध के साथ तब तक सेवन करें, जब तक कि सम्पूर्ण लाभ न हो जाए। ग्रह शांति के लिए स्पेशल नवरत्न लॉकेट, शंखमाला, श्री महामृत्युंजय कवच लॉकेट, श्री आदित्य हृदय स्त्रोत कवच लॉकेट, मलयागिरी चंदन माला के साथ धारण करें। आरोग्य प्राप्त होगा। यह अनुभव सिद्ध तथ्य है।

(६) हृदय रोग और रक्तचाप से इन दिनों विश्व में करोड़ों की संख्या में रोगी हैं। और इसका प्रभाव भी दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। विकसित मेडिकल सांइस के द्वारा अभी तक इसका कोई खास सुनिश्चित उपचार ज्ञात नहीं कर सके हैं। इससे प्रत्येक वर्ष लाखों लोग अपंग अथवा शीघ्र मृत्यु की गोद में चले जाते हैं। रक्त चाप का अनियंत्रित होना ही हृदय रोग उत्पन्न होने का जनक है। शुरूआत में माथा में चक्कर, पेट में वायु बनना, अजिर्ण, निंद न आना आदि रोग प्रस्फुटित होते हैं। धीरे-धीरे रक्त चाप से यह रोग हृदय रोग के रूप में परिवर्तित हो जाता है। यह रोग उत्पन्न होने पर शुरूआत में बायां हाथ में दर्द, बायीं छाती में दर्द, जकड़न, भारीपन, सांस फूलना आदि लक्षण दृष्टिगोचर होता है। जन्म-पत्रिका में सूर्य नीच राशिगत् तुला में, कुंभ में, षष्ठ-अष्टम-द्वादश भाव में, मंगल-चन्द्र की युति षष्ठ-अष्टम व्यय भाव में अथवा शनि-सूर्य युति धन भाव, अष्टम भाव में हो तो या एक से अधिक ग्रह अष्टम और व्यय भाव में सूर्य सहित कोई भी नीच राशि में विराजमान हो अथवा पापग्रह का दृष्टिपात हो, तो रक्तचाप, हृदय रोग होने की आशंका रहती है। बचाव के लिए सूर्य कवच लॉकेट, महामृत्युंजय कवच लॉकेट, रुद्राक्ष चिकना दाना वाला, नवग्रह माला एक साथ धारणीय हैं। योग्य विद्वान के द्वारा श्री महामृत्युंजय जप सवा लाख अवश्य करा देना चाहिए। नियमित अर्जुन चूर्ण एक चम्मच का चाय बनाकर सुबह-शाम सेवन करें, साथ ही शंखपुष्पी, अश्वगंधा, ब्राह्मी, अर्जुन चूर्ण सम भाग मिलाकर सुबह-शाम सेवन करें। साथ ही बायोकॉमिक २५ नम्बर सुबह-शाम-दोपहर चार-चार गोली सेवन करें।

आचार्य पंडित दुनदुन शास्त्री

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रमल ज्योतिष बिना कुंडली के बताएगा रत्न कैसे, कब पहनें?

डॉ. नरेन्द्र कुमार "भैया" रमल (अरबी ज्योतिष) शोध संस्थान, ३, महल खास, किला, भरतपुर (राजस्थान) फोन-०५६४४-२२३२१६

वेदों में ऋग्वेद में रत्नों के अग्नि तत्व का जिक्र आया है। गरुड़ पुराण, अग्नि पुराण और बृहद् संहिता में रत्नों की व्याख्या देवी शक्ति के रूप में कई तरह की चिकित्सा पद्धति के वास्ते की गयी है। रमल (अरबी ज्योतिष) ज्योतिष शास्त्र के मुताबिक मुख्य रूप से रत्न नौ प्रकार के होते हैं। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में प्रश्नकर्ता की जन्म कुंडली की आवश्यकता कदापि नहीं होती है। प्रश्नकर्ता के प्रस्तार को जिसे जायचा भी कहते हैं। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक बारीकी से अध्ययन हो कि किस ग्रह की प्रतिकूलता (अशुभता) चल रही हो, उस ग्रह से वांछित लाभ प्राप्त करने के वास्ते प्रश्नकर्ता के हाथ पर पासे जिसे अरबी भाषा में "कुरा" कहते हैं एक विशेष स्थान पर डलवाए जाते हैं। यह सारी क्रिया प्रणाली प्रश्नकर्ता के समक्ष होने पर होती है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में प्रश्नकर्ता की जन्म कुंडली, नाम, माता-पिता का नाम, तिथि, वार तक कि पंचांग की भी आवश्यकता नहीं होती है। प्रश्नकर्ता का प्रश्न व प्रश्न की वाकई भावना पूर्ण आस्था की ओर होनी चाहिए। क्योंकि किसी भी ज्योतिष शास्त्र में पूर्ण विश्वास का होना अति आवश्यक है। यदि प्रश्नकर्ता रमलशास्त्र के समक्ष न हो तो रमल ज्योतिष शास्त्र में नवीन शोध कर प्राप्त की गयी विधि "प्रश्न फार्म" के माध्यम से भी यह कार्य किया जा सकता है। इन दोनों प्रणाली द्वारा प्राप्त फलादेश मय समाधान के एक ही आता है, मगर गणितीय पद्धति पृथक; भिन्न अवश्य होती है।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में १६ शकलों पर नौ ग्रहों को निम्न प्रकार से विभाजित किया गया है। जिनके नाम निम्न प्रकार से यहां वर्णित हैं। १. रवि ग्रह, २. चन्द्रमा ग्रह, ३. मंगल ग्रह, ४. बुध ग्रह, ५. गुरु ग्रह, ६. शुक्र ग्रह, ७. शनि ग्रह, ८. राहु ग्रह, ९. केतु ग्रह।

प्रथम रत्न **माणिक** है। इसका प्रतिनिधित्व ग्रह रवि ग्रह है यानी कि सूर्य ग्रह है। रत्न माणिक का रंग गुलाबी होता है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक जिनको रवि ग्रह की प्रतिकूलता (अशुभता) वर्तमान में चल रही हो, उन्हें यह रत्न धारण करना चाहिए। इस रत्न को अनामिका अंगुली में सोने या तांबे की अंगूठी में मढ़वाकर धारण करना चाहिए। इनको धारण करने से नेत्र रोग, पित्त रोग, मिरगी रोग, हृदय रोग, हड्डियों की कमजोरी में लाभ मिलता है। इसे वैद्य हकीम लोग भस्म बनाकर रोगी को नियमानुसार सेवन करने की सलाह देते हैं। इसको सूर्य के सामने रखने पर लाल रंग की किरणें निकलती हैं। इस रत्न को रविवार कि दिन रमल ज्योतिष शास्त्र के शुभ-मुहूर्त में विधि-विधान द्वारा धारण करना चाहिए।

द्वितीय रत्न **मोती** है। इसका प्रतिनिधित्व ग्रह चन्द्रमा है। चन्द्रमणि और मोती एक से गुणों के धारणकर्ता हैं, मगर फिर भी बारीकी से देखें तो एक जैसे तो नहीं हो सकते हैं। चन्द्रमणि पत्थर है, पर मोती रत्न है। रत्न महंगे होने की स्थिति में चन्द्रमणि पहनी जाती है। जिसका असर मोती जैसा नहीं होता है। मगर असर अवश्य ही करता है। इसको भी अनामिका अंगुली में चांदी में जड़वाकर धारण करना चाहिए। वैद्य-हकीम लोग औषधि में मोती रत्न मिलाकर देते हैं, पर चन्द्रमणि को कदापि नहीं। इसे सोमवार के दिन रमल ज्योतिष शास्त्र के द्वारा शुभ-मुहूर्त में ही धारण करना चाहिए। इसके धारण से मानसिक अशांति, मन का उचाटपना का होना, मन में विभिन्न प्रकार की बात का आना व अन्य कार्यों में लाभ अभीष्ट हो। जिस महाशय को चन्द्रमा ग्रह की प्रतिकूलता (अशुभता) बराबर चल रही हो उसे यह रत्न धारण करना चाहिए।

तृतीय रत्न **मूंगा** है। इसका प्रतिनिधित्व मंगल ग्रह है। इसका जन्म समुद्र में होता है। यह स्वयं लाल रंग का कीड़ा होता है। साथ ही लकड़ीनुमा एक लाल रंग की लकड़ी सी बनता है। इसका जन्म समुद्र में होता है। वैज्ञानिक इसे आइसिस कौरोल्ज नाम का लेसेदार कीड़ा के नाम से जानते हैं। इसके तत्व कैल्शियम कार्बोनेट होते हैं। मूंगा रत्न का रंग लाल व सिन्दूरी रंग का होता है। इस रत्न को धारण करने से चर्म रोग, रक्त विकार, रक्त चाप, पठ्ठों की कमजोरी, पुराना जुकाम तक ठीक हो जाता है। इस रत्न को अनामिका अंगुली में सोना अथवा तांबा की अंगूठी में मढ़वाकर धारण करना चाहिए। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक जिसको मांगलिक की स्थिति हो, उन्हें अवश्य ही धारण करना चाहिए। इस रत्न को मंगलवार को धारण किया जाता है तथा रमल ज्योतिष शास्त्र के शुभ-मुहूर्त में विधि-विधान द्वारा पहनने से लाभ प्राप्त होता है।

चौथा रत्न **पन्ना** है। यह बुध ग्रह का प्रतिनिधित्व करने वाला ग्रह है। इसको संस्कृत में मरकत कहते हैं। हिन्दी में पन्ना, अंग्रेजी में एमरल्ड और उर्दू में जमरूद के नाम से जानते हैं। यह चार प्रकार की गैसों द्वारा बनता है। ऑक्सीजन, बैरीलियम, एल्युमीनियम और सीलिका। पन्ने को धारण करने से हर्निया, फेफड़ों के रोग, दमा, मिरगी रोग, मानसिक बीमारी और पाचन क्रिया में प्रबलता से सहायक होती है। इस रत्न को कनिष्ठिका अंगुली मे सोने की अंगूठी मे जड़वाकर धारण किया जाता है। इस रत्न को बुधवार को रमल ज्योतिष शास्त्र के अनुसार ही धारण करना उत्तम रहता है।

पांचवा रत्न **पुखराज** है। जिसका प्रतिनिधित्व गुरु ग्रह है। यह रत्न असली पारदर्शी होता है। इसे कसौटी पर रगड़ने से रंग निखरता है। यह तीन रंगों में पाया जाता है। सफेद रंग, बसन्ती रंग और पीला रंग का। किसी को जहरीले कीड़े ने डंक मार दिया हो तो असली पुखराज को चाल पर रगड़ने से सारा जहर धीरे-धीरे समाप्त हो जावेगा। यह रत्न फलोरिन और एल्युमिनियम से बनता है। जब नमी हवाएं ग्रेनाइट और ग्रेगमेनाइट नाम की शिलाओं से टकराती हैं, तब रत्न पुखराज बनता है। रत्न पुखराज के धारण करने से तिल्ली रोग, पोलिया रोग, जिगर की सूजन, पाचन तन्त्र के दोष की बीमारियों से लाभ प्राप्त होता है। जिस व्यक्ति को रमल ज्योतिष शास्त्र के अनुसार गुरु ग्रह की प्रतिकूलता (अशुभता) बराबर चल रही हो, उन्हें यह रत्न रमल ज्योतिष शास्त्र के अनुसार शुभ मुहूर्त में पहनना चाहिए। इस रत्न को तर्जनी अंगुली में सोने में जड़वाकर धारण किया जाता है। यह रत्न शुभ-विवाह के शीघ्र व आसानी से तथा दाम्पत्य जीवन में मधुरमय (स्नेह) होने के वास्ते भी धारण किया जाता है। साथ ही आध्यात्मिक अध्ययन और प्रत्येक कार्य में उज्जवलता के वास्ते भी नियमानुसार धारण किया जाता है।

छठा रत्न **हीरा** है। इसका प्रतिनिधित्व ग्रह शुक्र है। यह हीरा रत्न रोडेशिया, ब्राजील, बेल्जियम और भारत में मिलता है। हीरा रत्न तीन प्रकार का होता है। नर हीरा तथा नारी और नपुंसक हीरा। जो रत्न चमकदार व हल्का होता है। वह नर हीरा कहलाता है। जो चपटा होता है वह नारी हीरा कहलाता है और अन्तिम नपुंसक हीरा होता है। वह गोल हो व चमक रहित हो और छोटा हो तथा भारी भी होता है।

सातवां रत्न **नीलम** है। इसका प्रतिनिधित्व ग्रह शनि है। यह हरा, सफेद, बैंगनी रंग का और नीले रंग का होता है। असली नीलम हल्के नीले रंग का होता है और पारदर्शी होता है। एक साधारण नीलम को घुमाकर देखने से केवल नीली झलक दिखाई देती है। विशेषकर रत्न नीलम दागी नहीं पहनना चाहिए। दागी रत्न पहनने से झगड़ा हो सकता है। इल्जाम लग सकते हैं व मुकदमा भी कायम हो सकता है। यह रत्न वायु प्रकोप के कारण होने वाली बीमारियों, जोड़ों के दर्द आदि रोगों में भी लाभकारी सिद्ध होता है। इस रत्न को मध्यमा अंगुली में धारण करने का विधान है। रमल ज्योतिष शास्त्र के मुताबिक जिनको शनि ग्रह की प्रतिकूलता (अशुभता) हो, उन्हें रत्न नीलम धारण करना चाहिए। तथा रमल ज्योतिष शास्त्र के अनुसार शुभ-मुहूर्त में पहनना चाहिए। इस रत्न को चांदी की या पंच धातु की अंगूठी में जड़वाकर पहनना चाहिए।

आठवां रत्न **गोमेद** है। इसका प्रतिनिधित्व राहु ग्रह है। यह दो रंगों में पाया जाता है। एक गौ मूत्र रंग का और दूसरा सुनहरी रंग का। जो समुद्र के अन्दर चट्टानें पानी के अन्दर घुल-मिलकर नीचे तह में बैठ जाती हैं। वह गोमेद रत्न बनाकर ही रहती है। यह रत्न श्रीलंका जिसे सिलौन कहते हैं। रत्न सिलौनी सबसे अच्छा रहता है। इस रत्न को धारण करने से चर्म रोग, मिरगी रोग, पांडू रोग दूर होते हैं तथा मानसिकता में भी लाभ प्राप्त कराता है। यानी कि मानसिक भटकन को दूर करता है। इस रत्न को मध्यमा अंगुली में रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक शुभ-मुहूर्त में शनिवार को धारण करना चाहिए।

नवां रत्न **लहसुनिया** है। इसका प्रतिनिधित्व केतु ग्रह है। इसको संस्कृत में विडालाक्ष कहते हैं। हिन्दी और उर्दू भाषा में इसे लहसुनियां कहते हैं और अंग्रेजी में कैट्स आई भी कहते हैं। इस रत्न का रंग बिल्ली की आंख की भांति होता है। असली लहसुनियां को हिलाने से सफेद रंग की झलक पड़ती है व नकली के काले रंग की झलक। यह पैगमेटाइट और नाइस गैसों द्वारा चट्टानों में बनती है। इसे मध्यमा अंगुली में चांदी में जड़वाकर शनिवार को रमल ज्योतिष शास्त्र के मुताबिक शुभ-मुहूर्त में धारण करना चाहिए। इसके धारण से वायु रोग, गुप्त रोग, वायु गोला आदि में राहत मिलती है।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र द्वारा याचक को उक्त रत्नों द्वारा लाभ प्राप्त होगा। मगर लाभ तब ही अच्छा होगा जब ग्रह की प्रतिकूलता (अशुभता) वर्तमान में कहां-कहां पर है। यह स्थिति रमल ज्योतिष शास्त्र के द्वारा सही गणना कर की गयी होगी। साथ ही रत्न कितने वजन का धारण करना चाहिए, यह जानकारी रमल ज्योतिष के उसी गणित द्वारा ही प्राप्त होता है। रत्न सच्चा और रमल ज्योतिष शास्त्र के मुताबिक शुभ-मुहूर्त में प्राण-प्रतिष्ठा कराकर विधि-विधान पूर्वक ही धारण करना चाहिए। किसी भी रत्न को रमल ज्योतिष शास्त्र के मुताबिक बिना जानकारी किए कदापि धारण नहीं करना चाहिए। यदि जातक किसी स्थिति में रत्न धारण नहीं कर सकता है, तो उसे रमल सिद्धयंत्र धारण करना चाहिए ताकि उसे समयानुसार वांछित लाभ, शांति की प्राप्ति हो सके। ऐसा मुख्य रूप से पूर्व रमल ज्योतिष शास्त्र के विद्वानों का मत है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रमल ज्योतिष में बिना कुंडली के जाने सुखी दाम्पत्य जीवन के सूत्र

आदिकाल से ही मानव जाति अपने जीवन को सुखी, सुन्दर, आवंदित और सुरक्षित बनाए रखने के वास्ते हमेशा प्रयत्नशील रहा है। इसी प्रयास के अंतर्गत ज्योतिष शास्त्र, आयुर्वेदिक शास्त्र व आध्यात्मिक ज्ञान का आविष्कार हुआ है। तथा समय-समय पर शोधकर्ताओं द्वारा अनेकों-अनेक शोध भी होते आ रहे हैं। ग्रहों का प्रभाव प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मानव जीवन पर बराबर पड़ रहा है और मानव अपने आप में बराबर भुगत भी रहा है। वैज्ञानिक परीक्षणों द्वारा यह स्पष्ट हो चुका है कि चन्द्रमा का ज्वार-भाटे से सीधा संबंध है। शरीर की रचना में अधिकांश भाग में जल है। चन्द्रमा के प्रभाव से जब समुद्र में ज्वार-भाटा आता है। इसी विचार धारा में हमारे ऋषि-मुनियों ने चन्द्रमा को रमल ज्योतिष शास्त्र में प्रमुख माना है। प्रायः हमें देखने में आया है कि घर से भाग जाने संबंधित समस्याएं तथा मानसिक द्वन्द्व व परेशानी वैवाहिक जीवन में विशेष उतार-चढ़ाव और अत्यधिकता आदि पूर्ण चन्द्रमा (पूर्णमासी), क्षीण चन्द्रमा (अमावस्या) के समय लगभग अधिक घटित होती है। संसार में जलवायु, बाढ़, जल ग्रस्तता, भूकम्प आदि अधिकांशतः इन्हीं समय होती हैं।

माता के गर्भ में उत्पन्न नवजात शिशु जब इस दुनिया में आता है तब ब्रह्माण्डीय ग्रहों के प्रभाव इस पर आकर शुभ-अशुभ फल देना प्रारंभ कर देते हैं। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक प्रत्येक नौ ग्रह किसी विशेष कारक शरीर के अंग, व्यक्तिमत्व, क्षेत्र, कार्य प्रणाली इत्यादि को प्रभावित करते हैं। जैसे रवि ग्रह आत्मा व पिता का, चन्द्रमा ग्रह अंतरात्मा और विचार धारा तथा माता का, मंगल ग्रह शक्ति शौर्य और वीरता तथा क्रियाओं का, बुध ग्रह बुद्धि-विवेक और ज्ञान का, गुरु ग्रह धर्म-संस्कृति, ज्ञान का दिव्य ज्योति का, शुक्र ग्रह आनंद-सुख-शांति, प्रभुत्व, रति क्रिया और पति अथवा पत्नि का, शनि ग्रह आयु व मृत्यु भय का कारक होता है।

: (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक प्रस्तार यानी कि जायचे के १६ घर [illegible] हैं। चार घर प्रस्तार के गवाह होते हैं। जो केन्द्र के घर होते हैं। बाकी १२ घर अलग-अलग क्षेत्रों के प्रतीक होते हैं। जैसे प्रथम घर व्यक्ति के रंग-रूप, स्वभाव, वैचारिकता, भाग्य की उन्नति व अवनति। द्वितीय घर मनुष्य के धन आजीविका, व्यापारिक स्थिति, क्रय विक्रय, पुत्री की कला। तृतीय घर निकटवर्ती व्यक्तियों के आने-जाने, मित्रता इत्यादि। चौथा घर सुख समृद्धि, अचल सम्पत्ति, भूमि। पंचवां घर पुत्र-पुत्री, धर्म, भाई, पेय पदार्थ। छठा घर निकटतम व्यक्ति, नौकर-दास, चौकर बीमारी। सातवां घर रवि ग्रह तथा राहु ग्रह से संबंधित होता है। साथ ही वैवाहिक जीवन में उतार-चढ़ाव, तनाव और तलाक व शुभ-अशुभ साथी ससुराल पक्ष को भी प्रभावित करता है। इसी प्रकार से अन्य घर भी प्रत्येक बातों से निर्धारित होते हैं।

मानव की सुखी अथवा दुखी वैवाहिक जीवन रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के द्वारा किये जाने वाले प्रश्न के प्रस्तार यानी कि जायचा को बारीकी से अध्ययन कर तथा रमल ज्योतिष गणित के मार्ग दर्शन मय समाधान सहित मालूम किया जा सकता है। सुखी वैवाहिक जीवन, वैवाहिक जीवन में मतभेद-तनाव, दाम्पत्य जीवन की समस्याएं, विवाह उपरांत धन की प्राप्ति या नहीं, संतान सुख शीघ्र या देरी से, ससुराल पक्ष से लाभ व शांति की प्राप्ति या नहीं आदि अन्य बातों की जानकारी भी की जा सकती है। यदि रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के प्रस्तार के सातवें घर में क्रूर ग्रह हो और नजर-ए-तसदीक या तालीम की तो वैवाहिक जीवन में अनेकों-अनेक प्रकार की समस्याएं दिन-प्रतिदिन बराबर कायम रहेंगी। साथ ही प्रतिकूलता स्थिति भी बराबर कायम रहेंगी। यह सारी जीवन की स्थिति की जानकारी मय समाधान सहित प्रश्नकर्ता द्वारा पासे डालकर की जाती है। पासे को अरबी भाषा में "कुरा" के नाम से जानते हैं। यह क्रिया रमलाचार्य के समक्ष प्रश्नकर्ता के होने पर होती है। यदि प्रश्नकर्ता रमलाचार्य के सम्मुख न हो तो सारी प्रक्रिया रमल ज्योतिष शास्त्र द्वारा नवीन शोध विषय के मुताबिक 'प्रश्न फार्म' द्वारा भी की जा सकती है। इन दोनों से प्राप्त फलादेश समान ही आता है मगर रमल ज्योतिष शास्त्र की गणित पद्धति भिन्न अवश्य ही है।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र द्वारा प्रश्न नहीं पूछने पर और भारतीय ज्योतिष में कुंडली के सही मिलान न किए जाने पर अथवा दोनों या दोनों के अतिरिक्त अन्य किसी भी ज्योतिष शास्त्र के द्वारा जानकारी नहीं किए जाने पर आज समाज में प्रायः तलाक, पति-पत्नि में टकराव, मान-प्रतिष्ठा में हानि, ससुराल पक्ष द्वारा निरन्तर लाभ न होने पर दाम्पत्य जीवन में स्नेह की कमी तथा अन्य कई परेशानियों का समय-समय पर सामना भी करना पड़ता है। यदि प्रस्तार के चौथे घर में अशुभ ग्रह की प्रतिकूलता हो या पाप ग्रहों से संबंधित स्थिति हो तो दीर्घ आयु में कमी आ जाती है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मतानुसार मानव के पिछले जीवन के कर्मों के फल लगभग ३६ वर्ष की आयु तक कायम रहते हैं। यदि रवि ग्रह किसी अन्य स्थिति के अनुसार अशुभ स्थिति में हो तो मृत्यु का कारण अग्नि होती है। ये बुरे प्रभाव के द्वारा समय-समय पर प्रभाव कम और अधिक होता रहता है।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक दाम्पत्य जीवन के सुख-समृद्धि के वास्ते जिस ग्रह की प्रतिकूलता यानी कि अशुभता हो उस ग्रह का रत्न रमल ज्योतिष शास्त्र के शुभ-मुहूर्त में विधि विधान द्वारा प्राण-प्रतिष्ठा करवाकर जातक को उचित समय पर धारण करना चाहिए, या उस ग्रह का रमल ज्योतिष शास्त्र का अभिष्टता मन्त्र जाप करना अथवा करवाना चाहिए। ताकि जातक को उचित समय पर लाभ सही प्रकार से मिल सके।

रमल ज्योतिष में बिना कुंडली के भविष्य कथन

भारतवर्ष में भविष्य कथन जानने और समाधान के वास्ते अनेक विद्याओं का विद्वान समय-समय पर सहारा लिया करते हैं और ज्योतिष विज्ञान की अनेक शाखाएं भी वर्तमान में मौजूद है। जिसमें रमल (अरबी ज्योतिष) यानी कि 'इल्म-ए-रमल' एक सबसे महत्वपूर्ण ज्योतिष जगत की जीती जागती अनूठी अतिशीघ्र समस्याओं के समाधान करने वाली पद्धति है।

जिसमें प्राणी मात्र (स्थावर और जंगम) का पूर्ण लेखा-जोखा किसी घटना विशेष में पूर्व समय रहते हुए शीघ्र कर खोजा जा सकता है। वैसे तो ज्योतिष की वर्तमान में और भी कई शाखाएं प्रचलित हैं। जिसमें मूक प्रश्न, फाल नामा, केरल पद्धति, प्रश्न-तंत्र इत्यादि मुख्य हैं। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में प्रश्नकर्ता यानी कि याचक की जन्म कुंडली की कदापि आवश्यकता नहीं होती है। यहां तक कि नाम, घड़ी, वार, दिन, समय और तो और पंचांग की भी आवश्यकता नहीं होती है। प्रश्नकर्ता मात्र रमलाचार्य के पास अपने अभीष्ठ कार्य कब तक, किसके माध्यम से, किस प्रकार होगा? एवं अन्य तात्कालिक प्रश्न व वर्तमान समय किस ग्रह की प्रतिकूलता (अशुभता) है? और कब तक बराबर परेशानीमय में रहेगी? किस शेयर्स में तेजी-मंदी कब और किस समय आएगी और इसमें कैसे लाभ होगा या नहीं। साथ ही किस जीन्स में तेजी कब और मंदी कब होगी? इसमें भी लाभ होगा अथवा हानि इत्यादि को मन-वचन और आंतरिक भावना से लेकर जाएं। क्योंकि किसी भी ज्योतिष शास्त्र में श्रद्धा और विश्वास का भाव प्रश्नकर्ता के मन में होना अति आवश्यक है। रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में जीवन के प्रत्येक कठिन से कठिन समस्या के मार्ग दर्शन और समाधान मात्र पासे डालकर किया जाता है। पासे को अरबी भाषा में 'कुरा' कहते हैं। जो प्रश्नकर्ता के हाथ पर रखकर किसी विशेष स्थान पर डलवाए जाते हैं। इससे प्राप्त हुई शकल (आकृति) को रमल ज्योतिषीय गणित के मुताबिक प्रस्तार यानी कि जायचा बनाया जाता है। उस प्रस्तार के माध्यम से प्रश्नकर्ता के समस्त प्रश्नों का मार्ग दर्शन व समाधान गणित के द्वारा तत्काल ही प्राप्त होता रहता है। यह सारी प्रक्रिया प्रश्नकर्ता के रमलाचार्य के सम्मुख होने पर होती है। यदि प्रश्नकर्ता रमलाचार्य के सम्मुख न हो तो प्रश्नकर्ता के समस्त प्रश्नों का जवाब मय समाधान सहित 'प्रश्न-फार्म' द्वारा किया जा सकता है। जो वर्तमान में एक नवीन शोध द्वारा तैयार किया गया है। इन दोनों प्रश्न करने की पद्धति द्वारा प्राप्त परिणाम एक ही आता है। इससे प्राप्त फलादेश में भिन्नता, किसी प्रकार की कमी नहीं होती है। मगर गणितीय स्थिति पूर्णतः भिन्न अवश्य ही होती है। आजकल भारतीय ज्योतिष द्वारा बनायी जा रही भविष्यफल के जानने के वास्ते जन्म कुंडली कुछ लोगों के पास नहीं है या पूर्ण नहीं है तथा जिनके पास है भी तो पूर्ण रूप से सही नहीं है। जिनका फलादेश पूर्ण तथा सही घटित नहीं होता है। इस कारण से प्रश्नकर्ता पूर्ण मानसिक रूप से संतुष्ट नहीं होता है, और न ही उसे इच्छित लाभ प्राप्त होता है। मगर रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में जन्म कुंडली आदि की आवश्यकता कदापि नहीं होती है। रमल शास्त्र का फलादेश इनके मुकाबले काफी सटीक प्राप्त होता है।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में पासा डालने के उपरांत प्रस्तार यानी कि जायचा बनाया जाता है। प्रस्तार के १६ घर होते हैं। १३, १४, १५, १६ घर गवाह यानी कि साक्षी घर होते हैं। प्रस्तार के १, ५, ९, १३ घर अग्नि तत्व के होते हैं। २, ६, १०, १४ घर वायु तत्व के होते हैं। ३, ७, ११, १५ घर जल तत्व के होते हैं और अंतिम घर १३, १४, १५, १६ घर पृथ्वी तत्व के होते हैं।

रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र के मुताबिक १६ शकलों (आकृतियों) को निम्न प्रकार से विभाजित किया गया है जो निम्न हैं-

१. लहियान	९. ब्याज
२. कब्जुल दाखिल	१०. नुस्तुल खारिज
३. कब्जुल खारिज	११. नुस्तुल दाखिल
४. जमात	१२. अतवे खारिज
५. फरह	१३. नकी
६. उकला	१४. अतवे दाखिल
७. अंकिश	१५. इज्तमा
८. हुमरा	१६. तरीका

जिस प्रकार से रमल (अरबी ज्योतिष) शास्त्र में १६ शकलें (आकृति) होती हैं। उन शकलों का विभाजन १२ राशियों पर निम्न प्रकार वर्णित है-

१. मेष	५. सिंह	९. धनु
२. वृष	६. कन्या	१०. मकर
३. मिथुन	७. तुला	११. कुंभ
४. कर्क	८. वृश्चिक	१२. मीन

डॉ. नरेन्द्र कुमार "भैया"

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

राशि - रत्न + उपरत्न

मुफ्त रेट लिस्ट
के लिये लिखें।

पन्ना	हीरा	मोती
पुखराज	माणिक	मूंगा
लहसुनिया	नीलम	गोमेद

हमारे यहाँ हर प्रकार के राशि रत्न + उपरत्न, शुद्ध चाँदी में बनी एक नग की राशि की अंगूठियां व नवरत्न अंगूठियां, पेण्डल इत्यादि १०० प्रतिशत शुद्ध गारन्टी के साथ मिलते हैं।

माल V.P.P या बैंक द्वारा भी भेजा जाता है।

अधिक जानकारी के लिये स्वयं मिलें या पत्र-व्यवहार करें।

श्री पूरणमल कमलकिशोर ज्वैलर्स (रजि.)

दु. नं. 30-31, हल्दियों का रास्ता, मनीराम जी की कोठी का रास्ता, कानोता हाऊस, जौहरी बाजार, जयपुर (राज.)
फोन नं: (दु.) 2568446, (नि.) 2634889 फैक्स: 91-141-2568446 मोबाइल: 98290-63818
email: pmkkgems@yahoo.com Website: www.astralgems.com

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राहु काल विचार

तांत्रिक गोपाल राजू ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र (रजि.)
३०, सिविल लाइन्स रुड़की-२४७ ६६७ (उत्तरांचल)

प्रत्येक दिन सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य काल के आठवें भाग का स्वामी राहु काल कहलाता है। दक्षिण भारत के ज्योतिष मनीषी इस काल को अत्यन्त अनिष्टकारी मानते हैं। इस काल में कोई भी शुभ कार्य प्रारम्भ नहीं किया जाता। उत्तर भारत के चौघड़िया, मिथिला एवं बंगाल के यामार्थ की भाँति दक्षिण भारत के राहु काल का भी यदि विचार किया जाए तो परिणाम अच्छे मिलते हैं। अतः अशुभ यामार्थ, चौघड़िया तथा राहु काल में यात्रा, प्रवास, धन निवेश शुभ कार्य का प्रारम्भ न करें। कहा तो यहां तक गया है कि इस काल में लोग हवन की पूर्णाहुति भी नहीं करते। क्या है यह राहु काल? इसकी गणना स्वयं करना सीखिए:

निम्न सारिणी में प्रत्येक वार के नीचे उसके गुणक दिए गए हैं, जिसके आधार पर राहु काल ज्ञात किया जाता है।

राहु काल चक्र

वार	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
गुणक	७	१	६	४	५	३	२

सर्वप्रथम स्थानीय दिनमान ज्ञात करके उसके समान आठ भाग करिए। अभीष्ट वार के गुणक से उस अष्टमांश को गुणा करके उसे सूर्योदय में जोड़ने से राहु काल ज्ञात हो जाएगा। उसमें दिनमान के १/८वें भाग के समय जो जोड़कर जो समय आएगा, उतने समय तक राहु काल रहेगा। उदाहरण के लिए माना १४ जून २००४ को लखनऊ में सूर्योदय ५ बजकर १४ मिनट पर एवं सूर्यास्त १८ बजकर ४८ मिनट पर हुआ। अतः १८.४८-०५.१४ = १३.३४ घंटे दिनमान है। इसे ८ से भाग दिया तो लगभग १ घंटा ४२ मिनट का १ भाग हुआ। अब १४ जून को सोमवार होने से उसका गुणक १ है। १ घंटा ४२ मिनट में १ को गुणा किया तो उतना ही समय अर्थात १ घंटा ४२ मिनट आया। अतः सूर्योदय ०५.१४ में १ घंटा ४२ मिनट जोड़ने पर ६ घंटा ५६ मिनट आया। इस प्रकार १४ जून २००४ को राहु काल का आरम्भ ६ बजकर ५६ मिनट पर हुआ। इसमें १ घंटा ४२ मिनट का एक भाग जोड़ दिया तो समय आया ८ घंटा ३८ मिनट अर्थात इस दिन राहु काल का समय प्रातः ६ बजकर ५६ मिनट से ८ बजकर ३८ मिनट तक रहेगा। ठीक इसी प्रकार अन्य किसी दिन का राहु काल भी आप निकालकर उससे वांछित फल की प्राप्ति कर सकते हैं।

मंत्र वैज्ञानिक परिवेश में

सृष्टि से पहले जब कुछ नहीं था, तब एक ध्वनि मात्र थी वह ध्वनि अथवा नाद था-ओउम्। किसी शब्द विशेष का सतत् उच्चारण अर्थात् मंत्र। मंत्र में शब्द था, स्वर था अर्थात मंत्र शब्द और स्वर पर आधारित था। किसी शब्द का उच्चारण एक निश्चित लय में करने पर विशिष्ट ध्वनि कम्पन 'ईथर' के द्वारा वातावरण में उत्पन्न होते हैं। यह कम्पन धीरे-धीरे शरीर की विभिन्न कोशिकाओं पर प्रभाव डालते हैं। विशिष्ट रूप से उच्चारण किए जाने वाले स्वर की योजनाबद्ध शृंखला ही मंत्र बनकर मुंह से उच्चारित होने वाली ध्वनि कोई न कोई प्रभाव अवश्य उत्पन्न करती है। इसी आधार को मानकर ध्वनि का वर्गीकरण दो रूपों में किया गया है, जिन्हें वर्णमाला में स्वर और व्यजंन के नाम से जाना जाता है।

मंत्र ध्वनि-नाद पर आधारित है। नाद शब्दों और स्वरों से उत्पन्न होता है। यदि कोई गायक-साधक मंत्र का जानकार है, तो वह ऐसा स्वर उत्पन्न कर सकता है जो निश्चित रूप से प्रभावशाली हो। इसको इस प्रकार देखा जा सकता है- यदि स्वर की आवृत्ति किसी काँच, बर्फ अथवा पत्थर आदि की स्वाभाविक आवृत्ति के बराबर कर ली जाए तो अनुनाद के कारण वस्तु कम्पन आयाम बहुत अधिक हो जाएगा और वह वस्तु खण्डित हो जाएगी। यही कारण है कि फौजियों की एक ताल-लय में उठने वाले कदमों की चाप उस समय बदलवा दी जाती है अर्थात् बेताल करवा दी जाती है जब वह बड़े समूह के रूप में किसी पुल पर से जा रहे होते हैं। क्योंकि पुल पर एक ताल में कदमों की आवृत्ति पुल की स्वाभाविक आवृत्ति के बराबर होने से उसमें अनुनाद के कारण बहुत अधिक आयाम के कम्पन उत्पन्न होने लगते हैं। इससे पुल क्षति ग्रस्त हो सकता है। यह शब्द तथा स्वर के नाद का ही प्रभाव है। आप स्वयं कल्पना करिए कि मंत्र तो एक शक्तिशाली बम से भी अधिक प्रभावशाली हो सकता है।

किसी शब्द की अनुप्रस्थ के साथ जब लय बद्ध हो जाती है तब वह प्रभाव देने लगती है, यही मंत्र का सिद्धन्त है। इसीलिए कोई मंत्र जप निरन्तर एक लय, नाद, आवृत्ति विशेष में किए जाने पर वह कार्य करता है। मंत्र के साथ-साथ उसका शुद्ध उच्चारण तथा लय-नाद-आवृत्ति का अनुसरण करना आवश्यक है, तब ही मंत्र प्रभावी सिद्ध होगा।

नूतन वर्ष में नुकसान से बचाव के सरल उपाय

लेखक-प्रेम प्रकाश विद्रोही एम.ए. ज्योतिषाचार्य
संचालक-ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र, मौहल्ला-बोहरान,
पी.ओ.-राजगढ़, जिला अलवर, राजस्थान-३०१ ४०८

श्री विक्रमादित्य सं. २०६२, शाकः १९२७, चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा शनिवार, रेवती नक्षत्र, वर्ष का राजा शनि, मंत्री बुध, सस्येश शनि, धान्येश गुरु, मेघेश भौम, रसेश चन्द्र, नीरेश शनि, व फलेश मंगल होगा।

वर्ष का संक्षिप्त फल

- राजा-शनि व्यापार क्षेत्र व राजनीति क्षेत्र में भारी उलट फेर करेगा। शनि मन्त्री बुध को देख रहा है। यह भी अशुभकारी है, वर्ष फल मध्यम रहेगा। केन्द्रिय मन्त्रिमण्डल, उत्तरी भारत, महाराष्ट्र, पाकिस्तान, अरब देशों में भारी उथल-पुथल, सत्ता परिवर्तन होगा। जगह-जगह विद्रोह व्यर्थ रक्तपात व अग्निकाण्ड होंगे। किसी वरिष्ठ नेता की मृत्यु होगी।
- व्यापार में तिलहन पदार्थ, लोहा, चर्म पदार्थों में भारी उतार चढ़ाव होंगे, अतः ततसम्बन्धि व्यापारी, नवग्रह स्त्रोत, श्री सूक्तम्, गोपाल सहस्त्रनाम, अपराजिता स्त्रोत, राजा दशरथ कृत शनि स्त्रोत का पाठ नियमानुसार करके शेयर क्रय-विक्रय या व्यापारिक वस्तुओं का व्यवसाय करें।

हानि से बचाव के उपाय

- शनिवार को गोदूध मिलाकर प्रातः पीपल में चढ़ाकर पूजन कर सुन्दर काण्ड या बजरंग बाण का एक पाठ घर आकर या मन्दिर में २-३ माह या वर्ष भर करें व बिलायी (काली) वृक्ष की जड़ गल्ले या कैश बॉक्स में पूजा करके रखें।
- सिद्ध श्रीयन्त्र का पूजन कर पूजन स्थान में रखें।
- एकाक्षि नारियल का पूजन कर पूजन स्थल पर रखें।
- गरीबों, पशु व पक्षियों को जल व भोजन का दान करें।
- दुकान या कार्य स्थल में दोष हो तो फेंग सूई की वस्तुओं के विशेषज्ञ की सलाह से प्रयोग करें हानि के बजाय लाभ प्राप्त होगा।
- रोगी, विद्यार्थी, विधवा, अनाथ व असहायों की सहायता करें।
- प्रातः उठते ही "ॐ श्री विष्णवे नमः" मन्त्र का एकादश बार जाप करें।
- जन्म राशि के अनुसार नग धारण करें।
- प्रदोष को शिव पूजन श्वेतार्क पुष्पों व गोदूध से करें व शिव ताण्डव स्त्रोत का एक पाठ नियमित रूप से वर्ष भर करें, प्रदोष के दिन ब्राह्मण या कन्याओं को सागर करावर वस्त्र आदि दान करें।

उपरोक्त सरल उपाय करने से व्यापार शेयर आदि में नुकसान से बचाव होकर लाभ होगा, नियमानुसार कर लाभ उठावें। एक मुखी रुद्राक्ष या बिल्ली की जेर मिल जावे तो विद्वान् पण्डित से सिद्ध कराकर तिजोरी में रखें, श्री लक्ष्मी जी की कृपा प्राप्त होगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

वर्ष 2005 के अन्तिम चार महीनों का भविष्य फल

ज्योतषीय दृष्टि से सन् 2005 देश और देशवासियों के लिए कैसा होगा, यह जानने की कोशिश करेंगे एवं फलस्वरूप नव वर्ष 2005 का जन्मांग इस प्रकार का होगा:-

(यहाँ यह जिक्र करना उचित प्रतीत होता है कि यह लेख तिथि- 6.10.2004 को लिखा गया है।) पहले हम लोग देखेंगे कि वर्ष 2004 के विषय में पिछले साल मैंने क्या लिखा था- "सत्ता पक्ष के लिए बाधा-विघ्न, बदनामी, अपयश आदि का समय होगा। विपक्ष को नुकसान होगा, परन्तु कुछ हद तक विपक्ष लाभ की स्थिति में रहेगा। स्वतंत्र भारत के जन्मांग से बोध होता है कि प्रथम पाँच माह पूर्ववत रहेगा, किन्तु उसके बाद परिवर्तन आयेगा जब देश का व्यवसाय फलेगा-फूलेगा, फिर शेयर मार्केट व पूँजी-निवेश के क्षेत्र में उछाल आयेगा, भारत के नागरिक साहसिक होने का परिचय देंगे, संचार के क्षेत्र में, पर्यटन के क्षेत्र में देश आगे बढ़ेगा। लेखकों, सम्पादकों और लेखन कला से जुड़े लोगों के लिए वर्ष का उत्तरार्द्ध अच्छा होगा। पुनः फिल्म व टेलिविजन तथा कला से जुड़े लोगों के लिए भी वर्ष का उत्तरार्द्ध अच्छा होगा। फिर, भारतीय लोगों के लिए, यह सम्मान व एवार्ड का भी वर्ष होगा विशेषकर वर्ष के उत्तरार्द्ध में।"

1 जनवरी, 2005 से 10 जनवरी, 2005 के दौरान, कुछ अपत्याशित घटनायें घटेंगी और जो हिंसा या विपदा आयेगी वह अन्ततः देश को लाभान्वित कर जायेगी एवं देश की सन्तान के लिए भी वित्तीय लाभ व लाभ का समय होगा तथा इन्वेस्टमेण्ट्स के क्षेत्र में भी देश लाभान्वित होगा, फिर भी इस दौरान, सरकार को सचेत रहना चाहिए क्योंकि दुश्मन व आतंकवादी दोनों पर ही विश्वास नहीं किया जा सकता है।

11 जनवरी, 2005 से 30 जून, 2005 के मध्य, देश के लिए बहुत ही अच्छा समय चलेगा जब भारत साहसी होने का परिचय देगा और पड़ोसी देश के साथ सम्बन्ध बेहतर होंगे एवं व्यापार व व्यवसाय फलेगा-फूलेगा तथा पर्यटन, संचार व खेल-कूद के क्षेत्र में सफलता मिलेगी अर्थात् इस दौरान देश, केन्द्रीय सरकार और देश की जनता तीनों को नाम, यश व सफलता मिलेगी अर्थात् इस दौरान भारत को, सरकार को और देश की जनता को बड़े-बड़े काम में जुट जाना चाहिए क्योंकि यही समय है जब सफलता इनके कदम चूमेगी। साथ ही इस दौरान देश का, सरकार का और आम जनता का भाग्य भी साथ देगा और हर तरह से उन्नति और तरक्की का समय होगा एवं देश और इसकी जनता के लिए शौक-मौज और आनन्द का समय होगा तथा धनोपार्जन का समय होगा तथा व्यापार व व्यवसाय, संचार व पर्यटन के क्षेत्र से धनोपार्जन में वृद्धि होगी तथा खेल-कूद के लिए भी यह समय सफलता का होगा और खेल-कूद से जुड़े लोगों के लिए एवं खिलाड़ी खूब नाम कमायेंगे और सफलता भी मिलेगी।

पुनः 1 जुलाई, 2005 से 10 सितम्बर, 2005 का समय, धनोपार्जन की दृष्टि से अच्छा होगा, किन्तु कुछ खर्चों से सावधान रहने की जरूरत है और हर तरह से चौकसी बरतनी होगी। व्यापार व व्यवसाय, संचार व पर्यटन से देश को धन प्राप्ति होती रहेगी और खेल-कूद के क्षेत्र से भी धन का लाभ होगा तथा खेल व खिलाड़ी लाभान्वित होंगे।

फिर, 11 सितम्बर, 2005 से 30 दिसम्बर, 2005 तक का समय बिल्कुल अच्छा नहीं होगा और इस दौरान, सरकार को हानि होना निश्चित है तथा सुख-शान्ति भंग होगी और निर्माण (भवन व सड़क से सम्बन्धित), कृषि, सिंचाई, शिक्षा, चिकित्सा आदि के क्षेत्र में नुकसान होगा, बदनामी होगी और क्षति भी पहुँचाएगा, इसलिए यह समय स्वतंत्र भारत के चार्ट से भी देश के लिए अच्छा नहीं होगा अर्थात् इस दौरान देश के अन्दर शान्ति भंग करने की कोशिश की जायेगी और सरकार के लिए चिन्ता व परेशानी को घड़ी होगी, अतः सरकार को चाहिए कि इस दौरान, सुरक्षा एजेन्सियों और पुलिस फोर्स को "हाई एलर्ट" कर दिया जाये।

तब, 1 अक्टूबर, 2005 से अक्टूबर, 2005 का समय भी अच्छा नहीं होगा जब देश व सरकार दोनों को वित्तीय हानि होना निश्चित है जिससे सरकार की चिन्ता व परेशानी बढ़ जायेगी अर्थात् सरकार को वित्तीय घाटा, वित्तीय संकट का सामना करना पड़ेगा।

फिर, 1 नवम्बर, 2005 से 20 नवम्बर, 2005 का समय कुछ हद तक देश व सरकार के लिए अच्छा होगा। पूर्व से कुछ सुधार आयेगा विशेषकर खेल-कूद से जुड़े लोगों के लिए, यह अच्छा समय होगा, पड़ोसी देश कुछ ऐसी बातें करेंगे जिससे भारत को लगेगा कि मामला कुछ उलझ रहा है अर्थात् पड़ोसी देश से आपसी सम्बन्धों में कटुता उत्पन्न हो जायेगी और यह स्थिति आगे भी 31 दिसम्बर, 2005 तक बनी रहेगी और देश को कुछ क्षति भी देखनी पड़ेगी, किन्तु भारत व सरकार बहुत ही साहस के साथ दुश्मनों का मुँहतोड़ जवाब देगा और विपरीत परिस्थितियों से लड़ने के लिए हर तरह से तैयार रहेगा।

यहाँ यह स्पष्ट है कि स्वतंत्र भारत के जन्मांग से वर्ष के अन्तिम दो महीने अच्छे नहीं होंगे जब देश व सरकार को खतरों का सामना करना पड़ेगा और हानि भी करायेगा एवं इन दो महीनों में देश के दुश्मन व सरकार का विपक्ष व विरोधी काफी परेशानी का कारण बनेंगे तथा हर तरह से सरकार को हानि उठानी पड़ेगी तथा हिंसा-आतंकवाद, आगजनी, प्राकृतिक विपदा आदि का भी सामना करना पड़ेगा।

उपर्युक्त से स्पष्ट होता है कि जहाँ वर्ष के पहिले आठ महीने अच्छे होंगे अर्थात् 1 जनवरी, 2005 से 10 सितम्बर, 2005 तक का समय अच्छा होगा जैसा कि ऊपर वर्णित है; वहीं दूसरी ओर, सरकार का दायित्व बनता है कि 11 सितम्बर, 2005 से 31 दिसम्बर, 2005 तक का समय अच्छा नहीं होगा जैसा कि ऊपर वर्णित है, इसीलिए इस दौरान, सरकार को चाहिए कि पहले से ही कमर कसकर हर मुसीबत का सामना करने के लिए तैयार रहे क्योंकि एक तरफ देश के दुश्मन हैं, तो दूसरी तरफ विपक्ष और सरकार का समय अच्छा नहीं है।

फिल्म कलाकारों के लिए वर्ष 2005 कैसा रहेगा

ग्रहों और नक्षत्रों का प्रभाव मनुष्य पर किस तरह पड़ता है, यही एस्ट्रोलोजी है और लोगों को जो उत्सुकता होती है कि आने वाले नव वर्ष 2005 में देश के कुछ प्रमुख फिल्म कलाकारों का भविष्य कैसा होगा, इसी को जानने की चेष्टा करेंगे। इस देश के तकरीबन सभी एस्ट्रोलोजर की भविष्य-वाणियां गलत होती रही हैं क्योंकि एस्ट्रोलोजी वह विज्ञान है जो एस्ट्रोनोमी जैसे विषय पर आधारित है और शायद ही ऐसे लोगों को एस्ट्रोनोमी का विशेष ज्ञान होता है। स्वभाविक है कि भविष्यवाणियाँ गलत हो रही हैं और इसके लिए दोषी व्यक्ति हैं, विज्ञान नहीं क्योंकि विज्ञान तो अपनी जगह पर अटल है। आइए, देखें नव वर्ष 2005 में कुछ प्रमुख फिल्म कलाकारों का भविष्य कैसा होगा?:-

(1) शाहरुख खान - के सम्बन्ध में मैंने पिछले साल (2004) में लिखा था- "किन्तु वर्ष का उत्तरार्द्ध (जुलाई से दिसम्बर, 2004 तक) बहुत ही अच्छा होगा जब उनके केरियर में अच्छे दिन लौटेंगे और जहाँ एक ओर, धन-सम्पत्ति में वृद्धि होगी; वहीं दूसरी ओर नाम, यश व सफलता भी मिलेगी और वह लाभ की स्थिति में हैं एवं धन-सम्पत्ति का लाभ तथा वित्तिय लाभ भी होगा।" वर्ष 2005 में, शाहरुख खान के लिए, जनवरी 2005 से जून 2005 तक का समय बहुत अच्छा है जब केरियर के लिए यह समय अच्छा होगा, धन- सम्पत्ति में वृद्धि होगी एवं नाम, यश, सफलता भी मिलेगी, किन्तु जुलाई 2005 से दिसम्बर 2005 तक का समय नाम, यश, सफलता व एवार्ड के लिए अनुकूल होगा और यह समय राजनीति से जुड़ने का भी होगा एवं राजनीति में भी उन्हें सफलता मिलेगी।

(2) ऐश्वर्या राय :-के लिए पिछले वर्ष (2004) में मैंने लिखा था -"शादी के लिए वर्ष 2004 अनुकूल नहीं है और फिलहाल उन्हें प्रतीक्षा करनी होगी।" वर्ष 2005 में, ऐश्वर्या राय के लिए, जनवरी 2005 से अप्रैल तक के समय में सुधार होगा (पूर्व से) और कुछ हद तक सामान्य प्रगति व तरक्की होगी। कुछ हद तक भाग्य साथ देगा, किन्तु कुछ धन की भी हानि करायेगा या विशेष व्यय व अत्यधिक व्यय व व्यर्थ व्यय करायेगा। फिर, मई 2005 से जून 2005 तक का समय भी अच्छा होगा, किन्तु माता व पारिवारिक जीवन के लिए यह समय अच्छा नहीं होगा और न ही पिता के लिए यह समय अच्छा होगा। तब, जुलाई 2005 से दिसम्बर 2005 तक का समय अच्छा होगा जब धनागमन होगा, किन्तु पारिवारिक जीवन के लिए यह समय अच्छा नहीं होगा। सितम्बर 2005 तक वैवाहिक लगन नहीं है और उसके बाद ही लगन शुरू होती है।

(3) अभिषेक बच्चन:- इनके लिए मैंने पिछले साल 2004 में लिखा था- 'अभिषेक बच्चन के लिए वर्ष 2004 सफलता का वर्ष होगा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

और उनकी फिल्में सफल होंगी। वह नाम व यश भी अर्जित करेंगे।" वर्ष 2005 में अभिषेक बच्चन के लिए जनवरी 2005 से अगस्त 2005 तक का समय अच्छा नहीं होगा क्योंकि उन्हें बीमारी, विरोध, शत्रुता, झगड़ा-झंझट का सामना करना पड़ेगा एवं पिता के साथ भी मतभेद उभरकर सामने आयेगा। उनके पिता के लिए भी जनवरी से अच्छा समय नहीं होगा और उनकी स्वयं की बीमारी सामने आयेगी, विशेषकर जोड़ों में या आखों के दर्द-सिर्द का दर्द तकलीफ या कष्ट देगा। इस दौरान, घरेलू शान्ति भी भंग होगी एवं पारिवारिक जीवन में चिन्ता-परेशानी भी रहेगी। उसके बाद, सितम्बर 2005 से वर्ष के अन्त तक के समय में कुछ सुधार होगा, किन्तु उनके पिता के लिए, यह समय शारीरिक रूप से अच्छा नहीं होगा, किन्तु स्वयं के लिए भाग्य कुछ हद तक साथ देगा।

(4) **करिश्मा कपूर**:- के सम्बन्ध में मैंने पिछले साल लिखा था- वर्ष 2004 उनके लिए बहुत अच्छा नहीं होगा क्योंकि कार्यक्षेत्र में विरोध व हानि प्रतिशत व्याप्त है अर्थात् अभिनय से उन्हें दूर ही रखेगा और हानि, नुकसान, बदनामी, निराशा, बीमारी, विरोध का सामना करना पड़ेगा। हाँ, सन्तान-योग बनता है, किन्तु सावधानी की आवश्यकता है क्योंकि सन्तानोत्पत्ति सर्जरी के द्वारा ही सम्भव है। वर्ष 2005 में, जनवरी 2005 से अगस्त 2005 तक का समय अच्छा नहीं होगा क्योंकि यह समय उनके पिता के लिए अच्छा नहीं होगा और स्वयं का भी स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं विरोध-शत्रुता, परेशानी, अपयश-बदनामी, चोट आदि का समय होगा तथा खतरा भी है, इसलिए इस दौरान उन्हें सावधान रहने की जरूरत है और एहतियात बरतें। फिर, सितम्बर 2005 से वर्ष के अन्त तक का समय बहुत अच्छा होगा जब भाग्य साथ देगा और सैर-सपाटा भी होगा क्योंकि यह घूमने का समय है और कुछ नाम, यश व सफलता भी मिलेगी।

(5) **अजय देवगन**:- के सम्बन्ध में पिछले साल मैंने लिखा था- "वर्ष 2004 उनके लिए बहुत अच्छा होगा जब उन्हें नाम, यश, एवार्ड, व सफलता मिलेगी और फिल्मी दुनियाँ में एक सितारा की तरह चमकते रहेंगे, विशेषकर अक्टूबर 2004 से।" वर्ष 2005 में, अजय देवगन के लिए, जनवरी 2005 से सितम्बर 2005 तक का समय अत्युत्तम होगा जब उन्हें नाम, यश, एवार्ड व सफलता मिलेगी अर्थात् सफलता उनके कदम चूमेगी और एवार्ड भी मिलेगा एवं खूब प्रसिद्धि मिलेगी तथा उनका यश भी फैलेगा। उनकी कुछ यादगार फिल्में आयेंगी जो सफल भी होंगी और उन्हें एवार्ड भी दिलायेगा। यह उनके जीवन का जबर्दस्त सफलता का समय होगा जब उनके नाम में चार चाँद लग जायेंगे। यह वर्ष उनके पिता बनने का भी होगा।

(6) **सुष्मिता सेन**:- के लिए वर्ष 2004 बिल्कुल अच्छा नहीं होगा क्योंकि हानि, नुकसान की सूचना देता है अर्थात् उन्हें फिलहाल संघर्ष करना होगा और परेशानियों तथा पैसे की बर्बादी के दौर से भी गुजरना पड़ेगा। साथ ही, 2004 उनके लिए न तो प्रेम के लिए और न ही केरियर के लिए अच्छा होगा। वर्ष 2005 भी, सुष्मिता सेन के लिए पूर्ववत ही चलेगा क्योंकि हानि-क्षति आगे भी चलती ही रहेगी अर्थात् उन्हें वर्ष 2005 में भी संघर्ष करते रहना होगा। न तो प्रेम के क्षेत्र में एवं न ही केरियर के क्षेत्र में सफलता मिलेगी तथा पैसे की बर्बादी और परेशानियों के दौर से गुजरना होगा।

(7) **सलमान खान** :- के लिए वर्ष 2005 पूर्ववत ही चलेगा जब उन्हें थोड़ी-थोड़ी सफलता मिलती रहेगी, लेकिन जबर्दस्त सफलता नहीं मिलेगी एवं दूसरी ओर धनोपार्जन खूब होगा अर्थात् फिल्में खूब मिलेंगी तथा शौक-मौज का समय होगा, किन्तु साथ-साथ खतरा भी रहेगा, इसलिए सावधानी बरतने की भी जरूरत है। जनवरी 2005 से फरवरी 2005 तक का समय अच्छा नहीं है क्योंकि इस दौरान, परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है क्योंकि यह निराशाओं और हानि-क्षति का भी समय होगा। फिर, मार्च 2005 से मई 2005 के समय में भी खतरा बना रहेगा और विरोधी व शत्रु से भी परेशानी होगी तथा गुस्सा उनका चरम सीमा पर रहेगा। उसके बाद जून 2005 से जुलाई 2005 के समय में थोड़ा सुधार होगा और केरियर के लिए अच्छा होगा। तब अगस्त 2005 से वर्ष के अन्त तक प्रेम-प्यार का समय होगा, किन्तु वैवाहिक बँधन में बँधने का समय नहीं होगा, इसके लिए उन्हें अभी प्रतीक्षा करनी होगी क्योंकि विरोध, बीमारी, शत्रुता, मुकदमेबाजी, झगड़ा आदि चलता ही रहेगा।

करीना कपूर : वर्ष 2005 में, करीना कपूर के लिए, जनवरी व फरवरी 2005 का समय अच्छा नहीं होगा। इस दौरान, किसी तरह सफलता की उम्मीद नहीं है - न तो फिल्म के क्षेत्र में और न ही प्रेम के क्षेत्र में। फिर, मार्च 2005 से मई 2005 तक का समय कुछ हद तक अच्छा होगा जब वह कुछ सफलता की उम्मीद कर सकती हैं, किन्तु जून 2005 से नवम्बर 2005 तक का समय अच्छा नहीं होगा जब हानि-बर्बादी का संकेत देता है। हाँ, दिसम्बर 2005 और उसके बाद का समय बहुत अच्छा होगा जब सफलता उनके कदम चूमेगी - चाहे प्रेम का क्षेत्र हो, चाहे फिल्म का क्षेत्र - दोनों ही क्षेत्र में सफलता मिलेगी।

(9) **रितिक रौशन** :- के सम्बन्ध में पिछले साल मैंने लिखा था- वर्ष 2004 में, वह प्रथम पाँच महीना लाभ की स्थिति में हैं, इसीलिए धनागमन की दृष्टि से अच्छा है और भाग्य साथ देगा किन्तु खतरों से भी सावधान रहना है क्योंकि दुर्घटना, चोट आदि का भी संकेत मिलता है विशेषकर वर्ष के उत्तरार्द्ध में। वर्ष 2005 में, रितिक रौशन के लिए, जनवरी 2005 का महीना अच्छा नहीं रहेगा जब पेट सम्बन्धी शिकायत एवं विरोध, चोट, निराशा आदि का समय होगा और खतरों से भी सावधान रहना है। फिर, फरवरी 2005 से अक्टूबर 2005 तक का समय पूर्ण रूप से अच्छा नहीं होगा, किन्तु आंशिक रूप से सफलता मिल सकती है, खतरा बरकरार रहेगा अर्थात् कुछ हद तक यह सफलता का समय होगा, परन्तु जबर्दस्त सफलता की उम्मीद वह नहीं कर सकते हैं। पुनः नवम्बर व दिसम्बर 2005 के दौरान, उनके लिए समय अच्छा नहीं होगा जब बर्बादी या नष्ट होने का संकेत देता है अर्थात् इस दौरान भी, वह विशेष आशा की सफलता नहीं कर सकते हैं, इसके विपरीत खोना ज्यादा है और पाना कम।

(10) **हेमा मालिनी** :- वर्ष 2005 हेमा मालिनी के लिए अच्छा नहीं होगा क्योंकि जहाँ एक ओर जमीन, मकान आदि के लिए तो समय चलेगा, वहीं दूसरी ओर आँखों को परेशानी विशेषकर दाहिनी आँख को लेकर झेलनी है। पूरी तरह यह बिखराव का समय होगा जब पारिवारिक जीवन में उथल-पुथल मच जायेगी और शौक-मौज व सोच सब बाधित हो जायेगा तथा खतरों का भी सामना करना पड़ेगा। फलस्वरूप वर्ष 2005 उनके लिए बिल्कुल अच्छा नहीं होगा जब उनके लिए खोने का समय होगा और बहुत कुछ से हाथ धोना पड़ेगा। उन्हें आगामी वर्ष में बहुत कुछ खोना पड़ेगा अर्थात् स्वयं के लिए भी चिन्ता का विषय है और हर तरह से परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। जहाँ भी कदम रखेंगे, जो भी काम करना चाहेंगी, उल्टा ही होता चला जायेगा, इसलिए आने वाले समय में उन्हें खोने के लिए तैयार रहना है। इसलिए सन् 2005 में उन्हें इन सभी मुसीबतों से लड़ने के लिए काफी कुछ करना होगा।

(11) **गोविन्दा** : के लिए पिछले साल मैंने लिखा था- फिर भी, वह फिल्मों में पहले जैसा कार्य करते रहेंगे, भले ही उन्हें, पहले जैसी सफलता नहीं मिलेगी। तब सितम्बर 2004 से घर की शान्ति भंग होगी और शान्ति की हर तलाश व्यर्थ साबित होगी। वर्ष 2005 में, गोविन्दा के लिए, जनवरी 2005 से अप्रैल 2005 तक का समय अच्छा नहीं होगा। जब भाग्य साथ नहीं देगा, बीमारी, विरोध-शत्रुता, झगड़ा-झंझट आदि के दौर से गुजरना होगा। पारिवारिक शान्ति भंग होगी और शान्ति की हर तलाश व्यर्थ साबित होगी। किन्तु, मई 2005 से दिसम्बर 2005 तक का समय नाम, यश, सफलता आदि की दृष्टि से काफी अच्छा होगा, पर पत्नी का साथ छूटेगा और वैवाहिक जीवन के लिए बिल्कुल अच्छा नहीं होगा और बहुत कुछ खोना है।

(12) **रेखा** :- के सम्बन्ध में पिछले साल मैंने लिखा था- रेखा के लिए वर्ष 2004 व्यवसायिक सफलता लेकर आयेगा अर्थात् आर्थिक लाभ भी होगा तथा धनागमन भी होगा एवं कार्यक्षेत्र में भी सफलता मिलेगी। वर्ष 2005 में, रेखा के लिए और भी अच्छा समय आयेगा जब उन्हें धन का लाभ होगा अर्थात् धनागमन होगा तथा नाम, यश व सफलता भी मिलेगी, किन्तु कुछ खतरा का भी संकेत देता है, इसलिए सावधानी बरतनी है तथा व्यवसायिक दृष्टि से यह सफल वर्ष होगा।

(13) **संजय दत्त** : के लिए, वर्ष 2005 खोने का होगा अर्थात् वर्ष 2005 में संजय दत्त को बदनामी, अपयश हानि-क्षति होगी अर्थात् प्राफेशन की दृष्टि से नववर्ष उनके लिए अच्छा नहीं होगा। किन्तु, फिल्मों में कुछ हद तक सफलता मिलेगी, लेकिन वर्ष 2004 की तरह उन्हें सफलता नहीं मिलेगी। खतरा एवं बीमारी, विरोध, झगड़ा-झंझट का भी सामना करना पड़ेगा तथा कुछ हद तक निराशाओं के दौर से भी गुजरना पड़ेगा। किन्तु उपर्युक्त के बावजूद, उनके विवाह में बँधने का वर्ष होगा तथा आनन्द व मजा लेने का समय होगा क्योंकि काफी व्यय का संकेत देता है।

डॉ. भुवन मोहन
एयरपोर्ट रोड (चेक पोस्ट के पहले)
हिनू, राँची-834002, फो. 0651-2251129

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जन्म कुण्डली में पठनीय विभिन्न योग

भूमिका :- ज्योतिषीय विषयानुसार होरा-सिद्धांत एवं गणित को आधार मानकर जन्म कुण्डली का निर्माण ज्योतिर्विद सज्जन करते हैं, या वर्तमान में कम्प्यूटरीकृत जन्म पत्रिकाएं बनवाते हैं। लेकिन जन्म कुण्डली की महत्ता उसके फलित होने पर निर्भर करता है। फलित जितना सार्थक होगा ज्योतिष पर उनका विश्वास बना रहेगा। यह फलित ही ज्योतिष शास्त्र में विवेकता की कसौटी पर खरा उतरता है। इसी दृष्टि से जनहितार्थ मैं कुछ योग फलित प्रकरण में प्रस्तुत कर रहा हूं। साधक, विद्वान् अपने जीवन में उपयोग लायेंगे। जन-सामान्य व्यक्ति कुण्डली ज्योतिषी को देकर पूछता है कि कुण्डली में क्या-क्या योग हैं? इस धारणा में यह प्रकरण आपको मदद करेगा, ऐसी अपेक्षा है।

योग:- योग का साधारण अर्थ है-जोड़। परन्तु जन्म-कुण्डली पठन में योगों का अर्थ है-ग्रहों की परस्पर में शुभाशुभ स्थितियां। शुभ योग वाली कुण्डली का जातक भाग्यशाली माना जाता है। जबकि अशुभ योगों वाला जातक भाग्यहीन या निर्बलता की श्रेणी में आता है। कुण्डली में योग ग्रहों की स्थिति के अनुसार पढ़े जाते हैं। इनको भिन्न-भिन्न नाम प्रदान किये गये हैं। अतः विभिन्न योग

उदाहरणार्थ-दक्षरो भारत की जन्म कुण्डली

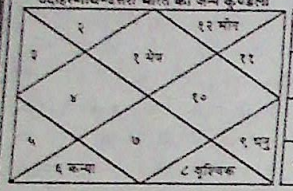

उदाहरणार्थ-दक्षिणी भारत की जन्म कुण्डली

१२	१ मेष	२ वृष्भ	३
११			४ कर्क
१०			५ सिंह
९ धनु	८	७ तुला	६

धन योग:- कुण्डली में निम्न प्रकार में बनता है।

१. जब नवम और एकादश के स्वामी एक भाव में हों। २. जब नवम और दशम के स्वामी एक भाव में हों। ३. जब नवम और चतुर्थ के स्वामी एक भाव में हों। ४. जब नवम और पंचम के स्वामी एक भाव में हों। ५. जब नवम और प्रथम के स्वामी एक भाव में हों। ६. जब नवम और द्वितीयेश के स्वामी एक भाव में हों। ७. जब दशम और एकादश के स्वामी एक भाव में हों। ८. जब दशम और चतुर्थ के स्वामी एक भाव में हों। ९. जब दशम और पंचम के स्वामी एक भाव में हों। १०. जब दशम और प्रथम के स्वामी एक भाव में हों। ११. जब दशम और द्वितीयेश के स्वामी एक भाव में हों। १२. जब एकादश और प्रथम के स्वामी एक भाव में हों। १३. जब एकादश और द्वितीयेश के स्वामी एक भाव में हों। १४. जब एकादश और चतुर्थ के स्वामी एक भाव में हों। १५. जब एकादश और पंचम के स्वामी एक भाव में हों। १६. जब प्रथम और द्वितीय के स्वामी एक भाव में हों। १७. जब प्रथम और पंचम के स्वामी एक भाव में हों। १८. जब प्रथम और चतुर्थ के स्वामी एक भाव में हों। १९. जब द्वितीय और चतुर्थ के स्वामी एक भाव में हों। २०. जब द्वितीय और पंचम के स्वामी एक भाव में हों। २१. जब चतुर्थ और पंचम के स्वामी एक भाव में हों। २२. जब सप्तम और प्रथम के स्वामी एक भाव में हों। २३. जब सप्तम और द्वितीय के स्वामी एक भाव में हों। २४. जब सप्तम और चतुर्थ के स्वामी एक भाव में हों। २५. जब सप्तम और पंचम के स्वामी एक भाव में हों। २६. जब सप्तम और नवम के स्वामी एक भाव में हों। २७. जब सप्तम और दशम के स्वामी एक भाव में हों। २८. जब सप्तम और एकादश के स्वामी एक भाव में हों।

ये सभी योग शुभफलदायक प्रमाणित होंगे। जब वे शुभ भावों में अर्थात् १, २, ४, ५, ६, ९, १० या ११ भाव बनेंगे। यदि वे ३, ६, ८ या १२ भाव में हों तो नाम मात्र के योग बनेंगे। इनकी सफलता हेतु रत्न, यंत्र-तंत्र-मंत्र उपाय भी किये जाते हैं।

राशि परिवर्तन योग:- जब एक राशि का स्वामी दूसरी राशि में स्थित हो तो राशि परिवर्तन योग बनता है। यदि राशि परिवर्तन योग शुभ भावों (१, २, ४, ७, ९, १०, ११) के स्वामियों में हो तो ऐसा परिवर्तन योग महा भाग्यवान योग कहलाता है। ऐसा योग एक ग्रह की महादशा में और दूसरे की अन्तर्दशा में यश, धन और प्रसिद्धि देता है। यदि राशि परिवर्तन एक शुभ भाव के स्वामी और ३, ६, ८ या १२ के साथ हो तो यही योग दैन्य योग बन जाता है। जीवन में उतार-चढ़ाव और संपर्क देने वाला होता है। यदि राशि परिवर्तन परस्पर ३, ६, ८ या १२ के स्वामियों में हो तो वह शुभ फल देने वाला योग बनता है। ऐसे योग को विपरीत राजयोग कहते हैं।

सुनफा योग:- जब चन्द्र से द्वितीय में कोई ग्रह हो तो यह योग बनता है। इस योग में जातक को योग बनाने वाले स्वाभाविक गुणों के अनुसार धन, यश प्राप्त होता है। पाप ग्रह भी इस योग में अपने विशिष्ट गुणों के अनुसार धन, यश प्राप्त होता है। सूर्य, राहु और केतु के चन्द्र के दूसरे भाव में होने से यह योग नही बनता।

अनफा योग:- जब चन्द्र के द्वादश में कोई ग्रह हो तो अनफा योग बनता है। इस योग में शुभ ग्रह यदि चन्द्र के द्वादश में हो तो शुभ फल प्राप्त होता है। नाम, यश, धन और पाप ग्रह हो तो शुभ फल प्राप्त नहीं होते। यह योग भी सूर्य, राहु और केतु के चन्द्र द्वादश में होने से नहीं बनता तथा सामान्य फल ग्रहानुसार फल मिलता है।

दुरुधरा योग:- यह योग उस समय बनता है, जब चन्द्र के द्वितीय और द्वादश दोनों ग्रह स्थित हों। शुभ ग्रहों के होने से शुभ फल प्राप्त होता है और अशुभ ग्रह अशुभ फल दाता होते हैं। यदि शुभ और अशुभ ग्रह हो तो मिश्रित फल प्रदान करते हैं।

केमद्रुम योग:- जब चन्द्र के द्वितीय व द्वादश में कोई ग्रह नहीं होते हों तो केमद्रुम योग बनता है। यह एक अत्यंत अशुभ योग होता है और इस योग के वर्तमान होने से कुण्डली के अन्य शुभ योगों का फल कम हो जाता है। यदि चन्द्र लग्न से केन्द्र में हो, या चन्द्र से केन्द्र में कोई ग्रह हो तो चन्द्र अपनी राशि कर्क में स्थित हो तो यह अशुभ योग रद्द हो जाता है।

चन्द्र-मंगल योग:- चन्द्र और मंगल किसी शुभ भाव में स्थित हो तो यह योग बनता है। मान्य ग्रन्थों के अनुसार इस योग का फल बनता है-शराब बेचने वाला, कालाबाजारी करने वाला, औरत बेचने या वैश्यावृत्ति द्वारा धन अर्जित होना। यदि ये योग बनाने वाले ग्रहों पर वृहस्पति या शुक्र की दृष्टि है तो शुभ कर्मों द्वारा धन अर्जित होता है।

लग्नाधि योग और चन्द्राधि योग:- यह योग उस समय बनता है, जब शुभ ग्रह (वृहस्पति, शुक्र और बुध) लग्न या चन्द्र से ६, ७ और ८ भाव में स्थित हो। यह योग पूर्ण रूप से तभी बनता है, जब तीनों शुभ ग्रह (एक दो नहीं) ऊपर बताई गई स्थिति में हों। इस योग का फल नम्र और शिष्ट स्वभाव, विश्वसनीय, सुखी, धनी, प्रसिद्ध और शत्रुओं पर विजय पाने वाला। यह एक बहुत ही शुभ योग माना जाता है।

चतुस्सरा योग :- जब सब केन्द्र ग्रहों से पूर्ण हो तो यह योग बनता है। इस योग का फल है प्रतिष्ठित होना, धनी, सन्तान सुख, देश विदेश में ख्याति प्राप्त करना।

वसुमति योग:- यदि लग्न या चन्द्र से उपचय भावों में (३,६,१० या ११ में) शुभ ग्रह हो तो यह योग बनता है। इस योग का फल है स्थाई ख्याति प्राप्त, सच्चरित्र, समृद्ध।

काहल योग :- जब चतुर्थ और नवम् के स्वामी एक दूसरे से केन्द्र में होते हैं और लग्न का स्वामी बलवान होता है। तो यह योग बनता है। इस योग का फल है- किसी गांव या समाज का मुखिया।

शुभवेलि योग :- जब चन्द्र के अतिरिक्त शुभ ग्रह सूर्य से द्वितीय में हो तो यह योग बनता है। इस योग का फल है- सौभाग्यशाली, सुखी और प्रसिद्ध व्यक्ति।

पाप वेशि योग :- जब सूर्य के द्वितीय में पाप ग्रह हो तो यह योग बनता है। इसका फल शुभवेलि योग के बिल्कुल विपरीत है। बुराई प्राप्त करता है।

शुभवासि योग :- शुभ ग्रह सूर्य के द्वादश में हो तो यह योग बनता है। फल अच्छा वक्ता, सुगठित अंग, धनी और प्रसिद्धि प्राप्त करता है। कार्य में वांछित फल भी प्राप्त करता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पापवासि योग:-यदि सूर्य के द्वादश में पाप ग्रह हो तो यह योग बनता है। यह विपरीत फल देता है। विद्या में कमजोर गरीब तथा ताड़ित भी होता है। इससे जातक जीवन में अपमानित ज्यादा होता है।

उभयचरी योग:- जब सूर्य के दोनों ओर (द्वितीय और द्वादश में) ग्रह होते हैं। तो यह योग बनता है। यदि शुभ ग्रह इन स्थितियों में हो तो शुभवेलि और शुभवासि दोनों योगों का फल प्राप्त होता है और पाप ग्रह हो तो दोनों योगों के विपरित (प्रतिकूल) प्रभाव होता है। उपाय सूर्योपासना करना है।

गजकेसरी योग :- जब वृहस्पति चन्द्र से केन्द्र में हो तो तब यह योग बनता है। यदि शुभ ग्रह इन परिस्थितियों में हो तो इनका फल श्रेष्ठ, नम्र, शिष्ट, शासक, राजनेता, लोक प्रिय तथा नगर गांव को बनाने वाला फल मिलेगा। अशुभ ग्रह की स्थिति में सामान्य प्रसिद्धि एवं समाज सेवा होता है।

पंच महापुरुष योग :- यदि मंगल अपनी स्वराशि मेष या वृश्चिक या उच्च मकर में हो और चन्द्र या लग्न से केन्द्र में हो तो रूचक योग बनता है। यदि बुध अपनी स्वराशि मिथुन या कन्या (या उच्च राशि कन्या) में होकर लग्न या चन्द्र से केन्द्र में हो तो भद्रयोग बनता है। यदि वृहस्पति अपनी स्वराशि धनु या मीन या उच्च राशि कर्क में होकर चन्द्र या लग्न से केन्द्र में हो तो हंसयोग बनता है। यदि शुक्र अपनी राशि वृष या तुला या उच्च राशि मीन में होकर चन्द्र या लग्न से केन्द्र में हो तो मालव्य योग बनता है। यदि शनि अपनी राशि मकर या कुंभ या उच्च राशि तुला में होकर लग्न या चन्द्र से केन्द्र में हो तो शश नामक पंच योग पंच-महापुरुष योग बनता है।

जो व्यक्ति **रूचक योग** में जन्म लेता है, उसका दीर्घ मुख होता है और वह बहुत साहस से धन प्राप्त करता है। वह शूर और बली होता है। शत्रुओं को मारने वाला और अभिमानी होता है। वह सेनापति भी बन सकता है। अपने गुणों के कारण प्रसिद्ध और कीर्तिमानी होता है। प्रत्येक उद्योग (कार्य) में सफल होता है। इनके शत्रु कम होते हैं।

जो व्यक्ति **भद्रयोग** में जन्म लेता है। वह कुशाग्र बुद्धिवाला और शुद्ध होता है। विद्वान् उनकी प्रशंसा करते हैं। भाषण देने में चतुर होता है। वह अत्यंत वैभवशाली और उच्च पदाधिकारी होता है। आई.ए.एस. या आई.पी.एस. बन सकता है।

जो व्यक्ति **हंस योग** में जन्म लेता है। उनके हाथ और पैरों में शंख, कमल, मत्स्य और अंकुश के चिन्ह होते हैं। वह सौम्य रूप वाला, उत्तम भोजन करने वाला और सज्जनों द्वारा प्रशंसनीय होता है। अच्छी संस्था का संचालन करता है।

जो व्यक्ति **मालव्य योग** में जन्म लेता है। वह धैर्यवान और पुष्ट अंग वाला होता है। उत्तम भोजन करने वाला, विद्वान्, प्रसन्न मुख, शांतचित्त, पुत्र और स्त्रियों से सुख से युक्त सदैव बुद्धि को प्राप्त करने वाला, यशस्वी और अच्छी सवारियों का भोक्ता होता है।

जो व्यक्ति **शश योग** में जन्म लेता है। वह ग्राम का स्वामी, ठाकुर या उच्च पदाधिकारी होता है। वह स्वयं बलवान होता है और मंत्री, राजनेता पद तक भी पहुंच सकता है। उच्च ग्रहादि योग या शुभ दशा का फल प्राप्त होने पर प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति जैसे शौभनीय पद का लाभ भी प्राप्त कर सकता है। नौकर, चाक[illegible] होता है। आचरण की दृष्टि से कुछ लापरवाह होता है और [illegible]यों पर आसक्त होता है। वह धनी और सुखी होता है। भूमि, भवन, वाहनादि का लाभ भी होता है।

पुष्कल योग :- चन्द्र लग्न के स्वामी से युक्त हो और जिस राशि में चन्द्र हो उसका स्वामी केन्द्र में होकर या किसी अधिमित्र के भाव में होकर लग्न को देखता हो और लग्न में कोई बलवान ग्रह स्थित हो, तो यह योग बनता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति धनी, नम्रभाषी, प्रसिद्ध और सरकार द्वारा प्रतिष्ठित होता है। राजकीय सम्मान भी प्राप्त करता है।

लक्ष्मी योग :- जब लग्न का स्वामी बलवान हो और नवम का स्वामी केन्द्र, त्रिकोण में अपनी स्वराशि या उच्च राशि में हो तो यह योग बनता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति सज्जन, धनी, विद्वान्, रूपवान, प्रसिद्ध, ईमानदार और सब तरह के सुख भोगने वाला होता है।

कलानिधि योग :- जब वृहस्पति द्वितीय या पंचम भाव में बुध या शुक्र की राशि में स्थित हो और उस पर बुध या शुक्र की दृष्टि पड़ती हो, तो यह योग बनता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यंत कामुक, अच्छे स्वभाव का तथा सरकार से सम्मानित होता है। उसको वाहन तथा अन्य सांसारिक सुख प्राप्त होते हैं।

कुसुम योग :- जब वृहस्पति लग्न में हो, चन्द्र सप्तम में हो और सूर्य चन्द्र से अष्ट में हो तो यह योग बनता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति उच्चपदाधिकारी (नियंत्रक) या किसी गांव या नगर का मुखिया बनता है और वह अपने सदाचरण के लिए प्रसिद्ध, होता है। अन्य का सहयोगी होता है।

असत्यवादी योग :- जब द्वितीय का स्वामी शनि या मंगल की राशि में स्थित होता है और पाप ग्रह केन्द्र और त्रिकोण में होते हैं तो यह योग बनता है। इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति बिल्कुल असत्यवादी होता है।

प्रबल राज योग :- राज योग वे योग होते हैं, जो जातक को नाम, प्रसिद्धि, धन, प्रतिष्ठा और उच्च पद देते हैं। वे निम्नांकित योग जातक की कुण्डली में पाये जाते हैं, जिसे अध्ययन कर जातक को बताये जायें तो फलित लाभ होता है। जातक की कुण्डली पठन में ग्रहों की स्थिति पर ध्यान देना चाहिए। कुछ चुने हुए राजयोग निम्नांकित बनते हैं:-

१. तीन या तीन से अधिक ग्रह अपनी स्वराशि या उच्च राशि में होकर केन्द्र में स्थित हों। २. जब कोई ग्रह अपनी नीच राशि में होकर बक्री हो और शुभ स्थान में स्थित हो। ३. तीन या चार ग्रहों को दिग्बल प्राप्त हो। ४. उस राशि का स्वामी जिसके कोई ग्रह नीच या वह ग्रह जो उस राशि उच्च हो, यदि लग्न या चन्द्र से केन्द्र में हो तो यह योग बनता है।

इसको **नीच भंग राजयोग** भी कहते हैं।

५. चन्द्र केन्द्र में हो और वृहस्पति की उस पर दृष्टि हो। ६. द्वितीय, नवम और एकादश के स्वामियों में से कोई एक चन्द्र से केन्द्र में हो और वृहस्पति द्वितीय, पंचम या एकादश का स्वामी हो। ७. क. नवम का स्वामी नवम हो (मेरे स्वयं के लिए घटित), ख. दशम का स्वामी दशम हो, ग. नवम का स्वामी दशम में हो या दशम का स्वामी नवम में हो, घ. नवम और दशम के स्वामी नवम या दशम में हो, च. नवम से नवम का स्वामी पंचम में हो। छ. दशम से दशम का स्वामी सप्तम में हो, ज. नवम से दशम का स्वामी षष्ठ में हो।

महाभाग्य योग :- यह योग जातक को अत्यंत भाग्यवान बनाता है। यदि दिन में जन्म हुआ हो और कुण्डली में लग्न चन्द्र और सूर्य सब विषम राशि में हो तो महाभाग्य योग बनता है। इसी तरह हो रात्रि को जन्म हो, और लग्न चन्द्र और सूर्य सब सम राशि में हो तो भी महाभाग्य योग बनता है। फल-जातक सर्वगुण सम्पन्न होता है।

चाप योग :- दसवें स्थान से चौथे स्थान तक (१०,११,१२,१,२,३,४) सात स्थानों में सारे ग्रह स्थित हों तो चाप योग बनता है। फल: जातक लुटेरे, ठग, धूर्त किस्म के होते हैं।

कूट योग:- सप्तम स्थान से लग्न तक सारे ग्रह स्थित हों तो कूट योग बनता है। फल : जातक झूठा, पाखण्डी, चालाक, पहाड़ों की खाकछानने वाला होता है।

छत्र योग :- चौथे स्थान से दसवें स्थान तक (४,५,६,७,८,९,१०) ही सारे ग्रह हों तो छत्र योग बनता है। फल: जातक दीर्घायु होता है। वैभव प्राप्त करता है। दयावान तथा शासन से लाभार्जन प्राप्त करता है। जातक सर्वसुख प्राप्त करता है।

वीणा योग:- सारे ग्रह सात स्थानों में ही हों तो यह योग बनता है। फल: जातक रसिक, नृत्य, संगीत के शौकीन, धनी, मानी, अग्रणी चतुर, कलाकार व अभिनेता होता है।

इस प्रकार अनेकानेक योग जातक की जन्म कुण्डली में बनते हैं। जातक चाहे तो प्रतियोग पठन ५१ रु. का एम. ओ. अग्रिम भेजते हुए जन्मपत्रिका की फोटो प्रति व जवाबी लिफाफा भेजें। जिससे जिज्ञासा बताई जा सके।

ब्रह्मर्षि वैद्य पं. नारायण शर्मा कौशिक
प्रधान सम्पादक (अवैतनिक)
वेदांग ज्योति एवं श्री सालासर पंचांगम्, सारड़ा बाजार,
मेड़ता सिटी (राज.) 341510 फोन 01590-220792

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

देशीय औषधि- प्याज के गुण औषध प्रयोग

आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति की विश्व में अहम् भूमिका है। इसका प्रचलित दूसरा नाम देशीय औषधि भी है। घरेलू औषधी प्रयोग में अनेक सब्जियों, जमीकन्दों का प्रयोग होता रहता है। इसी श्रेणी में प्याज के गुण औषध प्रयोग में जनहितार्थ प्रस्तुत कर रहा हूं। संबंधित प्रार्थी लाभ प्राप्त कर हमें सफलता की बात से अवगत करायेंगे तो अच्छा रहेगा। नई वैज्ञानिक खोजों के अनुसार देशीय औषध के अनुसार प्याज में जरूरी तत्व, कैल्शियम, मैग्नैशियम, सोडियम, पोटेशियम तथा आयरन काफी मात्रा में उपलब्ध हैं अतः इसका उपयोग मुख्यतः काफी होता है, कुछ औषधीय प्रयोग नीचे दिये जा रहे हैं, जिनसे लाभान्वित हो सकते हैं:-

मधुर आवाज के लिए:- हर तीसरे दिन १५० ग्राम प्याज के रस में एक चम्मच असली शहद मिलाकर पिएं। इस प्रयोग से आवाज साफ व सुरीली होगी तथा गाने में रुचि रखने वाले लोगों के लिए प्रयोग बहुत गुणकारी है।

मोतियाबिन्द या आंखों के रोग निदान के लिए:- आयुर्वेदानुसार प्याज के रस को आंखों में डालने से नजर तेज होती है, यदि मोतियाबिन्द शुरू हो गया हो तो रोजाना प्याज के रस की दो-दो बून्द आंखों में डालने से रोशनी बढ़ती है तथा मोतियाबिन्द होना रुक जाता है। झुझलापन, धुंधलापन हो तो भी प्याज के रस को डालने से लाभ मिलता है। आंखें सदैव तरोताजा रहती हैं एवं सुस्ती नहीं आती। आंखों की नित्य सफाई भी इस रस से हो जाती है।

झड़ते हुए बालों के लिए:- प्याज के रस में असली शहद मिलाकर रोजाना बालों की जड़ों में निरन्तर लगाने से बाल झड़ने रुक जाते हैं। बाल केवल आंवले के रस द्वारा ही धोने चाहिए।

कान के रोगों के लिए:- प्याज का रस कान के रोगों के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है। कम सुनाई देता हो, कान बहते हों तो प्याज के रस को थोड़ा गर्म करके कान में डालने से आराम मिलता है। परन्तु अधिक दर्द हो तो प्याज के रस में अफीम मिलाकर कान में डालने से आराम मिलता है।

पेट दर्द के लिए :- प्याज के रस में हींग, काला नमक मिलाकर पीने से पेट दर्द में आराम मिलता है। यह प्रयोग हाजमे एवं दूसरे प्रकार के पेट रोगों में भी गुणकारी माना गया है।

पेट की गैस व दस्तों के निवारण के लिए:- अगर खट्टी डकारें आती हों, पेट में गैस बनती हों तथा दस्त हो तो ताजे प्याज के रस के दो तीन घूंट पीकर आराम से लेट जायें तथा प्याज के रस द्वारा पेट को धीरे-धीरे मालिश करें, तुरन्त ही आराम मिलेगा।

नारी के स्तनों के लिए:- स्तन ढलक गए हों और उनमें कड़ापन न रहा हो तो रात को सोते समय प्याज के रस में शहद व हल्दी मिलाकर रोजाना लेप करना चाहिए। इस विधि से स्तनों का विकास होता है तथा ढीलापन दूर हो जाता है। अगर नारी को माहवारी की कोई शिकायत है तो प्याज का रस गर्म करके पीने से माहवारी खुलकर आती है। प्याज को घी में भूनकर खाने से भी लाभ होता है।

गुर्दे एवं मस्सा के लिए:- प्याज का रस गुर्दे एवं मस्सा रोग के लिए उपयोगी है। पेशाब रुक-रुक कर आता है तो प्याज का रस पीने से पथरी टूट कर पेशाब द्वारा बाहर निकल जाती है।

कान दर्द :- प्याज को गरम राख में भूनकर उसका पानी निचोड़कर कान में डालें, आराम मिलता है।

मोतियाबिन्द :- प्याज का रस एक तोला, शहद असली एक तोला, भीमसेनी कपूर २ माशा लेकर सबको खूब मिलाकर रात को सफाई से आंख में लगाने से धुंध, जाला रोहें में आराम मिलता है।

पेशाब की जलन के ठीक हो :- प्याज को कुचलकर दो तोला पानी में उबालें। जब पानी आधा रह जाय तो छानकर ठण्डा करें २ दिन पिलावें, पेशाब की जलन शांत हो जायेगी। हैजा में भी प्याज का रस प्रयुक्त होता है।

इस प्रकार प्याज ग्रीष्म एवं वर्षा काल की राम बाण दवा के रूप में माना जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी तथा सदाबहार प्रयुक्त में लिया जाने वाली वनस्पति है। विशेष जानकारी हेतु जवाबी पत्र लिखें।

ब्रह्मर्षि वैद्य पं. नारायण शर्मा कौशिक
सारड़ा बाजार, मेड़ता सिटी (राज.) 341510
फोन 01590-220792

लाटरी व ज्योतिष

आजकल विभिन्न सरकारें व प्राईवेट एजेन्सियां भी विभिन्न प्रकार की लाटरियां निकालती हैं, इन लाटरियों को वैसे तो जुआ खेलना माना गया है, परन्तु सरकार की मान्यता के कारण इसे जुआ नहीं मानकर एक व्यवसाय माना जा रहा है। इसी व्यवसाय की दृष्टि से ज्योतिषिय दृष्टिकोण प्रस्तुत है।

आजकल एक अंक की लाटरी का प्रचलन भी बहुत हो चुका है। इसी एक अंक की लाटरी के बारे में ज्योतिषिय विधान यह है कि जिस समय जिस स्थान पर लाटरी खुल रही है, उस स्थान पर उस दिन व समय कौन सा नक्षत्र चल रहा है। उदाहरण के तौर पर अगर लाटरी चण्डीगढ़ में 4.00 बजे खोली जा रही है तो 4.00 बजे उस दिन कौन सा नक्षत्र है, इसी के आधार पर नम्बरों के टिकट लेने पर 90 प्रतिशत सफलता अवश्य मिलती है। प्रत्येक नक्षत्र के कुछ अंक होते हैं। इन अंकों में से ही लाटरी निकलती है। अंक इस प्रकार हैं।

क्र. सं.	नक्षत्र	अंक	प्रधानता क्रम
1	अश्वनि	02456	56204
2	भरणी	234567	674532
3	कृतिका	035679	675390
4	रोहणी	3456	5643
5	मृगशिरा	0356789	8967503
6	आर्द्रा	03689	30896
7	पुनर्वसु	5789	5897
8	पुष्य	02345789	45723089
9	अश्लेषा	234569	563492
10	मघा	02379	70392
11	पूर्वा फाल्गुनी	234678	786342
12	उत्तरा फाल्गुनी	2356789	8967523
13	हस्त	012468	120864
14	चित्रा	023479	340297
15	स्वाति	023589	523908
16	अनुराधा	234569	563492
17	विशाखा	014689	186490
18	ज्येष्ठा	235679	675329
19	मूल	01234568	12340856
20	पूर्व आषाढ़ा	24789	42897
21	उत्तरी आषाढ़ा	3589	3598
22	श्रवण	234569	564923
23	धनिष्ठा	034567	674530
24	शतभिषा	045678	785640
25	पूर्व भाद्रपद	356789	896753
26	उत्तरी भाद्रपद	0346789	9086743
27	रेवती	023459	340295

नोट:- द्वि पुष्कर योग काल में दूसरे दिन तथा त्रि पुष्कर योग में तीन दिन लगातार वही नम्बर आते हैं।

श्याम सुन्दर अरोड़ा
पाटनपोल, हिरन बाजार, कोटा (राज.) फोन-07442382268 मो0-9414325941

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गायत्री साधना

माँ गायत्री को वेदों की माता कहा गया है। गायत्री माता की उपासना से जो फल मिलता है, उसका शब्दों में वर्णन करना सम्भव नहीं है।

यह वैदिक मंत्रों में वेदसार है, सर्वश्रेष्ठ है। जिस प्रकार माँ सन्तान को जन्म देती है, उसी प्रकार वेदमाता से सारे वेद उत्पन्न हुए हैं। इसीलिए वेदमाता गायत्री की उपासना एवं जाप से समस्त वैदिक ज्ञान प्राप्त हो जाता है और साधक वेदमय हो जाता है।

प्रत्येक मनुष्य के अन्दर जो शक्ति है, जिसे हम आत्मा या आन्तरिक शक्ति मानते हैं। गायत्री मन्त्र की सहायता से हम उस आन्तरिक शक्ति या आत्मा को शुद्ध, पवित्र व शक्तिशाली बनाने में सफल होते हैं।

साधकों का उपास्य गायत्री ही हो सकती है। यह इष्ट बनने योग्य है। गायत्री का इष्ट के रूप में वरण सर्वोत्तम चयन है। इतना निश्चय-निर्धारण करने पर आत्मिक-प्रगति का उपक्रम सुनिश्चित गति से, द्रुतगति से अग्रगामी बनने लगता है। गायत्री को गुरुमन्त्र भी कहा गया है। प्राचीनकाल में बालक जब गुरुकुल में विद्या पढ़ने जाते थे तो उन्हें वेदारम्भ संस्कार के समय गुरुमंत्र के रूप में गायत्री की ही शिक्षा दी जाती थी, वेद का आरम्भ वेदमाता गायत्री से होता है। प्राचीन काल में गायत्री मंत्र के अतिरिक्त और कोई मन्त्र न था।

पुरुषों की भाँति स्त्रियाँ भी गायत्री उपासना से लाभान्वित हो सकती हैं। कई आध्यात्मिक तत्त्ववेत्ताओं का यह कहना है कि पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को गायत्री उपासना का लाभ अधिक मिलता है।

गायत्री मन्त्र- गायत्री मन्त्र जो 24 अक्षरों का होता है, उसे वास्तव में 24 वर्णीय मन्त्र कहते हैं।

"ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।"

गायत्री मन्त्र की सकाम साधना के लिए सवा लाख का संकल्प लेना चाहिए और संकल्प लेते समय अपनी कामना सिद्धि का उल्लेख करना चाहिए। जो लोग सवा लाख मन्त्र का जाप करने में अपने आप को असमर्थ पाते हैं, उन्हें 24 हजार मन्त्रों का ही संकल्प लेना चाहिए। जितना मन्त्र जपें उसका दशांश घी की आहुति से नित्य हवन करते जायें।

गायत्री उपासकों को उपासना का विधि विधान भली प्रकार समझ लेना चाहिए क्योंकि विधिपूर्वक साधना करना एक महत्त्वपूर्ण बात है। किसी कार्य को उचित क्रिया पद्धति के साथ किया जाय तो उसका लाभ और फल ठीक प्राप्त होता है।

शरीर को शुद्ध करके साधना पर बैठना चाहिए। साधारणतः स्नान द्वारा ही शरीर की शुद्धि होती है, पर किसी विवशता की दशा में हाथ-मुँह धोकर गीले कपड़े से शरीर पोंछकर काम चलाया जा सकता है। साधना के समय जिन सूती वस्त्रों को शरीर पर धारण किया जाय, वे धुले हुए होने चाहिए। पालथी मारकर सीधे ढंग से बैठना चाहिए। कष्ट साध्य आसनों से चित में अस्थिरता आती है बिना कुछ बिछाये जमीन पर नहीं बैठना चाहिए। कुश का आसन, चटाई का आसन आदि सर्वोत्तम है।

माला तुलसी या चन्दन की लेनी चाहिए। प्रातःकाल से दो घण्टे पूर्व गायत्री साधना आरम्भ की जा सकती है। दिन में किसी भी समय जप हो सकता है। सूर्य अस्त होने के एक घण्टे बाद तक जप कर लेना चाहिए, दो घण्टे प्रातःकाल के और एक घण्टा सायंकाल का। यह तीन घण्टे छोड़कर रात्रि के अन्य भागों में नियमित गायत्री साधना नहीं होती है, मौन मानसिक जप किसी भी समय हो सकता है। प्रातःकाल पूर्व की ओर, शाम को पश्चिम की ओर मुख करके बैठने का विधान है, परन्तु यदि मूर्ति या चित्र किसी स्थान पर स्थापित हो तो दिशा का विचार न करके उसके सम्मुख ही बैठना उचित है।

माला जपते समय सुमेरू (माला के आरम्भ का सबसे बड़ा दाना) का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। एक माला पूरी होने पर उसे मस्तक से लगाकर पीछे को ही उलट देनी चाहिए। इस प्रकार सुमेरू का उल्लंघन नहीं होता। तर्जनी उँगली का जप के समय उपयोग नहीं किया जाता है।

जप नियमित संख्या में तथा नियत स्थान पर करना उचित है। यदि कभी बाहर जाने या अन्य कारणों से जप छूट जाय तो आगे थोड़ा-थोड़ा करके उसे छूटे हुए जप को पूरा कर लेना चाहिए और एक माला प्रायश्चित स्वरूप अधिक करनी चाहिए। अन्त में मैं यही कहूँगा कि यदि साधक मन से, पूर्ण आस्था से, विश्वास से माँ गायत्री की साधना करते हैं तो साधक की अवश्य ही संकल्पित मनोकामना पूर्ण होगी।

ध्यान-अंतरात्मा का द्वार है

ध्यान एक विशुद्ध मानसिक क्रिया है, जिसके अन्तर्गत किसी पदार्थ की स्थापना अपने मानसिक क्षेत्र में की जाती है। हमारा मन इसी अवस्था के आसपास घूमता रहता है और हमारे मस्तिष्क की ज्यादातर चेतनाएँ इसकी ओर स्वतः आकर्षित होने लगती हैं। इसके फलस्वरूप एक बिन्दु पर इनका केन्द्रीकरण होने लगता है। इस प्रकार ध्यान हमारी बिखरी हुई मानसिक शक्तियों को अपने में समाहित कर लेता है। ध्यान तो स्वयं को जानने, समझने एवं परखने की महान विधि है। इस क्रिया द्वारा ही हम जीवन का विकास कर सकते हैं तथा आन्तरिक दिव्य विभूतियों को भी प्राप्त कर सकते हैं।

ध्यान क्रिया प्रारम्भ करने से पहले अपने इष्ट का चयन करना आवश्यक है। इष्ट का चयन कर उसकी उपासना एवं आराधना कर हम अपनी मानसिक चेतना को जाग्रत करते हैं। जब मानसिक शक्ति जाग्रत हो जाती है, तो एकाग्रता बढ़ती है और सभी मानसिक शक्तियाँ केन्द्रित हो जाती हैं। इससे साधक के गुण, कर्म, विचार, उपाय अद्भुत रूप से बढ़ते हैं जो उसे उसके अभीष्ट लक्ष्य तक सरलतापूर्वक शीघ्र ही पहुँचा देते हैं। इसे ही इष्ट की सिद्धि कहते हैं।

ध्यान क्रिया एक गम्भीर अवस्था है। इसमें ध्याता, ध्येय तथा ध्यान, तीनों एक हो जाते हैं। यह क्रिया ध्यान का आध्यात्मिक स्वरूप है। विज्ञान की पहुँच इस अवस्था को स्पष्ट नहीं कर सकी है। ध्यान द्वारा प्राप्त सूक्ष्म चेतना साधक में गहरा परिवर्तन लाती है। इस परिवर्तन का प्रभाव साधक के मन और शरीर में निश्चित रूप से होता है।

अक्सर देखा गया है कि तनाव के दौरान चयापचय क्रियाओं के बढ़ने से हृदय की धड़कनें तेज हो जाती हैं। अतः रक्तचाप में भी वृद्धि हो जाती है। ध्यान क्रिया से चयापचय की दर घट जाती है व मानसिक अवस्था शान्त एवं स्थिर हो जाती है। इस क्रिया से हारमोन का स्तर बढ़ जाता है और साधक चिरयुवा बनने में सक्षम होता है, क्योंकि इसके प्रभाव से आयु की समस्या समाप्त होती दिखती है। ध्यान करने वाले साधक के विचार मौलिक एवं व्यावहारिक होते हैं।

यह क्रिया सरल एवं प्रतिबन्ध रहित है। सामान्य रूप से ध्यान करने के लिए किन्हीं नियम विधान की आवश्यकता नहीं है। हाँ, ध्यान का समय निश्चित होना चाहिए। इसकी समयावधि को पाँच-दस मिनट से क्रमशः बढ़ाना चाहिए। ध्यान में मन को शान्त, संयत एवं एकाग्र करने की बड़ी शक्ति है।

अन्त में, मैं यही कहूँगा कि ईश्वर की उपासना और साधना में ध्यान ऑक्सीजन का कार्य करता है और हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं।

स्वरोदय विज्ञान

स्वर एक प्राचीन विज्ञान है जो हमें बताता है कि हम अपनी श्वास की सहायता से किस प्रकार अपने प्राण को नियन्त्रित एवं संचालित कर सकते हैं। योगीश्वर भगवान् शंकर द्वारा रचित इस स्वरोदय को हम तान्त्रिक पद्धति भी कह सकते हैं। ऐसा ग्रन्थों में लिखा है कि भगवान् शिव ने सर्वप्रथम अपनी पार्वती को स्वर योग का महत्त्व समझाया था।

साधना हेतु प्रत्येक साधक के लिए स्वर योग साधना की जानकारी होना बहुत जरूरी है। यह बात बिल्कुल सत्य है कि हमारी श्वास प्रक्रिया का हमारी चेतना पर सूक्ष्म प्रभाव पड़ता है और इसी का विस्तृत अध्ययन करना ही स्वर योग की विषय वस्तु है।

स्वर योग के अनुसार हमारे तीन स्वर होते हैं-एक स्वर जो बाएँ नथुने से प्रवाहित होता है। दूसरा स्वर जो दाहिने नथुने से प्रवाहित होता है और तीसरा स्वर जो दोनों नथुनों से प्रवाहित होता है। यह तीनों स्वर हमारे शरीर और मस्तिष्क को प्रभावित करते हैं जिसके फलस्वरूप हमारे शरीर का पूरा नाड़ी संस्थान भी प्रभावित होता है।

जब बाएँ नथुने से श्वास का प्रवाह होता है तब उस समय हमारा चित्त क्रियाशील होता है और जब श्वास का प्रवाह दायें नथुने से होता है उस समय प्राण शक्तिशाली होता है और जब श्वास का प्रवाह एक साथ दोनों नथुनों में समान रूप से होता है तब मानव का आत्म पक्ष प्रबल होता है। ऐसी स्थिति में जप ध्यान करना श्रेष्ठ रहता है। नासिका के भीतर चलने वाले इन तीन प्रवाहों को इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना के नाम से भी जाना जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जब श्वास बाएँ नथुने से प्रवाहित होती है तो उस समय इड़ा नाड़ी सक्रिय रहती है और जब श्वास दायें नथुने से प्रवाहित होती है तो उस समय पिंगला नाड़ी सक्रिय रहती है।

दाहिना नथुना से श्वास प्रवाह हमें धनात्मक ऊर्जा प्रदान करता है जो सूर्य स्वर भी कहलाता है तथा बायाँ नथुना हमें ऋणात्मक ऊर्जा प्रवाहित करता है जो चन्द्र स्वर भी कहलाता है।

यह स्वर कुछ-कुछ समय के पश्चात् बदलते रहते हैं अर्थात् कभी हमारा दाहिना स्वर चलता है तो कभी बायाँ या फिर मध्य स्वर ही चलता रहता है। मध्य स्वर जो सुषुम्ना नाड़ी भी कहलाता है, के प्रवाहित होने की स्थिति में दोनों ही नथुनों से श्वास प्रवाहित होती है।

स्वरोदय विज्ञान के अनुसार सूर्य स्वर के प्रवाह में हमारे शरीर में अधिक ऊर्जा उत्पन्न होती है जिसके फलस्वरूप इस दौरान दुष्कर कार्य किये जा सकते हैं और चन्द्र स्वर के प्रवाह में आय सम्बन्धी कार्यों में सफलता मिलती है। सुषुम्ना नाड़ी के प्रवाह में भजन, साधना, जप आदि आध्यात्मिक कार्य सिद्धिदायक हैं। इस प्रकार स्वरोदय के साधक सावधानीपूर्वक चन्द्र और सूर्य स्वर का अभ्यास करके समस्त सांसारिक कार्यों को अपनी श्वास और प्रश्वास की गति से जान सकते हैं। यात्रा करते समय आपका जो भी स्वर चलता हो वही कदम पहले देहरी के बाहर निकालना चाहिए, इससे जिस कार्य हेतु आप बाहर जा रहे हैं उसमें सफलता मिलती है। घर से चलते समय आपका जो स्वर चलता हो उसी हाथ से कोई वस्तु लेनी या देनी चाहिए, जिसके फलस्वरूप वह सब प्रकार की हानियों से बचता है। जो व्यक्ति दिन-रात अपनी उन्नति के लिए विचार करता है- जैसे व्यापार की उन्नति, नया मकान बनवाना, आभूषण बनवाना, वस्त्र सिलवाना आदि कार्य चन्द्र स्वर में ही करने चाहिये। गुरु पूजन में योगाभ्यास के समय भी यही स्वर फलदायक होता है। जब सूर्य स्वर चल रहा हो तो भूत, पिशाच, डाकिनी, बेताल, यक्ष, गन्धर्वों आदि की साधना, तन्त्र मन्त्र की साधना, स्त्री प्रसंग, युद्ध, शास्त्रार्थ, नवीन विद्याध्ययन तथा शत्रुओं से वार्ता आदि कार्य सिद्ध होते हैं। लिखने में, मारण, मोहन उच्चाटन में, स्तम्भन में, लेनदेन में, शस्त्र ग्रहण करने में सूर्य स्वर सिद्धिदायक होता है।

जब पल-पल में बायाँ स्वर या दाहिना स्वर चल रहा हो या दोनों नथुनों से श्वास प्रवाहित हो रही हो तो उसे सुषुम्ना स्वर कहते हैं। यह स्वर काल रूप है तथा इतना खतरनाक है कि इसके प्रवाहित होने पर सभी कार्य नष्ट हो जाते हैं। तात्पर्य यह है कि इस स्वर प्रवाह में किये गये सब कार्य निष्फल होते हैं। अत: इस स्वर प्रवाह के समय ईश्वर का जप, ध्यान व आराधना में समय व्यतीत करना चाहिए।

हाँ, सुषुम्ना नाड़ी के चलते हुये हमारा कुण्डलिनी जागरण हो सकता है। हमें सदैव स्मरण रखना चाहिये कि कुण्डलिनी का जागरण बिना इसके संभव नहीं है।

अब प्रश्न यह उठता है कि यदि कोई कार्य हमें जिस स्वर विशेष में करना हो और उस समय वह स्वर न चल रहा हो तब क्या करना चाहिए। इसके लिए हमें सम्बन्धित स्वर को बदलना होगा जोकि एक अत्यन्त ही साधारण विधि के द्वारा सम्पन्न किया जा सकता है। इस विधि के अन्तर्गत हमें जो स्वर प्रवाहित हो रहा हो उसी तरफ करवट लेकर कुछ समय लेट जाना चाहिये। ऐसा करने से विपरीत स्वर प्रवाहित होने लगेगा।

अन्त में, मैं यहाँ कहूँगा कि स्वरोदय ज्ञान से न केवल शरीर को ही पूर्ण स्वस्थ रखा जा सकता है बल्कि इसकी सहायता से मन और आत्मा की उन्नति भी की जा सकती है।

कुण्डलिनी महाविद्या

कुण्डलिनी महाशक्ति प्रकृति की सर्वोच्च ऊर्जा महाशक्ति है। यह महाशक्ति सुप्त अवस्था में मूलाधार चक्र की जड़ में साढ़े तीन चक्कर लगाकर नीचे की तरफ मुँह करके और अपने मुँह में अपनी पूँछ पकड़े हुए विराजमान है। ऊर्जा शक्ति होने के कारण यह महाशक्ति सुप्तावस्था में भी मानवीय शरीर में अपना कार्य करती रहती है। कुण्डलिनी महाशक्ति को समझने के लिए सर्वप्रथम सम्पूर्ण योग चक्रों को जानना बहुत आवश्यक है और इसके साथ-साथ साधक को शरीर तन्त्र का भी पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। वास्तव में प्राणों को नियन्त्रित करके ही कुण्डलिनी महाशक्ति जागृत की जाती है। योगीश्वर भगवान् शंकर ने 400 विधियाँ इस प्रकार प्राणों को नियन्त्रित करने हेतु बताई हैं। इन मन-प्राण को शान्त करने वाली विधियों में से किसी भी विधि को साधक अपनाकर अपने प्राणों को कुण्डलिनी महाशक्ति की प्राप्ति हेतु शुद्ध कर सकता है। इस महाशक्ति के जागरण हेतु और भी कई प्रकार हैं। शक्तिपात भी एक चमत्कारिक मार्ग है जो केवल योग्य गुरु के सान्निध्य द्वारा ही सम्भव है। यह महाशक्ति निरन्तर ध्यान करने से, साधना करने से, गुरु कृपा और इष्टकृपा से भी जागृत हो जाती है।

प्राचीन काल से ही योग विज्ञान के अन्तर्गत विभिन्न योगों का अत्यन्त विस्तार के साथ वर्णन है। पांजल योग, जप योग, ध्यान योग, तन्त्र योग, स्वर योग, मंत्र योग, शक्ति योग आदि कितने ही योग मार्गों का विस्तृत रूप से हमारे शास्त्रों में वर्णन है। अत: इन योग साधनाओं को सतत् एवं लगातार करने से साधक की सबसे बड़ी शक्ति का आधार परम् महाशक्ति कुण्डलिनी के ध्यान की एकाग्र स्थिति उत्पन्न होने लगती है।

इस प्रकार की एकाग्रता से शक्तिदायिनी कुण्डलिनी स्वरूपा सिद्धि के उद्गम स्थल में एक विशेष प्रकार की सिहरन (सेन्सेशन) स्पन्दन कुछ साधारण सी प्रारम्भ हो जाती है और यह बात प्रत्येक साधक के जीवन में साधनाकाल के प्रारम्भिक समय में ही होने लगती है। कला, साहित्य, विज्ञान, उच्च प्रकार का अध्ययन, भक्ति, नृत्य, संगीत आदि और इसी प्रकार की कोई भी साधना की उच्च स्थिति में जो एकाग्रता एवं तन्मयता उस कलावन्त साधक को थोड़े रूप से प्राप्त होती है। उसके द्वारा भी कुण्डलिनी महाशक्ति के उद्गम स्थल पर इसी प्रकार की सिहरन या स्पर्श होने लगता है।

यदि साधक को किसी भी योग चक्र को थोड़ा बहुत स्पन्दित या जागृत करना हो तो उस स्थान पर अपने विचार एवं ध्यान को एक ही प्रकार के चिन्तन के रूप में स्थिर करने का प्रयास करें, इससे फलस्वरूप उस योग चक्र पर नियमित करने वाली दिव्य शक्ति धीरे धीरे विकसित होने लगेगी। सर्वप्रथम मूलाधार में 'लं' बीज मंत्र का निरन्तर जप और ध्यान करते रहने से इस चक्र की शक्तियों का उदय होता है। कुण्डलिनी महाशक्ति जगाने से पूर्व साधक के लिए आवश्यक है कि वह निरन्तर साधना एवं अभ्यास से मूलबन्ध को अत्यन्त मजबूत अवस्था में पहुँचा दे। मूलबन्ध साधना की परिपक्व स्थिति प्राप्त होते ही साधक की संकल्प एवं धारणा शक्ति अत्यन्त प्रबल हो जाती है। साधक की वाणी, आकृति एवं दृष्टि में एक विशेष आकर्षण उत्पन्न हो जाता है। उसमें सम्मोहन शक्ति का भी विकास होता है। साधारण व्यक्ति स्वाभाविक ही उसकी ओर आकर्षित होने लगते हैं और सम्पर्क स्थापित होने पर उन्हें साधक का ध्यान बार-बार आता रहता है। कहने का तात्पर्य यह है कि मूलबन्ध साधना ही वस्तुत: कुण्डलिनी महाशक्ति को जगाने के लिए महत्त्वपूर्ण एवं सशक्त माध्यम है। इसकी साधना किये बिना कुण्डलिनी महाशक्ति की साधना नहीं हो सकती, मूलबन्ध साधना ही इसकी कुंजी है। इस प्रकार साधक कुण्डलिनी योग साधना के नियमों का पूर्ण रूप से पालन करते हुए मजबूती के साथ योग मार्ग में आगे बढ़ने के लिए प्रयत्न करता है तो निश्चय ही कुछ योग सिद्धियों के सूक्ष्म रूप का साधक में उदय होने लगता है।

यह तथ्य सभी साधक भलीभाँति जान लें कि इस मार्ग पर चलते हुए मृत्यु तो कभी हो ही नहीं सकती क्योंकि इस मार्ग पर चलने से पहले ही मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली जाती है।

अन्त में, मैं यही कहूँगा जो साधक अपनी मानसिक इच्छाओं, कामनाओं तथा जो भी अनुचित चित्तवृत्तियाँ हैं, उन सब पर साधना के द्वारा अंकुश लगाने की अच्छी शक्ति प्राप्त कर लेता है और बिना अभिमान किये विनम्र रूप से योगसाधना में निरन्तर लगा रहता है उसी साधक को इस महाशक्ति की साधना का अधिकार प्राप्त होता है तथा जो साधक बिना अपनी चित्तवृत्तियों को शान्त किये जल्दी-जल्दी बिना सोचे-समझे और बिना किसी अनुभवी गुरु का निर्देश प्राप्त किये अपने ही ढंग से इस योग शक्ति की साधना प्रारम्भ करता है, उसका शीघ्र ही बुरी तरह पतन होता है।

राजीव आग्रवाल
11/7, डॉ. रांगेय राघव मार्ग,
बाग मुजफ्फर खाँ, आगरा-282 002
फोन: 0562-2524532 फैक्स: 2519090 मोबाइल : 9412259407

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बने बनाये फ्लैट में वास्तु दोष का कैसे हो निवारण

अगर हम पूर्व निर्मित या बिल्डरों द्वारा बने बनाये घर को पसन्द करते हैं तो उसकी संरचना का वास्तु नियमों के अनुसार पहले विश्लेषण कर लेना चाहिए। अगर वास्तु दोष ज्यादा हो, घर में किसी भी दिशा से सर्दियों में धूप नहीं आये या फिर गर्मियों में सुबह-शाम तपने वाला घर हो तो उसे मजबूरी में भी अधिग्रहण नहीं करें। कई बार कोई वैकल्पिक व्यवस्था न हो सकने के कारण हम वास्तु दोष वाले घर में निवास कर जाते हैं। या फिर अल्प कालीन समय के लिए ऐसे घर में रहना ही पड़ता है। ऐसी स्थिति में सिर्फ उसकी बाहरी संरचना को बिना कोई नुकसान पहुंचाये या बिना तोड-फोड़ के कुछ वास्तु नियमों का साज सज्जा बतौर इस्तेमाल करके अपनी परेशानियों को घटा जरूर सकते हैं।

बने बनाये मकान या फ्लैट्स में वास्तु दोष कैसे दूर किया जाये-इस पर हम यहां प्रकाश डालते हैं।

- किसी भी मकान/घर/फ्लैट् का मुख्य द्वार विशेष विचारणीय होता है। यदि प्रवेश द्वार दक्षिण को या दक्षिण पश्चिम में हो तो फिर मुख्य द्वार पर एक वास्तु यंत्र अवश्य स्थापित करना चाहिए। मुख्य द्वार के बाहर कोई व्यवधान या रुकावट नहीं होना चाहिए। एकदम सिढ़ियां चढ़ने या उतरने की अगर प्रवेश द्वार पर हो तो यह भी एक दोष होता है। अतः ऐसी स्थिति में एक घोड़े की नाल को दरवाजे के ऊपर बायें तरफ जरूर लगा देनी चाहिए।
- घर के मुख्य कक्ष-ड्राइंग रूम या शयन कक्ष में रामायण, महाभारत के युद्ध आदि के चित्र नहीं लगाने चाहिए। फिल्म अभिनेता/अभिनेत्री के चित्र भी घर के अन्दर लगाने से कलह, अशांति रहती है।
- बहुत सारे गणेश जी के चित्र या मूर्ति/आकृति घर में नहीं लगानी चाहिए। अगर गणेश जी लगाने ही हैं तो मुख्य द्वार पर लक्ष्मी युक्त गणेश का पक्का चित्र लगाना ठीक रहता है। इसके अलावा घर के उत्तरी तथा पूर्वी दिशाओं में फूलों के गमले/पत्तियां या तुलसी आदि के पेड़ लगा देने चाहिए ताकि हवा शुद्ध हो।
- हिंसक जानवरों की खाल या उनके भूसा भरे शरीर समेत आकृति या अन्य मूर्तियां आदि भी घर के मुख्य द्वार पर नहीं लगानी चाहिए। हनुमान/कालीमाता और शिव पार्वती के चित्र/ पोट्रेट आदि लगाना शुभ होता है।
- बैठक में कभी भी मन्दिर नहीं बनाना चाहिए। बैठक में किताबें जरूर रखें परन्तु उनकी दिशा उत्तर की दिवार हो। बहुत सारे मनोरंजन के उपकरण, शोर करनेक वाले पक्षी या नीचे को लटके कांच के भारी भरकम फानूस भी नहीं लगाने चाहिए। रोशनी के उपकरण कमरे की छत की बजाय अगर पूर्व या उत्तर की दिवार पर लगाये जा सकें तो यह भी बने बनाये घर के वास्तु दोष को दूर करता है।
- अक्सर लोग अपने पूर्वज या दादा, परदादा अथवा मृत परिजनों के चित्र भी घर पर लगा देते हैं। ऐसे चित्रों को देवताओं के चित्र के साथ नहीं लगायें।
- मृत परिजनों के चित्र सदैव घर के दक्षिण में और बैडरूम आदि में ही लगायें। कई लोग दुकान पर भी मृतजनों के चित्र लगाते हैं। परन्तु व्यापार की शुभता के लिए यह प्रतिकूल क्रिया है। व्यापार स्थल पर अगर मृतजनों के चित्र लगाने हैं तो फिर स्टोर या रेस्टरूम में लगायें, शोरूम में नहीं।
- दर्पण यानि शीसे की बहुत महत्ता होती है। फेंगसुई के अनुसार भी घर या दुकान में शीसे का लगाना एक महत्वपूर्ण क्रिया है। परन्तु इसे घर की पूर्व या उत्तर की दीवार पर ही लगाना उचित होगा। शोरूम या दुकान पर भी दक्षिण-पश्चिम का परहेज करके ही मिरर या शीसे लगाने चाहिए।
- घड़ी यानि टाइमपीस को पश्चिम या उत्तर पश्चिम की दीवार पर ही लगाने चाहिए। दक्षिण या नैऋत्य कोण में घड़ी कभी नहीं लगायें। दूसरी बात यह भी है कि स्लो या धीमे चलने वाली घड़ी कभी दीवार पर नहीं लगाने चाहिए।
- बीमार और रोगी व्यक्ति को नैऋत्य या दक्षिण पूर्व में ही सुलाना चाहिए। अन्य जगहों पर बीमार को रखने से उसका रोग बढ़ सकता है।
- कोर्ट केस, मुकदमें के कागज या फिर इम्तहान के रोल नम्बर को पूर्व दिशा या ईशान कोण में रखें।
- टी.वी., रेडियो या म्यूजिक सिस्टम को या तो बीच में या फिर अग्निकोण में रखना चाहिए। कम जगह होने पर भी टी.वी. के साथ फ्रिज कभी भी नहीं रखें। फ्रिज अथवा अन्य भारी उपकरण दक्षिण दिशा में रखें जाने चाहिए।
- घर के बाहर से किसी मन्दिर-मस्जिद या पीपल आदि के पेड़ की छाया घर पर नहीं पड़नी चाहिए। घर के अन्दर बड़ा मन्दिर या ६ इंच से ८ इंच ऊंची मूर्ति ही पूजा गृह में रखें। खण्डित या बड़ी मूर्ति भी पूजा स्थल में वर्जित है। पूजा स्थल के पूर्व या उत्तर में ही ब्रह्मा-विष्णु-शिव और गणेश आदि की मूर्ति लगायें। बहुत बड़ा घंटा या घड़ियाल भी घर में नहीं रखने चाहिए।
- शयन कक्ष में पलंग आदि इस तरह लगायें कि सोते समय सिर दक्षिण या पश्चिम में हो। पैर उत्तर या पूर्व की ओर हो।
- घर में अगर पूजा स्थल नहीं हो तो उसे ईशान या उत्तर पूर्व में अवश्य स्थापित करना चाहिए। यदि जगह की कमी हो तो इस दिशा का उपयोग बच्चों के स्टडी के रूप में किया जा सकता है।
- यदि वास्तु दोष अधिक हो और तोड़-फोड़ करने की कोई गुंजाइश नहीं हो तो फिर दक्षिण-पश्चिम भाग का फर्श ऊंचा कर देना चाहिए।
- पानी का कनेक्शन कभी भी अग्नि कोण या नैऋत्य कोण में नहीं होना चाहिए। नगर निगम या जल बोर्ड का नलका भी अगर घर में स्थापित करना हो तो ईशान कोण या पूर्व दिशा का मध्य भाग इसके लिए उत्तम है।
- टेलिफोन के तार, बिजली का कनेक्शन, जैनरेटर, इनवर्टर आदि को सदैव दक्षिण पूर्व दिशाओं में या फिर अग्निकोण और दक्षिण मध्य के बीच स्थापित करें। सीढ़ियों के नीचे कभी भी कोई विद्युत या संचार कनेक्शन नहीं लगायें।
- पूर्व या उत्तर को अधिक खिड़कियां होनी चाहिए जबकि दक्षिण और पश्चिम दिशा में कम। अगर किसी कारण दक्षिण-पश्चिम में खिड़कियां और निकास द्वार हो तो उसको मुख्य द्वार की तुलना में कम या बन्द कर दें।
- किसी प्रकार के कैक्टूस-कांटेदार फूल (गुलाब समेत), कांटों के गुलदस्ता घर के अन्दर या बाहर नहीं लगायें। चमेली या रात की रानी अथवा खुशबूदार फूल के छोटे पेड़ ही पूर्व या उत्तर पूर्व के खाली स्थान में लगा सकते हैं। शयन कक्ष में भी पेड़-पौधों के चित्र, झाड़ी या बेल नहीं लगायें। इससे घर में कलह बढ़ती है और घर के मुखिया को आर्थिक दबाव बढ़ जाता है।
- शयन कक्ष में उत्तर दिशा की ओर या ईशान कोण में झाड़ू नहीं रखनी चाहिए। सोते समय पैर दरवाजे की ओर नहीं होने चाहिए। शयन कक्ष में ढोलक, वाशिंग मशीन, ईमामदस्ता, कनस्तर, हीटर या तेल के कनस्तर, मिट्टी के बर्तन नहीं रखने चाहिए। इससे बुरे स्वप्न आते हैं। और घर का वास्तु दोष बढ़ जाता है। मकान अगर छोटा भी हो तो कोई बात नहीं परन्तु शयन कक्ष दक्षिण या पश्चिम दिशा की ओर ही बनाये।

अगले अंक में लाल किताब के वास्तु नियम और बिना तोड़-फोड़ के वास्तु दोष निवारण पर चर्चा

पं. केवल आनन्द जोशी
DIC-33A, जनकपुरी, नई दिल्ली
फोन-011-28523407
मो.- 9810202780

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर्ष 2005 में भारतीय शेयर बाजार की स्थिति

इस वर्ष के आरंभ में शेयर बाजार की स्थिति बहुत धीमी रहेगी। जनवरी में सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि की घोषणा और फरवरी बजट पूर्व घोषनाओं के बाद शेयर बाजार में कुछ उछाल आयेगा। परन्तु मार्च 2005 में बजट के बाद फिर टाय-टाय फिस्स। शेयर बाजार कछुए की चाल से आगे बढ़ेगा और जून 2005 तक इसका सूचकांक 5500 के आसपास रहेगा। आई.टी और पुरानी एकानॉमी शेयरों के बाद ऑटो के शेयरों और सीमेंट तथा फार्मेसी के शेयरों में कुछ चाल अच्छी रहेगी। रिलायंस एक महत्वपूर्ण स्थान पर हमेशा की तरह ही अपना स्थान बनाये रखेगा। इस साल पेट्रो शेयरों में भारी उछाल देखा जा सकता है जबकि कुछ बैंकों और होटल आदि उद्योगों के शेयर धाराशायी रहेंगे। शेयर बाजार के लिए अप्रेल से सितम्बर तक का समय काफी असंतुलन वाला और आम आदमी के लिए निराशाजनक ही रहेगा। अक्टूबर 2005 के बाद शेयर भी अपनी खामोशी तोड़ सकते हैं। एक साथ ही सोना-चांदी और अलौह धातुओं में उछाल आने से नवम्बर-दिसम्बर के महीने में शेयर बाजार मजबूती पर होगा। शेयर बाजार की समीक्षा जानने के लिए पाठक महीने-महीने के स्पेशल चांस इस लेखक से मंगवा सकते हैं। क्योंकि समकालीन राजनीतिक समीकरण और देश की आर्थिक नीतियों का समन्वय भी शेयर बाजार की दिशा तय करता है। अत: काफी समय पहले ही इन बातों का अनुमान लगा लेना, कुछ चूक भी करा सकता है। बहर हाल लब्बोलुआब यही है कि वर्ष 2005 के अंत तक शेयर बाजार में उल्लेखनीय वृद्धि इसके सूचकांक में हो सकती है।

शनि साढेसाती का प्रभाव

विगत वर्ष 5 सितम्बर को शनि मिथुन राशि को पार करके कर्क राशि में प्रवेश कर चुका है। अत: वर्ष 2005 के सम्पूर्ण साल कर्क का शनि ही रहेगा जो कि मार्च-अप्रैल में एक बार वक्री अवस्था में अपनी पिछली राशि पर जायेगा। वक्र अवस्था में शनि उन राशियों को पुन: पीड़ित/लाभान्वित करता है जिसे वह संक्रमण के पहले प्रभावित करता रहा। फिर भी निम्नलिखित राशियों में वर्ष 2005 में साढ़ेसाती का प्रकोप कायम रहेगा।

मेष को चौथा शनि लोहे के पाये से रहेगा। इसके चलते इस वर्ष घर में रोग-बिमारी-आलस्य के कारण आजीविका में नुकसान, व्यापार में घाटा और वरिष्ठ लोगों का वियोग जैसे घटना हो सकती है। बचाव के लिए लोहा और नीलम धारण करना हितकर होगा।

प्रमुख खाद्यान्न-दलहन और तिलहन

चूंकि वर्ष का राजा शनि है अत: वर्ष 2005 में दलहन और तिलहन की पैदावार अच्छी होगी। चूंकि बुध मंत्री है अत: अन्तर्राज्यीय व्यापार और परोसी देशों के साथ भी कारोबार का सिलसिला प्रमुख जिन्सों की तेजी-मंदी को काफी उछाल देता रहेगा। राजा शनि का होना खनिज और लौह धातुओं सहित पेट्रोल-कैरोसिन जैसे दुर्लभ ईंधन की चारों ओर खोज होगी। और नये-नये स्त्रोत प्राईवेट शोधकर्ताओं को मिलेंगे। सबसे खराब पक्ष इस साल महंगाई का बढ़ना रहेगा। क्योंकि शनि के शासन काल में सामान्य प्रजा को जीवन यापन की कई दिक्कतें आती हैं। निर्माण सामग्री सहित सीमेंट, लोहा और रंग-रोगण के दाम आसमान पर जा सकते हैं। बीच-बीच में सरसों, अरण्डी और अलसी जैसे तिलहन भी अपनी तेज धार से व्यापारियों और स्टॉकिस्टों को प्रभावित करेगा। गुड़, खाण्ड और चीनी पर इस वर्ष ज्यादा महंगाई होगी। गर्मियों के दौरान गुड़ का उत्पादन कम होने और मांग बढ़ जाने से भी व्यापारी लोग चांदी काट सकते हैं।

सर्राफा-जवाहरात-कपास और ऑटोमोबाइल: इस कारोबार के लिए वर्ष 2004-2005 बहुत ही अनुकूल है। ऑटो क्षेत्र में चारों ओर प्रगति के चलते कारोबार के नये क्षेत्र विकसित होंगे। डीजल-पेट्रोल के महंगे होने के बावजूद यातायात के साधनों को चलाने के दूसरे विकल्प अभी दूर की बात होगी। अत: थोड़े-बहुत फायदे के चलते ट्रान्सपोर्ट और परिवहन के कारोबार में अच्छी स्थिति को नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता है।

संवत्सर 2062 यानि वर्ष 2005 का उत्तरार्द्ध वर्ष प्राय: सभी उपभोक्ता वस्तुओं में तेजी का कारक होगा और ढीले व्यापार से परेशान व्यापारी बन्धुओं को आशा की किरण नजर आयेगी। बैंकिंग व्यवसाय तथा बीमा कारोबार के नये-नये क्षेत्र सामने आने से कारोबार में वृद्धि तो होगी परन्तु उम्मीद के मुताबिक जन साधारण को इनका लाभ नहीं मिल पायेगा और लोकल सेठ, साहूकारों और सूदखोरों का वर्चस्व बना ही रहेगा।

पं. केवल आनन्द जोशी
DIC-33A, जनकपुरी, नई दिल्ली-58
फोन-011-28523407 मो.- 9810202780

अंगुलियों का जादू

गायत्री मंत्र में भी २४ मुद्राओं की बात कही गई है और बताया गया है कि जो इन मुद्राओं का अभ्यास नहीं करता उसे गायत्री-जाप का फायदा नहीं होता। योग के अंतर्गत अनगिनत मुद्राएं आती हैं। हमने स्वयं भी कुछ मुद्राओं का विकास किया है। आज जिन रोगों से लोग पीड़ित हैं उनका एक निदान इन मुद्राओं के साधने में भी है।

"अक्सर आपको मां ने अंगुली चटकाने अथवा पांव हिलाने पर टोका होगा। इसे अशुभ माना जाता है। ऐसा करने से प्राण-शक्ति की हानि होती है। यदि प्राण-शक्ति का क्षय ज्यादा मात्रा में हो तो मस्तिष्क की क्षति हो सकती है। मुद्रा-विज्ञान के जरिए प्राण-शक्ति के क्षय को रोका जा सका है। इससे व्यक्ति को रोगों से छुटकारा पाने में मदद मिलती है। योग ने मुद्रा-विज्ञान के रूप में मानवता के कल्याण के लिए बहुत बड़ा उपहार दिया है।" मुद्राओं से प्राण-शक्ति का आपसी असंतुलन दूर होता है। अगली बार आप बीमार पड़ जायें तो याद रखें कि बीमारी प्राण-शक्ति के असंतुलन से पैदा हुई है और कोई खास मुद्रा आपको इस बीमारी से बचा सकती है।

यहां सर्व-सामान्य के लिए कुछ मुद्राओं का उल्लेख किया जा रहा है। रोजाना आधा घंटे इनका अभ्यास किया जा सकता है। बेहतर होगा कि आसन पर अभ्यास के समय आप पालथी मारकर बैठें, लेकिन ऐसा न हो सके तो भी मुद्रा साधने के इस अभ्यास में कोई कमी नहीं आयेगी। चाहे तो किसी खास मुद्रा में अंगुलियों को साधकर जेब में हाथ रख लें और मजे से टहलें।

ज्ञान मुद्रा

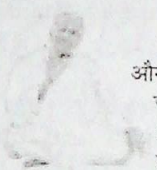

इस मुद्रा को करने के लिए तर्जनी और अंगूठे को हल्के से साथ जोड़ें, ज्यादा दबाव न डालें। शेष तीनों अंगुलियां अलग और ऊपर की तरफ उठी हों। बुद्ध, महावीर, ईसा आदि महात्माओं को इसी मुद्रा में चित्रित किया गया है। इस मुद्रा के अभ्यास से मानसिक शांति प्राप्त होती है। एकाग्रता आती है स्मरणशक्ति तेज होती है और आध्यात्मिक भावनाएं जागती हैं।

अपान वायु मुद्रा

इसे मृतसंजीवनी मुद्रा भी कहते हैं। तर्जनी को नीचे की ओर मोड़कर अंगूठे के पर्वत को स्पर्श कराएं। अंगूठे को बीच की दो अंगुलियों से स्पर्श कराएं। कनिष्ठिका अंगुली सीधी रहे। इस मुद्रा से हृदय की बीमारियों में फायदा होता है। दिल का दौरा पड़ने पर प्राथमिक उपचार के रूप में अगर इस मुद्रा को पहले कुछ देर कर लिया जाए तो तुरन्त आराम मिलता है।

प्राण मुद्रा

अंगूठे के शीर्ष भाग को कनिष्ठिका और अनामिका अंगुली से हल्का स्पर्श करें। यह जीवनदायनि मुद्रा है। इससे शरीर को ऊर्जा मिलती है और शरीर की जीवनी-शक्ति बढ़ती है। इससे आंखों की ज्योति में भी वृद्धि होती है। कमजोरी, थकान और घबराहट महसूस करने वालों के लिए यह मुद्रा अत्यन्त उपयोगी है।

अपान मुद्रा

मध्यमा और अनामिका अंगुली से अंगूठे के शीर्ष-भाग का स्पर्श करें। इससे पेशाब करने में दिक्कत आ रही हो तो फायदा होता है। इससे शरीर से विजातीय पदार्थ निकालने में मदद मिलती है और शरीर की शुद्धि होती है।

शून्य मुद्रा

मध्यमा अंगुली को नीचे करके हथेली को छुएं और इस अंगुली के शीर्ष-पर्व पर अंगूठे को रखें। शेष अंगुलियों को सीधे उठायें रहें। इस मुद्रा को प्रतिदिन ४० मिनट करें। इस को करने से कान-दर्द में फायदा पहुंचेगा।

सद्गुरु देव आचार्य केशव देव जी महाराज
विवेकानन्द योगाश्रम, पटपड़ गंज रोड, खुरेजी, दिल्ली-51
फोन न. : 22502142, 22424057, 31042570

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सन् २००५ ई. में ग्रहों का शेयर मार्किट पर प्रभाव

निर्देशन : डॉ. बसन्त लाल व्यास (स्वर्ण, रजत पदक विजेता)
लेखक-पं. अनिल कुमार व्यास, श्री अम्बा ज्योतिष पीठ राया, मथुरा, उ.प्र.-२८१२०४
दूरभाष:-(०५६६३) २७३३५३, २७३४९२

जनवरी—ता. १-नववर्ष शुभ व मंगलमय हो। ता. ४-धुन के शुक्र शेयरों के भाव तेजी की ओर मान करें। ता. ८-शेयरों के भावों में तेजी, मेडीसन, आयरन शेयरों में चमक। ता. १२-शीत की सरसराहट से भाव तेज रहेंगे। ता. १४-जन. गिरे भावों में सुधार। नये इश्यू से बाजार प्रभावित। ता. १७-जन. चलती लाईन में परिवर्तन। ता. २०-स्थिरता को बल मिले। ता. २४-भावों में मन्दी का झटका। ता. २६-जन. भावों में गिरावट, ता. २९-गिरे भाव सुधार लेंगे।

फरवरी—ता. १-भावों में मन्दी। ता. २-गुरु वक्री सभी चुनिन्दा शेयरों में तेजी। सुस्त भी आलस्य त्यागें। ता. ५-बाजार में गर्मी स्थाई नहीं, भावों में मन्दी का झटका, ता. ९-भावों में घटाबढ़ी से मन्दी, ता. १३-फर. कुम्भ संक्रांति- आयरन, कैमीकल, मेडीसन, टायर आदि से सम्बन्धित शेयरों में अच्छी तेजी का योग। ता. २२-भाव घटाबढ़ी में। ता. २५-भावों में घटाबढ़ी हो, लेकिन परिवर्तन विशेष नहीं। ता. २८-भाव मन्दी का मान करें।

मार्च- ता. १-भावों में घटाबढ़ी से तेजी। ता. ५-भावों में चमक बने। ता. ६-भावों में स्थिरता। ता. १०-भावों में मन्दी का झटका। ता. १३-भावों में सुधार। ता. १४-घटाबढ़ी विशेष हो, बुद्धि चातुर्य से कार्य करें। ता. १८-भाव सर्पमुखी चाल से उठें। ता. १९-तेजी को बल मिले। ता. २३-भावों में तेजी रुके, भाव भी उठ जायेंगे। ता. २८-भावों में तेजी को बल। ता. ३०-बाजार गर्मी के साथ बन्द हो। नव संवत् में लाभ मिले।

अप्रैल-ता. १-भाव स्थिरता को बल देंगे। ता. ५-भावों में गिरावट। ता. ८-गिरे भावों में सुधार। ता. १०-भावों में तेजी को बल मिले। ता. १३-वायदा व्यापार से लाभ, भावों में तेजी। ता. १६-चलती लाईन पलट जायेगी। एक तरफा तेजी का योग। ता. १९-भावों में अच्छी मन्दी का झटका। ता. २३-भावों में गिरावट। ता. २५-अप्रैल भावों में घटाबढ़ी। ता. २९-दो दिन बाजार में अच्छी घटाबढ़ी चले लेकिन मन्दी विशेष नहीं, सतर्कता से कार्य करें।

मई-ता. १-भावों में घटाबढ़ी। ता. ३-सभी चुनिन्दा शेयरों के भाव आंधी के आम की तरह टूट जायेंगे। ता. ६-भावों में सुधार। ता. ९-भावों में तेजी का झटका। ता. १४-वृष संक्रांति भावों में सुधार। ता. १८-मई भावों में स्थिरता को बल मिले। ता. २१-घटाबढ़ी से भावों में तेजी। ता. २४-कर्क के शनि उपद्रव, विद्रोह जैसी स्थितियों में भावों में तेजी बना देंगे। ता. २८-भावों में अनिश्चितता। ता. ३०-भावों में आंशिक मंदी।

जून-ता. १-शेयरों के भावों में सुधार। ता. ५-भावों में तेजी को बल। ता. ९-भावों में मन्दी का झटका। ता. १४-भावों में घटाबढ़ी विशेष हो लेकिन अन्त परिणाम तेजी का ही रहेगा। ता. २०-भावों में घटाबढ़ी से मन्दी। ता. २३-भाव प्रथम मन्दी ले तेजी बना लेंगे। ता. २३-भावों में मन्दी "दैत्यगुरु यदा कर्के" से आंधी, वर्षा। ता. २५-भावों में तेजी। ता. २८-रेवती के भौम भावों में मन्दी बना देंगे। विशेष रिपोर्ट से जानकारी लें।

जुलाई-ता. १-भाव मन्दी ले सुधार लेंगे। ता. ४-घटाबढ़ी से तेजी। ता. ८-भावों में गर्मी। ता. १०-प्रथम तेजी लें मन्दी का मान। ता. १३-तेजी को बल मिले। ता. १६-जुलाई कर्क संक्रांति मन्दी का झटका देगी अत: बुद्धि चातुर्य से कार्य करें। ता. २०-तेजी स्थाई नहीं। भावों में मन्दी का झटका। ता. २३ बुध वक्री भी मन्दी को बल देंगे। ता. २५-भाव सुधार लें। ता. २८-भावों में सुधार की आशा नहीं है।

अगस्त-ता. १-भाव मन्दी का मान त्यागें। ता. ६-चन्द्रदर्शन भावों में तेजी का योग। ता. ९-सूर्यमुखी चाल से भाव सुधार लें। ता. १२-भावों में मन्दी का मान हो। ता. १५-बनावटी मन्दी हो सकती है। यह स्थाई नहीं है। सतर्कता से कार्य करें। ता. १७-भावों में घटाबढ़ी से तेजी। ता. २२-भावों में तेजी को बल मिले। ता. २६-भाव उठकर गिर जायेंगे। ता. ३०-भावों में तेजी, बाजारों में गर्मी, विशेष के लिए लिखें।

सितम्बर-ता. १-भावों में सुधार। ता. ७-भाव सुधार लेकर तेजी बना लेंगे। ता. ११-भावों में चमक का योग। ता. १४-दो सप्ताह के अन्तर्गत तेजी मन्दी के विशेष झटके। ता. १६-कन्या संक्रांति शुक्रवासरी है भाव एक तरफा तेजी ले सकते हैं, आयरन-शेयरों के भाव तेजी लेकर गिर जायेंगे। ता. १९-वृश्चिक के शुक्र घटाबढ़ी देंगे। ता. २४-भाव सुधार लें। ता. २९-भाव घटाबढ़ी लेकर तेजी बना लें।

अक्टूबर-ता. १-भाव तेजी लेकर मन्दी का मान करें। ता. ५-गुरु अस्त भावों में तेजी को बल। ता. ८-भाव मन्दी का मान कर उठे। ता. १२-भड़कती तेजी आ सकती है। ता. १५-भावों में तेजी। ता. १८-तुला संक्रांति भावों में मन्दी को बल। ता. २३-तेजी को बल मिले। ता. २६-भाव घटाबढ़ी तो लें लेकिन अंतत: तेजी। ता. २९-नौ दिनों के अन्दर विशेष तेजी-मन्दी के योग, भाव में तेजी रहेगी।

नवम्बर-ता. ३-भावों में अस्थिरता को बल मिले। ता. ५-भावों में सुधार। ता. १३-भावों में तेजी को बल। ता. १६-भावों में घटाबढ़ी से सुधार। ता. १९-उठे भावों में मन्दी को बल। ता. २३-भावों में मन्दी रहे। ता. २५-चलती लाईन पलटा ले। ता. २९-भावों में घटाबढ़ी से तेजी, किसी-किसी में तेजी का विशेष योग।

दिसम्बर-ता. ३-भावों में घटाबढ़ी से तेजी। ता. ७-भावों में तेजी को बल। ता. ११-भावों में मन्दी का झटका। ता. १५-उठे भावों में गिरावट। ता. १८-सर्पमुखी चाल से सुधार हो। ता. २२-भावों में तेजी को बल मिले। ता. २५-भावों में घटाबढ़ी लेकिन विशेष नहीं। ता. २८-गिरे भावों में सुधार। ता. ३०-भावों में तेजी को बल मिले।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सन् २००५ ई. में चन्द्रग्रहण व सूर्यग्रहण का प्रभाव

विक्रम संवत् २०६२ में दो ग्रहण होंगे। प्रथम ग्रहण ३ अक्टूबर २००५ को व द्वितीय ग्रहण १७ अक्टूबर सन् २००५ को होगा उनका विवरण निम्न प्रकार से है।

प्रथम सूर्यग्रहण—दिनांक ३ अक्टूबर सन् २००५ ई. आश्विन कृष्ण अमावस्या सोमवार को प्रथम सूर्यग्रहण होगा जो सम्पूर्ण भारत में दिखाई देगा। यह ग्रहण हस्त नक्षत्र ब्रह्म योग व ना करण में होगा। चन्द्रदेव उस समय कन्या राशि में होंगे। **कन्यायां ग्रहणे पीड़ा त्रिपुटा शालि जातिषु। कवीनां लेखकानां च गायकानां धन क्षयः॥** त्रिपुट व शालि जाति के लोगों को कष्ट प्रदायक। कवि, लेखक, गाय को ग्रहण अशुभ फल प्रदायक है। घी, तेल, रसायन के भावों में तेजी ३ महीने के अन्दर लाभ प्रदायक। गेहूं, जौ, चना व धान्यों के भावों में मंदी को बल प्रदान होगा।

वार फलम्—यह ग्रहण सोमवार को है अतः घी, तेल, तिल, मूंग, उड़द, अफीम, लोहा के संग्रह से लाभ व आगामी दिनों में काफी लाभ की प्राप्ति होगी व सभी प्रकार की धातुओं एवं मूल द्रव्यों में भारी घटाबढ़ी व अन्त में परिणाम तेजी का ही रहेगा।

नक्षत्र फलम्—ग्रहण हस्त नक्षत्र के अन्तर्गत हो रहा है। जिससे चावल, चना के भावों में आगे तेजी को बल मिलेगा। रुई, सूत, तिल, तेल में भी तेजी को बल मिलेगा।

ग्रहण समय—ग्रहण का आरम्भ रेलवे टाईमानुसार १६।१५ पर स्पर्श व १६।५२ पर मध्य व १७।५२ पर मोक्ष व १।१० पर पर्व होगा। इस सूर्य ग्रहण के सूतक २ अक्टूबर उत्तर रात्रि स्टै. टाईम के अनुसार ४।१५ से आरंभ हो जायेंगे।

द्वितीय चन्द्रग्रहण—द्वितीय खण्डग्रास ग्रस्तोदय चन्द्रग्रहण आश्विन शुक्ला पूर्णिमा सोमवार श्री संवत् २०६२ दिनांक १७ अक्टूबर सन् २००५ को होगा। यह ग्रहण रेवती नक्षत्र, हर्षण योग व वि. करण के अन्तर्गत होगा। सूर्य तुला राशि पर व चन्द्रदेव मेष राशि पर स्थित होंगे। **उपरागैर्यदा मेषे पीड्यंते मेतदा जनाः** से प्रजा के कष्टों में वृद्धि, कम्बोज, आंध्र, पांचाल तेलंग देशों में पीड़ा। प्राकृतिक आपदाओं की वृद्धि, किसी बड़ी दुर्घटना का योग। घी, तेल का भाव तेज। तीन महीने के अन्दर लाभ, अन्न के भावों में मन्दी। व्यापारी वर्ग में चहल-पहल अर्थात् प्रसन्नता।

वार फलम्—चन्द्रग्रहण सोमवार को है। घी, तिल, तेल, मूंग, उड़द, अफीम व लोहा, काली मिर्च का संग्रह करने से अगामी लाभ। रुई ग्रहण के पहले संग्रह करने से व ग्रहण के बाद बेचने अर्थात् दो महीने बाद २५ से ३० रुपए की तेजी का लाभ मिले। घी-तेल भी तेज होंगे।

नक्षत्र फलम्—मास षष्टकाल्लाभ एव से मूंग, उड़द छठवें महीने के बाद विक्रय करने से लाभ हो अर्थात् संग्रह करें। छठवें महीने में बेचने पर अच्छा लाभ मिलेगा।

ग्रहण समय—यह ग्रहण २६।४० पर स्पर्श अर्थात् रेल्वे टाईम के अनुसार १७।१५ पर स्पर्श करेगा। १७।४१ पर मध्य व १८।६ पर मोक्ष होगा। इस ग्रहण का सूतक ८।१५ से प्रारम्भ होगा।

समय—ग्रहण के सूतक काल में बालक वृद्ध व रोगी जनों को छोड़ कर सूतक के समय भोजन करना, शयन करना, मूर्ति पूजन, चिन्तन, हास्य विनोद निषेध है। ग्रहण के स्पर्श के समय से भागवत् कीर्तन, हवन आदि करें। मोक्ष पश्चात् स्नान करें, ग्रहण के समय कोई मंत्र उच्च स्वर से नहीं जापना चाहिए व गृहस्थी लोगों को उपवास भी नहीं करना चाहिए। विशेष कर गर्भवती स्त्रियों को शान्त भाव रहना चाहिए। स्नान पश्चात् अन्नदान, जल दान, लोहादान आदि करने चाहिए।

प्रथम ग्रहण—तुला राशि व द्वितीय ग्रहण मेष राशियों व कन्या राशि की स्त्रियों, वृष राशि की स्त्रियों को ग्रहण दर्शन नहीं करने चाहिए। ग्रहण के समय शान्त भाव से धार्मिक ग्रन्थ, पुराण, श्रवण, गुरु वचनामृत, कीर्तन आदि पुण्यदायक कार्य करने चाहिए। शेष गुरु अधीन।

लेखक-पं. अनिल कुमार व्यास

तेरह दिन का पक्ष

सामान्य रूप से प्रत्येक मास में दो पक्ष होते हैं और प्रत्येक पक्ष में १६ या १५ अथवा १४ तिथियों का मान रहता है। परन्तु कभी दैवयोग वश तिथि गणित क्रिया के द्वारा तिथि क्षय वश तेरह तिथि रह जाती हैं और पक्ष तेरह दिन का हो जाता है। इस वर्ष ग्रह वश सूर्य और चन्द्र की गति के कारण तेरह दिन का पक्ष बन गया है। इस वर्ष कार्तिक शुक्ल पक्ष संवत् २०६२ में प्रतिपदा तथा पूर्णिमा का क्षय मान है। गणित भिन्न प्रक्रिया वश इसके समकक्ष भी तिथि क्षय मान से भी दिन संख्या १३ का ही मान रहेगा। २ नवम्बर सन् २००५ से १४ नवम्बर २००५ तक इसका मान रहेगा। **अनेक युग सहस्त्रयां दैवयोत्प्रजायते। त्रयोदश दिने पक्ष स्तदा संहरते जगत्॥** वर्ष प्रबोध॥ दैवयोग से कई एक युगों में प्रजा का नाश करने हेतु तेरह दिन का पक्ष आता है। अर्थात् जिस पक्ष में तेरह तिथि (दिन) हों प्रजा का क्षय, रोग, मंहगाई व प्राकृतिक प्रकोप उपद्रव आदि करता है।

इससे पूर्व तेरह दिन के पक्ष के कारण महाभारत का संग्राम हुआ था। सन् १९३७ में तेरह दिन का पक्ष आया था। जिसमें विनाशकारी भूकम्प आया था। सन् १९६२ में तेरह दिन का पक्ष आया उस समय चीन ने भारत पर आक्रमण किया था। चीन आज भी भारत के काफी बड़े भूभाग पर कब्जा किये है और हमारी सरकार लोकसभा के प्रस्ताप के बाद भी व्यापार वृद्धि, सांस्कृतिक सम्बन्धों को महत्व देकर भारत की पावन भूमि को पीछे करती जा रही है। इसके उपरान्त सन् १९७९ ई. में ज्येष्ठ मास में यह पक्ष आया था। पाक भारत युद्ध, प्राकृतिक प्रकोप और मंहगाई से जीवन ही भार जन-जन को बन गया है। सन् १९७१ ई. भारत पाक युद्ध हुआ तथा सन् १९९९ ई. में तेरह दिन के पक्ष के कारण कारगिल युद्ध व प्राकृतिक प्रकोप से जन धन की हानि हुई।

यदा जायते पक्ष त्रयोदश दिनात्मकः।
भवेल्लोक क्षयो घोरो मुण्डमालायुतां मही॥

यह समय भारत के लिए ही नहीं विश्व को भी कठोर है। विश्व में मानवता का ह्रास होगा, रणभेरी की गूंज सुनाई देगी, सेना पर व्यय में वृद्धि, सेना के प्रभाव में वृद्धि होगी। मानवतावादी शक्तियों पर दानवता की विजय होगी। मंहगाई व बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, आपाधापी, स्वार्थवाद में वृद्धि, आतंकवाद, अलगाववाद, राष्ट्र विरोधी शक्तियों को बल प्राप्त होगा। विश्व में तनाव की वृद्धि होगी।

युग सहस्र बीते थर्को, विधि के होवे योग।
तेरह दिन को पाख ही, नाम करत तिक लोग॥
काल परत जग सारे सही, रुण्ड-मुण्ड हुई सगरी मही।
छत्र भंग अरु हाहाकार, क्षय होवें सबहीं नर नगर॥
कौरव पाण्डव लरे, राम रावण युद्ध किद्धौ।
हुवो जगत संहार, काल ने, बहुजन विद्धौ॥
ब्रह्मपुत्र जु भरत साथ बाहुबल लरियो।
बारह बरसी काल जगति याहीते परियो॥
अनेक उपद्रव जग करति तेरा दिन को पाख इहु।
धूमधाम जो युद्ध हो ऐसौ फल मुनि मेघ कहु॥

इसी कुयोग के साथ चैत्र, वैशा., ज्येष्ठ, आषाढ़, भाद्रपद में तिथि क्षय व कार्तिक में सूर्य और चन्द्र ग्रहण भी हैं। यह "एक तो करेला दूसरे नीम चढ़ा" वाली कहावत सिद्ध कर रहा है।

चैत्राद्भाद्रपदं यावच्छुक्ल पक्षे यदा त्रुटि।
तदा क्वचिच्चोपपत्ति रल्प धान्योदयः क्वचित॥

खेत हानि, अन्न की पैदावार में कमी, प्रजा को कष्ट, शासकों को परेशानी व रोग उपद्रव आदि में वृद्धि, अतिवर्षा, खण्ड वर्षा से हानि, शोक व रोग वृद्धि का योग बन जाता है।

त्रयोदश दिने पक्ष तदा संहतते जगत्।
अपि वर्ष सहस्रेण काल योगः प्रकीर्तत॥

वाक्य प्रमाण से तेरह दिन के पक्ष में विवाह, उपनयन, गृह प्रवेश, आरंभ आदि मंगल कार्य नहीं करने चाहिए।

विश्व का समय कठोर है। भारत के शासक वर्ग को विशेष सतर्कता की आवश्यकता है। भारतीय राज्य सीमा पर सैन्य पृथकतावादी हलचलों की वृद्धि होगी। भारत के व्यापारी वर्ग को देश भक्ति का प्रदर्शन और स्वार्थत्याग करना चाहिए। संकट निवारण, विश्व कल्याण, देश राष्ट्र रक्षा और भक्ति के हेतु सहस्रचण्डी, विष्णु, रुद्रयज्ञ, मानस नवान्ह परायण, भागवत सप्ताह, हरि नाम कीर्तन आदि का आयोजन करना चाहिए तथा काम्य शुभ कार्यों का त्याग गुरु, शुक्र, मलमास के समान करना चाहिए।

लेखक-पं. अनिल कुमार व्यास

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सन् २००५ ई. का व्यापार भविष्य व्यापारिक जिन्सों की तेजी-मंदी लाईनों का व्यौरा

जनवरी

यह मास पौष कृष्ण ५ शनि से प्रारंभ होकर माघ कृष्ण ६ सोमवार तक रहेगा। मास में पांच सोम से धान्य के भावों में मन्दी व पाँच भौम योग दुःख, रोग, शोक को बल प्रदान करेंगे। शीत की सरसराहट, वर्षा, ओला, हिमपात से बाल व वृद्धजनों को कष्ट मिले। ता. ४ शुक्राचार्य जी धनु राशि में प्रवेश से **"यदा च धन राशौ"** धान्य की हानि, स्त्री जाति को कष्ट, मूंग, घी, सोना, चाँदी के भावों में तेजी। शेयरों, रुई, सरसों, घी के भाव भी तेजी बनाये रखेंगे। ता. १० सोमवती अमा. प्रजा के सुख में वृद्धिकारक, सुभिक्ष, क्षेम, अरोग्य, वर्षा का प्रबल उदय कारक लेकिन पूर्वार्धाद्री संयोग कष्ट, यान, सड़क, रेल दुर्घटनाओं को बल प्रदान करेगी। ता. ११ उ.भा. के बुध गेहूँ, जौ, चना व दालबाना के भावों में मन्दी का अटका। ता. १४ **मकर संक्रांति** गुरुवासरी है। अतः गेहूँ, जौ, मक्का, बाजरा, चना, शक्कर, गुड़, खाण्ड, घी के भावों में मन्दी, किसी-किसी जिन्स में विशेष मन्दी, सूत, कपास, सफेद वस्त्र, रुई, तम्बाकू, शीरा, बिनौला, कोयला, लकड़ी, पाट, जूट, दुधारू पशु, घास, चारा के भावों में तेजी। किसी-किसी जिन्स में चमक। सोना, चाँदी भी तेजी ले चमक बनायेंगे। अतः बुद्धि चातुर्य से कार्य करें। ता. २३ **श्रवण नक्षत्र पर योग** से अनाजों के भावों में सुधार, गेहूँ के भाव तेजी बना लेंगे। ता. २६ **षड़वा आठै, पूर्णिमा जो बुधवारी होय** से दस दिन के अन्दर अनाज व घी तेज। चाँदी में मन्दी का अटका। तिलहन, रस पदार्थ, शेयरों के भाव घटाबढ़ी से तेज होंगे। ता. २९ जन. ४ शनिवासरी दुर्भिक्ष कारक है, चोरों, उपद्रव, हिंसा प्रदर्शन को बल, अग्नि काण्ड, प्राकृतिक प्रकोप से धान्य में हानि, बाजार रुख तेजी का रहेगा व **"भकरे च यदा शुक्र"** से प्राकृतिक प्रकोप से हानि, अनाजों में तेजी। सोना, सूत, चाँदी में घटाबढ़ी, बुध राहयोग से ६ दिन के लिये राशि योग बनायेगा किसी विशिष्ट व्यक्ति की हानि व राज्य सरकारों से परेशानी, पद परिवर्तन।

शकुन विचार—

माघी मावस पूर्णिमा जो मंगल शनिवार।
शोक लोक में परस्पर राजों में तकरार॥
मकरे च यदा शुक्रे सर्वसस्य विनाश कृत।
जायते अत्र महर्घणी नात्र कार्या विचारणा॥

फरवरी

यह मास माघ कृष्णा ७ मंगलवार से प्रारंभ होकर फाल्गुन कृष्ण ८ सोमवार तक रहेगा। मास प्रारंभ मकर राशि में शुक्र-बुध-सूर्य योग व भौम शनि समसप्तक योग प्रजा वर्ग के हित में अच्छा नहीं कहा जा सकता। ता. २ को गुरु वक्री हो रहे हैं जो चावल, चना, जौ, मूंग, चाँदी, सोना व रुई के भावों में तेजी। चाँदी उठकर गिर जायेगी। ता. ८ फर. भौमवासरी अमावस्या तेजी कारक है। ३ दिनों के अन्दर हर व्यापारिक जिन्सों में तेजी का एक उछाला आयेगा। ता. ९ धनि. के बुध चावल स्टॉक में तेजी। सोना, चाँदी के भावों में गिरावट व रुई के भावों में घटाबढ़ी चलेगी। ता. १३ कुम्भ संक्रांति शनिवासरी है। दूध, घी, गेहूँ, जौ, चना, मिर्च व नमक में तेजी। मक्का, ज्वार, बाजरा, मूगँ, मौठ, उड़द, सरसों, तिल, तेल, राई व अलसी के भावों में मंदी। दाख, छुआरे, खोपरा, हल्दी, किराना, गुड़, खाण्ड, शक्कर के भावों में घटाबढ़ी। भैंस व काले पशुओं से लाभ। धातुवाना शेयर तेज। ता. २१ **"कुंभराशौ स्थित शुक्रे"** से मनुष्यों में निरोगता। यकायक ठण्डक बढ़ सकती है। हिमपात, वर्षा, बाजार में तेजी का वातावरण। फल, फूल में भी तेजी। ता. २५ सोना, चाँदी, ताम्बा, तेल, मूंगफली तेज। अनाजों के भावों में मन्दी, रुई के भावों में घटाबढ़ी। ता. २७ को बुध अस्त हो रहे हैं जो दुर्भिक्ष व अनाजों के भावों में तेजी को बल देंगे। गेहूँ, गुड़, खाण्ड, चावल, घी, रुई, सोना, चांदी में तेजी को बल मिलेगा। कुंभ राशि के बुध उदय होने से माघ में हवा का प्रकोप रहे, प्रजा में खुशी व हर्षता का संचार।

शकुन विचार-

माघ सुदी साते पड़े शनि रवि बलवार।
विग्रह भय सुभिक्ष से दुःख पावे ससार॥
माघी पूनम को कभी बादल छवे आकाश।
संग्रह करो अनाज का लाभ सातवे मास॥

मार्च

यह मास फाल्गुन कृष्णा ५ मंगलवार से आरंभ होकर चैत्र कृष्णा ६ गुरुवार तक रहेगा। मास में पाँच शुक्रवार योग से सुभिक्ष व सुख, प्रजा में हर्षता, स्वस्थता का संचार। ता. १ मीने बुध योग से रुई, गुड़, शक्कर में मंदी। सोना उठकर पुनः गिरे। बिनौला के भावों में तेजी। ता. ९ पू. भा. के शुक्र रुई में तेजी व अनाजों के भावों में मन्दी। ता. १० पूर्णिमा उ.फा. युक्त है अतः बाजार में तेजी का रुख रहेगा। धान्यादि व रस पदार्थों के भावों में मंदी का मान। किराना के भावों में तेजी। लोक, साहूकार नेता लोगों को सुख प्रदायक है। ता. १२ को मकर के भौम रुई, सोना, चाँदी, ताम्बा, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, अलसी, ऊन के भावों में तेजी। अनाजों के भावों में मन्दी का मान होगा। ता. १४ को सूर्य नारायण का मीन राशि में प्रवेश। चाँदी में मंदी का मान। तिल, तेल, अलसी, सरसों, खाण्ड, गुड़, शक्कर व सोना के भावों में तेजी। अनाज के भाव उठकर गिर जायेंगे। ता. १७ मार्च **"मीन राशि गते शुक्रे"** योग रुई, चाँदी, घी, अनाज, सरसों, तेल, तिलहन व अलसी, अरण्डी आदि में मंदी को सपोर्ट करेगा। बढ़ी हुई तेजी में रुकावट अतः रुख देखकर कार्य करें। ता. २० उ.भा. के शुक्र गेहूँ, गुड़, खाण्ड, चावल, घी, सरसों, रुई, सोना, चाँदी के भावों में तेजी। ता. २४ राहू का मीन राशि में प्रवेश तिलहन, सरसों में अच्छी मंदी। आकाल भय, अनाज व घास चारा का प्रथम संग्रह करें, १२ मास तक अनाज तेज बाद में गिरावट। ता. २६ मार्च २० दिन के अंदर गेहूँ में विशेष तेजी का योग। जौ, चना, तिल, अफीम, धातुवाना, सोना, चाँदी में भी तेजी। रुई में भगवढ़ा का योग। ता. ३१ मार्च १४ दिनों के अंदर अलसी, सरसों, एरण्ड, मूँगफली, लहसुन, मोती, लाख, सब्जी, रुई, जौ, चना, चावल के भावों में तेजी। मास में गुरु उदय काल व वृद्ध जनों को पीड़ा व कहीं कहीं वर्षा का योग प्रजा के कष्टों में वृद्धि राजनीति में वाद-विवाद आरोप प्रत्यारोप, पद परिवर्तन।

शकुन विचार-

चैत्र बदी पांचै दिना मंगल या बुधवार
गेहूँ एवं घी में तेजी चले बाजार॥
सर्वधान्य महंगे बिकें, मीन राशि गत भानु।
तेजी तिलहन नमक में साधारण अनुमान॥

अप्रैल

यह मास चैत्र कृष्ण ७ शुक्रवार से प्रारम्भ होकर वैशाख कृष्ण ७ शनिवार तक रहेगा। गोचर ग्रह चाल के अनुसार **"एक राशौ यदा चत्वार"** से मीन राशि में चतुर्ग्रही योग से किसी राज्य में मन्त्रीमण्डल भंग हो। हिंसा, आतंकवादी वारदातें घटित हों। वर्षा, प्राकृतिक प्रकोप, सूर्य के ताप से परेशानी, तिलहन, अनाज, दालबाना, मास प्रथम तेजी ले मन्दी का मान करेंगे। ता. ९ संवत्सर सभी व्यापारी वर्ग को मंगलमय हो। वर्ष के राजा शनिदेव हैं जो धान्य उत्पादन में कमी। वर्षा समय पर ना होगी व कहीं भारी वर्षा से परेशानी, ओले आदि प्राकृतिक प्रकोप से फसलों में हानि, उड़द, लोहा, कपास, तिल, तेल, आयरन, शेयर्स मशीनरी, रसायन पदार्थों में तेजी। श्रावण व मार्गशीर्ष की तेजी में अन्न विक्रय से लाभ उठा सकते हैं। ता. १३ मेष संक्रांति भी बुधवासरी है जिससे कपास, सूत, कपड़ा, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, मूंगफली के भावों में तेजी। ता. २२ कुम्भ के मंगल रुई, चांदी में काफी अच्छी घटाबढ़ी। अनाजों व गुड़, खाण्ड के भावों में तेजी का संकेत दे रहे हैं। ता. २७ अप्रैल रुई, अलसी में मन्दी, सोना, चांदी, ताम्बा, मूंगा, पीतल के बर्तन, चादर, गेहूं, जौ, चना, चावल, मौठ, अलसी, रुई, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी के भावों में तेजी। किसी-किसी जिन्स में चमक। ता. ३० शतभिषे भौम योग, रुई, चांदी में घटाबढ़ी तो देंगे लेकिन मन्दी खास नहीं। अनाज के भावों में घटाबढ़ी, अतः बुद्धि चातुर्य से कार्य करें।

शकुन विचार—

जो उगे शशि सोम शनि एक अचभो जिय जोय।
छत्र पड़े दिन तीस में अन्न जूं मंहगो होय॥
चैत्र वदी में तिथि घटे किन्तु सुदी बढ़ जाय।
होय सुभिक्ष सुकाल सुख भूमि न अन्न समाय॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मई

यह मास वैशाख कृष्ण ८ रविवार से आरंभ होकर ज्येष्ठ कृष्ण ९ मंगलवार तक रहेगा। मास में पांच सोम योग से धान्य के भावों में मन्दी, सरकार के समक्ष नवीन समस्याये उत्पन्न होंगी, गर्म हवा का प्रकोप, सूर्य के ताप में वृद्धि। हिंसा, कलह का वातावरण उत्पन्न होगा। ता. २ कृतिका में शुक्र योग से जौ, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, रुई, वस्त्र, सूत, चांदी, सोना के भावों में मन्दी का मान। किसी-किसी जिन्स में भारी गिरावट। ता. ५ वृषे शुक्रः योग से बाजार में तेजी का संचार। इस दौरान कहीं-कहीं भारी वर्षा, दंगे-फसाद, सीमा पर सैनिक हलचल, जनधन की हानि भी संभव है। ता. ११ कृतिका के सूर्य १५ दिनों के अन्दर घी, रुई, सोना, चांदी, अलसी, एरण्ड, गेहूं, चना, मूंग, मोंठ, चावल, दूध, दही, घी के भावों में तेजी का मान होगा। ता. १४ मई वृष संक्रांति शनिवासरी है जो प्रजा को मध्यम, चाण्डाल जनों को सुख प्रदायक है व गेहूं आदि अनाजों, फल, मेवा, रुई, सूत, वस्त्र, गुड़, खाण्ड, घी, मजीठ, कुंसभा तथा सभी प्रकार के किराने में तेजी को बल प्रदान करेगी। ता. २० **"पूर्वाभाद्रे भौम"** तिल तेल, मूंगफली, एरण्ड, अलसी, नारियल, सुपारी, रुई, सूत, कपास, शेयर, सोना, चांदी में तेजी। किसी में विशेष तेजी। ता. २४ शनि का कर्क राशि में प्रवेश **"रोगनित्य ग्रसन्ति प्रचुरपरि भवो"** से लोगों में रोग, शोक की वृद्धि, देश में चिन्ता, विषाद, भूकम्प व प्राकृतिक प्रकोप अधिक हो। राजाओं में युद्ध, प्रजा क्षय, पशु व धन की हानि व मृगे शुक्र से १२ दिनों के अन्दर गेहूं, चना, ज्वार, घटाबढ़ी से आंशिक मंदी का मान करेंगे। गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, तेल, दूध तेज। सड़क दुर्घटना व किसी राज्य में प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानि। ता. २९ **"मिथुने च यदा शुक्रो"** से चावल, जौ, चना तेज, रुई, सूत, कपास, वारदाना, अरण्डी, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार, घी में मन्दी योग व २० दिनों के अन्दर कहीं भारी तूफान से हानि। ता. ३० रोहिणीयां बुधः से रुई, तुअर, सन, ऊन, ऊनी तथा रेशमी वस्त्रों में मन्दी। रुई उठकर गिर जायेगी।

शकुन विचार—

पड़वा पांचै, चतुर्दशी शुक्ल पक्ष में तीन। बढ़ने पर मन्दी करें तेजी हो जब छीन॥
वृष राशि के रवि करें, सुख सम्पदा सुकाल। दूध, दही, घी में रहे, मंहगाई की चाल॥

जून

यह मास ज्येष्ठ कृष्ण १० बुधवार से आरंभ होकर आषाढ़ कृष्ण ९ गुरुवार तक रहेगा। पांच में पांच भौम योग अशुभ फल प्रदायक है। लाल रंग की वस्तुओं में तेजी। अग्निकाण्डों व सड़क दुर्घटना में वृद्धि, हैजा, दस्त, लू का प्रकोप। किसी विशिष्ट व्यक्ति का क्षय हो। रस पदार्थों में भी तेजी। वर्षा प्रबल। प्राकृतिक प्रकोप, बाढ़ आदि से धन जन की हानि। ता. ३ **"मीन राशि कृजश्चैव"** के अनुसार घास, चारा, पशु, इमारती लकड़ी, सूत, सन, सोना, चांदी, रुई में सवा महीने के अन्दर तेजी विशेष हो जाये तो आश्चर्य नहीं। अमावस्या सोमवती से वर्षा प्रबल। सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य, धान्य की उत्पत्ति व प्रजा में हर्ष व सुखों में वृद्धिकारक है। ता. ८ मिथुन के बुध १५ दिनों में सोने, चांदी में गिरावट देंगे। सरसों, तारामीरा में घटाबढ़ी व पशुओं के भाव में तेजी को बल देंगे। ता. १४ मिथुन संक्रांति भौम वासरी है जो कंद, मूल, फल, पाट, वारदाना, केसर, रेशम, सूत, कपास, रुई, लोहा, तिल, सरसों, तेल, शेयर्स, लाल मिर्च, गेरू, मसूड़, गुड़, शक्कर, चीनी, घी, उड़द, चना में तेजी बना देगी। सोना, चांदी में अच्छी घटाबढ़ी होगी। ता. २१ आर्द्रा में सूर्य रुई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरंड, मोती, चांदी, लवण रस पदार्थों में तेजी। वर्षा, अग्नि भय व हिंसा आदि वारदातों को विशेष बल प्रदायक है। ता. २३ कर्क के शुक्र **"दैत्यगुरुर्यदा कर्के"** योग से बादल खूब हो। वर्षा अनाज, रस पदार्थों, सोना, चांदी, शेयरों के भावों में तेजी को बल मिलेगा। ता. २७ रेवत्यां भौम गेहूं, चना, मूंग, मोंठ, ज्वार, बाजरा में मन्दी, चांदी में चमक, सोना में मंदी, रुई, घटाबढ़ी से तेज। विशेष-कार्यालय से रिपोर्ट मंगा कर लाभ लें।

शकुन विचार—

पूर्णमासी ज्येष्ठ की मूल नखत शुभ योग। सुख सम्पत्ति आनन्दमय सुखी रहें सब लोग॥
दुतिया तृतिया जेठ सुदी आवै आर्द्रा रिक्ष। वर्षे तो कर्षे नमी दर्से दुःख दुर्भिक्ष॥

शकुन-ता. ८ व ९ को आज वर्षा होना अशुभकारी है। दुःख व दुर्भिक्ष का संकेत मिलता है।

जुलाई

यह मास आषाढ़ कृष्णा १० शुक्रवार से प्रारम्भ होकर श्रावण कृष्ण ११ शनिवार तक रहेगा। मास में पांच गुरुवार हैं व संक्रांति शनिवासरी है जो कि तेजी कारक है। आगे किसी राज्य का मन्त्रीमण्डल भंग होगा। मास में प्रायः वर्षा भारी रहेगी। तेज हवा, अंधड़ व प्राकृतिक प्रकोप में भी वृद्धि होगी। ता. ४ शनि अस्त जो कि कपास व अन्न के भावों में तेजी को बल देंगे। सोना, चांदी, रुई, पाट, वारदाना में घटाबढ़ी से तेजी बना देंगे। आज भारी वर्षा व ओला वृष्टि का भी योग है। ता. ७ चन्द्रदर्शन गुरुवासरी है जो रुई, सूत व रेशमी वस्त्र, ऊनी वस्त्र, घी, तिल, तेल में तेजी को बल प्रदान करेगा। सोना, चांदी व गुड़ में मन्दी का मान होगा। ता. १७ कर्क संक्रांति क्रूरवासरी है जो कि अन्न के भावों में तेजी, सोना, चांदी व ताम्बा, रसायन पदार्थ, धातुवाना शेयरों के भावों में मंदी का झटका। इस संक्रांति में स्टॉक विक्रय से लाभ व मंदी वस्तु का स्टॉक करें तो लाभ की प्राप्ति होगी। ता. १९ द्वादशी क्षय के जेहि **पखवारे तिथि बढ़े** से सभी व्यापारिक जिन्सों में मन्दी के मान का योग है व **"सिंह शुक्र"** से सभी प्रकार के अनाज, लाल रंग की वस्तुओं, घी व रस पदार्थ, अनाज, दाल, तिलहनों में घटाबढ़ी तो होगी लेकिन मान तेजी का ही रहेगा। ता. २२ को सिंह के भानु व बुध वक्री योग से प्रजा को पीड़ा, अन्न के भावों में तेजी का संकेत है। अतः व्यापारी वर्ग बुद्धि चातुर्य से कार्य करें। ता. २८ पूर्वा फाल्गुनी के शुक्र १४ दिनों के अन्दर गेहूं, जौ, ज्वार, बाजार, उड़द, मूंग, चना में आंशिक मंदी का मान होगा। गुड़, खाण्ड, चावल के भावों में तेजी का मान होगा व तिलहनों के भावों में मंदी का झटका लगेगा। प्रजा में विग्रह, हिंसा, बंद, आन्दोलनों व असंतोष से कष्ट, आरोप, प्रत्यारोपों से राजनीति दूषित होगी। कहीं वर्षा से परेशानी व कहीं अल्प वर्षा से परेशानी, हिंसा, अग्निकाण्डों से हानि।

शकुन विचार—

सिंह शुक्र जब होय भवानी। चाले पवन न वर्षे पानी॥
जेहि पखवारे तिथि बढ़ै, वाहि में घट जाय। सभी वस्तु मंदी रहें, मंहगाई हट जाय॥

अगस्त

यह मास श्रावण कृष्ण १२ सोमवार से प्रारंभ होकर भाद्रपद कृष्ण १२ बुधवार तक रहेगा। मास में गुरु-केतु की युति व कालसर्प योग बन रहा है। प्रजा के सुख-दुःख की समानता रहेगी। अनाजों के भावों में मन्दी का मान होगा। ता. ६ चन्द्रदर्शन शनिवासरी है। अतः एक मास के अन्दर किसी राज्य का मन्त्रिमण्डल भंग हो। वर्षा में रुकावट चार दिन के अन्दर, सोना, चांदी, रुई, घी, नमक, चावल, हींग में तेजी का रुख रहेगा। ता. ११ **"कन्या राशि गते शुक्रे"** के अनुसार गुड़, गेहूं व सभी प्रकार के अनाज, घास, ऊनी व रेशमी वस्त्रों में तेजी, चावलों में विशेष तेजी का झटका तथा २० दिन के अन्दर प्राकृतिक-प्रकोप से फसलों को नुकासन पहुंचे। ता. १६ अग. सिंह संक्रांति भौमवासरी है। वायु वर्षा का प्रकोप, मूंग, उड़द, चना, चावल में नुकसान, जितने तेजी उतनी ही भावों में मन्दी, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, रोली, मसूड़, सोना, रत्न, शेयर, अनाजों के भावों में तेजी को बल मिलेगा। ता. २० अगस्त रुई, चांदी, चावल के भावों में मन्दी का झटका। अन्न के भावों में मन्दी हो तो संग्रह से लाभ। सोना तेज, गुड़, खाण्ड, शक्कर घटाबढ़ी। ता. २१ आश्ले. के बुध १५ दिनों के अन्दर तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, उड़द, मूंग, मूंगफली के भावों में तेजी का योग है। ता. २५ प्रायः सभी व्यापारिक वस्तुओं व धातुओं, दलहन, तिलहन, किराना, शेयर्स, सब्जियां, फल, फूल, तेलों, चावल, रुई, वारदाना, बिनौला, जीरा, मक्का, सौंफ आदि का बाजार तेज रहेगा। किसी-किसी जिन्स में विशेष तेजी योग। ता. ३० पूर्वाफाल्गुनी के सूर्य, जीरा, सोना, गुड़, सरसों, तिल, तेल, घी, ज्वार, ऊनी कपड़ा, रुई, सूत में तेजी का संकेत दे रहे हैं, चांदी में घटाबढ़ी, हवा और वर्षा का प्रकोप रहे।

शकुन विचार—

जेहि पखवारे तिथी बढ़ै, वाही में घट जाय। सभी वस्तु मन्दी रहे, मंहगाई हट जाय॥
शुक्ल पक्ष सावन कभी कोई तिथि नाश। छत्र भंग का योग है आगे कार्तिक मास॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सितम्बर

यह मास भाद्रपद कृष्णा १३ गुरुवार से आरम्भ होकर आश्विन कृष्ण १२ गुरुवार तक रहेगा। मास में पांच शनि व रवि योग तेजी का संकेत प्रदान करते हैं। ता. १ मघा सिंहे बुध के अनुसार सभी प्रकार के अनाजों, रुई, सूत, सोना, चांदी, फर्नीचर के सामानों में तेजी। रस पदार्थों व गुड़ में मन्दी का मान। ता. ६ सितं. "यदादिता गुरुश्चैव" से पृथ्वी पर सुख, क्षेम, अरोग्यता का संचार, तेल के भावों में तेजी। धान्य की उत्पत्ति उत्तम। पशु, वाहनादि के भावों में तेजी। रस, घी, लवण, गाय, भैंसों के भावों में तेजी। ता. १० छठ अनुराधा नक्षत्र युक्त है जो सुभिक्षकारी है। "कृतिके भौमस्य" से २० दिनों के अन्दर गेहूं, मूंग, मोंठ, चावल, रुई, मसूर, तिल, तेल, सरसों, घी, चांदी, सूत, वस्त्रों में तेजी का मान। रुई घटाबढ़ी से तेजी लेगी। ता. १६ कन्या संक्रांति शुक्रवासरी है। अतः सभी प्रकार के अनाजों में घटाबढ़ी व बादलों के भाव में मन्दी का मान होगा। रुई, कपास, मजीठ, लाल चन्दन, नारियल, लौंग, जावित्री के भावों में तेजी को बल मिलेगा। घी, गुड़, अलसी, शक्कर, सोना, चांदी के भाव समता को बल मिलेगा। ताम्बा, लोहा, ऊन व आयरन, शेयरों के भाव तेजी लेकिर गिर जायेंगे। ता. १९ "वृश्चिके शुक्रः" रुई, शेयर, चांदी, अफीम, प्रबल गिरावट लेकर उठ जायेंगे। गुड़ में घटाबढ़ी, गेहू, जौ, उड़द, मूंग, मोंठ, बाजरा भी तेजी लेंगे। ता. २६ हस्त के सूर्य दो सप्ताह के अन्तर्गत अनाज, गुड़, शक्कर, कपास, रुई, जूट, घास, लकड़ी, नमक, हर, हींग, धनिया, हल्दी, सन, रेशम क्षार के भावों में तेजी। आश्वि. बदी तृतीया भौमवासरी है। अतः अग्निकाण्ड जैसी दुर्घटना घटित हो सकती है। धान्य के भावों में तेजी। सोना, चांदी के भावों में तेजी। राजनीति में आरोप प्रत्यारोप जैसी घटनायें घटित होंगी। असम, केरल, बंगाल, पंजाब आदि देशों में वर्षा का प्रकोप हवा व ओले से फसल हानि। चौपाये पशुओं की वृद्धि, हिंसा जैसी वारदातों से प्रजा को कष्ट।

शकुन विचार-

भादों की छठ चांदनी जो अनुराधा होय।
ऊबड़-खाबड़ बोय दे अन्न घनेरा होय॥

कृष्ण पक्ष में तिथि बढ़े, किन्तु सुदी घट जाय।
सभी वस्तुयें तेज हों, सस्तापन हट जाय॥

अक्टूबर

यह मास आश्विन कृष्ण १३ शनिवार से प्रारम्भ होकर कार्तिक कृष्ण १४ सोमवार तक रहेगा। मास में पांच योग योग व चन्द्रग्रहण व सूर्यग्रहण दोनों ही हैं। अतः मास फल अच्छा नहीं रहेगा। अतः त्रिपुर शलिजाति, कवि, लेखकों, पत्रकारों को कष्ट, पांचाल, तेलंग राज्यों में अन्न व धन जन की हानि, चोला, चना से लाभ, मूंग, उड़द, घी, तेल, अनाजों में तेजी संग्रह से लाभ। ता. ५ को गुरु अस्त हो रहे हैं व अनु के शुक्र २२ दिनों के अंदर गुड़, खाण्ड, चावल, नमक के भावों में मन्दी आयेगी। गुरु अस्त, ब्राह्मण वर्ग व विद्वानों को कष्टपद, लोक महाजनों को लाभ। वर्षा प्रबल। ता. १३ ज्येष्ठा के शुक्र १८ दिनों के अन्दर गेहूं, जौ, चना, मूंग, मटर, उड़द, दालबाना, तेल, घी में भड़कती तेजी का योग अतः व्यापारी वर्ग बुद्धि चातुर्य से कार्य करें। ता. १७ तुला संक्रांति भी मध्यम फल प्रदायक है। मकई, बाजरा, उड़द, मूंग, रमास, अरहर, लोबिया, सूत, सन, नारियल, हल्दी, मिर्च, धनियां, लाल रंग की वस्तुओं के भावों में गिरावट की बल देगी लेकिन विशेष नहीं। गुड़, शक्कर, कांयला, लोहा, गास, भैंस, शेयरों के भावों में तेजी। किसी-किसी में एकतरफा लाइन गेहू, चना, लकड़ी के भाव गिर कर संभल जायेंगे। क्योंकि ता. १८ विशाखा के बुध रुई, कपास, चांदी, सोना, अनाजों के भावों को तेजी को बल देंगे। ता. २५ "बुधौ वृश्चिक राशिस्थौ" से घी, तेल, रुई, चांदी, शेयर, चावल के भावों में तेजी को बल मिलेगा। सोना में घटाबढ़ी से तेजी, अफीम व अनाजों के भाव भी घटाबढ़ी ले स्थिरता बनाये रखेंगे। ता. ३० शुक्राचार्य जी का धनु राशि में प्रवेश २५ दिनों में प्राकृतिक प्रकोप से फसल में नुकसान, अनाज, रुई, सोना, चांदी, कपास, गेहूं आदि बाजारों में तेजी। प्रजा में समानता, संघटन बढ़ेगा। शुक्र बुध योग से समस्त मूल पदार्थ धनियां, हींग, बादाम, नमक, प्रमुख शेयर्स, अन्य प्रायः सभी व्यापारिक वस्तुओं में ९ दिनों के अन्दर घटाबढ़ी से अच्छी मन्दी देखने के चान्स भी मिल सकते हैं।

शकुन विचार—

कार्तिक मास के दिना स्वाति नखत विचार।
गिरे कहीं भूकम्प से पर्वत या मीनार॥
एक मास दो ग्रहना। राजा मरै कि सेना॥

नवम्बर

यह मास कार्तिक कृष्ण १४ भौमवार से आरंभ होकर मार्गशीर्ष कृष्ण १४ बुधवार तक रहेगा। पांच भौम योग प्रजा के हित में अच्छे नहीं हैं व ता. २ को गुरु उदय हो रहे हैं। जो कश्मीरी चंदन, रसीले पदार्थ, घी, दूध, फल, चंदन व अन्न के भावों में तेजी को बल मिलेगा। ता. ६ विशाखा के सूर्य १४ दिनों के अन्दर जौ, चावल, गेहूं, मसूर, गुड़, खण्ड, रुई, सूत, सरसों, तिल, तेल, ऐरंड के भावों में तेजी को बल। अलसी, चांदी में घटाबढ़ी लेकिन परिणाम तेजी का ही रहेगा। पूर्णिमा क्षय होना दुर्भिक्ष व तेल, घी के भावों में तेजी को बल प्रदान होगा। ता. १६ "वृश्चिके मूर्धे" से गेहूं, जौ, मक्का, बाजरा, चना, शक्कर, गुड़, खण्ड, घी में मन्दी का झटका, सूत, कपास, चांदी, तम्बाकू, शोरा, बिनौला, कोयला, लकड़ी, पाट, जूट, दुधारू पशु, घास, चारा के भावों में तेजी को बल मिलेगा। सोना, किराने में घटाबढ़ी, मटर के भावों में स्थिरता को बल मिलेगा। सरसों, अलसी, पोस्त के भाव तेजी लेकर मन्दी को बल मिलेगा। ता. २१ अनुराधा के बुध सूत, सन, रुई, सोना, चांदी के भावों में घटाबढ़ी से मंदी व अनाजों के भावों में समता को बल मिलेगा। ता. २६ चांदी, चाय, जायफल, तम्बाकू व नशीले पदार्थ, दालें, नारियल, चीनी, नमक, पारा, कंगनी, प्याज, किराणे की प्रमुख वस्तुएं आदि बाजार में घटाबढ़ी चलेगी। ता. २८ विशाखा के बुध अनाज के भाव बहुत से प्रदेशों में मन्दे। रुई के भावों में भी मन्दी। गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, अलसी, एरण्ड के भावों में घटाबढ़ी का प्रबल योग। विशेष रिपोर्ट से लाभ लें।

शकुन विचार—

अश्विनी-भरणी का बनै, पूनम से संयोग।
ग्वार, ज्वार, मकई, मटर, मंहगाई अरु रोग॥
कार्तिक में हो ग्रहण या अन्य और उत्पात।
धान्य लीजिये, दीजिये पांच मास पश्चात्॥

दिसम्बर

यह मास मार्गशीर्ष कृष्णा ३० गुरुवार से प्रारम्भ होकर पौष कृष्ण ३० शनिवार तक रहेगा। मास में पांच शुक्र व शनि योग प्रजा वर्ग के हित में अच्छे नहीं कहे जा सकते। सभी प्रमुख बाजारों में तेजी। प्राकृतिक प्रकोप, महामारी, युद्ध, अग्निकाण्ड जैसी घटनायें घटित होंगी। पानी की कमी कहीं कहीं पानी भराव से बीमारियों से प्रजा त्रस्त। ता. २ को "मकरे यदा शुक्रः" से एक महीने के अन्दरह वर्षा, बाढ़, ओला से फसल में व्यापक हानि का योग। अनाजों में अच्छी तेजी को सपोर्ट। गुड़, खाण्ड, चीनी, रस पदार्थ, चांदी, अफीम, शेयरों के भावों में भी तेजी को बल मिलेगा। ता. ९ अनुराधा के बुध, रुई, सूत, सन, सोना, चांदी में भाव उठकर गिर जायेंगे। अनाजों के भावों में स्थिरता को बल मिलेगा। ता. १५ धनु संक्रांति गुरुवासरी है जो गेहूं, जौ, चना, मटर व गाय, भैंस के भावों में गिरावट। चांदी, मूंग, उड़द, चावल, सरसों, पोस्त, रसायन पदार्थ, मेडीसन व रसीले पदार्थ, डीजल व इनसे सम्बन्धित शेयरों में तेजी को बल मिलेगा। कोयला, लकड़ी, सन के भाव गिर कर उठ जायेंगे। नारियल, लौंग, मिर्च में घटाबढ़ी। रुई, ऊनी व रेशमी वस्त्र भी तेजी ले लेंगे। चौपाये पशुओं में घोड़ों के भावों में तेजी। ता. २१ "ज्येष्ठां यदा बुधः" से घी, गुड़, खाण्ड, चावल, चांदी के भावों में तेजी को बल मिलेगा। ता. २८ चौदह दिनों के अन्दर तिल, तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, खाण्ड, हल्दी, गुगल, चमड़ा, कपूर, ऊनी वस्त्र, सन, चांदी के भावों में भी तेजी रहेगी। ता. ३० दिसंबर धनु मूल के बुध से अनाज, सोना, चांदी में घटाबढ़ी का योग "धने मीने बुधो याति" से हिरण, हाथी को कष्टप्रद, राजनेताओं में वाद-विवाद, पद त्याग, स्थान परिवर्तन जैसी घटनाएं घटित होंगी। मौसम में भी ठण्डी हवा, ओला, कोहरा का प्रकोप, पर्वतीय प्रदेशों में भारी हिमपात। वर्ष २००६ की तेजी मन्दी के लिए हमें लिखें या पत्र व्यवहार कर सम्पर्क करें।

शकुन विचार-

मार्गशीर्षादि मासे सु शुक्ल पक्षे तिथि क्षयः।
छत्र भंग प्रजा पीड़ां दुर्भिक्षं च समादिशेत॥
कृष्ण पक्ष में तिथि बढ़े शुक्ल पक्ष घट जाय।
सभी वस्तुएं तेज हों, सस्तापन हट जाय॥

लेखक-पं. अनिल कुमार व्यास

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

सं. २०६२ वि. (सन् २००५-६ ई.) में

चन्द्रदर्शन का व्यापार पर प्रभाव

"शशिनि खलु कलंकः कंटक पद्मनालम्" अर्थात् चन्द्रमा में भी कलंक है। कमल की नाल में भी कांटे हैं। समुद्र अथाह है जल खारा है। विद्वान जितना अधिक है उतना ही निर्धन है। दोष तो रत्नों में भी पाए जाते हैं। यह तो विधाता का नियम है। दोष तो भगवान राम, कृष्ण, शंकर, विष्णु में भी पाये गये हैं। प्रिय सज्जनो मेरी अल्प बुद्धि से निर्णय व संकलित लेख में भी दूषण होना जरूरी है। महोदय ज्योतिष शास्त्र का अर्धकाण्ड बड़ा है। दूरदर्शी विद्वान भी पार नहीं पा सकते तो मुझ अल्पज्ञ की बात कहां फिर भी मेरे इस लेख द्वारा ज्योतिष प्रेमी व व्यापारियों को लाभ मिला तो मैं अपने परिश्रम को सफल मानूंगा। **सर्वेऽपि सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दुख खमाप्तुयात्॥**

चैत्र-विक्रम संवत् २०६२ चैत्र मास का नवीन चन्द्रदर्शन दिनांक १० अप्रैल सन् २००५ ई. रविवार को हो रहा है। चन्द्रदर्शन मेष राशिगत व अश्विनी नक्षत्र में हो रहा है। अतः इसका दक्षिण श्रृंग (नौंक) ऊंची होगी जोकि सभी व्यापारिक जिन्सों में तेजी को बल प्रदायक है। उदय समय इसका वर्ण रक्त होगा। अतः चांदी, सोना, सूत, सन, पाट, शेयर, वारदाना व कपासिया के भावों में तेजी को बल प्राप्त होगा। रविवार को चन्द्रदर्शन व रविवासरी पूर्णिमा अनाजों के भावों में मन्दी का संकेत देती है। गेहूं, जौ, चना, मटर, बाजरा, मक्का के भावों में मंदी को बल मिलेगा। सींगदाना, बिनौला, तिल, तेल, मटर, सोयाबीन, सूर्यमुखी, बेजीटेबिल के भावों में तेजी को बल मिलेगा। दक्षिण श्रीलंका, तमिलनाडू, कर्नाटक आदि में उपद्रव व अशान्ति को बल मिलेगा। उड़द, मूंग, मसूर, अरहर के भावों में तेजी। धनियां, मिर्च, हल्दी व लौंग, इलाइची, जीरा, सौंठ, मजीठ मखाने भी तेजी लेंगे। लोहा, सीसा, जस्ता, कलई, ताम्बा, सीसा, रांग, एल्मोनियम, कोयला भी सुधार ले तेजी लेंगे। गुड़ चीनी, शक्कर के भावों में भी तेजी प्रधान रहेगी। सूर्य के ताप में वृद्धि को बल मिलेगा। प्रदर्शन, हिंसा आदि वारदातों में वृद्धि।

वैशाख-वैशाख मास का नवीन चन्द्रदर्शन दिनांक ९ मई सन् २००५ ई. सोमवार को हो रहा है **"जो उगे सोम शनि"** से तीस दिनों के अन्दर अनाजों के भावों में तेजी का संकेत मिल रहा है। चन्द्रदर्शन वृष राशि अन्तर्गत व रोहिणी नक्षत्र में हो रहा है। अतः इसका दक्षिण श्रृंग उच्च होगा जो तेजी को बल प्रदायक है। अतः चांदी, सीसा, जस्ता, रांगा, कलई की चाल में तेजी। सोना, सूत, कपास, शेयर, जूट, पाट, वारदाना, सूती वस्त्र, रंग, रोगन के भावों में स्थिरता रहेगी। गुड़, चीनी, शक्कर, अफीम के भावों में तेजी। तेल, सरसों, अलसी, अरण्डी के भावों में गिरावट ले तेजी बना लेंगे। राजविग्रह, गर्मी की अधिकता रहेगी। मन्त्री परिषद व शासन सूत्र में परिवर्तन, विद्युत व पेयजल समस्यायें उग्र रूप ले सकती हैं। धनियां, सौंठ, मिर्च, कपूर, केसर, दालवाना भी तेज रहेंगे। नमक, रसीले पदार्थ, चन्दन, सुगन्धित द्रव, घास, चारा के भावों में भी तेजी। प्रजा को कष्ट रोग, उपद्रवों की भी अधिकता रहेगी।

ज्येष्ठ-दिनांक ८ जून सन् २००५ ई. को ज्येष्ठ मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन मिथुन राशि अन्तर्गत व बुधवार को हो रहा है जो कि सोना, चांदी, सूती व रेशमी वस्त्र, वारदाना, जूट, गुड़, खाण्ड, शक्कर में गिरावट, अन्न और घी के भावों में तेजी को बल मिलेगा। उदय समय इसके दोनों श्रृंग शूल के समान होंगे जो प्रत्येक जिन्स में तेजी को बल प्रदान करेंगे। घी, तिल, तेल, मूंगफली, सरसों, अरण्डी, सोयाबीन व तिलहन में तेजी। रुई, कपास, कपासिया सूत ८, १०, शेयर, पाट, वारदाना, जूट, पटन २०, ५० रुपए की मन्दी ले कर सुधार लेंगे। सोना, २०, २५ रुपए, चांदी में तेजी, गुड़, चीनी, खाण्ड, शक्कर के भावों में आंशिक मंदी। जौ, चना, मटर तेज। ज्वार, गुवार, बाजरा, मक्का में भी तेजी को बल मिलेगा। गर्मी की अधिकता, लू, आंधी, अन्धड़ से परेशानी, रसायन पदार्थ, रसीले पदार्थ, जीवन रक्षक औषधियों के दामों में भी तेजी रहेगी। किराना में भी तेजी रहेगी। प्रजा में अतिसार, हैजा, उल्टी आदि पेट सम्बन्धित बीमारियों से परेशानी।

आषाढ़-दिनांक ७ जुलाई सन् २००५ ई. गुरुवार को आषाढ़ मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रोदय ४५ मुहूर्ती है। उदय काल में इसका रंग श्वेत होगा और दोनों श्रृंग समान होंगे। बाजार सूर्यमुखी चाल में चलकर पुनः पुराने भावों में रह जाना चाहते हैं। रुई, सूत, सन, कपास, पाट, वारदाना, कपासिया, रेशम, रेशमी वस्त्र, ऊन, ऊनी वस्त्र व टेरलीन के भावों में तेजी बनेगी। सोना, चांदी, ताम्बा, स्टील, रांगा, जस्ता, पारा के भाव टूटकर मांग बना लेंगे। गुड़, शक्कर, चीनी के भावों में मन्दी चलेगी। वर्षा होगी तो प्रत्येक जिन्स में झटका लगेगा जो स्थाई नहीं है। जुआर, बाजरा, मक्का के भावों में गिरावट। उड़, मूंग, मसूर के भावों में तेजी। अरहर में चमक का योग, प्रजा में रोग-शोक की वृद्धि। मजीठ, गैस, सोममक्खी के भावों में घटाबढ़ी से तेजी।

श्रावण-दिनांक ६ अगस्त सन् २००५ ई. शनिवार को श्रावण मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन आश्लेषा नक्षत्र व सिंह राशि अन्तर्गत हो रहा है। यदि चन्द्रदर्शन के समय दोनों श्रृंग बराबर हों तो प्रत्येक जिन्स में घटाबढ़ी से भाव समान हो जायेंगे। उदय काल में इसका रंग श्वेत होगा। चांदी, सोना, स्टील, पीतल के भावों में तेजी। रुई, सूत, पाट, पटसन, वारदाना, शेयर, जूट के भावों में तेजी। किसी-किसी में चमक। गेहूं, जौ, चना, मटर में भी घटाबढ़ी से तेज। उड़द, मघ, मूंग, मसूर में सुधार होगा। मक्का, गुवार, पशुचारा में तेजी का मान होगा। सरसों, तिल, तेल, अलसी, सींगदाना, बिनौला, खोपरा के भाव भी आलस्य त्याग देंगे। गुड़, शक्कर, घी, चावल के भाव तेजी ले स्थिरता को बल देंगे। काली मिर्च, हल्दी, जीरा, कपूर, केशर तेज, प्राकृतिक प्रकोप, बाढ़ आदि से परेशानी, राजनैतिक दलों में फूट, विद्रोह व कलह के कारण पैदा होंगे। जीवन उपयोगी वस्तुओं के भावों में तेजी दिखाई देगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भाद्रपद-दिनांक ५ सितम्बर सन् २००५ ई. सोमवार को भाद्रपद मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रोदय १५ मुहूर्ती है। उदय समय इसके दोनों श्रृंग शूल के समान सीधे होंगे। चन्द्रोदय के समय इसका वर्ण पीत रंग का होगा जो कि सभी जिन्सों में तेजी को बल प्रदान करेगा। रुई, सूत, सूती वस्त्र, पाट, वारदाना, जूट, हैसियन, शेयर बाजार में तेजी का मान रहेगा। चांदी, घटाबढ़ी से तेजी लेगी। रंग-रोगन, गेरू, मज्जी, पत्थर, इमारती लकड़ी के भावों में वृद्धि, अन्न के भाव कुछ तेजी लेकर गिर जायेंगे। राज विग्रह, जनता में असन्तोष, भय का संचार होगा। पशुओं में रोग व भावों में अस्थिरता को बल मिलेगा। गुड़, चीनी, घी में तेजी। ज्वार, गुवार, बाजरा, मक्का के भाव टूट जायेंगे। सरसों, सींगदाना, अरण्डी, लाहा, करण्डी, सौंफ में तेजी। आलू, प्याज, अदरक के भावों में सुधार होगा। वायु के प्रकोप के साथ सर्वत्र वर्षा होगी। कुछ स्थानों पर खण्ड वर्षा से परेशानी।

आश्विन-दिनांक ५ अक्टूबर सन् २००५ ई. बुधवार को आश्विन मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रोदय ३० मुहूर्ती है। भावों में समता को तेजी। उदय समय दोनों श्रृंग समान तथा वर्ण श्वेत रंग का होगा। श्वेत वस्तुओं के भावों में तेजी का प्रभाव अधिक रहेगा। वर्षा मध्यम रूप से होगी। रुई, सूत, पाट, शेयर, वारदाना, जूट, पटसन, हैसियन के भाव प्रथम गिरावट ले तेजी बना लेंगे। चांदी, सोना, पीतल, स्टील, पारा, ताम्बा, सीसा व धातुओं से संबंधित शेयर सर्पमुखी चाल से तेजी लेंगे। गेहूं, जौ, चना, मटर में तेजी। जुआर, बाजरा, मक्का, मोंठ, अरहर, मूंग, मघ, मसूर में भी तेजी को बल मिलेगा। उपद्रव, आन्दोलन, प्रदर्शन, हत्या जैसी वारदातों को बल मिलेगा। राजनैतिक परिवर्तन, सत्ता में संघर्ष, धनियां, सौंठ, हल्दी, मिर्च, जीरा, हींग, मेवा, गोला, सरसों, तेल, पशुओं में रोग। घी, चावल, चीनी, गुड़ के भाव तेजी लेकर मन्दी की मांग करने लग जायेंगे।

कार्तिक-दिनांक ३ नवम्बर सन् २००५ ई. को कार्तिक मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन गुरुवासरी व विशाखा नक्षत्र अन्तर्गत हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन ४५ मुहूर्त्ती है। इसका श्रृंग उच्च होगा जो प्रत्येक जिन्स में तेजी कारक है। गुड़, शक्कर, चीनी, चावलों के भावों में मन्दी का मान होगा। घी, सरसों, सोयाबीन, मूंगफली, अरण्डी, लाहा, अलसी, रेशम, ऊन, ऊनी वस्त्र के भाव घटाबढ़ी ले कर तेजी बना लेंगे। पीपल, तेल, अलसी, अरण्डी, सोयाबीन, लाहा, सूर्यमुखी के भावों में तेजी। सोना, चांदी के भाव टूट जायेंगे। पीपल, सीसा, जस्ता, एलमोनियम के भाव गिर जायेंगे। ज्वार, गुवार, बाजरा, मक्का, मोंठ, उड़द के भावों में मन्दी देखने को मिलेगी। दालवाना में सुस्ती। गेहूं, जौ, चना, मटर के भावों में स्थिरता को बल मिलेगा। आलू, प्याज, कंदमूल फल के भाव सुधार ले तेजी बना लेंगे। धनियां, सौंफ, सौंठ, हल्दी के प्रथम भाव मन्दी ले सुधार लेगा। पशु चारा, घास, कोयला, गैस, लकड़ी के भावों में तेजी का मान लेगा।

मार्गशीर्ष-दिनांक ३ दिसम्बर सन् २००५ ई. को मार्गशीर्ष मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रोदय ३० मुहूर्ती है। उदय काल में इसका वर्ण श्याम वर्ण का होगा। इसके दोनों श्रृंग समान होंगे। जो प्रत्येक जिन्स में घटाबढ़ी का भाव बना। पुनः अपना रुख बना लेंगे। सोना, चांदी, पीतल, ताम्बा, स्टील, कलई, पारा, जस्ता के भावों में तेजी का रुख रहेगा। अलसी, अरण्डी, सरसों, सींगदाना, मूंगफली, सोयाबीन, खोपरा, सूर्यमुखी, तिल, तेल के भावों में मांग के साथ तेजी बढ़ेगी। रुई, सूत, सन, पाट, शेयर, जूट, वारदाना व हैसियन के भावों में सर्पमुखी चाल से तेजी बनेगी। कुछ स्थानों पर वर्षा से लाभ व कुछ प्रान्तों में वर्षा, पारा तथा कोहरा से परेशानी। गुड़, शक्कर, चीनी, घी, चावलों के भावों में तेजी। हल्दी, धनियां, जीरा, सौंठ, लौंग, जायफल, केसर, कस्तूरी तेज। आलू, प्याज, लहसन के भावों में सुधार। लोहा, कोयला, लकड़ी, पशुचारा, घास के भाव तेज। सर्दी की सरसराहट से प्रजा में परेशानी।

पौष-दिनांक १ जनवरी सन् २००६ ई. को पौष मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन ३० मुहूर्ती है। उदय काल में श्याम वर्ण और दोनों श्रृंग समान (उच्च) होंगे। जो प्रत्येक जिन्स में घटाबढ़ी देंगे। सर्दी का प्रकोप, ओस, कोहरा से पशु-पक्षियों व वृद्ध जनों को कष्ट, सोना, चांदी, शेयर व लोहा, जस्ता के भावों में तेजी का मान हो। गुड़, शक्कर, चीनी, चावल के भाव टूट जायेंगे। रुई, सूत, कपास, शेयर हैसियन, पाट, वारदाना के भाव प्रथम मन्दी लेकर सुधार लेंगे। ज्वार, बाजरा, मक्का व उड़द, मूंग, मसूड़, अरहर व दालवाना के भाव तेजी लेकर स्थिरता को बल देंगे। राजविग्रह हो, आन्दोलन, आतंकवाद व प्रथकवाद को बल मिलेगा। मिर्च, धनियां, लौंग, इलाइची, गूगल, केसर, कस्तूरी व सुगन्धित पदार्थों के भावों में तेजी। सरसों, तिल, तेल, सोयाबीन, बेजीटेबिल के भाव गिरकर सुधार लेंगे।

माघ-दिनांक ३० जनवरी सन् २००६ को माघ मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। चन्द्र उदय वरुण मण्डल और ३० मुहूर्ती है। उदय काल में चन्द्रमा का श्याम वर्ण और दोनों श्रृंग समान होंगे। घी, चावल, धान के भावों में तेजी। रुई में ५, १० की तेजी, कपास में २ से ९ शेयर, पाट, वारदाना, सूत, सन, कपासिया, पाट, हैसियन के भाव गिर कर उठ जायेंगे। उड़द, चना में सुधार। ऊन, ऊनी वस्त्र के भाव घटाबढ़ी तो लेंगे लेकिन मान तेजी का ही रहेगा। कुछ स्थानों पर प्राकृतिक प्रकोप, जनता में उपद्रव, वर्षा, ओला, पाला, हिमपात से फसल में हानि। हल्दी, जीरा, नारियल, गोला, महुआ में तेजी। तम्बाकू, पोस्त, अफीम भी तेज रहेगी।

फाल्गुन-दिनांक १८ फरवरी सन् २००६ ई. को फाल्गुन मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। चन्द्र उदय अग्निमण्डल और ३० मुहूर्ती है जिसका वर्ण उदय काल में पीत वर्ण का होगा। अन्न का स्टॉक अभी ना रखें। शेयर, ऊन, रुई, सूत, कपास, पाट, वारदाना में अच्छी तेजी। ऊनी वस्त्र, ऊन के भावों में मन्दी। गुड़, चीनी, खाण्ड, मिश्री के भाव टूट जायेंगे। ज्वार, गुवार, बाजरा, अरहर के भाव भी गिर जायेंगे। शीशा, पीतल, लोहा, जस्ता, ताम्बा, एलमोनियम व चांदी के भावों में घटाबढ़ी। जीरा, काली मिर्च, लौंग, गूगल, अदरख, दालचीनी इलाइची के भाव नर्मी लेंगे। क्षुधा, शस्त्र और रोगों की वृद्धि, लाल वर्ण वाली प्रत्येक वस्तु तेजी का मान करेगी।

लेखक-पं. अनिल कुमार व्यास

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्र शृंगोन्नतः व्यापार वाणी सं. २०६२ वि.

खगोल वेत्ता पं. शंकरलाल गौड़ "ज्योतिषी" दूरा, फतेहपुर सीकरी (आगरा), उ.प्र. पिनः२८३११०

चैत्र शु. २ सूर्ये

दक्षिण शृंग

चैत्र शुक्ल २ रविवार संवत् २०६२ वि. को द्वितीया का चन्द्रदर्शन दक्षिण शृंग रक्त वर्ण से दिखाई देगा। इस मास में मूंग, मसूर, रुई, कपास, ऊन, रेशम, लौंग, चिरौंजी, काली मिर्च, गूगल मखाने, बड़ी इलायची के भाव ऊंचे चले जाते हैं। कराई, भूसा, तृण, काष्ठादि के भाव तेज होकर मंदे होते हैं। गेहूं, चना, मसूर, उड़द, घी, तेजपत्ता, जूट, पाट, वारदाना, दाख के भाव तेजी पर जाते हैं।

वैशाख शु. १ चन्द्रे

सम शृंग

वैशाख शुक्ल १ चन्द्रवार संवत् २०६२ वि. को द्वितीया का चन्द्रमा समशृंग रक्तवर्ण से दिखलाई देगा। गेहूं, चना, जौ, चावल, अरहर, रमास, उड़द, मोंठ, चीनी, गुड़, दाख, किशमिश, छुआरे पर अच्छी तेजी होती है। खण्डवृष्टि, शीत में कुछ कमी होती है। भूसा, मूंगा, मोती, पुखराज, नीलम, हकीक पर अच्छी तेजी होती है। कृषि में प्राकृतिक प्रकोप से कहीं-कहीं हानि की संभावना है। पाक द्वारा सीमा पर हरकतें होती हैं। जिससे शान्ति व्यवस्था भंग हो सकती है।

ज्ये. शु. २ बुधे

उत्तर शृंग

ज्येष्ठ शुक्ल २ बुधवार संवत् २०६२ वि. को द्वितीया का चन्द्रमा उत्तर शृंग से पीत वर्ण से दृष्टिगोचर होगा। धान्य, धातुवाने पर घोर तेजी होती है। विशेषतः चना, मटर, सोना, चांदी, ताम्बा, पीतल में व्यापारी वर्ग अच्छा लाभ उठा सकते हैं। तेल, गुड़, मादक द्रव्यों में कुछ तेजी अवश्य होती है। कहीं-कहीं खण्डवृष्टि, वायु संचार के प्रबलयोग हैं। बाल, वृद्धों को पीड़ा पहुंचती है। मूंग, मसूर, रमास, मोंठ, उड़द पर विशेष तेजी होकर मंदा होता है। चावल, कपास, रुई के भाव गिर जाते हैं।

आषा.शु. २ गुरौ

उत्तर शृंग

आषाढ़ शुक्ल २ गुरुवार संवत् २०६२ वि. को द्वितीया का चन्द्रमा उत्तर शृंग से श्वेत वर्ण वाला दिखाई देगा। सोना, चांदी, ताम्बा, पारा, रांगा, शीशा, लोहा, स्टील, गुड़, खाण्ड, घी, तिली, तेल, सरसों, बेजीटेबल, हींग, हल्दी, मखाने, काली मिर्च, लाल गूगल, कपूर, रुई, कपास, ऊन में घोर तेजी के आसार दिखलाई देते हैं। पश्चिमी देशों तथा उत्तर में अशान्ति दिखलाई दे रही है। चीड़, पाट वारादने के भाव कुछ गिर जाते हैं। पीपरमूल, लाख, चपड़ा, कंच के सामान, सुगन्धित वस्तु के भाव सम रहेंगे।

श्रावण शु. १ शनौ

उत्तर शृंग

श्रावण शुक्ल १ शनिवार संवत् २०६२ वि. को चन्द्रदर्शन सायंकाल वेला में उत्तर शृंग से रक्त वर्ण से होगा। दालवाने में उड़द, मूंग, मोंठ, मसूर, रमास में अच्छी तेजी आ सकती है। घोर वर्षा के प्रायः योग बन रहे हैं। प्रबल वायु संचार से वृक्ष धराशायी हो सकते हैं। पशु पक्षियों का भारी निवाश भी हो सकता है। गेहूं, जौ, बाजरा, ज्वार, मक्का, गुड़, खाण्ड, पाट, वारदाने, ऊन, कपास पर सन्तापन भी आ सकता है। हरड़, बहेड़ा, आंवला, क्षार, हींग, कत्था, चूना के सम भाव रह सकते हैं।संवत् २०६२ वि. को चन्द्रदर्शन गुजरात, महाराष्ट्र, केरल में प्रकृतिक प्रकोप से हानि हो सकती है।

भाद्रपद शु. २ चन्द्रे

उत्तर शृंग

भाद्रपद शुक्ल २ चन्द्रवार संवत् २०६२ वि. को द्वितीया का चन्द्र पीत वर्ण युक्त, उत्तर शृंग से दृष्टिगोचर होगा। चांदी, सोना आदि के गहने, जवाहरात, रत्न आदि पर भयंकर तेजी होती है। कपड़ा, लाल, सफेद चन्दन, चीड़, शाल, चावल, गेहूं, सरसों, तिल, तेल, हींग, जीरा, धनिया, काली मिर्च, मखाने के भाव कुछ गिर जाते हैं। मासान्त में सुपारी, मूंग, मोंठ, बांस, काष्ठ, कोयला, मिट्टी का तेल, पेट्रोल, डीजल के भाव चढ़ जाते हैं। गूगल, कवलगट्टा, लौंग, सोना, पीतल के भाव गिर जावें।

आश्विन शु. २ बुधे

उत्तर शृंग

आश्विन शुक्ल २ बुधवार संवत् २०६२ वि. को द्वितीया का चन्द्रमा उत्तर शृंग से पीत वर्ण वाला दिखलाई दे रहा है। इस चन्द्र के प्रभाव से तूवर, मोंठ, चना, देवदारु, सरसों, सूत, कपड़ा, सर्वरस, चांदी, सोना, तूवर, चावल, रुई, शेयर, ईख, गु., खाण्ड पर तेजी आ सकती है। खण्डवृष्टि,वायु संचार के योग हैं। वर्षा थम जाती है। बंगला देश में विद्रोह, काश्मीर सीमा पर पाक हरकतें हो सकती हैं। दाख, किशमिश, लौंग, ताम्बा, लोहा, जस्ता, पीतल पर घोर तेजी होती है। सुपारी, मखाने, चिरौंजी, अगर, तगर के भावों में मंदा होता है। व्यापारी संग्रह अवश्य करें।

कार्तिक शु. २ गुरौ

उत्तर शृंग

कार्तिक शुक्ल २ गुरुवार संवत् २०६२ वि. को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से पीत वर्ण युक्त दृष्टिगोचर होगा। चन्द्रदर्शन के ३ दिन पश्चात् तिल, उड़द, मोंठ, मसूर, तेज होते हैं। चांदी, लोहा, मशीनरी का सामान, विद्युत सामग्री, कांच का सामान, गेहूं, तीसी, सरसों, लाल मिर्च, चना, लाल चन्दन, सनपाट, वारदानना में साधारण तेजी हो। भारतीय जनों का मास का फल उत्तम है। खुशहाली के लिये कोई नया विधान पारित होगा। अमचूर, खटाई, नींबू, देवदारु, सूत, कपड़ा, लोहा पर अच्छी तेजी। किसी प्रान्त का मंत्रिमण्डल में फेर बदल अवश्य होती है। विशेषतः उत्तर प्रदेश हैं।

मार्गशीर्ष शु. २ शनौ

उत्तर शृंग

मार्गशीर्ष शुक्ल २ शनिवार संवत् २०६२ वि. को चन्द्रदर्शन दौज का चन्द्रमा उत्तर शृंग से दिखाई देगा। जिसका खाद्य वस्तुओं पर विशेष प्रभाव पड़ सकता है। गेहूं, चना, जौ, मटर, उड़द, मूंग, मोंठ, गुवार, रमास पर विशेष तेजी भड़क सकती है। कवलगट्टा, गूगल, चन्दन, धातु, सिंघाड़ा, मोती, पुखराज, हीरा, पन्ना, हकीक के भाव कुछ गिर सकते हैं। चांदी, सोना, शेयर, ताम्बा, पीतल, स्टील पर कुछ तेजी होती है।

पौष शु. २ रवौ

उत्तर शृंग

पौष शुक्ल २ रविवार संवत् २०६२ वि. को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से हो रहा है। इस चन्द्रदर्शन के प्रभाव से चांदी, सोना में मंदी होकर एकदम तेजी आ सकती है। सर्वरस सोना,चांदी, लोहा, पारा, रांगा, शीसा, ताम्बा, चांदी सोना, पीतल, स्टील पर घोर तेजी के प्रायः योग दृष्टिगोचर होते हैं। काली मिर्च, नमक,तीसी, रेण्डी, मेथी, इलायची, दाख, किशमिश के भाव गिर जाते हैं। रुई, कपास, ऊन, सूती कपड़ों, के भाव आसमान को छू सकते हैं। अतः व्यापारी लाभ अवश्य उठावें।

माघ शु. १ चन्द्रे

उत्तर शृंग

माघ शुक्ल १ चन्द्रवार संवत् २०६२ वि. को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से दिखलाई दे रहा है। इस चन्द्रदर्शन के प्रभाव से नारियल, कपूर, हींग, हीरा, जीरा, कपूर, हिंगुल, मखाने, दाख, किशमिश पर भी तेजी होती है। स्वतंत्र पांडिचेरी, गोवा में वृष्टि के योग बन रहे हैं। मसान्त में चावल, चना, जौ, मोंठ, मसूर, अरहर पर कुछ सन्तापन होता है। घी, तेल, काष्ठ, कोयला, पेट्रोल, जीडल के भाव ऊंचे पर चले जाते हैं। खराई, काली मिर्च, सोना, चांदी, ताम्बा, पीतल, स्टील पर अच्छी तेजी होती है।

फाल्गुन शु. २ बुधे

दक्षिण शृंग

फाल्गुन शुक्ल २ बुधवार, संवत् २०६२ वि. को चन्द्रदर्शन दक्षिण शृंग से पीत वर्ण से दिखलाई दे रहा है। इस मास में तूवर, चावल, मोंठ, मसूर, देवदारु, सरसों, सूत, कपड़ा, सर्वरस, चांदी, सोना, रुई, शेयर, ईख, गुड़, खाण्ड, घी और तेल पर घोर तेजी होती है। दक्षिण भारत में भूकम्प से धन जन हानि से भारी विनाश हो। केन्द्रिय मंत्रिमंडल में परिवर्तन संभव होगा। किसी ख्याति प्राप्त वरिष्ठ नेताका निधन हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सन् २००५-शेयर बाजार व तेजी-मंदी की वार्षिक समीक्षा

(राष्ट्रीय अंतराष्ट्रीय शेयर बाजार समीक्षक) ०६१८५-२४६३१७

श्रीमती आचार्या रीता देवी W/o आचार्य पंडित टुनटुन शास्त्री, ग्राम-करौन्दी, पोस्ट-सरांव (नटवार), जिला-रोहतास (बिहार)-८०२२१८

सभी ग्रह किसी न किसी रूप में कंपनियों, उद्योगों में तेजी-मंदी एवं लाभ-हानि के कारक होते हैं। किसी ग्रह का प्रभाव मंदी कारक होता है तो किसी ग्रह का तेजी कारक। सामान्यत: पाप ग्रहों के बलवान होने पर शेयर बाजार के लिए उन्हें तेजी कारक माना जाता है और शुभ ग्रहों के बलवान होने पर उन्हें मंदी कारक माना जाता है। हालाँकि यह एक सामान्य धारणा है एवं प्रत्येक ग्रह अपनी चाल और स्थिति के अनुसार कभी तेजी कारक तो कभी मंदी कारक हो जाता है। यह स्तंभ पूर्णत: ग्रहों की युक्ति-प्रतियुक्ति, उदय-अस्त, वक्री-मार्गी आदि के आधार पर उल्लेखित है। पाठकगण अपनी सूझ-बूझ से कार्य करें। लाभ-हानि की जिम्मेवारी आप पर निर्भर है।

जनवरी-यह माह पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र, सिंह राशि में पंचमी तिथि, वृद्धि रवि योग घंटा २७ मिनट २९ से आरंभ हो रहा है। फलत: अधिकांश ग्रह धनुराशिगत बुध, शुक्र, सूर्य, चन्द्रमा एक साथ केन्द्र में युक्ति कर रहे हैं। जिससे बाजार खुलते ही तेजी का संकेत देंगे। ता. ३ को हस्त नक्षत्र में बाजार खुलेगा। बाजार खुलते ही ता. ३ से ७ तक ऑटो मोबाईल्स, फर्मा सेक्टर, सीमेंट एवं अर्थ व्यवस्थाओं के शेयरों में विदेशी निवेशकों के समर्थन से बाजार में तेजी बनी रहनी चाहिए। ता. १० से १४ के बीच सूर्य मकर राशि में प्रवेश करने से दूर संचार, मीडिया व सूचना प्रोद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियों, सॉफ्टवेयर एवं सीमेन्ट सेक्टर के शेयरों में तेजी की अवधारणा उतार-चढ़ाव के मध्य बनी रहेगी। ता. १७ से २१ तक हीरो होण्डा, टेल्को, महेन्द्रा एण्ड महेन्द्रा, अशोक लिलेण्ड, आयशर मोटर, एक्साईड इन्डस्ट्रीज, अपोलो टायर्स, बजाज ऑटो मोबाईल्स, स्टेट बैंक, एच.डी.एफ.सी, एल.आइ.सी. हाउसिंग फाइनेन्स, इन्फोसिस टेक्नोलॉजी, विप्रो, सत्यम, ह्युगेस सॉफ्टवेयर आदि प्रमुख कंपनियों के प्रमुख शेयरों में संस्थागत निवेशकों एवं विदेशी निवेशकों के समर्थन से बाजार तेजी में रहना चाहिए। ता.२४ को बुध अस्त होने से २४ से २७ तक बाजार दिशाहीन रहेगा। ता. २८ से ३१ तक उतार-चढ़ाव पूर्ण रहेगा।

फरवरी-इस माह का आरंभ भी तेजी से होगा। ता. २ को गुरु वक्री होने से प्राय: ता. १ से ११ तक नई-पुरानी अर्थव्यवस्थाओं वाली कंपनियों के शेयरों में संस्थागत निवेशकों के समर्थन से बाजार तेजी में रहना चाहिए। ता. १२ को सूर्य कुंभ में एवं बुध भी कुम्भ में प्रवेश करने से दैनिक फ्यूचर कारोबारियों के लिए ता. १४ से २१ तक सर्वाधिक संकटपूर्ण समय होगा। इन समयों में शेयर बाजार से दूर रहना चाहिए। बाजार फिर इन समयों में अत्यधिक संकटपूर्ण स्थिति में फंसते हुए प्रतीत हो रहे हैं। एवं चहुं ओर अव्यवस्था, अस्थिरता, अनिश्चितता एवं घबराहट की स्थिति दिखाई पड़ेगी। ता. २२ से २५ तक के समय में बाजार की धारणा उथल-पुथल पर नियंत्रण लगने की आशा न्यूनतम दृष्टिगोचर हो रही है। ता. २६ को बुध उदय होने से ता. २८ को अचानक इंफोसिस, विप्रो, सत्यम, डॉक्टर रेड्डी लैब, सिप्ला, भुपिन लैब, केडिला एवं दूर संचार, सूचना प्रोद्योगिकी की कंपनियों के शेयरों में अचानक तेजी का माहौल बनेगा।

मार्च-इस माह का आरंभ भी तेजी से होगा। ता. १ को बुध मीन राशि में प्रवेश करने से ता. १ से ४ तक सॉफ्टवेयर, फर्मा, दूर संचार, मीडिया, सूचना व प्रोद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियों के शेयर्स में असामंजस्य होते हुए भी बाजार तेज रहेगा। ता. ७ को उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में बाजार खुलते ही ११ तक बाजार में अत्यधिक संकटपूर्ण स्थिति में फंसते हुए प्रतीत हो रहे हैं। चारों ओर अस्थिरता, अनिश्चितता की स्थिति बनी रहेगी। ता. १४ को सूर्य मीन राशि में प्रवेश करने से १८ तक बाजार की स्थिति नकारात्मक बनी रहेगी। बाजार में उठा-पटक जारी रहेगा। ता. २१ को बाजार खुलने पर अचानक सरकार द्वारा अनुकूल माहौल से बाजार, दूर संचार, मीडिया व सूचना प्रोद्योगिकी, सॉफ्टवेयर, फर्मा एवं अर्थ व्यवस्थाओं के शेयर्स में विदेशी निवेशकों के समर्थन से बाजार तेजी की ओर अग्रसर रहेगा। परन्तु यह तेजी ता. २१ से २३ तक ही बनी रहेगी। फिर बाजार पूरी तरह मंदी की चपेट में आ जाऐगा।

अप्रैल-इस माह का आरंभ मंदी में होगा। इस मंदी का सिलसिला ता. १ से ६ तक ही जारी रहेगा। इन समयों में सॉफ्टवेयर, फर्मा, अर्थ व्यवस्थाओं एवं मीडिया क्षेत्र की कंपनियों के शेयर्स में भारी उथल-पुथल दिखाई पड़ेगी। ता. ७ को बुध उदय होने से बाजार धीरे-धीरे संभलता हुआ नजर आएगा। विदेशी निवेशकों की होड़ से मीडिया, सॉफ्टवेयर, फर्मा एवं अर्थ व्यवस्थाओं के शेयर्स में प्राय: तेजी का रुख दीखता नजर आएगा। यह तेजी का दौर ता. १५ तक बना रहना चाहिए। ता. १८ को पुन: बाजार खुलते ही रिलायंस इंड., पॉवर ग्रीड कार्पोरेशन, नेशनल हाउसिंग बैंक, एच.डी.एफ.सी, मद्रास सीमेन्ट, बाइश लिमिटेड, टीभीएस मोटर्स, बजाज ऑटो मोबाइल्स, महानगर टेलीफोन, हीरो होण्डा, आयल एण्ड नेचुरल गैस कार्पोरेशन, इन्फोसिस टेक्नॉलोजी, विप्रो आदि प्रमुख कंपनियों के शेयरों में तेजी की अवधारणा बनी रहेगी। यह सिलसिला ता. २२ तक चलना चाहिए। ता. २५ को बाजार खुलते ही नई-पुरानी अर्थव्यवस्थाओं की कंपनियों के शेयर्स में अत्यधिक कारोबार होने से बाजार तेज रहना चाहिए। यह तेजी पूरे माह तक रहनी चाहिए।

मई-इस माह का आरंभ तेजी से होगा। इस तेजी का दौर ता. २ से ४ तक जारी रहेगा। पुन: ता. ५ को शुक्र वृष राशि में प्रवेश करने से ए.सी.सी., गुजरात अंबुजा सीमेन्ट, सत्यम, विप्रो, इंफोसिस, डॉ. रेड्डी लैब, रैन बैक्सी, टिस्को, टेल्को, हीरो होण्डा, बजाज ऑटो की कंपनियों के शेयर्स में प्राय: तेजी की अवधारणा रहेगी। जो ता. ५ से १३ तक होगी। ता.१४ को सूर्य वृष राशि में प्रवेश करेगा। फलत: ता. १६ को बाजार खुलते ही एक बार फिर बाजार में अत्यधिक संकटपूर्ण स्थिति में फंसते हुए प्रतीत हो रहे हैं। ता. १६ से २० तक यह सिलसिला जारी रहेगा। फिर ता. २४ को बुध अस्त होते ही अचानक बाजार आंधी के आम की तरह गिरता नजर आएगा। ज्यादातौर पर सॉफ्टवेयर, फर्मा, अर्थ व्यवस्था एवं दूर संचार, मीडिया व सूचना प्रोद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियों के शेयर्स में विदेशी निवेशक बिकवाल बन जाऐंगे। यह पूरा माह शेयर बाजार के लिए नकारात्मक साबित होगा।

जून-इस माह की शुरूआत भी मंदी में होगी। ता. २ को गुरु मार्गी होने से ता. १ से ३ तक बाजार में मंदी का बोलबाला

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रहेगा। ता. ६ को रोहिणी नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलत: इसी दिन से बाजार का रुख दिशाहीन होने लगेगा। और प्राय: गिरता नजर आएगा। यह दौर कम से कम १७ तक चलना चाहिए। ता. २० से बाजार में थोड़ा-बहुत सुधार भी होता है तो आप इसे धोखा समझें। अत: बाजार की स्थिति अनिश्चित तथा मंदी की ही समझ में आ रही है। यहां पर बाजार में जब भी किसी दिन सुधार होगा, वह मंदी के प्रतिक्रिया स्वरूप होना चाहिए। यह मंदी का दौर भी पूरे माह तक होना चाहिए। मेरे समझ से इस माह कारोबार करना ज्यादा हानिकर होगा।

जुलाई-माह के आरंभ में बाजार का रुख ठीक नहीं रहेगा। ता. ५ को शनि पूरब में अस्त होने से बाजार की स्थिति और अव्यवस्था, अस्थिरता एवं घबराहट को बढ़ावा देगी। जो शेयर बाजार के लिए प्रतिकूल साबित होगा। ज्यादातौर पर भारी इंजीनियरिंग, पॉवर ऑटो मोबाइल्स, सीमेन्ट कंपनियों के शेयर्स में भारी उथल-पुथल कारक बनेगा। ता. ५ से १८ तक बाजार की स्थिति चिन्ताजनक रहेगी। ता. १९ को मंगल मेष राशि में प्रवेश करेगा। फलत: बाजार मंदी में परिवर्तित होगा, जिससे ता. १९ से २६ तक विप्रो, सत्यम, इंफोसिस, स्टेट बैंक, यू.टी.आई., एच.डी.एफ.सी., भारत पेट्रो., हिन्दुस्तान पेट्रो., रैन बैक्सी, रिलायंस इंड., मारुति उद्योग, आई.टी.सी.लिमिटेड, हिण्डालको इंड., आई.सी.आई.बैंक, लार्सन एण्ड टिब्रो, दूरसंचार, मीडिया क्षेत्र की कंपनियों में विदेशी निवेशकों के समर्थन से बाजार तेज रहना चाहिए। ता. २९ को बुध अस्त होने से बाजार फिर मंदी के चपेट में आ जाएगा, जो मासांत तक रहेगा।

अगस्त-इस मास का आरंभ भी मंदी में होगा। इस माह में ग्रहों का परिवर्तन अधिक हो रहा है। लेकिन इनके योग ऐसे नहीं बन रहे हैं कि बाजार तेजी में चलने लगे। ता. ४ से ९ तक दूरसंचार, मीडिया, सूचना-प्रोद्योगिकी, सॉफ्टवेयर, बैंकों के शेयर्स के साथ ही फर्मा सेक्टर के शेयर्स में भारी गिरावट दृष्टिगोचर होगी। ता. १० को शनि उदय होने से बाजार कुछ संभलेगा। फलत: ता. १० से १९ तक हीरो होण्डा, टीभीएस सुजुकी, मारुति उद्योग, टिस्को, टेल्को, महेन्द्रा एण्ड महेन्द्रा, भारी इंजीनियरिंग, रिलायंस इंड., ए.सी.सी., सहास सीमेन्ट, विप्रो, इंफोसिस, सत्यम एवं मीडिया क्षेत्र के शेयर्स में संभव है कि बाजार विशेष तेजी की ओर बढ़ सके। ता. २२ से ३१ तक यदि १० से १९ तक बाजार तेजी में रहता है तो बाजार फिर तेजी में ही रहना चाहिए।

सितम्बर-इस माह का आरंभ तेजी से होगा। और ता. ३ को बुध पूरब में अस्त हो रहा है। जिससे बाजार का रुख बदलेगा। चारों ओर खामोशी एवं असामंजस्य की स्थिति रहेगी। जिससे बाजार आंधी के आम की तरह गिरता नजर आऐगा। इस मंदी का क्रम १५ तक चलना चाहिए। ता. १६ को सूर्य कन्या में और बुध कन्या में चलेंगे जो बाजार के लिए शुभ नहीं हैं। इस अवधि में बाजार में थोड़ा बहुत सुधार होगा। लेकिन खरीदकर चलने वालों के लिए यह समय तनावपूर्ण सिद्ध होगा। ता. १६ से २३ तक सावधानी अपेक्षित है। ता. २६ से ३० तक कुछ तेजी के बाद बाजार एकाध मंदी का झटका देकर फिर तेज हो जाएगा। जो मासांत तक जारी रहेगा।

अक्टूबर-इस माह ग्रहों का राशि परिवर्तन अधिक नहीं हो रहा है लेकिन अनेक शुभ योग बन रहे हैं कि बाजार तेजी की ओर बढ़ते जाऐंगे। मासारंभ में बाजार तेज रहना चाहिए। ता. २ को शुक्र वृश्चिक में, ता. ४ को बुध तुला में, ता. ५ को बुध पश्चिम में उदय होने से ता. ३ से ८ तक बाजार तेज रहेगा। इन समयों में सॉफ्टवेयर, फर्मा, बैंक क्षेत्र की कंपनियों में निश्चित रूप से विशेष कारोबार होंगे। ता. ९ को गुरु अस्त होने से ता. ९ से ११ तक बाजार में अचानक मंदी की अवधारणा बनेगी। परन्तु ता. १२ को मंगल वक्री होने से ता. १२ से २१ तक यू.टी.आई., भारत इलेक्ट्रोनिक्स, एच.डी.एफ.सी., एवेन्टिस फार्मा, महानगर टेलीफोन, टाटा आयरन, मद्रास सीमेन्ट, हिन्दुस्तान पेट्रो., डॉ. रेडी लैब, पंजाब ट्रेक्टर्स, बजाज ऑटो, हीरो होण्डा, सत्यम, विप्रो, इंफोसिस टेक्नोलॉजी, रिलायंस इन्ड. आदि के शेयर्स में सस्थागत निवेशकों के समर्थन से बाजार तेज रहना चाहिए। ता. २४ से ३१ तक बाजार विशेष तेज रहना चाहिए। इस अवधि में विदेशी निवेशकों के समर्थन से लिवाली होने से शेयर सूचकांक का ग्राफ आश्चर्यजनक ऊपर उठेगा।

नवम्बर-इस माह का आरंभ भी तेजी से होगा। ता. १ से ३ तक बाजार तेज रहेगा। ता. ४ को गुरु उदय होने से ता. ११ तक पुरानी अर्थ व्यवस्थाओं के शेयरों पर ध्यान दीजिए। अधिकांश तेजी इसी में बनेगी। ता. १३ को बुध वक्री होने से ता. १७ तक दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रोद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियों, विप्रो, इंफोसिस, सत्यम, हुगेस सॉफ्टवेयर, रैन बैक्सी, सिप्ला, डॉ. रेडी लैब, लुपिन लैब, मर्क लि., यू.टी.आई., स्टेट बैंक, एच.डी.एफ.सी., एच.सी.एल.टेक्नोलॉजी, महानगर टेलीफोन आदि के शेयर्स में तेजी का रुख रहेगा। ता. १८ को बुध अस्त होने से बाजार का रुख बदलेगा। ता. १८ से २१ तक सरकार के दिशा निर्देश के कारण बाजार अचानक मंदी में आ जाएगा। लेकिन ता. २२ को शनि वक्री होने से बाजार का माहौल फिर बदल जाऐगा। जिससे ता. २२ से मासांत तक अशोक लिलैण्ड, टिस्को, टेल्को, बजाज ऑटो, हीरो होण्डा, ए.सी.सी. एवं पेट्रो रसायन के शेयर्स के बाजार तेज रहना चाहिए।

दिसम्बर-इस माह का भी आरंभ तेजी से होगा। ता. १ को बुध उदय होने से ता. १ से १४ तक सॉफ्टवेयर, बैंकों, फार्मा, दूरसंचार, मीडिया क्षेत्र के शेयर्स में तेजी का बोलबाला रहेगा। ता. १५ को सूर्य धनु राशि में प्रवेश करने से मासांत तक इंडियन आयल, चेन्नई पेट्रोलियम, रिलायंस इंजी., टाटा आयरन, टाटा पॉवर, टीभीएस मोटर्स, अपोलो टायर्स, टेल्को, हीरो होण्डा, मारुति उद्योग, एच.डी.एफ.सी., स्टेट बैंक, विप्रो, सत्यम, इंफोसिस टेक्नोलॉजी, रैन बैक्सी, सिप्ला, डॉ. रेडी लैब, महानगर टेलीफोन आदि प्रमुख कंपनियों के शेयर में तेजी की अवधारणा रहेगी।

यह आलेख पूर्णत: गणितीय आधार पर लिखित है। होना न होना ईश्वरीय कृपा है। आप चाहें तो स्पेशल "**दैनिक तेजी मंदी समीक्षा रिपोर्ट**" विस्तार से प्राप्त कर सकते हैं। सौदा कब करें?, कब काटें?, किस सेक्टर में?, कौन कंपनी का शेयर कब खरीदें? आदि की संपूर्ण जानकारी इस रिपोर्ट में विस्तार से उल्लेखित है। यह रिपोर्ट शेयर कारोबारियों के लिए काफी मददगार है। आप चाहें तो हमारे यहां से यह स्पेशल रिपोर्ट प्राप्त कर सकते हैं। जिसका सेवा शुल्क इस प्रकार है-(१.) ३ माह का १७५० रुपये, (२.) ६ माह का ३००० रुपये, (३.) वार्षिक ४२०० रुपये निर्धारित हैं। सेवा शुल्क इस प्रकार भेजें-**श्रीमती रीता देवी**, किसी भी बैंक का ड्राफ्ट, पटना (बिहार) के नाम से भेजकर रिपोर्ट रजिस्ट्री पत्र द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। ३ माह से कम की रिपोर्ट नहीं भेजी जाती है। **श्रीमती आचार्या रीता देवी**, ग्राम-करौन्दी, पोस्ट-सरांव (नटवार), जिला-रोहतास (बिहार) ८०२२१८, भारत (राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय शेयर बाजार समीक्षक)।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सन् २००५ का वार्षिक व्यापार-शेयर बाजार भविष्यफल

मेष-आपकी राशि पर ग्रहानुसार तृतीयस्थ मिथुन राशिगत शनि, शत्रुभाव में कन्या राशिगत गुरु-केतु एवं अधिकांश ग्रह व्यय भाव में विचरण करने से इस वर्ष शेयर व स्टॉक बाजार, सट्टा, रीयल-एस्टेट आदि के कारोबार में आपको नुकसान उठाना पड़ेगा। विदेश व्यापार में साधारण प्रगति व लाभ, शर्राफा बाजार में साधारण लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। तांबा, पीतल, लौह उपकरण आदि स्थलजन्य औषधियों, लाल चंदन, मधु, विस्फोटक सामग्री, गेहूं, चना, मिर्च, मंसूरी, किसमिस आदि के व्यापार में लाभ-हानि सामान्य रहेगा। जोश, उत्तेजना और नासमझी शेयर बाजार में हानि का कारण बनेगा।

वृष-इस वर्ष आपकी राशि पर धनेश शनि मिथुन राशिगत एवं अधिकांश ग्रह एकादश भाव में विचरण करने से सद्बुद्धि के कारण सट्टा-शेयर आदि में मनोनुकूल लाभ के अवसर प्राप्त करेंगे। विदेशी व्यापार में लाभ के अच्छे अवसर मिलेंगे। शर्राफा बाजार में उत्तम उपलब्धि के संकेत हैं। चावल, गेहूं, दलहन, चीनी, नमक, वनस्पति घी, डेयरी पदार्थों, औषधि, आभूषण आदि के व्यापार में लाभ का प्रबल योग है। ऑटोमोबाइल्स, सॉफ्टवेयर आदि के शेयर्स में लाभ की अच्छी संभावना है।

मिथुन-इस वर्ष आपकी राशि पर लग्न भाव में, चतुर्थ भाव में गुरु केतु एवं दसम भाव में पंचग्रही योग बनने से शेयर व स्टॉक बाजार, सरकारी क्षेत्र के बॉण्ड्स, सॉफ्टवेयर, पेट्रोरसायन और दूरसंचार, मीडिया क्षेत्र की कंपनियों के शेयर्स में सफलता का आसार है। विदेशी व्यापार में साधारण प्रगति व लाभ, शर्राफा बाजार में सावधानी पूर्ण कार्य करें। केसर, कुमकुम, जूट, कपास, डिब्बा बन्द तेल, चावल, गुड़, मूंगफली, मेवा आदि के व्यापार में लाभ।

कर्क-इस वर्ष आपकी राशि पर तृतीयस्थ भाव में गुरु-केतु, सप्तम भाव में उच्च राशिगत मंगल एवं अधिकांश ग्रह भाग्य भाव में विचरण करने से शेयर व स्टॉक बाजार, सट्टा, म्युचुअल फंड, ऑटो मोबाइल्स, फार्मा और सीमेन्ट सेक्टर के कारोबार में लाभ। विदेशी व्यापार में संतोषप्रद लाभ। शर्राफा बाजार में अच्छी उपलब्धि की संभावना। चावल, चीनी, राजमा, सरसों, वनस्पति घी, अरहर, चना, गुड़, मशीनरी पार्ट्स एवं इलेक्ट्रानिक्स सामग्रियों के व्यापार से लाभ।

सिंह-इस वर्ष आपकी राशि पर धन भाव में गुरु-केतु, शत्रु भाव में मंगल एवं अधिकांश ग्रह अष्टम भाव में विचरण करने से मन में भटकाव की स्थिति बनेगी जिससे शेयर व स्टॉक बाजार, पूंजी से संबंधित सभी व्यवसाय में सूझबूझ बरतें फिर भी लाभ कम हानि की आशंका है। व्यय पर नियंत्रण रखें। विदेशी व्यापार में सावधानी से काम लें। शर्राफा बाजार से साधारण उपलब्धि का संकेत है। लौह उपकरण, उड़द, काली मिर्च, पेट्रो रसायन, मेवा आदि के व्यापार से साधारण लाभ।

कन्या-इस वर्ष लग्न आपकी राशि पर लग्नभाव में गुरु-केतु, पंचम भाव में मंगल एवं अधिकांश ग्रह मीन राशिगत सप्तम भाव में विचरण करने से ऑटोमोबाइल्स, फार्मा, पेट्रो रसायन, सॉफ्टवेयर, भारी इंजीनियरिंग और सीमेन्ट सेक्टर कंपनियों के शेयर्स में सूझबूझ से लाभ, विदेशी व्यापार में अच्छी प्रगति व लाभ। शर्राफा बाजार में समयानुकूल लाभ। गेहूं, चना, रुई, कपास, खाण्ड, डिब्बा बन्द तेल, वनस्पति घी, शक्कर, मूंग, मोठ, कुल्थी, अरहर, उड़द, मेवा के व्यापार से लाभ।

तुला-इस वर्ष आपकी राशि पर चतुर्थस्थ भाव में मंगल उच्च राशिगत, शत्रु भाव में पंचग्रही योग एवं व्यय भाव में गुरु-केतु विचरण करने से शेयर बाजार, स्टॉक बाजार में लाभ कम हानि का प्रबल योग है। विदेशी व्यापार में सूझबूझ से कार्य करने पर लाभ का साधारण योग है। शर्राफा बाजार में विश्वासघात से हानि की आशंका है। चावल, कपूर, घी, जवाहरात, दलहन, पशुधन, रेशम, कपास, रुई, नारियल, किराना सामग्री आदि के व्यापार से भी हानि का योग है। भाग्य दुर्बल प्रतीत होगा।

वृश्चिक-इस वर्ष आपकी राशि पर मंगल तृतीयस्थ, पंचम भाव में पंचग्रही योग बनने से और एकादस भाव में गुरु-केतु विचरण करने से शेयर बाजार और स्टॉक बाजार में प्रायः लाभ-हानि की समानता रहेगी। विदेशी व्यापार में अच्छी प्रगति के अवसर मिलेंगे। राजकीय क्षेत्र द्वारा सहायता से लाभ संभव है। शर्राफा बाजार में हानि की आशंका है। रसीले पदार्थों, स्वास्थ्य से संबंधित वस्तुओं, सुगंधित द्रव्यों, चावल, दलहन, तिलहन, वनस्पति घी एवं नई पुरानी अर्थ व्यवस्था के शेयर्स में कभी लाभ कभी हानि का योग बनेगा।

धनु-इस वर्ष आपकी राशि पर धन भाव में मंगल उच्च राशिगत चतुर्थ भावस्थ मीन राशिगत पंचग्रही युक्ति एवं सप्तम भाव में शनि विचरण करने से शेयर व स्टॉक बाजार में अर्थ व्यवस्थाओं वाली कंपनियों, सॉफ्टवेयर, फार्मा, भारी इंजीनियरिंग, पॉवर, सीमेन्ट, ऑटोमोबाइल्स, रियल एस्टेट आदि के कारोबार में सफलता के अच्छे संकेत हैं। विदेशी व्यापार से लाभ के आयाम बनेंगे। शर्राफा बाजार में भी लाभ के संकेत हैं। चावल, गेहूं, सरसों, दलहन, गुड़, वनस्पति घी, मादक पदार्थों के व्यापार से लाभ।

मकर-इस वर्ष आपकी राशि पर लग्न भाव में मंगल उच्च राशिगत बुध-राहु, सूर्य, शुक्र, चन्द्र, तृतीयस्थ भाव में विचरण करने से साहस पुरुषार्थ द्वारा शेयर बाजार एवं स्टॉक बाजार में उपलब्धि का योग है। विदेशी व्यापार से लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। शर्राफा बाजार से प्रचुर धन प्राप्त होगा। जस्ता, टीन, शीशा, कोयला, मिर्च, उड़द, मटर, रबर, समुद्री पदार्थों, अस्त्र-शस्त्रों, वनस्पति घी आदि के व्यापार से लाभ।

कुंभ-इस वर्ष आपकी राशि पर धन भाव में पंचग्रही योग बन रहा है। पंचम भाव में शनि, अष्टम भाव में गुरु-केतु एवं व्यय भाव में मंगल विचरण करने से सॉफ्टवेयर, सीमेन्ट, भारी इंजीनियरिंग, ऑटो मोबाइल्स, दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रोद्योगिकी आदि के शेयर व सट्टा में लाभ के साधारण संकेत हैं। विदेशी व्यापार में सूझबूझ बरतें। शर्राफा बाजार में लाभ के अच्छे अवसर मिलेंगे। जलज पदार्थों, चावल, चीनी, डिब्बा बन्द तेल, पीतल, तांबा, राजमा, मूंगफली के व्यापार से लाभ।

मीन-इस वर्ष आपकी राशि पर लग्न भाव में पंचग्रही योग बनने से शेयर बाजार व स्टॉक बाजार, पूंजी से संबंधित सभी व्यवसाय से लाभ, विदेशी व्यापार से प्रगति के अच्छे अवसर, सॉफ्टवेयर, ऑटो मोबाइल्स, पेट्रो रसायन एवं रिलायंस समूह, फार्मा सेक्टर कंपनियों के साथ किराना बाजार से भी लाभ का योग है।

श्रीमती आचार्या रीता देवी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

व्यापार भविष्य सन् २००५ ई.

लेखक—श्री रामावतार गुप्त "व्यापार भूषण", राव उमराव सिंह मार्किट, आर्य समाज रोड, नई सब्जी मण्डी, जिला-रेवाड़ी-१२३४०१ (हरियाणा)

मंगला चरण- वर्ण नामर्थ संघानां, रसानां छन्द सामपि।
मंगलानां च कर्तारौ, वन्दे वाणि विनायकौ॥
मूकं करोति वाचालम्, पंगु लंघयते गिरिम्।
यत्कृपात्वं महं वन्दे, परमानन्द माधवम्॥
वन्दौ विधि हरि हर, चरण शांति सुमंगल हेतु।
रवि-शशि-मंगल-बुध-गुरु, भृगु-शनि-राहु-केतु॥

जनवरी मास:- पौष कृष्ण पक्ष:- इस पक्ष में तिथि वृद्धि होकर क्षय होना तथा सोमवती मावस आदि से पक्ष में व्यापारिक वस्तुओं में प्रथम तेजी आकर पक्ष के अंत में मंदी आयेगी। एक प्रमुख योग के अनुसार जनवरी मास में व्यापारिक वस्तुओं में घोर मंदी भी चल सकती है। अत: रुख देखते हुए काम करना चाहिए। ता. ३ जनवरी बदी ७ सोमवारी से मास में दूधारू पशुओं में कोई विचित्र रोग फैल सकता है। जिससे पशुओं को काफी हानि संभव है। ४ जनवरी धनु-शुक्र सभी प्रमुख शेयरों में तेजी कारक। रुई में घटाबढ़ी। सूर्य का साथ में योग होने से प्राकृतिक कारणों से फसलों को नुकसान आदि संभव। ५ जनवरी को बुध भी शामिल होने से वर्षा में कमी तथा अनाजों में तेजी तथा आज वायदा सोना, चांदी में अच्छी तेजी के झटके आ सकते हैं। **"एक राशि पर होय जब, बुध-शुक्र और सूर। वर्षा को कमती करे, तेजी हो भरपूर॥"** बदी १० गुरुवारी विशाखा युक्त होने से आगे वर्षा काल में अच्छी वर्षा का संकेत देती है। ता. ९ जनवरी-ज्येष्ठा मंगल **"ज्येष्ठा कुजे स्वल्प जल च रोगा।"** वर्षा कम, रोग एवं १२ दिन के अंदर सभी खाद्य पदार्थ, घी, तेलों, तिलहन, दलहन आदि में तेजी तो सोना-चांदी में कोई भी अच्छी चाल देगा। एवं कहीं दंगे-फिसाद, उपद्रव आदि हो। १० जनवरी सोमवती मावस मंदी कारक है। परन्तु पू.षा. का योग आगे तेजी की लाईन बना सकता है। यहां प्रथम मंदी आकर शीघ्र ही तेजी का वातावरण बने। पौष सुदी पक्ष में प्रतिपदा मंगलवारी शनि अंगारक योग से पक्ष में अथवा एक मास के अन्दर कोई भी विचित्र चाल देगा। यहां अच्छी तेजी-मंदी की कोई भी चाल निकल सकती है। ता. १० जनवरी को यदि सूर्य पर कुण्डल (घेरा) नजर आये तो अनाजों में जोरदार तेजी की लाईन बनेगी। ता. १३ जनवरी सुदी ४ का क्षय- **"किसी मास में तीज या सुदी चौथ घट जाए। ग्राहक मांगे मूंग-घी विक्रेता नट जाए॥"** के अनुसार पक्ष में तिलहन, घी, मूंग आदि दलहन पदार्थ तेज होंगे। मकर की संक्रांति १५ मुहूर्त्त होते हुए भी अच्छी मंदी का प्रभाव रखती है। परन्तु सफेद वस्तुएं रुई आदि में तेजी कारक। १५ जनवरी (वक्री) शनि का मिथुन में प्रवेश दुर्भिक्षकारी, तिलहन-तेलों-गुड़-खाण्ड में तेजी कारक, वर्षा नाशक। उपद्रव एवं नेताओं में धोक बंदी चालू होगी। सुदी ७ रविवारी अनाज स्टॉक करने की राय नहीं देता है। बल्कि स्टॉक निकालना चाहिए। २० जनवरी सुदी एकादशी कृतिका नक्षत्र युक्त है। **"पौष सुदी एकादशी जो कृतिका नक्षत्र। लाल वस्तुओं में रहे खूब लाभ सर्वत्र॥"** के आगे लाल रंग की वस्तुओं के (संभवत: आषाढ़ में) व्यापार से अच्छा लाभ तथा जब तक वर्षा न हो तब तक अनाज के व्यापार से लाभ होगा। ता. २१ जनवरी पूर्वास्त बुध-सभी वस्तुओं में प्रथम तेज करके बाजार मंदा करेगा। बढ़े भावों पर बेचना उचित रहेगा। श्रवणे सूर्य-अनाज तेज करेगा। **"श्रवण नक्षत्र पर हो कोई ग्रह क्रूर। धान्य भाव महंगा रहे गेहूं तेज जरूर॥"** मंगलवारी पूनम पुष्य नक्षत्र युक्त होने से मंदी कारक है। यदि आज रात्रि में चन्द्रमा के दायें-बायें बिजली चमके तो एक साल के अन्दर जब भी पुष्य नक्षत्र आयेगा (२७ दिन में एक बार आता है) तब उस दिन अवश्य वर्षा होगी।

माघ कृष्ण पक्ष २०६१ विक्रमी- इस मास में भारी उतार-चढ़ाव होंगे। मूल पदार्थों में जो भी लाईन चले वह जोरदार चलने की आशा है। विशेष जानकारी के लिए सुपर स्पेशल चांस जो कि सभी प्रमुख वस्तुओं के अलग-अलग विशेष तौर पर बनाये जाते हैं। मंगाकर लाभ उठाएं। समय से पूर्व (नवम्बर-दिसम्बर २००४) में मंगाने चाहिए।

माघ प्रतिपदा बुधवारी से आगे तीन महीने बाजारों में तेजी की लाईन रहे तथा इस पक्ष में सभी खाद्य पदार्थ, घी, तेल, मसाले, दालें, साग-सब्जियां, आलू, प्याज, लहसुन आदि में तेजी चलेगी। **"माघ मास प्रतिपदा को वार होय बुधवार। तीन मास तेजी रहे भावी वर्ष बिगार॥"** बदी २ गुरुवारी सुख सुभिक्षकारी, उत्तम वर्षा, प्रजा में मंगल कार्य अधिक हो। यथा-**"माघ बदी दोयज या तीज बृहस्पतिवार। उत्तम वर्षा, शांति सुख बढ़े मंगलाचार॥"** परन्तु बदी तीज शुक्रवारी-दुर्भिक्षकारी, युद्ध, उपद्रव, रक्तपात, दंगों आदि से जनधन की हानि होना संभव है। यथा-**"दुतिया तृतीया माघ बदी शुक्र शनैश्चर वार। तो पृथ्वी पर युद्ध से बहे रक्त की धार"** बदी चौथ शनिवारी भी दुर्भिक्ष का संकेत देती है। व्यापारिक दृष्टि से योग बाजारों में तेजी को समर्थन भी देता है। यथा, **"माघ मास में चतुर्थी को आवे शनिवार। चोर, अग्नि भय, धान्य क्षय, अति दुर्भिक्ष विचार॥"**

फरवरी मास:- इस मास में तेजी की प्रमुख ता. १, ५, १५, १९, २२ तो मंदी की ३, ८, १०, १७, २६ हैं। ता. १ फरवरी बदी ७ मंगल-१३।२६ बजे उपरांत स्वाती नक्षत्र है- **"माघ बदी साते को वर्षा, वायु, गाज, तुषार। सूरज चांद न दिखे नभ में, घटाघोप आकाश निहार॥"** "सत्य समझिए आगे वर्षा ऋतु में, उत्तम वर्षा होय। उत्तम उपज धान्य मंदा हो, सुखी रहे जग में सब कोय॥" ता. २ फरवरी वक्री गुरु मंदी कारक। परन्तु शनि दसवें होने से तुरन्त भड़कती तेजी भी ला सकता है। कन्या में वक्री होने से घोर वर्षा कारक। व्यापारियों को लाभ कम होगा। ता. ८ फरवरी मावस का क्षय मंदी का वातावरण। परन्तु घी में कुछ जोरदार तेजी के झटके २ दिन पूर्व से बाद तक संभव हैं।

माघ शुक्ल पक्ष- सुदी एकम् बुधवारी सर्व मूल पदार्थ एवं सभी प्रमुख वस्तुओं में पक्ष में तेजी की लाईन चल सकती है। यथा- **"पड़वा आठैं पूर्णिमा जो बुधकारी आव। सभी वस्तु व्यापार की महंगे भाव बिकाय॥"** ता. १२ फरवरी सुदी ४ शनिवारी तथा पंचमी रविवारी दुर्भिक्षकारी है। तथा अच्छी तेजी में सहायक है। यह योग कभी-कभी अनाज, तिलहन पदार्थों आदि में सवाया भी कर देती है। संक्रांति कुंभ की मंदी कारक है। परन्तु घटाबढ़ी अधिक रहेगी। यदि आज वर्षा हो तो जो भी वस्तुएं मंदे स्तर पर हों स्टॉक करके चार मास पश्चात् बेचने से अच्छा लाभ। १५ फरवरी सप्तमी मंगलवारी-भड्डली जी कहते हैं- **"माघ सुदी जो सप्तमी भौमवार को होय। तो भड्डर जोशी कहै नाज किराना लोय॥"** तथा भरणी युक्त होने से फसलें उत्तम हों, ऐसा भी संकेत मिलता है। यथा-**"माघ सुदी साते दिना भरणी नखत विचार। रोग नाश हो धरा पर उत्तम पैदावार॥"** आज शुक्रास्त पूर्व-तेजी कारक है। अन्न तेज तो तेलों में मंदी। रुई में विशेष उतार-चढ़ाव तथा किसी राज्य का मंत्रीमंडल भंग अथवा सत्ता परिवर्तन हो। १६ फरवरी शते बुध धातुओं में अच्छी घटाबढ़ी संभव। सुदी ८ कृतिका नक्षत्र युक्त है। आगे सावन में वर्षा की कमी, अनाज तेज या फागुन में फसलों को कीड़ा लगने से हानि होगी। यथा-**"माघ सुदी आठै दिना जो कृतिका रिख आव। के फागुन रोली लगे कै सावन महंगा भाव॥"** सुदी ९ रोहिणी युक्त होने से एक पक्ष अथवा एक मास के अन्दर रुई, काली मिर्च आदि में जोरदार मंदी आ सकती है। शकुन-सुदी ७ से १४ तक उत्तरी-पश्चिमी मध्य भारत में जहां बादल, बिजली गर्जना वर्षा आदि अच्छी हो तो उस क्षेत्र में आगे वर्षा काल भी विशेष श्रेष्ठ रहेगा। आजमा लें। ता. २१ फरवरी को तीन ग्रहों का योग तेजी कारक है। **"एक राशि पर होय जब बुध, शुक्र और सूर। वर्षा को कमती करे तेजी हो भरपूर॥"** परन्तु सुदी १४ की वृद्धि मंदी कारक भी है। अत: प्रथम मंदी आकर तेजी आ सकती है। **"पड़वा पाचै चतुर्दशी शुक्ल पक्ष में तीन। बढ़ने पर मंदी करे तेजी हो जब छीन॥"**

फागुन मास कृष्ण पक्ष- मास में गुरु वक्री चल रहा है। मंदी कारक है। **"फागुन में गुरु अस्त हो अथवा वक्री चाल। मंदी कारक योग है मंदा हो सब माल॥"** परन्तु शनि भी वक्री चल रहा है। तेजी कारक है। यथा-**"साथ-साथ गुरु शनैश्चर दोनों वक्राचार। जौ, गेहूं, मकई, मटर तेज बाजरा जुवार॥"** अत: मास में मंदे स्तर की वस्तुएं खरीदें तथा तेजी में चल रही हों बेच कर लाभ लेना अच्छा रहेगा।

मार्च मास- इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें-१, ५, १५, १९, २२, २४ तथा मंदी की ३, ७, ११, १७, २५, २८, ३१ हैं। ता. २ मार्च सूर्य+शुक्र योग तेजी कारक है। **"सूर्य देव भृगुनाथ का एक राशि पर साथ। पकड़ा देती है फसल महंगाई को हाथ॥"** यहां प्राय: सभी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में तेजी आ सकती है। रुख देखकर काम करें। ता. ४ मार्च बदी ८ शुक्रवारी सावणी फसल के मालों में तेजी लाऐगी। ता. ७ मार्च उ.षा. का मंगल दिन १८ के अन्दर रुई में कभी भी अचानक अच्छी तेजी तथा भारतीय सैनिकों में दलबंदी की भावना पैदा करेगा। ता. ९ मार्च पू.भा. शुक्र दिन १२ में कहीं पर छापों से व्यापारियों में खलबली। तिलहन, अनाजों, धातुओं, रुई में तुरन्त तेजी आ सकती है। गुरुवारी मावस वर्षा तथा मंदी कारक है। यथा-**''मावस्या गुरुवार या गुरु दिन मास नक्षत्र। ज्योतिष का सिद्धांत है वर्षा हो सर्वत्र॥''**

फागुन सुदी पक्ष-पक्ष में रुई में काफी उतार-चढ़ाव संभव है। तथा सोना-चांदी, दलहन, अनाजों में मंदी चलने की आशा है। अच्छी मंदी भी संभव है। चन्द्र दर्शन भी अच्छी मंदी को सपोर्ट करती है। ता. १२ मार्च मकर का मंगल गुरु से पंचम होने से दुर्भिक्षकारी है। हर बढ़े हुए भावों पर माल बेचना उचित रहेगा। **''शनि मंगल रवि राहु हो, गुरु से पंचम ठोर। घोर योग से जगत में, दुर्भिक्ष भी हो घोर॥''** यहां लाल रंग की वस्तुओं में दिन ७ के अन्दर तेजी तो सोना-चांदी में अच्छी मंदी संभव है। ता. १४ मार्च मीन की संक्रांति काल में (एक मास) जो वस्तुएं मंदे स्तर पर हों, खरीदकर अगली संक्रांति काल में बेचने से अच्छा लाभ। यदि आज अच्छी वर्षा हो तो घी, तेल, कपास खरीदकर चार मास बाद बेचने से अच्छा लाभ। यहां सूर्य गुरु अपोजिशन रहने से वर्षा बन्द रहेगी। यथा- **''सम सप्तक गुरु शुक्र हो, अथवा भृगुसुत सूर। अथवा सुरज गुरु रहे, वर्षा समझो दूर॥''** ता. १७ मार्च मीने शुक्र सुख सुभिक्ष मंदी कारक है। व्यापारिक वस्तुओं में मंदी का संचार करेगा। परन्तु मूल पदार्थों में तेजी की लाईन बन सकती है। ता. १८ मार्च को शनि+गुरु+शुक्र क्रमशः ४, ७,१० वे स्थान में होने से आगे दो सप्ताह के अन्दर प्रायः सभी वस्तुओं में बीच-बीच में अच्छी तेजी के झटके आते रहेंगे। अतः हर तेजी के झटके में माल बेचते रहें। आज अष्टमी को आर्द्रा का संयोग से उपज में कमी का संकेत मिलता है। अतः अनाजों में तेजी। यथा-**''सत अठ नव दश ग्यारसी फागुन सुदी में जोय। कृतिका करे सुभिक्ष अरु आर्द्रा उपज न होय।''** ता. २२ मार्च शनि मार्गी होंगे। **''वक्र चाल चलते हुए शनि मार्गी हो जाऐ। चालू रुख बाजार का एक दम पलटा खाय॥''** के अनुसार व्यापारिक वस्तुओं की चलती लाईनों को जोर-शोर से बदल देगा। प्रथम रुख देखकर काम करें। २४ मार्च मीने राहु का प्रवेश होगा। एक वर्ष तक पशुओं के चारे में बेहद कमी रहेगी। तिलहन में जोरदार मंदी करेगा। २५ मार्च शुक्रवारी पूनम उ.फा. युक्त है। तेजी कारक है। **''पूरण जब उ.फा. रहे पूनम फागुन मास। रस पदार्थ गुड़, खाण्ड, तिल, तिलहन धान्य विनाश॥''** उपरोक्त वस्तुएँ तेज। यहां एक योग तेजी कारक तो एक योग मंदी कारक है। अतः रुख देखकर काम करें।

चैत्र कृष्ण पक्ष २०६१ विक्रमी- पक्ष के शुरू में चार ग्रहों का योग सभी वस्तुओं में तूफानी चाल देगा। तेज वस्तुएँ बेचना लाभदायक रहेगा। २६ मार्च बदी एकम् हस्त नक्षत्र युक्त तथा श्रवणे मंगल से पक्ष में अनाज तेज रहे। परन्तु मंगलवारी चौथ से वस्तुओं में मंदी भी चल सकती है। रुख देखें। बदी ५ बुधवारी **''चैत्र बदी पाचै दिना मंगल या बुधवार। गेहूं अरु घी में चले तेजी का बाजार॥''** के अनुसार पक्ष में अच्छी तेजी भी संभव है।

अप्रैल मास-इस मास में तेजी की प्रमुख ता. १, २, ४, १९, २०, २३, २६, २९ हैं। तथा मंदी की ७, ११, २५, ३० अप्रैल प्रमुख हैं। ता. १ अप्रैल यदि आज आकाश में घटाघोप बादल छा जाऐ तो सर्व लाल रंग की वस्तुओं में तेजी आयेगी। तथा दो मास के अन्दर विशेष तेजी भी संभव होगी। ता. ८ अप्रैल शुक्रवारी मावस वृष का उदय सभी धातुएं, काली मिर्च अन्नादि में तेजी कारक तो लाल मिर्च, चना आदि में तूफानी तेजी। परन्तु चैत्र में उदय होने से कभी-कभी जोरदार मंदी भी लाता है। रुख देखें, तथा आगे वर्षा काल में सर्वत्र **''वर्षा की कमी''** की आवाज सुनाई देगी।

चैत्र मास सुदी पक्ष-सुदी एकम् शनि-नवीन संवत् २०६२ का शुभारंभ संवत् का राजा शनि मंत्री बुध देव होंगे। संवत् में क्या खरीदें?, क्या बेचें?, कब बेचें? आदि को विस्तार से जानने के लिए लेखक से संपर्क करके लाभ उठाना चाहिए। शुक्ल पक्ष में तीन शनिवार रुई, पाट बोरी, काली मिर्च में जोरदार मंदी संभव है। तो सोना चांदी में अच्छी तेजी संभव है। ता. १० अप्रैल चन्द्रोदय का विशेष फल यदि खण्डित दिखाई दे तो दुर्भिक्षकारी, तीन स्थानों से खण्डित दिखाई दे तो विशेष नये-नये कानून लागू होंगे, चमक रहित धुंधला-पीला सा दिखाई दे तो काली वस्तुएं विशेष तेज। आस पास नीले बादल हों तो आगे लाल वस्तुएं विशेष मंदी होंगी। लाल बादलों में दिखाई दे तो अन्न, दलहन विशेष तेज होंगे। ता. १२ अप्रैल को बुधदेव मार्गी होंगे। चलती लाईन में परिवर्तन करेगा। १३ अप्रैल शुक्ला ५ को रोहिणी योग गुड़, खाण्ड, चीनी, तिलहन तेलों, अनाज, दलहन आदि में अच्छी तेजी ला सकता है। शकुनः-**''पाचै रोहिणी सप्तमी आर्द्रा नोमी पुष्य। चैत्र पूर्णिमा स्वाती तो वर्षा गर्भ प्रमुख॥ जो इनमें वर्षे नहीं तो आगे उत्तम बरसात। जो वर्षे तो मत करो फिर वर्षा की बात॥''** चैत्र सुदी में उपरोक्त तिथियों में जिस क्षेत्र में वर्षा नहीं होगी, वहां आगे चौमासे में उत्तम वर्षा होगी। एवं जिन क्षेत्रों में वर्षा होगी वहां आगे वर्षा काल में वर्षा की बेहद कमी होगी, सूखा पड़े, परीक्षित है। आप भी आजमाऐं। ता. १३ अप्रैल मेषे सूर्य पर मंगल की दृष्टि से संवत् में बहुत अधिक वर्षा हो। सभी प्रकार के धान्यों, रसों की पैदावार अच्छी होने से मंदी को प्रधानता रहे। ता. १६ अप्रैल सुदी ७ की वृद्धि पीछे कृष्ण पक्ष में १३ का क्षय हुआ है। **''चैत्र बदी में तिथि घटे, किन्तु सुदी बढ़ जाये। होय सुभिक्ष सुकाल सुख भूमि न अन्न समाय।''** अतः संवत् में अन्न की उपज श्रेष्ठ होगी। सुख सुभिक्षकारी योग है। ता. २२ अप्रैल कुंभे मंगल-चांदी, रुई में आगे काफी उतार-चढ़ाव संभव, अन्य प्रमुख वस्तुओं में तेजी कारक है। ता. २५ अप्रैल रविवारी पूनम स्वाती युक्त होने से तेजी को समर्थन देगी। श्री रामनवमी से अथवा यहां से मार्केट की चलती लाईनों में प्रायः जबरदस्त परिवर्तन होता है। अतः रुख देखकर चलती लाईनों का उपयोग करें।

बैशाख मास कृष्ण पक्ष २०६२ विक्रमी-मास में पांच सोमवार सुख समृद्धि का परिचायक है। तथा व्यापारिक वस्तुओं में मंदी की प्रधानता रहेगी। सुदी पक्ष में सभी प्रमुख वस्तुओं में अच्छी मंदी (जोरदार) संभव है। सावधानी से काम करें। ता. २५ अप्रैल, यदि आज सूर्य का उदय बादलों में हो तो संवत् श्रेष्ठ होगा। वर्षा अच्छी तथा अनाज की रिकार्ड पैदावार होगी। ता. २६ अप्रैल शुक्रोदय प्रायः सभी व्यापारिक वस्तुओं के भावों में प्रथम तेजी लाकर मंदी लायेगा। रेवती में बुध राहु का योग+गुरु की दृष्टि से सभी लाल रंग की वस्तुएं सोना, सर्व धातु, तिलहन, दलहन आदि में एक सप्ताह के अन्दर विशेष उतार-चढ़ाव होंगे। प्रथम रुख देखकर काम करें।

मई मास-इस मास में तेजी की प्रमुख ता. २, ३, ७, १२, १७, २४, २८, ३१ एवं मंदी की ता. ९, १९, २०, २१, २६ मई हैं। ता.१ मई शते भौमः दिन २० में खेती को हानि पहुंचाने वाले जीवों की उत्पत्ति विशेष होगी। सोना-चांदी, रुई के भावों में तेजी लायेगा। ता. ५ मई वृषे शुक्र पर मंगल+गुरु की दृष्टि होने से अच्छी घटाबढ़ी चलेगी। रुई, चांदी, घी, अनाजों के भाव विशेष प्रभावित होंगे। बैशाख मास में प्रायः आकाश में बादल छाए रहें तो समझना चाहिए कि आगे रुई में सवाया भाव होंगे। उत्तर-पश्चिमी, मध्य भारत में यदि ४ मई को आकाश प्रबल बादलों से ढक जाऐं तो दलहन, गुड़, खाण्ड, अनाजों में तुरन्त मंदी का प्रभाव शुरू हो जायेगा। ता. ८ मई रविवारी मावस भरणी युक्त होने से सन्ताप, अर्थनाश, दुख, दुर्भिक्ष (तेजी) कारी है।

बैशाख शुक्ल पक्षः-प्रायः सभी व्यापारिक वस्तुओं में पक्ष में अच्छी मंदी संभव है। सुदी एकम् का चन्द्रदर्शन सोमवारा एक मास में अनाजों में तेजी तथा किसी राज्य का मंत्रीमंडल में परिवर्तन अथवा भंग हो। यथा- **''जो शशि उगे सोम शनि एक अचम्भो जिय जोय। छत्र पड़े दिन तीस में अन्न जूं महंगो होय।''** ता. ११ मई अक्षय तृतीया को मृगे का संयोग मेथी, चना, तेलों, दलहन, किराना आदि में तेजी ला सकती है। ता. ११ से २५ मई तक उ.प्र., हरियाणा, पंजाब, म.प्र., राजस्थान आदि में बादल-बिजली गर्जना छींटें, बूंदा-बादी होना शुभ है। जिस इलाके में ऐसा हो, वहां वर्षाकाल में समयानुकूल वर्षा होती रहेगी। ता. १४ मई वृषे संक्रांति तेजी कारक है। सर्व फल, किराना, तिलहन, दलहन में तेजी का प्रभाव रखती है। यहां शुक्र का साथ होने से तथा मंगल+वक्री गुरु की पूर्ण दृष्टि से कोई भी एक तरफा लाइनें चलने की संभावना ज्यादा है। ता. १८ मई बुधास्त पूर्व मंदी कारक तथा शनि शीघ्र तथा गुरुदेव वक्री चल रहे हैं। यहां हर वस्तु में मंदी चल सकती है। **''वृहस्पति वक्री चले, शनि चले अतिचार। राज सुख धन धान्य युत, सुखी रहे संसार''** यहां व्यापारिक वस्तुओं में जोरदार मंदी भी संभव है। विशेष जानकारी के लिए सुपर स्पेशल चांस मंगाना न भूलें।

ज्येष्ठ मासः-मास में बड़े नेता व्यक्ति विशेष का अभाव संभव तथा भीषण गर्मी का प्रकोप, संक्रामक रोगों से जनता परेशान। इस मास में ग्रहों

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

का संयोग बड़ा विचित्र है। अतः बाजारों में विचित्र स्थिति पैदा हो सकती है। मास में कोई भी एकतरफा लाईनें विशेष रूप से चल सकती हैं। रुख देखकर काम करें। ता. २४ मई बदी एकम् मंगलवारी तेजी दुर्भिक्षकारी है। मास में अग्निकांड की घटनाओं में आश्चर्यजनक वृद्धि हो। **"जेठ बदी एकम् पड़े, रवि मंगल बुधवार। संक्रामक रोगों का रहे गर्म बाजार॥"** आज शनि देव कर्क राशि में प्रवेश करेंगे। ६ महीने के अन्दर महाराष्ट्र, बंगाल, पंजाब आदि में खूनी उपद्रव। रुई, कपास में जोरदार तेजी। पास में स्टॉक रहते हुए भी अकाल का भय बना रहेगा। ता. २५ मई बदी २ बुधवारी पक्ष में घी तेज करेगी। रोहिणी सूर्य (७ जून तक) जिन क्षेत्रों में जितना अधिक तपेगा उतना ही श्रेष्ठ रहेगा। तथा उन क्षेत्रों में उतनी ही श्रेष्ठ वर्षा होगी। ता. २७ मई राहु-केतु का नक्षत्र चरण परिवर्तन घटाबढ़ी कारक है। दो सप्ताह के अन्दर तेलों, तिलहनों में अच्छी मंदी कारक है। ता. २९ मई मिथुने शुक्र से एक मास के अन्दर हवायें तूफानी गति से चलेंगी। चावल विशेष तेज, तो रुई-गुड़ में अच्छी घटाबढ़ी। एवं घी में अच्छी मंदी संभव। गुवार, दालें भी मंदी होंगी।

जून मास:-इस मास में तेजी की प्रमुख ता. ३, ४, १०, ११, १४, १८, २४, २५, २८, २९ एवं मंदी की २, ५, ६, ७, १३, २०, २७ हैं। ता. २ जून बदी एकादशी रेवती का संयोग खण्ड वृष्टि की सूचना देता है। ता. ३ जून मीने मंगल राहु के साथ राशि योग बनायेगा। तेजी को सपोर्ट करेगा। **"मंगल राहु साथ में इक नखत इक रास। अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, दुख हो खेती का नाश॥"** ता. ४ जून आर्द्रा शुक्र दिन १० के अन्दर कच्छ, गुजरात, पूर्वी क्षेत्रों, उत्तर प्रदेश के क्षेत्रों में जोर का वायु चले। तूफानी वर्षा से बाढ़ की स्थिति। अनाजों में अचानक अच्छी मंदी। चांदी, रुई में भी जोरदार मंदी के झटके संभव। मार्गी गुरु एवं सोमवती मावस से सभी प्रमुख बाजारों में मंदी का वातावरण बनेगा। आगे पांच, छः मासों में प्रमुख वस्तुओं में अच्छी मंदी। किसी किसी वस्तु विशेष में आधे भाव बन सकते हैं। विशेष जानकारी के लिए सुपर स्पेशल चांस (सभी प्रमुख वस्तुओं के बनाऐ जाते हैं) मंगाकर लाभ उठाना चाहिए।

ज्येष्ठ सुदी पक्ष:-पक्ष में प्रथम तेजी का रुख होकर मंदी आयेगी। विशेषकर अनाजों में। पक्ष में प्रायः वस्तुओं में काफी उतार-चढ़ाव संभव। ता. ८ जून मिथुन राशि में बुध-शुक्र का योग चलेगा। दोनों का योग प्रायः बाजारों में मंदी के बिल पास करते हैं। परन्तु मंगल की दृष्टि मंदी में रुकावट पैदा कर सकती है। परन्तु यहां मंगल को गुरुदेव अपनी शांत दृष्टि से देख रहे हैं तो गुरुदेव पर शनि महाराज अपनी पैनी दृष्टि गड़ाए हुये हैं। अतः सावधानी से काम करें। कोई भी एकतरफा लाईन अथवा बाजारों में काफी उतार-चढ़ाव शीघ्र ही संभव होंगे ता. ११ जून आर्द्रा बुध एक सप्ताह के अन्दर दलहन में मंदी को सपोर्ट करेगा। भारी वर्षा कारक। विशेष पूर्वी भारत में। ता. १८ जून पुन. बुध एक सप्ताह के अन्दर चांदी, रुई, बिनौला में अच्छी मंदी अचानक आ सकती है। २२ जून बुधकारी पुनम अलसी में विशेष तेजी के झटके लावेगी। मूल युक्त होने से सुख, सुभिक्षकारी है। बाजारों में आगे मंदी का संचार होगा। यथा- **"पूर्णमासी जेठ की, मूल नक्षत्र शुभ योग। सुख-सम्पति आनन्दमय, सुखी रहे सब लोग॥"** ज्येष्ठ मास में कभी भी दक्षिण दिशा की तरफ बिजली चमके, गर्जना सुनाई दे तथा दक्षिणी पवन चले तथा आकाश मेघों से ढका रहे, ऐसा अच्छी तरह विचार करके अनाज, तिल, तेलों, तिलहन पदार्थों का स्टॉक (मंदी में) करके चार मास बेचने से अति उत्तम लाभ होगा।

आषाढ़ मास:-मास में पांच गुरुवार व्यापारिक दृष्टि से मंदी कारक हैं। परन्तु, पश्चिमी देशों (भारत से पश्चिम) में लड़ाई, दंगे, खून-खराबा आदि हो। जिससे जनता भयभीत रहेंगी। ता. २३ जून बदी एकम् पू.षा. नक्षत्र युक्त होने से पक्ष में अनाजों में जबरदस्त लाईन तेज रहेगी। कर्क में शुक्र-शनि का योग तेजी को समर्थन देगा। २४ जून बदी ३ श्रवण युक्त है। **"पड़वा दोयज तीज तक प्रथम पक्ष आषाढ़। श्रवण धनिष्ठा होय तो अन्न संग्रहों गाढ़॥"** अनाज स्टॉक करने की राय देता है। कर्क राशि में बुध का प्रवेश से २० दिन के अन्दर चीन आदि देशों में कोई बड़ा उपद्रव खड़ा हो सकता है। तथा सभी प्रमुख वस्तुओं, अनाजों में अच्छी तेजी संभव है। **"बुध शुक्र दोनों बसै, चन्दा के घर जाय। तो दारुण दुर्भिक्ष हो महंगा अन्न बिकाय॥"** रविवारी पंचमी भी अच्छी तेजी में सपोर्ट करेगी। २७ जून से मंगल+राहु, एक नक्षत्र+एक राशि में चलेंगे। अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, दुख तथा फसलें तबाह हो सकती हैं। यहां चलती लाईनों में जबरदस्त परिवर्तन हो सकता है। ता. ३० जून को जिस क्षेत्र इलाकों में घनघोर गर्जना हो वहां आगे वर्षा का अभाव रहेगा।

जुलाई मास:-इस मास में तेजी की प्रमुख ता. २, १२, १६, २६, २८ एवं मंदी की ४, ७, ८, ९, १४, २३, २४, ३० जुलाई हैं। ता. ३ जुलाई बदी १२ रोहिणी युक्त है, दुर्भिक्ष का संकेत मिलता है। यथा- **"दशमी कृष्णा साढ़ में रोहिणी करे सुभिक्ष। एकादशी मध्यम समय द्वादशी में दुर्भिक्ष॥"** ता. ४ जुलाई को पश्चिम में शनि का अस्त होगा। कर्क में अस्त होने से सोना-चांदी, प्याज, पारा आदि के बाजारों को विशेष प्रभावित करेगा तथा अपने अस्त काल में पशुओं में कोई अलग बिमारी का प्रकोप आदि होगा। यहां सोमवार को रोहिणी का संयोग आने वाली उपज को निश्चित रूप से श्रेष्ठ बनायेगा। ता. ६ जुलाई बुधवारी मावस घटाबढ़ी से मंदी कारक। यदि ५ एवं ६ जुलाई दोनों दिन बाजार मंदा रहे तो आगे और ५ दिन लगातार मंदी चलेगी। अश्लेषा में बुध शुक्र योग मंदी को बढ़ावा देंगे। तथा १० दिन के अन्दर जहरीले जानवर सर्प आदि का भय तो कहीं-कहीं विषाक्त (दूषित) इन्जेक्शनों के दुष्परिणाम। अखबार साक्षी होंगे।

आषाढ़ शुक्ल पक्ष:-पक्ष में सोना-चांदी, रुई में मंदी चलेगी। ता. ८ जुलाई सुदी २ शुक्रवारी- **"दोयज नोमी षाढ़ सुदी सोम गुरो भृगुवार। उत्तम वर्षा, अन्न का मंदा रहे बाजार॥"** वर्षा कारक अनाजों में मंदी कारक है। ९ जुलाई हम्ने गुरु- हल्दी मंदी करेगा। १६ जुलाई कर्क संक्रांति शनिवारी होने से निश्चय दुर्भिक्षकारी है। यथा- **"आषाढ़े कर्क संक्रांतों शनिवारो भवेद्यहि। तदा दुर्भिक्षमाडेश्यं धान्यस्यापि महर्घता॥"** इस संक्रांति काल में आंधी, समुद्री तूफान आदि का उपद्रव रहेगा। तथा अग्निकांड की घटनाओं में निश्चय वृद्धि होगी। प्रायः सभी व्यापारिक वस्तुओं के भाव बढ़ेंगे। किन्तु सोना-चांदी, तांबा-पीतल धातुओं में मंदी कारक तथा अच्छी मंदी संभव होगी। १७ जुलाई सिंहे शुक्र-सर्व लाल रंग की वस्तुएं तेज करेगा। तथा वर्षा में कमी करेगा। यथा- **"सिंह शुक्र जब होय भवानी, चाले पवन न वर्षे पानी।"** यहां कर्क राशि में सूर्य-बुध-शनि का योग दुर्भिक्षकारी। अनाज आदि में तेजी कारक। यथा- **"शनि बुध सूरज साथ जब, इक राशि इक सेज। जौ गेहूं चावल चना जुवार बाजरा तेज॥"** ता. १८ जुलाई मेषे मंगल-दलहन में मंदी कारक तो अन्य तेज। प्रथम रुख देखकर काम करें। ता. २१ जुलाई पुनम-वायु परीक्षा। पूरी जानकारी के लिए पुस्तक भविष्य फल प्रकाश २००५ ई. मंगाकर पढ़ें।

श्रावण मास कृष्ण पक्ष:-इस मास में पांच शुक्रवार सुख, सुभिक्षकारी हैं। इस मास में पंचकों में जहां भी वर्षा होगी (२३ से २७ जुलाई दोपहर तक) वहां आगे निश्चित रूप से उपज श्रेष्ठ होगी। खुला रहे तो सूखा। सावन में सिंह राशि पर शुक्र चल रहा है- **"सावण में हो सिंह पर कभी जु शुक्र सवार। वर्षा नाशै मूल से अथवा मेहं अपार॥"** २२ जुलाई श्रावण बदी एकम् प्रीति योग अनाज बेचने का राय देता है। **"सावन कृष्णा प्रतिपदा धृति अनाज को लेई। अन्य योग हो तो तुरन्त बेच अन्न को देई॥"** ता. २४ जुलाई बदी ३ का क्षय दुर्भिक्षकारी है। कभी-कभी ऐसी स्थिति बन जाती है। **"सावन पहले पाख में कोई तिथि घट जाए, काहु-काहु देस में लरिका (बच्चा) बेचे जाऐ।"** सायं को वक्री बुधास्त सभी प्रमुख वस्तुओं में तेजी की लाईन बनाऐगा। परन्तु बादल वर्षा हो तो मंदी करेगा। २८ जुलाई राहु-केतु का नक्षत्र चरण परिवर्तन-तिलहन पदार्थों में अच्छी मंदी तो रुई में जोरदार तेजी कारक है। ३१ जुलाई रविवारी एकादशी रोहिणी युक्त होने से सुख सुभिक्षकारी है। संवत् अच्छा होगा। **"सावन बदी एकादशी रोहिणी संवत् जान।"**

अगस्त मास:-इस मास में तेजी की प्रमुख ता. २, ६, १२, १३, २४, २५, ३० एवं मंदी की ता. १, ८, १७, १८, २२, २६ अगस्त हैं। ता. २ अगस्त बदी १३ मंगलवारी तेजी कारक है। अश्लेषा का सूर्य तेजी में सहायक है। तथा दिन १३ के अन्दर अधिक वर्षा हो तो निमोनिया, सन्निपात का प्रकोप होता है। कहा भी गया है- **"असलेखा में बरसना बुढ़ा बैद्या घर बधावणा।"** अर्थात् वर्षा अधिक होती है तो बूढ़े वैद्य डॉक्टर) के यहां बधाईयां होती हैं। क्योंकि मरीज ज्यादा आने से आमदनी अच्छी होती है। ता. ६ अगस्त सुदी एकम् शनिवारा चन्द्र दर्शन- दो से चार मास के अन्दर नर संहार, यान दुर्घटनाएं, विग्रह, जल प्रलय, अतिवृष्टि से फसलों को व्यापक नुकसान, घोर तेजी कारक दुर्भिक्षकारी है। अन्यथा आने वाला समय तो बता ही देगा। ता. ८ अगस्त सोमवारी तीज मंदी कारक। तीन दिन सभी बाजारों में मंदी का वातावरण रहेगा। पूर्व में शनि

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

का उदय ३ से ५ दिन के अन्दर रुई, पाट, बारदाना, सर्व धातु, गुड़, खाण्ड, तिलहन, दलहन, लहसुन आदि मूल पदार्थ के भाव तेज होंगे। १० अगस्त पुष्य बुध दिन ७ में भारी वर्षा कारक। धातुओं के भावों में काफी उतार-चढ़ाव होंगे। रुख देखते हुए काम करें। ११ अगस्त कन्या शुक्र तीन सप्ताह के अन्दर प्राकृतिक कारणों से फसलों में व्यापक नुकसान की आशंका, चावल तेज। अन्य सभी में मंदी कारक। यहां गुरु के साथ राशि योग दुर्भिक्षकारी है। और तेजी कारक भी। तथा अतिवृष्टि या अनावृष्टि से हानि होगी। यथा- **''एक जगह गुरु शुक्र हो बने युद्ध आसार। अनावृष्टि, अतिवृष्टि से दुख पावे संसार॥''** ता. १३ अगस्त बुध का उदय अवर्षण, अन्न में तेजी तथा भय पैदा करता है। यथा- **''पौष माघ बैशाख या सावन या आषाढ़। भयकारी बुध का उदय, अस्त होय सुख बाढ़॥''** यहां जो वस्तुएं तेज हो बेचना उचित तथा मंदे स्तर पर हो खरीदें। ता. १९ अगस्त शुक्रवारी पूनम सुदी १४ का क्षय तेजी कारक है। तथा आगे कार्तिक मास में किसी राज्य के संत्रीमंडल में परिवर्तन अथवा भंग होगा। यथा- **''शुक्ल पक्ष सावन कभी, कोई तिथि का नाश। छत्र भंग का योग है, आगे कार्तिक मास॥''** स.टा. १३।१९, बजे तक भद्रा है। उपरांत रक्षा बंधन शुभ होगा। पूनम को श्रवण नक्षत्र उत्तरी-पश्चिमी, मध्य भारत सहित अनेक स्थानों में श्रेष्ठ उपज की सूचना देता है।

भाद्रपद मास-इस मास में ५ शनि-रवि दुर्भिक्षकारी हैं। अतिवृष्टि या अनावृष्टि से फसलों को नुकसान संभव। तथा अनाजों में अच्छी तेजी का संकेत मिलता है। **''महामंगल ज्येष्ठ रवि, भादो शनि युत हो। तात कहे रे बालका न: में एक का दोय॥''** सुदी पक्ष में मंगल शुक्र का समसप्तक योग घोर वर्षा कारक है। यहां पक्ष में हिन्द व्यापी अच्छी वर्षा हो जाती है तो आगे व्यापारिक वस्तुओं में जोरदार मंदी भी चल सकती है। रुख देखें। ता. २० अगस्त बदी एकम् शतभिषा युक्त होने से पक्ष में अनाजों में तेजी चल सकती है। **''शतभिषा तीनों पूर्वा तथा रोहिणी हस्त। किसी पक्ष की एकम् को, हो तो महंगा धान्य समस्त॥''** ता. २५ अगस्त चित्रा गुरु-चांदी, रुई में मंदी कारक तथा विचित्र वर्षा होगी एवं आश्चर्य चकित कर देने वाली खेती हो। २७ अगस्त बदी ८ शनिवार रोहिणी युक्त है। **''रोहिणी युत जन्माष्टमी, शनि रवि वा भृगुवार। जौ गेहूं अरु बाजरा, महंगा मटर गुंवार॥ महंगा मटर गुंवार सौंफ जीरा किरयाणा। सोना सीसा आदि धातु सब तेज बखाना॥ कस्तूरी, तिल, तेल, हींग, गुड़, संग्रह कर लो। तीन मास पश्चात् नफा ले घर में धर लो।''**

सितम्बर मास:- इस मास में तेजी की प्रमुख ता. ६, १०, १७, २७, २८, २९ एवं मंदी की प्रमुख ता. १२, २३, २६ हैं। ता. ३ सितम्बर शनिवारी मावस तेलों में तेजी कारक है। यथा-**''घी महंगा रविवार हो, भादव मावस मेल। धान्य तेज, मंगल बुध शनि हो महंगा तेल॥ उत्तम उपजे शुक्र युत किन्तु चोर उत्पात। शनिवारी दुर्भिक्ष दुख, पिता-पुत्र विलमात॥''** के अनुसार घोर दुर्भिक्षकारी है। चांदी शेयर्स, गुड़, खाण्ड, रस-पदार्थों के भाव बढ़ेंगे। ता. ६ सितम्बर बुधास्त पूर्व सोना-चांदी में घटाबढ़ी से तेजी। मंदी का तूफान। गुंवार, काली मिर्च, दलहन में कभी भी अच्छी तेजी ला सकती है। अथवा पिछली चलती लाईन में जोरदार परिवर्तन। यहां मंगल+शुक्र को समसप्तक योग अच्छी वर्षा का संकेत देती है। यथा- **''सम सप्तक शनि जीव होए या मंगल भृगुनाथ। रखते हैं बरसात में, वर्षा अपने साथ॥''** सुदी ८ चित्रा संयोगी भी हिन्द व्यापी वर्षा का समर्थन करती है। तथा काली मिर्च में आगे जोरदार मंदी ला सकती है। ता. १२ सितम्बर स्वाती शुक्र- दिन १० में मारवाड़ के क्षेत्रों में विशेष वर्षा योग तथा व्यापारिक वस्तुओं में अच्छा मंदा लायेगा। तो गुड़, खाण्ड में अच्छी तेजी। ता. १६ सितम्बर कन्या संक्रांति लाल रंग की वस्तुएं तेज करेगी। इस संक्रांति काल में (एक मास) बंगाल के क्षेत्रों में बहुत उपद्रव होंगे। तूफानी हवायें चलेंगी तथा सोना, चांदी, हल्दी, गुड़ तेज। ता. १८ सितम्बर रविवारी पूनम रुई में आगे अच्छी तेजी लायेगी। पू.भा युक्त होने से उत्तरी-पश्चिमी मध्य हिन्द में जहां बादल बूंदा-बांदी वर्षा होगी तो आगे अच्छी मंदी के योग बन जायेंगे। शकुन-भादव सुदी २ से छट जक उपरोक्त क्षेत्रों में जहां भी सूर्य चन्द बादलों में रहें वहां पैदावार श्रेष्ठ तथा तुरन्त ही अच्छी मंदी किन्तु उपरोक्त दिवसों में आकाश साफ खुला रहे तो वहां एकदम घोर तेजी होगी।

आसोज मास:-इस मास में दो ग्रहण हैं। मावस को सूर्य ग्रहण एवं पूनम को चन्द्रग्रहण हो रहा है। सुदी पक्ष में शनि अंगारक योग भी विचित्र चाल देगा। विशेष घटाबढ़ी अथवा कोई भी एक तरफा लाईन मास में चल सकती है। रुख अवश्य देखकर काम करें। विशेष जानकारी के लिए सुपर स्पेशल चांस मंगाना न भूलें। ता. २० सितम्बर आसोज बदी ३ मंगलवारी-मास में अग्निकांड की घटनाओं से जनता भयभीत रहेगी। कोई बड़ा हादसा भी होना संभव है। तेजी को समर्थन मिले- **''तीज बदी आसोज में मंगल या शनिवार। अग्निकांड भयभीत जग महंगा चले बाजार॥''** ता. २२ सितम्बर हस्ते बुध एक सप्ताह के अन्दर मालिक एवं मजदूर वर्ग में संघर्ष करा देगा। रुई, तिलहन, अनाज, दालें, काली मिर्च में मंदी कारक है। ता. २३ सितम्बर विशाखा शुक्र दिन १० के अन्दर सभी-नियमी सटोरियों पर घोर संकट, धातुओं तिलहन में मंदी कारक है। ता. २८ सितम्बर तुले गुरु- घी, तेल, मंदा तो मजीठ, नारियल तेज। राजस्थान से लगती सीमाओं पर घुस-पैठ। गुड़, खाण्ड का स्टॉक आवश्य भाद्रपद में लाभ देगा। राशि के अन्त में दुर्भिक्ष की स्थिति पैदा करेगा।

अक्टूबर मास:-इस मास में तेजी की प्रमुख ता. १, ८, १७, २५, २९, ३१ एवं मंदी की ता. ३, ६, १०, १४, १५, २०, २२, २४ हैं। ता. १ अक्टूबर बदी १३ शनिवारी- **''आश्विन तेरस शनि दिना सुर नखत पर सूर। अन्न हीन भूमि रहे मंदी समझो दूर॥''** यह योग बाजारों का रुख तेज करेगा। ता. २ अक्टूबर मंगल वक्री किराना आदि सभी प्रमुख वस्तुओं में तेजी लायेगा। **''जिस राशि पर भ्रमण भौम का जब हो उसमें निश्चय वक्र। वक्री होने पर किरयाने में चलता तेजी का चक्र।''** जवान मोतों की अधिकता रक्त पित्त संबंधी बिमारियां बढ़ें। व्यापार की सभी वस्तुओं में खतरनाक चाल देगा। परन्तु ३ अक्टूबर सोमवती मावस प्रथम बाजारों को मंदा करेगा। परन्तु हस्त नक्षत्र का संयोग नेष्ट फलकारी है। **''सोमवती मावस पड़े कभी जु आश्विन मास। अन्न खाण्ड गुड़ तेल में मंदी का आभाष॥''** आज खण्डग्रास सूर्य ग्रहण होगा।

आसोज सुदी पक्ष:-सुदी एकम् मंगलवारी शनि अंगारक योग से पक्ष में या एक मास में महाकष्ट कारक, नेताओं का पतन, कारखानों में विस्फोट, अग्निकांड, पश्चिमी हिन्द में युद्धादि कांड, नरसंहार, प्रजा में विग्रहादि से त्राही-त्राही मचेगी। सभी व्यापारिक वस्तुओं में कोई भी एकतरफा खतरनाक चाल। तुला राशि बुध गुरु योग वर्षा बन्द करेगा। यथा- **''जब-जब ही बुध बृहस्पति मिल बैठे इक गेह। तब-तब ही संसार में बरसै नाहीं मेह॥''** ५ अक्टूबर अनुराधा बुध सफेद वस्तुएं मंदी करेगा। गुरु भी अस्त होंगे। सभी प्रमुख वस्तुओं में मंदी कारक। परन्तु शनि अंगारक योग साथ में होने से कोई भी एक तरफा लाईने। शेयर्स बाजार विशेष प्रभावित होंगे। ता. ९ अक्टूबर सुदी ६ रविवारी अनाजों में तेजी कारक। मूल युक्त होने से आज जो वस्तुएं मंदे स्तर पर हों, खरीदें। आगे विशेष तेजी। ता. १५ अक्टूबर सुदी १३ शनिवारी अनाजों में तेजी कारक है। १६ अक्टूबर पश्चिम में बुध का उदय घटाबढ़ी कारक। वर्षा अच्छी होने पर सभी वस्तुओं में जोरदार मंदी अन्यथा तेजी। सभी शेयरों में अच्छी मंदी तो गुंवार, हल्दी, काली मिर्च में अच्छी तेजी की संभावना। ता. १७ अक्टूबर तुला की संक्रांति सुख-सुभिक्षकारी तथा मंदी का प्रभाव रखती है। आज चन्द्र ग्रहण होगा। व्यापारियों में खूब चहल-पहल हो। ग्रहण से १० दिन पूर्व से सफेद वस्तुओं-रुई, चांदी आदि के बाजार विशेष प्रभावित होते है। विशेष जानकारी के लिए पुस्तक मंगाकर पढ़ें। आसोज मास में किसी भी दिन सायंकाल समय पर्वत के आकार के बादल दिखाई दें वहां २४ घंटे के अन्दर वर्षा होती है।

कार्तिक मास बदी पक्ष:-पक्ष में सभी खाद्य पदार्थ, घी, तेल, सब्जियां, आलू, प्याज आदि तेज रहेंगे। १८ अक्टूबर विशाखा बुध-रुई, काली मिर्च, धातुएं, तिलहन धातुएं, अनाज आदि में मंदी कारक है। यहां प्रथम बाजारों में मंदी आकर तेजी आयेगी। बदी २ बुधवारी पक्ष में घी, तेलों में तेजी लायेगी। ता. २१ अक्टूबर अश्लेशा शनि सुख सुभिक्ष मंदी कारक चांदी में अच्छी मंदी संभव तथा आगे सोना में अच्छी तेजी लायेगा। ता. २३ अक्टूबर रविवार को आर्द्रा होने से **''कार्तिक आर्द्रा वार रवि राजा युद्ध विरोध।''** प्रजा, नेताओं में आपसी विरोध बढ़ेगा। तथा किसी नेता का पतन भी संभव। बदी १० मघा नक्षत्र युक्त होने से घी, सुपारी, सभी अन्न में, लौंग, किराना में तेजी की लाईन। तथा आगे विशेष तेजी। ता. २० अक्टूबर बदी १३ रवि-अनाजों में आगे तेजी लायेगी। यथा- **''कार्तिक लागत त्रियोदशी जो आवे रविवार। तो जौ-गेहूं में चले, तेजी का बाजार॥''**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नवम्बर मास:-ता. १ नवम्बर मंगनवारी दीपावली आयु. योग+स्वाती नक्षत्र युक्त है- **"कातिक मावस के दिना स्वाती नखत विचार। गिरे कहीं भूकम्प से, पर्वत या मीनार॥"** भड्डली के अनुसार- **"कातिक मावस देखो जोशी, रवि शनि भौमवार जो होशी। स्वाती नक्षत्र अरु आयु. संयोगा, काल पड़े अरु नासै रोगा।" "स्वाती में दीवा बलै, विशाखा खेले गाय। घणा गयन्दा रण चढ़ै उपजी साख नमाय॥"** के अनुसार दीपावली दुर्भिक्षकारी है। फसलों को हानि, मार्केट की चलती लाईनों में जोरदार परिवर्तन, भयंकर रोगों को उत्पत्ति, भूकम्प आदि से जन-धन की आशंका रहेगी। यदि आज मौसम शांत रहे तो शुभ। सायं को वायु चलना जिससे दीपक बुझने लगे या वर्षा हो जाऐ तो व्यापारिक वस्तुओं में तेजी के लक्षण समझने चाहिऐ। ता. २ नवम्बर पूर्व में गुरु का उदय होगा। बाजारों में तेजी का वातावरण तथा घोर वर्षा कारक है। यदि घोर वर्षा होती है तो घोर तेजी चलेगा। परन्तु उचित वर्षा हो तो बाजारों में मंदी की आशंका रहेगी।

कातिक शुक्ल पक्ष:-प्रतिपदा का क्षय तेजी कारक है। सभी बाजार प्रभावित होंगे। ता. ६ नवम्बर सुदी ५ मूल युक्त होने से सर्व प्रमुख वस्तुओं में जोरदार तेजी का प्रभाव रखती है। मालवा तथा दक्षिण में उत्पात, पूर्व दिशा में विग्रह, तो गुजरात में खलबली मचेगी। ता. १३ नवम्बर स्वाती २ गुरु दिन १५ में सभी धातुओं, किराना सामान में मंदी लायेगा। ता. १४ नवम्बर वक्री बुध रस पदार्थ तेज करेगा। धातुओं, अनाज, दलहन में अच्छी तेजी संभव तो तिलहन कुछ मंदा। मंगलवारी पूनम (पूनम का क्षय) भरणी युक्त होने से सभी सावणी फसल के माल आगे तेज होंगे। शेयर्स, चांदी भी तेज होंगे। **"अश्वनी भरणी का बने पूनम से संयोग। गुवार जुवार मकई मटर महंगाई अरु रोग॥"** कातिक सुदी पक्ष तेरह दिन का पक्ष है। **"तेरह तिथियां पक्ष में होती हैं जिस मास। मनुजों हाथियों घोड़ों का उस वर्ष विनाश॥"** के अनुसार संवत् में कहीं युद्ध की आशंका, प्राकृतिक आपदाऐं, भूकम्प, बाढ़, भयंकर रोगों आदि से यह संवत् विनाशकारी भी सिद्ध हो सकता है। कार्तिक मास में किसी भी दिन कोई उत्पात हो, जैसे-घोर आंधी-तूफान, जोरदार बिजली कड़के तथा कई स्थानों पर गिरें, ओले गिरे आदि उत्पात हो तो शीघ्र ही सर्व अनाजों का स्टॉक करके चैत्र में बेचने से उत्तम लाभ होगा।

मार्गशीर्ष मास:-मास में गेहूं आदि अनाजों के व्यापार से लाभ नहीं होगा। मास में गुड़, खाण्ड, चीनी में अच्छी मंदी चलने की संभावना रहेगी। बदी पक्ष में मूल पदार्थों में अच्छी तेजी तो सुदी पक्ष में बुध एवं मंगल दोनों मार्गी होने से व्यापक घटाबढ़ी की आशंका रहेगी। ता. १६ नवम्बर बदी एकम् बुधवारी पक्ष में सभी खाद्य पदार्थ, सब्जियां आदि तेज रहेंगी। ता. २१ नवम्बर चौथ की वृद्धि होगी। **"मंगसिर पहले पाख में कोई तिथि बढ़ जाये। कहीं जगत में युद्ध का भारी बादल छाये॥"** ता. २२ नवम्बर शनि वक्री होंगे। यहां राहु समेत चार ग्रह वक्री चलेंगे। जब तीन चार ग्रह वक्री चलते हैं तो बाजारों को एकतरफा लाईन देते हैं। अत. यहां प्रथम रुख देखें। ता. २९ नवम्बर पूर्व में बुध का उदय पशुओं के चारे में जोरदार तेजी ला सकता है। तथा इसकी काफी कमी महसूस होगी। रुई तथा अन्य प्रमुख वस्तुएं भी तेज होंगी। **"मंगसिर में बुध का उदय अथवा भृगु का अस्त। तृण चारा कमती मिले, बेचो पशु समस्त॥"**

नवम्बर मास:- इस मास में तेजी की प्रमुख ता. ८, ९, १२, २२ एवं मंदी की प्रमुख ता. ३, ७, १०, १८, १९, २४, २८, ३० हैं।

दिसम्बर मास:-इस मास में तेजी की प्रमुख ता. ६, ९, १०, १९, २०, २३, २४, ३१ तथा मंदी की १, ७, ८, १५, २६, २७ प्रमुख हैं। ता. १ दिसम्बर गुरुवारी मावस मंदी मथा वर्षा कारक है। **"मावस्या गुरुवार या गुरु दिन मास नक्षत्र। ज्योतिष का सिद्धांत है, वर्षा हो सर्वत्र॥"** शकुन-**"सूरज बादल में उगै, मावस मंगसिर मास। अन्न उपज कमती रहे, महंगा चारा घास॥"** ता. २ दिसम्बर मकरे शुक्र एक मास के अन्दर प्राकृतिककारणों से फसलों को नुकसान, अनाजों, तिलहन आदि में तेजी कारक है। ता. ४ दिसम्बर बुध मार्गी-अरण्ड, बिनौला तेज करेगा। अन्य में प्रथम रुख देखकर काम करें। ता. ९ दिसम्बा अनुराधा बुध सुख-सुभिक्षकारी एक सप्ताह के अन्दर सभी प्रमुख वस्तुओं में मंदी लायेगा। गुण्डों के उत्पात शांत हों। ता. ११ दिसम्बर सुदी एकादशी रविवारी दुर्भिक्षकारी है। **"मंगसिर सुदी एकादशी रविवार का संग। वर्षा नासै प्रजा दुख, मंत्री मण्डल भंग॥"** ता.१५ दिसम्बर धनु संक्रांति ३० मुहूर्त्त गुरुवारी मंदी कारक है। सभी प्रमुख वस्तुओं, मूल पदार्थों सहित में मंदी कारक है। संक्रांति समय चन्द्रमा समसप्तक होने से सर्व धान्य, गुड़, रुई, घी का स्टॉक करके पाचवें या सातवें महीने में बेचने से उत्तम लाभ। ता. ३ से १२ दिसम्बर तक उत्तर-पश्चिमी मध्य भारत में जहां भी वर्षा होगी, वहां आगामी वर्षाकाल में श्रेष्ठ वर्षा होगी।

पौष मास:-मास में कृष्ण पक्ष में तिथि वृद्धि तथा शुक्ल पक्ष में तिथि क्षय से बाजारों में जनरल लाईन तेज रहेगी। **"कृष्ण पक्ष में तिथि बढ़ै, शुक्ल पक्ष घट जाऐ। सभी वस्तुऐं तेज हों, सस्ता पन हट जाऐ॥"** मास में शुक्र+शनि एवं मंगल+गुरु का अपोजिशन योग चलेगा। तथा शुक्र एवं शनि दोनों ग्रह वक्री चलेंगे। अत: बाजार काफी प्रभावित होंगे। काफी उतार-चढ़ाव संभव है। रुख देखते हुए काम करें। पौष में शुक्रास्त अति दुर्भिक्षकारी, प्रमुख नेताओं का पतन-अवसान तथा किसी देश का पतन भी हो सकता है। ता. २० दिसम्बर मंगलवारी पंचमी- **"मंगलवारी पंचमी पौष बदी बरसाय। उत्तम वर्षा उपज अति मंदा धान्य बिकाय।"** ता. २४ दिसम्बर शुक्रदेव वक्री होंगे। तेजी कारक। गुड़, खाण्ड में कोई एकतरफा लाईन निकलेगी। स्थूल रूप से चलती लाईनें तुरन्त जोर-शोर से बदल सकती हैं। गोंड, विदर्भ, कर्नाटक आदि में राजभय हो। ता. ३० दिसम्बर धनु बुध मूल पदार्थों में अच्छी तेजी ला सकता है। तथा अन्य प्रमुख वस्तुऐं भी तेज होंगी। ता. ३१ दिसम्बर

शनिवारी मावस- **"पौषी मावस के दिना भौम सूर शनिवार। भय उपजै महंगे बिके जुवार बाजरा गुवार॥"** सावणी फसल के माल तेज होंगे। प्रजा में किसी कारण से भय उत्पन्न होगा।

आवश्यक सूचना

नोट-संक्रांति लगने से एक दिन पहले किसी वस्तु का भाव संक्रांति के दिन से मंदा रहे तो आगे तेजी का रुख एक मास तक साधारण तौर पर रहता है। विपरीत से मंदी का रुख समझना। यह लेख बहुत ही संक्षेप में लिखा गया है। पूरा ब्योरा सिलसिले वार पूरे वर्ष का जानने के लिए हमारे द्वारा प्रकाशित प्रसिद्ध पुस्तक **'भविष्य फल प्रकाश सन् २००५ ई.'** का मंगाकर लाभ उठाएं। यह संवत् भारी उथल-पुथल वाला है। भारी लाभ देने वाले कई महत्वपूर्ण योग हैं। अत: व्यापार में उन्नति के लिए यह पुस्तक अवश्य मंगाकर पढ़ें, प्रकाशित हो चुकी है। ज्योतिष शास्त्र के आधार पर बाजार भावों की तेजी-मंदी के बारे में विश्लेषण एवं पूर्वानुमान से संबंधित यह पुस्तक गत् ५८ सालों से लगातार प्रकाशित की जा रही है। यह पुस्तक वर्ष भर की दैनिक तेजी-मंदी, मासिक विश्लेषण, माल, स्टॉक करने के उचित मौके, माल खरीदने बेचने की महत्वपूर्ण तारीखें (प्रत्येक मास की) अनाज, दलहन, किराना बाजार, तिलहन बाजार, सरसों, सोना, चांदी आदि सर्व धातुएं, शेयर्स, गुड़, खाण्ड, घी, रस पदार्थ, आलू, प्याज, लहसन, हल्दी, रुई, पाट, बारदाना आदि वस्तुओं के स्पेशल चांस (वर्ष भर की लाईनें) महत्वपूर्ण कट लाईनें लेख, चांस आदि इस एक ही पुस्तक में अलग-अलग चेप्टर देकर प्रकाशित की गई हैं। मूल्य १५०/-प्रति कापी तथा २५/- डाक व्यय अलग, कुल १७५/-होगा। रुपये मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर द्वारा ही भिजवाएं। समय से पूर्व मंगा लें। ताकि उचित अवसर पर स्टॉक आदि कर सकें। वी.पी.से नहीं भेजी जाएगी।

हमारी दूसरी पुस्तक **'भविष्य भारती'** अर्धकाण्ड संबंधी अद्भुत कविता पुस्तक (टीका सहित) जो कि हिन्दी के रूप में है। इस पुस्तक में ज्योतिष के योग (फार्मूले) आदि दिये गये हैं। उपयोगी पुस्तक है। मूल्य ६०/-, डाक व्यय १५/- अलग। पुस्तकें वी.पी. से मंगाने के लिए ५०/- का मनीआर्डर अग्रिम भेजने पर १०/- की वी.पी. से पुस्तक भेजी जाऐगी। यानि १५/-की बचत होगी। अपना पता साफ-साफ हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी भाषा में पिन कोड सहित लिखें। पत्र, मनीआर्डर केवल हमारे नये पते पर ही भेजें। स्पेशल चांसों के लिए संपर्क करें। एक वस्तु की एक वर्ष की फीस १५००/- होगी। अधिक जानकारी के लिए टेलीफोन नं. ०१२७४-२२३९४७ पर संपर्क करें। त्रैमासिक या अर्द्धवार्षिक स्पेशल चांस नहीं भेजे जाऐंगे। स्पेशल चांसों में सिर्फ महत्वपूर्ण तेजी-मंदी की लाईन ही दी जाऐगी। दिन-प्रतिदिन की तेजी-मंदी चाहने वाले स्पेशल चांस नहीं मंगाऐं। इसके लिए पुस्तक भविष्य फल प्रकाश २००५ का मंगाकर लाभ उठाना चाहिए।

पता-रामावतार गुप्ता 'व्यापार भूषण' राव उमराव सिंह मार्केट
आर्य समाज रोड, पोस्ट-रेवाड़ी-१२३४०१ (हरियाणा)
फोन-०१२७४-२२३९४७, मो. ०१२७४३१०५२७

-:इति शुभम्:-

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सामूहिक व्यापार भविष्य सम्वत् २०६२ विक्रम

लेखक-विश्वबन्धु शर्मा दैवज्ञ एम. कॉम., एल.एल.बी, आयुर्वेदरत्न, सुपुत्र श्री ओंकार प्रसाद दैवज्ञ
२१/२२ ब्रह्मनान, खारी कुआं के पास, पो० हापुड़ (उ.प्र.)-२४५१०१
फोन नं. ०१२२-२३१२२३८, मोबाईल नं.-०९८३७२७९८२३, ०९४१२५७३८९५

सम्वत् २०६२ विक्रमी में वर्ष के राजा-शनि देव हैं। मंत्री -बुध देव हैं। दोनों आपस में मित्र हैं। शनि व बुध दोनों स्त्री प्रभुत्व वाले ग्रह हैं। क्योंकि राजा शनि स्त्री ग्रह है बुध मंत्री होने से स्त्री स्वभाव धारण कर लेंगे। अत: राजनीतिक पटल पर स्त्रियों का वर्चस्व दृष्टि गोचर होगा। राजा पाप ग्रह होने से प्रजा महंगाई की मार से ग्रसित होगी। विदेशी व्यापार का प्रभुत्व बढ़ने से देश में रोजगार के संसाधन नष्ट होंगे। इस वर्ष सस्येश शनि हैं। धान्येश-गुरु, मेघेश-भौम, रसेश-चन्द्र, नीरशेस-शनि, फलेश-भौम, धनेश-शुक्र, दुर्गेश-भौम, इस प्रकार दस अधिकारियों में छह अधिकारों पर पाप व क्रूर ग्रहों का प्रभुत्व रहेगा और चार पर सौम्य ग्रहों का प्रभुत्व रहेगा अत: विदेशी प्रभाव बढ़ेगा और कु-संस्कारों से युवा पीढ़ी ग्रसित होगी। अब नीचे महीने वार व्यापारिक भविष्य दिया जा रहा है।

चैत्र शुक्ला-इस माह में चैत्र कृष्ण पक्ष-शुक्ल पक्ष में पांच शनिवार व पांच ही रविवार हैं। पांच शनिवार व पांच ही रविवार व्यापारिक वस्तुओं में तेजी के सूचक हैं। चैत्र शुदि द्वितीया को मेषे शुक्र रात्रि में होंगे जो लाल रंग की वस्तुऐं सोना, पीतल, तांबा, गुड़, खांड, लालमिर्च, अरहर, ममूर, केसर के भावों में मन्दी कारक होंगे। आगामी छह दिनों में ही जोरदार मन्दी करेंगे। जिस वस्तु में तारीख ११ अप्रैल को तारीख ९ अप्रैल के बने ऊँचे भाव से मार्केट बढ़ेगा तब तेजी ही चलेगी। काले रंग की वस्तुऐं जोरदार तेजी पकड़ेंगी। आगे तारीख १३ अप्रैल की रात्रि में मेष संक्रांति का प्रभाव होने तथा मेष संक्रांति बुधवारी होने से व्यापारी वर्ग का विशेष हित साधन होगा। तारीख १४ को दोपहर को बुध देव मार्गी होंगे तब से वायदा मार्केटों में २४ घन्टे में ही विशेष चाल चलेगी। यहां पर दुतर्फा गली लगाना गुड़, हल्दी, चांदी, सोना, सरसों, सोयाबीन में लाभ प्रद विशेष होगा। तारीख १६ अप्रैल को सप्तमी तिथि वृद्धि के प्रभाव से जोरदार नरमी का प्रभाव हाजिर वस्तुओं पर पड़ेगा। मेषी संक्रांति तिलहन बाना में उछाले की तेजी कारक होगी। चैत्र शुदि त्रयोदशी को रात्रि में कुम्भ राशि में मंगल के प्रभाव से धान्यों में गेहूं, जौ, चना, मटर में विशेष मन्दी कारक होगा। श्रृंगार प्रसाधन व खुशबूदार वस्तुएं विशेष तेजी पर जाऐंगी। इस चैत्र शुदि पक्ष में तारीख ११ व १३ अप्रैल की प्रात: व १६ अप्रैल १२ बजे लगभग चना, सरसों, गुड़, चांदी, ग्वार, सोयाबीन तेल में दुतर्फा गली लगाना।

बैशाख- इस माह में पांच सोमवार इस फसल में पैदा होने वाली वस्तुओं में विशेष मन्दी का ट्रेन्ड बनेगा। इस माह में प्रथम पक्ष में पंचमी तिथि का क्षय होने से वायदा व हाजिर दोनों ही मार्केटों में यह मन्दी चलेगी। बैशाख बदि प्रतिपदा को शुक्रोदय कपूर, चावल, चांदी, गुड़, रुई के भावों में तेजी करेगा। गेहूं, जौ, चना, मटर, जई का स्टाक पुराना कतई नहीं रखना चाहिए। तारीख २६ मई से चांदी, गुड़, चावल, रुई, खल बिनौला की चालू चाल लम्बी खिंच जाएगी। इन वस्तुओं के वायदा मार्केटों में दुतर्फा गली लाभ देगी। आगे बैशाख बदि द्वादशी गुरुवार को वृष शुक्र के प्रभाव से सुभिक्ष होगा जिसके प्रभाव से ग्वार, गेहूं, चांदी, कपूर, वस्त्र, रुई, सूत के साथ गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, मोंठ के भावों में नरमी चलती रहेगी। बैशाख शुक्ल पक्ष में सोमवारी चन्द्र दर्शन शुदि प्रतिपदा तारीख ९ मई को होना व्यापारिक खाद्यान्नों में मन्दी चलेगी। वृष संक्रांति शुदि षष्ठी को होने से तथा शनिवारी के प्रभाव से देशी घी, रुई, लोहा, इस्पात, कालीमिर्च, लौंग के भावों में तेजी भड़केगी। लेकिन सरसों, अलसी, अरन्डी, सोयाबीन, सूरजमुखी आदि तिलहनों में मन्दी का रुख बनेगा। गेहूं, जौ, चना में मंदी जारी रहेगी। जो तारीख २३ मई तक चलेगी। खाद्यान्नों का स्टाक इसी माह के अन्त तक करना लाभ प्रद होगा। इस माह में तारीख १४ मई को वृष संक्रांति के प्रभाव से वायदा वस्तुओं में इकसार लाईन बनेगी जो लम्बी भी चल सकती है। इस तमाम माह में गुरुदेव वक्री चलते रहेंगे। जो पीले रंग की वस्तुओं में विशेष नरमी कारक होंगे। हल्दी, सोना, अरहर, चना दाल, बेसन, मक्का में नरमी करेंगे। इस माह में १० मई को ९ मई के बने ऊंचे या नीचे भाव विशेष रूप से वायदा वस्तुओं के जिस ओर कटें तब उसी ओर व्यापार करना लाभ देगा।

ज्येष्ठ- इस माह में ज्येष्ठ बदि द्वादशी शुक्रवार तक सुपीरियर लाईन चलकर बाद इन्फीरियर लाईन प्रारंभ हो जाएगी। इस लाईन के प्रभाव से तिलहन मार्केटों पर प्रारंभ में मन्दी, बाद तेजी का ट्रेन्ड बन जाएगा। विशेष रूप से यह पलट ग्वार, सोयाबीन, उरद, सरसों, गेहूं, सोना, चांदी, गुड़, मेंथा के वायदा मार्केटों पर विशेष होगी। अगर जिस वस्तु में ज्येष्ठ बदि द्वादशी तक मन्दी चली आ रही हो तब उसी में तेजी का श्री गणेश हो जाएगा। यहां पर बदि द्वादशी को त्रयोदशी के व सप्ताह के दुतर्फा फाटके लगाना लाभप्रद होगा। इस माह में प्रारंभ में बदि एकम से बदि सप्तमी तक पिछले माह की चाल ही चलने की धारणा है। यहां पर बुधास्त नरमी कारक हैं। यह नरमी भी स्टाकिस्ट को लाभ देगी। बाद अगले ही दिन बुध देव के वृष राशि में प्रवेश के फलस्वरूप तारीख २ जून तक मन्दी ही चलेगी। तथापि यहां पर यह ध्यान देना होगा कि तारीख २५ मई से २६ में अगर तिल, तेल, सूत, कपास, रुई, चावल, गेहूं, जौ, चना, मटर आदि धान्यों के भावों में तेजी रह जाए तब तेजी ही तारीख २ जून तक चलेगी। मन्दी रहने पर स्टाक अवश्य करें। इसके बाद तारीख २ जून की रात्रि में मार्गी गुरु का प्रभाव तेजी को बल देगा। यह तेजी खाद्यान्नों में विशेष होगी। जिन सट्टे वायदों में अभी तक मन्दी चली आ रही हो उनमें चाल पलटेगी। खासतौर पर सोना, हल्दी, पीपरमेंट, तेल में चाल चलेगी किन्तु जिन वस्तुओं में ३ जून से ३ दिन मार्केट मन्दा रहेगा उनमें मन्दी आगे नौ दिन में चलेगी। तारीख ४ जून की प्रात: मीने भौम के प्रभाव से सोना, चांदी, रुई, व काष्ठ (लकड़ी) से बनी वस्तुऐं विशेष तेजी पर जाएंगी। गुरु का सप्तम दृष्टि योग मन्दी कारक भी है। अत: मंगल के अधिकार की जिन वस्तुओं में पहले से तेजी चली आ रही हो और बाद मन्दी चलने लगे उनमें रुख देखकर बिकवाली करना चाहिए। इसके बाद शुक्ल पक्ष में शुदि दोज को मिथुने बुध, सप्तमी को बुधास्त विशेष तेजी-मन्दी कारक योग है। तारीख ८ जून को बुध मिथुन राशि में मंगल-राहू से चतुर्दश योग बनाएगा जो कि बुध के अधिकार की हरे रंग की वस्तुओं में व सफेद रंग की वस्तुओं में विशेष तेजी एक सप्ताह की या पन्द्रह दिन की बनाएगा। मेंथा आयल व अन्य मेंथा उत्पादों में व मूंगी, ज्वार, मटर, अरहर, अन्न, वनस्पति पदार्थ, तैलीय बीज, तीखी वस्तुएं, सुगन्धित पदार्थ, मणि आदि वस्तुओं में विशेष तेजी कारका होगा। यहां पर उरद, गेहूं, ज्वार, चांदी, सरसों, सोयाबीन तेल के एन.सी.डी.ई.एक्स. के वायदा मार्केटों में भी तूफानी चाल चलने की धारणा है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ज्येष्ठ शुदि सप्तमी को बुधास्त होने से व रात्रि में मिथुन संक्रांति के प्रभाव से घी, उरद, मूगं, चावल, गेहूं, जौ, चना, अरहर, मटर, मोंठ, सोना, चांदी में तेजी की चाल एक माह में चलेगी।

आषाढ़-इस माह में पांच गुरुवार हैं तथा प्रतिपदा तिथि का क्षय माह के शुरू होते ही होने से मन्दी का प्रभुत्व मार्केट पर रहने की धारणा है। इस माह में तारीख २३ जून को कर्क शुक्र तथा पुष्य नक्षत्र पर क्रमशः तारीख २४ जून को शनि, तारीख २५ को शुक्र व तारीख २६ को बुधदेव प्रवेश करेंगे जो वायदा सट्टा मार्केटों में भारी उथल-पुथल करेंगे। यहां पर ग्वार, कपास, खल बिनौला, उरद, गेहूं, चांदी, सोयाबीन तेल, पीपरमेंट के वायदा बाजारों में विशेष चाल चलेगी। रुई, चांदी के वायदा मार्केटों में तारीख २३ जून को तारीख २२ व २१ जून में बने हाईएस्ट भाव से अगर भाव बढ़ें तब तेजी लाईन बनेगी जो बाद तारीख २८ जून तक बदस्तूर जारी रहेगी। ग्वार वायदा मार्केट में तारीख ५ जुलाई को बने ऊंचे भाव से तारीख ६ को भाव बढ़ जाएं तब अवश्य डबल खरीद करना और तीन दिन में ही मोटा लाभ उठा लेना किन्तु अगर यहां पर लोएस्ट भाव टूटें तब मन्दी का व्यापार करना चाहिए। आषाढ़ बदि चतुर्दशी को शनि अस्त के प्रभाव से सोना, चांदी, रुई, पाट, बरदाना, जूट, हैसियन के भावों में जोरदार तेजी का चांस सम्पन्न होगा जो एक सप्ताह में ही जोरदार चलने की धारणा है। बाद शुक्ल पक्ष में षष्ठी तिथि की वृद्धि होकर बाद एकादशी तिथि के क्षय के प्रभाव से जोरदार मन्दी की चाल खाद्यान्नों में चलेगी। हल्दी, सोना, मूंग, गेहूं, जौ, जई, काजू, बादाम, पिश्ता में मन्दी होगी। काली मिर्च के भाव तेजी पकड़ेंगे। शुदि नवमी को कर्क संक्रांति के प्रभाव से सूर्य-बुध-शनि के एक ही घर में स्थित होने से तिलहन, लौह, अयस्क, गंधक, सोना, तांबा, मणि, मोती, रेशम, कटु वस्तुएं, धान्य, सरसों, रस पदार्थ, सुगंधित पदार्थों में तथा चना, मटर, कंगुनी, तिल, उरद, ऊन, चमड़े की वस्तु, नील, काला नमक, व काले रंग की वस्तुएं विशेष तेजी पकड़ेंगी जो एक माह में ही बन लेगी। इस माह में मंगल देव तारीख १३ जुलाई से वर्गोत्तम में चलेंगे और प्रथम तो तारीख १६ जुलाई तक मीन राशि के वर्गोत्तम में बाद तारीख १७ जुलाई से २६ जुलाई तक मेष राशि के वर्गोत्तम में चलते रहेंगे। यहां पर लाल रंग की वस्तुओं में विशेष उथल-पुथल व तेजी बनेगी। इस माह में आषाढ़ शुदि पूर्णिमा को गुरुवार होने से पीले रंग की वस्तुएं नरम होंगी।

श्रावण- श्रावण माह में पांच शुक्रवार होने से विशेष रूप से रुई, कपास, चांदी, चीनी, देशी घी, चावल, मोती, ग्वार के भावों में भारी उथल-पुथल होगी। आषाढ़ शुदि पूर्णिमा को बुध देव बक्री हो चुके हैं। यह यह तारीख २९ जुलाई को अस्त हो जाएंगे और तारीख २९ जुलाई से १३ अगस्त तक तूफानी तेजी कारक होंगे। बहुधा वायदा मार्केट अच्छी तेजी पकड़ेंगे। तारीख २९ जुलाई की ही प्रातः शुक्र देव पूर्वाफाल्गुनी में प्रवेश करेंगे जो कि सफेद रंग की वस्तुओं में रुई, चावल, कपास, चीनी में मन्दी करेंगे। जिस वस्तु में तारीख ३० जुलाई का २९ के बने नीचे भाव से मार्केट टूटेंगे उनमें विशेष मन्दी पन्द्रह दिन में चलेगी। आगे तारीख ३ अगस्त की शाम को आश्लेषा में सूर्य देव के रथ के प्रवेश करने से सोना-चांदी में उछाले की तेजी पन्द्रह दिन में चलेगी। साथ ही रुई, बिनौला, गुड़, खांड, ज्वार, बाजरा, सुपारी, नारियल, सौंठ, गुग्गल, सोना, चांदी में तेजी आकर मन्दी की ओर रुख बनेगा। **नोट**-अगर तारीख ३ अगस्त को २ के बने ऊंचे भाव से मार्केट बढ़ेंगे तब तेजी ही बनेगी। भाद्रपद शुक्ल पक्ष में बदि पंचमी को रात्रि में शनिदेव के उदय के प्रभाव से धान्य, रस पदार्थ, चावल, जौ, जई, धान, गुड़, खांड, शक्कर, चीनी, रुई, पाट, बारदाना में तेजी की चाल चलेगी। यहां पर एन.सी.डी.ई. एक्स के वायदा मार्केटों में विशेष रूप से ग्वार, चना, उरद, सोयाबीन सीड व तेल के बाजारों में विशेष मन्दी की चाल चलेगी। आगे तारीख १३ अगस्त को बुधोदय के प्रभाव से घटाबढ़ी जोरदार होगी। तारीख १६ अगस्त को शाम को सिंह संक्रांति धान्यों में मन्दी कारक है तथा सोना, चांदी, चना, गुड़, सौंठ, अदरक, केसर के भावों में तेजी होगी। अगर तारीख १० अगस्त से १६ अगस्त के बीच बने लोएस्ट भाव से मार्केट टूटें तो मन्दी की धारणा बनाकर व्यापार करना। इस वस्तुओं के वायदा मार्केटों में भी तूफानी चाल चलने की धारणा है। तारीख २२, २९ जुलाई, व तारीख १३ अगस्त को दुतर्फा गली लगाना।

भाद्रपद- इस माह में पांच खनिवार व ५ ही शनिवार हैं जो कि व्यापारिक वस्तुओं में तेजी की उथल-पुथल करेंगे। शनि बुध व मंगल का चतुर्दश योग काले रंग की वस्तु लोहा, उरद, सीमेंट, बड़ी इलायची, कालीमिर्च के साथ ग्वार के भावों में अच्छी तेजी बनेगी। **नोट**-अगर तारीख २२ अगस्त को तारीख २० के बने नीचे भाव से मार्किट टूटें तब ग्वार, चना, गेहूं, उरद, कालीमिर्च, सोयाबीन, चांदी, वायदा मार्केटों में बेचान करना, न टूटें तब बेचान मत करना। भादों बदि त्रयोदशी को सिंह राशि में बुध देव के प्रवेश के प्रभाव से चांदी, रुई, कपास, खल, बिनौला, सोना, ऊनी व सुती वस्त्रों के भावों में तेजी होगी। धान्यों के भाव पड़े रहेंगे। गुड़, शक्कर, चीनी में मंदी का प्रभाव बनेगा। यहां पर बुधास्त मंदी कारक होगा। अतः जिन वस्तुओं में तेजी चली आ रही हो उनमें खरीद न करके डबल बेचान करना लाभ देगा। लम्बी लाईन एक माह की चल सकती है। भादों शुदि तीन मंगलवार को तुलायाम् शुक्र के प्रभाव से तुला राशि के अन्तर्गत आने वाली वस्तुएं विशेष चाल पकड़ेंगी। जौ, गेहूं, चना, मटर, नारियल, रुई, रेशम, चावल, सरसों के साथ रुई, कपास, खल बिनौला के भावों में तेजी का ट्रेन्ड बनेगा। **नोट**-अगर उपरोक्त वस्तुओं में तारीख ७ सितम्बर से ३ दिन में मन्दी रह जावे तब मन्दी ही चलेगी। वायदा मार्केटों में गुड़, सरसों, ग्वार, सोयाबीन तेल, अरन्डी, गेहूं, चना, खल बिनौला में जोरदार तेजी होगी। तथापि अगर किसी वस्तु में तारीख ७ सितम्बर को ६ के बने नीचे भाव टूटेंगे तब डबल बेचान करना लाभ देगा।

आश्विन-इस माह में ५ सोमवार का होना भयंकर मन्दी कारक। चना, ग्वार, गुड़, खांड, चीनी, उरद, मूंग, अरहर, मोंठ के भाव लगातार टूटेंगे। आश्विन बदि प्रतिपदा का क्षय प्रारंभ में विशेष मन्दी कारक होगा। लेकिन पक्ष के मध्य के बाद एकादशी तिथि का क्षय होने से भावों में गिरावट रुक जाएगी। वायदा बाजारों में विशेष उथल-पुथल होगी। तारीख २१ सितम्बर की चालू चाल तारीख २३ सितम्बर तक चलेगी। बाद तारीख २४ सितम्बर से चालू चाल विशेष रूप से शेयरों में, पीपरमेंट में, व वायदा मार्केटों में तारीख २८ सितम्बर तक चलेगी। यहां पर ग्वार, चना, उरद, गेहूं, सोया खली व सोया सीड में अच्छी चाल चलेगी। अगर तारीख २४ सितम्बर को २३ के बने नीचे भाव से मार्केट टूटें तब बेचकर तारीख २८ सितम्बर तक चलेगी। तारीख २ अक्टूबर को शाम को वृश्चिक राशि में शुक्र देव के संचरण के प्रभाव से तारीख ४ अक्टूबर तक जोरदार मन्दी गेहूं, जौ, चना, मटर, उरद, मूंग, मोंठ, बाजरा, ज्वार में होगी। रुई, अलसी, चांदी, सोना, खल बिनौल के भावों में तेजी होगी। बाद तारीख ५ अक्टूबर से तुला में बुध के प्रभाव से गुड़, खांड, सोना के भावों में तेजी का प्रभाव बनने की धारणा है। यह तेजी तारीख १२ अक्टूबर तक चलेगी। बीच में तारीख ७ अक्टूबर को बने ऊंचे व नीचे भाव महत्वपूर्ण होंगे। मध्य में तारीख ८ अक्टूबर की रात्रि में

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गुरुदेव के अस्त होने से अरहर, हल्दी, ग्वार, सोया तेल व पीले रंग की वस्तु मात्र, सोना में जोरदार मन्दी होगी। अतः तफा चाल ग्रह चाल से आने पर तारीख १० अक्टूबर को ८ के बने भावों की क्रासिंग पर भी ध्यान रखें। आश्विन माह में विशेष धमाकेदार चांस है कि तारीख १२ अक्टूबर को शाम को वक्री भौम के संचरण के प्रभाव से वायदा मार्केटों में आज लगायी गई दुतर्फा गलियां फलेंगी। वायदा मार्केटों पर प्रतिदिन भावों की भविष्य वाणियों में यह अवश्य ध्यान रखना कि तारीख १५ अक्टूबर को १३ के बने ऊंचे भाव जिस वस्तु में बढ़े तब तेजी ही तारीख १७ अक्टूबर तक होगी। इस माह में तारीख १९ सितम्बर को प्रातः, तारीख ३ अक्टूबर को दोपहर में तारीख १२ अक्टूबर को शाम को दुतर्फा गली लगानी लाभ प्रद हो सकती है। दोनों पक्षों में ग्रहण होने से विशेष चाल चलेगी।

कार्तिक- इस माह में ५ मंगलवारों का होना व्यापारिक वस्तुओं में सामान्यतया जोरदार तेजी कारक होगा। इस माह में विशेष रूप से प्रथम पक्ष में चतुर्दशी तिथि की वृद्धि प्रथम पक्ष में तेजी को बल देगी और दूसरे पक्ष में प्रतिपदा क्षय तथा पूर्णिमा तिथि के क्षय के प्रभाव से जोरदार व तूफानी तेजी। कार्तिक माह में तारीख १८ अक्टूबर की रात्रि में भरणी नक्षत्र में मंगल देव संचरण के प्रभाव से, जो कि वक्री अवस्था में प्रविष्ट होंगे- सोना, चांदी, रुई में जोरदार मन्दी कारक होंगे। बाद तारीख २३ अक्टूबर की रात्रि में स्वाति नक्षत्र में सूर्य के प्रभाव से सोना, चांदी, रुई, सूत, वस्त्र, गुड़, शक्कर, खल बिनौला, बिनौला, सुपारी, मिर्च, सरसों, अलसी, गाई, हींग, के भावों में पन्द्रह दिन की तेजी होगी। बाद कार्तिक बदि अष्टमी मंगलवार को वृश्चिक राशि में बुधदेव के प्रभाव से अनाज, घी, सरसों, तिल, तेल के भावों में मंदी का ट्रेन्ड बनेगा किन्तु अगर तारीख २६ अक्टूबर को तारीख २५ के बने नीचे भाव से मार्केट न टूटें तब तेजी ही जारी रहेगी। बदि चौदस को मंगलवारी दीपावली होने से लाल रंग की वस्तु खासकर मसूर, लालमिर्च, लाल चन्दन, अनारदाना, केशर के भावों में तेजी होगी। सरसों आदि तिलहनों में आगामी तीन दिन का रुख महत्वपूर्ण होगा। शुदि तीज को गुरुदेव के उदय होने के प्रभाव से रुई, सुपाड़ी, नारियल, सोना, चांदी, मजीठ में तेजी होगी। सरसों, अलसी, लाहा, रुई, तेल के भावों में नरमी की चाल ११ दिन चलेगी। वायदा मार्केटों में बदि दोज गुरुवार को तारीख २ नवम्बर के बने ऊंचे भाव से जिस वस्तु में भाव बढ़ें उसी वस्तु में तूफानी तेजी एक सप्ताह की होगी। आगे १३ नवम्बर को बुध वक्री के प्रभाव से धुआंधार तेजी का योग बनेगा। यहां पर १४ नवम्बर से १५ दिन में ही गुड़, शक्कर के भावों में विशेष तेजी होगी। वायदा गुड़ के भाव जोरदार तेजी पकड़ेंगे। लेकिन सरसों, सोयाबीन सीड, सोयाबीन तेल, अरन्डी के भावों में जोरदार मन्दी चलेगी। इस माह में तारीख १८ अक्टूबर, तारीख ३ नवम्बर की प्रातः, तारीख ४ नवम्बर की शाम दुतर्फा गली लगाना तथा तारीख १२ नवम्बर को दोपहर १२ बजे भी दतर्फा गली लगानी लाभप्रद सिद्ध हो सकती है।

मार्गशीर्ष- इस माह में पांच बुधवार तथा पांच ही गुरुवार प्रारंभ में तेजी किन्तु कुल मिला कर नरमी का प्रभुत्व रखेंगे। मंगशिर माह के लगते ही वृश्चिक राशि में सूर्य के प्रभाव से अनाजों में समानता होगी। रुई, चांदी में नरमी का रुख रहेगा। सोना के भावों में विशेष तेजी, चांदी, रुई, सरसों, ऊन, तांबा भी तेज होगा। लाल मिर्च, लाल चन्दन, लाल रंग की वस्तुएं मन्दी में चलेंगी। किन्तु पीले रंग की वस्तुओं में तेजी का प्रभाव बना रहेगा। मार्गशीर्ष बदि तीज की रात्रि में बुधस्ता के होने से हरे रंग की वस्तु तथा सप्त धातु सोना, चांदी, तांबा, पीतल, लोहा, कांसा, प्लेटिनम के भावों में विशेष तेजी होगी। ज्वार, मूंग, अरहर, वनस्पति, सुगंधित पदार्थ, सरसों, सोयाबीन तेल व सीड में विशेष तेजी होगी। **नोट**-अगर किसी वस्तु में तारीख १८ नवम्बर से ३ दिन मन्दी रह जावे तब मन्दी की चाल ही बदि पक्ष में चलेगी। साथ ही यह भी ध्यान रखें कि जिस वस्तु में तारीख १९ नवम्बर को तारीख १६ के बने ऊंचे भाव से मार्केट बढ़ेगा तब उसी वस्तु में तूफानी तेजी कम से कम तीन दिन में अवश्य होगी। तारीख २२ नवम्बर को २२ घटि ४ पल पर शनि देव का वक्री होना तेल, मिर्च, तिल, लोहा, स्टील के भावों में १२ दिनों में तेजी करेगा। प्रथम पक्ष में बदि चौथ तिथि की वृद्धि होने से तेजी होगी। मार्गशीर्ष अमावस्या को बुधोदय होंगे। बाद शुदि प्रतिपदा की शाम को ज्येष्ठा नक्षत्र गत सूर्य देव के रथ के आ जाने से गेहूं, जौ, चना चावल, सरसों, गुड़, शक्कर, अलसी, पाग, हींग, अरन्डी के भावों में तेजी का रुख रहेगा। रुई में पहले मन्दी बाद तेजी होगी। यह चाल तारीख १५ दिसम्बर तक चलेगी। मंगल देव का तारीख १२ दिसम्बर को मार्गी होना यहां पर चना वायदा मार्केट में भारी तेजी या भारी मन्दी होगी। जो तारीख १३ दिसम्बर से चलेगी साथ ही गुड़, पारा, मनसिल, तांबा, लाल रंग की धातु तांबा, शस्त्र, मूंगा, लाल रंग के फल व फूलों के भावों में नरमी होगी। यहां पर यह सावधानी हेतु नोट ध्यान रखें कि तारीख १२ व १३ दिसम्बर के बीच बने लोएस्ट बने भाव से जिस वस्तु के भाव न टूटें और ऊंचे बने भाव से मार्केट जिस वस्तु में बढ़ जाए उसी में जोरदार तेजी होगी। <u>खास योग</u>- तारीख १८ की शाम व १९ नवम्बर की प्रातः तारीख ३० नवम्बर की शाम व तारीख ६ दिसम्बर की प्रातः दुतर्फा गली लगाना।

पौष- इस माह में पाचं शुक्र व पांच ही शनिवारों का योग नरमी के प्रभाव को बढ़ाएगा। इस माह के आरम्भ से एक दिन धनु राशि में सूर्य देव के संचारण के प्रभाव से अनाजों के भावों में मंदी होगी। सोना, चांदी, रुई, तिल, तेल, कपास में तेजी का प्रभाव बढ़ेगा। तथापि यहां पर तारीख ८ दिसम्बर से १६ दिसम्बर के बीच बने हाईएस्ट तथा लोएस्ट भाव महत्वपूर्ण होंगे। व्यापार पति बुध का रथ सूर्य देव के रथ से पीछे चलता रहेगा और यहां पर इकतरफा चाल लगातार चलने का संकेत दे रहा है। यहां पर सुपीरियर लाईन के प्रभाव से सोयाबीन, ग्वार, उरद, अरहर, मूंग, मोंठ, चना के हाजिर व एन.सी.डी.ई. एक्स के वायदा सौदों में नरमी का प्रभाव बनेगा। तथापि अगर तारीख १७ दिसम्बर को १६ के बने नीचे भाव से न टूटे और ऊंचे बने भाव से मार्केट बढ़ें तब उस स्थिति में तेजी को बल मिल सकता है। सूर्य-मंगल का नव पंचम योग मन्दी को बल देने वाला सिद्ध होगा तो दूसरी ओर शनि - सूर्य का षष्ठाष्टक योग तेजी कारक है। साथ ही बदि पक्ष की पंचमी वृद्धि भी तेजी कारक है। बीच में तारीख १९ दिसम्बर, तारीख २८ दिसम्बर को बने ऊंचे व नीचे भाव महत्वपूर्ण होंगे। पौष शुदि प्रतिपदा का क्षय और रविवारी चन्द्र दर्शन व्यापारिक वस्तुओं में तेजी कारक तथा शेयर मार्केट में मन्दी कारक है। साथ ही तारीख ३१ जनवरी को बने ऊंचे व नीचे भाव महत्वपूर्ण सिद्ध होंगे। पौष बदि पंचमी को बुधास्त के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा, रुई, गुड़, ग्वार, गेहूं, उरद, सोयाबीन तेल व सरसों के वायदा व हाजिर मार्केटों में तूफानी मन्दी जो शुक्रास्त होने के बाद तारीख १२ जनवरी की शाम से अवश्य चल सकती है। तारीख १४ जनवरी को मकरे अर्क के प्रभाव से गुड़, खांड, शक्कर, घी, तेल, रुई में तेजी का प्रभाव बनेगा। इस माह में गुड़, चांदी, ग्वार के वायदा बाजारों में तारीख २३ दिसम्बर की प्रातः तारीख ४ जनवरी को शाम सभी में दुतर्फा गली लगाना।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

माघ- इस माह में पांच रविवार और पांच ही सोमवार हैं। जो तेजी और मन्दी दोनों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस माह के प्रथम पक्ष में सप्तमी तिथि की वृद्धि होकर बाद द्वादशी क्षय होने से मन्दी का प्रभाव होगा। और द्वितीय पक्ष में चतुर्थी का क्षय बाद चतुर्दशी तिथि की वृद्धि तेजी को बल देने वाली होगी। प्रारम्भ में माघ वदि चतुर्थी को शुक्रोदय होने से अनाजों के भावों में तेजी का चांस चलेगा। इस माह में १७ जनवरी को उत्तराषाढ़ में बुध के प्रभाव से तारीख १८ जनवरी से मन्दी ग्वार, गुड़, शक्कर, चना, जूट, पाट, बारदाना, सन के भावों में चलेगी। किन्तु अगर तारीख १८ जनवरी को तारीख १७ के बनें ऊंचे भाव जिस वस्तु में कटें तब खरीदकर तारीख २० जनवरी तक लाभ उठाना। आगे तारीख २३ जनवरी को श्रवणे रवि के प्रभाव से सोना, चांदी के भावों में तेजी होगी। रुई, चावल, गेहूं, जौ, चना, गुड़, खांड, रुई, जूट, सन, पाट, खल बिनौला के भावों में तेजी होगी। रुई, खल बिनौला, बिनौला का स्टाक नीचे भाव मिलने पर करना लाभप्रद होगा। वायदा मार्केटों में तारीख २५ जनवरी तक मन्दी बाद तेजी का रुख कायम हो जाएगा जिन वायदा वस्तुओं में तारीख २५ जनवरी तक मंदी रही हो उनमें घटे भाव खरीद करना लाभप्रद हो सकता है। यहां पर तारीख २७ जनवरी से चालू चाल तारीख ३१ जनवरी तक चलेगी। आगे माघ शुक्ल पक्ष में तारीख २ फरवरी को शाम को मार्गी शुक्र और तारीख ५ फरवरी को कुम्भे बुध का प्रभाव सोना, चांदी में भावों के पड़े रहने का तथा रुई, गुड, घी, तेल में मन्दी जोरदार करेंगे। किन्तु गुड़, ग्वार, उरद, अरहर, गेहूं, सोया सीड के वायदा मार्केटों में व निफ्टी में तारीख ४ फरवरी को तारीख ३ के बने ऊंचे भाव से नीचा खुलकर भाव बढ़ें तब तेजी का चांस तारीख ११ फरवरी तक या पहले ही सम्पन्न होगा। इस माह में तारीख १८ जनवरी, तारीख २६ जनवरी को दोपहर में तारीख १ फरवरी की प्रातः तथा तारीख ११ मार्च को बन्द घन्टी से पूर्व दुतर्फा गली लगाना लाभप्रद होगा।

फाल्गुन- सूर्य गुरु का नवपंचम योग और शनि-गुरु का चतुराष्टक योग विशेष उथल-पुथल कारक होगा। साथ में पांच मंगलवार का होना तेजी की आग में घी का काम करेंगे। व्यापार पति बुध का रथ सूर्य देव के रथ से आगे प्रथम पक्ष में चलता रहेगा। दूसरे पक्ष में भी सुपीरियर लाईन ही जारी रहेगी अतः पिछले माह की ही चालू चाल चलती रहने की धारणा है। सरसों, सोयाबीन, अलसी, अरन्डी, सींगदाना के भावों में मन्दी का रुख चलता रहेगा। यह मन्दी जोरदार भी होगी। साथ ही गुड़, खांड, चीनी, शक्कर व रस पदार्थों पर कुम्भ संक्रांति के प्रभाव से मन्दी का प्रभाव बनेगा। तारीख २४ फरवरी को मीने बुध के प्रभाव से गेहूं, गुड़, खांड के भावों में मंदी होगी। रुई के भावों में अच्छी तेजी एक ही माह में बनेगी। तारीख २५ फरवरी को मकरे शुक्र के प्रभाव से गुड़, खांड, घी व समस्त अनाजों के भावों में तेजी का प्रभाव रहेगा। अगर तारीख २५ फरवरी से चार दिन में तेजी रहे तब तेजी ही चलेगी जो तारीख १४ फरवरी तक चलेगी। इसके बाद चाल पलटेगी किन्तु जिस उपरोक्त वस्तु में तारीख २५ फरवरी से चार दिन मन्दी चलेगी उसमें मन्दी ही बदस्तूर जारी रहेगी। पीपरमेंट, तेल में भी यह बात लागू होगी। फाल्गुन शुक्ला प्रतिपदा का क्षय होने से तेजी का प्रभाव बनेगा। अरहर, उरद, मूंग, मोंठ, रुई, कपास, सूत, सन, गेहूं, चना में तेजी होगी। किन्तु जो भी वस्तु तारीख २ मार्च को १ के बने नीचे भाव से टूटेगी वह मन्दी ही चलती रहेगी। तारीख २ मार्च को वक्री बुध होकर तारीख ४ को दोपहर में बुध देव मीन राशि में अस्त हो जाएंगे। जो तमाम पक्ष में अस्तावस्था में रहेंगे और तारीख १८ मार्च चैत्र बदि तीज की प्रातः तक अस्त रहेंगे। जो वायदा व हाजिर मार्केटों पीपरमेंट, गुड़, खांड, सोना, चांदी, गेहूं, जौ, चना, बाजरा, मकई, सूत, खल, बिनौला के भावों में विशेष तेजी कारक होंगे। यहां की चालू चाल तारीख १४ मार्च तक चलेगी। बाद तारीख ५ मार्च को १२ घटि ५१ पल पर गुरु देव वक्री हो जाएंगे। जो कि मन्दी कारक है। हल्दी, रुई, पाट में तेजी तो तिलहनादि के वायदा व हाजिर मार्केटों में मन्दी होगी। चांदी, गुड़, चीनी, ग्वार में एक विशेष नोट है कि तारीख ६ मार्च को तारीख ४ के बने नीचे भाव टूटें तब डबल बेचकर तारीख १४ मार्च तक लाभ उठाना चाहिए। तारीख १४ मार्च को कुम्भ संक्रांति पूर्णिमा, मंगलवारी है अतः अभी तक मन्दी में चलने वाली वस्तुओं का स्टाक करना लाभकारी होगा। इस माह में विशेष रूप से २४ फरवरी की प्रातः, तारीख ४ मार्च की दोपहर व १४ मार्च की शाम को दुतर्फा गली लगाना लाभप्रद हो सकता है।

चैत्र बदी- चैत्र माह में पांच गुरुवारों का होना गुड़ हाजिर व चीनी हाजिर के भावों में लास्ट मन्दी का संकेत है। इस मन्दी में स्टाक करना विशेष लाभप्रद होगा। बदि पक्ष में चैत्र बदि तीज को प्रातः उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र में सूर्य देव के प्रभाव से सोना, चांदी, रुई, गुड़, खांड, शक्कर, गेहूं के भावों में तेजी होगी अतः अगर अभी तक मन्दी आ ली है। तब सोना, चांदी, गुड़, खांड, शक्कर व रुई का स्टाक करना लाभप्रद होना चाहिए। तथापि अगर तारीख १० को ९ मार्च के बने नीचे भाव से मार्केट टूटें और नीचा ही बन्द हो तब मन्दी ही चलती रहेगी। गेहूं में आगामी तीन दिन का रुख देखें लेकिन स्टाक न करें। हां गेहूं, ग्वार, अरहर, उरद, सोया सीड, सरसों सीड के वायदा मार्केटों में तेजी की धारणा तारीख १८ मार्च से है जो एक सप्ताह चलेगी। **नोट-** अगर तारीख १८ को तारीख १७ के बने नीचे भाव से मार्केट टूटें तब उस वस्तु में डबल बेचान करना लाभप्रद होगा। यह धारणा सोना, चांदी, शेयर, व पीपरमेंट पर भी लागू होगी। इस पक्ष में अधिकांश वस्तुएं नरमी की ओर ही चलेंगी। सुपीरियर लाईन बदस्तूर जारी रहने से मन्दी का प्रभाव सरसों में बना रहेगा। इस पक्ष में तारीख १८ मार्च, तारीख २५ मार्च प्रातः दुतर्फा गली लगाना लाभप्रद होगा।

अनमोल चांस मंगाईये

अनमोल चांस क्यों? क्योंकि हम चांस ग्रहों के आधार पर देते हैं साथ ही ग्राफिकल चांस भी देते हैं। ऊंचे-नीचे आनुपातिक भाव देना ही चांस की विशेषता होती है। हाजिर या वायदा वस्तु के चांस, सोना, चांदी, ग्वार, शेयर्स, चना, उड़द, गेहूं, सोया सीड, सोया खली, अरन्डी, सोया तेल, आलू, तांबा, लोहा, हल्दी, तेल, तिलहनादि, दलहनादि व किराना वस्तु व मेवाओं के चांस देते हैं। हाजिर चांस एक वस्तु एक वर्ष ७५१ रुपेय हैं। छमाह ४०१.०० तथा तीन माह की २५१.०० हैं। वायदा एक वस्तु एक माह की दक्षिणा ३०१ रु. है। वायदा वस्तु एक माह फोन पर प्रतिदिन बताने की दक्षिणा १००१.०० है।

शांडिल्य व्यापार भविष्य पूर्ण एक वर्ष की दैनिक लम्बी लाइन धारणा चांस हर वस्तु छापते हैं। मूल्य १५१.०० है। वी.पी. नहीं होगी। मूल्य पेशगी भेजकर मंगायें। सम्वत् २०६२ की।

विश्व बंधु शर्मा "दैवज्ञ" द्वारा "श्री ओंकाराश्रम ज्योतिष भवन" २१/२२ ब्रह्मनान, पो० हापुड़ (उ.प्र.)
फोनः- ०९८३७२७९८२३, ०९४१२५७३८९५,
०१२२-२३१२२३८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ व्यापार-विमर्श सम्वत् २०६२ वि.

वि. सं. २०६२ की ग्रह स्थिति के आधार पर व्यापारिक उतार-चढ़ाव के विचार

लेखक एवं संपादक- ची. पं. महेन्द्र कुमार जैन, सह संपादक-पं. गजेन्द्र जैन, उत्तराधिकारी- आयुर्वेद मार्तण्ड ज्योतिष रत्न पं. जैनी जीवालाल शिखरचन्द चौधरी राज वैद्य
ज्योतिष रत्न कार्यालय:- पो. फर्रुखनगर-१२२५०६, गुड़गांव फोन नं.-कार्या.-निवास: ०१२४-२३७५२१८, २३७५३७७ ०१२४- E-mail: jyotish_ratan@yahoo.com

अथ चैत्र शुक्ल पक्ष का फल-

शुभ विक्रम सं.२०६२ का शुभारंभ शनिवार ता. ९ अप्रैल से हो रहा है। पक्ष में तिथि वृद्धि, चन्द्रदर्शन १५ मु. व पूर्णिमा रविवार की, संक्रांति मेष ३० मु. भूखी बुधवार की है। सूर्य-मंगल-शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। शुक्रोदय पश्चिम हुआ है। एकम् को शनि प्रजा के लिए उत्तम नहीं। रविवार का चन्द्र दर्शन अन्न, सोना-चांदी, सरसों में तेजी करेगा। तिथि वृद्धि पैदावार उत्तम करेगी। सूर्य शुक्र की युति सभी खाद्य-पदार्थों में तेजी तथा तेज वायु चलेगी। राजद्वार में शुक्रोदय राजनीति में भारी उलट-फेर करेगा।

शुक्ल पक्ष-शु. १ शनि पूरे वर्ष रुई, अन्न लोहा नमक क्षार-पदार्थों में तेजी रहेगी। शु. २ रवि-अश्विनी मेषे शुक्र-चन्द्र दर्शन, पशुओं को बिमारी हो। अन्न, सोना, चांदी, सरसों तेज। रुई, ऊन, अलसी में मंदा रहेगा। शु. ४ मंगल-बुध मार्गी-मार्किट में अच्छी घट-बढ़ चले। रुई आदि पदार्थ तेज। गुड़, शक्कर, खाण्ड, रसकस, जौ, गेहूं, चना, मटर, अरहर, उड़द, मूंग, चावल आदि में मंदा। नारियल, सुपारी, सोना-चांदी आदि तेज। नोट-यहां सूर्य शुक्र की युति सभी खाद्य पदार्थों में तेजी करेगी। शु. १२ गुरु-भरणी में शुक्र- तिल, तेल, सरसों, गेहूं, जौ, चना घट-बढ़ से मंदा। सोना-चांदी में मंदा रहेगा। शु. १३ शुक्र-सभी चित्र-विचित्र वस्तु फल-फूल, रस पदार्थ तेज। चांदी में घट-बढ़ हो। शु. १५ रविवार-शुक्रोदय- पश्चिम राजनीति बड़ी तेजी से घूमेगी। श्रावण मास में सभी अन्न, गेहूं आदि खाद्यान्न तेज होगी। मंदे में स्टॉक करना न भूलें।

विशेष योग-

चैत्र श्वेत पक्ष तिथि बढ़ै घटे श्याम पष सोय।
अन्न बढ़ावै सुख करैं साख सवाई होय॥
सूर्य देव भृगुनाथ का एक राशि पर साथ।
पकड़ा देती है फसल महंगाई को हाथ॥
राजद्वार में शुक्रोदय राज में युद्ध मचावै।
छत्र भंग कई हो कतल कैयक हो जावै॥
दुनियां में दुःख होसी याको यहीं प्रमाण।
शुक्रोदय नृप द्वार में या विध होवे हान॥

अथ बैशाख मास फल विचार-

मास में ५ सोम, कृष्ण पक्ष में तिथि क्षय, शुक्ल पक्ष में तिथि बढ़कर हानि हुई हैं। अमावस रवि की, चन्द्र दर्शन ४५ मु. मंगल का, संक्रांति वृष ३० मु. भूखी शनि की, पूर्णिमा सोमवार की है। सूर्य, बुध, शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। मास में ५ सोम उत्तम हैं। मावस से अधिक नक्षत्र होना अनाजों में मंदी करे। सुदी एकम् को भरणी नक्षत्र का अभाव तृण, चारा, घास की कमी रहेगी। अक्षय तीज को रोहिणी नहीं हो तो जगत के लिए अशुभ है। सुदी ९ को मंगलवार और मघा नक्षत्र अतिनेष्ट हैं। प्रजा को अनेकों प्रकार से कष्ट देगा। वृष सं. भूखी अग्निमंडल में होने से देश में जहां-तहां अग्निकांड, विस्फोट आदि से जन-हानि होगी। **कृष्ण पक्ष**-कृ. १ सोम-अगस्त तारा अस्त-रात्रि में अगस्त तारा का अस्त होना नेष्ट फल कारक है। कृ. ३ बुधवार-भरणी सूर्य, रेवती बुध-चावल, जौ, चना, मोठ, अरहर, अलसी, घी, अफीम, मूंग, सोना आदि तेज। रुई पदार्थ, सुगन्धित द्रव्य, चन्दन, कपूर, कस्तुरी, मिर्च, लौंग, घी, तेल, सरसों आदि में मंदा चलेगा। चांदी में घटबढ़ रहेगी। कृ. ८ रविवार-शतभिषा मंगल- रुई पदार्थ मंदे होकर तेज हो। अन्न में मंदा रहे। सोना-चांदी में घटबढ़ चले। कहीं-कहीं झगड़े बनें। फसल को हानि हो। कृ. ९ सोम- कृतिका शुक्र, वक्री हस्ते ५ गुरु हींग, जीरा, सुपारी, सूत, कपड़ा, चावल, अन्न, सरसों, तिल, तेल आदि में मंदा। कहीं पर वर्षा भी होगी। कृ. ३० रविवार-अश्विनी मेषे बुध-अन्न, गेहूं, जौ, चना, मोती, तेल, तिल आदि में तेजी। गुड़, शक्कर, खाण्ड, रुई, सूत, सण आदि में मंदा। सभी जरुरी खाद्य पदार्थों में आगे मंदा चलेगा। **शुक्ल पक्ष**-शु. २ मंगल-चन्द्र दर्शन ४५ मु.-रुई पदार्थ मंदे होकर तेज हो। सोना-चांदी में घटबढ़। चारा, घास, उड़द, तिल आदि में तेजी रहेगी। शु. ३ बुध-कृतिका सूर्य-सभी सफेद पदार्थ, चावल, चांदी आदि मूंग, मोठ, रुई, सरसों, सोना आदि तेज। तांत्रिक, अग्निहोत्री, कुम्हार, नाई, ज्योतिषी और व्याकरणाचार्यों को कष्ट होगा। शु. ५ शुक्र-रोहिणी शुक्र-सोना, तांबा, जस्त, गुड़, शक्कर, खाण्ड आदि में मंदा चले। देश के कई स्थानों पर झगड़े उपद्रव से प्रजाजनों को कष्ट होगा। शु. ६ शनि-वृषे सूर्य-रुई पदार्थ, सोना, दूध, दही, घी आदि में तेजी। चांदी में घटबढ़ होगी। आंधी, तूफान, विस्फोट, अग्निकांड आदि से जन हानि हो। ता. ८ सोम-भरणी बुध-देश में कहीं झगड़े फैलें। विग्रह हो, गर्मी जोर पकड़े और खाद्यान्न में तेजी बनेगी। शु. १० गुरु-वक्री नेपच्यून-यहां एक लम्बी लाईन मार्किट्यों में आएंगी। व्यापार का रुख देखकर कार्य करें। शु. ११ शुक्र-पू.फा.मंगल-रुई, सूत, कपड़ा, अण्डी, सरसों, तेल, तिल, अलसी, कपास, नमक, नारियल, सुपारी आदि में तेजी। शु. १३ रवि-चतुर्दशी क्षय: सभी खाद्य पदार्थों में तेजी करेगी। शु. १५ सोम-पैदावार कम, वर्षा की खैंच रहे। देश में झगड़े विग्रह हों। चांदी मंदी, रुई पदार्थ तेज। सभी प्रकार का अन्न घटबढ़ से तेज होगा।

विशेष योग-

पांच चन्द्र बैशाख में चारों दिशा सुकाल।
राजा प्रजा सब सुखी रहे नित्य खुशहाल॥
शनिवारी संक्रांति हो तिलहन तेज अनाज।
होय युद्ध भय रोग से जग में अमित अकाज॥
वृष राशि के रवि करैं सुख संपदा सुकाल।
दूध, दही, घी में रहै महंगाई की चाल॥
मावस से अधिक नक्षत्र सस्ता करैं अनाज।

अथ ज्येष्ठ मास फल विचार-

मास में पांच मंगल पांच बुध हैं। कृष्ण पक्ष में तिथि की हानि, शुक्ल पक्ष में वृद्धि, मावस पूनों व चन्द्रदर्शन ४५ मु. तीनों बुधवार के हैं। सं. मिथुन ४५ मु. धापी मंगलवारी है। सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र, शनि, हर्षल ने राशि परिवर्तन किया है। बुधास्त पूर्व: उदय पश्चिम में, गुरु मार्गी, हर्षल वक्री हुआ है। पक्षों में तिथि की घटबढ़ प्रजा के लिए उन्नति कारक है। ५ मंगल-कपास, गुड़, सफेद वस्तुओं में तेजी तथा देश में कहीं उदंगल करेगा। ५ बुध-मूंग, कपास में तेजी तथा कहीं अग्निकाण्ड, विस्फोट से जन हानि करेगा। कृ. एकम् मंगलवारी संक्रामण रोगों से प्रजा को पीड़ा देगा। मंगल राहु की युति अनावृष्टि, दुर्भिक्ष व पैदावार में हानिकारक है। शु. एकम को मृगशिर शुभ, पूर्णिमा में मूल नक्षत्र शुभ, सं. मिथुन ४५ मु. धापी सभी उत्तम है। प्रजा में सुख सम्पति की वृद्धि व प्रजा आनन्दित रहेगी।

कृष्ण पक्ष-कृ. १ मंगल-बुधास्त पूर्व, शुक्र मृगशिर, हर्षल कुंभ में-सोना, गेहूं, अलसी, अन्न, चना, मूंग, मोठ, ज्वार, घी आदि में मंदा। गुड़, शक्कर, चावल आदि में तेजी। देश में संक्रामण रोगों के फैलने से प्रजा को अधिक कष्ट होंगे। कृ. २ बुध-रोहिणी सूर्य, वृषे बुध, कर्के शनि-रुई, सूत, कपास, चावलादि धान्य, अलसी, सरसों, राई, तेल, गुड़, खाण्ड, सुपारी, सभी तिलहनों में तेजी। सेठ-साहुकार, भोगी, कृषक, पशु, जलचरों को कष्ट। आपसी विरोध बढ़े, पशुओं में बिमारी फैले। राजनीति में भारी फेर बदल होंगे। कृ. ६ रवि-मिथुन शुक्र-रुई, बारदाना, सिंगदाना, कपास, सरसों, अरण्डी, तेल, तिल में मंदा। चांदी में अच्छी घटबढ़ चलेगी। कृ. ७ सोम-रोहिणी बुध-तेल, सरसों, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सोना, चांदी, चावल तेज होकर मंदा। अनाज में तेजी रहेगी। कृ. १२ शुक्र-मीने मंगल-सोना, चांदी, रुई, लकड़ी का सामान व सुगन्धित द्रव्यों में तेजी। अन्न मंदा, चांदी में घटबढ़ होगी। कृ. १३ शनि-आर्द्रा शुक्र-तेज हवा चलें, कहीं वर्षा हों, सभी खाद्यानों में मंदा रहें। कृ. १४ रवि-मृग. में बुध-गुरु मार्गी-३-४ दिनों में रुई मंदी रहकर तेज हो। चांदी, अलसी, सरसों, गेहूं, चना तेज।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तम्बाकू मंदा रहेगा। कृ. ३० सोम-सोमवती अमावस सभी खाद्य पदार्थों में मंदा लाएगी।

शुक्ल पक्ष-शु. १ मंगल-मृग. में सूर्य-सभी जलोत्पन्न पदार्थ, नारियल आदि, रुई, कपूर, चन्दन, सोना, चांदी, उड़द, मूंग, मोठ आदि तेज। तेज वायु चले, पशुओं में रोग फैले। शु. २ बुध-उ.भा. मंगल, मिथुने बुध, चन्ददर्शन ४५ मु.-शक्कर, खाण्ड, रुई, सफेद वस्तु मंदी। चांदी में घटबढ़, अन्न, घी, सण में तेजी रहेगी। शु. ४ शनि-आर्दा बुध-बच्चों को विशेष पीड़ा होगी। रुई में विशेष तेजी रहे। अन्न तेज होकर मंदा हो। शु. ७ मंगल-मिथुने सूर्य, बुधोदय पश्चिम, हर्षल वक्री-रुई, सूत, कपास, रेशम, गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, चावल, सरसों, लोहा, गुड़, खाण्ड, चीनी, घी में तेजी। आगे १५ दिनों में रुई, चांदी, मंदी रहे। शु. ८ बुध-पुन. शुक्र-सोना-चांदी, कपास में मंदा। गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर तेज। वर्षा कम, किन्हीं कारण से प्रजा में भय फैलेगा। शु. ११ शनि-पुन. बुध-रुई, सूत, कपास, सण, चांदी में अच्छी मंदी। रुख देखकर कार्य करें। शु. १४ मंगल-आर्द्रा सूर्य-घी, गुड़, चीनी, चावल, चन्दन, कपास, रुई, हल्दी, सोठ, लोहा, चांदी, कपूर, तिलहन आदि में तेजी। सोना में घटबढ़, वर्षा कहीं पर हो कहीं पर नहीं। शु. १५ बुध-सभी खाद्यान्न मंदा, लोहे आदि में तेजी बनेगी।

विशेष योग-

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रतिपदा रवि कुंज हो वार।
व्याधि प्रबल लख जगत में दुःख भोगे संसार॥
मंगल राहु साथ में एक नखत इक रास।
अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, दुःख हो खेती का नास॥
कर्क राशि शनि जो रहे देश मेवाड़ भंग।
और देश की कहा कहूं मालवा होसी तंग॥
पूर्व राजा आवसी मालव देश प्रमाण।
नहिं बेपार भय अग्नि को और प्रजा में हान॥
दूज, तीज ज्येष्ठ सुदी आवै आर्द्रा नक्षत्र।
वर्षे तो कर्षे नमी दर्से दुःख दुर्भिक्ष॥
पूर्णमासी जेठ की मूल नक्षत्र शुभ योग।
सुख संपति आनंदमय सुखी रहै सब लोग॥

अथ आषाढ़ मास फल विचार-

मास में ५ गुरु, कृ. पक्ष में तिथि हानि, शुक्ल में तिथि वृद्धि होकर घटी है। मावस बुध की, चन्ददर्शन ३० मु. शुक्र का, पूर्णिमा गुरु की, संक्रांति कर्क ४५ मु. धापी शनि की है। सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। शनि अस्त हुआ है। ५ गुरु उत्तम पर पश्चिम में दुर्घटना से जन हानि हो। शु. ५ को सोम उत्तम वर्षा कारक है। शुक्र, बुध, शनि की युति नेष्ट फल कारक है। सभी खाद्य पदार्थ महंगे होंगे। प्रजा में घबराहट होगी। इस माह कर्क की सं. शनिवारी आगे मकर सं. भी शनि की होने से उत्तम नहीं। प्रजा में अचानक शोक फैलेगा। जान-माल की हानि होगी। राजनीति में भारी बदलाव आएगा।

कृष्ण पक्ष-कृ. १ गुरु-कर्के शुक्र-घी, तेल, गोला, गुड़, शक्कर, सभी रस पदार्थ, सूत, सण, बारदाना तेज। रुई मंदी होकर तेज, सभी खाद्यान्न में मंदा रहेगा। कृ. ३ शुक्र-पुष्य शनि-शूद्र जाति पर अत्याचार बढ़ेंगे। पश्चिम देशों में राजनीति परवर्तन होंगे। नेताओं में संघर्ष बढ़ेगा। पैदावार उत्तम, खाद्यान्न मंदा रहेगा। कृ. ४ शनि-पुष्य शुक्र-सभी खाद्य पदार्थ रुई, सूत, कपास, सण, रेशम आदि तेज। गुड़, खाण्ड, पारा, हींग आदि में मंदा हो। वर्षा भी कहीं होगी। कृ. ५ रवि-पुष्य बुध-वर्षा की कमी रहे। सोना, चांदी, कपड़ा, सूत, मोती, मूंगा आदि सभी धातु, अन्न में मंदा। रुई में अच्छी घटबढ़ रहे और झगड़ों के द्वारा प्रजा में भय फैलेगा। कृ. ६ सोम-चांदी में तेजी की लाईन निकले। रुई में घटबढ़ हो। सभी अनाज व सोना में मंदा रहेगा। कृ. १४ मंगलवार-पुन.सूर्य शनि अस्त-रुई, शेयर, सोना आदि में मंदा। सभी खाद्य पदार्थ, अरण्डी, तेल पदार्थ, सोना, चांदी, रुई सभी रसों में तेजी का रुख रहेगा। देश की राजनीति में युद्ध मचेगा। रूपवाली स्त्री पुरुष सेवक सेविकाओं को कष्ट होगा। कृ. ३० बुध-ऽश्लेषा बुध, ऽश्लेषा शुक्र-गुड़, सरसों, खाण्ड, तेल, तिल, नारियल, अलसी, मूंगफली, अरण्डी आदि तेज। बहुत से स्थानों पर वर्षा हो। पैदावार उत्तम हो। आगे १५ दिनों में बहुत सी वस्तुओं में तेजी बनेगी।

शुक्ल पक्ष-शु. २ शुक्र-चन्द्र दर्शन ३० मु.-गेहूं, जौ, चना, चावल, सरसों, तिल, तेल, ऊन आदि में मंदा। सोना तेज, चांदी में घटबढ़ हो। कहीं देश में कोई बड़ी दुर्घटना से जन हानि होगी। शु. ३ शनि-गोला, खाण्ड, घी, तेल, मूंग, मोती, चांदी, हल्दी, गेहूं, जौ, चना आदि में तेजी चलेगी। शु. ९ शनि-कर्क सूर्य-आज वर्षा हो तो दक्षिण के देशों व प्रदेशों में झगड़े होंगे, बिमारी फैलेगी। सभी अन्न, चांदी, तिलहन पदार्थ तेज हों। कहीं अग्निकांड, विस्फोट आदि से जन हानि होगी। शु. १० रवि-मघा सिंह शुक्र-गेहूं, जौ, चना आदि सभी अन्न, सोना, लाल वस्तु, तिल, मूंगफली, सरसों, तांबा, पीतल, चांदी सभी खुशबू वाली वस्तुएं तेज होंगी। शु. ११ सोम-अश्वि. मेष मंगल-सभी अन्न, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, अरहर, ज्वार, बाजरा, रस पदार्थ मंदे। सोना-चांदी आदि धातु, रुई, सूत, कपास, मूंग आदि में तेजी रहेगी। कई स्थानों पर उपद्रव, अग्निकांड आदि से आपसी लड़ाई झगड़ों से प्रजा में भय फैलेगा। नेताओं की आपसी खैंचातानी से राज्य सरकारों में परिवर्तन होगा। शु. १३ मंगल-पुष्य सूर्य-तिल, तेल, मघ, गुड़, ज्वार, सुपारी, मोम, हींग, हल्दी, ऊनी वस्त्र, सोना, चांदी, नारियल आदि में तेजी। रुई तेज होकर मंदी। जलयान व नाविकों को कष्ट होता है। शु. १५ गुरु-सभी धातु, रुई, सूत, कपड़ा, सोना, तांबा, लोहा आदि में तेजी का बाजार रहेगा।

विशेष योग-

शुक्र शनि इक राशि पे बुध मिले फिर आय।
अन्न महंगे मास में प्रजा रहत घबराय॥
सूर्य, बुध, शुक्र मंद कर्क राशि पे संग।
नित नई गड़बड़ मचे मंदी होवे भंग॥
कर्क मकर यह भानु युग बैठे एक ही वार।
अकरा करते अन्न का सकल लोक भयकार॥
शनिवारी संक्रांति हो तिलहन तेज अनाज।
होय युद्ध भय रोग से जग में अमित अकाज॥
हीन नखत मावस अधिक तो तेजी का राज।

अथ श्रावण मास फल विचार-

मास में ५ शुक्र हैं। मावस पूनो शुक्र की, चन्द्रदर्शन ३० मु. शनि का, सं.सिंह ३० मु. भूखी मंगल की है। बदी में तिथि बढ़कर घटी है। सुदी में तिथि की हानि हुई है। सूर्य शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। बुध वक्री मार्गी अस्त पश्चिम व उदय पूर्व में शनि उदय हुआ है। ५ शुक्र विशेष उत्पात मचाएंगे। कृ.८ को आश्विनी गेहूं, जौ, चना आदि खाद्य पदार्थों में तेजी करेगा। कृ. ९ शनिवार आगे गंगा स्नान तक छत्र भंगकारक है। एकादशी उत्तम है। शु. तिथि क्षय: भी आगे कार्तिक तक छत्र भंग का योग बना है। मास में सभी मिष्ठान, गुड़, रसादि, हल्दी, तिल, तेल, सोना, तांबा आदि में महंगाई रहेगी।

कृष्ण पक्ष-कृ. २ शुक्र-बुध वक्री-रुई तेज होकर मंदी हो। गुड़, शक्कर, सरसों, अलसी, कपूर, तिल, तेल, अरण्डी, बिनौला आदि में तेजी। रुई खरीदों आगे लाभ होगा। कृ. ८ गुरु-आज अश्विनी नक्षत्र सभी वस्तुओं में तेजी बनाएगा। कृ. ९ शुक्र-बुधास्त पश्चिम, पू.फा. शुक्र-हस्ते ४ केतु-घी, गुंवार, बाजरा, ज्वार, जौ, चना, मूंग, उड़द, शेयर, हैसियन, बारदाना आदि में मंदा। रुई, चांदी तेज होकर मंदी रहें। देश में चोरियां अधिक होंगी, वर्षा कम हो। देश मे कहीं दुर्घटना से जन हानि होगी। कृ. ११ रवि-आज दिन रोहिणी होने से सरकार व प्रजा के लिए उत्तम रहेगा। कृ. १३ मंगल-ऽश्लेषा सूर्य-अलसी, तिल, तेल, गुड़, शेयर, नील, अफीम, मिर्च, रुई, बिनौला, सोना, चांदी में आगे अच्छी तेजी का रुख रहेगा। देश के पूर्व-दक्षिण भाग में प्रजा में आपसी संघर्ष होगा। कृ. ३० शुक्र-सभी प्रकार का धान्य पदार्थ महंगा रहेगा। वर्षा योग भी उत्तम है।

शुक्ल पक्ष-शु. १ शनि-चन्द्र दर्शन-अलसी, सरसों, लोहा, धातु, सूत, कपड़ा, चांदी, सोना, तेल, सभी खाद्य पदार्थों में वृद्धि होगी। प्रजा को कई स्थानों पर कष्ट होगा। शु. ४ मंगल-उ.फा. शुक्र-सोना, चांदी में घटबढ़ हो सभी खाद्य पदार्थों

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

व रुई वस्तुओं में तेजी चलगी। पैदावार में कमी होगी। शु. ५ बुध-भरणी मंगल-वक्री पुष्य पर बुध, शनि उदय-लोहा, अस्त, सीसा, काली वस्तु, घास, लकड़ी का सामान, गेहूं, जौ, चना, ज्वार, गुंवार, मूंग, मोठ, बाजरा, सोना, चांदी तेज। रुई, शेयर, अलसी, सरसों, अरण्डी, बिनौला, गुड़, शक्कर, खाण्ड आदि में मंदा रहेगा। विद्वानों को कष्ट होगा। शु. ७ शुक्र-कन्या में शुक्र। पैदावार कम, फसल को हानि हो। सभी अन्न गेहूं आदि सोना, चावल, गुड़, खाण्ड, ऊनी वस्त्र आदि में तेजी। चांदी में घटबढ़। रुई, बारदाना, सण आदि में मंदा बनेगा। शु. १० सोम-बुधोदय पूर्व-उत्तम वर्षा हो। रुई में अच्छी तेजी की लाईन बनेगी। चांदी में घटबढ़, सोना मंदा। गेहूं, जौ, चना, अलसी, तिल, तेल, सरसों, लाल मिर्च आदि में तेजी चलेगी। शु. ११ मंगल-मघा सिंह सूर्य, बुध मार्गी रुई, चांदी, अरण्डी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सरसों तेल, लाल वस्तु, सभी रत्न, शेयर आदि में तेजी। रस पदार्थ, तिल, तेल, सरसों, कपूर, चंदन आदि मंदे। शु. १२ बुध तिथि क्षय:- सभी अन्न व तिलहन पदार्थ तेज होंगे। आगे किसी गणमान्य नेता का देह त्याग होगा। शु. १५ शुक्र सभी सफेद वस्तु मंदी। अरण्डी, सरसों, तिल, तेलादि में तेजी निकलेगी।

विशेष योग-

सौमी श्रावण बदी में शनिवारी संताप, छत्रभंग का योग बना आगे कार्तिक आप। बदी बढ़े सुदी घटे तिथि क्रूर बार संक्रांति, छत्रभंग अरु अवर्षण पीड़ित प्रजा नितांत॥ शुक्ल पक्ष श्रावण कभी घोड़ें तिथि का नाश। छत्र भंग का योग बना आगे दीपावली पास॥ किसी राशि पर संक्रामण करै भौम दिन सूर। तो महंगा हो नमक, रस, घी, तेल कपूर॥ बिना श्रवण की श्रावणी बिगड़े अगली साख॥

भाद्रपद मास फल विचार-

मास में ५ शनि व ५ रवि हैं। कृ. पक्ष में तिथि बढ़कर घटी है। मावस शनि की, चन्द्रदर्शन ४५ मु. सोम का, सं. कन्या १५ मु. भृखी शुक्र की, पूर्णिमा रवि की है। बुध-शुक्र-सूर्य ने राशि परिवर्तन किया है। अगस्त तारा उदय, प्लूटो मार्गी, बुधास्त पूर्व में हुआ है। ५ शनि वर्षा की कमी करें। तिलहन, लोहा आदि तेज। ५ रवि-घी, तेल, रुई, कपास में मंदा करें। भृखी कन्या सं. सभी अनाज को तेज करेगी। कृ. ८ को रोहिण-हल्दी, जीरा, पाग, सीसा, कस्तूरी, तिल, तेल, गुड़, हींग आदि में मंदी। मदी में खरीदो आगे लाभ मिलेगा। शनि अमावस-घी, तेल, सरसों, अरण्डी में तेजी करेगी। कृतिका का मंगल प्रजा को बिमार करेगा।

कृष्ण पक्ष-कृ. १ शनि-हस्ते शुक्र-रुई, सूत, कपास में मंदा। वर्षा कम। खाद्य पदार्थ, गुड़, शक्कर, चांदी में घटबढ़ चले। संक्रामक रोगों से प्रजा दुःखी रहेगी। कृ. २ रवि-श्लेषा बुध-गुड़, शक्कर, खाण्ड, तिल, तेल, अलसी, मूंगफली, अरण्डी में तेजी। पैदावार उत्तम रहे। कृ. ६ गुरु-चित्रा गुरु-सभी अन्न खाद्य पदार्थ, चांदी आदि में मंदा रहे। रुई पदार्थों में अच्छी घटबढ़ रहेगी। पूर्व दिशा में उत्तम पैदावार व उत्तम वर्षा होगी। कृ. ८ शनि-मटर, गुवार, सोंठ, जीरा, सभी किराना, सोना, सीसा आदि सभी तेज। कस्तूरी, तिल, तेल, हींग, गुड़ादि में मंदा। मंदी में स्टॉक करो, तीन मास बाद लाभ मिलेगा। कृ. १० सोम-अगस्त उदय-आज सार्थ वर्षा हो तो आगे पानी की कमी न रहें। न हो तो आगे वर्षा की कमी रहेगी। कृ. ११ मंगल- पू. फा. सूर्य-सोना, चांदी, लोहा, घी, तेल, सरसों, अरण्डी, सुपारी, रुई, चावल, ऊनी वस्त्रों में तेजी बनेगी। कृ. १२ बुध-चित्रा शुक्र-देश के अनेक भागों में साम्प्रदायिक दंगे फैलने से झगड़े-फिसाद बढ़ेंगे। कृ. १३ गुरु-सिंह बुध-सोना, खाण्ड, कपूर, रुई, ऊन, गेहूं, गुड़, शक्कर, सरसों आदि में मंदा रहे। तेज हवा चले। बहुत स्थानों पर वर्षा हो। कृ. १४ शुक्र-प्लूटो मार्गी-यहां बाजार के रुख को देखों, जिधर चले वैसा ही सौदा करों। कृ. ३० शनि-बुधास्त पूर्व-रुई, चांदी तेज होकर मंदी रहे। शेयर, हैसियन, बारदाना में मंदा। सभी तिलहन पदार्थ में तेजी चलेगी। पशु तथा मनुष्यों में बिमारी फैले।

शुक्ल पक्ष-शु. २ सोम-चन्द्रदर्शन-अन्न, रुई, सूत, सण, कपड़े आदि तेज। चांदी तेज होकर मंदी। प्रजा आपसी झगड़े में उलझें। शु. ३ मंगल-तुला शुक्र-रुई, चांदी तेज होकर मंदी रहे। गुड़, शक्कर, खाण्ड में तेजी। शु. ४ गुरु-पू.फा. बुध-कहीं झगड़े हो, कहीं युद्ध के बादल मंडराये। प्रजा में भय बने। अन्न में मंदा रहे। शु. ६ शनि-सप्तमी क्षय-सभी बाजारों में तेजी बनेगी। शु. ८ रवि-कृतिका मंगल-रुई पदार्थ मंदे। गेहूं, जौ, चना, सरसों, अलसी, चांदी, चावल आदि तेज। संक्रामक रोगों के फैलने से प्रजा कष्ट में रहें। शु. ९ सोम-स्वाती शुक्र-चोरियां अधिक होंगी। उपद्रव फैलने से प्रजा में भय बनेगा। गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों, तिलहन आदि तेज। अन्न मंदा रहेगा। शु. १० मंगल-उ.फा. सूर्य-ज्वार, बाजरा, गुड़, चीनी, कपास, हल्दी, कत्था, सोना, चांदी, लोहा, घी, सरसों तेज। पशुओं में रोग फैले। शु. १३ शुक्र-कन्या सूर्य-माल किराना, मेवा, लाल वस्तु, नारियल, तिल, तेल, सोना, चांदी, पीतल, लोहा, शयरों में मंदा चले। शु. १४ शनि-कन्या बुध-सोना, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, जौ, चना, तांबा, पीतल आदि धातुओं में तेजी चलें। चांदी, गुड़, शक्कर, सरसों में मंदी रहेगी।

विशेष योग-

रोहिणी युक्त जन्माष्टमी संग हुआ शनिवार। जौ, गेहूं अरु बाजरा महंगा मटर गुवार॥ महंगा मटर गुवार सोठ जीरा किराना। सोना, सीसा आदि धातु सब तेज बरसाना॥ कस्तूरी तिल तेल हींग गुड़ संग्रह कर लो। तीन मास पश्चात नफा ले घर भर लो॥ सम सप्तम शनि जीव या मंगल भृगु साथ। रखते हैं बरसात में वर्षा अपने हाथ॥ हीन नखत मावस अधिक बने तेजी का राज। भादव मावस बुध शनि हो महंगा तेल॥

आश्विन मास फल विचार-

मास में ५ सोम, कृ. पक्ष में तिथि घटकर बढ़ी है। शुक्ला में तिथि हानि, मावस पूनो व संक्रांति तुला ३० मु. धापी सोम की और चन्द्रदर्शन १५ मु. बुध का है। गुरु शुक्र बुध सूर्य ने राशि परिवर्तन किया है। सूर्य चन्द्र ग्रहण, बुधोदय पश्चिम, गुरु अस्त, मंगल वक्री हुआ है। मास में ५ सोम शुभ, एक मास में दोनों ग्रहण अशुभ। कृ. ६ रविवार-ज्येष्ठा नक्षत्र-सब धान्यों में समर्घता हो। कृ. ११ बुधवार से गाय, भैंस महंगी। सोमवारी अमावस सुभिक्ष, वर्षा का प्रबध उदय धान्य की उत्पत्ति हो लेकिन हस्त योग नेष्टफल कारक है। पूर्णिमा को रेवती सुभिक्ष कारक है। सभी धान्य मंदा। रस, घृत, माल किराना तेज होगा।

कृष्ण पक्ष-कृ. ३ मंगल-देश में कहीं अग्निकांड, विस्फोट से जन हानि होगी। कृ. ५ गुरु-हस्ते बुध-वर्षा हो, पैदावार उत्तम रहे। सभी खाद्य पदार्थों में मंदा और वस्तुओं में घटबढ़ चले। कृ. ६ शुक्र-विशाखा शुक्र-अन्न, गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर, मूंग, सूत, कपास आदि में मंदा। व्यापारियों में चिन्ता बने। कृ. ९ सोम-हस्ते सूर्य-कपड़ा, गेहूं, सरसों, चना, गुड़, खाण्ड, सूत, कपास, हल्दी, हींग, धनियां, लकड़ी, नमक, रुई आदि तेज चले। कृ. १० मंगल-तुला गुरु-वर्षा उत्तम। नारियल, सरसों, अलसी, तेल, तिल, घी, रस पदार्थ गुड़ आदि में मंदा। माल खरीदो, ४ मास बाद लाभ अवश्य मिलेगा। देश में ज्वरादि की बिमारी फैलेगी। खाद्यान्न में वृद्धि होगी। कृ. १२ शुक्र-चित्रा बुध-रुई पदार्थों में घटबढ़ से तेजी, चांदी में घटबढ़, सभी अनाज तेज रहेगा। विद्वानों को कष्ट होगा। कृ. १३ शनि-मंगल वक्री सभी किराना माल तेज होंगे। रुई, अलसी, गोला, खाण्ड, सोना, अन्न, सभी लाल वस्तु तेज। कहीं दुर्भिक्ष व विग्रह फैलें। कृ. १४ रवि-वृश्चिक शुक्र-ज्वार, बाजरा आदि अन्न में मंदा। चांदी मंदी हो तो खरीदो लाभ मिलेगा। कृ. ३० सोम-सूर्य ग्रहण-सूर्य ग्रहण तेजी करे, मावस मंदे करे। व्यापार का रुख देखकर कार्य करो।

शुक्ल पक्ष-शु. २ बुध-चन्द्र दर्शन, बुधोदय पूर्व, अनुराधा शुक्र-गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, सूत, शूद्रों

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वस्तु मंदी। चांदी में घटबढ़। अन्न, घी, रुई, सूत, कपास, सोना, चांदी आदि धातु में तेजी चलेगी। प्रजा में आपसी झगड़े बने। कहीं युद्ध का वातावरण बने। शांति वार्ता विफल हो। शु. ५ शनि-गुरु अस्त-सोना, चांदी, अन्न, सरसों, तिल, तेल पदार्थ में मंदा। रुई, शेयरों में तेजी बने। शु. ६ रवि-स्वाती बुध-वर्षा हो, गणमान्य लोगों को कष्ट हो, सभी अन्न में मंदा, धान्यों का संग्रह करो आगे लाभ मिलेगा। शु. ७ सोम-चित्रा सूर्य-गेहूं, चना, कपास, अरहर, सूत, केसर, चपड़ा, चांदी, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, तिल आदि में तेजी। ज्वरादि बिमारियों से प्रजा को दुःख रहेगा। ता. १० गुरु-एकादशी क्षय-यहां पीछे से चली आ रही वस्तुओं में तेजी आरंभ होगी। शु. १५ सोम-सूर्य तुला में, चन्द्र ग्रहण, ज्येष्ठा शुक्र-सोना, चांदी में घटबढ़ चले। हाथियों पर अत्याचार हो। सोना, अन्न, तांबा, अलसी, आंवला, गेहूं, सरसों, नारियल, घी, सुपारी, तेल आदि खाद्य वस्तुओं में वृद्धि हो। कहीं-कहीं झगड़े बने। पशुओं में बिमारी फैले।

विशेष योग-

बदी तीज आश्विन में संग हुआ मंगलवार।
अग्निकांड भयभीत जग महंगा चले बाजार॥
सोमवती अमावस पड़े कभी जु आश्विन मास।
अन्न खाण्ड गुड़ तेल में मंदी का आभास॥
जिस राशि पर भौम का जब हो उसमें वक्र।
वक्री होने पर किराना में चलता तेजी का चक्र॥
युगल ग्रहण इक मास में रवि शशि क्रम से चीन।
अन्न भाव अकरा अधिक प्रजा महा दुःख लीन॥

अथ कार्तिक मास फल विचार-

मास में ५ मंगल हैं। कृष्ण पक्ष में तिथि वृद्धि, शुक्ल पक्ष में दो तिथि क्षय (१३ दिन का पक्ष) हुई है। मावस बुध की, पूर्णिमा मंगल की, चन्द्रदर्शन ३० मु. गुरु का हैं। बुध, शुक्र ने राशि परिवर्तन किया हैं। गुरु उदय, बुध वक्री, नेपच्यून मार्गी हुआ है। पांच मंगल प्रजा को रक्त विकार की बिमारी से कष्ट देंगे। संसार में युद्ध का वातावरण बनेगा। सूर्य, चन्द्र, गुरु की युति उत्तर दिशा में प्रजा को भारी कष्ट देंगे। बुध शुक्र की युति वर्षा करेगी। कृ. १३ रविवार-गेहूं, जौ आदि सभी धान्यों में तेजी करेगी। कृष्ण पक्ष में तिथि वृद्धि, शुक्ल पक्ष में तिथि क्षय भी महंगाई करेगी। होई, दीवाली और फाल्गुन की होली को मंगल होना तथा कार्तिक मास में १३ दिन का पक्ष इस जगत के लिए फाल्गुन मास तक बहुत सी अन्होनी घटनाओं को जन्म देगा।

कृष्ण पक्ष-कृ. १ मंगल- विशाखा बुध-प्रजा को सुख, सभी प्रकार का अन्न, गुड़ादि में मंदा। कहीं झगड़े, कहीं मालों में तेजी बनेगी। कृ. ४ शुक्र-वक्री भरणी पे मंगल-सभी अनाज, गेहूं, ज्वार, बाजरा, ग्वार, जौ, चना, सोना, चांदी आदि धातु में तेजी। रुई, गुड़, शक्कर आदि में मंदा। गणमान्य लोगों को कष्ट होगा। कृष्ण ६ रवि-स्वाती सूर्य-सभी धातु, गुड़, खाण्ड, तेल, कपूर, लाख, हल्दी, रुई, जूट, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, राई, हींग, सोना, चांदी में तेजी चलेगी। आगे वर्षा कम हो। कृ. ७ सोम-घी, चांदी, पशुओं में तेजी बनेगी। कृ. ८ मंगल-७श्लेषा शनि-जापान, बर्मा, दक्षिण भारत, युगोस्लोवाकिया आदि देशों में भूकम्प से जनहानि होगी। रुई, तेल, तिल, उड़द आदि तेज हो। कृ. ९ बुध-नेपच्यून मार्गी-व्यापार का रुख देखो जिधर व्यापार चले वैसा ही कार्य करो। कृ. ११ शुक्र-७नुराधा बुध, स्वाती गुरु-रुई, सूत, सण, कपड़ा, सोना, चांदी आदि वस्तुऐं मंदी रहेगी। कृ. १३ रवि-मूल धनु शुक्र-रुई पदार्थ तेज होकर मंदे रहें। सोना आदि में घटबढ़ चले, पैदावार कम। गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, घी, चांदी, शेयर आदि तेज। प्रजा को नाना प्रकार से कष्ट मिले। कृ. १४ मंगल-चतुर्दशी वृद्धि-सभी खाद्य सामग्री में तेजी चले। प्रजा में व्याकुलता बढ़ेगी।

शुक्ल पक्ष-प्रतिपदा का क्षय सभी खाद्यानों में भयंकर तेजी चले। शु. २ गुरु-चन्द्रदर्शन-गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी में घटबढ़। तेल तिल, सरसों आदि तिलहनों में तेजी का रुख रहेगा। शु. ५ रवि-सूर्य विशाखा में गुरु उदय-चांदी, चावल, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, गेहूं, जौ, चना, सरसों, फल-फूल, रस पदार्थ, दूध में तेजी चले। चांदी में मंदी रहे। पूर्व व दक्षिण के प्रदेशों में झगड़े फैलेंगे। तेजी अच्छी चलेगी। शु. ९ गुरु-गेहूं, गोला, चना आदि में तेजी की अच्छी लाईन निकलेगी। शु. ११ शनि-ज्येष्ठा बुध-पू.षा. शुक्र-गेहूं, जौ, चना, बाजरा, उड़द, मूंग, ग्वार, चावल आदि तेज। उड़द, मूंग, तेल, तिल, सरसों, गुड़, शक्कर आदि में मंदा। पशु, घोड़े व हाथियों को विशेष कष्ट या बिमारी फैले। शु. १३ सोम-वक्री बुध-रुई तेज होकर मंदी रहे। गुड़, शक्कर, अलसी, सरसों, कपूर, तेल, तिल, अरण्डी, शेयर, बिनौला आदि में तेजी। रस पदार्थों में मंदा रहेगा। शु. १४ मंगल-पूर्णिमा क्षय-आगे चार मास सभी वस्तुओं में भारी उथल-पुथल होगी। अकाल पड़े, भारी जनहानि हो। रुई, सूत, कपास में तेजी चलेगी।

विशेष योग-

कृष्ण पक्ष तिथि बढ़ै, शुक्ल पक्ष घट जाय।
सभी वस्तु तेज हो, सस्तापन हट जाय॥
तेरह दिन का पख बुरा, शुक्ल पक्ष अति क्रूर।
मनुजों, घोड़ों, हाथियों होता अत्याचार॥
सूर्य, चन्द्र, गुरु एक घर विपत्ति विचारे।
उत्तर दिशा भय अधिक जगत कोलाहल त्यारे॥
कार्तिक लागत त्रयोदशी जो होय रविवार।
तो जौ, गेहूं में चलै तेजी बारम्बार॥
पांच भूमि सुत युद्ध करे, अथवा रक्त विकार।
कार्तिक आर्द्रा वार रवि हुऐ राज पे वार॥

अथ मार्गशीर्ष मास फल विचार-

मास में पांच बुध व पांच गुरु हैं। कृ. पक्ष में तिथि वृद्धि और शुक्ल पक्ष में तिथि हानि हुई है। सं. वृश्चिक ३० मु. धापी बुधवारी है। मावस पूनों व सं० धन ३०मु. धापी गुरुवारी है। चन्द्र दर्शन ३० मु. शनि का हैं। सूर्य शुक्र प्लूटो ने राशि परिवर्तन किया है। शनि वक्री, बुध मंगल मार्गी, बुधास्त पश्चिम व उदय पूर्व में हुआ है। मास में ५ बुध, ५ गुरु शुभ है। कृ. ११ रविवारी-रुई पदार्थों में मंदा करेगी। मंदी में खरीदों, बैशाख में अच्छा लाभ होगा। मार्गशीर्ष व पौष दोनों मास में कृष्ण पक्ष बढ़ा तथा शुक्ला घटा है। अतः संसार में युद्ध के बादल बनेंगे। कहीं जोर संघर्ष से सरकार का परिवर्तन होगा। कहीं दुर्भिक्ष व अकाल लोक भय तथा क्षेत्रपति का क्षय होगा। धातु, तिल, उड़द व पीली वस्तु महंगी होगी।

कृष्ण पक्ष-कृ.१ बुध-सूर्य वृश्चिक-७नुराधा बुध-हर्षल मार्गी-चांदी, तांबा, पीतल, जस्त, ऊन, गर्म कपड़े, सरसों आदि में तेजी बने। सभी लाल वस्तु मंदी रहे। अन्न में घटबढ़ चले। कृ. ३ शुक्र-बुधास्त पश्चिम-रुई, चांदी तेज होकर मंदी। शेयर, हैशियन, बारदाना आदि सभी में मंदा। मंदी रुई खरीदों, आगे विशेष लाभ होगा। कृ. ४ शनि-अनुराधा सूर्य-चांदी, चावल, सूत, अफीम, गेहूं आदि अन्न तेज। सोना मंदा। भक्त लोगों को कष्ट होगा। कृ. ६ मंगल-शनि वक्री-रुई घटबढ़ से मंदी। कपड़ा, सूत, सोना, चांदी, मानक, मोती, लौंग, सुपारी, अन्न गेहूं, जौ, चना, कलई, घी, गुड़, तेल में तेजी। उत्तर दिशा में प्रजा में विग्रह हो। (नोट- यहां सभी वस्तु पर निगाह रखों, आगे जब शनि मार्गी होगा तब भाव अवश्य विपरीत होंगे।) कृ. ११ रवि-रुई व रुई पदार्थों में मंदा का योग है, इसे संग्रह करो आगे बैशाख मास में मोटी तेजी बनेगी। कृ. १२ सोम-वक्री विशाखा बुध-उ.षा. शुक्र-सभी अन्न, गुड़, शक्कर, अलसी, अरण्डी, रसकस में मंदा। रुई व अन्न में घटबढ़। कहीं-कहीं प्रजा में झगड़े बने। कृ. ३० गुरु-बुधोदय पूर्व-रुई तेज, चांदी में घटबढ़, सोना मंदा। गेहूं, जौ, चना, अलसी, अरण्डी, तेल, सरसों, मिर्च आदि में तेजी। राज की तरफ से प्रजा में भय बनेगा।

शुक्ल पक्ष-शु. १ शुक्र-ज्येष्ठा सूर्य-चावल, सरसों, वस्त्र, अफीम, सोना, चांदी, गेहूं, जौ, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अलसी, पारा, हींग आदि तेज। रुई मंदी रहकर तेज हो। शु. २ शनि-चन्द्र दर्शन, मकर में शुक्र-अलसी, सरसों, लोहा, धातु, सोना, चांदी, तेल, रुई, कपास, गुड़, खाण्ड, घी और अन्न में तेजी। पैदावार कम। दक्षिण की वायु चले तो प्रजा को कष्ट होगा। शु. ३ रवि-मार्गी बुध-रुई

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

घटबढ़ होकर तेज हो। लकड़ी का सामान, रस पदार्थ, गुड़, शक्कर, बिनौला, अरण्डी तेज। सुगन्धित द्रव्यों में मंदा रहेगा। शु. ५ मंगल-षष्ठी क्षय सभी अनाजों में मंदा रहेगा। शु. ९ शुक्र-अनुराधा बुध-मूल धन में प्लूटो-बाजार का रुख देखकर व्यापार करें। अन्न, रुई, सूत, सण, कपड़ा, सोना, चांदी सभी मंदे हों। शु. १० शनि-मंगल मार्गी-रुई, तिलहन बाजार और सभी किराना माल मंदे होंगे। बहुत सी वस्तुओं में भारी उतार-चढ़ाव होगा। व्यापार की चाल समझकर व्यापार करें। देश में उपद्रव व झगड़ों में बढ़ोत्तरी होगी। शु. १३ मंगल-सरसों, अलसी, अरण्डी आदि तेज। शु. १५ गुरु-मूल धनु सूर्य-सफेद वस्तु पीली वस्तु, कपास, तेल, तिल, सरसों, रुई, सोना, चांदी में तेजी। अन्न मंदा, लोगों में आपसी प्रीति बढ़े।

विशेष योग-

अगहन शुक्ल तिथि घटे-बढ़े कृष्ण पक्ष तास।
ऐसा ही लख पौष में छत्र भंग जल नाश॥
रविवारी एकादशी लागत मार्गशीर्ष मास।
लाभ दे वैशाख में रुई सूत कपास॥
कृष्ण पक्ष तिथि बढ़े शुक्ल पक्ष घट जाय।
सभी वस्तु तेज हो सस्ता पन हट जाय॥
मंगसिर सुदी दोयज दिवस जो आवै शनिवार।
दक्षिण की वायु चले दुःखी रहे संसार॥
सूर संक्रामण समय से समसप्तम राकेश।
छठ मास तक अन्न में तेजी रहे विशेष॥

अथ पौष मास फल विचार-

मास में ५ शुक्र ५ शनि, कृ. पक्ष में तिथि वृद्धि शुक्ल पक्ष में हानि, मावस पूनों व संक्रांति मकर ४५ मु. धापी शनि की, चन्द्र दर्शन ४५ मु. रविवार का है। सूर्य बुध शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। शुक्र वक्री अस्त पश्चिम व बुधास्त पूर्व में हुआ है। मास में ५ शुक्र प्रजा की वृद्धि करें। ५ शनि देश-विदेश में महंगाई बढ़ाएं। शनि अमावस को पूर्वाषाढ़ नक्षत्र, शुक्ला तिथि क्षय, कर्क मकर संक्रांति शनि की और मकर कुंभ मीन संक्रांति से बना खप्पर योग प्रजा के लिए दुःखदायी, युद्धकारी, अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, अकाल व उत्पातों को उत्पन्न करेगा। शुक्ला एकादशी को कृतिका नक्षत्र सभी लाल वस्तुओं में तेजी, खाद्यान्न तेज होगा। मास में रोगों की अधिकता बनी रहेगी।

कृष्ण पक्ष-कृ. २ शनि-पैदावार उत्तम, खाद्यान्न और रुई मंदी होकर तेजी बने। कृ. ५ मंगल-वक्री पुष्य ४ शनि-सभी अनाजों में मंदा रहे। नेताओं में आपसी संघर्ष चले। शूद्रों पर अत्याचार हों। पश्चिम दिशा में विग्रह फैलें। कृ. ६ बुध-ज्येष्ठा बुध-गेहूं, जौ, चना, बाजरा, उड़द, मूंग, ग्वार, चावल आदि तेज। चौपाये पशु विशेषकर घोड़ों में बिमारी फैले। कृ. ८ शनि-शुक्र वक्री-रुई चना मंदा, तिल तेल घी सरसों चांदी रुई सूत कपास तेज। देश में कहीं अग्निकांड विस्फोट आदि दुर्घटना से प्रजा में अशांति बने। कहीं झगड़े उपद्रव हो। कृ. १२ बुध-पू.फा. सूर्य-तिल, तेल, गुड़, गुग्गल, हल्दी, कपूर, ऊनी वस्त्र, चांदी, सरसों, खाण्ड आदि में तेजी। देश में सर्दी का प्रकोप बढ़ेगा। कृ. १४ शुक्र-मूल धन में बुध-चांदी मंदी, रुई सूत कपास कपड़ा आदि तेज। चौपाएं जानवर व हाथियों को विशेष कष्ट हो। राजा व प्रजा में विरोध बने। कृ. ३० शनि-अन्नादि में घटबढ़ होकर तेजी बने। कहीं दुर्भिक्ष बने या अकाल पड़े।

शुक्ल पक्ष-पड़वा का क्षय तेजी करे। शु. २ रवि-चन्द्रदर्शन-सोना, चांदी, सरसों आदि में तेजी। रुई पदार्थों में घटबढ़, आपसी झगड़े बढ़ने से प्रजा दुःखी रहे। शु. ५ बुध-विशाखा गुरु-सोना, चांदी, रुई, कपास, कपड़ा आदि में मंदा। वर्षा व पैदावार मध्यम रहे। शु. ६ गुरु-बुधास्त पूर्व-रुई, चांदी में घटबढ़ होकर मंदी रहे। सोना, गेहूं, अलसी आदि में तेजी। गणमान्य लोगों के जीवन को खतरा होली तक है। शु. ९ रवि-पू.षा.बुध-गेहूं, जौ, चना, मटर, उड़द, बाजरा, ग्वार, सोना, चांदी में मंदा। गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों, अलसी, बिनौला, रुई, कपास तेज होगा। प्रजा संक्रामण रोगों से घिरी रहे। कृ. ११ मंगल-उ.षा. सूर्य-उड़द, मूंग, सूत, कपास, गुड़, चावल, चांदी, सरसों, तिल, तेल व लाल वस्तुओं में भयंकर तेजी चलेगी। शु. १२ बुध-शुक्रास्त पश्चिम-रुई, सूत, कपास, कपड़ा, घी, तेल, अलसी, अरण्डी, बिनौला, मूंगफली आदि में मंदा। अन्न व खाद्य पदार्थ व सोना, चांदी में अच्छी तेजी चलेगी। शासक तंत्र व प्रजा में तनाव बने। गुजरात, मालवा आदि प्रदेशों में दुर्घटना से जन हानि हो। शु. १४ शुक्र-वक्री, धनु शुक्र-गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर, घी, चांदी, शेयर आदि तेज रहे। प्रजा बिमारी से घिरी रहें। शु. १५ शनि-मकरे सूर्य-घी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सरसों, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोठ, बारदाना, शेयर, सोना, चांदी में तेजी चले।

विशेष योग-

पौष मावस के दिन भौम सूर शनिवार।
भय उपजै महंगा बिकै ज्वार बाजरा गुवार॥
पौष पड़वा पाचै चतुर्दशी शुक्ल पक्ष में तीन।
बढ़ने पर मंदी करै तेजी जब हो छीन॥
पौष सुदी एकादशी जो कृतिका नक्षत्र।
लाल वस्तुओं में रहे खूब लाभ सर्वत्र॥
बदी बढ़ै सुदी घटै तिथि क्रूर वार संक्रांति।
छत्र भंग अरु अवर्षण पीडित प्रजा नितान्त॥
मकर संक्रांति शनि की कुंभ हुई रविवार।
मीन मंगल को गई खप्पर योग विचार॥
खप्पर योग विचार दुनिया में दुःख घने हो।
गणमान्यों की मौत महंगाई घनेरी हो।

अथ माघ मास फल विचार-

मास में ५ रवि, ५ सोम हैं। कृ. पक्ष में तिथि बढ़कर घटी और शु. पक्ष में घटकर बढ़ी है। मावस व संक्रांति कुंभ १५ मु. भूखी रवि की है। पूनो व चन्द्रदर्शन ३० मु. सोम का है। सूर्य मंगल बुध ने राशि परिवर्तन किया है। शुक्रोदय पूर्व में मार्गी हुआ है। मास में ५ रवि नेष्ट व ५ सोम शुभ है। रविवारी अमावस व सं० कुंभ दुर्भिक्षकारी, कहीं युद्ध कारक, राज विग्रह व रोगों की उत्पत्ति करेगी। शु. ४ का क्षय घी, मूंग में तेजी करे। शु. ८ फाल्गुन में फसल को रोली लगावें। शु. १० मंगल-बच्चों को बिमार करें। ११ बुध घी, रुई, सूत, कपास, अन्य सभी सफेद वस्तु तेज करे। पूर्णिमा श्लेषा नक्षत्र सभी खाद्य पदार्थ में तेजी करे। पूर्व में शुक्रोदय तेज वायु से उण्ड करे। दुर्भिक्ष राज विग्रह व युद्ध की स्थिति उत्पन्न करेगा।

कृष्ण पक्ष-कृ. ३ मंगल-शुक्रोदय पूर्व-रुई, सूत, सोना, चांदी, घी, चावल तेज। अन्न में घटबढ़ होकर तेज। तेज वायु से दोबारा उण्ड बने। सिन्ध में राज विग्रह, कहीं दुर्भिक्ष पड़े, कहीं छत्र भंग हो। कृ. ५ गुरु-मकरे बुध-वक्री पू.षा शुक्र-रुई, घी, उड़द, मूंग, तेल, तिल, सरसों, गुड़, खाण्ड, शक्कर, नमक आदि में मंदा। सोना, चांदी में अच्छी तेजी चले। कृ. ९ मंगल-श्रवण सूर्य-उड़द, मूंग, जूट, सूत, गुड़, कपास, चावल, चांदी, बांस, सरसों, सोना, रुई, जौ, खाण्ड, चीनी में तेजी चले। कृ. १० बुध-श्रवण बुध-गुड़, शक्कर, खाण्ड, चावल, चना, गेहूं आदि तेज; फसल को ओले आदि गिरने से हानि हो। कृ. १४ शनि-कृतिका मंगल-रुई मंदी। गेहूं, जौ, चना, तिल, सरसों, अलसी, चांदी, चावल, सूत, कपड़ा आदि तेज। रोगों की वृद्धि से प्रजा को कष्ट होगा। कृ. ३० रवि-जगत में दुर्भिक्ष पड़ेगा, जन हानि होगी।

शुक्ल पक्ष-शु. १ सोम-चन्द्रदर्शन-अन्न, रुई, सूत, सण, कपड़े, सभी सफेद वस्तु तेज होगी। आपसी झगड़ों के बढ़ने से प्रजा दुःखी रहेगी। शु. ३ बुध व धनिष्ठा में नेपच्यून-पशुओं में बिमारी फैले। रुई पदार्थों में घटबढ़ चले। सोना, चांदी, तांबा, पीतल, जस्ता और सभी अनाजों में मंदा चले। बाजार का रुख देखकर व्यापार करें। शु. ६ शुक्र-मार्गी शुक्र-रुई पदार्थों में ५-७ दिन मंदी रहकर तेजी बने। सोना, चांदी, मोती में मंदा चले। पूर्व के प्रदेशों में प्रजा बिमार हो और राजभय बने। शु. ८ रवि-वृष मंगल, कुंभ बुध-सभी धान्य पदार्थ, गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, मोठ, सरसों, तिल तेल, तोड़िया, अलसी, चन्दन, कुंकुम, केसर, सभी लाल वस्तु, सभी रसकस गुड़, शक्कर आदि में घटबढ़ से मंदा चले। सोना, चांदी, तांबा पीतल आदि मंदी होकर तेज हो। शु. ९ सोम-धनिष्ठा सूर्य-मूंग, मसूर, नील, सोना, चांदी आदि सभी धातु, अन्न, रुई, अलसी, तिलहन आदि सभी में मंदा चले। शु. १२ गुरु-बुध शतभिषा में वर्षा कम, शूद्रों

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

में बिमारी फैले। सोना, चांदी, सण, सूत आदि तेज। कहीं अन्न भी तेज हो। शु. १४ रवि-चतुर्दशी वृद्धि-गेहूं, जौ, चना, बाजरा, ज्वार, मूंग, सरसों, शक्कर, खाण्ड आदि में मंदा। नमक, तेल, घी, मूंगफली, अरण्डी आदि में तेजी चले। शु. १५ सोम-सभी खाद्यान्न, सोना, चांदी, तिलहनों में तेजी चले। पशु बिमार हो।

विशेष योग-

मावस तिथि माघ की संग हुआ रविवार।
घोर युद्ध जन हानि से जग में हो हा हा कार।
उदयास्त सप्ताह में अगर शुक्र हो जाय।
भ्रांत अशांत प्रजा रहे दु:ख नितान्त अधिकाय॥
आगे सूरज बीच बुध पीछे भृगु की चाल।
गल्ला रुई उड़द तिल तेज तिलहन माल॥
माघ सुदी जब कभी सुदी चौथ घट जाय।
ग्राहक भागे घी मूंग विक्रेता नट जाय॥

अथ फाल्गुन मास फल विचार-

मास में ५ मंगल हैं। कृ. पक्ष में तिथि हानि हुई है। मावस सोम की, चन्द्रदर्शन ३० मु. बुध का पूर्णिमा ब सं. मीन ३० मु. भरणी मंगल की है। सूर्य बुध शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। बुध वक्री उदय पूर्व अस्त पश्चिम में गुरु वक्री हुआ है। मास में ५ मंगल शुभ पर अन्न में तेजी करेंगे। देश में बिमारी फैले। कहीं अग्निकांड विस्फोट से जन हानि हो। कृ. ६ को स्वाती दुर्भिक्षकारी है। शु. १ को आर्दा अवर्षण करे। पूर्णिमा को पू.फा. शुभ पर मंगल को होलीदहन अशुभ। सभी खाद्यान्न, लाल वस्तु, घी, तेल, नमक, रस, कपूर, चन्दन आदि तेज। कहीं विग्रह हो, कहीं अग्निकांड विस्फोट से जन हानि हो। मास में शस्त्र, क्षुधा, चौर, रोगों की वृद्धि होगी।

कृष्ण पक्ष-कृ. १ मंगल- बुधोदय पूर्व-रुई तेज, चांदी में घटबढ़ होकर तेज, सोना मंदा। गेहूं, जौ, चना, अलसी, अरण्डी, तेल तिल, सरसों, मिर्च आदि तेज हो। कहीं प्राकृतिक आपदा से हानि हो। कृ. ४ शुक्र-पू.भा. बुध-अन्न लोहा में मंदी, रुई सूत में घटबढ़ चले। कहीं झगड़ा-फिसाद आदि से प्रजा परेशान हो। कृ. ६ रवि शत. सूर्य, उ.षा. शुक्र-चना, ऊट, कपड़े, नील, हींग, जायफल, दाख, सोंठ, रुई, सूत, कपास, गुड़, खाण्ड, हल्दी, खाद्य पदार्थ व चांदी में तेजी। अलसी, सरसों, अरण्डी, तेल पदार्थ, नारियल, रसकस, गुड़, शक्कर आदि में मंदा। कहीं बिमारी फैले। कृ. ११ शुक्र-मीने बुध-रुई, कपास, बिनौला तेज। गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर में मंदा। चांदी तेज होकर मंदी हो। अधिकारी व प्रजा में आपसी तनाव बने। कृ. १२ शनि-रोहिणी मंगल, मकरे शुक्र-रुई, सूत, कपास, कपड़ा, शेयर, गुड़, खाण्ड, रेशम, हींग, मिर्च, मसाले, सरसों व तेलादि पदार्थों में तेजी। कहीं-कहीं बिमारी फैले। गुड़, खाण्ड, घी, सभी खाद्य पदार्थ, अन्न तेज हो। पैदावार कम रहे। कृ. १४ सोम अमावस क्षय-सभी सफेद वस्तु चांदी आदि वस्तुओं में मंदा करेगी।

शुक्ल पक्ष-शु. २ बुध-चन्द्रदर्शन-गुड़, शक्कर, खाण्ड, रुई, सफेद वस्तु में मन्दा, चांदी में घटबढ़। घी अन्न तेज होगा। शु. ३ गुरु-बुध वक्री, रुई तेज होकर मन्दी, गुड़, शक्कर, सरसों, अलसी, कपूर, तेल, तिल, अरण्डी, शेयर, बिनौला आदि तेज। रुई, सूत, कपास, कपड़े मन्दे। घी, शक्कर, खाण्ड में घटबढ़ चले। शु. ५ शनि-पू.भा. सूर्य, वक्री गुरु-बहुत सी वस्तुओं में मन्दी की लम्बी लाईन चलेगी। बाजार जरूर देखो। रुई, जौ, चना, गेहूं, अन्न घी, दूध, खाद्य पदार्थ मन्दे, धातु, तांबा, पीतल, सोना, चांदी, रुई, रेशम, गुग्गल, जुवार, बाजरा आदि तेज रहे। शु. ६ रवि-बुधास्त पश्चिम-रुई, चांदी तेज होकर मन्दी, शेयर, हैसियन, वारदाना मन्दा, रुई पदार्थ मन्दे में खरीदो आगे लाभ मिलेगा। राजा को पीड़ा हो। शु. १० गुरु-वक्री कुंभ बुध-घी, तेल, रसकस, गुड़, शक्कर आदि में घटबढ़ से मन्दा, सोना, चांदी, तांबा, पीतल मन्दी होकर तेज हो। शु. ११ शुक्र-श्रवण शुक्र-चांदी, सोना, गोला, खाण्ड, शक्कर, गुड़, उड़द, मूंग आदि में मन्दा, कपास, तेल, अलसी आदि में कुछ तेजी। रुई मन्दी होकर तेज हो। शु. १५ मंगल-सूर्य मीन में-सभी प्रकार का धान्य नमक तिल तेल खाद्य पदार्थों में तेजी बनेगी।

विशेष योग-

पांच भौम फाल्गुन में करैं उदंगल जान।
युद्ध मचै कोई खण्ड में तेज वस्तु पहिचान॥
फाल्गुन में गुरु अस्त हो अथवा वक्री चाल।
मन्दी कारक योग है मन्दा हो सब माल॥
क्रमशः फाल्गुन पूनम पू.फा. उ.फा. हो।
प्रथम सुकाल विचारिए फिर दुकाल जिम होय॥
किसी राशि पर संक्रमण करै भौम दिन सूर।
तो महंगा होवे नमक रस घी तेल कपूर॥

अथ चैत्र कृष्ण फल विचार-

पक्ष बुध से आरम्भ हुआ, मावस बुध की, पक्ष में तिथि बढ़कर घटी है। बुधोदय पूर्व में मार्गी हुआ है। मावस को सूर्य ग्रहण है। बुध की पड़वा अन्न तेज करै। मावस को बुध उ.भा. सुभिक्षकारक है। शतभिषा का बुध रोगोत्पत्ति करेगा। व्यापारी वैद्य नाविकों को कष्ट, धनिष्ठा का शुक्र पाखण्डियों में भय उत्पन्न करेगा। **कृष्ण पक्ष**-कृ. १ बुध-सभी प्रकार का अन्न, खाद्य पदार्थ तेज होंगे। कृ. ३ शनि-उ.भा., सूर्य, बुधोदय पूर्व-रस पदार्थ धान्य तेल सोना, चांदी, रुई, गुड़, खाण्ड शक्कर, गेहूं, जौ, चना, अलसी, अरण्डी, सरसों, लाल मिर्च तेज हो। तेज वायु से मौसम में परिवर्तन होगा। कृ. ६ मंगल-वक्री शत. बुध-शूद्र लोग बीमार रहें। सोना, चांदी, सण, सूत, अन्न तेज रहे। कृ. ७ बुध-मृग., मंगल, कपास की फसल को नुकसान हो, रुई मन्दी से तेज, चांदी तेज हो। कृ. ९ शुक्र-धनिष्ठा शुक्र-मसीन, मूंग, मोंठ आदि अन्न, सोना, चांदी, रुई, कपास, चावल, उड़द तेज, पशुओं को कष्ट हो। कृ. १० शनि-मार्गी बुध-रुई घटबढ़ से तेज, फर्नीचर, लकड़ी, अन्न तेज, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों तेल, कपूर, चन्दन आदि में मन्दा रहे। कृ. ३० बुध-पू.भा., बुध सूर्यग्रहण, अन्न, सोना, चांदी, गुड़, शक्कर, मक्का, चौला तेज। सोना, चांदी, तांबा, नारियल, सुपारी नमक, सब्जी, खार-क्षार पदार्थों में २ या ३ मास में लाभ मिलेगा संग्रह करो।

विशेष योग-

चैत्र बुध हो सूर्य ग्रहण छत्र भंग हो जाए।
वस्त्र सुपारी लोंग फल अमल क्षार खार मंहिगा पाए॥

आवश्यकता है

विद्वान ज्योतिषी, गणितकर्त्ता, फलित तथा गणित सम्बन्धी पुस्तकों में संशोधन तथा नई पुस्तकों के लेखन करने में अनुभव रखने वाले तथा व्यापारिक मन्दा-तेजी, राजनीतिक व अन्य विषयों पर लिखने वाले लेखक हमसे सम्पर्क करें। नोट : ऊर्दू भाषा में ज्योतिष सम्बन्धी जानकारी तथा हिन्दी से ऊर्दू तथा ऊर्दू से हिन्दी अनुवाद करने वाले विद्वान भी सम्पर्क करें।

आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र
२/४५-ए, वैस्ट ऐवन्यू मार्ग, पंजाबी बाग,
नई दिल्ली-२६ फोन : 25193194

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection